Archiv der Gossner Mission
im Evangelischen Landeskirchlichen Archiv in Berlin

Signatur **Gossner_G 1_0153**

Aktenzeichen 1/20/0

Titel

Gharbhandhu, Kirchenzeitung der GELC. Sammlung von Exemplaren aus verschiedenen Akten

Band

Laufzeit 1975 - 1989

Enthält

diverse Exemlare des Gharbhandhu, Hindi-Druckschriften

Digitalisiert/Verfilmt 2009 von Mikro-Univers GmbH

Gossner Mission

G.E.L. Church

Gharbandhu

Kinderzeitung (Druckschrift in Hindi)
aus folgenden Akten:
G1/120
G1/122
G1/124
G1/125
G1/128

LEITZ
1650 Trennblatt ohne Ösen
1654 Trennblatt mit Ösen
zum Selbstausschneiden
von Registertasten

Gossner Mission

1988
1989
+ 2 ohne Jahre

aus
128

(67)

Gossner Mission

धर्मबन्धु

रजि. न. आर. एन. डी. ८१
वार्षिक मूल्य २० रु०
एक प्रति २ रु०

वर्ष— १११ रांची, अक्टूबर १९९२ संख्या न० - १०

'यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा है, मैं किसका भय खाऊं ?'

भ० सं० २७:१

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

घरबन्धु

(गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पत्रिका)

EDITOR & PUBLISHER :—
Pramukh Adhyaksh
(Rev. C. S. R. Topno)
ASSOCIATE EDITOR
(Up-Pramukh Adhyaksh)
Rev. S. Toppo
PROMOTER :—
Rev. Saban Martin Topno
EDITORIAL COMMITTEE :-
1. Rev. Dr. Royan Dang
2. Rev. P. J. G. Minz
3. Dr. Mrs. E. Bhengra
4. Dr. Miss. D. Kongari

सूची

इस अंक में

सम्पादकीय—		....	१
उपदेश की तैयारी	—प्रोमोटर	...	२
छुट्टी का एकअनुभव	—क० एम० सुरिन	...	४
मसीह की आवाज	—आर० सी० यादव	....	६
List of Atampalandan	—Rev. J. Sanga	...	८
लड़कपन और जीवन	—पा० प्रबल मिंज	....	१२
मसीही पारिवारिक जीवन	—रेभ० एस० सोय	...	१४
अनैतिक की नैतिक	—डॉ० राम प्रसाद	....	१५
शील आज कितना प्रसंगिक	—डा० एन० कोनगाड़ी	...	१७
द० पू० अंचल युवासंघ	—रेभ० एम० कन्डुलना	..	१८

x x x

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणतः १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य बीस रुपये हैं।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक-संख्या लिखना न भूलें।

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिए पते पर ही भेजें। एसोसिएट एडीटर घरबन्धु, के० एस० एस० ऑफिस जी० ई० एल० चर्च, रांची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ ली ता० तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इसमें बाँयी ओर $1\frac{1}{2}$" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १ इंच मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत को वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित पते लिफाफे भेजें।

८ स्मरण रहे कि लेखकों के भावों के लिए सम्पादक वा सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रहनी चाहिए, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगी।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका भेजी जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १० ता० के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चंदा भेजने पर सम्भवतः ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छापे जाते हैं, ग्राहक चन्दा के घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही घरबन्धु के प्रबन्धकर्त्ता के पास लिखें, सम्भवतः डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित्त कुछ लिखाकें।

Gossner Mission

सम्पादकीय टिप्पणियां

परमेश्वर का प्रत्येक नाम उसकी महिमा और महानता का दूसरा पहलू प्रगट करता है। (यशायाह ६३:१६) में यशायाह कहता है—'हे परमेश्वर तू हमारा पिता है और हमारा छुड़ाने वाला है, प्राचीन काल से यही तेरा नाम है'। परमेश्वर उद्धारकर्त्ता है और सदा काल से उद्धारकर्त्ता रहा है। हम उसके नाम से मालूम कर लेते हैं कि परमेश्वर एक प्रेमी परमेश्वर है, क्योंकि एक छुड़ाने वाला या उद्धारकर्त्ता वही हो सकता है जो आप से हम सब से प्रेम करता है। वह सदा काल से प्रेम का स्त्रोत रहा है। जब दो व्यक्तियों में गहरा प्रेम हो जाता है तो अपना स्नेह और प्रेम व्यक्त करने के लिए एक दूसरे के नाम का प्रयोग करते हैं। हो सकता है कि वे फुसफुसा कर कोमल स्वर में एक दूसरे का नाम लें या वे अपने प्रिय को कोई खास व्यक्तिगत नाम भी दे सकते हैं जो उनकी प्रेम की भावना को व्यक्त करें। माता पिता अपने बच्चों का विशेष नाम रखते हैं जिससे बच्चों पर प्रगट हो जाए कि उनसे प्रेम किया जाता है। यूह० १०:२७ में यीशु कहता है मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं और मैं जानता हूं और वे मेरे पीछे पीछे चलती है' ऐसा प्रतीत होता है कि पशु भी अपना नाम से वाकिफ है जब कि उनके स्वामी आते हैं तो निश्चयता में अपने स्वामी की आवाज को पहचानते हैं। इस तरह से उनमें और उसके अनुयायियों में एक प्रेम का संबंध जुड़ा है। क्योंकि उसके अनुयायी उसे जानते हैं और वह उनको जानता है। अतः प्रेमी पिता परमेश्वर के विभिन्न नाम जब लेते हैं तो उसके प्रति अपना आदर और अपना हर्ष अभिव्यक्त करते हैं। किसी के मां-बाप, भाई बहन या मां बहन को बुरे नाम से सम्बोधित करते हैं तो उसका भारी अपमान करते हैं। उसी तरह परमेश्वर का अपमान भी करते हैं जब कि कृत किसी पाप बुराई से छिपने के लिए परमेश्वर या मसीह का नाम से शपथ खाते और शाप देते हैं। परमेश्वर विशेष रूप से हमें उसका नाम 'व्यर्थ' लेने से मना करता है। परमेश्वर का कोई नाम जब लेते हैं तो प्रेम, आदर और अर्थपूर्ण भाव से हमें उसका नाम लेना चाहिए। परमेश्वर विभिन्न रूपों में प्रयोग करने के लिए अपना नाम देता है। त्रिएक परमेश्वर पिता में पिता यहोवा परमेश्वर पुत्र मसीह परमेश्वर और पवित्रात्मा परमेश्वर निहित है। जब परमेश्वर के नामों से अपने मस्तिक को भर लेते है तो महिमा युक्त विचारों में भरे रहते हैं और सम्पूर्ण हस्ती को शक्ति और विशेषाधिकारों के औजार बना देते हैं। परमेश्वर अपना नाम हमें इसलिए देता है कि उसका प्रयोग करके हम अनन्त उद्धार पा सकें तथा शैतान के अन्धकार की शक्तियों को कुचल सकें जो हमारे जीवन को भ्रष्ट करती है। अतः परमेश्वर के नाम हमें एक औजार के रूप में दिया गया है जिसका हम प्रयोग कर सकते हैं। अतः इस नाम द्वारा शैतान के विरूद्ध संघर्ष करने में विशेष अधिकार और शक्ति प्राप्त कर विश्वासी बनते हैं। अतः परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हरएक जीभ अंगीकार कर लें कि यीशु मसीह ही प्रभु है।

प्रोमोटर

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

अडवेन्ट का १ ला एतवार

यिर्म० ३१:३१-३४

यहूदी के घराने से नई वाचा का बांधा जाना जगत के उद्धार एवं मसीही विश्वासियों के उद्धार निमित्त मसीह द्वारा सम्पन्न किया जाता है। इसी लिए उद्धारकर्त्ता मसीह का आगमन हुआ।

देखें :—यिर्म० ३१:४०, इब्रानी ८:८, १ यूह० १:१७ व्य० वि० १:३१, भ० सं० ४०:८, २ कुरि० ३:३, व्य० वि० ३०:२२, यशा० ५४:१३, यूह० ६:४५, १ कु० १:१०, रो० ११:२७, यशा० ५१:१५।

विषय—उद्धारकर्त्ता मसीह आएगा।

१ उद्धारकर्त्ता मसीह का द्वितीय आगमन निकट है :—हमारे उद्धार के लिए मसीह आया। अडवेन्टकाल में मसीह के द्वितीय आगमन की तैयारी है। मसीह के इस द्वितीय आगमन के साथ साथ उद्धार के कार्य की परिपूर्णता तथा यथार्तता की हमारी आशा और विश्वास है। अत: नई वाचा द्वारा पापमोक्षण धार्मिकता एवं जीवन दिया जाता है और मसीह के द्वितीय आगमन से स्वर्गीय जीवन के लिए हमें वह लेने आएगा।

२ उद्धारकर्त्ता मसीह के द्वितीय आगमन की बाट जोहें :—मसीह पूर्ण उद्धार के लिए दूसरी बार आएगा ही। वह महिमा में आएगा। जगत का न्याय करने आएगा। इसलिए मसीही विश्वास में स्थिर होकर सचेत रहना एवं उद्धार की परिपूर्णता की बाट जोहना है। इसलिए युगान्तीय नैतिकता के आधार पर जीवन बिताते हुए मसीह को यथोचित स्वागत दे सकें।

समाप्ति :—उद्धारकर्त्ता मसीह का द्वितीय आगमन निकट अत: सचेत होकर उसके आने की बाट जोहें।

अडवेन्ट का २रा एतवार

मलाकी ४:१-६

परमेश्वर ने विभिन्न समयों में प्रतिज्ञाएं एवं भविष्यद्वाणियां दी जो केवल यहूदियों के लिए नहीं पर सारे जगत के लोगों के लिए दी गयी। इसकी परिपूर्णता न्याय के दिन पर होगा। इस लिए लोग परमेश्वर का भय प्रेम और भरोसा रखें।

देखें :—लूक १:७८, इफि० ५:१४, २ पत० १:१९, मीका ७:१०, व्य० वि० ४:१०, मत्ती ११:१४, योएल २:३१, लू० १:१७, मार्क १३:१४, लू० १९:-२०, लूक २१:२।

विषय :—न्याय कर्त्ता मसीह आएगा।

१ इसलिए मसीह की महिमा करें :—मसीह एक ही बार केवल नहीं आया पर आज भी आता है और अपनी ओर आकर्षित करता है। वह अपनी महिमा में द्वितीय आगमन में आएगा और उद्धार की परिपूर्णता विश्वासियों को देगा। अविश्वासियों तथा परमेश्वर के विरोधियों को नाश करेगा। अत: वर्त्तमान में उसकी महिमा करते रहें और आने वाले समय में भी उसकी महिमा के लिए तैयारी करें।

२ इसलिए मसीह पर आशा रखें :—यहोवा परमेश्वर का प्रबन्ध है कि सारे जगत का न्याय करने के लिए मसीह का द्वितीय आगमन होगा। वह मसीही विश्वासियों को अपने संगति में लेगा। जगत का उद्धार करेगा। इसलिए नैतिक जीवन में जीते हुए मसीह पर आशा रखना चाहिए। मसीह अनन्त महिमा में हम सब विश्वासियों को संगति में लेगा।

समाप्ति :—न्यायकर्त्ता मसीह आएगा, उसकी स्तुति महिमा करें। मसीह पर आशा रखें।

Gossner Mission

अडवेन्ट का ३रा एतवार

यशा० ४०:१-८

यशायाह नबी कहता है—'तब यहोवा का तेज प्रगट होगा और सब प्राणी उसको एक संग देखेंगे क्योंकि यहोवा ने आप ही ऐसा कहा है'।

देखें :—मत्ती ३:३, मार्क ३:१, मलाकी १:३, लू० १:७६, यूह० १:२३, निर्ग० १६:७, भ० सं० ७२:१६, हिज० ३६:२३, लू० २:१०, १ पत० १:२५ यूह० १०:११, इब्र० १३:२०।

विषय :—न्यायकर्त्ता मसीह आएगा।

१ मसीह हमारा न्यायकर्त्ता है :—यशायाह नबी परमेश्वर की उद्धार योंजना को मसीह के आगमन से संबंधित संकेत कर मसीह के लिए मार्ग तैयार करने के लिए अपील को प्रकाश में लाता है। अत: मसीह प्रगट हुआ तो सारे जगत के उद्धार की प्रतिज्ञा सम्पन्न होती है। न्याय-कर्त्ता होकर मसीह आएगा। इसलिए सदाकाल के जीवन के लिए मसीही विश्वास में स्थिर रहें।

२ मसीह हमारा न्याय करेगा :—सारे जगत के लोगों का न्याय करने के लिए मसीह का द्वितीय आगमन होगा। मसीह विश्वासियों के लिए शान्ति, आनन्द का समाचार है कि न्याय-कर्त्ता मसीह प्रभु हमारा मुक्तिदाता ही है। पार्थिव जीवन हमारा क्षणिक है पर स्वर्गीय जीवन सदाकाल का जीवन है जहां मसीह हमें ले जाएगा।

समाप्ति :—न्यायकर्त्ता मसीह के आने की बाट जोहें और इस निमित्त पूर्ण तैयारी करें।

अडवेन्ट क ४था एतवार

व्य० वि० १८:१५-१६

धर्मशास्त्र में लिखित बातें त्राण के निमित्त शिक्षाएं हैं। मसीह को छोड़कर और कोई नहीं है जो परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं कों पूरी करेगा। मसीह ने परमेश्वर की प्रतिज्ञा पूरी की है।

देखें :—गिन० २४:१ , यशा० ११:१, मत्ती ११:३ मत्ती २१:११, लू० २:२५, लू० ७:१६, लू० २४:१९ यूह० ४:१६, यूह० ६:१४, प्रे० क्रि० ३:२२, यूह० १:४५, यशा० ५१:१६, यूह० ४:२५, प्रे० क्रि० ३:२३ यिर्म० १४:१४, जक० १३:३।

विषय :—न्यायकर्त्ता मसीह का आना निकट है।

१ इसलिए न्यायकर्त्ता मसीह पर दृष्टि करें :—ख्रीस्त जन्म पर्व की तैयारी में हम अपना तन-मन धन लगाए रहते हैं। उसी प्रकार मसीह के द्वितीय आगमन पर अपने आप को तैयारी में रखें। क्योंकि न्यायकर्त्ता मसीह प्रत्येक के कामों का हिसाब लेगा। इसलिए कि मसीह का आना निकट है हम मसीह की ओर दृष्टि रखें तथा उसी अनुसार विश्वस्त बनकर अपने-अपने कार्यों का जवाबदायित्व सम्भाले।

२ इस लिए न्यायकर्त्ता मसीह पर भरोसा रखें :—अपने-अपने कार्यों में विश्वस्त रहने से मसीहियों के प्रति आशीष ही आशीष रखी हुई है। अत: न्यायकर्त्ता होकर मसीह जब आयगा तो विश्वस्त मसीहियों के प्रति जो वचन में बने रहे उन्हें अनन्त जीवन देगा और अपने संगति में लेगा।

समाप्ति :—अत: वचन और सक्रामेन्त में बने हुए मसीहियों को मसीह अनन्त जीवन देगा।

जन्म पर्व के बाद १ला एतवार

यशा० ६३:७-१७

धर्मशास्त्र में दर्शाए गए नबूवतों के अनुसार समय की पूर्णत: पर यहोवा ने हमारा छुड़ानेहारा को सच्चा मनुष्य रूप में प्रगट किया।

देखें :—प्र० व० १६:६, होशे १२:४५, मला० ३:१ प्रे० क्रि० १२-११, व्य० वि० ७:७, निर्ग० १९:४, भ० सं० ७८:८, प्रे० क्रि० ७:५१, इफि० ४:३०, इब्र० १०:२०, गला० ३:२८।

विषय :—हमारा छुड़ानेहारा।

१ छुड़ानेहारे को पहचाने :—यहोवा ने स्वयं मनुष्य का रुप लेकर मसीह में जन्म लिया। व्यवस्था के बन्धन से हमें छुड़ाया। नई वाचा द्वारा मुक्ति दिलाया। अत: परमेश्वर के छुटकारे के काम को पहचाने।

२ छुड़ानेहारा की महिमा करें :—यहोवा ने अपना प्रिय पुत्र को व्यवस्था के बंधन से हमें छुड़ाने के लिए भेजा। मसीह ने हमें चुन लिया है। स्वर्ग राज्य का प्रजा बना लिया है। इसलिए मसीह की महिमा करें।

समाप्ति :—पिता परमेश्वर की स्तुति महिमा प्रशंसा हो।

Gossner Mission

छुट्टी का एक अनुभव

कन्डी० एम० सुरिन, गुरूकुल मद्रास

दो महीना की गर्मी छुट्टी बिताकर, जब मैं रांची से मद्रास के लिए रवाना करने ही वाला था कि अचानक मेरी भेंट हमारे कलीसिया के घरबन्धु प्रोमोटर से मुलाकत हुई। एक दूसरे को कुशलक्षेम की बातें समाप्त होते ही प्रोमोटर महोदय ने मेरी यात्रा को शुभकामना पेश करते मुझसे आग्रह किए कि छुट्टी में जो भी आप का प्रोग्राम रहा उसको सक्षिप्त रिपोर्ट लिखित रूप में हमें दे। जल्द बाजी में हां की बात देकर अपना कदम आगे बढ़ाया। परन्तु मेरे मन में तरह तरह के प्रश्न उठने लगे। आखिर मैं इस निर्णय में आया कि रिपोर्ट देना मेरा अपना फर्ज भी है।

मद्रास गुरूकुल आध्यात्मिक महाविद्यालय में अध्ययन करत मेरा एक साल बीत चुका। छुट्टी मिलते ही घर जाने की धुन सब के मन में जाग उठती है। अतः मैं भी गर्मी छुट्टी में सीधे घर जाने की चाह से टिकट लिया। रास्ते में एक पाद्री भाई के साथ बिलासपुर जाने की बात तय हुई। परन्तु मेरे मन में तो घर की बात ही याद आ रही थी। इसलिए उसको वचन देकर कि टिकट को एक्सटेंशन कराकर बिलासपुर जाया जाय। परन्तु मन को जाँचने वाला प्रभु ही जानता है, हमारे विचार के अनुसार काम सफल नहीं हुआ और मैं सीधे घर चला आया। और मैं पूरे दो माह का कायक्रम विभिन्न स्थानों के मण्डलियों में निर्धारित भी कर दिया। प्राकृति में जिस प्रकार कभी जड़ा कभी गर्मी आती है, तो कहीं धूप कहीं छाया पड़ती है, उसी प्रकार मेरे प्रोग्राम के दारमियान मुझे खट्टे-मीठे अनुभव भी प्राप्त हुए, जो मेरे भावी सेवकाई जीवन के लिए मार्ग दर्शक स्वरूप ठहरे हैं। वे ये हैं — ....

सर्वप्रथम मैं ने १ला प्रोग्राम अपनी मंडली में रखना चाहा। परन्तु प्रत्येक माह के अंतिम रविवार में प्रचारकपन की बैठकी में पूरे माह का प्रोग्राम बना दिया जाता है, और मण्डली के चेयरमेन ने मेरी पारी दिनांक १७-५-९२ को निश्चित कर दिया। तब दिनांक २६-४-९२ ई० की रविवारीय गिर्जा आराधना के लिए अपने गांव से दूर डोमटोली में तय कर दिया। वहां सण्डे स्कूल और गिर्जा चलाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। परन्तु सण्डे स्कूल में वच्चों की उपस्थिति काफी कमजोर थी, और स्कूल संचालकों में भाइयों की दिलचस्पी ठण्ड सी मैं ने महसूस किया, परन्तु बहनों की उत्सुकता से सहयोग देते हैं।

दूसरे दिन वहां से लौटकर मैं गांव का एक बाजार में गया। वहां दूर दूर से लोग आते हैं। मेरी कई लोगों से मुलाकत हुई और वे मुझे अपने मण्डलियों में प्रोग्राम देने के लिए आग्रह भी किए। लोगों के आग्रह को अस्वीकार करना मेरे लिए उचित नहीं था। इसलिए मैं तत्काल ही प्रोग्राम बनाया। परन्तु प्रभु का काम उतना सहज नहीं है जितना लोग सोचते हैं। मैंने शैतान का प्रहार देखा। ज्योही मैं एक भाई जो टो० बी० बीमार से पीड़ित था, उसको दूसरा दिन देखने गया। उधर लौटते धूप के कारण लूह का असर मुझे हुआ और एक सप्ताह बुखार से तबाह बिस्तरा में पड़ा रहा। जिसके कारण दिनांक ३-५-९२ ई० और १०-५-९२ को अपने ही गांव के मंडलो में प्रोग्राम था। इसलिए सण्डे स्कूल और बड़ों का गिर्जा आराधना, संचालन भी किया। वहां मैंने कुछ खामियां देखा। बच्चों को पढ़ाने के लिए सचालकों की कमी। मेरे गांव में प्रायः पढ़े-लिखे लोग हैं, किन्तु शिक्षा को महत्व को समझ नहीं पाने के कारण तथा युवाकों में दिशा विहोन निर्दिष्टता के कारण

Gossner Mission

उनमें धार्मिक ज्ञान की घटी एवं जागरूकता नहीं पाया तथा शिक्षा की सद्उपयोग में कमजोरी मैंने देखा।

दिनांक २४-५-९२ ई० को मेरा उड़ीसा के बिरमित्रापुर पेरिश में प्रोग्राम था। वहां गिर्जा आराधना का संचालन करने के बाद पाद्रो सोधन तोपनो (चेयरमेन) से बात चीत मैंने किया। पादी तोपनो एक कर्मठ युवा पादी हैं वहाँ की परिस्थिति बहुत सोचनीय है। किन्तु पादी धीरज के साथ काम कर रहे हैं और उनके सेवकाई से लोग बहुत प्रभावित एवं लाभान्वित हो रहे हैं। विघटनकारी तत्व जो बिरमित्रापुर से आरंभ होकर पूरे उड़ीसा अंचल में छा रही है उसके मध्य पादी तोपनो दृढ़ता एवं विश्वास्तपूर्ण कार्य निभा रहे हैं। वहाँ की विघटनकारी तत्व इतना प्रबल हुआ कि पादियों का डेरा भी उजाड़ पड़ा है। फिर भी वह सबल कर्मचारी एक नई आशा लिए हुए मंडली के कामों को आगे बढ़ाते जा हैं।

वहीं एक भाई ए० हेम्बरोम और उसकी धर्म पत्नी से मेरी भेंट हुई। दोनों सुशील और धार्मिक प्रवृति के हैं। यू० एल० सी० आई० के अनुकम्पा से श्रीमती हेम्बरोम को उड़ीसा अंचल में महिलाओं के बीच विशेष रूप से काम करने के लिए अवसर दिया गया है। उन्हें उड़ीसा अचल के लिए Co-ordinater का पद भार दिया गया है। पति जौभी अपने काम में व्यस्त रहते हैं फिर भी वे समय निकाल कर अपने धर्म पत्नी को सहायता करते हुए कलीसिया में लोगों को सुषुप्त दशा में से जगाने एवं उनमें धार्मिक जागरूकता लाने के लिए प्रत्यनशील हैं। मैंने उन्हें प्रभु के ऐसे बड़े आशीषों के काम को करने के लिए बधाई एवं प्रोत्साहन भी दिया। इसके बाद दिनांक २८-५-९२ ई० को पश्चिमी केरेया दिनांक ३१-५-९२ ई० को पुरना पानी तथा ७-६-९२ ई० को डोभापानी मंडलियों का दौरा किया। इन तीनों मंडलियों में सण्डे स्कूल को सुचारू रूप से चलाने के लिए सुयोग सचालकों की कमी है। चूंकि जवान-युवति प्रचारकों से सहायता नहीं लेते हैं, यही कारण है कि उन में काम करने की दिलचस्पी नहीं पायी जाती है।

दिनांक ५-६-९२ ई० को मैं अपने एक दोस्त की शादी में गया। मेरा दोस्त एक सेवक भी है। दोस्त की शादी को बड़े ही हर्षोल्लास के साथ देखने के लिए गया। परन्तु गाँव पहुंच कर वहां की सन्नाटा स्थिति को देखकर मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानों मैं हर्षोल्लास के स्थान पर किसी श्मशान घाट पर पहुंचा हूं। जबकि मंडप बारात पार्टी और नेवताहरियों से भरा पड़ा था। सभों के मन में उदासी छायी हुई थी। लड़की के अभिभावकों ने मुझे परिस्थिति से अवगत कराया। बात बहुत गम्भीर और हल्की भी थी। शादी के लिए लड़का लड़की ईश्वर के सिंहासन पर, ईश्वर की उपस्थिति में वचन देकर भी दृढ़ नहीं रहते, और यही घटना यहां घटी। फलतः अवसर को देखकर शैतान किसी को भी प्रलोभन में गिरा सकता है। और गोस्सनर एवंजेलिकल लुथेरान कलीसिया जो एक प्रोटेस्टेंट कलीसिया है, लोग किसी बात पर जल्द ही प्रोटेस्ट करते हैं और यह अच्छी बात भी है। परन्तु वचन की बातों को ध्यान नहीं करते। चूंकि वचन द्वारा एक दूसरे स प्रेम करना, क्षमा देने की बातें जानते हैं, किन्तु उसको कार्य रूप में परिणत करने में कमजोर हो जाते हैं। (१ यू० ४: ७-८, मत्ती ६:१४) यही कारण है कि लड़की की गलती पर उससे समझाने के जगह टोला पंच और लड़की को अभिभावकों के बीच में, मैं मैं, तू-तू की बात हो गई। अत। लड़की की शादी सिफारिश नहीं देने पर बात जटिल बन गई और शादी को आदर की बात न समझ कर निरादर किया गया। अन्त में मैं लड़का को कहा कि शादी की सम्भवना यहां नहीं दिखता है। इसलिए यदि आप इस लड़की को शादी करने की इच्छा रखते हैं तो होशे नबी के समान दृढ़ हो जाइये। जिसने ईश्वर का आह्वान सुनकर एक वेश्या

Gossner Mission

लड़को को शादी किया, और जो जो बातें लड़की के विरुद्ध सुन रहे हैं उसे छोड़कर, उसको अपना जीवन साथी बनाने के लिए तैयार हो जाइये, शादी का उपाय हो जायगा। इसी बात को लड़का स्वीकार कर तथा लड़की के अभिभावक भी देने की बात तय करके, लड़का उसे अपना गांव ले गया। तब दूसरा दिन किसी पाद्री के द्वारा शादी भी सम्पन्न हुआ। आज समाज में एक ऐसा वातावरण बन गया है, जिसके कारण किसी के जीवन को बनाने के जगह लोग बिगाड़ने में तुले रहते हैं (रोमी ३:१२)।

दूसरा दिन वहां से मैं अपना गांव लौटा चूंकि मुझे अपने गांव में जंगल की कटाई को देखकर 'जंगल बचाओं' अभियान के तहत, तीन मौजा के लोगों को एक बैठकी में बुलाकर सुझाव देना था। सभा में लोग बड़े उत्सुकता के साथ आये और जंगल की सुरक्षा के लिए दृढ़ संकल्प लिये तथा रब्बीयानी खेती को सुचारू रूप से करने का भी निर्णय लिए। अन्त में दिनांक १०-६-९२ ई० घर से रांची रवाना हुआ। रांची में जी० ई० एल० चर्च के डाइरेक्टर द्वारा मार्था भवन कडरू (रांची) में आयोजित एक विचार गोष्ठी में भाग लिया। जहां विभिन्न स्थानों से मिशन क्षेत्र में स्वयं सेवक के रूप में कार्यरत जवानों एवं प्रचारकों से संगति मिली। उस विचार गोष्ठी में सुरगुजा मिशन क्षेत्र से सात भाई थे। जिसमें एक भाई से बात चीत के दरम्यान यह बात मालूम हुई कि प्राय: अब हर क्षेत्र में पढ़े लिखे लोग हैं। किन्तु मण्डलियों में बाइबल अध्ययन नहीं होने के कारण, बाइबल की बातों को नहीं जानते हैं। उस भाई के गवाही के द्वारा यह पता लगा कि इस गोष्ठी में आकर ही उसे धर्मशास्त्र की बातों को समझने सका। इसलिए इस बदलती युग में, वचन को प्रचार और प्रसार करने के लिए हर मण्डलियों में बाइबल अध्ययन हेतु सेवक गणों को प्रभावपूर्ण कार्यक्रम बनाना नितांत आवश्यक है।

मसीह की आवाज

आर० सी० यादव

मसीह की आवाज के सन्दर्भ में हम अध्ययन कर रहे हैं—'मसीह को आवाज विश्वासियों के लिए आनन्द का श्रोत है'। इस विषय के अर्न्तगत हम विचार कर रहे हैं 'आनन्द कैसे प्राप्त होता है'? इस प्रश्न के आधार पर हमने जक्कई के जीवन पर दृष्टि पात किया है। लूका १९:५-९ पदों में जक्कई के बारे में अध्ययन कर रहे हैं। पिछले अध्ययन में हम सीख चुके हैं जक्कई ने कैसे आनन्द प्राप्त किया। जक्कई के जीवन में पांच बातें हैं जिनके द्वारा उसने आनन्द को पाया। पहली बात है 'आज्ञापालन' और दूसरी बात है 'नम्रता'। लूका १९:६ में हमें जानकारी प्राप्त हुई कि जक्कई ने प्रभु की आज्ञापालन किया और अपने जीवन में नम्रता धारण किया। इस अध्ययन में हम तीसरी बात पर विचार करेंगे। आनन्द प्राप्त करने के लिए जक्कई ने 'पश्चाताप' किया। लूक १९:८ में लिखा हुआ है—जक्कई खड़े होकर प्रभु से कहा—हे प्रभु, देख, मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूं और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो उसे चौगुना फेर देता हूं'। यह वचन जक्कई के पश्चातापी हृदय की तस्वीर है। इसमें पश्चाताप से सम्बन्धित तीन बातें पायी जाती हैं।

१ समर्पण के साथ प्रार्थना की पुकार :— लू० १९:८ में जक्कई ने खड़े होकर कहा, 'हे प्रभु' 'हे प्रभु' शब्द जीवन के पूर्ण समर्पण का बोध कराता है। जक्कई ने योशु को अपना प्रभु स्वीकार कर लिया। जीवन का मालिक जब यीशु बन जाता है तो हृदय से प्रार्थना की पुकार निकल पड़ती है। योशु को पुकारने से पहले उसे अपना प्रभु स्वीकार करना आवश्यक है। यीशु को अपने जीवन का स्वामी बना लेना ही समर्पण है। क्या आपने यीशु को अपना प्रभु स्वीकार किया है?

२ अपने गुनाहों को स्वीकार किया :— लूका १९:८ में जक्कई कहता है—'यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है' यहाँ पर जक्कई के कहने का तात्पर्य यह है कि वह अपनी

Gossner Mission

धन सम्पत्ति को अन्याय की कमाई स्वीकार करता है। आज जक्कई जब प्रभु के सामने खड़ा हुआ तो अपने गुनाहों को छुपा नहीं सका। प्रभु के सामने जीवन के पाप प्रकट हो जाते हैं। हृदय का मैल धुलने लगता है मन निर्मल हो जाता है। प्रिय भाई-बहनों जो व्यक्ति प्रभु के सामने अपने पापों को मान लेता है प्रभु उसके पापों को क्षमा करते हैं—भजन ३२:५ में दाऊद कहता है—'जब मैंने अपना पाप तुझ पर प्रकट किया और अपना अधर्म न छिपाया, और कहा मैं यहोवा के सामने अपराधों को मानूंगा, तब तूने मेरे अधम और पाप को क्षमा कर दिया'। जक्कई ने जब अपने गुनाहों को प्रभु के सामने प्रकट कर दिया तो लूका १९:९ में प्रभु कहने लगे—'आज इस घर में उद्धार आया है मसीह की इस आवाज को सुन कर जक्कई को कितना अधिक आनन्द की अनुभूति हुई होगी। किसी अपराधी को फांसी की सजा का आदेश हो जाने के बाद यदि उसे यह सन्देश मिले कि तुम्हारी फांसी की सजा माफ कर दी गयी है। इस सन्देश को पाकर उसे जो आनन्द मिलेगा वह वर्णन से बाहर है। प्रिय भाई बहनों जो अपने पापों को स्वीकार करते हैं उन्हें आनन्द की भरपूरी मिलती है।

३ व्यवहारिक जीवन :—जक्कई ने परिवर्तित जीवन को कार्य रूप में परिणत किया। लूका १९:८ में लिखा है—जक्कई ने अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को बांट दिया। जिसे उसने आनन्द पाने के लिए अन्याय करके कमाया था। जिस धन को वह सबसे प्रिय समझता था वही धन अब अप्रिय हो गया। हां भाई-बहनों यह सच है कि जब हमें वास्तविक आनन्द की प्राप्ति हो जाती है तो संसारिक आनन्द फीके पड़ जाते हैं। जक्कई अपने कार्यों के द्वारा प्रमाणित कर दिया कि जो आनन्द प्रभु देता है वह आनन्द धन से नहीं खरीदा जा सकता है। दुनिया की धन दौलत, मान प्रतिष्ठा और पदवी हमें वास्तविक आनन्द नहीं दे सकते हैं। जक्कई का जीवन अब एक परिवर्तित जीवन था उसके कार्य परिवर्तित जीवन की साक्षी प्रस्तुत कर रहे हैं। प्रिय भाई-बहनों क्या आपके कार्य आप के परिवर्तित जीवन को प्रकट करते हैं? क्या लोग आपके जीवन को देख कर कह सकते हैं कि यह बदला हुआ जीवन है? आज प्रभु आप से भी यही चाहता है कि जक्कई की तरह हम भी वास्तविक आनन्द को प्राप्त करें। आइए आज हम भी अपने जीवन का समर्पण करें और यीशु को प्रभु स्वीकार करके पापों से पश्चाताप करें। अपने व्यवहारिक जीवन के द्वारा लोगों के सामने साक्षी प्रस्तुत करें। प्रभु आप को आशीष देवे और इन बातों को समझने में सहायता करे।

अपील

प्यारे भाइयो एवं बहनों,

आप सभों को योशु के मधुर नाम में यीशु सहाय एवं धन्यवाद।

विगत् कई वर्षों से प्रयास किया जा रहा है कि के० एस० एस० के वजटानुसार आत्मपालन दान समय पर केन्द्र को मिले परन्तु अभी तक असफल रहे। इस साल के० एस० एस० के बजट अनुसार कुल प्राप्त रूपये ३,६२,८५०=०० रूपये हैं जिसमें वितीय वर्ष १ ली अप्रेल १९९२ ई० से ३१ अगस्त १९९२ ई० तक में प्राप्त रकम ११६,७८१=१५ पैसे हैं। बजट के अनुसार यथाशीघ्र २,४६०६८=८५ पैसे हमारे केन्द्र को मिलना है। इस समय हमारे गोसनर परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत ही गंभीर है. अतः मण्डली, पेरिश, एवं अंचलों से अपील है कि इकट्ठा किया हुआ आत्मपालन दान को जल्द से जल्द केन्द्रीकरण हमारे कार्यालय को करने की कृपा करें ताकि इस रकम के द्वारा से कलोसिया का काम सुचारू रूप से चल सके। हरेक अंचलों के अनुसार हमारे कार्यालय को जो रकम प्राप्त है उसका विवरण दिया जाता है :—

सभी आशा विश्वास एवं भरोसा एवं
शुभकामनाओं सहित

हेडएकाउण्टेन्ट
पादी जे० संगा
के० एस० एस० रांची,

प्रभु में आपका
प्रमुख अध्यक्ष
जी० ई० एल० चर्च
के० एस० एस० रांची

Gossner Mission

List of Atamplandan Received during 1st April 1992 to 31st August 1992

S. L. No.	PARTICULARS			Rs.	NP.	REMARKS
1.	1. GELC. S. E. ANCHAL					
	1	,,	Balidih B. S. city	Rs.	1413.25	
	2	,,	Bokaro Mandli	Rs.	3552.00	
	3	,,	Koranjo Ilaka	Rs.	11019.20	
	4	,,	Takarma Ilaka	Rs.	15000.00	
	5	,,	Singhbhum Ilaka	Rs.	3687.05	
	6	,,	Tokad Ilaka	Rs.	2271.00	
	7	,,	Diyankell	Rs.	800.00	
	8	,,	Marcha Ilaka	Rs.	62.00	
	9	,,	Burju Ilaka	Rs.	8640.40	
	10	,,	Dhanbad Parish	Rs.	1600.00	
	11	,,	Six Mandli	Rs.	134.00	
	12	,,	Gobindpur Ilaka	Rs.	10602·80	
	13	,,	Amlessa Ilaka	Rs.	2723.25	
	14	,,	Purulia	Rs.	731.00	62236. 55
2.	2. GELC N W ANCHAL					
	1	GELC	Pathalkudwa	Rs.	1425.00	
	2	,,	Hatia Parish	Rs.	1027.00	
	3	,,	Sarhapani	Rs.	600.00	
	4	,,	Gumla	,,	831.00	
	5	,,	Kinkel Ilaka	,	1512.00	
	6	Sri K.M. Topno	Treasurer	,,	1120.00	
	7	Rev. T. Kispotta		,,	600.00	
	8	Ranchi Ilaka	Treasurer	,,	1527.00	
	9	Sri H. Lakra	Lohardaga	,,	300.00	8942. 00
3.	3. GELC. Madhya Anchal					5,400. 00
4.	4. GELC Orissa Anchal					
	1	GELC	Raurkela	Rs.	4356.40	
	2	,,	Birmitrapur Parish	,,	3000.00	
	3	,,	Amgaon	,,	759.00	
	4	,,	Jharsugda	,,	6022.05	
	5	,,	Karimati Ilaka	,,	3000.00	
	6	,,	Deogarh	,,	1000.00	

Gossner Mission

7	GELC Sundargarh	Rs.	1022.50		
8	,, Madhupur Ilaka	,,	2878.40		
9	,, Ghoghor Parish	,,	2146.25		
10	,, Jorabandh Parish	,,	570.00		
11	,, Runga Parish	,,	213.00		
12	,, Kutra Parish	,,	197.00		
13	,, Rajgangpur Mandli	,,	1500.00	26664. 60	
			Total C/F	Rs. 103243. 15	

S.l.No	Balance	B/F	103243. 15	Receiveable during the yr' Amounts
5	5 GELC ASSAM ANCHAL			Rs. 362850.00
	1 Rev· E Surin	Rs.	35.00	
	2 Mr. M. M. Hemrom Tain Sukia	Rs.	1000.00	
	3 Mr. C. K. Tain Sukia Assam Ilaka	Rs.	150.00	
	4 GELC Joradia	Rs.	971.00	
	5 Surjugan Surin	Rs.	1000.00	
	6 GELC Tarai Ilaka	Rs.	1000.00	4156. 00
6	GELC Hd quarter Congrigation Ranchi			9382. 00
			GRAND TOTAL—	116781. 15 Yet du— —Rs. 247568,85

(Rupees One Lakh sixteen thousand seven hundred eighty one and Paise fifteen) only

Rev. J. Sanga
Head Accountant,
G E L Church
KSS Office Main Road,
Ranchi

(Rev. C. S. R. Topno)
Pramukh Adhyaksh
GELC

Gossner Mission

भण्डारीपन Stewardship

पाद्रो बी० के० सोय, बाइबल सोसाईटी रांची।

इक्कीसवीं शताब्दी में विशेष रूप से भण्डारीपन के विषय में वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता महसूस हुई। यों तो शरीर एवं आत्मा का संबंध सृष्टि के उषाकाल से जुड़ा हुआ है, परन्तु कालान्तर में ही धर्म विज्ञान के विद्वानों ने इनकी विशेषताओं को महसूस किया। भण्डारीपन का संबंध मनुष्य के साथ सृष्टि से जुड़ा हुआ है। विश्व-युद्धों के विभीषिका ने मनुष्य के स्वार्थपरता की जाली को खोल दिया तो उन्होंने महसूस किया कि विश्व आर्थिक विषमता से गुजर रहा है।

परमेश्वर सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी है। उनके स्वामित्व के विषय में भजन संहिता ५०:१०-१२ में इस प्रकार वर्णित है; क्योंकि वन का प्रत्येक प्राणी ···· ···· ···· ···· क्योंकि संसार और उसकी परिपूर्णता मेरी ही है। प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को लेकर अदन के उद्यान में नियुक्त किया कि वह उसमें खेती करे और उसकी रखवाली करे। उन्होंने मनुष्य को आज्ञा दी तुम उद्यान के सब पेड़ों के फल निस्संकोच खा सकते हो पर भले-बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल न खाना ··· ··· ··· उत्पति २:१५-१७ 'नियुक्त किया' का अर्थ ही है कि मनुष्य सृष्टि का स्वामी नहीं है परन्तु एक भण्डारी मात्र है। विश्व सृष्टि परमेश्वर के लिए है और न कि मनुष्य के लिए। परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी सृष्टि में साझेदारी (Co-Partner) किया, —उत्प० २:१९-२०, अतः मनुष्य परमेश्वर की योजनानुसार सृष्टि का उपयोग कर सकता है। उनकी इच्छानुसार ही वह उसे उपयोग कर सकता है।

'भण्डारी' शब्द अंग्रेजी भाषा के 'स्टेवार्ड' (Steward) का हिन्दी रूपान्तर है। अंग्रेजी भाषा के 'स्टेवार्डशिप' (Stewardship) शब्द यूनानी भाषा के 'ओईकोनोमिया' (Oikonomia) शब्द जो 'ओईकोस' (Oikos) का अर्थ है; परमेश्वर का परिवार और 'ओईकोनोमिया' का शब्दार्थ परमेश्वर के परिवार का प्रबन्धक अथवा देख रेख करने वाला। साधारणतया लोग भण्डारीपन (Stewardship) का अर्थ 'धन-संचय' करना समझते हैं परन्तु इसका सामान्य अर्थ ही है, 'भण्डार' का प्रबंधक अथवा देख-रेख करने वाला।

सृष्टि का अमूल्य निधि मनुष्य है। परमेश्वर के राज्य का सर्वोत्तम धन उनका वचन: प्रभु योशु ख्रीस्त एवं उनके लोग हैं जिनको त्रिएक परमेश्वर ने अपने ही स्वरूप में बनाये (उत्प. १:-२७) और उनको समस्त सृष्टि का अधिकार दिया। प्रेरित पौलुस ने कहा कि मैं केवल अपने प्रभु योशु मसीह के क्रूस के अतिरिक्त किसी अन्य बात का गर्व करूं (गल० ६:१४) परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी सृष्टि में साझेदारी (Co-Partner) बनाया ताकि वह परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी हों: सृष्टि का संरक्षण करना, उसका प्रबन्ध करना एवं उसका सदोपयोग करना ही मनुष्य का सच्चा भण्डारीपन है। परमेश्वर ने मनुष्य को सबसे बड़ा धन: अपना एक मात्र पुत्र योशु मसीह दिया। परमेश्वर के प्रति उसका उत्तारदायित्व है कि वह मसीह का 'सेवक' एवं परमेश्वर के सदस्यों का 'भण्डारी' है। भण्डारी सर्वदा विश्वास योग्य तथा आज्ञाकारी हो (१ कुरि० ४:१-२) योशु मसीह के शुभ संदेश उस रहस्य (परमेश्वर के प्रेम, योजना, उद्धार, मेल, शान्ति एवं शाश्वत जीवन) उद्घाटन है जो सदियों से छिपा हुआ था, परन्तु अब प्रकाशित हो गया है (रो० १६:२५, b, २६, a,)।

Gossner Mission

मसीही भण्डारीपन का वैज्ञानिक अध्ययन एवं विश्लेषण करते हुए धर्म विज्ञान के प्रबुद्ध विद्वानों ने निम्न परिभाषाएं दिए :—

१ फ्रेडबेकन :—सेवकाई का कर्त्तव्य है कि हमारा देय रूपये से नहीं, परन्तु परमेश्वर से आरम्भ हो।

२ केम्पबेल फेरेम्बेल :—मसीही भण्डारीपन नियमित एव समानुपात देय है।

३ जेम्स मार्क :—भण्डारीपन का अर्थ है—समय, क्षमता एव कोष का सदोपयोगिता।

४ जोन पौल्टन :—भण्डारीपन नई ईंट से भवन-निर्माण करने के सदृश्य है।

इस भौतिक संसार में धन के महत्वपूर्ण वर्गीकरण इस प्रकार है |

१ जीवन परमेश्वर का दान है।
२ पृथ्वी में जो कुछ भी है सब परमेश्वर का है।
३ सृष्टि में मनुष्य परमेश्वर का साझेदार है,
४ एवं मनुष्य परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी है।

अतः भण्डारी का प्रमुख दायित्व-सम्पूर्ण सृष्टि का प्रबंध करना, परमेश्वर के लोगों को सुरक्षा प्रदान करना, एवं देख भाल करना है। प्रभु यीशु ख्रीस्त ने कहा—'तू अपने परमेश्वर को अपने सम्पूर्ण हृदय, प्राण, बुद्धि एवं शक्ति से प्रेम कर' ... ... — अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर' (मर० १२:३०-३१) 'पहिले परमेश्वर के राज्य और उनकी धार्मिकता की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी मिल जायेंगी, (मत्ती ६:३३)

मनुष्य सृष्टि से ही एक सामाजिक प्राणी है। उसका जीवन समाज पर ही निर्भर करता है। समाज के प्रति उसका दायित्व है, क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें साझेदारी किया है। 'लेने की अपेक्षा देना धन्य है' (प्रेरि० २०:३५), देना ही जीवन है। गलील सागर का पानी हमेशा बहता है, इस कारण गलील सागर हमेशा स्वच्छ एवं उसका जल भी निर्मल रहता है, भण्डारीपन भी एक जीवन है। परमेश्वर ने मनुष्य को जीवन दिया है। सम्पूर्ण जीवन से उसकी महिमा करना है। पड़ोसी के प्रति सद्भावना, समानता एवं सहानुभूति रखना है पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना है जो राजाध्यादेश है। प्रभु यीशु मसीह ने अपने भौतिक जीवन में आदर्श प्रस्तुत किया है। अतः भण्डारीपन का वास्तविक अर्थ है —

१ परमेश्वर के परिवार का समुचित प्रबन्ध करना।
२ कलीसिया (सृष्टि : परमेश्वर के राज्य) की सद्स्यता एवं अनुशासनबद्ध जीवन यापन,
३ कलीसिया : राष्ट्र का निर्माण करना,
४ कलीसिया के नेतृत्व के निमित्त उत्तरदायी
५ विरासत में प्राप्त परमेश्वर का प्रेम, अनुग्रह शांति, धन आदि की सुरक्षा एवं सदोपयोगिता।

मसीही भण्डारी का कर्त्तव्य है :—परमेश्वर के वरदानों का सदोपयोग करना है सुसमाचार का प्रचार करना, समय, क्षमता एवं कोष का सही इस्तेमल करना है। सुसमाचार में प्रभु यीशु ख्रीस्त ने सच्चे मसीही भण्डारीपन की शिक्षा दी है,—

१ दयालु सामरी (लूका १०:२५-३७)
२ पतरस को अंतिम आदेश (यू० २१:१५-१८)
३ विवाह भोज का दृष्टान्त (मत्ती २२:१-१४)
४ तलंतों का दृष्टान्त (मत्ती २५:१४-३०)

कलीसिया परमेश्वर का परिवार एवं जी उठे ख्रीस्त की देह है। अतएव कलीसिया का प्रबन्ध जीवित लोगों की देन पर निर्भर होना चाहिए। पतरस को प्रदत्त अन्तिम आदेश में तीन प्रमुख बात हैं :—

१ मेरे मेम्नों को चराओ,
२ मेरी भेड़ों की रखवाली करो,
३ मेरी भेड़ों को चराओ।

Continue.....

Gossner Mission

मेरे लड़कपन और छात्र जीवन का एक वर्णन

—पाद्री बेन्जामिन मिज
(अग्रेजो से अनुवाद—पाद्री प्रबल जे० जी० मिज)

मैंने यह सुना था कि मेरे पितामह एक भरे-पूरे व्यक्ति थे और उनके पिता जी एक लम्बे अरसे तक गांव के मुखिया थे मेरे अपने पिता को धीरे-धीरे जमीन पर जमीन बन्धक लगाते जाना पड़ा और जब मुझे कुछ समझ में अने लगा तब तक हमारी सारी जमीन बन्धक, पर दी जा चुकी थी और हमारी अन्य कोई सम्पत्ति नहीं थी। हम अपनी ही जमीन की काश्त करते और पूरी पैदावार का आधा हिस्सा बन्धकदार का होता था। और इसलिए हमारे लिए अनाज काफी नहीं था।

मेरे पिता की बड़ी बहन के कोई लड़के-बाले नहीं थे। इसलिए अक्सर मेरी फूफू और फूफा हमारी मदद करते थे। उन्होंने यह निश्चय किया कि वे मुझे अपने पास ले लें और अपने लड़के के समान पालन-पोषण करें।

ऐसा मालूम पड़ता है कि जब मेरी उम्र चार साल की भी नहीं हो पाई थी, उसी समय मेरे फूफू-फूफा मुझे अपने पास रहने के लिए ले गए। मैं अपने इतिहास के इस हिस्से से वाकिफ नहीं हूं। मैंने उन्हें माता-पिता कहकर सम्बोधन करना सीखा। एक साल के बाद मेरे पिता के गांव में गांव के जतरा (मेला) के अवसर पर मेरे फूफू-फूफा मुझे वहां ले गए। लोगों ने मुझे सिखलाया था कि मैं अपने माता-पिता को चाचा-चाची कह कर पुकारूं। और इसलिए मैंने बड़े प्यार से, जब सबंधीगण और पड़ोसी लोग हाजिर थे मेरी मां को चाची कह कर पुकारा, तुरन्त ही मेरी माता की आंखों से प्रेम के आंसू झर-झर कर बहने लगे, और दूसरे लोग ठट्ठा कर हसने लगे। इसका असर मुझ पर ऐसा ही पड़ा कि मैं भी बड़ी कड़ वाहट से रो उठा। किन्तु उन लोगों ने मुझको बतलाया कि मेरे असली माता-पिता कौन हैं। जतरा की समाप्ति पर फिर भी, मुझे अपने फूफू फूफा के साथ लौट जाना पड़ा। किन्तु उसके बाद मैं बराबर चिन्ता में रहता था और सोचता था कि मेरे भाग्य में क्या है। फिर भी मुझे अपने फूफू फूफा के साथ रहना कठिन नहीं लगता था क्योंकि मैंने उन्हें प्यार करना सीख लिया था और वे भी मुझे प्यार करते थे।

मैं उनके यहां गाय, बैल और कड़ा चराता था। मैं वह सब काम करता था जो गांव के एक किसान के लड़के को करना होता है। मैं उनसे जो मेरी हम उम्र के ग्रमीण थे, एक ही काम अधिक करता था। बीते समयों में मेरे फूफा एक शिक्षक थे और अब उन्होंने मुझे कुछ पढ़ाना चाहा। मैं सोचता हूं कि इस काम से वे मुझे अधिक दूर न ले सके। सारा दिन मुझे काम करना पड़ता था। हल जोतना, बुनना, कोड़ना, मवेशी चराना या कंधों पर बोझ ढो कर ले जाना पड़ता था और इसलिए प्रत्येक रात मैं अत्यन्त थकित हो जाता था। दिन की समाप्ति पर मेरा फूफा भी थक कर चूर हो जाता था। और इसलिए मेरी पढ़ाई के लिए कोई उचित समय उपलब्ध नहीं था। फिर भी उसने एक काम किया। बेचारे बृद्ध आदमी की, तीन बजे सबेरे से नींद खुल जाती थी। इसलिए अवश्य था कि वह जाग उठे। किन्तु संभवतः उसने यह सोचा कि उसी समय मेरी भी नींद पूरी हो चुकी है, अतएव प्रत्येक सबेरे तीन बजे वह मुझे जगाता था। किन्तु ऐसे समय में मैं पूर्ण निद्रा की अवस्था में रहता था और जब वह मुझे जगाता था तो मैं कुछ बड़-बड़ करता और फिर गहरी

Gossner Mission

नीन्द में सो जाता। ऐसी अवस्था में वह मुझे ढकेलता, पीटता और डांटता और अन्त में सफल हो जाता कि तुलनात्मक दृष्टि से वह मुझे जागृत अवस्था में ले आए। और तब वह अंकगणित में मुझे पहला पाठ पढ़ाता। इसी तरह प्रत्येक भोर को मुझ पर धक्के और डांट पड़ते, बेर-बेर मैं जागता और पौ फटने के पहिले फिर सो जाता। और इस तरह मौखिक रीति से मैं ने सब कुछ सीख लिया। जोड़-घटाव और गुणा-भाग में से कुछ; मैं सोचता हूं कि शब्दों का पहचान करना भी सीख लिया था।

प्रत्येक रविवार को मैं एक दूसरे गांव में गिरजा आराधना के लिए जाता था, और त्योहार के दिनों में भी। मेरे लड़कपन के ग्रामीण जीवन में, मैं स्मरण करता हूं कि ये दिन बड़े आनन्द के थे। इन दिनों में हम लड़के लोग स्वतंत्र और सुखी थे और हसते मुस्कुराते रहते थे।

मेरे फूफू-फूफा ने मुझे अपने यहां ले लिया था कि मैं उनके साथ रहूं और उनके खेतों में उनकी मदद करूँ। फिर भी मैं यह नहीं समझ सकता कि क्यों उन्होंने मुझे स्कूल भेजने की बात सोची। जब मेरी उम्र ग्यारह साल की हुई तो वे मुझे रांची ले आए कि मैं स्कूल में पढ़ूं।

स्कूल में करीब-करीब सभी ठीक चलता रहा। किन्तु मेरी आत्मा में शायद ही घरेलूपन की भाव आई। पहले के कुछ सालों में मेरी जरूरत की सब चीजों का प्रबंध हुआ। किन्तु मेरे फूफा की मृत्यु के बाद, यद्यपि कि मेरी फूफू ने मेरी फीस और अन्य खर्चों के लिए मुझे पैसे दिए, फिर भी वह सब खर्च पूरा नहीं दे सकी। कभी-कभी यह अत्यधिक कठिन हो जाता था कि वह बूझ सके कि मुझे रूपयों की जरूरत थी। एक दूसरा पहलू भी है कि मैं कुछ अवसरों पर आवश्यकता से अधिक पैसा मैं ने उससे लिया। किन्तु इस तरह से जो भी पैसा अधिक लिया गया उसकी रकम नगण्य और छोटी थी। मेरे फूफू-फूफा ने पांच सालों तक मेरी मदद की और इनके अन्त के दो सालों में मेरी बहुत सी आवश्यकताओं की पूर्ति कभी नहीं हुई। मैं यह स्मरण करता हूं कि मेरे पवित्र दृढ़िकरण संस्कार के लिए मेरे पास कुछ भी पैसा नहीं था। मैं एक ऐसे अनाथ के जैसे था जिसका कोई भी मित्र न हो। मैं नहीं जानता था कि मैं क्या करूं, फिर भी इसके बारे में ने किसी को सूचित नहीं किया। मुझे कोई भी भय नहीं लग रहा था। मैंने इतनी अधिक तकलीफ सह चुकी थी और कितने ही अवसरों में मुझे आवश्यक चीजों के बिना रहना पड़ा था, और इसलिए यह तो मेरा साधारण भाग्य ही था। यहां तक कि मेरे पुराने कपड़े भी इतने अधिक फट चुके थे और उस अवसर पर पहिनने के लिए एकदम अयोग्य थे। ख्याल कीजिए कि आनेवाला कल का एतवार पवित्र दृढ़िकरण का दिन है और आज शनिवर के दिन मेरे लिए कोई उपाय नहीं है कि मैं एतवार के वस्त्र का प्रबंध कर सकूं। कदाचित यह रात्रि अधिक प्रार्थना और भटकावा में बीती। एतवार सबेरे मैं एक मित्र के पास गया और मेरी परिस्थिति से उसे अवगत कराया। मैं ने जितना मांगा, उसने उतना दिया। और तब दृढ़िकरण के कुछ घण्टों पूर्व मैंने एक दूकान से रेडो-मेड वस्त्र खरीदे।

जब मैं प्राइमरी कक्षा पास कर हाई-स्कूल में आया, तब मेरे माता-पिता और फूफू-फूफा दोनों तरफ से सब सहायता बन्द हो गया। मैं ने एक साल के लिए मिशन को ओर से छात्रवृत्ति प्राप्त की। दूसरे साल के आरभ होने पर मुझे कुछ समझ नहीं आया कि मैं क्या करूं? कोई उपाय नहीं थे कि मैं अध्ययन जारी रख सकता था। मैं ने कुछ क्षण के लिए भी यह नहीं चाहा कि मैं अपने फूफू के पास लौट जाऊं या अपने माता-पिता के पास। मैं स्कूल में वगैर लक्ष्य के ठहरा रहा। —(शेश अगले अक में)

Gossner Mission

मसीही पारिवारिक जीवन

रेभ० एस० सोय, जो० टी० सी०, रांची

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। परिवार उसके समाज की प्रारम्भिक एवं महत्वपूर्ण ईकाई है। मसीही, यीशु के शिष्यों द्वारा निर्मित नये समाज में निवास करते हैं। अतएव उनके परिवार का महत्व अधिक बढ़ जाता है। मसीही पाविारिक जीवन पड़ोसी तथा परमेश्वर दोनों के प्रति-उत्तरदायी होता है। अतः ये परिवार अपने बच्चों के साथ किस तरह सम्बन्ध और मार्गदर्शन स्थापित करते हैं इसका दूसरों पर प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव पड़ता है।

माता-पिता अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करते हैं और संतान को सारी गम्भीरता के साथ अपने संरक्षण में रखते हैं। उन्हें अपने बच्चों की देखभाल उसी प्रकार करनी है जैसी एक चरवाहा अपने भेड़ों के झुण्ड को देखभाल करता है। उन्हें अपने परिवार का मार्ग-दर्शन, सुरक्षा तथा पालन-पोषण करना है। पिता बुद्धिमता के साथ उनको अनुशासित रखकर उनकी भलाई के लिए उनको प्रशिक्षण देता है।

एक मसीही पिता अपने जीवन के समय, शक्ति और अपने सुख का अपने बच्चों के कल्याण के लिए न्योच्छावर कर देता है। वह यह महसूस करता है कि उसके बच्चे अपने लिए समर्पित परमेश्वर के उपहार हैं। उनकी जिम्मेदारी उसको सौंपी गई है। इस तरह उसकी सेवकाई का प्रथम स्थान उसका परिवार है। बाईबिल में लिखा है 'जो अपने परिवार की चिन्ता न करे वह विश्वास से मुकर गया है और अविश्वासी से भी बुरा बन गया है' (१ तीमु० ५:८)। एक पिता परिवार की चौकसी के साथ-साथ उसकी सुरक्षा का प्रबन्ध करता है। वह अपनी पत्नी के साथ परिश्रम के द्वारा परिवार के लिए भोजन, वस्त्र, मकान और शिक्षा की व्यवस्था करता है।

पिता अपने बच्चों की सिर्फ दैहिक आवश्यकताओं की आपूर्ति नहीं करता किन्तु उनके साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार दर्शाने हेतु वह पर्याप्त समय अवश्य निकालता है। इससे बच्चे माता-पिता का आदर करना सीखते हैं और आज्ञाओं का पालन करने: लगते हैं।

माता–पिता को परिवार के लिए धार्मिक नियम और स्तर निर्धारित करना जरूरी है। इस तरह के मार्ग दर्शन से बच्चों के आन्तरिक पटल पर सुरक्षा की भावना अंकित होती हैं। बच्चों को इस बात से अवगत कराना होगा कि जीवन में 'हां' का जितना महत्व है उतना 'ना' का भी हैं। कुछ ऐसी बातें हैं जिनको कहना और करना सही होता है और ऐसी भी हैं जिनको करना और कहना सही नहीं।

बालक का प्रशिक्षण उसके प्रारंभिक आयु में ही आरंभ हो जाना चाहिए। उसका यह काल उसके चरित्र निर्माण के प्रति अधिक उपयुक्त माना जाता है। प्रभु यीशु मसीह ने सिखाया कि बच्चों के साथ आदरपूर्ण व्यवहार करना है। (मार्क० १०:१४)। कठोर, निर्दय, और अविवेकपूर्ण व्यवहार उन्हें निराश, विद्रोह और अविश्वास नीयता की ओर अग्रसर होने पर मजबूर कर सकते हैं।

अनुशासन परमेश्वर के पवित्र और प्रेमपूर्ण सिद्धांत पर आधारित होता है। परमेश्वर हमें इसलिए ताड़ना देता है कि हम में एक पवित्र और सुन्दर जीवन उत्पन्न हो। यह सच है कि उसकी ताड़ना अक्सर पीड़ादायक हो सकती है परन्तु वह उसके प्रेम की एक आवश्यक प्रक्रिया है। इसी तरह बच्चों के अनुशासन में छड़ी एक तरह की पीड़ा का संकेत है।

Gossner Mission

छड़ो का व्यवहार बच्चों को जखमी करना नहीं किन्तु उनके दुर्गुणों को दूर करना है। यदि माता-पिता अपने बच्चे को आवश्यकता से अधिक प्यार करते और उनके दुराचरण को अनदेखा करते हैं तो वे अभिशाप का कारण बन सकते हैं। बालक के जोवन में अनुशासन का अभाव उसे स्वार्थपूर्ण, अहंकारी और विद्रोही बना सकता है।

अतएव मसीही पारिवारिक जोवन में माता-पिता को अपने बच्चों के प्रति अपनो भावो पीढ़ो के खातिर प्रेमपूर्ण तथा अनुशासनात्मक रूख अख्तियार करना निहायत जरूरो है।

घरबन्धु लेख प्रतियोगिता न० (दो)

विषय : युवा वर्ग में आत्मिक जागृति।

प्रतियोगी कृपया निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें :—

(क) उम्र —१८ से ३० वर्ष।

(ख) शब्द—१५०० से २००० तक लेख की शब्द रचना हो।

(ग) अवधि—अक्टूबर १९९२ ई० से२८ फरवरी १९९३ ई०।

(घ) पता —आप का पूरा पता और उम्र लेख के साथ संलग्न हो।

(च) पुरस्कार—प्रथम : १५०/-रू०
द्वितीय : १००/- रू०
तृतीय : ५० /- रू०

(छ) पुरस्कृत राशि—प्रतियोगिता की पुरस्कृत राशि अनुदान स्वरूप भेंट कर रहे हैं—
रेभ० सुसारन सोय, गोस्सनर थेऑलोजिलक कॉलेज, मेन रोड रांची, बिहार।

अनैतिक की नैतिक

डॉ० राम प्रसाद

जगजोवन ठीक एक महीना पश्चात अपने गांव पहुंचा। गांव पहुंचने पर इस बार न उससे किसो ने हाल-चाल पूछा और न हो दौड़कर किसी ने उसका बैग हो उठाया। हालांकि जगजोवन अपना काम स्वयं करने में विश्वास रखता है फिर भो गांव के लोग उसे काफी मानते हैं इसलिए उसका बैग लगभग छीनते हुए कोई न कोई उसके घर तक अवश्य पहुंचा देता था। वह अपने कंधे में झोला लटकाये और हाथ में बैग लिए अपने घर की ओर तेजो से बढ़ता जा रहा था। गर्मी के दिन थे, दोपहर का समय था, इसलिए धूप तेज थो। बोझ उठाए पैदल चलने के कारण तथा तेज धूप की वजह से उसका शरीर पसीने से लथ-पथ हुआ जा रहा था। अन्ततः पसीना पसीना होते हुए वह घर पहुंचा।

घर पहुंचते ही जगजोवन को हाथ पैर धोने के लिए पानो दिया गया। वह जैसे ही हाथ पैर धोकर खाट पर बैठा तब तक उसको मामो उसके लिए शरबत तैयार कर ले आयो वह शरबत पीकर निश्चित भी नहीं हो पाया था कि उसके कानों में कर्कश आवाज सुनाई पड़ने लगी 'जग-जीवन का नाम बदल कर जोवन लेवा' नाम रखा जाना चाहिए क्योंकि उसने जीवन लेने का ही तो काम किया है। भला किसी की रोजी रोटी पर लात मारी जातो है। ऐसे अनैतिक काय कर समाज सुधारक बना फिरता है॥

उपर्युक्त बातें कहकर भोलू अपने दिल का गुबार निकाल रहा था। निकालता भी भला क्यों नहीं उसके परिवार के लोग भूखमरी के कगार पर पहुंच चुके थे। कहां पचास-साठ की दैनिक आमदनी और कहां बिलकुल कमाई ठप्प।

गांव के पियक्कड़ भी जग-जीवन से मन ही मन बैर-भाव रखते थे चूंकि गांव का एक मात्र

Gossner Mission

शराब बिक्रेता भोलू ही तो था। प्रारंभ में जगजीवन ने भोलू को समझाने का प्रयास किया था कि भाई भोलू गांव के लोगों को असमय ही जहर पिला पिला कर मत मारों। शराब पीना जहर पीने के समान ही तो है पर भोलू कहां मानने वाला था आखिर जगजीवन को वही रास्ता अपनाना पड़ा जो वह नहीं चाहता था अर्थात पुलिस बुलानी पड़ी। पुलिस ने आकर उसके बर्त्तन भाडे तोड़-ताड़ दिए। वह एक हजार रूपये घूस लेकर चलता बना। गांव के नव युवकों को पता चला कि भोलू ने घूस देकर कुछ शराब के घड़े छिपा रखे हैं और पुलिस ने भी उसे अभय दान दे रखा है। नव-युवकों ने जग-जीवन के पास जाकर सारी बातें बता दी। जग-जीवन से रहा न गया कि एक आदमी की तरक्की के लिए सारा गांव बर्बाद हो इसलिए वह नव-युवकों के दाल का नेता बनकर भोलू के घर जा पहुंचा। उसके इशारा पाते ही सभी नव-युवकों ने एक साथ घर में धावा दिया और एक एक घड़ा खोज-खोज कर फोड़ डाला। इस प्रकार भोलू बर्बाद हो गया।

भोलू के बाल-बच्चे भूख से बिलखने लगे। उसकी दुर्दशा देख कर अब गांव के सभी लोग जगजीवन के नेतृत्व में किये गये नशाबन्दी के काम को अनैतिक करार देने लगे थे। इसी बीच भोलू की सबसे छोटी बच्ची जोरों से बीमार पड़ी और दवा के अभाव में मर गयी।

जगजीवन के कानों तक जब यह बात पहुंची तो मन ही मन वह भी अपने आप को दोषी मानने लगा। मानसिक-उद्वेलन की स्थिति में उसका मन बार बार धिक्कारता कि 'नशा बंदी करा कर मैंने ठीक नहीं किया। मैंने नशा बंदी न कराया होती तो शायद भोलू की बच्ची की मौत न हुई होती'। परन्तु उसकी बुद्धि कहती 'नहीं जो कुछ किया गया है ठीक किया गया है'। उसका विवेक भी कहता, ठीक है उसका शराब बिकता रहता तो भोलू की बच्ची असमय ही काल के गाल में न जाती पर यह भी तो शत-प्रतिशत सच है कि शराब बिक्री पर यदि प्रतिबन्ध न लगाया गया होता तो कई लोग नशे में डूबे होते, अपने बीमार बच्चे बच्चियों की चिन्ता छोड़कर कई घरों में चूल्हे तक नहीं जलते चूंकि पति महोदय चावल दाल के बदले पी-पिला कर डगमगाते पैरों से घर घुसते एवं बीबी बच्चों को पीटना शुरू कर देते हैं। इसलिए उसने जो भी किया है ठीक ही किया है।

भोलू हांलाकि रात दिन जगजीवन को गाली देते फिरता है फिर भी जगजीवन के मन में कोई द्वेष नहीं है : वह भोलू के लिए भीतर ही भीतर भलाई की बातें सोचता रहता है और वक्त आने पर भोलू को ऋण दिलवा कर एक 'जसी और गाय' खरीदवाता है। अब भोलू गांव वालों को दूध पिला-पिला कर न केवल स्वस्थ्य बना रहा है बल्कि उसने अपनी आर्थिक स्थिति भी मजबूत बना ली है।

अनुरोध

रचनाकारों से करबद्ध अनुरोध है कि अपनी-अपनी रचनाएं शुद्ध एवं साफ साफ अक्षरों में लिख भेजें। अन्यथा छपाई में देर हो सकती है।

धन्यवाद।

प्रोमोटर

खीस्त-जयन्ती संबंधित रचनाएं अक्टूबर माह तक लिख भेजें।

Gossner Mission

शील आज कितना प्रासंगिक

डा० एन० कोनगाड़ी

वर्त्तमान जगत में सर्वत्र विसंगतियां देखी जा रही हैं. न्याय की जगह अन्याय, नीति के स्थान पर अनीति, सुरक्षा की जगह असुरक्षा, ईमानदारी की जगह बेईमानी, आदर की जगह अनादर, विश्वास की जगह विश्वासघात, शांति की जगह आतंक, प्रेम की जगह घृणा और सद्-भावना की जगह ईर्ष्या-द्वेष आदि का साम्राज्य है। सभ्यता की होड़ में आगे निकल जाने की मानव की महत्वाकांक्षा मृगतृष्णा हो तो है। मरू-भूमि में जल की तलाश में भटकता मृग अन्ततः अपने प्राणों से हाथ धो बैठता है। आज सृष्टि का सर्वश्रेष्ट प्राणी मानव विवेक शून्य होकर पशुवत् आचरण करने लगा है। मनुष्य का मनुष्य मात्र पर विश्वास नहीं रह गया है, यहाँ तक कि व्यक्ति अपनी पहचान भुला बैठा है वह अपनी नजर में आप गिरकर अधं-पतन के कंगार पर खड़ा है।

प्रश्न ये उठता है कि हम अपने टूटते मानव मूल्यों की रक्षा कैसे करें? प्रतिकूल परिस्थितियों में कर्त्तव्य का निर्धारण कैसे किया जाय? हमारी यह चेष्टा होनी चाहिए कि जीवन के हर क्षेत्र में सत्य का सहारा लेकर, शिवं-तत्व या कल्याण-को लेकर चलते हुए सौन्दर्यं-तत्व का उद्घाटन करें।

शील एवं स्वभाव मनुष्य की निजी प्रकृति है। स्वभाव अच्छा या बुरा हो सकता है किन्तु 'शील' या सदाचरण मानव-स्वभाव का विकसित एवं सुसंस्कृत रूप है। यह व्यक्ति के उत्तम आचरण का बोध कराता है। शील आत्म विस्तार कराता है—अपने और पराये का भेद मिटाकर सामूहिक हित का मार्ग प्रशस्त करता है। यह जितना बुद्धि की विशेषता का परिणाम नहीं उतना हृदय की संवेदना एवं करूणा का परिणाम है। जिससे द्रवित होकर मानव लोक-कल्याण की भाव-भूमि पर उत्तर आता है।

सदाचार के मार्ग पर चलना आसान नहीं, किन्तु इसका सहारा लेकर चलना जीवन मूल्य है जिसे मूल्य चुकाकर खरीदा नहीं जा सकता। यह सोना चांदी या जेवर से बढ़कर अमूल्य है, प्राण देकर भी इसकी कीमत नहीं चुकाई जा सकती। आवश्यकता इस बात का है कि हमें निजी स्वार्थ से ऊपर उठना होगा, औरों की बुराई पर उगली उठाने के बदले अपने अन्तर में निहित बुराइयों की जड़ काटनी होगी। हमें ज्ञान भक्ति एवं कर्म की त्रिवेणी में स्नान कर चित की निर्मलता बनाए रखने की जरूरत है।

मन में परमेश्वर का भय मानकर चलना ज्ञान का मार्ग है, यही मोक्ष या मुक्ति का प्रवेश द्वार हो सकता है। अपने सारे हृदय से परमेश्वर का पूजन भक्ति की राह है। भक्ति तर्क नहीं वरन् विश्वास का विषय है। इसी तरह अपनी सारी शक्ति से परमेश्वर से प्रेम रखना कर्म है। सम्पूर्ण ज्ञान एव भक्ति कर्म के बिना निष्फल है। यह देखते हुए 'शील' या सदाचरण की प्रासंगिकता समझी जा सकती है।

पूर्ण मानव की कल्पना निराधार है, लेकिन सदाचरण की दिशा में उठाया गया मानव का हर कदम प्रशंसनीय है, मात्र गिरजाघरों, मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारों में उपस्थिति पर्याप्त नहीं हैं। हम जहां भी हैं, जैसे भी है। हम जहां भी हैं, कीचड़ में खिलने वाले कमल की नाई बने तभी हमारा जीवन विधाता को ग्राह्य होगा। ऐसा होने पर ही विभिन्न जाति सम्प्रदाय वर्ग के लोग ही नहीं अपितु विभिन्न राष्ट्रों के लोग अपना नैतिक विकास कर सकेंगे। दुर्बल राज्यों पर शक्तिशाली राज्यों के अधिपत्य न होगा, और यह युग ध्वंस का नहीं, नव निर्माण और विकास का युग बन सकेगा।

Gossner Mission

बारहवां वार्षिक द० पू० अंचल युवा संघ सम्मेलन दिनांक २५-५-९२ से २६-५-९२ को स्थान मरचा मण्डली में सम्पन्न

रेभ० एम० कन्डुलना, युवा निर्देशक खूंटी

विगत वर्षों की तरह इस वर्ष भी १९९२ ई० को दिनांक २५-५-९२ से २६-५-९२ तक १२ वां वार्षिक द० पू० अचल युवासंघ सम्मेलन बड़ी धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। इसमें करीब दो हजार से अधिक लोगों की उपस्थिति रही। इस सम्मेलन में विशेष अतिथि एवं उपदेशक के रूप में निम्नलिखित थे। प्रमुख अध्यक्ष पा० सी० एस० आर० तोपनो रांची, पा० डा० सी० के० पॉल सिंह बी० एल० निर्देशक अंचल अध्यक्ष पा० एम० बरजो खूंटी, युवा सलाहकार पा० जे०-एम० तोपनो श्री एम० ईंदवार जमशेदपुर अध्यक्ष पा० एस० सुरिन टकरमा, श्री बोवस कन्डुलना राँची यूनीवर्सीटी कोचचर श्री अब्दुलमेनान कमन्टेटर कपीलास प्रचारक पावल कन्डुलना टकरमा (बिरमित्रापुर) इनके अलावे अन्य विशिष्ट जन लोग भी थे। सम्मेलन का उद्घाटन उपाध्याक्ष पा० एस० सुरिन टकरमा के द्वारा हुआ। मरचा मण्डली के भाई बहनों द्वारा भव्यरूप से अतिथियों एवं भाई बहनों का स्वागत किया गया। पा० साहब ने अगुवाई के लिए वचन (उत्प० ३:६ एवं नी० व० ३:५-६) पदों को लिया।

वे उपस्थित जवान युवति एवं माता पिताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि हम ईश्वर के अनुग्रह से सम्मेलन के कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिए दूर दराज एवं निकट सभी स्थानों से आये हुए हैं। ईश्वर की दया एवं आशीष द्वारा यह सम्मेलन सफल होवे। 'हे आदम तू कहां है'? यहोवा प्रत्येक को खोजता है। अपने जीवन को सफल बनाने के लिए अपनी बुद्धि का सहारा नहीं लेना है, पर उसी पर सारी आशा और भरोसा रखना है। हम उनकी ज्ञान बुद्धि को नहीं जान सकते हैं परन्तु हम उन्हीं से सीख सकते हैं।

सुलेमान लोगों के बीच में अगुवाई के लिए यहोवा से बुद्धि मांगा, हम भी उन्हीं से बुद्धि मांगें तथा उनकी महिमा प्रकट करने सकें। वही हमारा मार्ग दर्शक है वही हमारा उपाय बतलाएगा उन्हीं की अगुवाई में हम चलें।

१ वर्त्तमान युवा पीढ़ी की आवश्यकताएं— रेभ० जे० एम० तोपनो, बुड़जू इलाका चेयमेन एव युवा सलाहकार :—मूल आवश्यकता रोटी, कपड़ा तथा मकान हैं। परन्तु जैसे जैसे सभ्यता की बढ़ती हुई लोग रोटी के साथ साथ अन्य प्रकार के वस्तुओं को उपयोग में लाने लगे, जैसे कपड़ों के अनेक डिजाईन बनाये जाने लगे एव मकान भी अनेक तरह के कच्चे या पक्के बनाये। इन बातों के ऊपर में धर्म आता है। जो व्यक्ति आध्यात्मिकता को सीखा तो वह सही मनुष्य बन सकता है। आज युवा पीढ़ी धर्म, कपड़ा, मकान आदि की चिंता नहीं करती हैं चूंकि उनके लिए माता पिता ही करते हैं। सारी सुविधा उनके माता-पिता ही उन्हें देते हैं।

क) ईश्वर के वचन की आवश्यकता :— आधुनिकता पर हम अपना नजर डालें, सभी दुनियां में व्यस्त हैं। दुनियां में रहने के लिए तथा बेहतर जीवन जीने के लिए भौतिकवाद पर आगे बढ़े हैं सभी प्रतिदिन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए चिंतित हैं। भौतिकवादी होने से केवल अपना ही चिन्ता करते हैं। केवल भौतिकवादी हैं तो मनुष्य को संकट में डाल दिया जाता है तथा उनके बीच अनेक बुराईयां आ सकती हैं। गलत व्यवहार से धन अर्जन करना चाहते हैं एक देश दूसरे देश के साथ लड़ता है क्यों?

Gossner Mission

केवल अपनी सुविधा, पद एवं स्वार्थ के लिए। भौतिकवाद से बढ़कर धर्म है, जिसमें मनुष्य सही जीवन प्राप्त करता है।

युवक-युवति आगे बढ़ गये हैं वे ईश्वर के वचन से रहित हैं। ईश्वर के वचन के बिना खाली घड़ा के समान जवान युवति हैं।

ख) स्वास्थ्य एवं सुडौल शरीर की आवश्यकता :—पढ़े लिखे परिवार चाहते हैं कि अधिक से अधिक बच्चे सुन्दर एवं सुडौल बनें। चकि जिसका शरीर जितना सुन्दर रहता है उसको लोग अधिक पसन्द करते हैं। परन्तु दूसरी ओर जवान शराब के कारण बिगड़ रहे हैं। हम अपने शरीर को सुन्दर बनाने के लिए ध्यान दें।

ग) सुबुद्धि की आवश्यकता :—सभी पढ़े हैं परन्तु दुनियां के सभी सुन्दर बुद्धि को खो देते हैं। ईश्वर का भय मानना बुद्धि का आरम्भ है। सुलेमान न्याय के लिए बुद्धिमान था। हमारे लिए सुबुद्धि कलोशा की सेवा करना है।

घ) रोजगार तथा स्वरोजगार की आवश्यकता :—दुनियां में सभों को रोजगार की आवश्यकता है। यदि नौकरी नहीं मिली तो स्वरोजगार की आवश्यकता है। चूंकि माता-पिता जीवन भर लड़के बच्चों का लालन पालन नहीं कर सकते हैं। स्वरोजगार के लिए हमें प्रयत्नशील होनी चाहिये।

ङ) विश्वस्त दोस्त और जीवन साथी :—विश्वस्त दोस्त की आवश्यकता है। वैसी जीवन साथी होने चाहिए, जिसके साथ विचार मिलता जुलता हो, वह पुरूष को जीवन जीने के लिए उपाय बताने वाली हो। माता पिता जीवन साथी खोज देते हैं, परन्तु धीरजता के साथ जवान युवति को रहना चाहिए जल्दी बाजी नहीं करनी चाहिए।

२) हे आदम तू कहां है ? (उत्प० ३:९)

रेभ० एम० बरजो, द० पू० अंचल खूंटी—परमेश्वर मनुष्य को ढ़ूढ़ते हैं वह जीवित परमेश्वर भटकने वालों को ढूढ़ता है। विद्वानों ने कहा है—Christianity is not a religion but a revelation. परमेश्वर मनुष्यों को अपनी संगति में रखने के लिए प्रकाशन द्वारा मनुष्यों के बीच में चला आता है। आदम का अर्थ पूरे विश्व के मनुष्य अंग्रेजी में Man, मुंडारी में 'होड़ो' खड़िया में 'लेबु' तथा कुड़ुख में 'अलारो' कहा जाता है। ये मनुष्य परमेश्वर के सनातन के ऊपज हैं। वह मनुष्य को दूसरे जीव जन्तुओं से भिन्न बनाया।

भ० सं० ८:४-५ मनुष्य का क्या स्थान है हम अपने मूल्य को पहचानें हम परमेश्वर से थोड़ा ही कम हैं। हम उसकी महिमा के लिए बनाये गए तथा मानव समाज की सेवा के लिए सृष्टि कर्त्ता ने हमें रचा है। इस सम्बन्ध में 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' कथन स्पष्टीकरण होता है। हम अपने जिम्मेवारियों को पहचानें सृष्टि की रक्षा करना, सृष्टि का विकास करना, हमारा कर्त्तव्य काम है। मनुष्य कहां है? रोमी पात्री १।१८-३२ पद वह बुद्धि और ज्ञान से कहां चला गया वह धीरज और अनुग्रह में प्रगट होता है। विज्ञान और प्रशासन के द्वारा मनुष्य की सुरक्षा नहीं है, परन्तु मनुष्य की सुरक्षा केवल यीशु और कलोशा है, अन्त में Chritianity के द्वारा से ही शान्ति कायम हो सकेगा।

३ युवा वर्ग के स्ववलम्बन की दिशाएं :—प्रमुख अध्यक्ष पा० सो० एस० आर० तोपनो रांची स्ववलम्बनता आदम-हवा को मिला कि बाटिका में वे काम करें, परुन्तु दोष के कारण उनको निकाल दिया गया, दोष के बाद वे अपने काम से निकलना चाहे। Sin, Guilt के कारण आदम को श्राप दिया गया, कि भूमि तुम्हारे लिए श्रापित है। बहुत अधिक परिश्रम करने के बाद भूमि को ऊपज खायगा। यहोवा ने स्त्री से कहा

Gossner Mission

कि बड़ी दु:ख और पीड़ा के बाद बालक देखेगी। आदम हवा के दो बच्चे होते हैं, कैन खेती बारी करता है और हबिल भेड़ बकरी चराता है वे एक प्रकार से स्ववलम्बी पेशा उपजाते हैं। हमारे युवा वर्ग के लोग किस तरह स्ववलम्बन हो जाए, वे अपने पैरों पर खड़े हो जांए।

क) परमात्मा पर भरोसा।

ख) आत्म भरोसा।

क) परमात्मा पर भरोसा :—परमेश्वर पर हमारा भरोसा उचित रीति से नहीं है। परमेश्वर पर हमारा भरोसा होगा तभी ठीक दिशा में जा सकते हैं। स्वलम्बन परमेश्वर पर भरोसा रखने से होता है। मनुष्य अपने आप सिरज नहीं गया परन्तु परमेश्वर ने सारो सृष्टि की रचना की। आदम और हवा दिशाविहीन हो गये।

ख) आत्म भरोसा :—किसी व्यक्ति पर अपने आप में आत्म भरोसा नहीं है तो वह किसी काम में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता है। चूंकि वह सताहट, दु:ख, तकलीफ में संदेह करता है वह आत्म भरोसा के बिना आगे नहीं बढ़ सकता है। वह थोड़ी बात में डर जाता हैं तो परमेश्वर पर दावा नहीं कर सकता है। मनुष्य को अपने आप खड़ा होना है १८ वर्ष की उम्र के बाद स्ववलम्बी हो जाना है, किसी पर भरोसा नहीं रखना है। स्ववलम्बी का उदाहरण जर्मनी में छात्र छात्राओं को कम उम्र में ही स्ववलम्बन की शिक्षा में निर्देशन दिया जाता है। इसी तरह हम भी भारतीय कलीसिया में छात्र-छात्राओं को स्ववलंबन की दिशाओं के लिए संकेत करें।

४) कलीशा में रचनात्मक कार्य की आवश्यकता :—श्री एम० ईन्दवार जमशेदपुर—प्रत्येक मंडली, पेरिस में पुस्तकालय की आवश्यकता है, समय-समय पर विचार गोष्ठी होनी चाहिए, आत्मिक भूख प्यास को मिटाने के लिए वचन का अध्ययन करना चाहिए। हमारे पूर्वज वचन का गहराई से अध्ययन करते थे तथा आत्मिक भूख-प्यास को मिटाने के लिए प्रयत्नशील रहे। सही माने में आत्मिक विकास हो, संडे स्कूल का पाठ्यक्रम पूरे अचल में समान हो। १ पत० ५; बिना दबाव से बच्चों को पढ़ायें। परमेश्वर के वचन में दृढ़ बनें।

१) बौद्धिक विकास :—प्रत्येक जवान-युवातियों को जोवन में क्या बनना चाहते हैं एक लक्ष्य को सामने रखकर आगे बढ़ना चाहिए तभी कोई जवान वा युवति स्वलम्बी बन सकवे हैं। हमारा कर्त्तव्य पूरे झुंड की रखवालो करना है युवक युवतियों को रोजगार पाने में सहायता करना।

प्रत्येक पेरिस एवं इलाकाओं में Information Center होनी चाहिए, जिससे कहां-कहां Vacancy आवश्यकता निकलता है उसे प्रत्येक जानकारी रख सकें।

२) शारोरिक विकास :—हमारे जोवन में स्वास्थ्य का होना बहुत ही आवश्यकता है स्वास्थ के बिना मनुष्य कुछ नहीं कर सकता है। उसके लिए सभी को सुबह शाम व्यायम करना है युडो, कराटं और कुश्ती का व्यायम स्वास्थ्य है। बंगाली जन समूह के क्षेत्रों में बच्चे बाल्यवस्था से ही क्लबों मे करना आरम्भ कर देते हैं। सामाजिक सुख दु:ख में सम्भागी होना आवश्यकता है, एक दूसरे की सहायता करना प्रत्येक मसीही भाई-बहनों का कर्त्तव्य है। इसके अलावे इस सम्मेलन में हॉकी प्रतियोगिता गोविन्दपुर इलाका बनाम कोरोंजो इलाका के बीच में था। गोविन्दपुर इलाका ३-० से आगे रहे। इस अवसर पर रिफरी श्री बोवस कन्डुलना रांची यूनीवर्सी का था। तथा टकरमा इलाका का श्री पावल प्रचारक था। श्री अब्दुल अहमद मेमान कपौलास ने सुन्दर रीति से कमनटेटर का काम किया। बैबल प्रतियोगिता का प्रश्न पा० एम० तोपनो ने किया। बैबल प्रतियोगिता में क्रमशा बोकारो, सिंहभूम तथा टकरमा इलाका रहे। सभी संमेलन में उपस्थित भाई बहनों एवं कलोसिया के अधिकारियों को धन्यवाद देते हुए समाप्त।

Gossner Mission

गतांक से आगे

खुटीटोली इलाका युवासंघ

सचिव—एल० केरकेट्टा

कृषि विज्ञान क्या है ? इस विषय पर श्री जुनुल कन्डुलना कृषि - निर्देशक रांची ने प्रकाश डाला। परमेश्वर ने इस सृष्टि को बहुत ही सुन्दर बनाया था। इसको बनाने के बाद इसकी रक्षा का भार मनुष्य को दिया। उस घड़ी परमेश्वर ने इस सृष्टि को ऐसा बनाया कि सभी जंगली एवं पालतू पशु खुशी के साथ रहते थे। आज हम लोग कलीसिया में रहते हुए परमेश्वर की इच्छा पूरा करें, जहां जाएं लोग देखकर जाने कि हम लोग मसीह के जन हैं। परमेश्वर ने अपनी सृष्टि के विषय में कहा कि यह अच्छा है उन्होंने सभी जीवों को सन्तुलित बनाया था आपस में सभी मेल मिलाप से रहते थे।

पाप में गिरने से मनुष्य की स्थिति बिगड़ गई। जनसख्या की वृद्धि भी एक बड़ी समस्या है। आज कल हम देखते हैं सभी ओर मोटर कार भरे पड़े हैं इससे वातावरण दूषित हो रहा है। वातावरण दूषित होने से वर्षा भी अनिश्चित हो गयी। बस, ट्रक, कलकारखाना आदि बने जिनसे वातावरण दूषित हुआ। साथ ही आज हमने जंगलों को काट डाला। ये जंगल कट जाने से हमें शुद्ध वायु का मिलना बन्द हो गया। आज पौधों को काटने के बाद इस संसार में कार्बन-डायआक्साइड गैस भर गया। वैज्ञानिकों के अनुसार १९९२ में सब से अधिक गर्मी पड़ेगी क्योंकि सभी जगह काबन-डायआक्साइड गैस की अधिकता है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि २०५० ई० के लगभग उत्तरी ध्रुव पर जहां पर वर्फ जमा रहता है पिघल जाएंगी फलतः समुद्र का स्तर ऊपर आ जाएगा। हमारे देश के कुछ बड़े शहर कलकत्ता, बम्बई आदि समुद्र में डूब जाएंगे। हमने वृक्ष काट डाला फलतः हमारे पशुओं को भी खाने की वस्तुएं नहीं प्राप्त हो रही है। हमारे पशुओं को समुचित आहार नहीं मिल रहा है।

आज समय की पुकार है कि आज हमें कृषि के बारे सोचने की आवश्यकता है। उन्होंने विचार व्यक्त किया कि कृषि को भी कलीसिया का एक अंग (कार्य) बनाना चाहिए। जिसमें हम सभी लोगों को सहयोग देना चाहिए। छोटानागपुर और संथालपरगना के लोगों को सरकारी नौकरी मिलना संभव नहीं है। सरकार की नीति भी है कि लोग अपने स्तर में उद्योग स्थापित करें और जीविका चलाएं।

(शेष अगले अंक)

सूचना

गोस्सनर एव बुनियादी प्रशिक्ष केन्द्र गोविन्द-पुर में अध्ययन के लिए (नया सेसन १९९३-९५) नया विद्यार्थियों को आमंत्रित किए जाते हैं। प्रवेश फर्म भर कर १५ नोवेम्बर ९२ तक इच्छुक भाई-बहिन जमा कर दे। ध्यान रहे कि उनके योग्यता मेट्रिक फेल से अधिक होना चाहिए। अधिक जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से सम्पर्क करें।

आप सभों का विश्वास
Rev. J. Dang
Gossner Bible Awam
Buniyadi Prashikshan
Kendre
GEL Church Govindpur
Dist Ranchi—835234.
Bihar—India

Gossner Mission

M/S MAHAN CONSTRUCTION

Civil & Mechanical Contractor & Order Suppliers

★★★★
★★★
★★
★

RESALDAR NAGAR DORANDA
C/o K. S. S. Office
G. E. L. Church Compound
RANCHI—834001 (Bihar)

ज्ञापांक—१५/९२ सेवा में,
प्रोमोटर घरबन्धु, जो० ई० एल० सी०, रांची।

महाशय,

सादर योशु सहाय।

महाशय से सादर निवेदन यह है, कि निम्नांकित विषय को अगामी माह की मासिक पत्रिका में छापने की कृपा करें :—

विषय :—मध्य अंचल जो० ई० एल० सी० सेवा क्षेत्र की घोषणा।

मध्य अंचल खुटीटोली के अन्तर्गत करजोरांड़ मण्डली में काफी असें से एन० डब्लु० जो० ई० एल० सी० का बोलबाला बना रहा, किन्तु हर्ष की बात है, कि दिनांक २५-८-९२ को खुटोटोली के अधिकारियों को बुलाया और अपनो लेख के अनुसार मध्य अंचल से सेवा ग्रहण किया, और भविष्य के लिए भी अपने आप को सौंप दिया
जिनमें कुल घर परिवार संख्या—२७, बपतिस्मा संख्या करीब—१३८, दृढ़िकृत संख्या—६९। प्रभु परमेश्वर इन्हें एक विश्वास में बने रहने में सहायता करे। आप उनके लिए प्रार्थना करें।

धन्यवाद।

आप का विश्वास भाजन, पा० एस० केरकेट्टा,
(अध्यक्ष) मध्य अंचल खुटीटोली

कृपया पत्र व्यवहार या मनीआर्डर भेजते वक्त अपना ग्राहक न० अवश्य लिखें।

एडिटर, घरबन्धु।

Edited & Published by Rev. C S. R. Topno Pramukh Adhyaksh on behalf of the G. E. L. Church and Printed by Mr. Hans Roshan Surin at G. E L. Church Press Main Road Ranchi

Gossner Mission

धर्मबन्धु

रजिस्टर्ड न० आर० एन० सी० ४

वार्षिक मूल्य १४ रु०

एक प्रति मूल्य १ रु० ५० पै०

वर्ष— १०६ राँची, अक्टूबर १९८६ संख्या न०— १०

अक्टूबर

१९८६

शान्ति

वर्ष

विशेषांक

अक्टूबर

१९८६

शान्ति

वर्ष

विशेषांक

वे ये बातें कह ही रहे थे कि वह आप ही उनके बीच में आ खड़ा हुआ और उन से कहा, तुम्हें शांति मिलें ।'

(लूका २४: ३६)

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

EDITOR & PUBLISER

Pramukh Adhyaksh

Rev. S Mohan MG.

ASSOCIATE EDITOR

Rev. S. Toppo

PROMOTER

Rev. Saban Martin Topno

EDITORIAL COMMITTEE

1 Mrs. M. Minz
2 Rev. Cyril Hembrom
3 Srimati Sisi Baha Topno

सूचनाः— स्मरण रहे कि लेखकों के भावों के लिए सम्पादक व सम्पादक मंडल जवाबदेह नहीं रहेगा।

घरबन्धु में विज्ञापन छपवाने की दरें

पिछले आवरण का बाह्य पूर्ण पृष्ठ	१७५)
,, ,, ,, अर्द्ध पृष्ठ	९०)
,, ,, ,, अन्तः पूर्ण पृष्ठ	१५०)
,, ,, ,, अर्द्ध पृष्ठ	८०)

x x x

अन्दर के पूर्ण पृष्ठ	१२५)
,, ,, ,, अर्द्ध पृष्ठ	७०)
,, ,, ,, एक चौथाई पृष्ठ	४०)
,, ,, ,, दो तिहाई पृष्ठ	९०)
,, ,, ,, एक तिहाई पृष्ठ	५०)

सूची

इस अंक में

सम्पादकीय
पाठकों की आवाज २
उपदेश की तैयारी ३

लेख—शान्ति वर्ष कैसे मनाया जाय ?
प्रथम पुरस्कृत लेख ५
द्वितीय पुरस्कृत लेख ९
तृतीय पुरस्कृत लेख १२

कविता—प्रथम पुरस्कृत कविता १५
द्वितीय पुरस्कृत कविता १६
तृतीय पुरस्कृत कविता १६

नारा— प्रथम पुरस्कृत नारा ४
द्वितीय पुरस्कृत नारा ८
तृतीय पुरस्कृत नारा ८

Gossner Mission

संयुक्त राष्ट्र-संघ की घोषणा का हम स्वागत करते हैं जिसने सन १९८६ को शान्ति वर्ष मनाने का निश्चय किया है। गोस्नर वर्ष की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका 'घरबन्धु' अक्टूबर १९८६ अंक अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति वर्ष विशेषांक के रूप में शान्ति का संदेश के साथ हर घर में प्रवेश कर रही है। इस अंक में इनामी प्रतियोगिता (पद्य) के पुरस्कृत निबंध, कविता एवं नारा प्रकाशित कर शान्ति वर्ष मनाने का प्रयत्न किया गया है। बिहार के सिंचाई राज्य मंत्री माननीय श्रीमती सुशीला केरकेट्टा के हम आभारी हैं जिन्होंने इनामी-राशि भेंट देकर न केवल रचनाकारों की हौसला को बढ़ावा दी है पर गोस्नर वर्ष की मासिक हिन्दी पत्रिका द्वारा राष्ट्र भाषा की गारिमा पर हम सब के हृदय को पुल्लकित की है। उन सभी पनपते साहित्यकारों को बधाई दी जाती है जिन्होंने अपने रचित निबंध, कविता एवं नारा को घरबन्धु पत्रिका में प्रकाशन हेतु भेजकर साहित्य के क्षेत्र में बहुत बड़ी योगदान दिए हैं। अपने देश एवं राज्य में सामाजिक, धार्मिक, नैतिक एवं राजनैतिक पहलुओं पर जन-मानस के जीवन में उठती-गिरती हुई दशा का दर्शन राष्ट्र भाषा हिन्दी साहित्य के माध्यम से ही अवलोकन किया जा सकता है जिस पर हर कौम अथवा साम्प्रदायिक एकता की कसौटी में हम कसे जा सकते हैं। इसलिए कि शान्ति वर्ष मनाते हुए अशान्त के क्षण में भी देश एवं राज्य में शान्ति का अभियान चलाने पर शान्ति की आत्मा हम पा सकें। विश्व शान्ति दिवस मनाने के लिए विभिन्न सामाजिक, धार्मिक राजनैतिक संस्थाएं अपने अपने रंग-ढंग पर इस वर्ष में शान्ति वर्ष आयोजित करते हुए निर्धारित माह दिन, समय पर सैकड़ो, हजारो, लाखों की तादाद में जुलूस[1] में सहभागी हो रहे हैं। इस जुलूस में पॉति-पॉति सहभागियों के उठे हाथों में जगमगाते मशालों की कतार के साथ ही साथ स्कूटर कार मोटर साईकिलों की पॉति शान्ति का संदेश दिए आगे बढ़े चले जा रही है। हर मानस के अन्तरात्मा में शान्ति की छोटी सी छोटी किरण भी समा जाएं तो विश्व वास्तव में शान्ति पा सकेगी। फलतः १९८६ में देश के कई छोटे-बड़े शहरों कस्बों में विश्व शान्ति दिवस मनाने के लिए अपने तौर तरीके से आयोजित किए जा रहे हैं। हम विश्व के मसीही समूह इस विश्व शान्ति दिवस के लिए परमेश्वर पिता से प्राथना करें कि शान्ति का राजकुमार 'ईसा' जूलूस में हमारा अगुवा रहे जो शन्ति वचन से हर मानव के लिए संदेश देते हुए कहता है—" तुम्हें शान्ति मिले "।

सम्पादक

Gossner Mission

पाठकों की आवाज

जवाब हमारे ।

आवाज :— खीष्ट आलास डहंगा चुरदा पेरिस रानिया मंडली से :—

आदरनीय सम्पादक जी ! नमस्ते ! मुझे अगस्त महीना का घरबन्धु पत्रिका जैसे ही हाथ लगा वैसे ही इसे खोलकर पाठकों की आवाज और जवाब पढ़ा। पढ़ कर मुझे खुशी हुई। मानगो एवं जमशेदपुर पेरिस के भाई-बहनों को तथा सभी लेखकों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। जमशेदपुर पेरिस चेयरमेन पादी जे० लुगुन तथा पंचगणों के अथक परिश्रम का ही फल है। क्योंकि ८०० परिवार संख्या ५०० घरबन्धु प्रतियाँ लेकर वार्षिक ग्राहक अनिवार्य रुप से बने हैं। इस तरह से कलीसिया को एक पेरिस से वार्षिक चन्दा ७०००) रु० मिल सकता है। इसके द्वारा हमारी ही गोस्नर कलीसिया की सेवकाई होती है। क्योंकि घरबन्धु पत्रिका हमारी कलीसिया की रीढ़ है। इसकी उम्र भी १०६ वर्ष है। इसके माध्यम से कलीसिया की आर्थिक आध्यात्मिक ऐतिहासिक ज्ञान घर बैठे मिलती है। आज अन्य पेरिस एवं मंडली के भाई-बहनों, पाद्रियों, तथा पंचगणों के लिए क्या अभी तक इस विषय पर आँख नहीं खुली है।

जवाब :— भाई डहंगा जी, पेरिस एवं मंडली के प्रति आप के हृदय में सेवा की जो भावना है वही पत्रिका के प्रति भी सम्भव है जिस पर आप का नजर अन्दाज है। गोस्नर कलीसिया के लिए जमशेदपुर पेरिस हमें प्रेरणा दे रही है। आप का अन्दाज सही है। उनके पास रकम है ऐसी बात सिर्फ नहीं पर घरबन्धु पत्रिका द्वारा मसीही सेवकाई की महत्व को वे जानते हैं 'मैगेजिन मिनिस्ट्री' पत्रिका द्वारा मसीही सेवकाई भी कलीसिया में हमारा एक खास कर्त्तव्य है यदि हर घर के लोग इस कर्त्तव्य को पहचान लेंगे तो अच्छी-अच्छी पत्रिकाओं से परिचय मिलेगी। शुद्ध बौद्धिक आहार मिलेगी। मानसिक स्वथ्य के साथ आत्मिक मजबूती होगी। दूषित मानसिक विचारों में भरे रहने से बच सकते हैं। चुरदा पेरिस या अन्य सभी पेरिसों से प्रयास जारी रहे कि अधिक से अधिक परिवार घरबन्धु पत्रिका से लाभ पाएं। चूँकि मानसिक दुःख की कीड़ा हमारे मनों में न जन्मे। हमारी आशा है, चुरदाग पेरिस एवं रनिया मंड़ली के भाई-बहनों पाद्री तथा पंचगण अवश्य हर घर में घरबन्धु पत्रिका रखेंगे। यदि चुरदा पेरिस में ९०% नब्बे प्रतिशत परिवार घरबन्धु पत्रिका के वार्षिक ग्राहक बन जाएंगे तो अवश्य अन्य पेरिस एवं मंडिलियों में भी वार्षिक ग्राहक बनने में विलम्ब नहीं होगी। भाई डहंगा जी आप के सेवा भावना एवं सु सलाह के लिए धन्यवाद।

श्री वसंत कुमार बरला, जी० ई० एल० चर्च कम्पाउन्ड बाबूलेन रांची, द्वारा रचित घरबन्धु ईनामी प्रतियोगिता (एक) में प्रथम स्थान प्राप्त २००) रु० से पुरस्कृत यह निबंध प्रस्तुत है।

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

त्रिनि० के बाद २४वाँ एतवार

१ थिस्स० ५:१४-२४

मसीही विश्वास के द्वारा एक मंडली की संगति होती है। मंडली में अपनी आत्मिक चिन्ता के साथ अन्य लोगों की भी चिन्ता करते हुए आत्मिक प्रोत्साहन दिया करें।

देखें २ थिस्स ३:६, ११, १५, यशा० ५७:१५ नीति० १४:१६, २०:२२, १ कु० १३.४, ६:७, १४, १, २६, ३०। रोमी १२:१२, १७, १ पितर ३:६, मत्ती ५:३६-४१, फिलि० ३:१, ४:४, इफि० ३:२०।

विषय :- विश्वासी मसीही स्वभाव।

१ विश्वासी मसीही स्वभाव में बढ़ते जायं :— मसीही विश्वास के साथ स्वभाव और जीवन एक साथ होना आवश्यक है। यह परमेश्वर की संगति में सम्भव है। मसीही हो जाना यथेष्ट नहीं है, पर मसीह के संबंध में ईश्वर के साथ बढ़ते जाना आवश्यक है। विश्वासी मसीही स्वभाव में डील-डौल में बढ़ते जाएं अपने व्यक्तिगत जीवन के मसीही बुलाहट में सिद्ध होते जाएं।

२ पड़ोसी मसीही संबंध में बढ़ते जाएं :— हमारा संबंध ईश्वर से और उसी तरह पड़ोसी मसीही विश्वासी संबंध बना रहे। मसीही विश्वास में पड़ोसी की चिन्ता करते हुए आत्मिक प्रोत्साहन में उन्हें बढ़ाते चले। पड़ोसी के साथ-साथ मसीही बुलाहट को निरन्तर स्मरण करते हुए उसमें स्थिर रहे। मंडली में नित्य जागृत रहे कि मसीह के पुनरागमन तक विश्वास में स्थिर रहें।

समाप्ति :— हम नित्य विश्वासी मसीही स्वभाव में बढ़ते चले और पड़ोसी के साथ संबंध में भी विश्वासी मसीही स्वभाव रखें।

त्रिनि० के बाद २५वाँ एतवार

रोमी ८: १-६

मसीह में जीवन आरम्भ करने से नया जीवन आरम्भ होता है और नयी आशीषें प्रत्यक्ष होती है। दंड आज्ञा के छुटकारे के साथ ही साथ साथ पवित्रात्मा का दान भी मिलता है।

देखें रोमी० ८:२१-३९, २:२७, ७:२१, यूहन्ना ५:२४, ८:४३, २ कुरि० ५:१७, ३:१७, १ कुरि० ३:१६, १२:३, गला० ५:१६, १८, प्रे० क्रि० १३:३८, कुलु० १:२२ फिलि० ३:७ यूहन्ना ३:२४।

विषय— आत्मा के अनुसार आचरण।

१ दण्ड आज्ञा से बचाए जाते हैं :— परमेश्वर का अनुग्रह है कि हमें पवित्रात्मा मिलता है। परमेश्वर के उद्धार कार्य को पहचान कर उसकी ओर लौटते हैं। पवित्रात्मा पाना और उसी में बना रहना हमारे लिए आशीष की भरपूरी है। आत्मा के अनुसार चलने से ईश्वर की इच्छा पूरी होती है। परमेश्वर हमें अपनी प्रतिज्ञा अनुसार जीवन की ओर अगुवाई करेगा।

२ ईश्वर के विरोधी नहीं होते हैं:—पवित्रात्मा हमारे जीवन में आकर हमें परमेश्वर के पक्ष में बना देता है। शरीर की कुवासनाओं के अनुसार चलने से रोक कर ईश्वर की इच्छानुसार चलने के योग्य बना देता है। आत्मा त्रिएकत्व का एक व्यक्ति है और ईश्वरीय शक्ति एवं पक्ष का प्रतीक है। अतः स्वर्गीय हैं, ज्योतिमय और उसी ओर अगुवाई करता है।

समाप्ति:—हर मसीही आत्मा के अनुसार चले तो ईश्वर की इच्छा को पहचान सकता है और दंड की आज्ञा से बचाया जाता है।

Gossner Mission

त्रिनि० का अन्तिम एतवार
(मृत स्मरण पर्व)

प्र० वा० ९:६-१७

जितने भी मसीह मेमने का छाप लिए है और उसके लोहू से शुद्ध किए गए है चाहे कोई भी जाति या वंश का हों परमेश्वर की महिमा में प्रवेश पायेंगे। क्योंकि हम चुने और बुलाए हुए लोग है।

देखें—उत्प० १५:६, ४६:११, प्र० वा० ५:६, ४:४, १०-११, यशा ६:१, ४६:१०, भ० सं० ४७:६, १२१:६, २३:२, मत्ती २४:२१, रोमी १:६ १ यूहन्ना १:७ इब्रा० ६:१४।

विषयः—मसीही विश्वासी परमेश्वर के सामने प्रवेश पायेंगे।

१ क्योंकि हम लोहू से शुद्ध किए हुए हैं:—पवित्र बपतिस्मा में हमें यह छाप और अधिकार मिल गया है। हम परमेश्वर की संगति में रहें। हमें नया जन्म (शुद्धता) का जीवन मिला है। क्योंकि मेम्ने के खून से हम धोए हुए लोग हैं।

२ क्योंकि हम पर परमेश्वर की दया है :— परमेश्वर की दया अब हुई है और यह सदा काल तक रहेगी। उसका अनुग्रह हम पर से नहीं हटेगा। हमें आनेवाले समय में भी सम्भालेगा और अपनी अनन्त महिमा में भी सम्भाले रहेगा।

समाप्तिः— मसीही विश्वासी अपने जीवन में कष्ट सहे, पर वे शुद्ध किए गए हैं। परमेश्वर की संगति एवं महिमा में सदा रहेंगे। जहां न कष्ट न दुःख न हानि हैं।

अडवेन्ट का १ला एतवार

इब्रा० १०:१६-२५

मसीह के आगमन से मनुष्यों के लिए ईश्वर तक पहुँचने का द्वार खुल गया है। मसीह हमारा महापुरोहित ही नहीं पर श्रेष्ठ पुरोहित बन गया। मसीह फिर आएगा उससे भेंट के लिए तैयार हों।

देखें— यूहन्ना १४:६, मत्ती २ :५१, इब्रा० ४: १४. ३:६, ६:८, १४, १३:२२, जक० ६:११, १२, इफि० ५:२६, १ तिमो० ३:६, १ कु० ६:११, १०:१३, याकूब २:२।

विषयः—मसीह हमारा महान अगुवा है।

१ अतः हम निडर होकर चले :— मसीह यीशु के पीछे चलने वाला कुछ भी हो जाए, पर वह बढ़ता ही जाएगा। वह न मनुष्य, न पाप, न शैतान से ही डरता है। क्योंकि मसीह पुरोहित होकर न केवल हमारा मध्यस्थ है पर वह महान अगुवा भी है।

२ अतः उसी की अगुवाई पर हम दृढ़ रहें।— अन्य अगुवे की बात नहीं पर मसीह की बात में दृढ़ रहना है और उसी की आशा पर जीना है। अतः विश्वासियों को मसीह में बना रहना है और अपना जीवन को उसी में ढाल देना है।

समाप्ति :— आनेवाले मसीह से भेंट करने के लिए आगे बढ़े और दूसरों को भी इस निमित्त उत्साहित करें।

सुकमल अर्पण किड़ो, दुन्दुरिया डाड़टोली गुमला द्वारा रचित घरबन्धु इनामी प्रतियोगिता (एक) में प्रथम स्थान प्राप्त ५०) रु० से पुरस्कृत।
यह नारा प्रस्तुत है— 'शान्ति वर्ष का आधार, हो सबका पवित्र विचार।

Gossner Mission

शान्ति-वर्ष कैसे मनाया जाय ?

श्री वसंत कुमार बरला, जी०ई०एल० चर्च कम्पाउन्ड बाबू लेन, राँची।

आज विश्व में अशान्ति का साम्राज्य व्याप्त है। सम्पूर्ण विश्व के लोग आज शान्ति के लिए त्राहि-त्राहि पुकार रहे हैं। इसी बीच 'संयुक्त राष्ट्र संघ' ने १९८६ को 'विश्व शान्ति वर्ष' के रूप में मनाने की घोषणा करके विश्व के लोगों में आशा की नयी किरण जगा दी है और विश्व के देशों से एकजुट होकर विश्व में व्याप्त इस अशान्ति के विरुद्ध जेहाद छेड़ देने का आह्वान किया है। उसका उद्देश्य है कि १९८६ के अन्त तक विश्व में हो रहे सब प्रकार के लड़ाई-झगड़े, संघर्ष, दंगे, तनाव एवं मत भेदों को शान्ति पूर्ण ढंग से निपटाया जायं एवं २१वीं सदी को अशान्ति से पूर्णतः मुक्त रखा जाय।

विश्व में व्याप्त इस अशान्ति के छोटे-बड़े कई कारण हैं जिनमें निम्नलिखित प्रमुख हैं— साम्राज्यवादी प्रवृत्ति, अस्त्र-शस्त्रों की होड़, रुस तथा अमेरिका की आपसी आक्रमक प्रवृत्ति इन दोनों महाशक्तियों द्वारा अन्य देशों में अपने सैनिक अड्डों की स्थापना, उपनिवेशवाद, विषम आर्थिक-व्यवस्था, अंतरिक युद्ध की तयारियाँ, रंगभेद की नीति, आतंकवाद तथा सामन्तवादी शासन व्यवस्था, धर्मान्धता, आदि।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका ने जापान के 'हिरोशिमा' और 'नागासाकी' नामक शहरों में अपने परमाणु बम गिराये। बम के गिरते ही भयंकर विस्फोट हुआ। और, पल भर में ये दोनों शहर राख के ढेर में बदल गये थे। विस्फोट के समय हुए चकाचौंध को सैकड़ों मील दूर से जिन लोगों ने देखा, उसी पल उनके आँखों की रोशनी जाती रही और वे सदा के लिए अंधे हो गये। डाक्टरों की राय में ऐसे अंधे लोगों की संतानें भी कई दशकों तक अंधे ही जन्म लेते रहेंगे। इसी तरह इस बम-विस्फोट से निकले रेडियो धर्मी धूलकण एवं किरणों के प्रभाव से सैकड़ों मील दूर तकके लोग कैंसर रोग से पीड़ित हुए, कुछ बहरे, गूँगे हो गये और पता नहीं कितने दशकों तक इनकी संतानों पर भी इनका प्रकोप होता रहेगा? कुछ कहा नहीं जा सकता। और आज—आज तो अमेरिका, रुस फ्रांस, चीन आदि कितने ही देशों में हिरोशिमा और नागासाकी शहरों में गिराये बमों से दस-बीस गुणा ज्यादा बड़े और शक्तिशाली बमों का निर्माण हो गया है। अमेरिका और रुस ने तो ऐसे-ऐसे बमों का विशाल भण्डार ही तैयार कर रखा है। इन महाशक्तियों ने ऐसे-ऐसे अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण किया है कि इनसे सैकड़ों बार इस विश्व को मटियामेट किया जा सकता है। इतना ही नहीं, अमेरिका ने तो अभी हाल ही में 'स्टार-वार' की भी घोषणा कर दी है। अमेरिका से अंतरिक्ष में रॉकेट छोड़ा जायगा, वहाँ उस रॉकेट में विस्फोट होगा तथा इस विस्फोट से मारक-बम निश्चित् दिशा में, निश्चित समय में निश्चित स्थान पर गिरेगा और उस स्थान को श्मशान बना देगा। इसके लिए अभी अमेरिका अपना परीक्षण जोर-शोर से कर रहा है। प्रक्षेपास्त्र और मिसाइलों की दोनों महा-शक्तियों के पास भण्डार है। दोनों ने एक दूसरे के जासूसी उपग्रहों को अंतरिक्ष में ही नष्ट करने का हथियार निर्मित कर लिया है और सफलतापूर्वक परीक्षण कर लिया है। यही नहीं, अभी हाल ही में अमेरिका ने विश्व विध्वंसक आई० बी० ए० नामक एक रासायनिक शस्त्र की भी खोज की है जिसका एक गैस २०

Gossner Mission

हजार कि० मी० क्षेत्र में लाशों का ढेर बिछा सकता है।

विश्व में शांति स्थापना के प्रयास तो प्रथम विश्वयुद्ध के बाद से ही शुरु हो गये हैं। पर सदा असफलता ही हाथ लगते आयी हैं या सफलता मिली भी है तो बहुत कम। इसका कारण है, इस में कुछ बाधक तत्वों का समावेश। जैसे:— गुट बंदी, अस्त्र-शास्त्रों की होड़, महाशक्तियों की सनकी प्रवृत्ति, उनकी साम्राज्यवादी नीति आदि इस दिशा में रुस तो अपने निरस्त्रीकरण के प्रस्ताव को कुछ हद तक अभी भी मानने का समर्थन देता है, पर अमेरिका कतई नहीं। जिससे रुस को भी अपना दिया वादा वापस ले लेना पड़ता है। बस, यही मूल जड़ है, इस समस्या की। अगर अमेरिका भी अपने निरस्त्रीकरण का समर्थन रुस की तरह कर दे तो बस—आधी समस्या का निदान यूँ ही हो जा सकता है। खुशी की बात है कि अभी हाल ही में अमेरिका ने भी अपने निरस्त्रीकरण की घोषणा अस्थायी रुप में कर दी है। अगर सिनेट की मंजूरी भी उस निरस्त्रीकरण और परमाणु-परीक्षा प्रतिबंध पर मिल गयी तो अनुमान है, यह प्रतिबंध १९८७ से प्रभावी हो जायगा। साथ ही ईरान-इराक, अरब-इजराइल, अमेरिका-लीबिया संघर्ष, भारत-पाक, भारत-चीन सीमा-विवाद, भारत-श्रीलंका जल-सीमा विवाद, चीन का परमाणु-परीक्षण, पाक का परमाणु-बम बनाने की जोरदार तैयारी आदि भी विश्व-अशान्ति के लिए जलती आग में घी का काम करते रहे हैं।

हिरोशिमा और नागासाकी की विध्वंसक विनाश लीला से भयाक्रांत विश्व के लोगों ने अब आगे के वर्षों में ऐसी विनाश लीला न हो और विश्व में शान्ति की स्थापना हो, समय-समय पर इसके लिए आवाजें उठायीं, गुटनिरपेक्ष आन्दोलन चलाये, शिखर सम्मेलनों का आयोजन किया। इस क्रम में विभिन्न संगठनों और सिद्धान्तों का प्रतिपादन हुआ तथा विश्व शान्ति स्थापना के लिए प्रयास चले। जैसे :—लीग-ऑफ नेशन्स, संयुक्त राष्ट्र संघ, पंचशील सिद्धान्त, गुटनिरपेक्ष आन्दोलन, दिल्ली-वार्त्ता, साल्ट संधि, मैक्सिको शिखर सम्मेलन आदि। और, संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा १९८६ को शान्ति की स्थापना की दिशा में जोरदार प्रयास हो रहा है। अभी हाल में हुई मैक्सिको शिखर सम्मेलन इसका ज्वलंत उदाहरण है जिसमें दोनों महाशक्तियों को निरस्त्रीकरण के लिए आवेदन-पत्र भेजा गया है।

विश्व शान्ति वर्ष कैसे मनाया जाय? इस सम्बंध में अभी तक संयुक्त राष्ट्र संघ ने कोइ ठोस रुपरेखा की घोषणा नहीं की है फिर भी खास तौर से पंचशील की पुनर्स्थापना की जाय और प्रत्येक देश अपने संसाधनों का प्रयोग मानव कल्याण हेतु प्रण-प्राण से करने का संकल्प करे। अन्य देशों की राष्ट्रीयता, अखण्डता एवं प्रभुसत्ता का पालन पूरी सच्चाई एवं ईमानदारी से करे। किसी दूसरे देश के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करे। अगर किसी देश में इस प्रकार के विश्व शान्ति को प्रभावित करने वाले लड़ाई-झगड़े हैं तो सिर्फ संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा ही आवश्यक कार्यवाही किये जायें। परन्तु तभी जब महाशक्तियों के निषेधाधिकार को निरस्त किया जा चुका हो। गुटबंदी-संधियाँ करने पर भी पूरी तरह रोक लगा दी जाय। यही एक रास्ता है जिस पर चल कर विश्व शान्ति वर्ष को सफल बनाया जा सकता है एवं विश्व में मानव के अस्तित्व को बनाये रखा जा सकता है।

ये तो हुई, संयुक्त राष्ट्र संघ की अपनी रुप रेखा। अब प्रश्न उठता है—एक मसीही होकर हम इस विश्व शान्ति वर्ष को कैसे मनायें? या, दूसरे शब्दों में विश्व शान्ति वर्ष को सफल बनाने के लिए कौन सा, कितना योगदान दे सकते हैं? आईये, थोड़ा-सा इस पर भी बात विचार हो जाय—

Gossner Mission

धार्मिक दृष्टिकोण से मनन करने पर विश्व में व्याप्त अशान्ति के कारणों का यही एक निष्कर्ष निकलता है कि मनुष्य के अपने मन-हृदय में ही शान्ति का अभाव है। और जब मनुष्य के मन-हृदय में ही शान्ति का अभाव है तो इन अशान्त मन-हृदयवाले मनुष्य विश्व में कहां से शान्ति ला पावेंगे ? बल्कि अशान्त मन हृदयवाले मनुष्यों से निर्मित परिवार, समाज, मण्डली, कलीसिया, राज्य, देश और सम्पूर्ण विश्व भी अशान्त ही रहेगा। चूँकि हमने हत्या, चोरी-डकैती, लड़ाई-झगड़े, बलात्कार, गुण्डागर्दी; तोड़-फोड़, बमबाजी, चाकू-छुरी एवं रिवाल्वर से स्वयं अपने मन-हृदय में अशाति लाने के साथ-साथ अपने परिवार, समाज, मण्डली, कलीसिया में भय, आतंक फैलाकर इनके बीच अशान्ति ला दी है। इसी प्रकार भिन्न-भिन्न प्रकार के दंगे, संघर्ष एवं आन्दोलन करके हमने अपने राज्य तथा देश में अशान्ति को जन्म दिया है। फिर इसी प्रकार विश्व के विभिन्न देशों ने एक-दूसरे पर चढ़ाई करके, एक दूसरे की राष्ट्रीयता, अखण्डता, प्रभुसत्ता और स्वतंत्रता में बाधा पहुँचाकर, परमाणु अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण कर विश्व के जन समुदाय पर दहशत की चरम सीमा ला दी है तथा अशान्ति ला दी है। जैसे :—मसीहियों में कलीसिया विवाद, जी० ई०एल० चर्च की कलीसिया में के०एस०एस० और नोर्थ जोन के बीच विवाद आदि। हमारे ही देश में असम आन्दोलन, गोरखा लैंड, खालिस्तान झारखण्ड की मांग, हिन्दू-मुस्लिम हिन्दू-सिक्ख, हिन्दू-ईसाई आदि सम्प्रादायिक दंगे। अतः हम निश्चिय ही स्वार्थी हो गये हैं। हमने अपने स्वार्थ की प्राप्ति के लिए अपने पड़ोसी का हक अन्याय से मारा है। इसलिए सृष्टि और सम्पूर्ण विश्व का रचयिता परमेश्वर ने भी अपना कोप भड़का कर हम को और सम्पूर्ण विश्व को अशान्ति की बड़ी मार से मारा है।

परन्तु सृष्टि के आरम्भ में ऐसा नहीं था। सारे विश्व में उस समय शान्ति ही शान्ति थी। आदन वाटिका जहाँ परमेश्वर ने मूल पुरुष और स्त्री आदम और हवा को रखा था, शान्ति निकुञ्ज था। यहाँ तक कि सृष्टि के बनैले पशुओं और रेंगनेवाले विषधरों तक से मनुष्य की शान्ति कभी भंग होती नहीं थी। सर्वत्र शान्ति ही शान्ति थी। पर इन्हीं मूल स्त्री-पुरुष के पाप के बदौलत हम आज इस हालत को पहुँचे हैं। हमने परमेश्वर के अनमोल वरदान सच्ची शान्ति को खो दिया है, उसके उस दान को अपनी सनक में आकर ठुकरा दिया है। फलस्वरुप अब परमेश्वर की वह सच्ची शान्ति हमसे उठा ली गई है। अब हम यहाँ विश्व में शान्ति-शान्ति की रट लगाये हुए हैं, शान्ति की खोज में दर-दर, यहाँ-वहाँ, इधर-उधर भटक रहे हैं, जबकि शान्ति हमारे मन-हृदय से ही कोसों दूर चली गयी है।

परमेश्वर ही सच्ची शान्ति का दाता है। अपने पुत्र यीशु मसीह को उसने हमारे लिए उद्धारक के साथ-साथ 'शान्ति का राजकुमार' बनाकर भी भेजा कि उसके द्वारा हम उद्धार और सच्ची शान्ति की प्राप्ति कर सकें ! (यशायाह ९: ६-७) यीशु ने कहा—'तुम्हें शान्ति मिले।' (यूहन्ना २०:१९, २१, २६; १६:३३; लूका २:१४, २४-२६) जैसा जगत् तुम्हें देता है वैसा नहीं पर मैं तुम्हें सच्ची शान्ति दिये जाता हूं। उसने आँधी को डाँटा और वह शान्त हो गया। (मत्ती ८:२६) जब मैं अपने पिता के पास चला जाऊँगा तो तुम्हारे लिए पवित्रात्मा को भेजूँगा जो तुम्हें सच्ची-शाति देगा।

अतः हम विश्व के समस्त मसीहियों का फर्ज है कि हम इस शान्ति वर्ष में परमेश्वर पिता से प्रार्थना करें कि वह इस शान्ति वर्ष की सफलता के लिए अपनी इच्छा, दया और आशीष बहुतायत से दे। अपने देश एवं सब राज्य कर्मचारियों तथा मंत्रिमण्डलों, विश्व के सब देशों एवं उनके शासनाध्यक्षों के लिए ईश्वर से सुबुद्धि, सुविवेक

Gossner Mission

एवं अच्छा ज्ञान माँगे कि वे विश्व शान्ति को बनाये रखने में सफल हो सकें। इसके लिए हमें विशेष प्रार्थना समाओं का आयोजना करना होगा। पर धर्मशास्त्र हमें यह भी कहता है कि 'कर्म बिना विश्वास व्यर्थ है।' अतः हमें परमेश्वर से प्रार्थना करने और उस पर विश्वास करने के साथ-साथ जहाँ तक, जैसे भी बन पड़े हम विश्व-शान्ति स्थापना के लिए तन-मन-धन से संयुक्त राष्ट्र संघ के कामों में हाथ बटायें।

दूसरी ओर धर्मशास्त्र हमें यह भी बताता है कि विश्व की यह अशान्ति, ये लाड़ाई-झगड़े और दंगे, युद्ध तो होंगे ही। चूँकि इनका होना दुनिया के अन्त की ओर इंगित करना है। पर क्या हम चुपचाप बैठे रहें? क्या हम अब्राहम की तरह इन सब दुर्घटनाओं के नहीं घटने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना नहीं कर सकते जिसने सदोम और अमोरा नगरों में एक-दो जन परमेश्वर-भक्तों के निमित्त इन नगरों को भस्म होने से बचाने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। यह सच्ची बात है कि हम अब्राहम के समान परनेश्वर के विश्वासी नहीं हैं पर अगर हम में यह विश्वास राई के दाने बराबर भी हो सका तो यह संभाव है।

आज हम कस्तूरी-मृग के समान कस्तूरी रुपी शान्ति की तलाश में व्याकुल, मारे-मारे फिर रहे हैं जबकि शान्ति का राजकुमार स्वयं हमारे दिल के द्वार पर खटखटा रहा है, हमारे दिल के अन्दर आना चाहता है और उसमें वास करना चाहता है कि हमारे मन हृदय में शाश्वत् शान्ति का साम्राज्य स्थापित हो। और, हम अपने आप में मण्डली में कलिशिया में अपने देश में तथा विश्व के कोने-कोने में शान्ति का साम्राज्य फैला सकें।

आईये, अब भी देर हुई नहीं है। हम ईश्वर पिता के कदमों में आयें और उससे सच्ची शान्ति की प्राप्ति बहुतायत से करें।

सुनन्दा स्मृति किड़ो, दुन्दुरिया डाड़ टोली गुमला द्वारा रचित घरबन्धु इनामी प्रतियोगिता (एक) में द्वितीय स्थान प्राप्त २५) रु० से पुरस्कृत यह नारा प्रस्तुत है—

शाति वर्ष का संदेश,
फैल जाए देश-विदेश।

अंजुम लकड़ा, जी० ई० एल० चर्च जवाहर मानगो जमशेदपुर द्वारा रचित घरबन्धु इनामी प्रतियोगिता (एक) में तृतीय स्थान प्राप्त १०) रु० से पुरस्कृत यह नारा प्रस्तुत है :—

शान्ति वर्ष का नारा हमारा
घर-घर पहुँचाना काम हमारा।

Gossner Mission

द्वितीय पुरस्कार

शांति वर्ष कैसे मनाया जाये ?

श्री० जुनुल मुन्डू, लेखा कार्यालय सीनी।

भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, विभिन्नताओं के होते हुए भी सम्पूर्ण

श्री जुनुल मुन्डू, लेखा कार्यालय सीनी, द्वारा रचित घरबन्धु इनामी प्रतियोगिता (एक) में द्वीतीय स्थान प्राप्त १००) रु० से पुरस्कृत यह निबंध प्रस्तुत है।

भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, विभिन्नताओं के होते हुए भी सम्पूर्ण विश्व मानव समाज में सहयोग एवं एकता की भावना है, यह हमेशा एक दूसरे का सहयोग एवं उन्हें प्रेम करता रहा है। विभिन्न देशों के बीच व्यापार एवं आयात निर्यात करना, मानव समुदाय के ऐसे ही प्रेम एवं सहयोग का एक ज्वलंत उदाहरण है। विश्व व्यापी मानव में प्रेम सहयोग एवं एकता को कायम रखने के लिये इस समय संयुक्त राष्ट्र संघ, इन्टरनेशनल ओलम्पिक कमेटी, आदि अनेक ऐसे संगठन हैं, जो मानव की एकता एवं प्रेम को कायम रखने के लिये संगठित किये गये हैं। जिनके द्वारा हम मानव समुदाय विश्वबंधुत्व एवं एकता का अनुभव करते हैं।

इतना होते हुए भी कुछ सीमित सिरफिरे लोग हैं, जो समाज में हमेशा लूटपाट, हिंसा, अपहरण करके मानव समाज को दूषित कर रहे हैं। विश्व-जन समुदाय शांति चाहते हुए भी शांति के साथ जीवन यापन नहीं कर पा रहा है। इन लोगों को प्रेम से कोई मतलब नहीं हमेशा उनमें स्वार्थ रहता है, जिससे संसार की शांति खतरे में पड़ जाती है। जगह-जगह पर डकैती बलात्कार, हिंसा, आगजनी की खबरे आये दिन समाचार पत्रों में देखने को मिलती हैं। ऐसे ही राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में देखा जाये तो पंजाब समस्या, श्री लंका में तमिलों की हत्या, दक्षिण अफ्रीका की जातीय समस्या, रुस अमेरिका के बीच चल रहे शीत युद्ध आदि अनेक उदाहरण देखने को मिलेंगे. जिनसे प्रतीत होता है कि मानव के लिये कहीं भी शांति से रह सकना असम्भव हो गया है। मानव के सामने चारों ओर अंधकार ही अंधकार फैल गया है, क्रांति हर जगह भड़क रही है।

संसार की अशांति को शांति में बदलना प्रत्येक मानव का परम कर्त्तव्य है, और विशेष कर हम ख्रीस्तियों के लिये तो इसका महत्व और भी बढ़ जाता है चूंकि हम में से प्रत्येक ख्रीस्तीय विश्वासी गण, ख्रीस्त की दी हुई ज्योति के अंग हैं, अतः हमें संसार को ज्योति दिखानी है। उसे फैलाना हैं हमें संसार को ऐसी शिक्षा देनी है कि लोग जाने मानव जीवन का वास्तविक उद्देश्य क्या है ? सभी मनुष्य समझ जायें कि यह जीवन सिर्फ इस संसार के लिये नहीं है पर वह भावी अनन्त जीवन के लिए है। उसमें प्रवेश करने के लिये सबको तैयार करना है तभी संसार में शांति कायम की जा सकती है।

शांति वर्ष को मनाने के लिए सम्पूर्ण संसार में शांति कायम रखने के लिये, एक अभियान छेड़ना है। संसार में शांति की इच्छा करने वाले महा-पुरुषों की कमी नहीं है। उनके नेतृत्व में एक जुट हो कर इसी वर्ष हमें एक ऐसा विश्व संगठन तैयार करना चाहिए, जिससे वह भविष्य में भी हमेशा अशांति के विरुद्ध आवाज उठाता

Gossner Mission

रहे। यह तभी सफल होगा जब हम में से प्रत्येक व्यक्ति उस विश्वसनीय संगठन का समर्थन एवं सहयोग देता रहे। अतः जहां कहीं भी ऐसे संगठनों का उदय होता है। हमें तुरन्त उसका सहयोग करना चाहिए। क्षेत्रीय शांति संगठनों का गठन ग्रामीण अथवा छोटे शहरों में अत्याधिक लाभदायक सिद्ध होगा। ये संगठन ग्रामीण क्षेत्रों में फैली अशांति के विरुद्ध अपने स्तर पर अभियान चलायें। जहां कहीं भी जटिलता महसूस करें तो उसे स्थानीय पुलिस का सहयोग लेना चाहिए। इससे अशांति के विरुद्ध अभियान चलाने में सभी दिक्कतें दूर हो जायेंगी।

विश्व स्तर पर सर्वोच्च एवं एक मात्र संगठन संयुक्त राष्ट्र सघ है। इसका उद्देश्य ही विश्व में शांति कायम करना है, पर विश्व के अनेक महत्वपूर्ण समस्यायों के सामने यह सर्वोच्च संगठन भी असफल हो रहा है। क्योंकि सामान्य जनता का पूरा सहयोग, इसे नहीं मिल पा रहा है किसी भी संगठन एवं अभियान को सफल बनाने के लिये सामान्य जनता का सहयोग बहुत जरुरी है। अतः विश्व समुदाय में एक ऐसी एकता कायम करनी है जो कि संयुक्त राष्ट्र संघ के आदर्श को पहचान कर उनका नेतृत्व स्वीकार करे। इससे विश्व शांति को बल मिलेगा। इसके सफल होने पर तृतीय विश्व युद्ध की सम्भावना नहीं रहेगी। १९८७ अथवा कोई एक साल मात्र ३६५ दिनों का ही रहता है अतः इन क्षणिक दिनों में इस महान कार्य को सफल बनाना असम्भव ही है सफलता तो दूर रहे कम से कम इस विषय पर १९८६ वर्ष में ही रचनात्मक कार्य की शुरुआत हो तो यह भी शांति वर्ष के उपलक्ष में एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक सफलता ही कही जायेगी। भारत द्वारा चलाये जा रहे निर्गुट अभियान भी विश्व शांति में महत्व पूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं।

ऐसे महानतम कार्यों में युवा वर्ग का योगदान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। कहा भी गया है— "युवा शक्ति सबसे बड़ी शक्ति है" कारण युवा शक्ति जो कुछ अपने कंधे पर ले लेती है, उसे पूरा करके छोड़ती है। इसी लिये आजकल युवा वर्ग सम्बन्धित संगठनों का गठन किया जाता है जैसे युवा संघ, युवा कांग्रेस, युवा जनता आदि। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी इस तरह के युवा शक्ति से सम्बन्धित गठन कायम किये जाने चाहिए। ऐसे सगठनों में अंतर्राष्ट्रीय युवा संगठन, अन्तर्राष्ट्रीय छात्र-संघ आदि का गठन किया जा सकता है। इनका नेतृत्व संयुक्त राष्ट्र संघ के द्वारा किया जाना चाहिये। १९८६ में ही यह योजना पूरा नहीं की जा सकती पर इसका सूत्रपात इसी वर्ष अवश्य कर लिया जाना चाहिए। तभी शांति वर्ष की कल्पना साकार हो सकती है। इतिहास में अनेक महापुरुष उत्पन्न हुए, जिन्होंने समाज सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। नेपोलियन, सुभाषचन्द्र बोस, महात्मा गांधी, रवीन्द्र नाथ टैगोर, राजा राम मोहन राय, आदि महापुरुषों ने अपने कार्य-क्रमों में भरपूर शांति के अभियान में युवा वर्ग के सहयोग लिये आज भी युवा शक्ति का सहयोग अधिक सहजता से लिया जा सकता है। १९८६ वर्ष में सरकार को बेरोजगारी से निपटने के लिये अपनी नयी योजनाए कार्यान्वित करनी चाहिये। पर भारत के लिये अपनी नयी योजनाए कार्यान्वित करनी चाहिये। पर भारत सरकार इस समय कम्प्युटरी करण पर अधिक ध्यान दे रही है। इससे उत्पादन में तो विकास होना निश्चित है ही, पर व्यक्ति जो अधिक महत्वपूर्ण है वह कार्य से बंचित हो जाता है। रुस अमेरिका जैसे विकसित राष्ट्रों के लिये कम्प्युटरीकरण उचित है। पर भारत जैसे विकास शील देश में फिलहाल जरुरत नहीं। क्योंकि भारत विकसित राष्ट्र अमेरिका से अनेक दृष्टियों में भिन्न है, अमेरिका में प्रति व्यक्ति आय अत्याधिक है और साथ ही वहाँ की जनसंख्या में भी

Gossner Mission

कमी है लेकिन भारत में प्रति व्यक्ति आय कम है पर यहां अनाधिक्य भी है। भारत सरकार को अपने कम्प्यूटरीकरण के सपने पर गहराई से विचार करके ही इसका प्रयोग शुरु करनी चाहिये। यह भी शांति वर्ष के अवसर पर एक आवश्यक प्रश्न चिह्न है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक समस्यायों में कमी करने के लिये शांति वर्ष के अवसर पर नये ढंग से विचार किया जाना चाहिये। जहां तक सम्भव हो, तनावों को कम करें पूरी तरह से समाप्त कर दें। उन राष्ट्रों के बीच समझौता का रास्ता तैयार करने में इस वर्ष संयुक्त राष्ट्र संघ को अधिक समय देना चाहिये। ऐसी समस्यायों में रुस अमेरिका के बीच फैला आपसी तनाव विश्व के लिये सर्वाधिक चिंतनीय है। परमाणु बम का निर्माण इसी तनाव का फल है, और कल्पना की जाती है कि इन दो राष्ट्रों के बीच चल रहा शीत-युद्ध ही एक समय सम्पूर्ण संसार को नाश कर देने वाले भयंकर तृतीय विश्व युद्ध को जन्म दे सकता है। अतएव समय रहते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ को ही इस संकट को समाप्त करने के लिये आगे कदम बढ़ानी चाहिये।

रेडियो, टेलिविजन एवं पत्र पत्रिकाएँ शांति स्थापन में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। शांति वर्ष को ध्यान में रखते हुए पत्र पत्रिकाओं में मानवीय उच्च आदर्शों पर अधिक से अधिक समाचार एवं लेख प्रकाशित किये जाने चाहिये। इससे एक ऐसा जनमत तैयार होगा जिससे कि अशांति को पनपने का कहीं अवसर ही नहीं प्राप्त होगा। ईर्ष्या, द्वेष एवं अराजकता फैलाने वाली बातों को समाचार पत्रों में जगह नहीं दी जानी चाहिए। रेडियो एवं टी०वी० में शांति वर्ष के अनुकूल गानों एवं दृश्यों का प्रसारण किया जा सकता है।

मसीही समाज शांति वर्ष के अवसर पर विभिन्न कलीसियाओं के बीच एकता का प्रचार करे, उनमें एकता लाने का प्रयास करे। हम सभी मसीही विश्वासियों का विश्वास एक ही उद्देश्य एक ही ख्रीस्त के अनुयायी होना है अतः इस १९८६ वर्ष में मसीही एकता के लिये विभिन्न स्थानों पर प्रार्थना, उपवास, रैली का आयोजन किया जाना चाहिये जिसमें विभिन्न कलीसिया के विश्वासी एक मत हो कर पिता ईश्वर से प्रार्थना करें। इससे ख्रीस्तीय विश्वासियों में एकता की भावना पनपेगी। साथ ही साथ ख्रीस्त की ज्योति को फैलाने में भी यह सहायक सिद्ध होगी।

विश्व शांति स्थापित करना कोई असम्भव बात नहीं है। आवश्यकता सिर्फ इस बात की है कि हर व्यक्ति मानव शांति के महत्व को समझे। शांति की स्थापना में सक्रिय योगदान दें तो मानव समाज में फैली अशांति को प्रेम शांति न्याय के सामने झुकना ही पड़ेगा। और हम १९८६ वर्ष को शांति वर्ष के रुप में मनाने का दावा कर सकेंगे।

स्वर्गप्रस्थान

पाद्री जोर्ज केरकेटा ने लगभग ४.४५ बजे अपराह्न ३१-७-१९८६ को स्वर्ग प्रस्थान किया। लगभग १५ दिन पहले से वे छाती की बीमारी से पीड़ित थे। १-८-८६ को उनके मृत शरीर को उन्हीं के ग्राम मेरोमडेगा में मध्य अंचल अध्यक्ष पाद्री मार्टिन टेटे द्वारा पुनरूत्थान की आशा सहित मिट्टी दी गयी। उनकी धर्म्म पत्नी एवं चार पुत्रियों को ईश्वर पुनरुत्थान की आशा से शान्ति देवे

Gossner Mission

'शान्ति वर्ष' कैसे मनाया जाय ?

श्री मनोहर बरला जी०ई०एल० चर्च कम्पाऊंड, बाबूलेन रांची।

श्री मनोहर बरला जी० ई० एल० चर्च कम्पाउन्ड राँची, द्वारा रचित घरबन्धु इनामी प्रतियोगिता (एक) में तृतीय स्थान प्राप्त ५०) रु० से पुरस्कृत यह निबंध प्रस्तुत है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने सन १९८६ को अन्तर्राष्ट्रीत शान्ति वर्ष घोषित किया है। यह मानव समाज के लिए बहुत ही खुशी की बात है और स्वागत का विषय भी।

इस शुभावसर पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने निश्चय ही कुछ कार्यक्रम बनाये हैं जिनके तहत वह इन्हें कार्यान्वित करना चाहता है। यूँ तो विश्व की समस्याओं को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सुलझाने का क्रम सन् १९८३ में घोषित 'विकलांग वर्ष के साथ ही आरम्भ हुआ। साथ ही सन १९८४ को 'महिला वर्ष' एवं सन १९८५ को 'युवा-वर्ष' के रुप में मनाया गया। और अब सन १९८६ को शान्ति वर्ष मनाने की घोषणा की गयी है।

अपने ४१ वें जन्म दिवस २४ अक्टूबर सन १९८५ को संयुक्त राष्ट्र संघ ने सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त तनाव को दूर करने तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शान्ति की स्थापना करने के उद्देश्य से विश्व के राष्ट्र-कुलों के समक्ष अपनी यह अपील जोरदार ढंग से प्रस्तुत की और यह प्रस्ताव रखा कि वर्ष १९८६ को 'अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति वर्ष' के रुप में मनाया जाय जिसके तहत विभिन्न देशों में हो रहे विभिन्न संघर्षों, तनावों एवं मतभेदों को सन १९८६ के अन्त तक सुलझाकर समाप्त किया जाय एवं सम्पूर्ण विश्व में शान्ति लाने का प्रयत्न किया जाय।

अशान्ति के कारण : — विश्व में व्याप्त अशान्ति के विभिन्न कारण मुख्यतः निम्नलिखित है :— साम्राज्यवाद की प्रवृत्ति, शस्त्रों की होड़, अमेरिका तथा रुस के बीच एक दूसरे के प्रति आक्रामक प्रवृत्ति, इन दोनों देशों द्वारा अन्य देशों में सैनिक अड्डों की स्थापना, उपनिवेशवाद, विषम आर्थिक व्यवस्था अंतरिक युद्ध की तैयारी, रंगभेद की नीति, आतंकवाद तथा सामन्तवादी शासन व्यवस्था, धर्मान्धता— यूरोपीय देशों में प्रोटेस्टैंट एवं कैथोलिकों के बीच संघर्ष, अरब देशों में यहूदी और मुसलमानों के बीच संघर्ष, आदि।

अन्तरीष्ट्रीय शान्ति के मार्ग में बाधक तत्व :—

यूँ तो अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति के मार्ग में अनेकों छोटे-बड़े बाधक तत्व हैं, परन्तु रुस और अमेरिका ही इसके मुख्य जिम्मेवार हैं। इन दोनों देशों ने विश्व के देशों को दो गुटों में बाँट रखा है। एक गुट अमेरिका के पक्ष में है तो दूसरा गुट रुस के पक्ष में। जब कि दोनों ही देश सम्पूर्ण विश्व पर अपना प्रभुत्व जमाने के लिए कृतसंकल्प एवं संघर्षरत हैं।

(i) *अस्त्र-शस्त्रों की होड़ :–* विश्व के सभी बड़े एवं विकसित देश छोटे, कमजोर तथा अविकसित देशों पर अपना प्रभुत्व जमाने के लिए अत्याधुनिक, महाविध्वंसक अस्त्र-शस्त्रों के निर्माण में सरगर्मी से लगे हैं। उनका अपनी राष्ट्रीय आय का एक बड़ा भाग इन अस्त्रों के निर्माण में व्यय होता है। अभी विश्व शान्ति का सब से बड़ा खतरा अमेरिका द्वारा घोषित 'स्टार-वार' कार्यक्रम है।

(ii) *महाशक्तियों की सनकी प्रवृत्ति :–* विश्व की इस अशान्ति को सुलझाने के क्रम में कई बार इन

Gossner Mission

दोनों देशों ने परमाणु अस्त्र-शस्त्रों को समूल नष्ट करने या उनकी संख्या सीमित रखने और अना-विष्कृत अस्त्र-शस्त्रों के विकास तथा परीक्षण कार्यक्रम में शिथिलता लाने के लिए समझौता वार्त्ता भी किया पर फल निकला वही 'ढाक के तीन पात'। दोनों में से कोई एक देश समझौता वार्त्ता के अन्तिम निर्णय पर अमल शुरु करने की बात आते ही एक न एक बहाना या शर्त्त रखकर पीछे हट जाता है। फलतः मामला जहाँ-का-तहाँ रह जाता है।

(iii) *महाशक्तियों की साम्राज्यवादी नीति* :- दोनों ही देश विश्व को मुट्ठी में करने के लिए कृतसंकल्प हैं। अमेरिका अनेक देशों में अपने सैनिक अड्डे बना चुका है। साथ ही उसने अपनी अपनी १९८१ में शुरु की गई पंचवर्षीय रणनीति की योजना के तहतमिस्त्र, ओमान, डियागोगार्सिया सोमालिया तथा पाकिस्तान में अपनी सामरिक नाकेबंदी पूरी कर ली है। उधर रुस भी अफगानिस्तान में सैनिक हस्तक्षेप करके अपनी मनोनुकूल सरकार की स्थापना कर दी है।

(iv) *अन्य कारण* :-रुस और अमेरिका के साथ ही साथ विश्व के छोटे देशों के बीच के आपसी संघर्ष जैसे- ईरान-इराक, अरब-इजराइल भारत-पाक सीमा विवाद, भारत-चीन सीमा विवाद, भारत-श्रीलंका जल सीमा विवाद, आदि। साथ ही चीन का परमाणु परीक्षण, पाक का परमाणु बम बनाने की जोरदार तैयारी, सीरिया, लीबिया, श्रीलंका ब्रिटेन का इस दौड़ में निरंतर एक दूसरे से आगे निकलने का सतत प्रयास भी इस अंतर्राष्ट्रीय शान्ति के मार्ग में बाधक तत्व है।

अन्तेर्राष्ट्रीय शान्ति की दिशा में विभिन्न प्रयास एवं उनकी सफलता असफलता:-

(i) *लीग ऑफ नेशन्स* :- २०वीं शताब्दी में दो भीषण युद्ध हुए-प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध। की भयंकरता से सिहर कर ही युद्ध की समाप्ति के पश्चात १९२० में अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन के निर्देशन में 'लीग-ऑफ नेशन्स' की स्थापना की गयी जिसका उद्देश्य भविष्य में ऐसे किसी भी युद्ध को रोकना था। परन्तु इस संगठन से भी कुछ लाभ नहीं हुआ।

(ii) *'लीग ऑफ नेशन्स'* :- की नाकामयाबी तथा द्वितीय विश्व युद्ध के दिल दहलाने वाले परिणामों को देख कर अमेरिकी राष्ट्रपति एफ० डी० रुजवेल्ट के निर्देशन में 'संयुक्तराष्ट्र संघ' की स्थापना की गई, जिसका मुख्य उद्देश्य विश्व शान्ति एवं सुरक्षा को बनाये रखना है तथा अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का शान्तिपूर्ण समाधान। परन्तु यह संगठन भी अपने उद्देश्यों में पूर्णरूपेण सफलीभूत अब तक हुआ नहीं है।

(iii) *पंचशील सिद्धान्त* :-सन १९५४ में 'बांडुंग सम्मेलन' द्वारा घोषित 'पंचशील सिद्धान्त' भी विश्व शान्ति के प्रयास की दिशा में एक कदम था। परन्तु चीन का भारतीय सीमा क्षेत्र में आक्रमण ने इसको सदा के लिए क्षीण कर दिया।

(iv) *गुटनिरपेक्ष आन्दोलन* :- इस आन्दोलन के द्वारा गुटनिरपेक्ष देश आपसी समस्याओं का शान्तिपूर्ण ढंग से हल करते हैं। विश्व शान्ति के लिए प्रयास का यह एक सशक्त मान्यम है। पर इसका भी अभी तक कोई फल मिला नहीं है।

(v) *छः राष्ट्रों की दिल्ली वार्त्ता* :- छः राष्ट्रों की दिल्ली वार्त्ता :- नाभिकीय विस्फोट परीक्षण को बंद करने तथा परमाणु-शस्त्रों के निर्माण को समाप्त करने के उद्देश्य से १९८५ में दिल्ली में छः राष्ट्रों – भारत, अर्जेन्टीना, मैक्सिको, यूनान, तंजानिया तथा स्वीडन के शासनाध्यक्षों की बैठक हुई। पर अमेरिका ने इस प्रस्ताव को भी कोई महत्व नहीं दिया।

(vi) *साल्ट संधि*:- विश्व की दोनों महाशक्तियों द्वारा घातक अत्याधुनिक मारक हथियारों के निर्माण-कार्य को रोकने के लिए वियना (आस्ट्रिया) में 'साल्ट-संधि' हुई। पर अमेरिका ने ही अपनी सनकी प्रवृत्ति के कारण इसका खण्डन किया।

Gossner Mission

शान्ति वर्ष के उपलक्ष में पुनर्प्रयास पर बल :—

अब 'हिरोशिमा' और 'नागासाकी' की भयंकर विनाश लीला फिर से न दुहरायी जाय, 'स्टार वार' की रोंगटे खड़ी कर देनेवाली घोषणा का रुप साकार न हो तथा तृतीय या यों कहें—अन्तिक विश्व युद्ध की नौबत न आये तो इस विश्व शान्ति वर्ष सन १९८६ में पंचशील' की पुनर्प्रतिष्ठा करके प्रत्येक देश अपने संसाधनों का मानव कल्याण हेतु प्रयोग करने का संकल्प करे और प्रतिज्ञा करे कि वह अन्य देशों की राष्ट्रीयता, अखण्डता एवं प्रभुसत्ता का पालन पूरी सच्चाई एवं ईमानदारी के साथ करेगा, तथा किसी दूसरे देश के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा। अगर किसी देश में इस प्रकार के विश्व शान्ति को प्रभावित करने वाले लड़ाई-झगड़े हैं तो केवल 'संयुक्त राष्ट्र संघ' द्वारा ही आवश्यक कार्यवाही किये जायें। परन्तु अभी जब महाशक्तियों के निषेध अधिकार को निरस्त किया जा चुका हो। साथ ही गुटबंदी-संधियाँ करने पर पूरी तरह रोक लगा दी जाय। केवल तभी इस 'अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति वर्ष' को सफल बनाया जा सकता है एवं विश्व में मानव के अस्तित्व को बनाये रखा जा सकता है।

शान्ति वर्ष की सफलता के लिए मसीहियों की भूमिका :-

धर्मशास्त्र के माध्यम से मसीहियों को बताया जाता है कि 'कर्म बिना विश्वास व्यर्थ है।' और कर्म भी जो परमेश्वर की इच्छा, दया एवं आशीष के बगैर किया जाता है तो वह पूरी तरह सफलीभूत कभी नहीं होता। 'शान्ति वर्ष' की सफलता के लिए विश्व के समस्त मानव का प्रयास भी परमेश्वर की इच्छा, दया एवं आशीष के बिना धारी की धरी रह जायेगी।

अतः हम विश्व के समस्त मसीहियों का परम कर्त्तव्य है कि इस शुभावसर पर परमेश्वर पिता से प्रार्थना करें कि वह इस 'शान्ति वर्ष' की सफलता में अपनी इच्छा, दया एवं आशीष अधिकाई से देवे। अपने देश एवं सब राज्य कर्मचारियों तथा मंत्रीमंडलों, विश्व के सब देशों एवं उनके शासनाध्यक्षों के लिए ईश्वर पिता से प्रार्थना करें कि वह उन्हें सुबुद्धि, विवेक एवं ज्ञान देवे कि वे अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति को बनाये रखने में उचित कदम उठा सकें और हम समस्त मानव जाति विश्व में शान्ति से रह सकें। इसके लिए हमें विशेष प्रार्थना सभाओं का आयोजन करना होगा। और तब निश्चय ही समस्त विश्व में शान्ति का वातावरण तैयार होगा।

सूचना

प्रचारक ट्रेनिंग स्कूल गोविन्दपुर में प्रवेश चाहनेवाले सभी उम्मीदवारों को सूचित किया जाता है कि अपना आवेदन ३० नोवेम्बर ६६ तक प्रधानाध्यापक के कार्यालय गोविन्दपुर भेज दें और इन्टरभ्यु के लिए ११ दिसम्बर ८६' सुबह को आ जाएँ। इन्टरभ्यु के समय मेस खर्च २½ के०जी० चावल और २ रु० ५० पैसा रकम लिया जाएगा।

तबीता बैबल ट्रेनिंग स्कूल में प्रवेश चाहने वाली छात्राएँ १० जनवरी ८७ को सीधे आ जाएँ। परन्तु आवेदन पत्र १५ दिसम्बर १९८६ तक भेज दें। धन्यवाद।

आप का विश्वस्त
पाद्री एम० जोजो
प्रधानाध्यापक
पी०टी०एस० गोविन्दपुर पो० ओ० गोविन्दपुर
राँची, बिहार।

Gossner Mission

प्रथम पुरस्कार

शांति वर्ष कैसे मनाएँ ?

श्री मनोज कुमार सिमडेगा।

श्री मनोज कुमार, सिमडेगा द्वारा रचित (घरबन्धु इनामी प्रतियोगिता (एक) में प्रथम स्थान प्राप्त १००) रु० से पुरस्कृत यह कविता प्रस्तुत है।

जीतकर दुनियां को, तू विजयी तो हो नहीं सकता ?
भेज कर सब को काल के गाल में, तू कालजयी तो हो नहीं सकता ?
विजयी होना है तो हर दिल में अधिकार कर,
शांति से रह, प्रेम के हथियार से वार कर।

शांति में वो क्रांति है जो दुनियाँ बदल देगी,
इन्साँ को इन्साँ से प्रेम होगा, ये हमको वो फल देगी,
शपथ माँगता है हमसे यह शांति वर्ष,
पिला चुके लहू तलवारों को, कर अब शांति के लिए संघर्ष,
अपने दिल से निकाल नफरत, हर दिल में प्यार भर,
शाँति से रह, प्रेम के हथियार से वार कर।

अब तक हमने जो किया, बुरा किया,
शाँति के हर मसीहा को सूली पे चढ़ा दिया,
शाँति दफन थी कब्र में, प्रथम विश्व युद्ध के दौरान,
सिसक कर बोली थी वो, ठुकराके हमको पछताएगा इन्सान,
अब जा सरटेक, दीप जला उसके मजार पर,
शाँति से रह, प्रेम के हथियार से वार कर।

आबाद कर वीरान शहरों को, बसा फिर से खँडहरों को,
शाँति की अमृत धारा से धो दे लहू से लिखित अक्षरों को.
कागजी घोड़े दौड़ते हैं शिर्फ, अक्सर यही होता है,
बिना काम के, शाँति के ये गायें, ये नारे इक धोखा है,
चल कुछ पत्थर रख दे शाँति की इमारत के आधार पर,
शाँति से रह, प्रेम के हथियार से वार कर।

मानव के हाथों में विज्ञान, बच्चे के हाथ में तलवार है,
अपनी कुल्हाड़ी से कर रहा ये, अपने पैरों पे वार है,
विज्ञान की मृग मरीचिका मानव को वहाँ पहुँचाएगी,
तवे सी तपती धरती में काया झुलसकर रह जाएगी,
भला चाहता तो विज्ञान से शाँति हेतु आविष्कार कर,
शाँति से रह प्रेम के हथियार से वार कर।

जीत कर दुनियाँ को, तू विजयी तो हो नहीं सकता ?

भेजकर सब को काल के गाल में तू कालजयी तो हो नहीं सकता ?

विजयी होना है तो हर दिल में अधिकार कर,

शाँति से रह, प्रेम के हथियार से वार कर।

Gossner Mission

द्वितीय पुरस्कार

विषय–शांति वर्ष कैसे मनाया जाए

श्री विजय बागे, छत्तर बगीचा लोहरदगा द्वारा रचित घरबन्धु इनामी प्रतियोगिता (एक) में द्वितीय स्थान प्राप्त ५०) रु० से पुरस्कृत यह कविता प्रस्तुत है।

"1986" वर्ष को शांति वर्ष के रूप में,
संयुक्त राष्ट्र संघ ने कहा मनाया जाए ।।
लेकिन अहं सवाल उठता ये हैं,
कि ये मनाया कैसे जाए ।।
रीगन गोर्बाक्योव अपने रंग में रंगे,
ईरान-इराक इजराइल एक समान ।।
बचाओ विश्व को इनकी आग से,
बचाओ "शीत युद्ध" की आग से ।।
पर सवाल ये है कि शीत युद्ध
रोका कैसे जाए ।।
समझाओ विश्व को "शीत युद्ध" का अर्थ,
बताओ इसे "शांति" का अर्थ ।।
सुनाओ इसे "विनाश" का पर्याय,
मानव कल्याण शांति में ही है ।।
युद्ध तो मौत है पर ये,
समझाया कैसे जाए ।।
मन में सब के प्रेम दीप जलाओ,
जगाओ शांति की अभिलाषा ।।
जिसके मन में दया नहीं हो,
उसे बताओ "ईश" क्या है ।।
अपनी धरती मातृभूमि,
बचाया कैसे जाए ।।
लड़ो तो देश की अशांति के खिलाफ,
छेड़ो जेहाद तो शस्त्रीकरण के विरुद्ध ।।
हम तो "मौत का सौदा" करते हैं,
अपना जीवन अपना अस्तित्व ।।
हमारा दाँव पे लगा है,
पर ये सच्चाई बताई कैसे जाए ।।
एक "सुबह" ऐसी आएगी जिसमें,
न चिड़ियाँ चहकेंगी न बच्चे खेलेंगे ।।
चारों ओर वीरानी फैली रहेगी,
जिसका कारण है "शीत युद्ध" ।।
इस लिए "शाँति वर्ष" का,
हम स्वागत करते हैं ।!

तृतीय पुरसकार

शान्ति वर्ष कैसे मनाया जाय

श्री रोशन होरो, कोतवाली थाना रांची, द्वारा रचित घरबन्धु इनामी प्रतियोगिता (एक) में तृतीय स्थान प्राप्त २५) रु. से पुरस्कृत यह कविता प्रस्तुत है।

शाँति वर्ष आया,
आशा का संदेश लाया।
सब के मन को भाया,
क्योंकि यह अमन, चैन व शाँति लाया ।।
विभिन्न राष्ट्रों के बीच,
मैत्रीपूर्ण संबंध बनायेंगे।
प्रेम, एकता और शाँति के साथ,
मिलकर इस वर्ष को बितायेंगे ।।
गुटबन्दी अविश्वास और कूटनीति को,
मिल कर दूर भगायेंगे।
विश्व बंधुत्व की भावना को,
सभी राष्ट्रों के मध्य जगायेंगे ।।
बड़े राष्ट्रों प्रकोपों से,
छोटे शष्ट्रों को संरक्षण दिलायेंगे।
सम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद का नाम,
इस दुनिया से मिटायेंगे ।।
संभावित विश्वयुद्ध को रोकने का,
हर संभव कदम उठायेंगे।
घातक अस्त्र-शस्त्रों के निर्माण को बंद कर,
निरस्त्रीकरण को सफल बनायेंगे ।।
शाँति वर्ष के इस सुनहरे साल में,
जो कि विश्व दुलारा है।
समस्त जन-मन का प्यारा है,
इसमें केवल यही हमारा नारा है—

Gossner Mission

स्व० पाद्री ख्रिस्ट हेरन तिर्की

सलमोन मिंज, जी० ई० एल० चर्च कम्पाउन्ड लोहरदगा

परमेश्वर ने आज हमारे बीच से मान्यवर पाद्री श्री सी० एच तिर्की को दिनांक २४ अगस्त अपराह्ण १.३० बजे अपने राज्य में सनातन विश्राम एवं आनन्द के लिये अपने पास बुला लिया। उनके अतीत आज हमारे समक्ष पड़े हैं।

पाद्री श्री सी० एच० तिर्की (ख्रीस्ट हेरन तिर्की) का जन्म २ फरवरी १९२८ ई० को गोविन्दपुर पेरिश के टेगरकेला ग्राम में हुआ था। बाल्यावस्थथा में ही उनके माता पिता का स्वर्ग वास हुआ तथा उनके भरण-पोषण का भार इनके मौसा-मौसी के उपर पड़ा। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा गोविन्दपुर और मैट्रिक गोस्नर हाई स्कूल राँची में हुई। बाल्यावस्था से ही वे धार्मिक प्रवृति के थे और उन्हें संगीत से विशेष प्रेम था। "साक्षी वाणी" गीत न० १२९ १७१ "परमेश्वर प्रेम है" को साक्षीवाणी का सर्वश्रेष्ट गीत मानते थे और हर समय उनके मुँह से गीत के बोल निकलते थे। मैट्रिक के बाद सेमीनरी में आए। सेमिनरी के अन्तिम दिनों में पाद्री स्वोस से जो शिक्षा मिली थी कि पाद्री बनना एक गोबर गढ़हा है, समय की पूर्णतः में गन्दगी सड़कर खाद बन जाता है, खाद में फसल लहलहाने लगते हैं और फसल साठ सत्तर गुणा होता है। इसी प्रकार पाद्री बनने से निन्दा, शिकायत, आलोचना, प्रत्यलोचन बेइज्जती आदि का सामना करना पड़ता है। जो पाद्री इन सारी बातों को प्रभु के प्रेम में सह लेता है वह कलीशिया का एक अच्छा चरवाहा होता है। इसी शिक्षा को उसने अपने जीवन में अमल किये। पाद्री पद का अभिषेक होने पर उन्हें सर्व प्रथम लाली पेरिश में प्रभु की सेवकाई के निमित भेजा गया। वहां कुछ वर्षों के सेवकाई के बाद जुलाई १९५५ में लोहरदगा इलाका इन्हें भेजा गया।

मात्र ६ महीने तक शान्ति से सेवकाई का काम कर पाए होंगे कि गोस्नर कलीशिया के इतिहास में काला अध्याय आरम्भ होता है। जिस प्रकार यहुदा इस्करयोती अपने व्यक्तिगत स्वार्थ में वशी भूत हो कर जगत के प्रेमी पिता परमेश्वर के एक मात्र लौटे पुत्र, नब्बियों द्वारा नव्वुवत "शान्ति का राजकुमार" हमारे उद्धार कर्त्ता "प्रभु यीशु मसीह" को चुम्बन देकर दुष्टों के हाथों सौंपने का दुस्साह किया। तत्कालिन कलीशिया के सर्वोच पदाधिकारी के मन में भी पद की लो लुपता की इच्छा बलवती हुई और कतिपय नार्थ जोन का जन्म हुआ। नार्थ जोन का मौलिक क्रिया कलाप क्या है सभी को मालूम है। नोर्थ जोन का प्रभाव पूर्व नोर्थ वेस्ट अंचल में उस समय चरम सीमा में था। पाद्री सी० एच० तिर्की के सेवकाई के काम में भी बड़ी वाधाएं हुई, यहां तक कि उन्हें प्रभु के घर (कुड़ू पेरिश में) सेवकाई के निमित्त खड़े थे लोगों ने कान खींच कर निकाला। उन पर कई झूठे मुकदमे दायर किये गये लेकिन सब में उसने जय पायी, तथा पाद्री का उन लोगों से विरोध था जो दावा करते थे कि वे परमेश्वर की आशानुसार चलते हैं किन्तु वे परमेश्वर की आशाओं के विपरीत हैं ऐसे लोगों को उसने खुले आम चुनौती दी और साबित कर दिखाया की वे ढ़ोंगी हैं। उसने कहा था "मनुष्य बाहरी स्वरूप व काम को देखता है किन्तु परमेश्वर मानव हृदय को देखता है"। तथा कथित नोर्थ जोन अब नोर्थ वेस्टर्न जी० ई० एल चर्च के

Gossner Mission

अधिकारी पाद्री के इस मौलिक सिद्धान्त से क्रोधित होते थे और उनके खिलाफ षडयंत्र रचने में गौरव का अनुभव करते थे और करते हैं।

इस प्रकार की अशोभनीय घटना कलीशिया के इतिहास में एक मिशाल है। लोहरदगा प्रस्तावित उच्च विद्यालय के सचिव पद पर कार्य करते हुए भी उन्हें शारीरिक और मानसिक प्रताड़ना दी गई।

वे कस्तुरबा उच्च कन्या विद्यालय के सचिव एवं लोहरदगा उसे लाईन शिक्षिका प्रशिक्षण विद्यालय के कमिटि सदस्य के रूप में अपना कार्य किया। अपने मिलनसार स्वभाव के कारण अन्य धर्मावलम्बियों के बीच में भी काफी लोकप्रिये रहे। उनकी लोकप्रियता एवं कर्त्तव्य निष्ठा के बदौलत सन् १९७४-७५ तक लोहरदगा नगरपालिका के उपाध्यक्ष रहे। सरकारी सेवकों के बीच में भी इनका विशेष सम्मान था। जब मिशन की जमीन की लीज जो ९९ वर्ष की होती है समाप्त हुई कई साल गुजर चुके थे, जमीन की नीलामी की इस्तिहार सरकार द्वारा की गई थी, अन्य धर्मावलम्बियों मिशन की जमीन में मन्दिर बनाने के लिये आवेदन दे चुके थे, ऐसे कठिन परिस्थिति में पाद्री ने अथक साहस और सूझ-बूझ से काम लिया। उसने अपने लोक प्रियता का प्रभाव सरकारी अधिकारी में किया और दिन रात के अथक परिश्रम से जमीन को नीलामी से बचाया। सरकारी अधिकारियों ने उन्हें जमीन अपने नाम से कराने के लिये सलाह दी थी लेकिन उसने उन्हें कहा था;। जमीन प्रभु का है। प्रभु के सेवा के लिये है। इसमें दास का कोई अधिकार नहीं है। यह उनकी त्याग और कलीशिया के प्रति अटूट प्रेम का प्रतीक है। वे विरोधियों से बदला लेने की भावना से कभी प्रेरित होते दिखाई नहीं दिये बल्कि उसने उसके लिये रो-रो कर रोज प्रार्थना किया करते थे। इससे उनकी महानता झलकती हैं।

पाद्री कलीशिया की वर्त्तमान स्थिति के प्रति बहुत चिन्तित रहते थे, जिससे उसका स्वस्थ्य गिरते चला गया, जब अन्तिम क्षण आया उसने अपने उपस्थित बच्चों को मृत्यु शय्या के निकट बुलाया प्रभु से प्रार्थना किया, बच्चों को प्रभु सर्वशक्तिमान परमेश्वर का आर्शीवाद दिये और अपने को प्रभु में सदा-सदा के लिये सौंपों।

दिनांक २८-८-८६ को दिन के १.३० बजे प्रभु में मिल गये। दिनांक २९-८-८६ को ३ बजे सम्मान के साथ पाद्री किस्पोट्टा (गुमला) पाद्री एस० एम० तोपनो (राँची) पाद्री एस० मुण्डु (लोहरदगा) की अगुवाई में ख्रीस्त विश्वासी और दूसरे धर्मावलम्बियों के साथ जी० ई० एल० चर्च लोहरदगा समाधि में रखा गया। प्रभु उनकी आत्मा और शोकित परिवार तथा लोहरदगा इलाका के शोकित भाई-बहनों को शान्ति और कुशल प्रदान करे।

बाइबिल पहेली प्रतियोगिता (छः) का परिणाम नवम्बर माह के अंक में प्रकाशित होगा--सम्पादक

पाठक वृन्द क्षमा करें – बिजली की गड़बड़ी से पत्रिका देर से निकली
--सम्पादक

Gossner Mission

घरबन्धु इनामी प्रतियोगिता (एक) का परिणाम—

नारा—● प्रथम सुकमाल अर्पण किड़ो. उम्र १२ वर्ष, दुन्दुरिया डाड़ू टोली, गुमला। ● द्वितीय—सुनन्दा स्मृति किड़ो, उम्र १७ वर्ष दुन्दुरिया डाड़ू टोली गुमला। ● तृतीय—अंजुम लकड़ा जी० ई० एल० चर्च जवाहर नगर मानगो जमशेदपुर। ● सांत्वना—प्रथम- वीर रतन गुड़िया उम्र १० वर्ष बिरसा नगर जो० न० टेलको जमशेदपुर। ● द्वितीय—सन्तोष एक्का उम्र १७ वर्ष पो० आर० आई टी० जमशेदपुर ● तृतीय—जया केरकेट्टा उम्र १६ वर्ष न्यु-गार्डेन सिरोमटोली रांची। ● चतुर्थ— धीरज कुमार होरो उम्र १६ वर्ष, जी०ई०एल० चर्च रांची।

कविता:—● प्रथम—श्री मनोज कुमार उम्र १८ वर्ष सिमडेगा। ● द्वितीय—श्री विजय बागे उम्र १६ वर्ष छत्तर बगीचा लोहरदगा। ● तृतीय श्री रोशन होरो उम्र १७ वर्ष कोतवाली थाना राँची। ● सांत्वना प्रथम —नीलू बोदरा उम्र २० वर्ष सोनारी क्रिश्चन बस्ती जमशेदपुर। ● द्वितीय— शाँन्ता रहिल तिर्की उम्र १६ वर्ष काँटा टोली राँची। ● तृतीय— असीम कुमार कुल्लू उम्र २० वर्ष डुम्बर टोली गुमला। ● चतुर्थ— वीणा अंजना तिर्की उम्र १७ वर्ष कांटा टोली रांची।

निबंध :—● प्रथम-श्री बसंत कुमार बरला, उम्र २५ वर्ष जी० ई० एल० चर्च कम्पाउन्ड बाबूलेन रांची। ● द्वितीय— श्री जुनूल मुन्डू उम्र ३५ वर्ष लेखा कार्यालय सीनी। ● तृतीय— श्री मनोहर बरला उम्र २३ वर्ष जी० ई० एल० चर्च कम्पाउन्ड बाबूलेन रांची। ● सांत्वाना—प्रथम श्री मानुएल मुन्डू उम्र २६ वर्ष एकाउन्ट ऑफिस एस० ई० रेलवे सीनी। ● द्वितीय – पाद्री याकुब सोरेंग उम्र ३५ वर्ष गोस्नर थेओलोजिकल कॉलेज रांची। ● तृतीय— सत्यालय खाखा जी० ई० एल० चर्च केदारपुर अम्बिकापुर। ● चतुर्थ— शीला मंड़की उम्र १८ वर्ष ब्रजराज नगर।

घरबन्धु इनामी प्रतियोगिता (एक) के उन सभी प्रतियोगियों को बधाई देते हुए हमें अत्यन्त हर्ष है जिन्होंने स्व रचित निबंध कविता, नारा भेजकर घरबन्धु इनामी प्रतियोगिता (एक) में प्रथम, द्वितीय, स्थान प्राप्त किया है। फलतः घरबन्धु पत्रिका द्वारा हिन्दी क्षेत्र में भावी साहित्यकार बनने की प्रयत्न में अपनी-अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। इसके साथ ही साथ सांत्वाना के स्थान पर आए सभी प्रतियोगियों को हम बधाई दे रहे हैं। हमारी आशा है इसी तरह ही भविष्य में घरबन्धु प्रतियोगिताओं में होड़ मचेगी और राष्ट्र भाषा हिन्दी साहित्य में घरबन्धु पत्रिका अपनी स्वर बनाए रखेगी।

धन्यवाद। सम्पादक।

♣	बिहार के सिंचाई राज्य मंत्री माननीय श्रीमती सुशीला केरकेट्टा के हम आभारी है जिन्होंने नए पनपते रचनाकारों को प्रोत्साहन देने के लिए घरबन्धु इनामी प्रतियोगिता (एक) के लिए पुरस्कार-राशि भेंट की है। धन्यवाद। सम्पादक।	♣

Gossner Mission

मसीही आवाज

(गुड बुक्स ट्रस्ट एसोशिएशन प्रा० लि० राँची द्वारा प्रकाशित।

- एक मसीही परिवार की आवश्यकता
- ६० वर्षों से निरन्तर प्रकाशित

मसीही आवाज

(पारिवारिक मसीही हिन्दी मासिक पत्रिका)

- भारत की सर्वश्रेष्ठ हिन्दी भाषी मसीही पत्रिकाओं में से एक। अब आपके घर आना चाहती है।—आत्मिक भोजन में—लेख, गीत, कहानी, नाटक गवाही, बाइबल अध्ययन, बाइबल पहेली, बाल पहेली, दैनिक मनन आदि सामग्री लेकर। आकर्षक आर्ट पेपर कवर, सुन्दर छपाई, वर्ष में लगभग छः विशेषांक। कुल मिलाकर १२ अंक।
- वार्षिक ग्राहक मूल्य, मात्र २० रुपये।
- आज ही ग्राहक बनें। सदस्यता और नमूना प्रति के लिए हमें लिखें।

हमारा पता—

सम्पादक – 'मसीही आवाज' कार्यालय, गुड बुक्स बिल्डिंग दूसरी मंजिल
मेन रोड, राँची - ८३४००१ (बिहार)

विज्ञापन

दक्षिणी पूर्वी अंचल, जी०ई०एल० चर्च महिला समिति सिलाई बुनाई प्रशिक्षण प्रोजेक्ट, केन्द्र गोविन्दपुर, १ ली जनवरी १९८७ से खुल रहा है। प्रशिक्षण का पहला सत्र जनवरी १९८७ से जून १९८७ तक है। इसमें प्रशिक्षण पाने चाहने वाली लड़कियाँ, महिलाएं अपना आवेदन पत्र १५ दिसम्बर १९८६ तक नीचे लिखे पते पर भेजें।

प्रशिक्षण काल में प्रतिमाह मेस तथा प्रशिक्षण फीस इस प्रकार है — १५ के०जी० चावल, २½ के०जी० दाल और २०)रुपये। केवल रुपया देनेवालों के लिए प्रतिमाह ८० रुपये।

अन्य जानकारी के लिए निम्नलिखित पते पर लिखें—

सचिव

दक्षिणी पूर्वी अंचल जी०ई०एल० चर्च
महिला समिति सिलाई बुनाई प्रशिक्षण प्रोजेक्ट
केन्द्र गोविन्दपुर,
पत्रालय गोविन्दपुर, जिला राँची।

Gossner Mission

सूचना

सूचित किया जाता है कि सन् १९८६ से सन् १९८९ द्वितीय सत्र के छपाई कला के विभिन्न ट्रेडों के प्रशिक्षण, नवम्बर १९८६ से आरम्भ होगी। अतः प्रशिक्षण चाहने वाले छात्र-छात्राओं के लिखित आवेदन पत्र अधीक्षक जी० ई० एल० चर्च प्रेस राँची के कार्यालय में आमंत्रित किये जाते हैं, आवेदन पत्र ३० अक्टूबर १९८६ तक कार्यालय में पहुँच जाना चाहिए।

योग्यता... (१) प्रशिक्षणार्थी को मेट्रिक पास होना चाहिए। (२) सरकारी नियमानुसार छात्रवृति भी दी जायगी। (३) साक्षात्कार ३-११-८६ को ९ बजे सुबह जी० ई० एल० चर्च प्रेस कार्यालय में होगा। (४) आवेदन पत्र प्रेस कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है।

अधीक्षक
जी० ई० एल० चर्च प्रेस, राँची।

पंजिका १९८७ का उपलब्ध है। प्राप्ति स्थान :-
के० एस० एस० ऑफिस जी० ई० एल० चर्च कम्पाउन्ड
रांची - ८३४००१—सम्पादक

शोक समाचार

पाद्री बाबुलाल तोपनो जो अन्डामन के प्रथम पाद्री के नाम से जाने जाते है, १५ मार्च १९५९ से पुरोहिताई एवं मिशनरी का काम अन्डामन में आरम्भ किए। इस कार्य से अवकाश प्राप्त कर अपने गाँव दियाँकेल में रहते थे। परन्तु अपने बेटी दामाद श्री जुनाथान और श्रीमती पी० सुरिन के Qr No - B/375 Scetor 2 धुर्वा में पेचिस बीमारी के द्वारा ८१ वर्ष की आयु में ता० १२.९.८६. को ईश्वर पिता ने अपने पास बुला लिया। अपने गाँव दियाँकेल में उनके मृतक देह को मिट्टी दी गयी।

पाद्रीआइन — कृपामनी तोपनो, प्रथम पुत्र — इलियस जो अन्डामन में है, द्वितीय पुत्र - सुसारन तोपनो सहायक शिक्षक दियाँकेल मिडिल स्कूल, तृतीय पुत्र वेलसर तोपनो रेलवे सुरक्षा विभाग बरेली यू० पी० में कार्यरत एवं चार पुत्रियों तथा उपरोक्त सभी के बाल-बच्चों को अपने पीछे छोड़ गए। उनके शोकित परिवार एवं रिस्तेदारों के लिए प्रार्थना की जाए।

निवेदक — हीरालाल तोपनो, दियाँकेल।

स्व० पाद्री बाबुलाल तोपनो के बारे उनके कार्य एवं जीवन पर एक छोटी पुस्तिका लिखी जाएगी।
प्रोमोटर - पाद्री सबन मार्टिन टोपनो।

Gossner Mission

Grams : BHATIA SPORTS Phones Showroom 22366Res 23509

BHATIA SPORTS & SCIENTIFIC

Main Road Ranchi—834001 (BIHAR)

precision, Scientific, Instruments, apparatus Chemicals glass ware, drawing Materials Sports Games play ground articles Map-Charts General order suppliers.

COMPLEIE LABORATORY FURNISHERS

आप लोगों के लिए एक खुश खबरी !

एच० एम० टी० घड़ियों का अधिकृत विक्रेता

(AUTHORISED SALE SERVICE)

AGENT

कृपया एच० एम० टी० की खुबसूरत घड़ियों के लिए पधारे:—

मेन रोड जी० ई० एल० चर्च कम्पाउन्ड

जयन्त वॉच क०

(पंजाब स्वीट हाऊस के सामने)

मेन रोड राँची, (८३४००१)

प्रो०—जयन्त खलखो

कृपया पत्र व्यवहार या मनीआर्डर भेजते वक्त अपना ग्राहक न० अवश्य लिखें

एसोसियेट एडिटर, घरबन्धु ।

Edited & Published by Rev. S. Mohan MG. Pramukh Adhyaksh on behalf of the G.E.L. Church and printed at G.E.L. Church Press Main Road Ranchi.

Gossner Mission

घरबन्धु

रजिस्टर्ड न० आर० एन० सी० ४

वार्षिक मूल्य १४ रु०

एक प्रति मूल्य १ रु० ५० पै०

वर्ष— १०६ राँची, नवम्बर १९८६ संख्या न०— ११

फादर योहन्नेस एवंजेलिस्ता गोस्सनर के भेजे हुए प्रथम चार सुसमाचार प्रचारक—१८४५ ई०

I. Th. Janke, Emil Schatz, Aug. Brandt, Fr. Batsch

"जो आँसु बहाते हुए बोते हैं, वे जयजयकार करते हुए लवने पाएंगे। चाहे बोने वाला बीज लेकर रोता हुआ चला जाए, परन्तु वह फिर पूलियाँ लिए जयजयकार करता हुआ निश्चय लौट आएगा।"

भ० सं० १२६ : ५-६।

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

EDITOR & PUBLISER

Pramukh Adhyaksh

Rev. S Mohan MG.

ASSOCIATE EDITOR

Rev. S. Toppo

PROMOTER

Rev. Saban Martin Topno

EDITORIAL COMMITTEE

1 Mrs. M. Minz
2 Rev. Cyril Hembrom
3 Srimati Sisi Baha Topno

सूचनाः—स्मरण रहे कि लेखकों के भावों के लिए सम्पादक व सम्पादक मंडल जवाबदेह नहीं रहेगा।

घरबन्धु में विज्ञापन छपवाने की दरें

पिछले आवरण का वाह्य पूर्ण पृष्ठ	१७५)
,, ,, ,, अर्द्ध पृष्ठ	९०)
,, ,, ,, अन्तः पूर्ण पृष्ठ	१५०)
,, ,, ,, अर्द्ध पृष्ठ	८०)

x x x

अन्दर के पूर्ण पृष्ठ	१२५)
,, ,, ,, अर्द्ध पृष्ठ	७०)
,, ,, ,, एक चौथाई पृष्ठ	४०)
,, ,, ,, दो तिहाई पृष्ठ	९०)
,, ,, ,, एक तिहाई पृष्ठ	५०)

सूची

इस अंक में

सम्पादकीय

पाठकों की आवाज २
उपदेश की तैयारी ३

लेख—मतसंशोधन दिवस क्यों ? ५
उज्वल युवा अवस्था का मार्ग ७

कहानी— सहारा ९

कविता— मैं हूँ बड़ा गुनाहगार १५
प्रभु का वचन १६

जर्मन संस्मरण १०
एकीकरण १२
मानगो मंडली में महिला दिवस १३
महिला समिति जमशेदपुर १६
आदित्यपुर मंडली का संक्षिप्त विवरण १७

घरबन्धु विचार मंच १४

बाल-जगत— बाइबिल पहेली प्रतियोगिता १८
बाइबिल पहेली प्रतियोगिता (छः) का हल ,,

Gossner Mission

सम्पादकीय टिप्पणियां

किसी भी देश के लिए राष्ट्रभाषा का होना जरुरी है। राष्ट्रभाषा देश की एकता एवं अखण्डता को मजबूत बनाती है। देश के विभिन्न भागों में राष्ट्रभाषा ही एक मात्र माध्यम है जिसके द्वारा विभिन्न भाषा-भाषी के लोगों को आपस में विचारों के आदान-प्रदान में सुविधा होती है। राष्ट्र एवं राष्ट्रभाषा दोनों का भाग्य एक साथ गुंथा रहता है। जब राष्ट्र की उन्नति होती है तो राष्ट्र भाषा का भी विकास होता है जब राष्ट्र गिरता है तो राष्ट्र भाषा की अवस्था भी हीन हो जाती है। राष्ट्रभाषा के विकास से राष्ट्र का भी विकास होता है। साहित्य के माध्यम से सामाजिक मान्यताओं का अवलोकन करना एक अच्छा गुण है। अतः साहित्यकार किसी भी समय में अपने सामाजिक दायित्व से विमुख नहीं हुआ है। हमारा आध्यात्मिक चिंतन या विचार परम्परागत रहा है। अन्ततः वर्त्तमान औद्योगिकरण युग में भी विचारधाराओं के रुप को पाश्चात्य पर ही ढाले हुए हैं। इसका खास कारण सम्भवतः अपने क्षेत्र में साहित्यकारों की चुप्पी या ऐसा कड़ा दबाव रहा हो जिससे कि स्वदेशी विचार धाराओं को जगाने में प्रोत्साहन नहीं किया गया हो। अपने ही देश, राज्य, या क्षेत्र में अनेक शुद्ध आध्यात्मिक पुरुष रहे हैं जिनके वैयक्तिक गुणों पर पर्दा पड़ा है। उनके व्यक्तित्व को प्रकाश में लाना साहित्यकारों का मुख्य कर्तव्य है। साहित्यकार समाज में सही क्रान्ति लाने में सब से बड़ा सहयोगी हो सकता है और समय-समय पर सामाजिक अन्याय के विरुद्ध उठी आवाज साहित्य में बुलन्द हुई है तो जनमानस पर उनका अनुकूल असर पड़ा है। जब-जब सामाजिक बुराईयों के घेरे के अन्दर मानव अंधकारमय जीवन में रहता है तब-तब साहित्य की अलौकिक ज्योति उस घेरे को छेद कर तेजोमय किरण फैलाने में अचूक दवा का काम देता है, जिससे मानव जीवन दान पाता है। अतः अन्धकार के सभी कार्यों से अलग रहना है। "ज्योति और अंधकार की क्या संगति।" ईसाइयों के अन्तर में ईसा वास करता है जो कि संसार की ज्योति है। ईसाइयों को संसार के समक्ष इसी ज्योति के एक-एक कण बन कर रोशनी फैलाना है। वस्तुतः यह काम ईसाईयत में ही निहित है जो साहित्य की पुरजोर पर सम्भव है।

सम्पादक

Gossner Mission

पाठकों की आवाज

जवाब हमारे ।

सवाल— श्रीमती बी० कोनगाड़ी, खुँटी से :- घरबन्धु पत्रिका प्रतियों की बढ़ोत्तरी को देखकर तो मैं खुश हूं। फिलहाल अच्छे-अच्छे लेखकें भी प्रकाश में आ रहे हैं। पर एक महत्वपूर्ण स्तम्भ मैं नहीं देख पा रही हूं, वह है मंडलियाई-समाचार। हम पाठकगण कई मंडलियों के समाचार जानने के इच्छुक हैं। क्या इस पर भविष्य में ध्यान दिया जा सकेगा ?

जवाब— बहन जी ! गोस्नर कलीसिया में अधिक से अधिक पाठकवृन्द आप की तरह समाचार जानने की इच्छा रखते हैं। इसमें कोई शक नहीं है। दैनिक समाचार-पत्रों के लिए तो निजी संवाद दाताएं नियुक्त किए जाते हैं। समाचार पत्रों के लिए समाचार भेजने पर निश्चित रकम उन्हे मिल जाती है। किन्तु घरबन्धु पत्रिका के लिए तो अब तक हमने निजी संवाद दाताओं को नियुक्त नहीं किया है। इस विषय पर हमने गहराईता से ध्यान दिया है। पत्रिका में स्वार्थ भरी गलत समाचारों को हम स्थान नही देते और लोगों को भ्रम में डालने वाली समाचारों को भी बिलकुल छाप नहीं सकते। हर मंडलियों से समाचार अवश्य भेजे जाएं पर आठ, दस या पन्द्रह पाँक्तियों में ही समाचार लिख भेजना चाहिए। समाचार स्तम्भ में अवश्य काम शुरु किया जाना चाहिए। किन्तु समाचार हर क्षेत्र से आना जरुरी है। बहन जी ! आप इस विषय पर जो इच्छा व्यक्त की उसके लिए धन्यवाद।

सवाल:— जोन हपदगड़ा, कईका से:-जब मैं सेल्फ स्टडी प्रोग्राम के दौरान राँची में था तो घरबन्धु पत्रिका के प्रोमोटर साहब से भेंट हुई। उन्होंने कृषि-विभाग पर मुझ से बात छेड़ दिया। क्योंकि मैं खेती-बारी विषय पर रेडियो से कई प्रोग्राम दे चुका हूं। बात चीत के दरमियान मैंने सवाल किया— खेती-बारी विषय पर यदि सामग्री भेजूं तो क्या घरबन्धु पत्रिका में स्थान मिलेगा ?

जवाब :— हपदगड़ा भाई ! घरबन्धु पत्रिका २४ पृष्ठों की है। अब तक में वार्षिक सदस्याओं की संख्या २००० हैं। खेती-बारी स्तम्भ रखना तो जरुरी है। पहले आप सामग्री भेजें तो सही हम स्तम्भ निकालना शुरु कर देंगे। पर हाँ सामग्री एक या आधे पृष्ठ की होनी चाहिए। लगातार यदि कृषि-विभाग से सामग्री मिलेगी तो स्थायी स्तम्भ का रुप बन जाएगा। हपदगड़ा जी आप के इस सेवा विचार के लिए धन्यवाद।

(शेषांक पृष्ठ ८ का)

किन्तु उसके सनातन उद्देश्य से निर्धारित महान अध्यात्मिक परिपूर्णता को प्राप्त करने हेतु योजनाओं का। मानव विद्य (बहुमूल्य तो है) का नहीं, किन्तु परमेश्वर के जीवते वचन का। धरती के अधिपतियों एवं उनके विभवों का नहीं; किन्तु मृत्यु भज्जन मेम्ने का स्वर्गीय येरुशलेम एवं उसके विभव का, स्वर्गदूतों का; जीवन के जल के नदी एवं हर

उत्तम३ आत्मिक बातों का ... !

अतः सावधान एवं विचन में सम्पन्नयुक्त युवकगण उज्वल युवावस्था के मार्ग को ढूंढ़ पावेंगे और वह मार्ग वही होगा जिसके विषय विद्वान लेखक कहता है, "धर्मियों की चाल उस चमकती हुई ज्योति के समान है जिसका प्रकाश दो पहर तक अधिक अधिक बढ़ता रहता है" (नीति० ४:१८)।

घरबन्धु नोवेम्बर १९८६

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

अडवेन्ट का २रा एतवार

२ पत० १:३-११

परमेश्वर की ओर से बुलाए हुओं के लिए प्रतिज्ञएं हैं। प्रतिज्ञाएं उद्धार एवं बुलाहट में दिखाई गयी है।

देखें :— १ पितर २:६, २ कुरि० ४:४, ६, ७:१, इफि० ४:२२, फिलि० २:१२, गला० ६:१०, प्रे० क्रि० २४:२५, १ थिस्स ४:६, मत्ती १३:२२, यूहन्ना ३:५।

विषय :— बुलाहट की आशीष में बने रहें।

१ आशीष के अनुसार चलें :—आशीष अनन्त जीवन की है। परमेश्वर के साथ आशीष ही में हमारी सुसंगति है। परमेश्वर और मनुष्य की संगति में अनुभव करते जाएं। बुलाहट में हमें आशीष मिली है। बुलाहट के अनुसार आचरण आवश्यक है। हम विश्वासी होकर बुलाए गए हैं। हमारी बुलाहट के अनुसार चले।

२ आशीष के निशान से न चूकें:—जो आशीष मिली है, वह क्षणिक नहीं है। पर अनन्त आशीष है। उसी निशान की ओर चलें तथा दूसरों को भी चलाएं। अपने इस लक्ष्य से इधर-उधर न होवें। अतः विश्वासियों के लिए आवश्यक है कि आशीष में शामिल हों। परमेश्वर की संगति में रहकर आगे बढ़े।

समाप्ति:— हमें प्रतिज्ञाएं दी गयी है। ये प्रतिज्ञाएं हमारी बुलाहट में है। इसी बुलाहट में उद्धार एवं आशीष हमें मिलता है।

अडवेन्ट का ३रा एतवार

२ तिमो० ४: ५-८

पौलुस न केवल एक सफल मिश्नरी था, पर एक मसीही योद्धा भी था। वह न केवल सुसमाचार प्रचार किया पर उसके अनुसार जीवन भी बिताया।

देखें :— मत्ती २४:४६, प्रे० क्रि० २१:८, २०:२४, फिलि० २:१७, ३:१४, १ कुरि० ६:२५, यूह० १६:३०, १ तिमो० १:१८, ६:१२, इब्रा० ११:१, २३।

विषय:—मसीही जीवन आशामय जीवन है।

१ आशा में दृढ़ रहें :— अपने विश्वास और आचरण की सावधानी करते हुए स्थिर रहें। मसीही अपने जीवन में सावधान रहे और दुःख तकलीफ एवं परीक्षा में स्थिर रहे। इधर-उधर ताकना आवश्यक नहीं है। अस्थिरता स्वभाव को कोई जगह नहीं देना है।

२ आशा में आगे बढ़े:— निशान की ओर बढ़ना हमारा लक्ष्य हो। पीछे मुड़ना नहीं है। साक्षी, सेवा कार्य और कठिनाइयों के बीच भी आदर्श बन कर आगे ही बढ़ना है। अडवेन्ट काल का आनन्द सिर्फ जन्म पर्व की बात नहीं है पर पुनरागमन का आनन्द भी है कि उस दिन प्रभु धर्म का मुकुट हमें देगा।

समाप्ति :— मसीही विश्वास एवं आशा में स्थिर रहे। तकलीफों में स्थिर रहे। युगान्त में मसीह के प्रगट होने की प्रतिक्षा करते रहे। न्यायकर्त्ता प्रभु का पुनरागमन निश्चय है।

Gossner Mission

अडवेन्ट का ४था एतवार

१ यू० १ : १-५

यह साक्षी उन लोगों की है जो मसीह के साथ रहे, खाए-पीए। उठे-बैठे और अपने जीवन में उसका अनुभव करें।

देखें :— यूह० १: १, १४, १५:११, २७, १७: २०, २१, २०:२०, २५ १ यूह० ४:६, २:१३, प्रे० कि० ५:२०, २२:८, प्र० वा० २०:८, मत्ती १३:१७, लूक २४:३९, रोमी ३:२१।

विषय :— मसीह में अनन्त जीवन प्रगट है।

१ हम इस अनुभव में जीएं :— मसीह यीशु स्वयं जीवन है। अतः अपने साथ जीवन भी लाता है। जहाँ उसके साथ जीवन है वहाँ आनन्द भी है। अडवेन्ट काल का आनन्द इतना ही नहीं है कि मसीह अपनी संगति लोगों को देता है परन्तु उसकी साक्षी देने में भी है। जो मसीह की साक्षी देता है और उसमें बढ़ता है, वह आनन्द और साहस पाता है और अनन्त जीवन की आशा भी करता है।

२ हम इसकी आशा में रहे :— जो जीवन मसीह में प्रगट हुआ है, इसकी परिपूर्णता उसके पुनरागमन में हो जाएगी, जिसके द्वारा हम परमेश्वर की अनन्त संगति में मिलाए जाएंगे। अतः इसी आशानुसार काम करें। मसीही स्मरण का केवल नहीं कि पीछे की ओर ही ताकें पर भविष्य की ओर संकेत करता है कि उस ओर देखते हुए चलें।

समाप्ति :— अतः मसीहियों का कर्त्तव्य है कि अनन्त जीवन का अनुभव करें उसके अनुसार जीएं और चलें।

जन्म पर्व के बाद १ला एतवार

२ कुरि० ५: १-९

मसीह यीशु के जन्म लेने से एक नए, पर सदा काल के वास स्थान (घर) का द्वार खुल गया है। अतः आशा एवं विश्वास के साथ स्वर्ग द्वार में प्रवेश पा सकते हैं।

देखें:— अयुब ४। १९, २ पितर १ : १३, १४, मार्क १४ : ५८, ८ :१२, इब्रा० ९ : ११, ११ :१३, १ कुरि० १५ : ५३, २ कुरि० १ , २२, ४ : १८, रोमी ८ : १६, फिलि० १ : २३ भ० सं० ३९ : १३।

विषय :— हमारा चिरस्थायी घर।

१ मसीह में चिरस्थायी घर की निश्चयता :— अनन्त का घर अपने बल व बुद्धि में नहीं है, कि धोखा हो जाए, वह तो मसीह के कार्य में सम्पन्न हो गया है। हम इस दुनिया में शिविर में पहुँचे हुए जैसे है। दुःख और तकलीफ में कराहते हैं। इसी लिए मसीह आया कि हम नए पृथ्वी में प्रवेश पाएं। इसको पूर्ण रुप देने के लिए वह फिर आएगा।

२ पवित्रात्मा द्वारा चिरस्थायी घर की निश्चयता :— पवित्रात्मा हमें मिल गया है। चिरस्थायी घर की निश्चयता पवित्रात्मा हमें देता है। पवित्रात्मा हमें मसीही होने का हक और आनन्द देता है। अतः अनन्त घर में वह और भी आनन्दमय होगा। अतः निश्चयता के लिए परमेश्वर ने मसीह में हमारे लिए बयाने में पवित्रात्मा दिया है।

समाप्ति :— मसीह में चिरस्थायी घर की निश्चयता हमें पवित्रात्मा द्वारा आशा के साथ दिया जाता है।

घरबन्धु नोवेम्बर १९८६

Gossner Mission

लेख

मतसंसोधन दिवस क्यों ?

श्री असीम कुमार नथनिएल वर्णपुर प० बंगाल।

लूथेरान कलिशा के लिए मतसंसोधन दिवस बहुत ही प्रमुख दिवस है। यह स्मरणीय दिवस एक स्मृति पूर्ण दिवस के रुप में कलीसियाई स्तर में सारे विश्व में मनाई जाती है। जिसे लूथेरान कलीशा का जन्म पर्व भी कहते हैं। यथार्थ में यह दिन आज से ४६६ वर्ष ३१ अक्टूबर १५१७ ई० की बात को याद दिलाता है। जिस दिन से डा० मार्टिन लूथर मतसंसोधन का कार्य प्रारम्भ किया था। डा० मार्टिन लूथर रोमी कलिशा की बुराइयों को नजर अन्दाज करते हुए इसी दिन ९५ सूत्रों को बितेन वर्ग के गिरजा घर के द्वार पर लटकाया था। यह ९५ सूत्र रोमी कलिशा के पाप क्षमा पत्री के बेचे जाने के विरुद्व में थी। जिन में प्रमुख जोहन तेतलेज था। इस ९५ सूत्र के लटके जाने से सारी रोमी कलिशा में खलबली मच गई। जो रोमी कलिशा को और ही कुछ मोड़ दिया। डा० लूथर इस बात को समझते थे कि यदि कलिशा के बड़े बड़े अधिकारीगण कलिशा में हो रहे पाप और बुराइयो के बारे समझते तो अवश्य ही रोकते पर उन्होंने इस बात को जानते हुए भी नहीं रोका। साथ ही लूथर और उसके अनुयायियों को बड़ी सजा में रख दिया जिसके द्वारा लूथेरान कलिशा की स्थापना हुई।

डा० मार्टिन लूथर के इस बिरोध और लेखों के द्वारा बहुतों के मन नए प्रेम और सच्चे विश्वास के लिए जगाए गए। कितने राजा भी सारे मन से सुसमाचार की ओर होकर अपने देशों में मतसंसोधन की शिक्षानुसार आराधना और रीति विधियों को सुधारने लगे थे। उस परिस्थिति में जर्मन के कैसर बड़ी कठिनता में पड़ गया था, सो मतसंसोधन के अवलम्बियों को पूरी प्रसन्न करने के लिए राजकीय सभा से १५२६ ई० में आज्ञा निकाली कि एक सामान्य सभा तक हर एक मतसंसोधन के विषय में ऐसा व्यवहार करें कि वह ईश्वर और कैसर के सामने लेखा दे सके। जिससे इस बीच तीन वर्ष का कुशल-शांति और चैन हुआ लूथर के अनुयायी ने अपने गिर्जा से सम्बन्धित बातों को सम्भाला और स्थिर किया। उसी समय डा० लूथर ने लोगों की अज्ञानता को दूर करने के लिए छोटा और बड़ा कटेकिश्म की रचना की। इसके बाद सन् १५२९ ई० में दूसरी राजकीय सभा बुलाई गई जिसमें कैसर ने अपने बिरोधियों से स्वाधीनता पाने के कारण वोभर्स की आज्ञा को दृढ़ता से पूरी करने की अनुमति दी और १५२६ ई० की विचार सभा को अधिकाई से उठाया गया परन्तु एवंजेलिकल लोगों ने इस विचार के विरुद्व कहा इस इसलिए वे लोग उस समय से लेकर अब तक प्रोटेस्टेन्ट कहलाते हैं।

मतसंसोधन की इतनी बिरोध होने पर जौभी की यह बड़े सामर्थ से फैलते जाता था, तौभी डा० लूथर को इससे काफी शोक हुआ। विशेष कर उनके द्वारा जो उनकी बातों को ठीक तरह समझ नहीं पाते थे। साथ बिन समझे सुसमाचार की निन्दा करते थे। जैसा की किसान लोग निर्बन्धता और स्वाधीनता की बात सुनके अपने सब बन्धनों को तोड़ डालने की इच्छा करके अपने प्रधानों और अधिकारियों के बिरुद्व उठे, जिसे सुनकर डा० लूथर बहुत ही क्रोधित हुए क्यों कि वह सब प्रकार के गोलमाल और लड़ाई-झगड़ा का बैरी था। उसके लिए ईश्वरीय दया यही थी कि वह अपने जीवन काल में धर्म के कारण खंग से लड़ाई नहीं की। एसलेवेन नगर में जहाँ उन्होंने जन्म ग्रहण किया था, वहीं पर सन १५४६ की १८ फरवरी को प्रभु में सर्वदा के लिए सो गया। ईश्वर का मनोनीत जन इस पापमय जगत से

Gossner Mission

पाप के विरुद्ध लड़ता हुआ विदा हुआ, पर उसका अमर कार्य स्मृति के रुप में अब भी जीवित है। क्योंकि ईश्वर का वह पवित्र काम कभी। भी किसी भी तरह नष्ट नहीं हो सकता। मतसंसोधन के सिवा जर्मन भाषा में उल्था किया धर्मशास्त्र डा० लूथर का सबसे बड़ा दान है। जिसे ईश्वर ने लूथर के द्वारा लोगों को दिया। धर्मपुस्तक की भाषा लेखों और उपदेशों के माध्यम से ऐसी प्रचलित हुई कि लूथर जर्मन भाषा के शोधक कहलाए। इसे छोड़ डा० लूथर जर्मन धर्म गीतो के कर्त्ता भी हुए। विशेष कर उसमें गीतों के द्वारा मतसंसोधन की शिक्षा साधारण लोगों के बीच विदित हो गई और बहुत सारे लोग उनके द्वारा एवंजेलिकल कलीशा में मिलाए गए।

जैसा प्रेरितों के समय में सुसमाचार पलिस्तिन क्षेत्र से निकल कर सब देशों में फैल गया था वैसा ही मतसंसोधन के समय में सुसमाचार जर्मन देश से निकल कर सारे देश में फैलने लगा था। इंगलैंड के आठवीं हेनरी के पश्चात उसकी उत्तराधिकारीनी रानी मरियम इस मतसंसोधन के कार्य को फिर दबाना चाही थी, पर उनकी परिस्थिति वश एक न चली। जिस कारण से बहुत सारे लोग उस समय सुसमाचार के कारण मारे गए थे। बहुत लोग अप्रसन्न होकर अपने को साधारण कलीसा से अलग किया तथा विशपों और प्राचीनों का शासन अंगीकार किया। उन्होंने शोभा तश्वीरों और आराधना को लोप करके भारी दंड व्यवस्था की नियम चलाई। किन्तु इससे कलीशा की एकता नहीं मिटी सो इससे इंगलैंड में अब तक Presbytenans मिलते है। इटली देश में भी लूथर के लेखों के द्वारा ईश्वरीय सुसमाचर का बीज रोपा गया था। इससे अधिक जर्मनी और स्कॉटलैंड के सिपाहियों के द्वारा मतसंसोधन की बातें सुनाई गई तथा सच्चाई को फैलाने की अपार यत्न की गई। जिससे एवंजेलिकल लोग खोजे और सताये गए, कितने जीते जी समाधिस्थ कर दिए गए, कितने को फांसी में लटकाए गए। जैसा पहले संसारियों ने मसीहियों को सताया था, वैसा ही मतसंसोधन के समय में पोप और उसके अनुगामी सुसमाचार के अवलम्बियों को सताया तथा नष्ट करने की पूरी कोशिश की। जिससे इटली देश में सुसमाचार की ज्योति प्रायः सम्पूर्ण रीति से बूझ गई। परन्तु ईश्वर का धन्यवाद हो उसने अपने वचन को किसी न किसी माध्यम से बाकी जगहों में पहुँचा ही दिया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जिस प्रकार दाऊद महाराजा को ईश्वर की इच्छानुसार इस्राएली राज्य खड़ा करने के लिए लड़ना पड़ा था। उसी प्रकार लूथर को भी रोमी कलिशा की कुरीतियों को दूर करने के लिए लड़ना पड़ा। इन दोनों के (दाऊद और डा० मार्टिन लूथर) अपने बैरियों पर विजय पाने का मुख्य कारण ईश्वर ही रहा है। हमें भी ईश्वर के राज्य को सारे दुनिया में फैलाना है। हम यह जाने कि दाऊद और मार्टिन लूथर की भाँति हमारे माँ बेटी उठेंगे पर परमेश्वार का वह शाँति दायक वचन जिसके साथ है उसकी जीत अवश्य ही होगी। क्योंकि बैरियों पर जय देने वाला ईश्वर ही हैं। मनुष्य के सारे जिन्दगी में बैरी भरे पड़े हैं। १ पतरस ५:८ में हम पाते हैं— "सचेत हो और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा बिरोधी शैतान गर्जने वाले सिंह की नाई इस खोज में रहता है कि किसको फाड़ खाए"। इसलिए सचेत होकर जागते रहे कि परीक्षा में न पड़े। ईश्वर को अपना शरणस्थान मानते हुए इस पवित्र और महान दिवस को भक्ति और गम्भीरता से मनाने का प्रयास करे। साथ ही दूसरों को भी इसके अर्थ को समझावें। जिसके लिए परमेश्वर जो अनुग्रह का दाता है, जिसने मसीह में अनन्त महिमा हेतु हमें बुलाया है हमारी थोड़ी देर दुःख उठाने के पीछे आप ही हमें सुधारेगा, स्थिर करेगा और बलवन्त करेगा। उसकी महिमा अब से सदालों होवे—

Gossner Mission

(शेषांक से आगे)

उज्वल युवा अवस्था का मार्ग

डा०एम०एम० मुन्डु, डुमसा टोली रांची।

क्या ही शोकपूर्ण घटना था यह ! इस ने उज्वल युवावस्था के मार्ग पर चलना आरम्भ किया था जिसके कारण परमेश्वर ने उसे सब आशिषों से भरपूर कर बुद्धि, धन दौलत, बल, सामर्थ, ऐश्वर्य, महिमा एवं शांति, सब कुछ, जो मनुष्य को संसार में चाहिये दिया था। किन्तु परमेश्वर को त्यागने पर उसने सब कुछ खो दिया। उसके ऐश्वर्य की ज्योति हमेशा बढ़ती ही जाती, किन्तु वह अपमान तथा आत्मग्लानी सहित संन्ध्य के अन्धकार में मुर्झा गया। तौभी मृत्यु से पहले इस वृद्ध राजा ने अपने जीवन के दुःखद अनुभव का अमूल्य परामर्श आने वाली पीढ़ी के युवकों के लिए छोड़ गया जो कहता है, 'अपनी जवानी के दिनों में अपनी सृजनहार को स्मरण रख इस के पहले कि बिपति के दिन और वे वर्ष आएं, जिन में तू कहे कि मेरा मन इन में नहीं लगता,' (सभोप० १२:१)। फिर कहता है, "अन्त की बात यह है कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यही है। क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी, न्याय करेगा" (१३-१४ पद)।

इस से स्पष्ट है कि वह शही और सच्चाई को भली भांति जानता था फिर भी वह उस पर नहीं चला, यह क्या ही खेद की बात थी।

योशिय्याह की कहानी भी इसी प्रकार की है। वह भी सुलैमान के समान बल्यकाल ही में राज्य गद्दी पर बैठा। बाइबल कहता है कि, "वह लड़का ही था ..... कि अपने मूल पूरुष दाऊद के परमेश्वर को खोज करने लगा," (२ इति० ३४:३)। और "बारहवें वर्ष में वह ऊंचे स्थानों और अशेरा नाम मूरतों को और खुदी और ढली हुई मूरतों को दूर करके, यहूदा और येरूशलेम को शुद्ध करने लगा।"

कुछ ही दिन के बाद हिलिकिय्याह महायाजक ने मूसा के व्यवस्था की पुस्तक जो येरुशलेम मन्दिर के भण्डार में प्राप्त हुई थी, राजा के पास ला कर पढ़ सुनाया। जब राजा ने व्यवस्था की बातें सुनी तो वह बहुत दुःखित हो, "अपने वस्त्र फाड़े" (१९ पद)। क्योंकि इस्राएलियों ने "यहोवा का बचन नहीं माना और इस पुस्तक में लिखी हुई सब आज्ञाओं का पालन नहीं किया।" (२१पद)।

"तब राजा ने अपने स्थान पर खड़ा होकर यहोवा से इस आशय की वाचा बाधी कि मैं यहोवा के पीछे पीछे चलूंगा और अपने पूर्ण मन और पूर्ण जीव से उसकी आज्ञाएं, चितौनियों और विधियों का पालन करूंगा" (३१ पद)। और उसने उन सभों से जो येरुशलेम में और विन्यामीन में थे वैसा ही वाचा बन्धाई।

इस नवयुवक ने जो कार्य किया सो अद्भुत था और उसके प्रेम और ईश्वर भक्ति से परमेश्वर यहोवा अति प्रसन्न था। इस कारण परमेश्वर ने उसे बहुतायत से आशीष दी थी जिससे वह बल में बुद्धि में, प्रतिष्ठा में, धन में दिन दिन बढ़ता जाता था। उस उज्वल नवयुवक की कीर्ति और ही बढ़ती अगर उसने एक गलती नहीं की होती। उसकी एक क्षणिक मूढ़ता एवं अनुभवी का अच्छे से अच्छा परामर्श के विरुद्ध उसने मिस्र के राजा नाको के साथ व्यर्थ युद्ध किया और वह उसी युद्ध में मारा गया।

नया नियम में एक धनी युवक का वर्णन है। वह भी उज्वल युवकों के मार्ग पर चलना आरम्भ किया था। वह बहुत दूर तक उसी मार्ग पर चला था पर एक बात में चुक गया और मार्ग से भटक गया। इसका वर्णन मत्ती १९:१६-२२, मार्क १०:१७-२२ और लूका १८:१८-२३ में मिलेगा।

उस धनवान युवक ने घुटने टेक कर यीशु से पूछा, "हे उत्तम गुरु ! अनन्त जीवन का अधिकारी

Gossner Mission

होने के लिए मैं क्या करूं ?" यीशु ने कहा, "तू आज्ञाओं को जानता है कि व्यभिचार न करना, हत्य न करना, और चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, अपने पिता और अपनी माता का आदर करना।" उसने उत्तर दिया "मैं तो इन सब को लड़कपन ही से मानता आया हूं। अब मुझ में किस बात की घटी है ?"

यीशु उस युवक के उत्तर से प्रसन्न हुआ और उसके उत्सुकता और आचरण देख कर उसे प्यार किया। क्योंकि, सम्भवत: वह परमेश्वर की इच्छा पर चलने के लिए वर्षों से सच्चाई की खोज में था जिसके कारण नम्र, कोमल, सभ्य और उज्वल नव-जवान जान पड़ता था। किन्तु उसमें एक घटी थी जिसको यीशु जानता था। यीशु ने उससे कहा, "तुझ में अब भी एक बात की घटी है, अपना सब कुछ बेच कर कंगालों को बांट दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले।"

उस नव युवक को यीशु ने क्या ही सुन्दर अवसर दिया था। अगर यीशु की बातें मान कर उसके पीछे हो लेता तो वह उन प्रेरितों में से एक के समान हो जाता। उसकी संगती उद्धार कर्त्ता से होती। वह यीशु के साथ अन्तिम व्यारी में, गलगथा पर तथा जैतून पर्वत पर रहता। वह यीशु के जी उठने एवं स्वर्ग पर चढ़ने का एक अच्छा गवाह होता। हो सकता है कि वह पेन्तिकोष्ट के आत्मिक अभिषेक का भी भागीदार होता। वह सुसमाचार में भी अपना बहुमूल्य लेख लिख कर अपना योगदान दे, अमर होता। किन्तु, "वह उदास हो कर चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था" (मत्ती १९:२२)।

इस नवयुवक के अनुभव से यही प्रमाणित होता है कि शिफ़ दस आज्ञाओं को मुखस्त जानने से यथेष्ट नहीं हैं, किन्तु इसके साथ साथ आत्मिक ज्ञान में बढ़ते जाना एवं उसके अनुसार कार्य करना अनिवार्य है। यदि वह दस मेसे छः आज्ञाओं के तत्व, "अपने पड़ोसी को अपने समान प्यार कर" के पालन को स्वीकार करता या तो अपने प्रचूर धन को कंगालों को बांट कर अपना प्रेम उन पर प्रगट करने में उसे कोई अड़चन नहीं होती।

इस लिए उज्वन जवानी के मार्ग पर कदम रखने वाले जवानों से बचन कहता है कि, "तुम बलवान हो, और परमेश्वर का बचन तुम में बना रहता है तथा तुमने उस दुष्ट पर विजय पाली है। संसार से प्रेम न करो और न उन बस्तुओं से जो संसार में हैं .... परन्तु वह जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है सर्वदा बना रहेगा।" (यूहन्ना २:१४-१७)।

जवानों के विषय योएल की एक भविष्यवाणी है, जो कहता है, "मैं ऊपर आकाश में अद्भुत कार्य और नीचे तृथ्वी पर चिन्ह अर्थात लोहू और अग्नि तथा धुएं का खम्भा दिखाऊंगा। मैं अब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूंगा, तुम्हारे बेटे बेटियां भविष्यवाणी करेंगी .... और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे।" (योएल २:२८-३०)।

यदि वह समय आ गया है, जैसा आया भी है, तो सब युवकों के लिए बड़े ही उत्साह के साथ आशा और विश्वास लगाये रखने का वक्त है। क्योंकि परमेश्वर अब अपने प्रतिज्ञानुसार विशेष कर अन्तिम पीढ़ि के युवकों पर पूर्णता से उमड़ता हुआ जल-लहर सदृश्य अपना आत्मा उण्डेलने वाला है।

वह दर्शन देने की भी प्रतिज्ञा करता है : लौकिक ऐश्वर्य का नहीं, किन्तु वर्णन से परे स्वर्गीय ऐश्वर्य का। सांसारिक बस्तुओं का नहीं;

(शेष पृष्ठ २ पर)

Gossner Mission

कहानी

सहारा

रोजलिन शशिबाला महतो, पत्थल कुदवा राँची।

शाम के करीब छे बज रहे थे। कुछ-कुछ अन्धेरा फैलने लगा था। छोटी सी बच्ची हाथ में सूटकेस तथा थैला लिये हुए कहीं जा रही थी। दिखने से मालूम होता है बच्ची घर छोड़ कर कहीं जा रही है या तो इस संसार में उसका कोई नहीं है। बच्ची के चेहरे पर उदासी तथा अकेला पन छाया हुआ था। न जाने बच्ची कहाँ जा रही है।

माँ देखो न सुमन कहाँ जा रही है, सुधा ने अपनी माँ से कही सुधा सुमन की दोस्त थी। सुधा सुमन के पास दौड़ कर गई और अपने साथ घर ले गई। सुधा ने पूछा 'सुमन तुम कहाँ जा रही हो?" सुमन रोने लगी। सुधा की माँ ने अपना हाथ सुमन के सिर पर प्रेमपूर्वक रखते हुए बोली:— " बेटी इस दुनियाँ में तेरा कोई नहीं है तुम अनाथ हो लेकिन तुम्हे उदास नहीं होना चाहिए क्योंकि तुम तो एक धर्म पुरोहित की बेटी हो तुम्हें ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिए। अच्छा अब बतलाओं तुम्हे क्या हुआ। " सुमन आँसु पोंछ कर बोलने लगी' मैं अपने भैया भाभी के साथ रहती थी। भैया मुझे काफी प्यार करते थे लेकिन भाभी मुझसे हमेशा नाराज रहती थी, बात बात पर भला बुरा कहा करती थी। भैया के कानों तक भी वह मेरा बुरा शिकायत करने लगी तब भैया भी मुझसे नाराज रहने लगें और पिटने लगे थे। आज बात यहाँ तक आयी कि मुझे घर से निकाल दिया गया। अब मैं कहाँ जाँऊ कुछ समझ में नहीं आ रहा है।" इतना कह कर सुमन फिर रोने लगी। रात का भोजन के बाद जब सुधा और सुमन विस्तर पर गई तो सुबक सुबक कर रो रही थी। सुधा ने कहा:— " सुमन क्यों रो रही हो सुमन रोते हुए बोली:— " सुधा अब मेरा कोई ईश्वर नहीं है। ईश्वर मेरा कुछ नहीं सुन रहा है आज मैं अकेली हूँ तो ईश्वर मेरा प्रार्थना भी नहीं सुन रहा है। मैं अब उसे अपना उद्धारकर्त्ता कभी नहीं स्वीकार करूंगी।" सुधा घबरा गई और बोली:—" सुमन तुम्हे इतना जल्दी हिम्मत नहीं छोडनी चाहिए। एक दिन ईश्वर तेरी प्रार्थना जरूर सुनेंगे। क्योंकि तेरे पिता महान थे। उन्होंने कितनी गरीबों की सेवा किये कितने चर्च अनाथालय तथा कितने स्कूल बनवाये थे। उसी के महानता के कारण आज तुम्हें इस संसार में ईश्वर उच्च स्थान को देगा। ईश्वर से इतनी दूर नहीं जाओ सुमन तुम प्रार्थना करते रहना। कल ही मैं तुम्हें अनाथाश्रम में डाल दूँगा। धर्म पुरोहित की बेटी होने के कारण तुम्हें स्थान जरूर मिलेगा।" फिर दोनों सो गये।

सुबह सुमन को सुधा अनाथाश्रम में छोड़ देती है। .... और सुमन से कहती है। " सुमन तुम्हें इस अनाथाश्रम में धर्मपुरोहित की बेटी के कारण आसानी से जगह मिल गया है। तुम अब भी ईश्वर से प्रार्थना करना और बाइबल पढ़ना। मैं तेरे लिये प्रार्थना करूँगी। अच्छा अब मैं चलती हूँ" कह कर सुधा हाथ हिलाती हुई गेट के बाहर निकल गई। "आज तुम्हें प्रार्थना करना है।" सुमन यह शब्द अनाथाश्रम की प्रचारिका ने सुमन से कहा। 'तुम एक धर्म पुरोहित की बेटी हो तुम्हें डरना नहीं चाहिए। बाइबल में से कोई अच्छा पद खोज लेना। " इतना कह कर प्रचारिका चली गई थी। सुमन घुटने टेक कर प्रार्थना करने लगी हे पिता तू मुझे शक्ति दे कि मैं कल भारी सभा में तेरे पवित्र नाम को अपने होठों से सराहने

(शेष पृष्ठ १२ पर)

Gossner Mission

जर्मन संस्मरण

अमृत मिंज राँची ईलाका युवा संघ।

मार्च महीने में K. S. S. मीटिंग के अन्तिम चरण में जर्मनी दौरा के लिए युवा वर्ग से युवा प्रतिनिधी भेजने के लिए विचार किया गया जिसमें एक युवा पादरी Rev. W. Kandulna (Kuchinda) Sambalpur और युवा प्रतिनिधी के रूप में मेरा नाम पारित हुआ। चूंकि मैं एक सरकारी संस्थान में नौकरी करता हूँ इसलिए यह मेरे लिए एक चिन्ता का विषय बन गया था कि मुझे दो महीने की छुट्टी और विदेश यात्रा की मंजूरी मिलेगी अथवा नहीं? और मिल भी गई तो २२ दिन के अन्दर पासपोर्ट और वीजा क्या बन सकेगा।

बहरहाल परमेश्वर के अनुग्रह के कारण ऐसा इन्तजाम हुआ कि सारा काम ठीक समय पर पूरा हुआ। अत: मैं और पादरी कन्डुलना २४-४-८६ को पश्चिमी जर्मनी के फ्रैंकफुर्त हवाई अड्डा पहुँचे। वहाँ से हम गोस्नर मिशन के एक लड़के की मदद से ट्रेन द्वारा सर्वप्रथम Brehmen पहुँचे। तीन सप्ताह के पश्चिमी जर्मनी प्रवास के दौरान हम दोनों को भिन्न२ शहरों के स्कूलों, चर्च द्वारा संचालित तकनीकी प्रशिक्षण संस्थान एवं मंडलियों में जाकर वहां के युवक युवातियों महिला समीतियों और सण्डे स्कूलों के विद्यार्थियों से वार्तालाप का सुअवसर प्राप्त हुआ। फिर पू० जर्मनी D. D. R. के लिए हम वीजा प्राप्त कर १७-५-८६ को प० बर्लिन होकर पू० जर्मनी पहुँचे। यहां भी एक महीना रह कर विभिन्न मंडलियों का दौरा किए। विशेष रूप से चार रविवार युवा विभाग द्वारा संचालित Eccuminical youth programme youth Sunday कार्यक्रम में शामिल हुए जो हम लोगों के लिए अत्यन्त प्रेणादायक था। यहां के लोग अत्यन्त स्वच्छन्द प्रवृति के होते हैं। उनमें एक दूसरे के प्रति निस्वार्थ प्रेम एवं भाई-चारे की भावना अत्यधिक है। तथा एक दूसरे की सहायता कर आत्म संतुष्टि प्राप्त करते हैं।

काश! की हमारी जी०ई०एल० कलीसिया में इन बातों की झलक यदि कुछ मात्रा में भी रहती तो आज हमारी कलीसिया आर्थिक और आत्मिक रूप से पिछड़ी नहीं रहती, तथा सैकड़ों वर्षों से एक कलीसिया की छत्रछाया में निभते चले आ रहे मसीही बिश्वासियों को जाति (उरांव मुण्डा) के अनुसार अलग करने की घृणित और शर्मनाक कार्य देखने को न मिलते। आज हमारे चारों ओर मसीही विरोधी कार्य मंडरा रहे हैं, परन्तु इस से अधिक हम स्वयं मसीह का विरोध कर रहे हैं। हम जो मुण्डा या उराँव के अलग झुण्ड में रहकर ईश्वर की आराधना करना चाहते हैं क्या इसे हम ईश्वर की सच्ची आराधना कह सकते हैं? या इससे हमें क्या अधिक आशीष प्राप्त होगी? आज चेतनशील युवा वर्ग के लिए यह एक गंम्भीर चिन्ता का विषय हो गया है कि हम आने वाले पीढ़ी के लिए कौन सा मार्ग तैयार करने जा रहे हैं। आज हमें अपने हृदय रूपी आइने को साफ करना है ईर्ष्या, द्वेष, छल, कपट सारे द्वेषों को हटा कर स्वार्थ रहित भाई-चारे की भावना से लैश होकर एक दूसरे से गले मिलना है अगर हममें ये बातें होंगी तो दूसरे की मदद करने में जो खर्च होगा उसके बदले में हमें आत्म संतुष्टि होगी, और जिस प्रकार हजारों लाखों एक समान ईटों से सुन्दर एवं मजबूत भवन का निर्माण होता है उसी प्रकार प्रेम और बलिदान से सुशोभित प्रत्येक युवा युवतियां के सहयोग से फिर एक सुन्दर कलीसिया रूपी भवन का निर्माण होगा, जो हर परिस्थिति में स्थिर और कामयाब होगा इस प्रक्रिया को हमें सब से पहले अपनी मंडली में शुरु करना होगा जिस से क्रमानुसार

Gossner Mission

पेरिश इलाका अंचल तथा पूरी कलीसिया में एक नया पन परिलक्षित होगा।

सारांश में पू० तथा प० जर्मनी की समाजिक स्थिति इस प्रकार है—

धार्मिक— प० जर्मनी में शतप्रतिशत लोग मसीही हैं और हर व्यक्ति का सदस्यता शुल्क (Church Membership) उनके दफ्तर या फैक्टरी (जहां वे नियुक्त हैं) से प्रत्येक माह वेतन ही से १०% काट कर चर्च फंड में चला जाता है। रविवारीय आराधना में युवा वर्ग आधुनिक वाद्य यंत्रों Trum phet, Orgen, Violin इत्यादि के साथ शामिल होते हैं। स्कूलों में प्रतिदिन एक period धार्मिक क्लास होता है। समय२ पर युवा वर्ग द्वारा युथ के लिए कार्यक्रम आयोजन किए जाते हैं जिसमें वे न केवल बाइबल अध्ययन करते हैं परन्तु वर्त्तमान समाज के विभिन्न समस्याओं जैसे आर्थिक समाज शांति मानव कल्याण एवं वातावरण शास्त्री करण, चर्च एवं आवास पर विस्तृत रूप से बहस करते हैं। मुख्य उद्देश्य यह होता है कि मनुष्य को चर्च से उपर उठ कर समाज के हर पहलु की चुनौतियों से जम कर उसके अच्छे निष्कर्ष के साथ चर्च में आना है। पूर्वी जर्मनी D. D. R. में मसीहियों की संख्या ७०% है बाकी बौद्धिक और कुछ नास्तिक है यहां कम्युनिष्ट की सरकार है तथा मसीहियों का रहन स्तर प० जर्मनी से कुछ निम्न हैं मसीही लोग अपनी कलीसिया सदस्यता स्वयंता स्वयं जमा करते हैं। शायद इसी कारण यहां लोगों में धार्मिकता की गहराई अधिक हैं। हजारों वर्ष पुराने बड़े बड़े गिर्जाघर तथा धार्मिक ऐतिहासिक वह स्थान है जहां पर से डा० मार्टिन लुथर ने बाइबल अनुवाद एवं कटेकिस्म लिखा था देखने को मिलता है।

सामाजिक:— यहाँ का सामाजिक वातावरण अति सराहनीय है सभी एक दूसरे को सम्मान देते हैं अपंग एवं निसहायों के लिए एक विशेष संस्था है डीकेएड केन्द्र जगह० है यहां शारीरिक एवं मानसिक रुप से अपंग लोगों को सुविधा तथा इलाज किया जाता है और उनकी शारीरिक और मानसिक योग्यतानुसार काम भी लिया जाता है। जो व्यक्ति जो शारीरिक रूप से अपंग और मानसिक रूप से स्वस्थ है, उससे ऑफिस का काम लिया जाता है ये शारीरिक निकमेपन के वावजूद आधुनिक करणों के द्वारा ये लोग अच्छे व्यक्ति के मुकाबले काम करते हैं तथा इस संस्थान के हर व्यक्ति को किसी न किसी काम में व्यस्त रखा जाता है।

यहां के लोगों को संयुक्त परिवार में रहना पसन्द नहीं परिवार में पति पत्नी और बच्चे रहते हैं। बुढ़े लोग अकेले रहते हैं चूंकि यहां का पेंशन मूल्य ७५% है और यह रकम दो प्राणी (बूढ़ा बुढ़ी) के लिए पर्याप्त हैं। जब शारीरिक शक्ति हीन हो जाती है तब वे Old People House में चले जाते हैं जहां उनको हर प्रकार की सुविधा प्राप्त है। इस संस्थान में जो चल फिर नहीं सकते वे अपने विस्तर से माइक्रोफोन द्वारा आराधना कार्यक्रम सुनते हैं।

बच्चों को ६ वर्ष से स्कूल भेजना कानूनन अनिवार्य है। किसी भी बच्चे को मूर्ख कह देना असामाजिकता माना जाता है। औसत से कम बुद्धि वाले बच्चों के लिए विशेष रुप से अलग स्कूल की भी व्यवस्था है जहां मन्द बुद्धि के बच्चों को सरल रीति से शिक्षा देकर उनकी बुद्धि का विकास कराया जाता है। १८ वर्ष के युवकों को सेना में १½ वर्ष के लिए जाना भी अनिवार्य है। जो लड़के सेना में जाना नहीं चाहते वे विकल्प के रूप में Old People House तथा अन्य समाज सेवा संस्थानों में अपनी सेवा दे सकते हैं। हम दोनों को प० जर्मनी में भारतीय जी० ई० एल० कलीसिया के कुछ परिवारों से भी मिलने का अवसर प्राप्त हुआ तथा वहां की स्थिति को देखने और समझने में काफी सहयोग मिला।

Gossner Mission

एकीकरण !

पा० एम० पी० केरकेटा (अमलेशा)

हम यीशु मसीह में परमेश्वर के सन्तान हैं। हमारा विश्वास एक ही खृस्तानी कलिशा पर है। कलिशा परमेश्वर का घर है जहां हम उसके सन्तान रहते हैं पारिवारिक जीवन में घर की तरक्की एवं विकाश के लिए आवश्यक है कि हम मेल-प्रेम से रहे। शांति का राजकुमार जो मसीह यीशु हैं हमें शांति प्रदान करेगा। परमेश्वर ने हमें सब प्रकार के ज्ञान और बुद्धि में धनी किया है। सब से बड़ा ज्ञान क्रुश है। इसी ज्ञान ने हम सभों को एक झुण्ड में रखा है जहां शांति और आनन्द भरा है। अमलेशा इलाका में अशांति का राज्य था, हमें शांति की खोज में अनेक समस्यों का सामना करना पड़ा।

इस कठिन संकटकालीन समय में मन घबराया हुआ था। पर परमेश्वर को धन्यवाद हो कि उसने हमें ऐसी परीस्थिति में भी त्याग नहीं दिया। उसने भिन्न भिन्न अवस्था में भी वचन और सक्रमेन्ट के द्वारा अपना अनुग्रह देता रहा। हमने अपनी दशा को समझा कि हम क्रूश जो सच्चा है छोड़ दिया है

पवित्रात्मा की आगुवाई में हम ने पाया कि शांति केवल एकता में ही है चूंकि हमारा विश्वास एक परमेश्वर, एक विश्वास, एक कलिशा और एक प्रभु पर हैं हमें कलिशाई एकता ही में शांति है। इसी अटल नींव पर खड़े होकर जिलिकेला मंडली ने एक झुण्ड हो कर प्रभु की सेवा का निर्णय लिया। इलाका के प्रचारक विश्राम पुर्त्ती ने अपने अधीनस्त १४ परिवार की सेवा दिनांक १४-६-८६ से आरम्भ कर दिया। दिनांक १७-६-८६

(शेष पृष्ट १४ में)

(शेषांक पृष्ठ ६ का)

लगूँ। तू बाइबल में से अच्छा पाठ बता पिता ताकी कल के दिन के लिये लाभदायक हो।" इस तरह प्रार्थना करने के पश्चात् पवित्रतात्मा से प्रेरित होकर सुमन "पहला सामुएल का दूसराअध्याय तीन से नौ पद तक पढ़ ली। सुमन काफी खुश हुई।

हॉल में काफी भीड़ थी। प्रचारिका बोली "बच्चों को पुरोहित साहब कुछ देना चाहते हैं।' एक बार हॉल में तालियाँ की आवज गुजने लगी। मैं सुमन से अनुरोध करती हूँ वह प्रार्थना करने के लिये सामने आयेगी।" सुमन अपने स्थान से उठ कर हाथ में बाइबल लिये हुये सामने आयी और बाइबल का वहीं पाठ बचन खोल कर पढ़ने लगी सभीके आँखों में सहानुभूति की झलक थी। तब सुमन मधूर आवज से प्रार्थना करने लगी। प्रार्थना हो जाने के बाद पुरोहित ने सभी बच्चों को उपहार में कुछ-कुछ दिये' सभों के हाथ में कुछ-कुछ था पर सुमन के हाथ में कुछ नहीं था। उसका वह खाली हाथ थी। उसे काफी दुःख हो रही थी। वह पुरोहित साहब पर गुस्सा करने लगी थी। उसी समय पुरोहित बोले आज हम सुमन बेटी को विशेष उपहार देना चाहते हैं हम सब जानते हैं कि सुमन कितने महान व्यक्ति की बेटी है। इस लिये हम इसके लिये बैंक में २३ हजार रु० जमा करवाई है। आज से सुसन अनाथाश्रम में नहीं मेरे घर में रहेगी मेरी बेटी के समान। इतना कहकर पुरोहित बाहें फैला दिये थे। सुमन पिताजी कह कर पूरी तरह दौड़ कर लिपट गई थी। सभी के आँखों में खुशी के आंसु थे।

सुमन के आँखों में भी खुशी के आँसु बह रही थी कि उसकी नजर के सामने सुधा दिखलाई दी। सुमन दौड़ कर सुधा से लिपट गई और बोलने लगी मुझे क्षमा कर दो सुधा मैं कितनी नीच हूँ कि ईश्वर को कितना भला-बुरा कही थी। मैं आज बहुत खुश हूँ आज मैं अकेली नहीं। मेरा भी आज इस संसार में कोई सहारा है। यह कह कर वो दोनों लिपट गई और दोनों के आँखों से प्रेम की आँसु बह रहे थे।

Gossner Mission

मानगो मंडली में महिला दिवस

आर० मिंज (मानगो)

जमशेदपुर पेरिश के अन्दर केन्द्रिये महिला समीति है। इस समीति ने एक सुन्दर ढंग अपनाया है अर्थात कई सालों से महिला दिवस मानती चली आ रही है। अभी गत चार-पांच सालों से इन्होंने एक कदम और आगे बढ़ने की कोशिश किया अर्थात केन्द्रिये दिवस तो हम मानती ही हैं, क्यों न हम अपने अपने मंडलियों में भी इसे महत्त्वपूर्ण स्थान दें प्रास्तावना के बतौर यह बात केन्द्रिये समीति में रखी गयी और सभी बहनों ने एक स्वर से फैसला ली कि जरूर-जरूर याने यह प्रस्ताव ऐसी ही पास हो गया जैसे कि राजसभा में बिल पास हो जाता है।

उपरांकित फैसला को कार्यरूप में परिणत करने के लिये मानगो मंडली की महिला समीति ने दिनांक ९-९-८६ को महिला दिवस का दिन रखा। इन साल मानगो मंडली का चौथा वर्ष था। समय २.३० बजे दिन का था। मातांएं और बहने ठीक समय पर गिरजा हाता में आने लगीं। नया गिरजा घर में पहला अवसर था यही उनके लिये अहोभाग्य और शान का विषय था।

आरंम्भ में नया साक्षी बाणी से २६१ गीत पूरी मंडली सामुहिक रीति से गाये। उसके बाद एक बहन द्वारा यूहन्ना १, १-१२ पद पढ़ा गया तत्पश्चात एक बहन ने प्रार्थना की। अब प्रोग्राम के अनुसार महिला सचिव Mrs. S. Minz ने एक संक्षिप्त रिपोर्ट पेश की। वक्ता के रूप में तीन व्यक्ति थे।

१ Rev. Sharan Purty उनका विषय था :— मसीही विवाह और गैर मसीही विवाह में अन्तर।

२ Mr. P. U. Bara (Parish Secretary) विषय था छोटे बच्चे भविष्य के कर्णधार हैं।

३ Mr. R. Minz (Adviser Mango Mandaly) इनका विषय था सामाज में महिलाओं का स्थान।

सभी वक्ताओं ने अपने विषय पर सुन्दर ढंग से विषय वस्तु को लोगों के पास रखा। बीच२ में बहनें भजन गीत पेश करती थीं जिसके कारण किसी को भी थकावट नहीं मालूम पड़ता था। अन्त में महिला प्रेसीडेन्ट ने भी सुन्दर२ शिक्षा की बातें कहीं। इसी अवसर पर गोविन्दपुर से Miss Horo आयी हुई थीं दक्षिण पूर्व अंचल में एक नया प्रोजेक्ट (Project) चलाने की बात को समझाते हुए सुन्दर ढंग से रखी। इसी प्रकार उस रोज का सारा प्रोग्राम सुन्दर रीति से सम्पन्न हो सका। अन्तिम प्रार्थना पादरी शरण पुर्ति के द्वारा किई गई और शाम के साढ़े छे बजे अन्त की गयी। गिरजा घर से बिदा होने के पहले सभी को सेव मुढ़ी और बुन्दिया का ठोंगड़ा दिया दिया गया। ग्रैंडिंग मेशीन चलाते हुई छोटे बड़े सभी अनन्द पूर्वक अपने२ घर के लिये रवाना हो गये। प्रभु को धन्यवाद हो कि आने वाला साल के लिये आप ही अगुवाई करें।

आवश्यकता है— अम्बिकापुर लुथेरान बालिका छात्रावास के लिए एक Lady Warden संरक्षिका की आवश्यकता है। उम्मेदवार ग्रेजुएट (स्नातक) और अंग्रेजी जाननेवाली हों। अपनी कलीसिया के सदस्य ही आवेदन-पत्र दे। वेतन प्रतिमाह ४००) रु० और ट्रेनिंग के बाद ५००-१०-६०५-२५ से बढ़ती पर होगी। निम्न पते पर आवेदन-पत्र भेजें— रेभ०एस० बरला, मेनेजर।
लुथेरान हॉस्टेल अम्बिकापुर,
पी०ओ० अम्बिकापुर।
जिला— सुरगुजा (मध्य प्रदेश)

Gossner Mission

घरबन्धु विचार मंच (पांच)

● **श्री बसंत कुमार बरला** जी०ई०एल० चर्च कम्पाउन्ड बाबूलेन-राँची से—

भारतीय मसीही समाज के लिए प्रेम-विवाह वरदान सिद्ध हो सकता है, बशर्ते कि प्रेमी-प्रेमिका मसीही हों। उनका विवाह पूर्व-प्रेम इस मायने में पवित्र हो कि यह तन से न किया गया हो, जिससे उनको भावी पत्नि-पत्नी के रुप में एक-दूसरे को निकट से समझने का पर्याप्त समय मिल सके कि भविष्य में उनका वैवाहिक-जीवन सुखमय बन सके। अफसोस कि आये दिन भारतीय मसीही समाज में गैर-मसीहियों के साथ प्रेम सम्बन्ध और प्रेमी-प्रेमिका का विवाह पूर्व ही मन-धन के साथ-तन से भी प्यार हो जाता है जो कि एक कलंक है, व्यभिचार है, मनुष्य-हत्या है। (गर्भ-पात)

अतः यह भारतीय मसीही समाज के लिए एक अभिशाप है।

● **श्री मनोहर बरला,** जी०ई०एल० चर्च कम्पाउन्ड बाबूलेन राँची से :—

प्रेम-विवाह में अक्सर जाति-बंधन, धर्म-बंधन आदि को नजर अन्दाज किया जाता है, चाहे यह भारतीय मसीही समाज में ही क्यों न हो। फलतः अभिभावकों के विरोध करने पर 'कोर्ट-मैरिज' की भी नौबत आती है जिससे तलाक का रास्ता खुल जाता है। अगर तलाक नहीं भी हो तौभी यह "जिसे परमेश्वर ने .... उसे मनुष्य अलग न करे" इस आज्ञा और आशीर्वाद वचन से वंचित रहता है। (मत्ती १६:४–६, ६, मरकुस १०:६–६, ११-१२) फिर विवाह पूर्व प्रेमी-प्रेमिका में परस्पर तन-संबंध होने से परमेश्वर का पवित्र मंदिर अशुद्ध होता है (१ कुरि० ६:१६-२०) और इन अशुद्ध तनों के विवाह से मसीही-विवाह की पवित्रता बिल्कुल खत्म हो जाती है, विवाह की आशीषें नहीं जातीं।

और फिर जिस विवाह में परमेश्वर की आशीषें ही नहीं, वह सिवाय अभिशाप के वरदान कभी हो सकता है? कदापि नहीं।

(शेषांक पृष्ठ १२ का)

को छोटा झुण्ड का संचालक और प्रचारक पुत्तीं मेरे पास आए। उन्होंने मंडली के एकीकरण के विषय सारी बातें कह सुनाई, तथा उन्होंने इसके लिए समय की मांग की। आवश्यक जान कर मैं ने अपना प्रोग्राम बदल कर दिनांक २१-६-८६ को जिलिंगकेला में आने का निश्चय किया। समय पर ठहराए दिन में वहां पहुँचा। सबसे पहले गिरजा के पूर्व १४ परिवारों के गिरजा स्थान पर गया। वहां के संचालक श्री बेनेडिक्ट मुन्डु ने झुण्ड से कहा-यह स्थान अब हमारा उपासना का स्थान आज से नहीं है हम एक संग माता मंडली जिलिंग-केला ही में ईश्वरोपसना करेंगे। इलाका चैयरमैन के हाथ में झुण्ड के साथ समर्पण हो जाता हूँ आगे इलाका के अधीन और प्रशासन के तले रह के प्रभु की सेवा करना है। मैं ने बड़े आनन्द से उन्हें कहा अब भले कार्म के लिए विलम करना नहीं है, उठें और एक संग प्रभु की सेवा के लिए जिलिंग-केला माता मंडली में चलें।

१४ परिवारों का सुन्दर गीत और फूल मालाओं से स्वागत हुआ। गिरजा में प्रभुभोज का अनुष्ठान हुआ सभों ने एक ही मेज से खाया पिया। अंत में सुन्दर ढंग से मुलाकात हुई। इसके बाद कोलमदे बपतिस्मा के लिए पंच, प्रचारक पेरिश चेयरमैन और मैं गया। माता कमजोर थी बच्चे का पवित्र बपतिस्मा पेरिश चेयरमैन द्वारा सम्पन्न हुआ।

प्रभु से प्रार्थना है कि इलाका पेरिश और मंडली की अखण्डता को अपनी सेवा के लिए अमर रखे।

Gossner Mission

" मैं हूँ बड़ा गुनहगार "

पी० डी० कण्डुलना सिमडेगा, बिहार

१ मैं हूँ बड़ा गुनहगार,
यीशु मसीह मुझे कर उद्धार ।
मेरे गुनाह है असीम अपार,
यीशु नासरी तू ही मेरा तारणहार ॥

२ मेरी नैया है मझधार,
तू ही मेरा खेवनहार
पाप महासागर से पार उतार,
तुझे छोड़ कोई न मेरा तारणहार ॥

३ हम सब के सकल परिवार,
मानव जात में एक दूसरे पर करते वार ।
स्वार्थ, मद, पद के खातिर,
अपने विश्वास पर हैं अस्थिर ॥

४ मानव समाज में आई बुराई,
घर घर में है भारी लड़ाई ।
मध्य पान में है समय गँवाई,
हे यीशु पापी "कण्डुलना" की सुन दोहाई ॥

५ अनेक भटक गये हैं सत्य पथ से,
मुकर गये हैं उद्धार कर्त्ता से ।
नाता जोड़ लिए हैं नशे से,
मुक्ति दाता उन्हें बचा पेशे से ॥

६ हे जग के पावन करतार,
तू ही सब का पालनहार ।
दया में अनन्त-असीम अपार,
मैं हूँ बड़ा गुनाहगार ॥

Gossner Mission

महिला समिति जमशेदपुर

(श्रीमती एस० गुड़िया, बिरसानगर, जमशेदपुर)

जी० ई० एल चर्च महिला समिति जमशेदपुर साल में एक बार महिला दिवस का आयोजन करती है। महिला दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य है पेरिश के अन्तर्गत विभिन्न मंडलियों की महिला समितियों को एक संगठन में लाकर मसीही प्रेम एवं एकता में मजबूत रखना तथा कलीशा की सेवकाई के लिए महिलाओं में चेतना जागृत करना।

इस साल ६ अक्टोबर १९८६ को गितिलपी मानगो में केन्द्रीय महिला दिवस मनाया गया। इस अवसर पर न्यूसीताराम डेरा, सोनारी, बिरसानगर, बर्मामाइन्न, रहड़गोड़ा, टुपुडॉग, माऊमंडार, मोसाबनी तथा गितिलपी मंडलियों से बहन उपस्थित थीं। कार्यक्रम पूरे दिन-भर का था। सर्वप्रथम मेजबान गितिलपी महिला समिति ने मेहमानों का स्वागत किया। रेभ० डी० लुगुन (पेरिश चेयरमेन) द्वारा उपासना से सभा की कार्यवाही शुरू हुई। सभा की अध्यक्षता श्रीमती आर० कन्डुलना (केन्द्रीय म० स० जमशेदपुर) ने किया। मुख्य वक्ता थे—श्री पी० ऊ० बाड़ा (पेरिश सेक्रेटरी), श्री आर० मिंज (मंडली सदस्य), रेभ० एस० पुर्ती एवं रेभ० के० डी० केरकेट्टा। उनके विषय क्रमशः इस प्रकार थे— मसीही घराना, बच्चों के प्रति महिलाओं का कर्त्तव्य, कलीशा में मसीही महिलाओं की सेवा, तथा सुसमाचार प्रचार में महिलाओं का योगदान। श्रीमती ई० एक्का ने पतरस की पत्री के आधार पर प्रश्नोत्तर किया। श्रीमती एन० कुजूर द्वारा नया भजन सिखाया गया। दोपहर को प्रेमभोज का आयोजन किया गया। अपराह्न में विभिन्न समितियों द्वारा मनोरंजन के कार्य-क्रम प्रतियोगिता के आधार पर किए गए। इस अवसर पर खेल प्रतियोगिता भी हुए। सभा के अंत में वृक्षारोपण का कार्यक्रम भी हुआ। इस प्रकार सन्ध्या साढ़े चार बजे सभा विसर्जित हुई। केन्द्रीय महिला समिति जमशेदपुर कार्यकारिणी सभा के अधिकारी है:—

श्रीमती आर० कन्डुलना (सभापति), श्रीमती स्टेला कच्छप (उप० सभापति), श्रीमती एफ० लकड़ा (सेक्रेटेरी), सुश्री वीणा भगत (सहायक से०), श्रीमती एस० गुड़िया (कोषाध्यक्ष)।

"प्रभु का वचन"

कविता—

वीणा अंजना तिर्की, कांटा टोली पुरुलिया रोड रांची।

प्रभु का सुन्दर वचन
करना चाहिए नित्य ग्रहण
सभी है उसके हाथों सृजन
देता हमको कपड़ा-भोजन
वही बुद्धि वही ज्ञान
सबको देता एक समान
चाहे मानो या न मानो
उसका वचन है महान ॥

जब होता उसका वचन
सुनना चाहिए ध्यान मग्न
वह बाग का है चमन
सब को देता चैन अमन
सब को देता जीवन दान
तू कर उसका वरणन
चाहे ले तू कितने जन्म
नहीं टलेगा प्रभु का वचन ।

Gossner Mission

आदित्यपुर मंडली का संक्षिप्त विवरण

श्री इग्नातियुस एक्का, सोनारी एवं आदित्यपुर

आदित्यपुर मंडली जमशेदपुर के सोनारी मंडली का शाखा है। इस मंडली की स्थापना दिनांक ४ मार्च १९७६ में सोनारी के सचिव श्री एस० तिग्गा एवं मंडली पंच तथा महिला समिति के द्वारा श्री हेरमन तिर्की के क्वाटर में हुई। कई वर्ष आराधना उन के घर में चलायी गई। कभी-कभी उनके न रहने पर जहाँ-तहाँ अराधना हुई। फिर भी यहाँ के मसीही भाई-बहन उत्साहित हो कर सभी जगह आराधना में भाग लेते थे। इस मंडली की देख-रेख सोनारी मंडली पंचों द्वारा होती है। यहाँ के भाई-बहन बहुत ही उत्साही हैं और मंडली के सभी कार्यों में हाथ बटांते हैं फिर भी कभी-कभी यहां के भाई-बहन उदास हो जाते हैं क्योंकि यहां आराधनालय नहीं है। कुछ वर्ष पहले सोनारी के श्री० एस० के० होरो आदित्यपुर में एक मकान बना कर सोनारी में रहते हैं (हम लोगों ने उन से अर्जी किया और वह अपना मकान आराधनालय के लिए दिया है। अभी स्थायी तौर से उस मकान में आराधना चल रही है। जमशेदपुर पेरिस की ध्यान इस मंडली की ओर है परन्तु जमीन न मिलने के कारण आराधनालय नहीं बन पा रही हैं। हम श्री तिर्की बाबू और श्री होरो बाबू एवं सोनारी मंडली पंचों को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने अपना सहयोग इस मंडली को दिया है। मैं सभी घरबन्धु पढ़ने वाले भाई-बहनों से अर्जी करता हूँ कि इस मंडली के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें कि आराधनालय के लिए जमीन का बन्दोबस्त जल्द से जल्द हो सके। आराधनालय न होने की वजह से कभी-कभी यहां के भाई बहन निराश हो जाते हैं। मैं खुद भी निजी प्रार्थना में इस मंडली के लिए प्रति दिन प्रार्थना करता हूँ।

सम्पादक के नाम पत्र :—

सम्पादक, 'घरबन्धु'

मैं एक 'घरबन्धु के ग्राहक' के नाम से यह पत्र पेश करना चाहता हूं। मुझे आशा है कि आप मेरे पत्र के आशय पर ध्यान देंगे। हमारी गोस्नर कलीसिया में 'घरबन्धु' एक-मात्र धार्मिक पत्रिका है, जो विभिन्न युग और अवस्था में गुजरते हुए अब तक जीवित है, और आगे भी उसे जीवित बनाये रखने के लिये, सम्पादकीय मण्डल की ओर से कुछ कारगर कदम उठाने पड़ेंगे।

सर्व प्रथम तो उसे सर्व-कलीसियायी सिद्धान्तों तथा मान्यताओं के अनुरुप और विशेषकर लूथेरान विश्वास तथा विचार-धारा के प्रति माध्यम-पत्रिका बनाया जाय। दूसरी बात है, कि उसे मसीही जीवन से सम्बधित धार्मिक-शिक्षा और बैबल से मानव उद्धार से सम्बधित सिद्धान्तों के प्रति जन-साधारण मसीहियों को जानकारी प्रदान करने का माध्यम बनाया जाय। इन विषयों का भार कलीसिया के आध्यात्मिक स्कूल के शिक्षक वर्ग को सौंपा, जाय तो अति उत्तम होगा।

तीसरी बात है कि आज हमारे लूथेरान मसीही भाई-बहन अधिकाँश दिहाती क्षेत्रों में बास करते हैं उन्हें वैसे साहित्यों ओ जगतीय ज्ञान की अधिक आवश्यकता नहीं है, जितने उन्हें मसीही जीवन से सम्बधित विभिन्न परीक्षायें, नयी २ धार्मिक विचारों ओ सिद्धान्तों से सुरक्षा की आवश्यकता है—जैसे कि आज के बाल-बपतिस्मा के विरुद्ध शिक्षा, तथा यहोवा के गवाहों (आधुनिक मसीही समुदाय) की ओर से त्रिएकत्व के सिद्धान्त के विरुद्ध एक नयी चुनौती आदि। अतः इस प्रकार पत्रिका के माध्यम से भी धार्मिक प्रचार-प्रसार का काम किया जा सकता है।

सधन्यवाद

आप का विश्वस्त

ए० भेंगरा, किताडीह टाटा नगर।

Gossner Mission

बाइबिल पहेली प्रतियोगिता (सात)

१ यहोवा के वचन के अनुसार सूखी हड्डियों का पुनः शरीर के रुप में जीवित होना बाइबल के किस पुस्तक, अध्याय एवं उसके किन पदों में पाया जाता है ?
२ स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार किसे दिया गया है ?
३ एला कौन था ?
४ यीशु ने एक सरदार के जीवन में एक बात की घटी पाई वह क्या थी ?
५ आमोस के पुत्र का नाम बताएँ ?
६ शीलोह के कुण्ड का क्या अर्थ है?
७ गड़हे के दलदल में डाला गया मनुष्य कौन था ?
८ क्या यीशु ने उतने ही काम किए जिनका वर्णन बाइबल में है ?
९ भेड़ बकरियों को चराने वाले एक मनुष्य को परमेश्वर ने चुना वह कौन था ?
१० नूह के दिन के समान किसका आगमन होगा ?

इस प्रतियोगिता में केवल १६ वर्ष तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं। आपके उत्तर में बाइबिल के पदों को लिखना न भूलें अन्यथा अधूरे होंगे। प्रथम दो सर्वशुद्ध हल पर सुन्दर उपहार दिया जाएगा तथा अन्य बिजेताओं के नाम हम छापेंगे। १० जनवारी १९८६ तक पत्र भेजने का पता है—

मांगो तो तुम्हें दिया जाएगा, ढूंढ़ो तो तुम पाओगे, खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा। क्योंकि जो कोई मांगता है उसे मिलता है, और जो ढूंढ़ता है वह पाता है और जो खटखटाता है उसके लिए खोला जाएगा। मत्ती ७:७-८

बाइबिल पहेली प्रतियोगिता (सात)
द्वारा/सम्पादक घरबन्धु
के० एस० एस० ऑफिस
जी० ई० एल० चर्च कम्पाउन्ड
राँची ८३४००१ जिला राँची (बिहार)

क्या आपने 'घरबन्धु' के लिए अपना ग्राहक चन्दा भेज दिया ? नहीं !— तो आज ही मनीआर्डर से भेजकर पूरा करें। धन्यवाद !

सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर,
क्योंकि जीवन का मूल श्रोत वही है।
(नीतिवचन ४ : २३)

Gossner Mission

बाइबिल पहेली प्रतियोगिता (छः) का सर्वशुद्ध हल।

● यूसुफ ११० वष, उत्पत्ति ५०:२६, इब्राहीम १७५ बर्ष उत्पत्ति २५:७ इसहाक १८० वर्ष उत्पत्ति ३५:२८ आदम ९३० वर्ष, उत्पत्ति ५:५ ● यिशो (रुएल) निर्गमन २:१८—२२, ३:१, १८:१ ● शमौन (पतरस) अन्द्रियास, जबदी का पुत्र याकूब, यूहन्ना, फिलिपुस, बरतुल्मै, थोमा, मत्ती, हल्फै का पुत्र याकूब, तद्दै, शमौन कनानी, यहूदा इस्कारियोती मत्ती १०:२-४ ● १७ वर्ष की उम्र २० चाँदी के सिक्कों में इश्माएलियों के हाथ मिश्र पहुँचाया जाकर पोतीपर ने मोल लिया, उत्पत्ति ३७:२, २८, ३६ ● स्तिफनुस प्रेरित क्रिया ७:५९, ६० ● तीन बेटे—कैन, हाबिल, शेत उत्पत्ति ४:१-२, २५, और भी बेटे बेटियाँ, उत्पत्ति ५:४ ● यीशु ने चेलों से कहा, लूका ११:१२ बेतलेहेम न्यायियो १२:८ फरसी, प्रेरित क्रिया ५:३४ ● यहोवा की आज्ञा ही के अनुसार मूसा ने लाठी से नील नदी के जल पर मारा, निर्गमन ७:१७-२०,— बाइबिल पहेली प्रतियोगिता (छः) में इस बार भी हमेशा की तरह बच्चों ने बड़ी लग्नता से भाग लिए हैं। हम सब बच्चों को बधाई देते हैं। शुभ-कामना है कि बच्चे धर्मशास्त्र के ज्ञान में आगे बढ़ते जाएं।

प्रथम दर्जा में उतीर्ण होकर अधिक से अधिक संख्या में बच्चों ने अपनी प्रतिभा से नए रिकार्ड कायम कर सर्वशुद्ध हल करने में सफलता प्राप्त किए हैं। इन में से प्रथम दो बच्चों के लिए लॉटरी ड्रॉकर सुन्दर उपहार भेज दिया जा रहा है—

● प्रेमोदय डुंगडुंग ए०पी०ओ० दलदली, जिला—करबी अंगलोंग (असम) ● श्री एम०पी० एक्का, कुरमी भावना पो०ओ० पोरदा जिला रायगढ़ (मध्य प्रदेश) कुमारी लीना तिग्गा रामनगर जमशेदपुर ● अंजना कुसुम लुगुन राउरकेला— अशीषन पुर्त्ती सोनारी क्रिश्चन वस्ती जमशेदपुर ● दयानन्द दिनेश कुमार कच्छप मानगो जमशेदपुर ● एवलीन डुमडूम सोनारी जमशेदपुर ● सेबेयान जोजोवार सोनारी जमशेदपुर ● सुबानी कन्डुलना डोंगापानी गुमला ● अनीता मुन्डू सोनारी जमशेदपुर ● खतिरन तोपनो बिरसा नगर जमशेदपुर ● सुश्री बिनीता टुटी न्युगार्डेन सिरोमटोली राँची ● अनीता टुटी, न्युगार्डेन सिरोमटोली राँची ● दीपक संगा बड़ा जामड़ा सिंहभुम ● नमजन कोनगाड़ी वड़ा गोड़ा जमशेदपुर ● जीवन बोर रहड़गोड़ा जमशेदपुर ● जीवन मसीह कन्डुलना डोंगापानी गुमला ● जोलेन संगा फुदी सेरेंगटोली राँची ● नीलकन्त बरजो, टकरमा गुमला ● बिमल टोपनो बोकारो स्टीलसिटी धनबाद ● प्रेमोदय नोवेल हंसदा, डाइबरहाट, हजारीबाग ● मुकुट टोपनो सुकना टी०ई० दर्जीलिंग ● उज्जवल सुदीप पुर्त्ती, धुर्वा राँची ● प्रवीण कुमार तिर्की, ए०जी० कोलोनी भुवनेश्वर ● आभारानी तोपनो, परसुडीह टाटा-नगर ● अटल बिनित तिर्की, गमहारिया ● जयकब बरजो मरचा, राँची ● रोबिन तिग्गा कुरा, हजारीबाग ● उषा किरण संगा, जलटंडा राँची ● पालकर मिंज, सारनगढ़ रायगढ़ (मध्य प्रदेश) ● लालू तोपनो, राजगंगपुर सुन्दरगढ़ ● पूनम बाखला, सोनारी जमशेदपुर ● इदरस खलखो, शालीमार धुर्वा राँची ● सुदीश तोपनो परसुडीह जमशेदपुर ● बसंत कुमार जोजो, लोवारोम उड़ीसा ● जोसेफ लुगुन पैतागो महुआ टोली, गुमला ● उम्बलन बरजो पाकेलपंरा उड़ीसा ● इपिल होरो, कल्याणपुर हेसाग, राँची ● जीदन संगा बिरसानगर जमशेदपुर ● शशि बाड़ा आदित्यपुर जमशेदपुर, ● कुमारी एनी केरकेट्टा कोयल नगर राउरकेला ● बिंगुल मुन्डू लोहरदगा ● पुष्पा कन्डुलना बोकारो स्टील सिटी धनबाद ● प्रभावती पुर्त्ती मानगो

Gossner Mission

जमशेदपुर ● नूतन जीनिद बुढ़ बिरमित्रापुर सुन्दरगढ़ ● अमलन तिर्की अबिनाश मुखर्जी रोड हुगली (प० बंगाल) ● अनूप ओड़ेया मोसाबानी, सिंहभुम ● सबीता आइन्द धलचर थरमल उड़ीसा ● अनुपमा समद ए०जी० हाउसिंग कॉलोनी कडरु राँची ● सरत कुमार आइन्द थलचर थरमल उड़ीसा ● प्रेमिका टोप्पो, चटकपुर लोहरदगा ● दिलबर धान, टाटानगर ● समीर दाउद तोपनो चाईबासा सिंहभुम ● सुनील कुमार तिर्की ए०जी० कोलोनी भुवनेश्वर ● सुफल सुरिन, इग्नातियुस स्कूल गुमला ● रानी पुर्ती, मानगो जमशेदपुर ● जीदन बहालेन हेरेंज, मकदमपुर, टाटानगर ● एडित हपदगड़ा गोविन्दर राँची ● बिमल कन्डुलना कुलाओड़: गुमला ● नमजन संगा, गुवा मेगेजिन लेनेल ● एमलेन जेनेट संगा, फुदी, राँची ● आशीष कुमार हंसदा बोकारो ड्राइवर हाट हजारीबाग ● कुमलेन कोनगाड़ी बड़ागोड़ा जमशेदपुर ● एडवर्ड जेम्स हंसदा डाईवरहाट हजारीबाग ● आशा अनीता हंसदा ड्राईवरहाट हजारीबाग ● जयवन्त गेर्सोन टोप्पो, टाटानगर ● हरदुगन गुड़िया पी० टी० पी० एस० हजारीबाग।

द्वितीय दर्जा में उतीर्ण होकर इन बच्चों ने भी कमाल कर दिया है :—

● शान्तिएल कन्डुलना, परवटोनेया गुमला ● नूर नूतन टेटे प्लाथपुर हाई स्कूल कोरोंजो ● शरण कन्डुलना कुटुंगिया गुमला ● सोसन जीवन यूसफ, कोलेंगहातु तैमारा ● हिचिर होरो बिरसा नगर जमशेदपुर ● जयमसीह कन्डुलना कुटंगिया गुमला।

सूचना :— लेख प्रतियोगिता न० (तीन) का परिणाम खास कारणवस नवम्बर १९८६ में न निकालकर जनवरी १९८७ में निकाला जाएगा।

सम्पादक

नया ग्राहक बनने वालों के लिए

घरबन्धु पत्रिका के नया ग्राहक बनने की इच्छुक पाठकों को यह सलाह दी जाती है कि यदि वे मनीऑडर भेजना चाहें तो मनीऑडर कूपन में साफ-साफ यह जाहिर करें और लिखें— "मैं घरबन्धु पत्रिका का नया ग्राहक बनने के लिए १४) रु० भेज रहा / रही हुँ।" इस लिखित वाक्य से हमें नया नाम दर्ज करने में कोई दिक्कत नहीं होगी।

धन्यवाद।

प्रोमोटर।

चुटकुला— कन्डिदत्त तिर्की, किताडीह।

आदम (हवा से डाँटते हुए)— क्या तुम्हें मालूम नहीं था, इस पेड़ का फल खाना वर्जित है?

हवा (झिझकते हुए)—खाती नहीं तो करती क्या? तुमने हिदायती पोस्टर टांग क्यों नहीं दिया?

Gossner Mission

लूत की स्त्री को स्मरण करो

श्री डाब्ल्यु० डी० तिर्की, पुरना पानी (उड़ीसा)

लूत की स्त्री को स्मरण करो,
पीछे फिर के मत देखो।
दुनियां हाय सदोम-अमुरा जैसा,
दौलत हाय मन-मोहक तैसा।
स्मरण करो यहोवा की वाणी
अपने को कर दो कुर्बानी।
मुक्ति-मार्ग पर आ जाओ,
परादीश जीवन को अपनाओ।

—चौकस रहें कि मुक्ति के मार्ग पर चलते हुए अपना मन इस संसार में लगाने से नष्ट न होवें।
—लूत की स्त्री सदोम से तो निकल गई थी, पर मन उसी में रह गया था।
—वह अपने बचाव प्राप्त हेतु सुगम की ओर भागती तो थी पर उसका मन अपनी त्यागी सम्पति और शारीरिक आनन्द में लगा रहा।

लूत की स्त्री उन सब ख्रीष्टियानों का दृष्टान्त ठहराः— जो मसीही मण्डली में आकर उसके नियमों चलते हैं। एवं— अनन्त जीवन पाने की आशा भी रखते हैं। परन्तु उनका मन संसारिक रीझ-रंग धन-सम्पत, मिथ्या विश्वास, मतवालापन, नाना प्रकार की शत्रुता, बैर, ईर्षा, क्रोध, विवाद, विरोद्ध आदि कुकर्मों में लगा रहता है।—गलाती १:३-४। रोमी १२:२। १ कोरिन्थि ६:९-१०।

ऐसे जन लूत की स्त्री के सदृश पीछे फिर के देखते एवं भ्रष्ट होते हैं। याकूब १:२२, मत्ती ७:२१। क्योंकि हरएक जो हे प्रभु हे प्रभु कहता है स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा—परन्तु वही जो मेरे स्वर्गवासी पिता की इच्छा पर चलता है। इस लिये न तो संसार और न संसार में की वस्तुओं से प्रीति रखो। क्योंकि संसार और उसकी अभिलाषा बीतती जाती है परन्तु जो ईश्वर की इच्छा पर चलता है सो सर्वदा बना रहेगा। १ योहन २:१५-१७।

चुटकुला— कन्डिदत तिर्की किताडोह।
यहोवा (शैतान से)— तू कहां से आता है?
शैतान— पृथ्वी पर इधर-उधर, घूमते-फिरते, डोलते-डालते झूमते-झामते, रोते-हँसते, नाचते-गाते उठते-बैठते आया हूं।

डाक्टर (एक रोगी से)— आप की आदत कैसी है?
रोगी— डाक्टर साहब, सोना-उठना और बैठना।
डाक्टर-रोगी— दारू पीते हैं? हां डाक्टर साहब, हाँड़ियां पीते हैं? हाँ डाक्टर साहब और खैनी? फाँकते हैं— डाक्टर साहब।

Gossner Mission

Grams : BHATIA SPORTS Phones Showroom 22366Res 23509

BHATIA SPORTS & SCIENTIFIC

Main Road Ranchi—834001 (BIHAR)

precision, Scientific, Instruments, apparatus Chemicals glass ware, drawing Materials Sports Games play ground articles Map-Charts General order suppliers.

COMPLETE LABORATORY FURNISHERS

SSI Regd No. 031204971/85

एस० एस० आई० राजि न० ०३१२०४९७१/८५

रश्मि प्रिन्टिग प्रेस

आकर्षक एवं उत्तम छपाई का एक मात्र स्थान

हिन्दू बस्ती हिन्दू, राँची—२

जी० ई० एल० चर्च के नजदीक

हमारे यहाँ सभी प्रकार के जॉब किताब एवं स्कूल डायरी इत्यादि की छपाई उचित एवं सस्ते दाम पर होती है।

परीक्षा प्रार्थनीय। प्रो०—विराज गाड़ी

कृपया पत्र व्यवहार या मनीआर्डर भेजते वक्त अपना ग्राहक न०अवश्य लिखें

एसोसियेट एडिटर, घरबन्धु।

Edited & Published by Rev. S. Mohan MG. Pramukh Adhyaksh on behalf of the G.E.L. Church and printed at G.E.L. Church Press Main Road Ranchi.

Gossner Mission

Post → D. Hecker
Directeur Gossner Mission.
Berlin.
West.

गगनबन्धु

रजि. न. आर. एन. सी. ८१

वार्षिक मूल्य २० रु०

एक प्रति २ रु०

August 1989

वर्ष— १०६ राँची, अगस्त १९८९ संख्या न०-८

स्वतंत्र-दिवस

"हे देश देश के सब लोगो,
तालियां बजाओ।
ऊँचे शब्द से परमेश्वर के लिए,
जयजयकार करो।
वह सारी पृथ्वी के ऊपर महाराजा है।"

भ. सं. ४७:१-२

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

घरबन्धु

(गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पत्रिका)

EDITOR & PUBLISHER :—

Pramukh Adhyaksh
(Rev. Martin Tete)

PROMOTER : –

Rev. Saban Martin Topno

EDITORIAL COMMITTEE :-

1. Rev. Dr. Royan Dang
2. Mrs. M Minz
3. Rev. P. J. G. Minz
4. Mrs. Sisi Baha Topno

सूची

इस अंक में

सम्पादकीय		पृष्ठ
स्वतंत्रता के चालीसवां वर्ष ...	...	१
छोटानागपुर की प्रोटेस्टैंट कलीशियाएँ	...	३
खुटगाँव राज्य वृद्धि ...	...	७
आया हुआ धन नहीं रहता ...	...	१०
एक साक्षी	...	१२
अन्तिखृस्त और उसका राज्य	...	१३
आइये विचार करें	...	१७
सुसमाचार कार्य एवं साहित्य विभाग	...	२०
समाचार	...	२१
बहुत कुछ हो रहा है	...	२२
बारह वर्ष के विवाद का बन्द : अंग्रेजी में	...	२३
Revised Pay Scale	...	२६

सूचनाः— स्मरण रहे कि लेखकों के भावों के लिए सम्पादक व सम्पादन मंडल जवाबदेह नहीं रहेगा।

घरबन्धु में विज्ञापन छपवाने की दरें

पिछले आवरण का वाह्य पूर्ण पृष्ठ	१७५)	अन्दर के पूर्ण पृष्ठ	१२५)
" " " अर्द्ध पृष्ठ	९०)	" " " अर्द्ध पृष्ठ	७०)
" " " अन्तः पूर्ण पृष्ठ	१५०)	" " " एक चौथाई पृष्ठ	४०)
" " " अर्द्ध पृष्ठ	८०)	" " " दो तिहाई पृष्ठ	९०)
		" " " एक तिहाई पृष्ठ	५०)

x x x

सूचना

घरबन्धु के नियम –७ के अनुसार सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके।

सम्पादक।

Gossner Mission

सम्पादकीय

स्वतंत्रता के चालीसवां वर्ष

१५ वीं अगस्त १९४७ हमारे देश के लिये विशेष दिवस है। यह दिन हमारे राष्ट्रीय जीवन के लिए अधिकार एवं दायित्व दोनों को लाया। देश चलाने का अधिकार हमें मिला। देश के लिए दायित्व हमें दी गयी।

आज के दिन हमें हमारे राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी को भी स्मरण करते हैं। उसके विचार एवं परिश्रम का फल हमारे देश के लिए आशीष हुआ। बापू जी ने सत्य के आग्रह किया। सत्य की विजय हुई। पिछड़े वर्ग के लोगों को उसने हरिजन कहा। हरिजनों की उन्नति एवं अधिकार के लिए बहुत कुछ कहा गया परन्तु किया नहीं गया। आज भी हरिजनों की आह राष्ट्रीय जीवन में गूंजती है। अभी भी हरिजनों के लिए हमें बहुत करना है। जब तक हमारे देश में भूख की आह है देश का एक पैर गुलामी की बेड़ी में जकड़ा हुआ है। हमारा एक पैर बेड़ी में है दूसरा आजाद हुआ है। हरिजन एवं अन्य पिछड़े वर्गों की आह जब हम सुनते हैं हमें अपनी दायित्व के लिए जागरूक हो जाना है।

स्वतंत्रता के चालीसवां वर्ष में हम ने एक बात पर विशेष ध्यान दिया है। वह बात तो "हड़ताल" है। बापूजी ने भी हड़ताल किया। परन्तु बापूजी एवं हमारे आज के हड़ताल में भिन्नता है। बापू जी ने सत्य के निमित्त अनशन किया। हमारा अनशन तो अधिकांश बार स्वर्थ के लिये होता है। यही कारण है कि हमारा अनशन अधिकांश बार राजनैतिक भावना से प्रेरित हो जाता है।

स्वतंत्रता के चालीसवां वर्ष में हम अपना जांच करें कितना दूर तक हम ने अपना इमान एवं धर्म की रक्षा किया है। अधिकांश लोगों की गवाही होगी कि हम एवं हमारे देश ने छोटी एवं बड़ी बातों में अपना इमान एवं धर्म खो दिया। देश ने हमें घर बारी दिया। हमारे छोटे घरबारी को हम ने कहां तक अपने एवं पड़ोसी के निमित्त आनन्द एवं आशीष की जगह बनाया।

देश ने हमें शिक्षण संस्थान प्रदान किया। विद्यालयों की संख्या में लगातार वृद्धि हुई है। पर अब तक हमारे देश में अनपढ़ों को संख्या में कमी नहीं हुई है। अनपढ़ों की संख्या जब तक देश में है हम गुलामी की बेड़ी में जकड़े हुए हैं। शिक्षा क्षेत्र में अब तक हमारी दायित्व अधूरी पड़ी हुई है।

अधिकार तो हमें मिल गया है। आइये हम अपनो दायित्व में आगे बढ़े।

Gossner Mission

समाचार

१ जुलाई अगस्त १९८९ की लोक सभा में मसीही विवाह अधिनियम पर विचार विमर्श होगा। प्रधान मंत्री श्री राजीव गाँधी इस विषय पर भारतीय मसीहियों से राय लेंगे। प्रधान मंत्री के पास आप अपना व्यक्तिगत वा सामुहिक राय भेज सकते हैं।

२ अगस्त १४/८९ को पाद्री सुरेन्द्र मोहन एम जी एवं श्री इदेन विक्टर केरकेटा पूर्वी जर्मनी के लिये उड़ रहे हैं। पूर्वी जर्मनी के मित्रों ने इन्हें वर्क्स कैम्प एव मंडलियों में भ्रमण के निमित्त आमंत्रित किया है। इन भाइयों के द्वारा हमारी कलीसिया एवं जर्मनी के मंडलियों का आपसी सम्बन्ध बढ़ेगा।

३ डाक्टर सी. के. पाल सिंह मिशन डाइरेक्टर एवं दिल्ली पेरिश एवं इलाका अध्यक्ष पाद्री वरून विश्वास ३-९-८९ को पश्चिमी जर्मनी के लिए उड़ेंगे। उनका भ्रमण पश्चिमी जर्मनी के मंडलियों में होगा। वे इसी दौरान में गोस्सनर मिशन के सभा (कुराटोरियम) में भी विशेष रूप से उपस्थित होंगे। इस बार कुराटोरियम में G.B.-L.C. / N.W.G.E.L.C· की एकता पर विशेष बात चीत होगी।

४ अगस्त १३-१७/१९८९ को गोस्सनर कलीसिया के प्रचारिकाओं का शिक्षा क्लास रांची में होगा। प्रचारिका बहनों से अपील है कि पूरी तैयारी के साथ आवें। महिला संघ की ओर से आप को विशेष निमंत्रण एवं सूचना दिए जायेंगे।

५ पत्रकारों की दृष्टि में GELC/NWGELC:

रांची एक्सप्रेस

२३ जुलाई १९८९

जी. ई. एल. चर्च के एकीकरण का प्रयास किया जाएगा।

रांची, (रां. ए. सं.) :—गोस्सनर कलीसिया की विभाजीत मंडलियों के एकीकरण का प्रयास किया जाएगा। यह जानकारी गोस्सनर चर्च के प्रमुख अध्यक्ष श्री मार्टिन टेटे ने दी है।

उल्लेखनीय है कि गोस्सनर एवंजेलिकल लूथरन चर्च में नोर्थ वेस्टर्न जी. ई. एल चर्च को पांच वर्षों के लिए मान्यता दी है।

भारतीय यूनाइटेड एवंजेलिकल लूथरन कलीसिया के नियमानुसार माता कलीसिया की सहमति के बिना अलग हुए समुदाय की मान्यता नहीं दी जाती है।

श्री टेटे ने बताया कि मान्यता मिले पांच वर्षों की अवधि में गोस्सनर कलीसिया एवं नोर्थ वेस्टर्न गोस्सनर कलीसिया के एकता का प्रयास किया जायगा, जिसके तहत आशा की जाती है कि एक दूसरे के विरूद्ध किए गये मुकदमें भी वापस होंगे।

आज

सोमवार २४ जुलाई १९८९ सौर ८ श्रावण सं. २०४६ विक्रमी

दो चर्च आपसी एकता का प्रयास करेंगे।

रांची, आने वाले पांच वर्षों के दौरान गोसनर कलीसिया एवं नोर्थ वेस्टर्न गोस्सनर कलीसिया आपसी एकताकी दिशामें प्रयास करेंगे।

गोस्सनर चर्च के प्रमुख अध्यक्ष श्री मार्टिन टेटे एक प्रेस वयान जारी कर उक्त जानकारी दी है।

उन्होंने आशा व्यक्त की है कि गोस्सनर कलीसिया की नियमावली में सुधार कर नोर्थ वेस्टर्न गोस्सनर कलीसिया एवं गोस्सनर कलीसिया के सभी अंचल स्तरकी इकाईयों को स्वतंत्र दर्जा प्रदान किया जाएगा साथ ही कलीसिया की विभाजित मंडलियों के एकीकरण का प्रयास होगा, एक दूसरे के विरूद्ध दायर मुकदमों को दोनों ही पक्ष वापस लेंगे तथा आपसी मेल-मिलाप की दिशामें प्रयत्न किए जाएगे।

उल्लेखनीय है कि गत दिनों गोस्सनर एवं जेलिकल लुथरन चर्च ने नोर्थ वेस्टर्न जी.ई.एल. चच को पांच वर्षों के लिए अस्थायी मान्यता प्रदान की।

Gossner Mission

छोटानागपुर की प्रोटेस्टैंट कलीशियाएँ एक नये पथ पर

(प्राचार्य :- पाद्री डाक्टर रोयन डॉग)

१९वीं शताब्दी के मध्यकाल में छोटानागपुर के पहाड़ी क्षेत्र में मिशन काम का आरम्भ हुआ। सर्व प्रथम चार जर्मन मिश्नरियों का आगमन हुआ। उन में थे- पाद्री एमिल शत्स, पाद्री अगस्त ब्रन्त, पाद्री फेड्रिक वत्स और पाद्री थियोदोर यानके। वे २ नोबेम्बर १८४५ ई० में राँची पहुंचे। उनके कठिन परिश्रम से गोस्सनर एवंजेलिकल लूथेरान कलीशिया की स्थापना हुई। मिश्नरियों का काम उत्साह के साथ बढ़ता गया। मसीहियों की संख्या भी दिन प्रतिदिन बढ़ती गई। सिपाही विद्रोह के काल तक पाद्री शत्स सुपरिनटेंडेन्ट के रूप में थे। बाद में जब वे देश वापस लौट गए तब यहां के मिश्नरियों के लिए समस्या उठी। उनके बीच में मतभेद भी आ गया। उन दिनों में जर्मनी में एक नई समिति का गठन हो गया था। इस समिति को छोटानागपुर के मामलों के लिए चिन्ता पड़ी। उनके मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि छोटानागपुर के मामलों को सही रास्ते में लाने के लिए प्रशासन को ठीक करना होगा। इस कारण उन्होंने १२-६-१८६८ में एक संविधान बनाया (**J. Lakra, "Gossner Evangelical Lutheran Church" in The Lutheran Enterprise in India, p. 55**) इस संविधान के विषय सुनकर यहाँ के मिश्नरियों में से कुछ तो प्रसन्न हुए परन्तु कुछ में असन्तोष फैलने लगा जो अप्रसन्न हुए उन्होंने होम बोर्ड से सम्बन्ध तोड़ने का निर्णय लिया। उन्होंने चर्च मिश्नरी सोसाइटी से इस अभिप्राय से पत्र व्यवहार किया कि वे उसके अधीन मिश्नरी ग्रहण किए जाएँ। लेकिन चर्च मिश्नरी सोसाइटी के अधिकारियों ने उनकी इस अर्जी को इन्कार कर दिया। इस पर असन्तुष्ट मिश्नरियों ने कलकत्ता के विशप मिलमन से आग्रह क्रिया। विशप महोदय ने उनको ग्रहण करने की इच्छा प्रगट की असन्तुष्ट दल का अगुवा पाद्री फ्रेड्रिक वत्स थे। क्योंकि वे प्रथम चार मिश्नरियों में से थे इसलिए लोगों पर उनका गहरा प्रभाव था। नतीजा यह हुआ कि आगे चलकर जब वे लूथेरान कलीशिया से अलग हो गये तो यहाँ के भारतीय मसीहियों में से भी बहुत से लोग उनके पीछे हो लिए।

कलकत्ता से विशप मिलमन और उनके दल के लोग १६ अप्रैल १८६९ में राँची पहुँचे। विशप के साथ आने वालों में से थे - पाद्री जे केव ब्रऊन जो उन दिनों में एस. पी. जी. के विदेशी विभाग के डियोकिस सेक्रेटेरी थे, पाद्री सी. इ. ड्रिबरी, पाद्री एफ. डबल्यू रोवर्ड और पाद्री एम. अर. बुर्ज थे। इस स्वर्ण अवसर का उत्सव मनाने के लिए बाँस की लकड़ी से एक कामचलाऊ गिर्जा घर बनाया गया जिसकी छत पुआल और पत्तियों से ढंकी गई थी। शनिवार १७ अप्रैल में ६२४ मसीही लोग एंगलिकन कलीशिया में ग्रहण किए गये। दूसरे दिन रविवार १८ अप्रैल में पाद्री केव ब्रऊन ने पाद्री फेड्रिक वत्स, एच, एफ. बोन और प्रचारक विलहेल्म लूथर दाऊद सिंह को पदाभिषेक के लिए उपस्थित किया। विशप मिलमन ने पहिले तीन को पाद्रीपद दिया और दाऊद सिंह को डीकन पद पर स्थापित किया (**S, Mahto, Hundred Years of Christian Missions in Chotanagpur Since 1945, P. 84**) इस तरह से एंगलिकन कलीशिया की स्थापना हो गई। अब दो अलग अलग कलीशियाएं इस क्षेत्र में काम करने लगी गोस्सनर कलीशिया और एंगलिकल कलीशिया जो संक्षेप में लूथेरान और एस. पी. जी. मिशन के नाम में प्रसिद्ध हो गए। अब यदि इतिहास की घटनाओं पर ध्यान किया जाय तो बिलकुल स्पष्ट है कि एंगलिकन के प्रथम मसीही तो लूथेरान लोग ही थे और लथेरान कलीशिया से निकल कर एंगलिकन में आने का मूल कारण तो जर्मन

Gossner Mission

मिश्नरियों के बीच का आपसी मतभेद था। बड़े खेद की बात है कि इस आपसी मतभेद के कारण यहाँ के मसीहियों में ऐसा विभाजन आया कि कहीं-कहीं पर एक ही जाति में, यहाँ तक कि एक ही गोत्र तथा परिवार के लोगों में विभाजन आ गया। इस क्षेत्र में आरम्भ से काम करने वाले मिशन में कैथोलिक कलीशिया भी है। पहला बेलजियन मिश्नरी जिन्होंने छोटानागपुर में पाँव रखा वे फादर स्टोकमन थे। वे पश्चिम बंगाल के मिदनापुर में काम करते थे। वहाँ से २४ नोबेम्बर १८६८ में आए थे। १० जुलाई १८६९ से उन्होंने चाईबासा में मिशन काम आरम्भ किया इस तरह से तीनों मिशन अपने-अपने क्षेत्रों में काम करने लगे।

प्रश्न उठता है कि ये तीनों मिशन एक ही सुसमाचार का प्रचार करते थे, एक ही प्रभु यीशु पर विश्वास करते थे तो उनके बीच में विभिन्नता क्यों थी ? इसका एक जवाब तो यही है कि ये मिश्नरी भिन्न-भिन्न देशों से यहाँ आए थे। अपने साथ में अपने देश तथा अपनी कलीशियाओं की पराम्पराओं को लेकर आए थे। इससे उनमें विभिन्नता थी। लेकिन इसी कारण से यहां के एक साथ रहनेवाले आदिवासी मसीहियों में भी विभिन्नता पैदा हो गई यहां तक कि एक भाषा बोलने वाले तथा एक ही गोत्र के लोगों के बीच में भी विभिन्नता पैदा हो गई। पर कब तक यह स्थिति ऐसी ही बनी रहेगी ? इतने वर्षों के कटु अनुभवों से हम लोगों को पाठ पढ़ना चाहिए और एक नया रास्ता अपनाना चाहिए जिसमें कि हम एक साथ मिलकर आगे बढ़ सकें और उस प्रभु यीशु मसीह की साक्षी व्यवहारिक रूप से अपने इलाकों में दे सकें।

खृस्तानी कलीशियाओं के इतिहास जानने वालों का कहना है कि १९ वीं शताब्दी सुसमाचार के फैलाव का काल था और २० वीं शताब्दी कलीशिया की एकता के आन्दोलन का युग है। कलीशिया के इतिहास देखने से यह कथन बिलकुल सही निकलता है क्योंकि १९ वीं शताब्दी में पश्चिमी दुनिया के लोगों का ध्यान विशेष करके इसी बात पर था कि जगत के सभी देशों में सुसमाचार का प्रचार किया जाए। निश्चय इसके पीछे कुछ देशों के राज्यनैतिक और व्यवसायिक अभिप्राय भी थे लेकिन धार्मिक उत्साह भी अवश्य ही था जिसको हम इन्कार नहीं कर सकते हैं। बीसवीं शताब्दी में कलीशिया की गति ठीक उसके दूसरी दिशा की ओर बढ़ने लगी। इस काल में भी भिन्न-भिन्न कलीशियाओं में एकता स्थापित हुई। हमारे भारतवर्ष के दक्षिण में दक्षिण भारत की कलीशिया इसका एक सुन्दर उदाहरण है। इसी तरह उत्तर में उत्तर भारत की कलीशिया जिसका उद्घाटन २९ नोबेम्बर १९७० में किया गया।

कुछ वर्षों से हमारे राँची क्षेत्र में यहाँ की भिन्न भिन्न कलीशियाओं के बीच में एकता की भावना बढ़ाने के लिए प्रतिवर्ष १८से २५ जनवरी के बीच कार्यक्रम रखें जाते थे। भिन्न-भिन्न कलीशियाओं के भाई-बहन, पाद्री और विशप लोग कभी रोमन कैथोलिक कम्पांउड में कभी उत्तर-भारत की कलीशिया के कम्पांउड में और कभी गोस्तर कलीशिया के कम्पांउड में इकट्ठे होकर गान-भजन करते और एकता के लिए प्रार्थना भी करते थे। इससे बढ़कर बीते कुछ वर्षों से इस एकता सप्ताह के एक रविवार में उपदेशकों की अदली-बदली भी होती आई है। सी. एन. आई के पाद्री लूथेरान गिर्जे में, लूथेरान पाद्री सी. एन. आई के गिर्जे में, इसी तरह रोमन कैथोलिक गिर्जे में उपदेश देने के लिए भेजे जाते थे। लेकिन इतने होते हुए भी सच कहा जाय तो हमारी एकता उन मैदानों और गिर्जे घरों तक ही सीमित रह जाती है। एक-एक साधारण परन्तु प्रगट प्रमाण तो यह है कि हमारे तीनों बड़े मिशनों के अपने-अपने स्कूल हैं जब किसी मिशन का बच्चा किसी दूसरे मिशन स्कूल में

Gossner Mission

बहाली के लिया जाता है तो उससे अथवा पिता से पूछा जाता है 'तुम किस मिशन के हो ?" इससे साफ जाहिर होता है कि व्यवहारिक दृष्टि से मसीही एकता को प्रगट करने में हम चुक जाते हैं।

एकता के पथ पर हमने अब नये क्षेत्र पर कदम बढ़ाया है और वह तो है आध्यात्मिक शिक्षा के प्रशिक्षण पर। गोसस्नर कलीशिया और उत्तर भारत की कलीशिया (पुराना एस. पी. जी.) दोनों के अपने-अपने थियोलोजिकल क्रॉलेज हैं—गोसस्नर थियोलोजिकल कॉलेज और विशप हब्बक थियोलोजिकल कॉलेज। ये दोनों ही राँची में एक दूसरे के बहुत नजदीक में स्थित हैं। इन दोनों संस्थाओं में बीते कुछ वर्षों से आपसी मित्र भाव बढ़ाने के ख्याल से कुछ कार्यक्रम होते रहते थे। कभी-कभी खेल-कूद के आयोजन किये जाते थे जिसमें एक संस्था के विद्यार्थी दूसरी संस्था के विद्यार्थियों को निमंत्रण देते थे। कभी.कभी दोनों संस्थाओं के शिक्षकों और विद्यार्थियों के मिलन-जुलन के अवसर बनाये जाते थे। लेकिन इन सभी कार्यक्रमों के कोई स्थायी प्रभाव नहीं पड़े। हमारी मित्रता उन कार्यक्रमों के चाय-नांशता के साथ ही अन्त हो जाती थी।

जून १९८८ में इस सम्बन्ध में ठोस कदम उठाया गया। इस बार विशप हब्बक थियोलोजिकल कॉलेज के शिक्षकों की ओर से कदम उठाया गया। उन्होंने यह सोचा जो अच्छा ही है, कि अभी की बदलती हुई परिस्थिति में जब कि मंडलियों के लोग शिक्षा में बढ़ते जा रहे हैं कलीशिया के लिए अगुवे (पाद्री) तैयार करना है तो योग्य और शिक्षित व्यक्तियों को तैयार करना चाहिए। साथ में यह भी आवश्यक समझा गया कि उनके लिए आध्यात्मिक शिक्षा की डिग्री भी होनी चाहिए। अब प्रश्न उनके लिए रह गया कि इस तरह की शिक्षा कैसे हो सकती है ? क्योंकि इसके लिए तो ऐसी संस्था होनी चाहिए जिसको किसी विश्वविद्यालय से मंजूरी प्राप्त हो। गोसस्नर थियोलोजिकल कॉलेज तो सिरमपुर विश्वविद्यालय में अंगीभूत है। यहाँ बैचलर ऑफ थियोलोजी डिग्री कोर्स की पढ़ाई होती है। इस कारण से विशप हब्बक के शिक्षक किसी तरह का सम्भव रास्ता ढूढ़ने के लिए हमारे पास आए। उनसे बातचीत करने के बाद ३० जून १९८८ में दोनों संस्थाओं के शिक्षकों की एक सम्मिलित बैठक गोसस्नर थियोलोजिकल कॉलेज में बैठी। बहुत विचार-विमर्श के बाद दोनों संस्थाओं के शिक्षकगण एक साथ मिलकर गोसस्नर थियोलोजिकल कॉलेज में बी. टी. एच. डिग्री कोर्स की पढ़ाई करने के लिए सहम्मत हो गए। इस सम्मिलित बैठकी में जो निर्णय लिया गया उसका सारांश इस तरह है –

(१) दोनों संस्थाओं के अस्तित्व, आन्तरिक प्रबन्ध और प्रशासन अपने-अपने स्थानों में वैसे ही रहेंगे जैसे पहिले से थे लेकिन बी. टी.एच. डिग्री कोर्स से सम्बन्धित बातों में एक साथ रहेंगे

(२) बी. टी. एच. डिग्री कोर्स से सम्बन्धित विषयों की पढ़ाई गोसस्नर थियोलोजिकल कॉलेज में होगी।

(३) अन्य विषय जो अपनी-अपनी कलीशियाओं की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पढ़ाई जाती है उनकी पढ़ाई अपनी-अपनी संस्थाओं में की जा सकती हैं।

४) पुस्तकालय की सभी सुविधाएँ विशप हब्बक के विद्यार्थियों को उपलब्ध होगी। इसके लिए पुस्तकालय के नियम अनुसार जो आवश्यक देन पड़ेंगे विशप हब्बक गोसस्नर थियोलोजिकल कॉलेज को देगा।

(५) सिरमपुर युनिवर्सिटी के नियमानुसार जो देन पड़ेंगे तथा गोसस्नर थियोलोजिकल कॉलेज के प्राशासनिक आवश्यकताओं के

Gossner Mission

जो देन पड़ेंगे उन्हें विशप हब्बक देंगे (अंग्रेजी में अलग से इसका पूरा विवरण दिया जाता है।

इस बैठक में यह भी तय हुआ कि आज का कार्य-विवरण दोनों कलीशियाओं के अधिकारियों को इस विषय पर उचित विचार और अनुमोदन के लिए दिया जाए और उनसे अनुमति पाकर इस पर आगे कदम बढ़ाया जाए। अगला बैठक १६ जुलाई को गोसस्नर थियोलोजिकल कॉलेज में ४ बजे शाम को होने का निश्चित किया गया। १६ जुलाई को निर्धारित समय पर गोसस्नर थियोलोजिकल के शिक्षक उपस्थित हुए परन्तु विशप हब्बक के शिक्षक समय पर नहीं आए। लेकिन अन्त में दो शिक्षक प्राचार्य विशप जोन टुटी और पाद्री सिरिल हंस पहुँचे लेकिन निराशा का सन्देश लेकर। सन्देश यही था कि ३० जून के हमारे निर्णय को सुनकर सी. एन. आई. के कुछ सदस्य इसका विरोध करने लगे। वे चाहते थे कि उनका थियोलोजिकल कॉलेज गोस्नर थियोलोजिकल कॉलेज से न मिले। इस सन्देश को सुनकर हमारी बैठक तो नहीं हुई परन्तु विशप टुटो और पाद्री हंस ने यह कहा कि यह विरोध तो केवल इने-गिने सदस्यों का है। उनकी डियोकिस सभा शीघ्र ही मुढ़ु में होने वाली थी। उन्होंने कहा कि ३० जून को हमारा निर्णय उस होने वाली डियोकिस सभा में रखा जायगा और आशा है कि उस पर उचित विचार करके आगे कदम बढ़ाने के लिए अनुमति मिल जायगी। सभा के बाद विशप टुटी और पाद्री हंस हम लोगों से मिलने आए। उन्होंने बताया कि डियोकिस सभा ने उस विषय पर विचार करके अनुमति दी है कि विशप हब्बक के विद्यार्थी बैचलर ऑफ थियोलोजी कोर्स के लिए गोस्नर थियोलोजिकल कॉलेज जायंगे (डियोकिस सचिव, के. एम. फिलिफ के पत्र संख्या ८८-५७५ ता: १ अगस्त १६८८) इस तरह से अधिकारी वर्ग से अनुमति मिलने के बाद आध्यात्मिक प्रशिक्षण के क्षेत्र में दोनों संस्थाओं का संयुक्त प्रयास आरम्भ हुआ। शनिवार ६ अगस्त १६८८ को दोनों संस्थाओं के शिक्षक और विद्यार्थी एक दूसरे से परिचय होने के अभिप्राय से गोस्नर थियोलोजिकल कॉलेज हाल में इकट्ठे हुए। उत्तर भारत की कलीशिया से माननीय विशप डॉक्टर दिलबर हंस और गोस्नर कलीशिया से पाद्री सुरेन्द्र मोहन एम. जी. ने हमारे इस संयुक्त प्रयास की शुभ-कामना प्रगट की सोमवार ८ अगस्त १६८८ से बैचलर ऑफ थियोलोजी कोर्स की सम्मिलित पढ़ाई गोस्नर थियोलोजिकल कॉलेज में आरम्भ हुई। इस ऐतिहासिक दिन में बिशप हब्बक से ११ विद्यार्थी थे उनमें दो महिलाएँ थीं। इन विद्यार्थियों का चयन अच्छी तरह छान-बीन करके किया गया था। उन में से एक एम. ए. पास था, आठ बी. ए. और दो आई. ए. पास थे। इतना ही नहीं, उन में से पाँच शिक्षक प्रशिक्षण दिए हुए थे। निश्चय गोस्नर कलीशिया के लिए यह एक चुनौती है। यदि हम कलीशिया के भविष्य को क्रियात्मक और प्रगतिशील देखने चाहते हैं तो योग्य व्यक्तियों को इसमें आना बहुत जरूरी है। इस संयुक्त प्रयास से निश्चय दोनों कलीशियाओं को लाभ होंगे। एक तो यह कि दोनों कलीशियाओ के लिए योग्य अगुवे (पाद्री) तैयार होंगे। दूसरा यह कि दोनों कलीशियाओं में कलीशिया के पुराने इतिहास को जानकर अथवा अनजान से एक दूसरे के प्रति जो भवनाएँ रही हैं वे कम हो जायंगी अथवा कुछ तो अवश्य दूर हो जायंगी और तीसरा यह कि ऐसे भी काम होंगे जिनमें हम एक दूसरे के सहयोग से आगे बढ़ सकेंगे। सबसे बढ़ कर तो यह होगा कि जिस विश्वास में हम रोपे गए हैं उसकी साक्षी का यह एक जीवित प्रमाण बन जायगा कि हम सब एक यीशु जो मसीह है उसमें विश्वास करते हैं। ८ अगस्त १६८८ में शिक्षकों और विद्यार्थियों की संख्या जो थी उसका विवरण नीचे दिया जाता है।

(शेष अगले अंक में)

Gossner Mission

खुटगाँव राज्य वृद्धि जो. ई. एल. चर्च का संक्षिप्त इतिहास

कंडिदत - जे. के. कण्डुलना ।

मैं सेमिनरी का अंतिम परीक्षा की तैयारी में जोर शोर लगा हूं, ठीक ऐसे ही समय में युवा प्रेसिडेन्ट मेरे पास राँची पहूंचे । मैं समाचार पूछा तो बोलने लगे कि ता. २२से२४ मई तक खुटगाँव में नया गिर्जा घर संस्कार और युवा सम्मेलन ठहराया गया है संस्कार के दिन आपको खुटगाँव मंडली का इतिहास कहने का भार दिया है । मैं सोचने लगा खुटगाँव मंडली की इतिहास; मुझे ज्यादा सोचने की बात नहीं रही चूंकि खुटगाँव मसीही मंडली कैसे आरंभ हुआ इसका पहला व्यक्ति तो मैं ही हूं और उसका दिन तारिख सब मेरे डाईरी में है ।

अब संस्कार का समय नजदीक होते जा रहा है, ईधर नया गिर्जा घर का कुछ काम वाकी ही है । जैसे ही मैं राँची से अपना वेड़िग विस्त्र ले कर घर पहुंचा वैसे ही पाद्री साहब वाकी काम जो था पूरा करने का भार मुझ को दिये । मैं वहुत जल्दी पुरा करने का प्रयास किया । संस्कार का समय पहुंच गया, इधर मंडली के भाई-वहन अपनी तैयारी कर चुके हैं । २२ मई संध्या ठीक ६.४५ के लगभग राँची से बुलाये गये चिप गेष्ट रेभ डाक्टर सी. के. पी. सिंह की गाड़ी खुटंगांव पहुंच गई । उनके स्वागत के लिये खुटगांव के सभी भाई वहन और साथ में सि. एन. आई और आर. सी. मडली के भाई और वहन वाजा, गाजा के साथ निकल पड़े । उन मेहमान के साथ और भी बुलाए गये मेहमान लोग थे, सभों का हार्दिक स्वागत किया गया ।

दूसरे दिन २३-५-८६ सुवह ७-३० को गिर्जा घर संस्कार आरंभ हो गई। भीड़ के भीड़ पुरोहितों के पीछे लाईन लग गये और गिर्जा घर के चारों ओर एक बार घूम गये और रेभ डक्टर सिंह के द्वारा भजन सं. ११०: को उच्चारण करते हुए गिर्जा घर का संस्कार कर दिए । गिर्जा घर संस्कार के तुरन्त वाद सक्रामेन्टों का आरम्भ हुआ ।

पहले वेदी का सक्रामेन्ट, साथ ही साथ बपतिस्मा का सक्रामेन्ट आरंभ हो गया । उस दिन डाक्टर सिंह के द्वारा खुटगाँव से १२ भाई और वहनों का वपतिस्मा हुआ । इसके तुरन्त वाद मेरी वारी आई । अब सुनिये खुटगाँव का इतिहास—

आज से लगभग पांच पिढ़ी वीत चुकी पुरखों के कहे अनुसार "कुटी मुण्डा" नामक एक व्यक्ति सर्वप्रथम इस गाँव में वास किया था, जिसके नाम पर इस गांव का नाम खुटगांव पड़ा । उसके सात पुत्र और एक पुत्री थी इनके संतान भी हुए, परन्तु जमीनदारी और वैठ बेगारी प्रथा होने के कारण वहुत लोग अपना गांव छोड़कर भाग गये । अंत में उनके ८ परिवार गांव में बचे रहे जिनकी पाहान, पुजारी के नाम पर गांव में जानते है । इन्हीं परिवारों के सन्तानों को प्रभु यीशु अपने राज्य के लिये बुलाया और चुन लिया । इन्हीं छोटे झुण्ड को लेकर खुटगांव मसीही मंडली वनी ।

खुटगांव मसीही मंडली का प्रथम मसीही भाई खूस्त जयवन्त किशोर कन्डुलना है, जो हाल ही में 'कन्डीदत' पद पर घोषित किया गया है, जिनका नया जन्म पहला जनवरी १९७९ में खूस्त गिर्जा कारीमटी में वपतिस्मा के द्वारा हुआ जो स्वयं गवाही देता है । मेरा वपतिस्मा के पूर्व मैं सांसारिक सोच चिंता में डुवा हुआ था । एक दिन मेरे स्कूल साथी खूस्त किशोर वार्ला मुझे ऐसी परिस्थिति में समझाया और उसी के अगुवाई पर सर्वप्रथम गिर्जा जाना सरूड़ा मंडली में

Gossner Mission

मई १९७८ में हुआ। यह दिन पेन्तिकोष्ट पर्व का दूसरा एतवार था। जिस दिन मंडली के कितने भाई-बहन दृढ़ापन लेकर मंडली के सामने अपनी गवाही पेश कर रहे थे, उसी समय वे सब अपने सफेद कपड़ा पहने एक गाना गाये—कैसे बदला मु में २ जब मैं यीशु के पास गया (२) यह गीत और दृश्य देखकर मेरा हृदय परिवर्तन हो गया। सचमुच में यह गीत मेरे लिये ही गाया गया जैसे लगा। मैं सांसारिक जीवन और मसीही जीवन को लेकर तुलना करने लगा। अंत में मसीह का आत्मा विजयी हुआ। में अब सामने कारीमटी गिर्जा जाना आरम्भ कर दिया। इसी बीच सर्वप्रथम साक्षी (सुसमाचार प्रचार) के रूप में अक्टोवर माह १९७८ को प्रचारक यु. कोनगारी के अगुवाई पर कारीमटी मंडली के भाई बहन मिलकर खुटगांव पहुँचे। मेरे बपतिस्मा के बाद फिर से द्वितीय साक्षी फरवरी माह १९७८ को खुटगांव में हुआ उसी प्रकार तीसरी साक्षी-दार रूप में २७ जनवरी १९८० को हुआ। इस बार गांव के एक मुख्य भाई श्री बहिरा मांगा द्वारा अपने एक गोहार घर को गिर्जा उपासना के लिए दे दिए, और बोले कि मैं हृदय से इस घर को प्रभु की सेवा के लिये सौंप दे रहा हूँ आप लोग जब तक यहां गिर्जा घर नहीं वनाते गिर्जा करते रहें।

अब खुटगांव मंडली का आरम्भ इस प्रकार हुआ। ३ फरवरी १९८० रविवार के दिन प्रचारक यु. कोनगारी के अगुवाई पर उस दिन '८' भाईयों को लेकर गिर्जा आरंभ हुई। उन भाईयों का नाम इस प्रकार है—

(१) खृस्त जयवन्त किशोर कन्डुलना
(२) सोमा उरांव अव (खृस्त जोसेफ तिर्की)
(३) भादो मुण्डा ,, ,, याकूब कन्डुलना
(४) फागु मुण्डा ,, ,, मरकुस ,,
(५) गोईन्दा उरांव ,, ,, जयमसी एक्का
(६) सामलाल मुण्डा
(७) बुधूआ मुण्डा
(८) चारो उरांव। ये आठ व्यक्तियों में से ३ भाई अभी तक प्रभु को ग्रहण नहीं किये हैं। इनके बाद और भी भाई-बहन गिर्जा आने लगे। यह देखकर इलाका चेयर मेन रेभ. एस. के. जोजो उनके बपतिस्मा के लिये रेभ. डॉक्टर सिंह को खुटगाँव बुलाये। १५ जून १९८० को डॉक्टर सिंह खुटगांव पहुँचे और १६ जून को ३९ व्यक्तियों को बपतिस्मा दिये। उसी प्रकार १९८१ को फिर प्रमुख अध्यक्ष रेभ. पी. डी. सोरेंग खुटगांव पहुँचे और उनके द्वारा ३२ लोगों का बपतिस्मा हुआ।

शैतान की ओर से भारी परीक्षा :—अब खुट-गांव में इस प्रकार दल के दल मसीही होना देख कर मसीहियों में भारी परीक्षा होने लगी। पुलिस आकर बहुतों को धमकाने लगे। मुझे क्योंकि पहला मसीही होने के कारण पुलिस थाना पकड़ कर ले गये। मुझे थाना बाबु के सामने विश्वास को दृढ़ करना पड़ा यह भी मेरे लिये भारी परीक्षा थी लेकिन प्रभु मेरा साथ नहीं छोड़े। नये मसीही भाई-बहनों के उपर भी परीक्षा होने लगी, बहुतों को घर से निकाल दिए, बहुतों को शारीरिक रोग बीमार पकड़ने लगा। इस प्रकार परीक्षा में बहुत मसीही भाई-बहन पीछे की ओर लौट गये। जितने बचे उनके द्वारा प्रभु बड़े-बड़े काम दिख-लाये। जैसे ७ वर्ष से पड़े पगली स्त्री को प्रार्थना के द्वारा चंगा होना। दूसरा पांच वर्ष से पड़े टी. बी. बीमारी लोगों को चंगा करना जो कि अब मसीह को ग्रहण करके गवाही देता है। इस प्रकार अनेक गवाहियाँ हैं।

इलाका सभा की दया :—खुटगांव मंडली में इस प्रकार मसीही होने को देखकर इलाका सभा कारीमटी ने महान दया की और खुटगांव में एक नया गिर्जा घर बनाने का फैसला की। और इलाका चेयरमेन के अगुवाई पर २४-३-८१ को ईटा बनाना शुरू हो गया और १५-५-८४ को नेव डाला गया। लेकिन इस बीच इलाका चेयरमेन

Gossner Mission

को बदली हो गई। १४-१०-८४ में खुटगांव से बिदाई हो गई जिस्ते सभी नये बच्चों का हृदय टुट गया। लेकिन २१-४-८५ को इलाका चेयरमेन रेभ. के. टे. टे. कार्य भार संभाले और तुरंत इस नये मंडली की ध्यान दिए और १६-६-८५ को खुटगांव के लिए प्रोग्राम बनाये। इलाका चेयरमेन के सिफारिश पर २-७-८५ को मुझे सेमिनरी रांची को भेजा गया ८-५-८६ से उन्होंने खुटगांव गिर्जाघर को फिर से आरंभ कर दिये और इस प्रकार से खुटगांव नया गिर्जा घर का काम २१.५-८६ को पूरा हो गया।

इस नये मंडली का "मरदूमसुमारी १६८४ से शुरू हुआ। इसके अनुसार १६८४ से ८६ तक घर संख्या १७ थे और मसीही संख्या ८ थे। अब १६८६ में घर संख्या १५ है और मसीही संख्या ५० है। इस प्रकार प्रभु की यह छोटा झुण्ड मंडली के आगे की ओर बढ़ते चले जा रहे हैं।

संस्कार का कार्यक्रम पहली बेला शेष हो गया। दूसरी बेला सामने के एक टोला में साक्षी का काम हुआ, जहां डॉक्टर सिंह को प्रभावशाली निजी गवाही को सुनकर लोग आचंकित होने लगे थे। तीसरा दिन २४-५-८६ को युवा सम्मेलन सुबह ७.३० से मिस पुस्पा जोजो के अगुवाई पर उपासना आरंभ हुई और सभापति श्रीमान एन. हेमरोम पुरनापानी के सभापतित्व में रेभ. डॉक्टर सिंह लुक ४:१८ पर प्रकाशन डाले जहाँ पांचसुत्री कार्यक्रम पर जोर दिए। उसी प्रकार यशायाह ४३:१ द्वारा रेभ. एस. के. जोजो ओ० अंचल अध्यक्ष प्रकाशन डाले जहाँ लोगो को नये इस्राएली की ओर आकर्षित किए। उसी प्रकार यूहन्ना १०:१६ के आधार पर रेभ. ए. एस. हेमरोम द्वारा भाषण दिए जहाँ परमेश्वर के और भी भेड़ी हैं उनको जो अभी तक पअमेश्वर के भेड़शाला में नहीं आए हैं लाना होगा। इस प्रकार से उस दिन का कार्यक्रम खत्म हो गया। पाद्री के. टेटे इलाका चेयरमेन यही पर प्रार्थना के साथ अंत कर दिए।

"गुलामी"

आज के संदर्भ में
अगर मानव पर
दृष्टिपात्
किया जाए,
तो,
निष्कर्ष यही निकलता है
कि,
मानव, पहले से कहीं
अधिक गुलाम है।
पहले वह पराधीन था,
आज वह स्वतंत्र है,
स्वाधीन है,
पर भी वह गुलाम है,
अपनी इच्छाओं का/कुत्सित विचारों।
इस गुलामी के जीवन को
उसने स्वीकार लिया है,
और खुश भी है।
शायद/गुलामी की इस जंजीर को
तोड़ना ही नहीं चाहता है,
या, यों कहें,
उसमें अपनी इच्छाओं/विचारों से
लड़ने की ताकत ही नहीं बची हैं,
तभी तो उसने,
खुद को
इच्छाओं का गुलाम बना रखा है।
अतीत से वर्त्तमान तक
मानव गुलाम ही रहा है।
बस! / गुलामी की परिभाषा बदल गई है।
फिर भी,
गुलामी, गुलामी ही होती है।

'नितिन'
अनुपम तोपनो

Gossner Mission

आया हुआ धन नहीं रहता है

शेत हेनरी, जमशेदपुर

मिल्टन के माता-पिता देहात में रहते थे। कथोलिक धर्म के मानने वाले थे मिल्टन की इच्छा थी कि वह खूब पढ़े-लिखे। लेकिन उसके पास साधन नहीं था। उसके माता-पिता बहुत गरीब थे। एक दिन उसकी मुलाकत एक लड़के से हुई जिसने उसे बताया कि यदि वह सुपौल स्थित प्रोटेसटेंट मिशन में जाय तो उसे पढ़ने-लिखने का पूरा मौका मिल जायगा। उसने उसे बताया कि वहां एक अमेरिकन साहब हैं जो बहुत दयालु हैं। मिशन का स्कूल, दवाखाना सब है, रेलवे स्टेशन पास ही में है। बोर्डिग में रहने, खाने-पीने का मुफ्त प्रबन्ध है, योग्य शिक्षक भी हैं। इन सब बातों को सुनने के पश्चात मिल्टन नित्य घर से भागने की योजना बनाने लगा। एक दिन उसे मौका मिला और वह भाग निकला, माता-पिता ने उसको खोज नहीं की।

उसके गांव से सुपौल की दूरी बीस मील के लगभग थी। उसने पैदल चलकर यह दूरी तय की। शाम के लगभग पांच बजे वह मिशन पहूंचा। वह सीधा अमेरिकन साहब के कोठी पर गया। इत्तफाक से साहब उस दिन बरामदा पर टहल रहे थे। लड़के को देखकर रूक गये। लड़के ने रोते हुए कहा-"साहब जी मैं बहुत गरीब हूं, कोशी नदी के बाढ़ में सब कुछ वह गया है माता-पिता का पता नहीं है" यह सब बातें उसने झूठ ही कहा; लेकिन साहब को उसकी बात पर विश्वास आ गया। उन्होंने उसके रहने, खाने-पीने का प्रबन्ध बोर्डिग में कर दिया। मिल्टन स्कूल भी पढ़ने लगा। उसने खूब मेहनत की तथा सातवीं कक्षा पास कर ली। साहब ने उसे हाई-स्कूल पढ़ने मध्य प्रदेश भेज दिया। वहां वह कृश्चन बोर्डिग में रहता था। कालान्तर में उसने वहां दसवीं कक्षा पास की। इसके पश्चात लिखने-पढ़ने से उसका जी उचट गया, वह जवान हो गया था। वह साहब को उनके कामों में मदद करने लगा।

उस मिशन का एक दूसरे स्थान में लड़कियों का बोर्डिग था, जिसमें अधिकतर अनाथ लड़कियां रहती थीं। उनमें से एक लड़की का नाम जयवन्ती था, जिसकी शादी जमालपुर रेलवे वर्क शॉप में काम करने वाले एक बंगाली कृश्चन युवक से हुई थी। अचानक एक दिन बंगाली युवक की मृत्यु हो गई। जयवन्ती फिर बोर्डिग वापस आ गई। उसे अपने पति के दस हजार रूपये मिले।

मिल्टन को एक दिन इस बात का पता मिला। उसने सोचा की यदि वह इस लड़की से ब्याह कर लेता है तो वह दस हजार रूपयों का मालिक बन जायगा। उसने शादी का प्रस्ताव रखा, उसे मंजूरी मिल गई। वह दस हजार रूपयों का मालिक बन गया इन रूपयों से उसने देहात में बीस बीघा जमीन खरीदा। वह खेती करने लगा। खूब उपज हुई और उसके पास बहुत रूपये हो गये। एक दो बार उसने गेहूं के बोरे दान स्वरूप लड़कों के बोर्डिग में भी दिये। कालान्तर में वह तीन बच्चों का बाप बन गया।

धन बढ़ने से कोई २ व्यक्ति धर्म भी भूल जाता है मिल्टन एक अन्य जाति स्त्री के प्रेम-जाल में फँसकर रूपया पानी की तरह बहाने लगा। अन्त में वह गरीब हो गया। रुपयों के लिए उसने जमीन बेचना शुरू किया, बेचते-बेचते उसके पास सिर्फ ६ बीघा जमीन बचे।

उस गांव में एक दिन लफंगा कृश्चन लड़का आया। वह बात बनाने में माहिर था। उसने मिल्टन को सलाह दिया कि वह जमीन बेच दे

Gossner Mission

तथा उन रूपयों से एक आँटा मशीन खरीद ले। उसने उसे भरोसा दिलाया कि आँटा-चक्की का काम वह पूरी रीति से जानता है। मिल्टन ने सोचा कि जमीन में बहुत झंझट है, फसल भी चोर रात में काट लेते हैं, अत: वह लड़के की बात में आ गया। उन दिनों आँटा पीसने की मशीन तीन हजार रूपये में मिलती थी। मिल्टन ने जमीन साढ़े तीन हजार में बेच दी। शाम के वक्त उसे रूपये मिले, वह इतने रूपये घर में रखने से डर गया। उसने सोचा कि सब रूपये चर्च के पास्टर के पास रख दे फिर उसे स्मरण आया कि वह चर्च का ७५ रूपया धरता है, उसने सोचा कहीं पास्टर बाबू उसके रूपयों में से ७५ रूपये काट न लें। इसलिए उसने रूपयों को एक अन्य जाति मित्र को बिना सबूत रखने दिया।

रात में जब उसकी नींद टूटी तो तरह २ के विचार उसके दिमाग में उठने लगे। उसने सोचा कि यदि वह अन्य जाति मित्र कह दे कि उसने उसे रूपये नहीं दिये हैं तो वह क्या करेगा। उसने क्यों नहीं दो आदमियों को गवाह रख दिया, देर तक वह यही सोचता रहा, उसे नींद नहीं आई। प्रातःकाल होते ही वह मित्र के यहां गया और रूपया मांगे। उसके अन्य जाति मित्र ने कहा "आपने तो मुझे कोई रूपया रखने नहीं दिया है आप क्या कह रहे हैं मेरी समझ में नहीं आता है?" मिल्टन का सिर चकराने लगा। वह वहीं गिर पड़ा, लोगों ने उसे उठा-कर घर पहुंचा दिया। जब उसे होश आया तो वह सभों के पास जाकर रूपयों के बारे में कहने लगा, लेकिन किसी ने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। उसकी पत्नी भी रूपयों के बारे रो-रोकर अपने जात भाइयों से कहने लगी। लेकिन किसी ने उनपर सहानुभूति नहीं दिखाई, उल्टे लोग उनका मजाक उड़ाने लगे। एक ने कहा—कहावत यहां ठीक ही बैठती है—"बुड़-बक के धन गंवार खाय"। दूसरे व्यक्ति ने कहा नीतिवचन में सुलेमान राजा ने ठीक ही लिखा है—"आया हुआ धन नहीं रहता है"। यह मिल्टन की निज की कमाई नहीं थी, इसलिए डूब गई। इसके अलावे उसे अपने जात भाइयों के उपर भी भरोसा नहीं था, जिससे उसकी यह गति हुई।

स्वर्ग प्रस्थान

बुजुर्ग Rtd. Pracharak Philip Toppo Govt. Hospital, BURLA में तिथि १३-५-८९ को तीन बजे सुबह अनन्त-विश्राम के लिये प्रभु में सो गये। इनको उम्र ७० वर्ष हो चुकी थी।

थोड़ा परिचय :- प्रचारक Phjlip Toppo, Jsg.- Ilaka, Sambalpur Parish के Paharsirgira नामक गांव के (मण्डली) थे। ये झारसुगड़ा इलाका के प्रथम-प्रचारकों में से दूसरा Batch में सेवा करने वालों में से एक थे। सेवकाई के अर्थ में भी दूसरा न० में आने वाले थे। ये सुन्दर सलाहकारी एवम् भाई-बहनों के साथ अच्छा संबंधी रहें। किसी भी विषय को सोच-बुझकर बात-चीत किया करते थे। प्रभु के किसी भी काम को करने या करवाने पर आगे ही रहते थे। पीछे नहीं। टालते नहीं थे। जो उनसे संभव था। **फिर एक विशेष गुण** — आवकाश धारी प्रचारक होते हुए भी मण्ड-लियों में समय पर Visit करना, मीटिंग सम्मेलन आदि स्थानों पर होना - उनका रोटिन ही था। वे बोलते थे - "प्रभु की सेवकाई-कार्य में मुझे बड़ी खुशी एवम् शान्ति मिलती है।" कभी-कभी टकराव होने पर भी तुरन्त, बाद ही एक हो जाते थे। स्मरण करें — बहुत-बहुत सुसमाचारक अपना सुसमा-चारकपन का स्वभाव को समाप्त कर देते हैं जब कि वे अवकाश धारी प्रचारक हो जाते हैं। ये एक पेनसन पाने वाले प्रचारक थे। ये इस जगत में एक बेटे तथा बहु एवम् नाती पोतों को छोड़ गये। सो प्रिय पाठको शोकित परिवारों को प्रार्थना में याद करें।

Revd. S. S. Kandulna, SBP. Parish Sambalpur.

Gossner Mission

एक साक्षी

एन० कुल्लु

(गतांक से आगे)

लगभग चौदह प्रकार के लोग भिन्न जाति, भाषा तथा देश से आये हुए थे। उनकी सांस्कृति, परम्परा और स्वभाव भिन्न भिन्न था। परन्तु उन्होंने इस बात की साक्षी दी कलीशा में सब लोगों के लिए जगह है। लूक साफ साफ कहता है भिन्न भिन्न जाति और देश के होते हुए भी वे प्रभु में एक हो गये। प्रभु में एक हो जाने से मसीही संगति आपस में बढ़ती गयी और उन्होंने एक नयी एकता का अनुभव किया। उनके एक मन और एक स्वाभाव के होने से कलीशा प्रौढ़ होने लगी। परमेश्वर की कलीशा में परमेश्वर की इच्छा पूरी को जाती थी। कलीशा का अंग बनान का अधिकार उनका था जो यीशु का नाम लेते थे। मनुष्य का मुंह, बुद्धि, रंग, जाति, धन इत्यादि प्रभु और मसीहियों की संगति का आधार नहीं था।

नये नियम में कलीशा का और एक सुन्दर तस्वीर प्रकाशित वाक्य के सातवें अध्याय में दिया गया है। स्वर्ग की कलीशा की विशेषता पृथ्वी की कलीशा से भिन्न है। स्वर्ग की कलीशा तो पूर्ण है। उसमें पापी और मूखों का बास नहीं है। पाप और बुराई स्वर्ग की कलीशा को नहीं छू सकते हैं। स्वर्ग की कलीशा तो वैसा ही बनायी गयी जैसा यीशु अपनो मृत्यु और पुनरूत्थान से बनाना चाहता था। अभी ईश्वर की इच्छा के समान स्वर्ग की कलीशा में भिन्न भिन्न भाषा और कुल के लोग हैं। वह विजयी कलीशा है जिसके अंगों को परमेश्वर के अनुग्रह के सुमसाचार ने जीत लिया है। उनका वस्त्र मेमने के लोहू से धोया गया और वे अनन्त संगति के लिए बुलाये गये हैं।

कलीशा ने आरम्भ में जातीय भेद भाव नहीं रखा। हम स्वर्ग की कलीशा में भी जातीय भेद नहीं पाते हैं। मसीह की जीवती कलीशा के लिए बड़ी और उत्तम बात है कि वह जातीय भेद में न जीवे। कलीशा में जहाँ कहीं भी जातीय भेद है लोग व्यवस्था और कानून के द्वारा बहुत लोगों को खृस्त की जीवती संगति से निकाल देते हैं। ऐसा करना ईश्वर की दृष्टि में महा-पाप है। क्योंकि ईश्वर की कलीशा का अंग होने के निमित जाति, बुद्धि अथवा वर्ण आधार नहीं है। जितने लोग खृस्त का नाम लेते हैं वे ईश्वर के अनुग्रह से कलीशा का अंग होते है।

हमारी गोस्सनर कलीशा भी वचन के उपदेश और साक्रामेन्त के अनुष्ठान के द्वारा हिन्दुस्तान में ईश्वर की ज्योति बनायी गयी। कलीशा के प्रारम्भिक दिनों में जातीय भेद नहीं था। राँची माता मण्डली सभी जातियों को शांति देती थी। सब जातियों के लिए गोस्सनर कलीशा निजी घर था। लोगों ने एक ही बपतिस्मा लिया और एक ही कटोरा से पोया। उनके हृदय की सच्चाई शब्दों में इस प्रकार प्रकट हुआ -

"क्या मनोहर भलो बात—जहाँ भाई हाथे हाथ
चलते हैं और हैं एक प्रण-खृस्त की आज्ञा के समान
एक हो दूसरे के अधीन-हो चल रहित कपट हीन
मन्दा मृदु और सदय-क्षमावान और धीरजमय"

कलीशा के भाई और बहनों ने सचमुच में आत्मा और सच्चाई से इसी गीत के द्वारा ईश्वर की महिमा की। परन्तु ज्यों ज्यों समय व्यातीत हुआ जातीय भेद की बृद्धि हुई। व्यवस्था और कानूनों का निर्माण हुआ और अनेक लोगों को हमने ईश्वर के घर से निकाला और सन्तों की संगति से अलग कर दिया। हम अब खृस्त प्यारा नहीं रहे परन्तु जाति प्यारा हो गये हैं। कलीशा के पुरोहित, अगुवे, पंच इत्यादि कलीशा में जातीय झंडा फहराने के लिये तुले हुए हैं।

Gossner Mission

अन्तिखृस्त और उसका राज्य।

(क) २ थिस्सलोनी २, १-१२;

इस पाट में हम अन्तिखृष्ट के विषय ४ बातें सोखते हैं, अर्थात:—

(१) अन्तिखृष्ट का नाम।
(२) अन्तिखृष्ट का काम।
(३) अन्तिखृष्ट के आने का समय।
(४) अन्तिखृष्ट का वड़ा विरोधी।

पौलुस प्रेरित अन्तिखृष्ट को "पाप पुरुष, विनाश का पुत्र, अधर्म्मी कहता है। ये तीनों नाम अन्तिखृष्ट के विषय बहुत कुछ कहते हैं। एक २ नाम को थोड़ा २ सोचा! जैसा नाम तैसा काम। वह परमेश्वर के बिरोध करता है, हां, वह आप अपने को परमेश्वर करके दिखाता है। अन्तिखृष्ट का स्वामी कौन है? वही है, जिसने अपने आप को परमेश्वर के तुल्य करना चाहा, हां जिसने अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागणों से भी अधिक ऊंचा करना चाहा और मेघों से भी ऊंचे २ स्थानों के ऊपर चढ़कर परम प्रधान के तुल्य होना चाहा (यशायाह १४,१३-१४; यहेजकेल २८,१७) वही है, जिसने हवा से कहा कि फल को खाओ! तुम परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे। उत्पत्ति ३, ५;) अन्तिखृष्ट का स्वामी और चलानेहारा शैतान है। शैतान झूठ का पिता है (यूहन्ना ८, ४-४४-४५;) शैतान का पुत्र वही अन्तिखृष्ट है। अन्तिखृष्ट कब आवेगा? साल, महीना और तारिख हम नहीं सुनते हैं। पौलुस प्रेरित कहता है कि यीशु राजा के फिर आने के पहिले अन्तिखृष्ट प्रगट होगा। जब तक वह न आया हो, हमारा प्रभु न आवेगा। यीशु राजा के आने से, प्रकाश से अन्तिखृष्ट का बिनास किया जायगा। हमारा सामर्थी जयवन्त प्रभु यीशु अन्तिखृष्ट का बड़ा विरोधी है।

(ख) प्रकाशित वाक्य १३वां अध्याय।

वही अध्याय हमको अन्तिखृष्ट के विषय और बताता है, जिसको हमें जानना उचित है। हम एक २ पद को देखें।

पद १—समुद्र में से एक पशु। समुद्र का माने है पृथ्वी के जाति २ के लोग (देखो प्रकाशित वाक्य १७, १५;) पशु का माने है अन्तिखृष्ट। जाति जाति के लोगों में से अन्तिखृष्ट निकलेगा। ईश्वर का पुत्र यीशु परमेश्वर के पास से आया। शैतान का पुत्र अन्तिखृष्ट मनुष्यों में से आवेगा। प्रकाशित वाक्य ११,७; कहता है कि वह "अथाह कुण्ड" में से निकलेगा, अर्थात छोटे दरिद्र मनुष्यों के बीच उसका जन्म होगा, पर होते होते शैतान की सहायता से वह बड़ा आदमी बन जायगा। एक तुच्छ मनुष्य उठेगा जिसकी राज्य प्रतिष्ठा पहिले तो न होगी, वह चिकनी चुपड़ी बातों के द्वारा राज्य अधिकार पाकर राज्य करेगा। दानिएल ११,२१;) उसके दस राज्य मुकुट होंगे, अर्थात उसका एक बड़ा राज्य, बड़े राज्य अधिकार के साथ होगा। (सिरों, और सींगों, का अर्थ देखो प्रका० १७, ९-१३)।

पद २—"चीता का सा" इसका माने है कि अन्तिखृष्ट बड़ी क्रूरता से राज्य करेगा, "भालू के से" इसका माने है अन्तिखृष्ट सभों को जो उसके बराबर न सोचेंगे उनको वह सामर्थ के साथ दबाएगा। "सिंह का सा" का माने है कि जैसे सिंह गरजने से लोगों को डराता है वैसे अन्तिखृष्ट की बातों से विशेष कर के खिस्तानी मण्डलियों में घबराहट आवेगी, क्योंकि उसके मुंह से निन्दा की बातें निकलेंगी। "अजगर" अर्थात शैतान

Gossner Mission

अपने पुत्र अन्तिखृष्ट को शैतानी सामर्थ और शैतानी अधिकार देगा।

पद ३—अन्तिखृष्ट का एक प्राणहारक घाव होगा। वह मरने पर होगा, पर शैतानी शक्ति से वह फिर चंगा हो जायगा। अन्तिखृष्ट हमारे प्रभु की नकल करना चाहता है। पर इसलिए कि शैतान का मृत्यु पर न तो अधिकार न जय है उसका पुत्र अन्तिखृष्ट केवल मरने पर होगा; अगर वह अन्तिखृष्ट मर ही जाता, तो वह शैतानी शक्ति से मृत्यु पर जय नहीं पा सकता है।

पद ४—अन्तिखृष्ट और भरमानेवाले, झूठे नवियां शैतानी कार्यों को करेंगे, अर्थात झूठी शैतानी शक्ति से नाना प्रकार के अद्भुत चिन्ह और काम किए जाएंगे (२ थिस्सलोनी २, ९ और मत्ती २४, २) यीशु के लोग सुनें, जो वह कहता है। कि सचेत रहो, जागते रहो! देखो मैंने पहिले से तुम से यह कह दिया है। (मत्ती २४,-२५) अब पृथ्वी के लोग न यीशु की बड़ाई करेंगे, वे भरमानेवालों की सुनेंगे, अन्तिखृष्ट को(न प्रभु-यीशु की) पूजा करेंगे।

पद ५—अन्तिखृष्ट को साढ़े तीन साल तक काम करने को समय दिया जाता है। इससे अधिक नहीं। प्रभु यीशु ने साढ़े तीन सालों तक काम किया—अन्तिखृष्ट का समय वैसा ही है। इससे खीस्तानी मण्डली के लिए एक विशेष बात निकल आती है, अर्थात कि जब खिस्तान लोग पवित्रात्मा के द्वारा सिखाये जाकर पहिचानेंगे कि फलाना आदमी अन्तिखृष्ट है तब खिस्तानी मण्डली एक बात निश्चयता से जानेगी अर्थात अन्तिखृष्ट का राज्य साढ़े तीन साल ठहरेगा। उसके बाद यीशु के आने का दिन पहुंच हो जायगा। यहां निश्चयता एक बड़ी शांति की बात है, क्योंकि खिस्तानी मण्डली के लिए ये साढ़े तीन साल भारी सताहट का समय होगा।

पद ७—अन्तिखृष्ट का बल बड़ा है। वह खिस्तानी मण्डली का सत्यनाश करना चाहता है। पर ईश्वर अपने लोगों को छिपाना जानता है; (प्रका० १२:६-१४) निश्चय ये साढ़े तीन साल के भीतर यीशु की मण्डली को दुःख और क्लेश सहना होगा (प्रका० २:१०) मूल बात है कि हम यीशु को कभी न नकारें, कि हम प्राण देने तक विश्वासी रहें। प्रभु परमेश्वर इस भारी दुःख के समय के पहले अपने लोगों पर छाप करता है। (प्रका० ७:३) उसका माने है कि ईश्वर की पवित्र, उत्तम और करूणामय इच्छा यह है कि वह अपने लोगों को दुःख के समय में निश्चय पार कराएगा।

पद ८—कौन कौन अन्तिखृष्ट की पूजा करेंगे? सब, जो हमारे प्रभु के सामने अपने घुटनों को नहीं चाहते हैं, जो हमारे प्रभु का बहाया हुआ लोहू तुच्छ जानकर अपने अपने पापों में लगे रहेंगे। उनका नाम जीवन की पुस्तक में लिखा न जायगा। हाय! हाय ऐसों की अधन्य मृत्यु होगी, ऐसे लोग परमेश्वर के पवित्र नगर में कभी निवास करने न पाएंगे (देखो प्रका० २०:१५,-२१:२७)।

पद ९—एक बड़ी और गम्भीर चितौनी है। क्योंकि ध्यान के साथ न सुनने से हमारा बिनाश होगा।

पद १०—यह पद खिस्तानी मण्डली के लोगों को बताता है कि वे सताहट के समय में कैसे व्यवहार करें। अर्थात पवित्र लोगों का धीरज और विश्वास इसमें है कि वे, जब प्रभु के नाम के कारण पकड़े जाएंगे, वा कैद में डाले जाएंगे, वा तलवार से मार डाले जाएंगे। तब वे सताने-हारों के विरुध न करें क्योंकि हमारा प्रभु आप उनका विरुध और सत्यनाश करना चाहता है और करता ही है।

Gossner Mission

पद ११—"एक और पशु" यह क्या है? उसके बदले प्रका० के अनेक अध्यायों में "झुठा-नबी" लिखा गया है। यह कौन है? हमारा प्रभु यीशु पवित्रात्मा का भेजनेवाला है पवित्रात्मा हम को प्रभु यीशु के पास पहुंचाता है, वह हमको पवित्र वचन के द्वारा बुलाता है, वह ख्रिस्तानी मण्डली को बुलाता, बटोरता प्रकाशमय और पवित्र करता है; और वह हमको यीशु ख्रीष्ट में एक ही सच विश्वास के द्वारा स्थिर करता है। पर "झूठा नबी" शैतानी आत्मा है जो शैतान दुनिया में भेज देता है। शैतानी आत्मा के द्वारा मनुष्य लोग (जो उसको अपने मन में काम करने देते हैं) प्रभु यीशु के पास से दूर किये जाते हैं। अपवित्रात्मा भरमानेवाला आत्मा है जो मनुष्यों को नहीं बटोरता परन्तु बिथराता है। अपवित्रात्मा मनुष्यों के मनों को अन्धकार कर देता है। मनुष्य के मन उसके द्वारा पापी ही पापी बन जाएंगे। अपवित्रात्मा मनुष्यों के मनों को अत्यन्त चंचल और अधीर करता है; वह मनुष्यों को मिथ्य विश्वास और झूठे विश्वास में गिराता है। प्रभु यीशु शैतान के विषय कहता है (यूहन्ना ८:४४) कि जब शैतान झूठ बोलता है तो अपने स्वभाव ही से बोलता है, क्योंकि शैतान सत्य में स्थिर न रहा। जो शैतान की ओर से निकल कर जगत में झूठ के पिता से भेजा जाता है—वह शैतानी अपवित्रात्मा है, वही शैतान के समान झूठ ही झूठ बोलेगा और सिखाएगा। इसलिए उसका नाम भी है "झूठा नबी"।

पद १२—शैतान कैसा प्रभु यीशु को नकल करना चाहता है? हमारा प्रभु यीशु पवित्रात्मा को भेजा, जिस्ते वह हमको यीशु की बातों को याद दिलावे, उनको सिखावे और हमको परमेश्वर का सच्चा भजन करावे (यूहन्ना ४:२३-२४, यूहन्ना १४:२५-२६)। शैतान अपना शैतानी झूठा अपवित्रात्मा भेजता है जिस्तें मनुष्य अन्ति-खृष्ट की पूजा करें।

पद १३—पवित्र आत्मा के सामर्थ से चेलों ने (जैसा पौलुस प्रेरित) कितने अद्भूत काम करते थे। अन्तिखृष्ट के समय में अपवित्र शैतानी आत्मा की झूठी सामर्थ से बड़े चिन्ह दिखाये जायेंगे। प्रभु यीशु कहता है कि सचेत रहो! जागते रहो! भरमानेहारों की बातों की प्रतीति न करना।
(पढ़ो मत्ती २४:२३-२५)।

पद १४—अपवित्र शैतानी आत्मा लोगों को यह कहता है कि वे अन्तिखृष्ट का एक मूरत बनावें। वह मनुष्यों को विश्वास कराता है कि अन्तिखृष्ट ही ईश्वर है! (२ थिस्सलोनी २:४)।

पद १५—तब अपवित्र आत्मा अपनी ठगाई को पूरी करके उस मूरत को जीवित सा बनाता है। (२ थिस्सलोनी २:११-१२) प्रभु यीशु अंधों को दृष्टि दिया करता है, पर अन्तिखृष्ट लोगों की आत्मिक आंखों को बिलकुल अंधी कर देता है। हाय! हाय! उन मनुष्यों पर, जिन पर यह शैतानी अंधापन पड़ता है।

पद १६—अब शैतान अन्तिखृष्ट के द्वारा एक और बात नकल करता है अर्थात अन्तिखृष्ट के दलवालों पर छाप कराता है। प्रभु यीशु अपने चुने हुए और पवित्र किए हुए लोगों पर एक छाप करता है (प्रका० ७:३) शैतान इस बात को भी नकल करता है। जिनपर प्रभु यीशु का छाप दिया गया, वे भारी और अन्तिम समय को पार कर सकते हैं और अनन्त जीवन के लिए बचाये जाते हैं, वे स्वर्गीय यिरुशलीम में जय जय-कार के साथ प्रवेश करेंगे, क्योंकि उन्होंने शैतान और पाप पर जय पाया। पर जिन पर शैतान का छाप दिया गया, वे शैतान के साथ अपना भाग उस झील में पावेंगे, जो आग और गंधक से जलता है, सनातन मृत्यु, युगानुयुग उनको पीड़ा होगी (पढ़ो प्रका० १४:९-११; प्रका० १९:२०, २०:११-१५)।

Gossner Mission

पद १७-१८—इस से मालूम होता है जो अन्तिखृष्ट के दलवाले बन गये वे लेन देन कर सकते हैं। पर यीशु के लोगोंके लिए जिन्हों ने अन्तिखृष्ट का छाप ग्रहण न किये, भारी दुःख का समय होगा। पर दुःख के दिन चुने हुओं के कारण घटाये जायेंगे (मत्ती २४:२२) पद १८ के सम्बन्ध में अनेक लोगों ने कितना ही व्यर्थ हिसाब किया है। हम ऐसे व्यर्थ काम से अलग रहें। ईश्वर समय पर इस भेद को भक्तों के द्वारा खोल देगा।

कभी सवाल किया जाता है कि जब अन्तिखृष्ट राज्य करेगा तब पृथ्वी पर लड़ाई हो लड़ाई होगी अथवा पृथ्वी पर कुशल चैन होगा? इस बात का साफ उत्तर हम बैबल से नहीं पा सकते हैं। उसका राज्य बड़ा होगा। उसके राज्यधानी का नाम "बाबिल" है। इसका माने है कि अन्तिखृष्ट के राज्य में झूठ, व्यभिचार और नाना प्रकार की बुराइयां और विशेष कर के ईश्वर और यीशु के विरुद्ध बैरता बास करते हैं ईश्वर का भजन करना वहां नहीं पाया जाता है। "बाबिल" शैतानी अन्तिखृष्ट को "दुल्हिन" है। पर वह एक शुद्ध निर्दोष और पवित्र नहीं, वह "बड़ी बेश्य" है। यह शैतान की मण्डली है। (पढ़ो प्रका० २०; १७:१-६) अन्तिखृष्ट के राज्य में यीशु और उसकी मण्डली के विरुद्ध भारी सताहट होगी, यहां तक कि युहन्ना ने उस स्त्री को (शैतान की मण्डली) पवित्र लोगों के लोहू और यीशु के गवाहों के लोहू को पीती हुई मतवाली देखा! शैतान की मण्डली में भी एक कटोरा है, पर वह कटोरा दुष्टात्माओं का कटोरा है (१ कुरि० १०:१६-२२) एक कटोरा जो घिनित वस्तुओं से और व्यभिचार की अशुद्ध वस्तुओं से भरा हुआ है। शैतानी अन्तिखृष्ट की मण्डली को इस अधन्य कटोरे से पीकर सत्यनाश और मृत्यु मिलेगी।

हम थोड़ा सोचें कि शैतान इन बातों के द्वारा फिर से यीशु को नकल करना चाहता है। अर्थात यीशु की मण्डली यीशु की दुल्हिन है। वह दुल्हिन यीशु के लोहू से शुद्ध और पवित्र और सिद्ध दुल्हिन है। यीशु की मण्डली को यीशु के कटोरे में से पीने से पवित्र सामर्थ और अनन्त जीवन मिलता है। हम देखते हैं कि शैतान की लालसा अब तक है कि 'मैं परमेश्वर के तुल्य होना चाहता हूं" इसलिए वह सभी बातों में बड़े यत्न से यीशु को नकल करना चाहता है। पर यह व्यर्थ परिश्रम है। कभी परमेश्वर और योशु के तुल्य नहीं है।

" SERAMPORE COLLEGE, THEOLOGY DEPARTMENT
B. D. COURSE
NOTICE FOR ADMISSION

1. For Graduates (including Orientation Course : 3 Years 3 Months) From January, 1990
   Apply by 7th October, 1989
2. For B. Th Candidates (in Two Years) From June, 1990
   Apply by 10th March, 1990

For Application Forms, Prospectus etc please send Rs. 25. 00 to Finace Secretary, Serampore College, P. O. Serampore - 712 201, Dist. Hooghly, west Bengal. "

With kind regards,

Yours sincerely
(Dr. Ravi Tiwari) Rector

Gossner Mission

आइये विचार करें

(जोलपोलहेम तिग्गा)

जनवरी, अप्रील और मई ८८ के अंक में हमने तुलनात्मक तौर पर मसीह की देह, शैतान की देह और उनके अंगों के विषय पर विचार किया था। विचार के तहत "भाई-भाई नहीं" एक संदर्भ आया था। इस अंक में हम इसी संदर्भ पर विचार करेंगे।

जहां भाई अथवा भाइचारे का विषय आता है वहाँ प्रेम का भी वोध होता है और हमें आज्ञा दी गई है - हम एक दूसरे से प्रेम करें इतना ही नहीं शत्रुओं से भी। "तुमने सुना है कि कहा गया था, अपने पड़ोसी से प्रेम करना और अपने शत्रु से द्वेष रखना, (तुम अपने जाति भाइयों से प्रतिशोध न लेना और न उनके प्रति शत्रुता रखना वरन् अपने पड़ोसी को अपने ही समान प्रेम करना, मैं प्रभु हूं लेवी १६:१८।) किन्तु मैं तुम से कहता हूं अपने शत्रुओं से प्रेम करो और अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करो जिससे तुम अपने पिता की जो स्वर्ग में है सन्तान बन सको, क्योंकि वह दुर्जन और सज्जन दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, तथा धार्मिक और अधार्मिक दोनों पर वर्षा करता है, मत्ती ५:४३-४५; रोमि० १२:१४ इत्यादि।

प्रेम की परिभाषा बतलाते हुए पौलूस प्रेरित १ कुरि० १३:४-६ में लिखते हैं - प्रेम सहनशील है, प्रेम दयालू है, यह ईर्ष्या नहीं करता, अहंकार नहीं करता, बढ़-बढ़ कर बातें नहीं करता। प्रेम अभद्र व्यवहार नहीं करता, स्वार्थ नहीं खोजता, झुँझलाता नहीं, बुराई का लेखा नहीं रखता, अधर्म पर प्रसन्न नहीं होता वरन् सच्चाई से प्रसन्न होता है।

जब प्रेरित परिभाषा में यह बतलाते हैं कि प्रेम अधर्म से प्रसन्न नहीं होता तब वे यह बतलाना चाहते हैं कि प्रेम के कारण किसी व्यक्ति को अधर्म से नहीं पड़ना चाहिए। दूसरे शब्दों में प्रत्येक व्यक्ति से वे यह आशा रखते हैं कि वह अधर्म का विरोध करे। लोग साधारणत कहते हैं "पापी से प्रेम करो पर पाप से बैर"। मेरे विचार से पाप से बैर करने के लिए पापी से भी बैर करना होगा।

काइन और हाबिल भाई थे। फिर भी काइन द्वारा हाबिल की हत्या हुई और हम १ यूहन्ना ३:११-१२ में पाते हैं - जो सन्देश तुमने आरम्भ से सुना है वह यह है "हम एक दूसरे से प्रेम करें" और काइन के सदृश न बनें, जो शैतान से था और जिसने अपने भाई की हत्या की। उसने क्यों हत्या की ? इस कारण कि उसके कार्य दुष्टता पूर्ण थे और उसके भाई के कार्य धार्मिक थे।

यिश्माएल और इसहाक दोनों एक पिता के सौतेले भाई थे। परमेश्वर की आज्ञानुसार अब्राहम दासी एवं दासी पुत्र यिश्माएल और कटुरा एवं पुत्र जिम्रान वगैरह को उपहार देकर इसहाक से अलग किया। उसने अपना उत्तराधिकारी केवल इसहाक को ठहराया (उत्प० २५:६) धर्म-शास्त्र का लेख क्या कहता है, दासी और उसके पुत्र को निकाल दें (उसने अब्राहम से कहा इस दासी को इसके पुत्र सहित निकाल दीजिए क्योंकि दासी का पुत्र इसहाक के साथ उत्तराधिकारी नहीं बनेगा। अपने पुत्र यिश्माएल के संबंध में ऐसी बात अब्राहम को बुरी लगी। परमेश्वर ने अब्राहम से कहा **'तू बालक और दासी के कारण बुरा मत बन** जो बातें सारा तुझसे कहती है उसको सुनो, क्योंकि इसहाक से तेरा वंश चलेगा उत्प० २१:१०-१२) क्योंकि दासी पुत्र विवाहिता स्त्री के पुत्र के साथ उत्तराधिकारी नहीं होगा। गल० ४:३०। यह इसलिए हुआ कि यिश्माएल शरीर-जन्य था पर इसहाक आत्मा जन्य; जैसे उन दिनों शरीर-जन्य पुत्र आत्मा जन्य

Gossner Mission

पुत्र पर अत्याचार करता था वैसा ही आज भी हो रहा है गल० ४:२९।

जिस प्रकार अब्राहम के लिए बालक (यिश्माएल) और दासी बुरा बनने के लिए परिक्षा के कारण थे वैसा ही जब हम प्रेम के कारण बुरे लोगों के साथ या बुराई के साथ समझौता करते हैं तो बुरे बनते हैं।

प्रेरित हमें फिर सिखलाते हैं "अविश्वासियों के साथ अनमेल जुए में न जुतों। धार्मिकता का अधर्म से क्या मेल ? प्रकाश का अंधकार के साथ क्या संयोग ? मसीह का शैतान के साथ क्या सामंजस्य, विश्वासी का अविश्वासी के साथ क्या सहभाग ··· इस कारण प्रभु का कथन है:- उनके बीच से निकलो और अलग हो; अशुद्ध को स्पर्श मत करो तब मैं तुम्हें ग्रहण करुंगा (२ कुरि० ६:-१४-१७)। यदि तुम्हारा भाई तुम्हारे विरुद्ध अपराध करे तो जाओ और एकान्त में जहाँ वह और तुम हो, उसका दोष उसे समझा दो, यदि वह तुम्हारी सुन ले तो तुम्हें अपना भाई प्राप्त हो गया। यदि वह उसे न सुने तो अपने साथ एक अथवा दो व्यक्ति और ले जाओ जिससे दो या तीन गवाहों के सम्मुख प्रत्येक विषय निश्चित हो। यदि वह उनकी भी न सुने तो कलीसिया से कहो, और यदि वह कलीसिया की भी न सुने तो उसे विधर्मी और कर लेने वालों के समान समझो (भाई-भाई नहीं) मत्ती १८:१५-१७।

प्रेरित हमें यह भी सिखाते हैं कि हर एक में विश्वास नहीं, न ही पवित्रात्मा (२ थिस्स. ३:२) भ्रष्ट एवं दुष्ट मनुष्यों से हमारा पीछा छूटे, क्योंकि सभी विश्वासी नहीं। यहूदा १९ ये वे लोग हैं जो फूट डालते है, ये संसारी मनुष्य है (शरीर-जन्य हैं) जिनमें आत्मा नहीं। १ यूहन्ना ४ ५-६ ये संसार के हैं इसलिए सांसारिक बातें कहते हैं और ससार उनकी बातें सुनता है। हम परमेश्वर के हैं। जो परमेश्वर को जानता है वह हमारी सुनता है, जो परमेश्वर का नहीं वह हमारी नहीं सुनता ·····। (शेष पृष्ठ १९ में)

स्वर्ग–प्रस्थान

स्व० जयमसीह पुर्त्ती मृत रोतोन साय मनसिद्ध चुटिया पुर्त्ती के जेष्ठ सुपुत्र थे। इनका जन्म २२ जून १९१३ ई० को कोरना गॉव (बुड़जु) में हुआ था। १९३६ ई० से हिन्दुस्तान कोपर लिमिटेड (आई० सी० सी०) माउमन्डार (घाटशिला) में १९५० ई० तक काम किए। इसी दरमियान उनके अगुवाई में माउमण्डार यूनियन चर्च की स्थापना हुई। १ ५१ ई० से १९६९ ई० तक राजगांगपुर सिमेंट फैक्टरी में कार्य किए। यहाँ भी इनके द्वारा मंडली संबंधी अगुवाई पूर्ण रुप से पाया गया। अतः पाद्री सी० बी० आईन्द, पाद्री मृत खलखो तथा पाद्री डा० एम० बागे इत्यादि कलीसिया के अगुओं के अवधि में इनका सहयोग था। इनके पिताजी बिहार से १९०९ ई० में गांगपुर (राजगांगपुर) में प्रचार एवं मास्टर काम के लिए धर्म अगुओं के साथ आए एवं १९१४ ई० में रंगामट्टी (ओड़िसा) में बस गए। जयमसीह पुर्त्ती का देहान्त२४ अप्रील १९८९ को दिन १२ बजे रंगामट्टी गाँव में हुई। प्रचारक मनोहर हंस के द्वारा २५ अप्रील को इनका अन्तिम संस्कार किया गया। इनके पीछे अपनी धर्म पत्नी एक बेटा और दो बेटियाँ एवं बहुओं और नाती पोतियों को छोड़ गए।

स्व० जयमसीह पुर्त्ती को सारंगी, हरमोनियम ढोलक के साथ गान-भजन एवं गीत रचने का शौक था। पाठकगण अपने पारिवारिक प्रार्थना में इनके परिवार को याद करें।

प्रभु में आप का भाई
डेविट पुर्त्ती, राऊरकेला।

Gossner Mission

(१८ पृष्ठ क लगगातर)

यही कारण है प्रभु भी सिखलाते हैं—पवित्र वस्तु कुत्ते को न दो और न मोती सुअरों के सामने डालो ऐसा न हो कि वे उनको पैरों तले रौंदे और पलट कर तुमको फाड़ डाले; (मत्ती ७:६) ऐसे लोगों के बारे पतरस प्रेरित लिखते हैं—धर्म के मार्ग का न जानना ही उनके लिए इससे भला होता कि उसे जानकर उस पवित्र आज्ञा से फिर जाते जो उन्हें सौंपी गई थी उनपर यह कहावत ठीक बैठती है कि कुत्ता अपनी छांट की ओर धोई हुई सुअरनी कीचड़ में लोटने के लिए चली जाती है; (२ पत० २:२१-२२)।

इतना ही नहीं एसाव और याकूब एक पिता के जुड़वा पुत्र थे फिर भी दोनों को समान अधिकार प्राप्त नहीं हुआ; (रोमी ९:११)।

(रोमो ११:२५-२७; ९:२५; १४:११—हे भाइयो कहीं ऐसा न हो कि तुम अपने आप को बुद्धिमान समझ लो इसलिए मैं नहीं चाहता कि तुम इस भेद से अनजान रहो कि जब तक अन्यजातियां पूरी रीति से प्रवेश न कर ले, तब तक इस्राएल का एक भाग ऐसा ही कठोर रहेगा। और इस रोति से सारा इस्राएल उद्धार पायगा जैसा लिखा है कि छुड़ानेवाला सिय्योन से आएगा और अभक्ति को याकूब से दूर करेगा और उनके साथ मेरी यह वाचा होगी जबकि मैं उनके पापों को दूर कर दूंगा। जैसा वह होशे की पुस्तक में भी कहता है, कि जो मेरी प्रजा न थी उन्हें मैं अपनी प्रजा कहुंगा और जो प्रिया न थी उसे प्रिया कहूंगा। क्योंकि लिखा है प्रभु कहता है; मेरे जीवन की सौगन्ध कि हर एक घुटना मेरे सामने टिकेगा और हर एक जीभ परमेश्वर को अंगींकार करेगा।

उपरोक्त वचनों को पढ़ने से ऐसा लगता है कि समस्त मनुष्य जाति क्या धर्मी क्या अधर्मी, क्या विश्वासी क्या अविश्वासी सभी का उद्धार सुनिश्चित है। क्योंकि उन्हें फिर एक दूसरे से यह न कहना पड़ेगा कि यहोवा को जानो, क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि छोटे से लेकर बड़े तक सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करुंगा और उनका पाप फिर स्मरण न करुंगा, (यिर० ३१:३४)।

पर शायद ऐसा नहीं है। यदि ऐसा होता तो धर्मशास्त्र में नरक नाम की जगह या अग्नि-कुण्ड का वर्णन न होता। और हम "वह पशु और उसके साथ वह झूठा भविष्यद्वक्ता पकड़ा गया जिसने उसके साम्हने ऐसे चिन्ह दिखलाए थे जिनके द्वारा उसने उनको भरमाया, जिन्होंने उस पशु की छाप ली थी और जो उसकी मूरत की पूजा करते थे। ये दोनों जीते जी उस आग की झील में जो गंधक से जलती है डाले गए; (प्रका० १९:२०) लिखा नहीं पाते। भेड़ और बकरी का अलग किया जाने का भी वर्णन नहीं होता।

हम उपरोक्त स्थलों के साथ साथ पाते हैं। "और उसकी माता और उसके भाई आए और बाहर खड़े होकर उसे बुलवा भेजा। और भीड़ उसके आस पास बैठी थी और उन्होंने उससे कहा देख तेरी माता और तेरे भाई बाहर तुझे ढूंढ़ते हैं। उसने उन्हें उत्तर दिया मेरी माता और मेरे भाई कौन हैं? और उनपर जो उसके पास बैठे थे दृष्टि करके कहा; देखो मेरी माता और मेरे भाई ये हैं। क्योंकि जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर चले वही मेरा भाई और बहन और माता है।"

प्रभु यीशु मसीह स्वयं हमें धर्मशास्त्र के लेखों को समझने की शक्ति प्रदान करे।

Gossner Mission

सुसमाचार कार्य एवं साहित्य विभाव

(पंच सूत्रीय कार्यक्रम के ठोस रूप)

हमारे विभागीय सुसमाचार कार्य क्षेत्रों में इस विषय पर अनेक विचार गोष्ठियाँ, कार्य-शिविर, प्रशिक्षण शिविर, आदि हो रहीं हैं, मंडली के भाई-बहनों ने विशेष सहयोग दिया है और वे लाभान्वित भी हुए हैं; कुछेक मंडलियाँ हैं, जो मंडली के कार्यकत्ताओं की निश्चिन्तता एवं अज्ञानता के कारण पीछे पड़ गए हैं। ऐसा मालूम पड़ता है, कि पंच सूत्रीय कार्यक्रम। शिक्षा, स्वास्थ्य, खेती बारी एवं अन्य पेशा, अर्थ-व्यवस्था और आत्मिक सेवा (इनके विस्तृत विवरण के लिए कृपया, ग्रामोदय-आश्रय की नियमावली देखें) को लागू करने में जो समस्याएं, आवश्यकताएं एवं सुविधाएं हैं, इनकी जानकारी, पहचान एवं समझ हो गयी है, अतः इसके अनुसार काम करने की रूचि बढ़ गयी है, उपाय भी मिल रहे हैं क्योंकि सरकारी तथा गैर सरकारी स्वयं सेवी परियोजनाएं एवं प्रबन्ध इनके लिए सहायक सिद्ध हुई हैं; परन्तु आज भी इलाका की (अनेक) मंडलियों में इसकी ओर ध्यान ही नहीं है और न रूचि ही ली जा रही है और उपलब्ध साधन और सुविधाओं का ही सही उपयोग करने का ध्यान है, हालाँकि सभी लोग शिक्षा, स्वास्थ्य, विभिन्न पेशा-धन्धों, आर्थिक कठिनाइयों तथा आत्मिक सेवा सम्बन्धी कुप्रभावों के लिए हाय-तोबा करते हैं और इनसे कुप्रभावित हैं।

गत २४-२५ जून को हमारी कलीसिया के एक विशेष ऐतिहासिक दिन [कृपया पंजिका देखें] के क्रम में मार्था भवन (कडरू, रांची) में एक विचार गोष्टी का आयोजन हमारे विभाग की ओर से किया गया था जिसमें रांची तथा इर्द गिर्द की मंडलियों के पाद्री, पंच (अफसर), महिला, युवा एवं सन्डे स्कूल के कार्य कर्त्ता प्रतिनिधि स्वरूप निमंत्रित थे, साथ ही सुसमाचार कार्य क्षेत्र के सुपरभाइजर भी आमंत्रित थे।

सभोपदेशक की पुस्तक से बैबल-अध्ययन का विषय था—"सब कुछ व्यर्थ है"—बुद्धि, धन, भोग विलास, संयम या प्रसिद्धि ! तब यह पंच सूत्रीय कार्यक्रम क्यों ? मनन करने योग्य बातें हैं : ये अस्थायी तथा अल्पकालिक हैं और परमेश्वर की जानकारी, पहचान एवं समझ के लिए एवं परमेश्वर के भय, प्रेम और भरोसा में बढ़ने के लिए साधन/सहायक है, परन्तु यदि इन्हें ही जीवन का साध्य या लक्ष्य बना लिया जाए तो व्यर्थ ही हैं, ...

पंच सूत्रीय कार्यक्रम के विभिन्न बिन्दुओं को लेकर इनकी जो आवश्यकताएं, समस्याएं एवं सुविधाएं हैं, उनको समझ कर उचित ठोस कार्यों के लिए जो अज्ञानता, निश्चिन्तता, अन्धविश्वास (गरीबता ?), निरुचि, झुठाभिमान, दिखावा आदि हैं, इन पर विशेष चर्चाएं हुई। पंच सूत्रीय कार्यक्रम के विभिन्न बिन्दुओं कार्य रूप देने की आवश्यकता और लाभ को सभों ने महसूस करते हैं। यह भी कहते हैं; "ऐसा होना चाहिए; करना चाहिए, करना है," परन्तु ऐसा बहुत कम हो रहा है; "चलिए आज से हम यह करें, यह ठोस कदम आरम्भ करते हैं" सभी मां-बाप भाई-बहन "धार्मिक शिक्षा" की घटी—विशेष कर हमारे अपने विद्यालयों में—को अनुभव करते हैं, चूकि इनके अभाव से परिवार और समाज की क्या दुर्दशा हो रही है आंखों के सामने बेपर्द हैं, परन्तु फिर इसके लिए क्या कुछ करने को तैयार हैं ? इसके लिए प्रार्थना करने (हाथ जोड़ने) और आर्थिक उपाय करने (मुठ्ठी खोलने) में हमने क्या किया हमारी धार्मिक शिक्षा ठोस रूप से सभों को लाभन्वित करे, प्रत्येक इलाका/पेरिश विद्यालय प्रबन्धक समिति, हमारे विभिन्न संगठन इकाई क्या ऐसा ठोस अभियान नहीं चला सकते

(शेष पृष्ठ २२ में)

Gossner Mission

समाचार

६. सुरगुजा मिशन क्षेत्र में सताहट :

भाई सोहन खाखा लिखते हैं कि शंकरगढ़ पेरिश के पोंड़ी मंडली में भी दवले कुजूर के सब्जी बारी में दिनांक २४-५-८९ रात को एक गाय तीन बार घुसी। दो बार तो उसे हांक दिये। पर जब तीसरी बार फिर आई तो दवले कुजूर अपने पुत्रों से कहा इस गाय को पकड़ कर गोशाले में बान्ध दो, नहीं तो यह रात भर तंग करेगी। उसके पुत्रों ने उसे पकड़ कर गोशाले में बांध दिया। गाय दूसरे दिन मर गयी। गाय मालिक को पता लगा, तो वह देखने आया। दवले कुजूर ने प्रतिज्ञा किया कि मैं गाय के बदले गाय दूंगा। परन्तु गाय मालिक राजी नहीं हुआ। उसने थाना में गो हत्या का रिपोर्ट दिया। गाय का पोस्ट मार्टम हुआ। दारोगा जांच किया। गाय मालिक ने पांच गवाह प्रस्तुत किया। पांचों गवाहों ने गाय को मारते हुए देखने का बयान दिया। दरोगा जी दवले एवं विराज कुजूर को चलान किया और ग्रामिणों से कहा कि जमानत के लिये आदमी ठीक करो। जो आदमी जमानत के लिये खड़ा हुआ, उसके घर रात को गाय स्वामी के समर्थक (जो आर० एस० एस० के समर्थक हैं) गये और उससे जमानत वापस कराये और जमानतदार से कहवायें कि दारोगा को (८०० आठ सौ) रुपैये लेते हुए देखा। फलतः उसका जमानत नहीं हुआ और वे जेल भेज दिये गये। दस दिन बाद जमानत हुआ और २७ जून को अम्बिकापुर कोर्ट में हाजिरी देकर लौट रहा था तब अचानक शंकरगढ़ में दवले कुजूर पर हमला किया गया। सिर में मारा गया और उसका गला दबोचा गया। दिनांक २५ जून को उसके खेत में कोरवा लोगों के द्वारा हल चलवया गया। इसके बाद जीवन कुजूर के खेत में हल चलवाया गया। इसका लहर अम्बेरा मंडली में पहुंचा। वहां के प्रचारक विद्यास टोप्पो, प्रचारक जयमन टोप्पो और श्री एनोश टोप्पो के खेत को भी कोरवा लोगों के द्वारा जुतवाया गया। मूल उद्देश्य है कि इसाई लोग घर छोड़ कर भाग जावें। सताने वालों के साथ स्थानीय विधायक भी शामिल हैं।

भाइयों एवं बहनों से अपील है कि इस क्षेत्र के लिये प्रार्थना किया जाय।

७. के० एस० एस० का गठन वैधानिक अड़चन के कारण नहीं हो सक रहा है। इस विषय पर भिन्न भिन्न विचार व्यक्त किये गये है। पहला विचार कि उप प्रमुख अध्यक्ष के चुनाव बिना भी के० एस० एस० का गठन हो सकता है। दूसरा विचार कि अंचलों के चुनाव को ठीक किये बिना भी के० एस० एस० का गठन किया जाना चाहिये। तीसरा विचार कि उड़िस्सा अंचल को किनारे करके के० एस० एस० का गठन किया जाय। चौथा विचार कि अब से कुछ महिनों के पश्चात जनवरी १९९० से चुनाव वर्ष प्रारम्भ होता है। इसलिये ९० के चुनाव के निमित्त मंडलियों, पेरिसों, इलाकाओं एवं अंचलों को तैयार किया जाय।

हमारे संविधान के अनुसार तो यही है कि के० एस० एस० गठन के निमित्त संविधान के अनुसार ही कदम बढ़ाना है। के० एस० एस० गठन के लिये पांचों अंचलों के सभा समितियों को वैधानिक होनी है।

Gossner Mission

"बहुत कुछ हो रहा है"

"·····'इस चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा।"

यदि हमारी कलीसिया में पर्याप्त उन्नति नहीं होती तो यदा-कदा हमें निराशा हो सकती है। अपने समुदाय के अन्तरगत अनेक लोगों को खीष्ट के निकट न आते देखकर हम यह निष्कर्ष निकाल ले सकते हैं कि पृथ्वी पर, कहीं भी, कुछ नहीं हो रहा है।

हाल ही में पढ़ते समय मुझे कुछ ऐसे चौंकाने वाले आँकड़े मिले हैं, जो आप में आशा का संचार कर सकते हैं। इस तथ्यों पर विचार कीजिए :—

सन १९५० से लेकर अब तक कोरिया में प्रत्येक दस वर्षों के अन्तरगत मसीहियों की संख्या दुगुनी हो गई है – आज उनकी संख्या १ करोड़ १० लाख है। यह कुल जनसंख्या का २५ प्रतिशत है।

सन १९५५ से लेकर अब तक इन्डोनेशिया में मसीहियों की संख्या दुगुणी हो गई है।

सन् १९०० में अफ्रिका में १ करोड़ मसीही थे, जाज उनकी संख्या २० करोड़ ३० लाख है।

सन् १९०० में लैटिन अमेरिका में मसीहियों की संख्या १ करोड़ से कम थी, आज उनकी संख्या बढ़कर १ करोड़ ८० लाख हो गई है।

परन्तु सर्वाधिक वृद्धि चीन में हुई है। सन-१९४० में साम्यावाद के सत्तारुढ़ होने के समय लगभग १० लाख चीनी प्रोटेस्टेंट थे। परन्तु आज उनकी अनुमनित संख्या ३ करोड़ ५० लाख से लेकर ५ करोड़ के अन्तरगत है।

मैं जानता हूं कि ये आंकड़े कहानी नहीं कहते हैं। आवश्यक नहीं कि आँकड़ों में सम्मिलित प्रत्येक मसीही एक सच्चा विश्वासी हो। इसके बवजुद ये आंकड़े हमारे आनन्द के कारण हैं तथा हमें यह जानकारी देते हैं कि परमेश्वर का आत्मा आज के संसार में सक्रिय है और कलीसियाएं उन्नति कर रही हैं इसलिये निराश न होइए! बहुत कुछ हो रहा है।

कलीसिया को संसार के पास जाना होगा क्योंकि संसार कलीसिया के पास नहीं आएगी।

भारत की बाइबल सोसाइटी

राँची।

समाचार

झीरपानी (राऊरकेला) मंडली में आठ परिवारों की ३३ धर्म खोजकों का बपतिस्मा जो गत २०-१२-८७ में सम्पन्न हुआ था, इसका पुरा विवरण घरबन्धु के जून ८८ के अंक में छपा था। उसी सिलसिले में धर्मखोजकों में से जो परिवार के माता-पिता है उनका कलीशा नियमानुसार दिनांक ३०-४-८९ को पवित्र दृढ़ापन तथा उनके विवाह को दृढ़ाए जाने का कार्यक्रम पाद्री सी० एस० लकड़ा तथा पाद्री जी० केरकेट्टा द्वारा बड़े ही सुन्दर तथा पवित्रता से सम्पन्न हुआ। यह अवसर झीरपानी मंडली के लिए ईश्वरीय आषीश का दिन सिद्ध हुआ है।

(२० पेज का लगातार)

हैं उनके यहां एक धार्मिक शिक्षा कोष हो, जिससे शिक्षकों के लिए विशेष धार्मिक प्रशिक्षण व्यवस्था, शिक्षण-वेतन एवं धार्मिक पुस्तक प्रबन्ध की सम्भावना हो। ये संसाधन हमारे यहां सम्भव हैं आवश्यक भी हैं।

इसके प्रकार पंच सूत्रीय कार्यक्रम के विभिन्न विन्दुओं को ठोस रूप देने का जो कुछ हमारे पास संसाधन है, उसका सदुपयोग करने के लिए सुपरवाइजरों से विशेष बात चीत चली है, और आशा है अगले समयों में हम विशेष कार्य-रूप में उतर आएंगे; आप भी अपनी संगठन या प्रशासन इकाई में इस पर बात चीत करें और हमारी ओर से जो आवश्यक और सम्भव सहयोग है, हम सहयोग देने का प्रयास करेंगे।

Gossner Mission

सम्पादकीय :— जून ८९

बारह वर्ष के विवाद का बन्द : के लगातार में GELC और NWGELC के सम्बन्ध में UELCI का निर्णय अंग्रेजी में दिया जाता है

Minute of the meeting of the Executiye Committee of the UELCI held at Gurukul, Madras, on 27th 28th April 1989

Item 20. Matters related to Gossner Evangelical Lutheran Church and North Western Gossner Evangelical Lutheran Church

Introduction

North Western Gorssner Evangelical Lutheran Church, formerly one of the Anchals of the main Gossner Evangelical Lutheran Church, had applied to the UELCI for recognition as an independent church and for membership in the UELCI almost eleven years ago. It is the convention that a break-away group will not be recognised as independent church by UELCI unless the main church gave its consent. Generally the UELCI will strive for reconciliation between the two and help in the process of negotiations for this purpose.

The UELCI on its own had taken several measures to bring these two bodies to the negotiating table together with the Gossner Mission. The latter had tried independently also to bring peace and working relationship amongst them but all attempts had failed.

The Executive Secretary UELCI in his personal discussion with the Pramukh Adhyaksh GELC, Rev. Martin Tete, understood that the GELC would not appreciate outside interference specially either from Gossner Mission or UELCI. Sensing this feeling on the part of GELC, the Executive Secretary proposed to GELC, if they would solve this matter if Dr. Nirmal Minz would meet the representtaives of GELC, specially the Pramukh Adhyaksn Rev. Martin Tete, and work out a solution. These interpretations and proposals were accepted by both the parties and both made attempts to meet in Ranchi but could not find suitable time due to extensive travels of Dr- Nirmal Minz.

It is in this context, the Executive Secretary invited the representatives of the NWGELC - four of them led by Dr. Nirmal Minz, to ijon Rev. Martin Tete, Pramukh Adhyaksh GELC, and Miss Helen Bhengra from GELC, Vice President of UELCI, at a meeting of the UELC Executive Committee in April 1989 at Madras.

The Executive Committee of UELCI appointed a special committee under the chairmanship of the President of UELCI, Bishop Jayaseelan Jacob, consisting of Mr. Uttam Kumar, Joint Secretary UELCI, and the following members from GELC and NWGELC :

Gossner Mission

1	Rev.Martin Tete	Pramukh Adhyaksh GELC
2	Rev. Johan Dang	GELC
६	Mr. Surjeet C. Canton	GELC
4	Mrs, S. B. Topno	GELC
5	Dr. Nirmal Minz	Bishop NWGELC
6	Mr. Dheeraj Lakra	NWGELC
7	Rev. Niranjan Ekka	NWGELC
8	Mr. Mukut Ekka	NWGELC
9	Miss Helen Bhengra	vice President GELCI

Which was given sufficient time to discuss the long pending matter of reconciliation between the two groups and was also requested to produce a positive proposal without wasting this opportunity.

Sub-Committee's report.

The Committee met and had serious discussions and produced the following proposals :

I GELC

1 In continuation of the dialogues held between GELC and NWGELC – it is proposed to UELCI that NWGELC be given provisional recognition for five years with the following aims and odjects :

a To help the members of the Church to realise that they belong to one Gossner Evangelical Lutheran Church.

b To amend the Constitution of the GELC under the supervision of UELCI to give greater autonomy to all Anchals (Diocese) of the GELC.

c To help the divided congregation to be united.

d To help the members of the church to withdraw court cases filed against one another.

2 As a gesture of our dialogue (sic) for establishing our relationship in Christ, leasting friendship and unity, Dr. Nirmal Minz be included in the Building Construction Committee of the Gossner College as one of the members.

II - NWGELC Theme : We do not look backward but we look forward and move forward

1 We accept each other, that means GELC and NWGELC, as two. independent Churches functioning in the same Gossner tradeition.

2 The UELCI recognise us and grant us affiliation.

3 We leave to the good offices of UELCI to work out the modalities to settle the other issues between the two Churches (CELC and NWGELC ' in the same Gossner tradition and cooperation between them.

The Executive Committee accepted the proposal and RESOLVED —

1 To accept GELC proposal to recognise NWGELC as an independent church for a period of five years during which time both GELC and NWGELC strive towards achieving unity of the two groups as Gossner community and take concrete steps, such as amendment of G. E. L. C. constitution so that all Anchals including NWGELC will be autonomous within the framework of a United Gossner Community or accord permanent recognition to NWGELC as an independent church.

Gossner Mission

2 That the efforts to unite congregations now divided as NWGELC and GELC congeogations be undertaken so that the congregations are either GELC or NWGELC

3 That as recommended in GELC proposals, the NWGELC be immediately accepted as member of UELCI.

4 That as a first step towards concrete promotion of understanding and fellowship of Gossner community, the follwoing Gossner College Building Committee consisting of members of GELC, NWGELC, UELCI and LWF be constituted to supervise the construction of the proposed Gossner College building :

i Rev. Martin Tete
ii The Principal of Gossner College (Mrs. S. Topno)
iii Dr. Nirmal Minz
iv Executive Secretary UELCI or his nominee
v The Architect in charge
vi Miss. Christa Held

5 That a registered Trust be formed forthwith to manage the Gossner College, in which the Pramukh Adhyaksh GELC and the Bishop NWGELC be members in addition to others. The Executive Secretary UELCI is requested to follow up the matter and constitute the Trust.

6 That the following Promotional Committee be constituted to implement the above action and help the Gossner community find true fellowship and understanding of the challenge of witness and service of the Gossner community in Chotanagpur and within the wider ecumenical fellowship.

i	Rt. Rev. Dr. Jayaseelan Jacob, President UELCI	
ii	Miss. Helen Bhengra	Vice President UELCI
iii	Mr. Uttam Kumar	Joint Secretary UELCI
iv	Rev. Martin Tete	Pramukh Adhyaksh GELC
v	Rev. Johan Dang	GELC
vi	Names to be given	GELC
vii	,, ,, ,,	GELC
viii	Dr. Nirmal Minz	Bishop NWGELC
ix	Mr. Dhiraj Lakra	NWGELC
x	Rev. Niranjan Ekka	NWGELC
xi	Mr. Mukut Ekka	NWGELC

Sd : Bisholp Jayaseelan Jacob

President UELCI

Sd. Dr. K. Rajaratnam
Executive Secretary

Sd. Prasara K.Samuel
Sd. P. Sundaram
Recording Secretaries

Gossner Mission

To,

All Adhyaksh/Ilaka Chairmen/Institutional Heads/G. E. L. Church,
Ranchi,/Bihar

Dear Friends,

As per your positive comments and recommendations regarding Revised pay Scale published in the Gharbandhu of May 1989. the under signed passed the following Revised Pay Scale to come into force from 1. 8. 1989.

Thank you.

Yours Sinciers
Martin Tete.
(Pramukh Adyaksh)

REVISED PAY SCALE

1 Pracharaks/Prachrikas

1 Untrained—500-20-600-25-725-30-875.
2 Trained —600-20-700-25-825-30-975:

2 Candidates

1 B. Th. (without degri) —700-20-800-25-925-30-1075.
2 B. Th. —750-20-850-25-975-30 1125.
3 B. D. —850-20-950-25-975-30-1225.
4 M.Th. —950-25-1075-30-1225-35-1400.
5 Doct. deg.—1050-25-1175-30-1325-35-1500.

3 Pastors

1 Short Course—850-25-975-30-1125 35-1300.
2 Seminary —950-25-1075-30-1225 35-1400.
3 B.Th./L.Th.—1050-30-1200-35-1375-40-1575.
4 B. D. —1150-30-1300-35-1475-40-1675.
5 M. Th. —1250-35-1425-40-1625-45-1850.
6 Doct.deg. —1350-35-1525-40-1725 45-1950.

4 Elective Posts

1 Pramukh Adhyaksh —2500
2 Adhyash —2000
3 Secretary —1200
4 Treasurer —1200

5 Appointments

1 Office Supdt. —1200-30-1350-35-1525-40-1725.
2 Edu. Officer —1100-30-1250-35-1425-40-1625.
3 Anchal Supervisor—1000-30-1250-1275-35-1450.
4 Propt. Bd. Menager—1000-25-1125 30-1275-35-1450.
5 „ Asst. Manager—900-25-1025-30-1175-35-1350.

Gossner Mission

6 Office Staff

1	Head. Acct.	—1100-30-1250-35-1425-40-1625.
2	Cashier	—1000-25-1125-30-1275-35-1450.
3	Asst. Acctt.	—900-25-1025-30-1175-35-1350.
4	Clerk (UDC)	—900-25-1025-30-1175-35-1350.
5	Clerk (LDC)	—800-25-925 30-1075-35-1250.
6	Rent collector	800-25-925-30-1075-35-1250.

7 Office Staff

1	Driver	—650 20-750-25-875-30-1025.
2	Peon	—600-20-700-25-825-30-975.
3	Mali	—550-20-650-25-775-30 925.
4	Cook (central institution)	—550-20-650-25-775-30-925

8 Administrative Allowance

1	Principal G. Theol. college	—150.
2	Teaching Staff, G.Th. college	—75·
3	Non-teach staff G.Th. college	—50.
4	(a) Head of Tabita & P T.S.	—75.
	(b) Teach. staff, Tabita & PTS	—30
5	Youth Director (Central)	—75
6	(a) Ilaka Chairman without-school	—75
	(b) Ilaka Chairman with-school	—100
7	Director, B.E.L.	—150
8	M/Field Supervisor	—100

9 Fixed D. A.

1	Pracharaks/Pracharikas	—25
2	Candidates	—25
3	All Pastors	—50
4	Elective & Appoint. Posts (sl Nos 4 & 5)	—100
5	Office staff (sl. Nos. 6&7)	—50

Rules for the implementation of the scals
(same as the existing rule)

1 (a) According to qualification, the difference of the starting of old (1986) and new pay scale be worked out.

(b) The difference of the old and new pay scale be added to the existing pay of any church worker according to 1986 pay scale.

(c) After adding the difference to existing pay any amount rquired to be fitted in the new scale be immediatly given if it is not fitted in the new scale.

(d) In the case of any individual church worker if he/she qualifies himself/herself to a higher degree his/her pay scale be fitted in the scale of pay prescribed for that degree by adding one increment of new pay scale to his/her new pay scale.

2 This pay scale will come into force from 1-8-1989

3 The next increment according to this pay scale be given from 1-1-1990

(Rev. M. Tete)
Pramukh Adhyaksh, GELC

Gossner Mission

समाचार

दिनांक १६ जुलाई १९८९ को जी० ई० एल० चर्च न्युसीतारामडेरा में ३५ दृढ़िकरण अभिलाषियों का पवित्र दृढ़िकरण जमशेदपुर पेरिश चेयरमैन पादो के० डी० केरकेट्टा, एवं टाटानगर पेरिश चेमरमैन पादी जॉनसन आईन्द के साझेदारी सेवकाई द्वारा सम्पन्न हुआ।

सूचना

प्रचारक ट्रेनिग स्कूल गोविन्दपुर में प्रवेश चाहने वाले सभी उम्मीदवारों को सूचित किया जाता है कि आने वाले साल के लिए नये छात्र-छात्राएँ लिए जाएंगे। प्रचारक ट्रेनिक स्कूल के लिए तीन वर्ष का कोर्स है और तबीता ट्रेनिग स्कूल के लिए दो वर्ष का है। अदृढ़िकृत उम्मीदवार नहीं लिए जाएंगे। लड़कियाँ १८ वर्ष से ऊपर उम्र के और प्रचारक ट्रेनिग के लिए कम से कम मेट्रिक तक पढ़े हों, और २२ वर्ष तक उम्र के हों। फार्म गोविन्दपुर से मंगा लें।

आप का विश्वस्त
पादी मार्टिन जोजो
हेडमास्टर (गोविन्दपुर)

SSI Regd. No, 031204971/85
एस० एस० आई० राजि न० ०३१२०४९७१/८५

रश्मि प्रिंटिंग प्रेस

आकर्षक एवं उत्तम छपाई का एक मात्र स्थान

हिनू बस्ती हिनू राँची - २
जी० ई० एल० चर्च के नजदीक

हमारे यहाँ सभी प्रकार के जॉब किताब एवं स्कूल डायरी इत्यादि की छपाई उचित एवं सस्ते दाम पर होती है।

परीक्षा प्रार्थनीय। प्रो० बिराज गाड़ी

कृपया पत्र व्यवहार या मनीआर्डर भेजते वक्त अपना ग्राहक न० अवश्य लिखें।

एडिटर, घरबन्धु।

Edited & Published by Rev. Martin Tete, Pramukh Adhayaksh on behalf of the G. E. L. Church and printed by Mr Hans Rashan Surin at G. E. L. Church Press Main Road, Ranchi

Gossner Mission

घनबन्धु

रजि. न. आर. एन. सी. ८१

वार्षिक मूल्य २० रु०

एक प्रति २ रु०

वर्ष - १०९ रांची, सेप्तेम्बर १९८९ संख्या न०-९

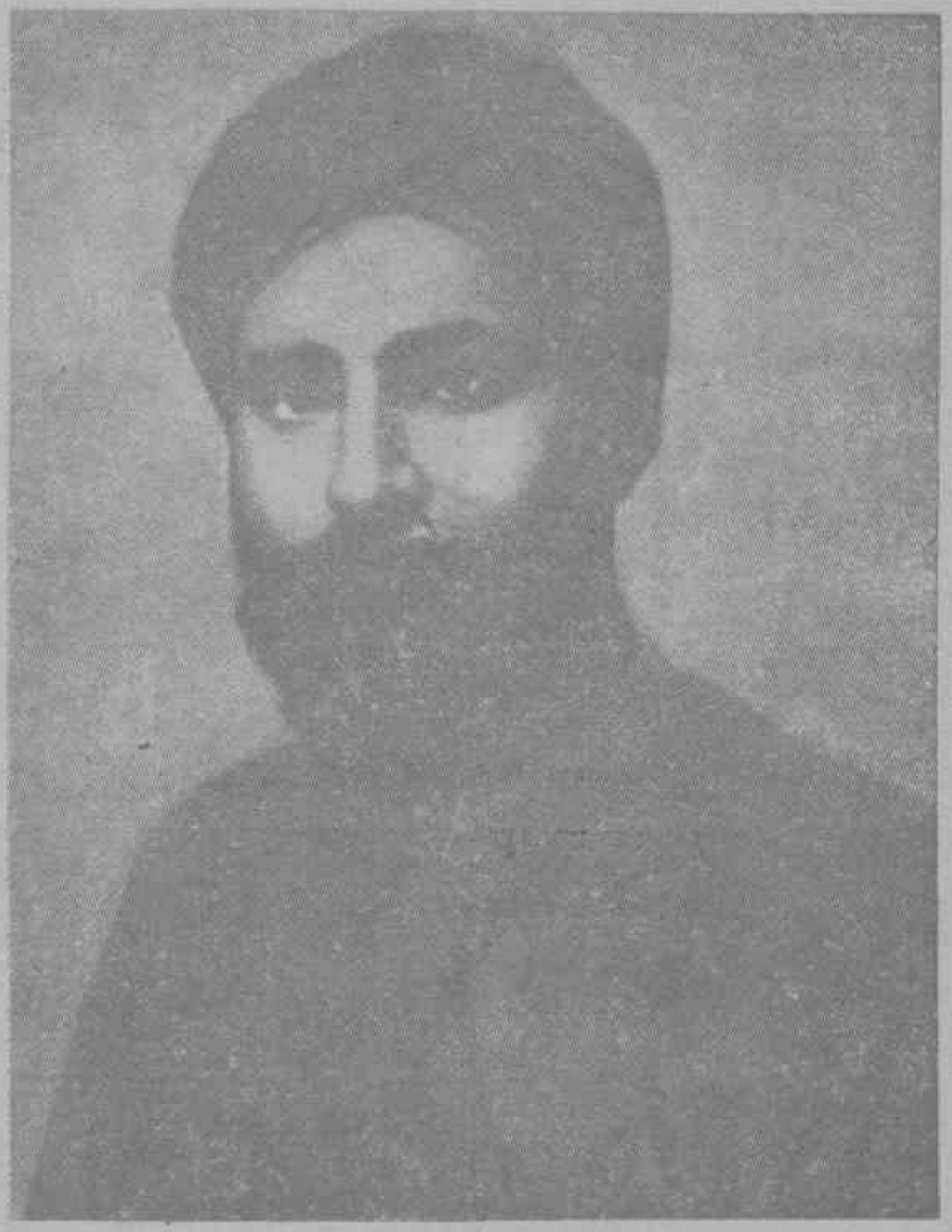

साधु सुन्दर सिंह
भारतीय प्रेरित
शतवर्षीय जुबिली
१८८९-१९८९

गोस्मनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

घरबन्धु

(गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पत्रिका)

EDITOR & PUBLISHER :—

Pramukh Adhyaksh
(Rev. Martin Tete)

PROMOTER :—

Rev. Saban Martin Topno

EDITORIAL COMMITTEE :-

1. **Rev. Dr. Royan Dang**
2. **Mrs. M Minz**
3. **Rev. P. J. G. Minz**
4. **Mrs. Sisi Baha Topno**

सूची

इस अंक में

सम्पादकीय		पृष्ठ
भारतीय प्रेरित—साधु सुन्दर सिंह	...	१
साक्षी-वाणी त्राण की राही	...	२
पश्चताप	...	३
छोटानागपुर की प्रोटेस्टेंट कलीसियाएँ ...(शेषांक से आगे)		
The joint classes of B. Th. Degree course...	...	५
मिलाप का संदेश	...	६
घरबन्धु	...	११
इलाका युवा संघ चट्टी—एक नजर	...	१३
अन्धियारे में ज्योति चमकी	...	१५
कलीसिया महिला संघ	...	१६
जी. ई. एल. कलीसिया महिला संघ...	...	१८
जीवन साथी का चयन	...	१६
संक्षिप्त रिपोर्ट	...	२०
समाचार	...	२१

सूचनाः—स्मरण रहे कि लेखकों के मावों के लिए सम्पादक व सम्पादन मंडल जवाबदेह नहीं रहेगा।

घरबन्धु में विज्ञापन छपवाने की दरें

पिछले आवरण का वाह्य पूर्ण पृष्ठ		१७५)
,, ,, ,,	अर्द्ध पृष्ठ	९०)
,, ,, ,,	अन्तः पूर्ण पृष्ठ	१५०)
,, ,, ,,	अर्द्ध पृष्ठ	८०)
अन्दर के पूर्ण पृष्ठ		१२५)
,, ,, ,,	अर्द्ध पृष्ठ	७०)
,, ,, ,,	एक चौथाई पृष्ठ	४०)
,, ,, ,,	दो तिहाई पृष्ठ	९०)
,, ,, ,,	एक तिहाई पृष्ठ	५०)

x x x

Gossner Mission

सम्पादकीय

भारतीय प्रेरित :–साधु सुन्दर सिंह

इस वर्ष साधु जी का शताब्दी महोत्सव समस्त भारत में मनाया जा रहा है। इनका जन्म सितम्बर ३, १८८८ ई० में पंजाब के रामपूर ग्राम के एक धनी मानी सिख परिवार में हुआ था। उनका बपतिस्मा उसके १६ वें जन्म दिवस पर सितम्बर ३, १९०५ को शिमला के सन्त जोन चर्च में हुआ था। १८ वीं दिसम्बर १९०४ को उसने प्रभु यीशु का दर्शण देखा था। प्रभु ने दर्शण में उससे कहा था—'कितने दिन लों तुम मुझे सताओगे ?" उसकी मां सिख धर्म में दक्ष एवं धर्मी महिला थी। उसकी मां की इच्छा थी कि बेटा सुन्दर साधु बने मां की धार्मिकता उस पर प्रबल हुई। सुन्दर अपने विषय लिखते हुए कहता है—"पवित्रात्मा ने मुझे मसीही बनाया परन्तु मेरी मां ने मुझे साधु बनाया।"

प्रभु यीशु के दर्शण के उपरांत सुन्दर को पूर्ण आत्मिक आनन्द एवं शान्ति प्राप्त हुआ। यीशु उसके लिए अदृश्य परमेश्वर का प्रकाश हुआ। अपने आत्मिक अनुभव के विषय सुन्दर लिखता है – यीशु बिना मैं उस मछली सदृश्य था जो पानी के बाहर हो यीशु के साथ मैं प्रेम के सागर में हूं और इस पृथ्वी पर रहते हुए भी स्वर्ग में हूं।

एकान्त में प्रार्थना और बैबल पढ़ना उसके जीवन के विशेष नियम थे। साधु जी के अनुसार दु:ख उठाना आत्मिक जीवन की बढ़ती के लिए आवश्यक है।

वह बैबल की बातों को दृष्टान्तों द्वारा समझाता था। यीशु के प्यार के विषय वह दृष्टान्त देता है कि जंगल के एक घोंसले में आग लगी। ऐसी परिस्थिति में माता पक्षी भागती नहीं परन्तु घोंसले को बचाने का प्रयास करती है। ईश्वर चाहता है कि हम जगत में रहें; परन्तु जगत के न रहें। जैसा कि जहाज पानी में है पर जहाज में पानी नहीं है।

साधु जी प्रार्थना के लिए एकान्त स्थान चाहते थे परन्तु उनका जीवन लोगों के झुण्ड में व्यतीत हुआ। भारतीय लोगों को यीशु के जीवन के जीवन जल की आवश्यकता है परन्तु वे पश्चिमी कटोरी से जीवन जल नहीं पी सकते हैं।

एंगलिकन विशप चाहता था कि सुन्दर केवल एंगलिकन कलीसिया में काम करें। परन्तु वह राजी नहीं हुआ। उसने अपने आप को संगठित कलीसिया में बांधने नहीं चाहा। वह पुराने नियम के नवियों के सदृश्य ईश्वर का संदेश सुनाता रहा।

भारतीय साधुओं के सदृश्य अपने देह को वह दु:ख नहीं देता था। उसने साधुओं से कहा कि हृदय परिवर्त्तन आत्मिक शान्ति के लिए आवश्यक है। उसने मुसलमान, हिन्दु एवं बौध धर्म का आदर किया। सभी धर्मों में सत्य का प्रकाश है। परन्तु पूर्ण प्रकाश मसीह में है।

भारत से बाहर साधु जी ने बर्मा, चीन, ब्रिटेन, अमेरिका, पलेष्टिना, स्वीटजरलैंड, जर्मनी फ्रांस, होलैंड, नार्वे एवं स्वीडेन में सुसमाचार सुनाया। (शेष पृष्ठ ८ में)

Gossner Mission

साक्षी-वाणी त्राण की राही

एस० तीगा, जमशेदपुर

साक्षी-वाणी मेरे लिए अति प्रिया है क्योंकि जिस तरह पवित्र धर्म शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा और अगुवाई से लिखे गए हैं; उसी प्रकार साक्षी-वाणी भी परमेश्वर की प्रेरणा और अगुवाई में रचे और गाना में बनाए गए हैं। यह प्रभु परमेश्वर के बड़े प्रेम को प्रकट करता है जो प्रेम का स्रोत है, पवित्र हैं, असीम है, अनन्त और अपरिवर्त्तनीय है।

हम साक्षीवाणी के मध्यम से गाकर परमेश्वर की स्तुति, गुणानुवाद और महिमा करते हैं। साथ ही साथ ईश्वर से प्रार्थना निवेदन याचना करते हुए उसको धन्यवाद देते हैं। परमेश्वर हमारी प्रार्थना स्तुतिगान सुनता है और अपने असीम अशीषों की वर्षा बरसाता है। दयालु परमेश्वर अपनी अथाह दया, कृपा, शांति, धीरज और अनुग्रह हम पापियों पर उंडेलता है। हम गा कर उसकी दोहाई देते हैं।

हम अपने एस. बी. द्वारा ईश्वर की आराधना करते हैं। रविवारीय आराधना में एस.-बी. का प्रमुख स्थान है। अपनी अज्ञानता के कारण हम एस. बी. सही ढंग वा राग से नहीं गाते हैं, जैसा गाना चाहिए। हम उसकी मधुरता एवं मिठास खो बैठते हैं, उसे निरस बना देते हैं। हमारे संगीत का भेंट कैन के भेंट के समान ईश्वर के सामने निंदनीय व निकृष्ट हो जाता है।

हमारे गिर्जा संचालक "लेयमेन" या पाद्री प्रचारक भी उत्तम रूप में मण्डली की अगुवाई नहीं कर पाते हैं। दुःख की बात है, भले शुक्रवार के दिन प्रभु की क्रूस-वाणी गाना कठिन हो जाता है। क्रूस-वाणी हमारे जीवन का और मसीह का विशेष वचन वा वाणी है। जब हम क्रूस वाणी नहीं गाते नहीं मानते हैं तो हमें यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि मसीह हमारे पापों का कठिन भार वाहन नहीं किया। ऐसा न हो धर्मशास्त्र का मूल और सार यही है कि मसीह हर एक विश्वासी का पाप उठा लिया। १ पतरस २:२८। उन्होंने क्रूस पर स्वयं अपनी देह में हमारे पापों का भार वाहन किया कि हम पाप के लिए मर कर धार्मिकता के लिए जीवन बिताएं।

हमारे नव युवक-युवतियां दिन प्रति दिन गिर्जा आराधना से दूर भटकते जा रहे हैं। उनमें परमेश्वर से मेल होने की अपेक्षा परमेश्वर से अलगाव हो रहा है। यह हमारे लिए दुःखद एवं सोचनीय विषय है। इसका मूल कारण है S. B. को मधुरता नष्ट होना और इन्हें सिनेमा के गीतों में प्रज्वलित तथा प्रोत्साहन देना।

हमारे Theological College में S. B. के राग विद्यार्थियों को भली-भांति सिखाना अनिवार्य है। जिस समय जर्मन "मिश्नरीज" थे, संगीत का मूल्यांकन कर सकते थे और जिसके कारण उन्हें जर्मनी से Violin, ला कर पादी वर्ग के विद्यार्थियों को इन सब का ज्ञान देना पड़ा। वास्तव में Th. Coll. में कम से कम एक Organ का होना अनिवार्य है और ज्ञान सम्पन्न, सुयोग्य शिक्षक, प्रोफेसर की नियुक्ति, भी आवश्यक है जो Tonic Solfa तथा Staff-Notation (अंग्रा राग) का ज्ञान रखता हो और एस. बी का राग सिखलावेगा और साथ ही साथ बाजा बजाने भी सिखलायगा। एक आदरवन्त, उत्तम उपदेशक का इन से अज्ञान रहना, हम मण्डली के भाई-बहनों के लिए दुःख एवं चिंता का कारण है।

प्रत्येक मसीही परिवार में एक साज का होना जरूरी है। हम न हरमोनियम, न ही सरंगी घर

(शेष पृष्ठ ३ में)

Gossner Mission

पश्चताप

सुश्री शर्मिला तोपनो, झीरपानी राऊरकेला

पहाड़ियों से घिरा एक छोटा सा शहर, चारो ओर हरियाली तथा मुस्कराती वृक्ष, दिल को लुभा देती हैं। मेरा मन चाहता हर घड़ी निहारती रहुं। इन वर्फीले पहाड़ियों के नीचे एक सुन्दर मकान में एक मसीही परिवार रहता था। सुन्दर नन्हा किरण उसकी मां सलानी तथा पापा दयाल यह परिवार प्रतिदिन प्रभु की स्तुति करते थकते नहीं थे। दयाल जब काम से लौटता गेट के सामने कार की होर्न सुनते ही छोटा नन्हा किरण को गोद में लिए गेट खोलती, तीनों रूम में आके सब से पहले परमेश्वर को धन्यवाद करते।

लेकिन यह परिवार ज्यादा दिन सुखी नहीं रह सका। कुछ दिनों बाद सलानी को ईश्वर पिता ने अपने पास बुला लिया। मसीह दयाल इस भयंकर दु:ख की घड़ी में स्थिर रहा, हतास नहीं हुआ, सदा प्रार्थना में लगा रहा। ईश्वर ने दिया ईश्वर हो ने लिया उसी का नाम धन्य हो। इस वचन से अपने आप को शान्त किया। किरण का देख भाल दयाल की मौसी कुछ दिनों तक करती रही। नौकरी के कारण वह भी ठीक से देख भाल न कर सकी। दयाल को दूसरी शादी करने की सलह दी, ताकि किरण का देख भाल अच्छी तरह हो सके। ईच्छा न होते हुए भी अन्त में दयाल को सहमत होना पड़ा। विशेष मासुम किरण को मां की शक्त की जरूरत थी। शुरू में मासुम किरण मां पाकर अत्यन्त खुश हुआ, पर यह खुशी ज्यादा दिन टिक न सकी। सौतेली मां पति के सम्मुख मां का प्यार दिखाती।

किरण अब सयाना होने लगा, स्कूल जाने लगा, वह चंचल तथा समझदार था। उसका दूसरा भाई आ गया। किरण खुशी से झुम उठा। हर घड़ी उसके सामने बैठकर निहारता रहता था। लेकिन सुनु के आने से किरण की मामी का व्यवहार बदल गया। किरण को प्यार के बदले डाँट मिलने लगा। जब सुनु रोता तो किरण को मार कर बाहर निकाल देती। बेचारा किरण बिलख-बिलख कर रोता और सोचता आखिर मामी उससे क्यों नराज है। जब भी भाई के पास देखती तो उसे डांटती है और बाहर निकाल देती है। भाईया के आने से वह इतना खुश था कि उसे स्कूल जाने का भी याद न रहता उसी के पास बैठ कर खेलने का मन होता था। एक दिन छोटा भाई सुनु बहुत जोर से रो रहा था। किरण का दिल स्नेह से

(२ पेज का लगातार)

में रखते हैं और अपने सन्तानों को प्रभु के लीक पर लाना, चलाना चाहते हैं। बाजा रहेगा तो बच्चे स्वयं S. B. बजाना चाहेंगे, उनका ध्यान धार्मिक संगीत की ओर आकर्षित होगा। घर में साइकिल, स्कूटर, कार है आप के बच्चे आप से भी उत्तम चालक हो जाते हैं चूंकि घर में ये सब वस्तुएं मौजूद है। जिस घर में बाजा होगा, बच्चों में बजाने की प्रवृति होगी और वे धार्मिकता की ओर खींचे जायगें।

बाजे के साथ आप SB Solfa Music Natation अंधा राग की किताब घर में रखें साक्षी वाणी का राग दोनों में तैयार है। किताब का मूल्य १७०)- एक सौ सत्तर रूपैया है। चूंकि फोटो कोपी द्वारा तैयार किया जाता है, अग्रिम पैसा भेजना उत्तम

राग किताब मिलने का पता :—

Mr. N. Topno.
B/B 1464 Christian Basti
Sonary Jamshedpur
Pin code—8310.

Gossner Mission

भर गया। वह पलंग के पास जाकर चुप करने चाहा, लेकिन सुनु चुप होता ही नहीं। चुप न होने पर उसे गोद में उठा लिया। छोटा किरण संभाल न सका, दोनों गिर पड़े। उसी वक्त उसकी मामी आ पहुंचा, डांटते हुए बोली, शैतान कहीं का कितना बार मना की इतना छोटा बच्चा को मरोगे, गिराओगे कहते कहते छड़ी की वर्षा करने लगी। मामी मत मारो जान बुझ कर मैंने नहीं गिराया माफ कर दो मामी, भाई के पास और नहीं जाऊंगा। पर कहां सुनती छड़ी का मार बन्द होने का नाम ही नहीं लिया। फलस्वरूप किरण गिर पड़ा और बेहोश हो गया। जब उसे होश आया तो वह अपने आप को मकान के बाहर कमीज फटा हुआ, बदन लहु-लुहान प्यास से तड़प उठा-मामी पानी। फटकारते हुए मामी की आवाज पानी मांग रहा है, निकल जाओ मेरे घर से मैं देखना नहीं चाहती और ढकेल दी।

किरण बिलक-बिलक कर रोते हुए एक पेड़ की ओर चला गया, जहां शीतल धारा पहाड़ से गिर कर बह रहा था। वहीं बैठ गया, पानी पीया, भूख से पेट दुःखने लगा याद आया अपना नानी का घर। किरण को देखकर नानी की आंखों से आंसु बहने लगे। किरण बेटा क्या हाल बना रखा है किससे लड़ाई किया। किरण बिलख बिलख कर सारा घटना सुनाया, नानी समझा दो न मैं भाई के बिना नहीं रह सकता। नानी का मन पिघल गया। किरण बेटा हमने बड़ी भूल की है। जब तुम छः महिने का था, तुझे मां की शक्त बहुत जरूरत थी। मैं तेरा देखभाल नहीं कर सकी, इसलिए तेरे पापा की शादी जबरजस्ती करवा दी जिससे तेरा देख-भाल अच्छी तरह हो सके। लेकिन नतीजा उल्टा निकला। किरण बोल उठा क्या नानी क्या मेरा मामी नहीं हैं। वह और अधिक बिलखने लगा। नानी मरहम-पट्टी करते हुए बोली। बेटा क्या तुम अपने पापा को बताया है? मैं ने पापा से कभी शिकायत नहीं किया मामी हो मुझे दोष लगाकर डांटने को कहती है लेकिन पापा मुझे कभी नहीं डांटा। तेरे पापा को मालुम होने से उसे बहुत अधिक दुःख होगा। किरण बोल उठा उसे मालूम नहीं होने देंगे। उसे खिला-पिला कर तथा समझा बुझा कर घर भेज दी कि वह फिलहाल चुपचाप रहे। पापा को समझा कर होस्टेल में रहने का बन्दोबस्त कर देगी। वहां अच्छी तरह पढ़ाई होगी।

किरण नहीं चाहते हुए भी नानी घर से निकला डगमगाते कदम से वह घर की ओर चल पड़ा पर उसी पेड़ के नीचे रूक गया जहां शीतल धारा बह रही थी। वहीं बैठकर टकटकी लगाया रहा। चंद ही मिनटों में नींद की अगोस में खो गया।

दयाल जब दफ्तर से लौटा, गेट में होर्न की आवाज के बावजुद किसी ने गेट नहीं खोला। चिलाता रह गया किरण बेटा, किरण बेटा-सोचा किरण शायद सो गया होगा। कुछ देर बाद सुनु को गोद में लिए गेट के पास आई और बनावटी आंसु पोछते हुए गेट खोली। सीमा तु रो रही है मेरा बेटा किरण तो ठीक है न? दयाल घबरा कर कहा। उस बदमाश को क्या होगा सारा दिन घर से बाहर, सब दिन परेशान रहती हूं। कभी किसी से लड़ता, किसी से मार पीट करता, पढ़ाई पर ध्यान नहीं, सब शिकायत करते हैं। एक श्वांस में सब कह दो। सुनु को गोद में लिए उसके लिए भटकती रहती हूं। इतना प्यार के बावजूद मुझे सता रहा है।

दयाल चिन्तित हो गया, किरण को कभी बदमाशी करते नहीं देखा, आज्ञाओं का उलंघन कभी नहीं किया। हर रविवार सन्डे स्कूल जाता हर प्रार्थना में भागी होता। दयाल पानी भी नहीं पीया, वह खोजने निकल गया। सबसे

(शेष अगले अंक में)

Gossner Mission

The joint classes of B.Th. Degree course were started in Gossner Theological College on Monday the 8th Aug. 1988 with the following staff members and students.

1 Teaching Staff.

1 Rev. Dr. R. Dang, M.A., B.D,. (GTC) M.Th, Ph.D., Principal
2 Rev. P.D.S. Burh, M.A., B.Th. ,, B.D. Bursar (GTC)
3 Rev. M. Ekka, B.Th, B.D, M.Th ,, Hostel Asst.
4 Rev. S. Soy, B A, B.Th, B.D. ,,
5 Rev. R.P. Mundu, B.Th, B.D, ,
6 Rt. Rev. S.J.E. Tuti, B A. (BHTC) B D, Principal (BHTC)
7 Rev. Cyril Hans, B.Th. B,D ,, (Bursar, BHTC)
8 Rev. Onil Kumar Tirkey, B,A,B,D, ,,

Part time

9 Rev, Dr. C.K.P. Singh, (GTC) L Th. B.D, Dr. in Theol
10 Rev. C A.B. Tirkey, L.Th, B.D, ,, M A, M.A, Ph.D, ,,
11 Dr. P Kerketta, L.Th, B.D. ,, M.A, B.E.d, Ph.D.

2 Librarian

Rev. Y. Soreng, B A, B.Th,

3 Students

B Th. III Year *Church affiliatian*

1 Namjan Kongari, B A. GELC
2 Sagen Bhengra I.A. ,,
3 Lalit Mohan Ramajan, Matric ,,
4 Jaywant K. Kandulna ,, ,,

B. Th. II Year

1 Sugar Kandulna, B.A, ,,
2 Niral Samad, B A, ,,
3 Nelson Lakra, Matric ,,
4 Mohan Lal Singh, ,, ,,
5 Paulus Surin ,, ,,
6 Ishak Barla ,, ,,
7 James Surin ,, ,,
8 Ebertus Barla ,, ,,

B. Th. I Year

1 James Guria, I.A. GELC
2 Adhin Kandulna, I.A. ,,
3 Ren Kumar Topno, Pre. Sc, I.T.I. ,,
4 Sejan Dang, Matric ,,
5 John Samad ,, ,,
6 Peter Topno, ,, ,,
7 Nemhas Lakra ,, ,,
8 Ruben Toon ,, ,,
9 Sushil Topno, ,, ,,
10 Hemant Timothy ,, MPELC

Orientation Class

1 Marshal Tuti B.A. GELC
2 Johnson Tirkey, I.A. ,,
3 Sudershan Lakra I. Com, T.T. ,,
4 Rasikan Barla Matric ,,
5 Jorong Surin ,,
6 Chandra Mohan Singh Matric ,,
7 Narendra Gagrai ,, ,,
8 Niral Baba, ,, ,,
9 Sanjay Kumar Bara, ,, ,,

Gossner Mission

10	Shaihun Minz	Matric	,		
11	Daud Marshal Barla	,,	,,		
12	Nelson Kandulna	,,	,,		
13	Rejan Kerketta	,,	,,		
14	Martin Lugun	,,	,,		
15	Enem Kerketta	I.A.	,,		
16	Kuldeep Toppo	B.A.	Assembly of God		
17	Sanhai Dehri	Matric	NELC		
18	Moha Lal Tudu	,,	Pres byterian		
19	Samuel Kandulna	M.A	CNI		
20	Saihun Barla	B.A B.T. (to appear)	,,		
21	Jiwan Masih Guria	B.A.	,,		
22	Vinod Marshal Dahang	B A. B T. (to apear)	,,		
23	William Tilming	B.A,	,,		
24	Enem Lugun	B A, (apeared)	,,		
25	Nelson Kumar Surin,	B A. (appeared)	,,		
26	Rupchand Gopal Nag,	B. Com. (appeared)	T.T.C. (to appear)		
27	Basil Hemrom	I.A. T.T.C. (to appear)	,,		
28	Miss Suman Guria	B.A. B Ed. (to appear)	,,		
29	Miss. Shantimani Kachchap,	I A.	,,		

MINUTE OF THE JOINT MEETING OF THE STAFF MEMBERS OF GOSSNER THEOLOGICAL COLLEGE AND BISHOP HUBBACK THEOLOGICAL COLLEGE, RANCHI.

1 The Joint meeting was held on the 30th June 1988 at 4.30 P.M. in Gossner Theological college building.

2 The members present were —

Rev.	Yakub Soreng	GTC
,,	P. D· S. Burh	,,
,,	Dr. C. A. B. Tirkey	,,
,,	Manmasih Ekka	,,
,,	S. Soy	,,
,,	R. .P Mundu	,,
,,	Dr. Royan Dang	,,
Rt.	Rev. S. J. B. Tuti	BHTC
Rev	T. S Cyril Hans	,,
,,	O K. Tirkey	,,

3 The meeting was started with a word of prayer said by Rev. Dr. R. Dang who also chaired the meeting.

4 The purpose of the meeting was to have "Ecumenical efforts for the combined classes between Gossner Theological college and Bishop Hubback Theological college with a view to prepare the students of both the colleges for B. Th. Degree course

5 The meeting proceeded on with the understanding that this attempt will not affect the policy matters like college constitution and bye-laws, Governing body and managing committee or college council leaving them as it is and only concentrating on teaching and the financial liabillities incurred on Bishop Hubbaek Theological college as per the rules and regulations of the Senate of Serampore as well as the administrative requirements of Gossner Theological college.

Gossner Mission

6. (a) So far the teaching is concerned, it was unanimously decided that all the present new students of Bishop Hubback Theological college must have "Orientation class" till the month of March/April 1989. This rule will apply to every new batch.

(b) The B.Th Course is for three Years Altogether 20 papers will be required for the degree. This does not include the Orientation Courses which run for one full academic session.

(c) It was commonly agreed,

(I) that all the courses required for B. Th. degree will be taught in Gossner Theological College.

(II) That the other courses which might fulfil the needs of the respective churches may be taught in the respective Colleges.

(III) Regarding Orientation class of the present session (July 1988-April 1989) it was agreed to have combined classes of the following subjects in Gossner Theological college :—

Introduction to O.T. Teachers.
Rev. R.P. Mundu,
Rev. T.S. Cyril
P. Hans

Introduction to N. T. Rev. S. Soy
& Rev O. K. Tirkey
Greek Grammar - Rev. S. Soy
one period a week - Rt. Rev- J. S. Tuti

(d) Library facilities. are to be given to all the students for which Bishop Hubback Theological College will abide by the rules and regulations of Gossner Theological College and make the necessary payments.

7. The following financial liabilities were cited —

(a) Admission fee Rs 10=00 (per student)

(b) Registration fee Rs. 35= 00 „

(c) Examination fee Rs. 40= 00 (per paper for senate Examined paper)

(d) Centre charge Rs. 15 = 00 (per (senate) student per year)

(e) Handling charges Rs. 40 = 00 (local) (per student per year)

(f) Affiliation fee Rs 550= 00 (annually for eleven students)

(g) Library membership charge Rs. 15=00 (per student)

(h) Activities :- There are some activities which incur some expenses They are —

(I) North India Theological students conference - This conference takes placc once a year. Three students and one staff guide attend this conference. The expenses of this conference differ depending on the distanec of venue of the conference

Gossner Mission

(II, Practical programme – In every academic year the college plans twice for practical programme. this is in fulfilment of the Senate requirement. All the students must have to participate in it and so for as our practice has been all the staff members also participate in it.

(III) College Get-together–like opening day gathering, X'mas gathering, convocation ete.

All these activities will also incur some expenses to which BTHC will contribute Proportionately.

8. Since this was the first round of our talk over the matter, it was felt necessary to have a second round of talk and to finalise and confirm the decisions arrived at for the purpose of sending the matter to the higher/supreme Bodies of both the churches for their due approval on the subjeet and for obtaining their permission to go ahead, The next meeting to be held on the 19th of July at 4. p.m. in Gossner Theological college.

The meeting was Closed with a prayer said by Rt. Rev. J.E. tuti.

1. Sd/ Rev. Dr. R. Dang
2. Sd/Rt. Rev. S. J. E. Tuti
3. Sd/ Rev. S. Soy
4. Sd/ Rev. M: Ekka
5. Sd/ Rev. Dr. CAB. Tirkey
6. Sd/ Rev. T. S. Cyril Hans
7. Sd/ Rev Yakub Soreng
8. Sd/ Rev. P. D. S. Burh
9. Sd/ Rev. R. P. Mundu.

Rev. Dr. R. Dang
Principal
Gossener Theological
College, Ranchi.

(सम्पादकीय का लगातार)

अपनो सम्पूर्ण सम्पति को उसने मिश्नरी समाज को सौंप दिया, ताकि आमदनी से सुसमाचारकों का काम चलाया जाय। उसने कई पुस्तकों की रचना की। पुस्तकों की आमदनी भी मिश्नरी काम के लिए लगाया गया।

युवक साधुओं को उसने उपदेश दिया कि "प्रार्थना के साथ बैबल पढ़ो, अपना क्रूश उठाओ, प्रशंसा प्राप्ति पर घमण्डी न बनो।" स्मरण करना की गधे के बच्चे को यीरूशलीम के मार्ग पर चलने का सौभाग्य प्राप्त था। गधे के बच्चे को यह आदर इसलिए प्राप्त हुआ कि उस पर प्रभु यीशु सवार था।

Gossner Mission

मिलाप का संदेश

श्री असीम कुमार नथनिएल

लगभग दो हजार साल से प्रभु यीशु का शुभ सन्देश संसार के कोने कोने में पहुंचाया जा रहा है जो पलिस्तीन के कुछ भागों से प्रारम्भ होकर आज यीशु की कहानी विश्वव्यापी कहानी बन गयी। इसका कारण यह हैं यह सिर्फ सांसारिक कहानी नहीं परन्तु इस कहानी में सच्चाई है वह सच्ची है। पौलुस के कथानुसार यह क्रूस की कहानी है। यद्यपि क्रूस श्रपित है यीशु मसीह का क्रूस श्रापित होने पर भी अनुग्रह देने वाली क्रूस है। मसीह के क्रूस का अनुग्रह सारे लोगों के लिए है। जो विश्व के पांच खंड में रहते है चाहे वे कोई भी जाति के क्यों न हों। हम यह देखते है कि यीशु मसीह के स्वर्गरोहण के बाद (AD 30) उनके शिष्य गण इस मिलाप के संदेश का प्रचार आनन्द के साथ करते थे। यह भी बात सच है कि इस सच्चाई प्रचार के लिए उनको बहुत दुःख व कष्ट का सामना करना पड़ा। परन्तु खुशी की बात यह की वे इस कठिन परिस्थियों में भी निराश, हताश नहीं हुए, परन्तु बड़ी खुशी के साथ इस प्रचार को बढ़ाते रहें। लगभग पहली शताब्दी के अन्त तक सब प्रेरितों को मृत्यु की गोद में सुला दिया गया। लेकिन वे अपने जीवन के सीमित समय के अन्दर प्राय: विश्व के सब भूखण्डों में मसीह का प्रचार कर लोगों को मसीह के लिए जीत चुके थे। इसका प्रचार प्रेरितों के बाद किया गया।

जितने विशाल रूप में मसीह का प्रचार किया गया है उतना और किसी भी धर्म या संस्था का प्रचार नहीं किया गया। इस मसीही धर्म के प्रचार के बढ़ने का दो कारण है। १) यह सत्य है और परमप्रधान परमेश्वर के द्वारा नियुक्त किया गया है। २) इस कार्य के लिए प्रचारक नि.स्वार्थ आत्म समपर्ण किए थे। वर्त्तमान में मसीह धर्म की उन्नति देखकर कुछ लोग शक, व आश्चर्य करने लगते हैं और ऐसे लोगों का मात्र एक ही उद्देश्य है कि किसी रीति से मसीह को बदनाम कर इसकी सत्यता को दबाना चाहते हैं वे इस कार्य के लिए गलत पत्रिकाओं का सहारा लेते हैं। मेरा उन महानुभावों से यही कहना है कि वे इसके खिलाफ क्यों कहते हैं क्योंकि सच्चाई छिप नहीं सकती है। यीशु मसीह का सुसमाचार मेल-मिलाप का संदेश है। प्रभु यीशु के बिना कोई सुसमाचार नहीं। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि सुसमाचार स्वयं यीशु है और ये मिलाप का सुसमाचार है। हिन्दी भाषा में मिलाप के अनेक अर्थ दिए गए हैं उनमें से एक शांति है। इफ़ि. २:१४ के अनुसार मेल का अर्थ शांति है। यीशु मसीह शांति है उसे यशायाह नबी ने शांति का राजकुमार कहा है, लोगों ने यीशु के मुंह से शांति के अनेक वचन सुने हैं यूहन्ना १४:२७ में यीशु ने कहा, मैं तुम्हें अपनी शांति दिए जाता हूं जहां यीशु मसीह है वहां शांति है एक बार यीशु अपने शिष्यगणों के साथ नाव में जा रहे थे उस वक्त आंधी तूफान से नाव डूबने लगी तब यीशु ने शांति कायम किया और आंधी थम गई। दूसरा शब्द है सन्धि इसके अर्थों को हम इफि० २:१५ में पा सकते हैं। यहूदी और अन्य जातियों के बीच हमेशा बैरभाव ऊंच-नीच की दीवार खड़ी थी। इस दीवार को यीशु मसीह ने अपनी सलीबी मौत के द्वारा तोड़ कर इसके बीच मेल-मिलाप स्थापित किया। प्रभु यीशु मसीह सन्धि है। पापी इन्सान परमेश्वर का बैरी है परन्तु प्रभु यीशु, परमेश्वर और पापियों के बीच सन्धि बन गया। परमेश्वर का धन्यवाद हो इस प्रभु यीशु के लिए जो हमारा मेल-मिलाप है।

Gossner Mission

अब मुख्य विषय पर कुछ आलोचना की जाय कि यीशु मसीह हमारा मेल-मिलाप है जो अपनी सेवकाई का प्रारम्भ ऊंच-नीच की दीवार तोड़कर किया। उदाहरण के लिए यीशु मसीह सामरी स्त्री के पास जाना और जीवन को जीतना, चुंगी लेने वाले के घर जाकर उनके यहां भोजन किया ये सब अच्छे दृष्टांत है। प्रेरितों के भीतर भी कभी-कभी वर्ण-भेद की समस्यायें उत्पन्न होती थी परन्तु समयानुसार उचित रूप को उसका निवारण किया जाता था। पौलुस अन्य जातियों के लिए चुने गए थे परन्तु प्रभु संसार के सारे लोगों के लिए आये थे। वे इस प्रकार की बातें पसन्द नहीं करता था पर सच्चाई यह हैं कि वर्त्तमान समय में सार्वजनिक कलीसियाओं में दोनों प्रकार के झुंड पाए जाते हैं अर्थात यहूदी और अन्य जाति। परमेश्वर की दृष्टि में सिर्फ दो जाति है यहूदी और दूसरा अन्य जाति। जो जन्म से यहूदी है उनको छोड़ बाकी सब अन्य जाति है। हमारे भारत देश में जितने मसीही हैं वे सब अन्य जाति से आए हुए हैं। वचनानुसार यहूदियों को छोड़ बाकी सब अन्य जाति हैं लेकिन भारत वर्ष के लोग जो परमेश्वर की दृष्टि में अन्य जाति हैं किसी को बड़ा और किसी को नीचे श्रेणी का बनाया है इस वर्ण-भेद के सम्बन्ध में जो हत्याएं हो रही हैं उनके बारे में हम पत्रिकाओं में पढ़ रहे हैं पर ये दुःख भरी सच्चाई है कि मेल-मिलाप के सुसमाचार पर विश्वास करने वाले विश्वासियों में शैतानी भावनाएं पायी जाती है। यही कारण है कि आज भारत-वर्ष के मण्डलियों में फूट दरार है। कहीं-कहीं मण्डली में सिर्फ ऊंची जाति के लोगों का झुंड है। उनका संचालक सब उच्च श्रेणी के हैं। क्या यही मिलाप के सुसमाचार का असर? क्या इस प्रकार की मेल के सुसमाचार में परमेश्वर की इच्छा है? यही कारण है कई विश्वासी वर्ण-भेद और झूठे आडम्बरों के डर से दूसरे प्रान्तों में जाकर अपने आप को ऊंची जाति कहते हैं। ऐसे विश्वासियों का इस प्रकार झूठ बोलने का जिम्मेदार आप और मैं हूं। वचन कहता है "न्याय" उस व्यक्ति पर जो दूसरों के ठोकर का कारण बनें" यदि इस प्रकार की भावनाएं हम में है तो निश्चित रूप से यह जानें कि इस सुसमाचार का प्रभु मसीह के इस प्रकार के वातावरण को देखकर बड़ा दुःख लगता है और सोचने पर मजबूर होना पड़ता है कि जिस कलीसिया के लिए अपने शरीर के हर एक बून्द क्रूस पर बहा दिया लेकिन उस कलीसिया में पूर्ण रीति से मेल-मिलाप का असर नहीं। यदि हम इस प्रकार के विश्वासी हैं जो मेल-मिलाप के सुसमाचार को सुनने व पहचानने के बाद भी दैनिक विश्वास जीवन में कार्य रूप में वर्णित नहीं करते तो निश्चय याद रखें कि हम दोषी व ईश्वर के दण्ड के भागी हैं क्योंकि हमने मसीह के मेल-मिलाप के सुसमाचार व प्रेरितों, पूर्व भक्तों की बातों को तुच्छ समझा।

आइये हम इस प्रेम के सुसमाचार जो मेल-मिलाप से जड़ित हैं अधिकाई से अपने हृदय में बसने दें जिससे आत्मा हमारी प्रभु में उन्नति करें और सदा काल का जीवन हर्षोल्लास से अनन्त जीवन में बिता सके प्रभु हम सभों की अगुवाई करें और और आशीष देवें।

सूचना

"उठ प्रकाशमान हो; क्योंकि तेरा प्रकाश आ गया। प्रभु का तेज तुझपर उदित हुआ"
(यशा ६०:१)।

भारत की बाइबल सोसाइटी, बिहार शाखा, रांची के तत्वाधान में रांची स्थानीय कलीसियाओं के सहयोग से अक्टोबर १९८९ में दिनांक १२, १३, १४ तथा १५ को सन्त पौल महाउपासनालय, चर्च रोड, रांची के मैदान में "आत्मिक जागृति सम्मेलन" करने का निश्चय किया गया है। कई मुख्य वक्ताओं के अलावा भारत की बाइबल सोसाइटी बंगलोर के सामान्य सचिव माननीय बी. के. प्रमानिक पहिली बार हमारे रांची आएंगे। आप के सहयोग एवं "आत्मिक जागृति सम्मेलन" की सफलता के लिए आप की प्रार्थना की हम अपेक्षा करते हैं। धन्यवाद।

बाइबल हाऊस, रांची।

Gossner Mission

घरबन्धु

आर. सी. यादव, इंडिया कैम्पस क्रूसेड फॉर क्राइस्ट, रांची।

प्रिय पाठकों जून महीनें के अंक में हमने घरबन्धू के बारे में अध्ययन किया था। हमने सीखा था घरबन्धु का अर्थ है परिवार का संचालक। परिवार के बिषय में अध्ययन करते हुए हमने सीखा था कि परिवार परमेश्वर द्वारा निर्मित एक संस्था है। परिवारिक संस्था के भिन्न भिन्न कर्मचारियों के बारे में हमने संक्षेप में अध्यय किया। अब हम घरबन्धु अध्ययन को आगे बढ़ाते हुए एक एक कर्मचारियों के बारे में बारी से अध्ययन करेंगे। इस अंक में हम "स्त्री" के बारे में अध्ययन करेंगे।

* स्त्री की उत्पत्ति:—परमेश्वर ने आदम को मिट्टी से बनाया परन्तु स्त्री को रचना अलग से मिट्टी न लेकर आदम के ही अंग से एक अंश के द्वारा बनाया। स्त्री के लिए हम कह सकते हैं कि मनुष्य का पूरक है। जैसे साइकिल के दो पहिए हैं उसी प्रकार से स्त्री पुरूष जीवन के दो पहिए हैं। जिस प्रकार से एक पहिए के बिना साइकिल बेकार है उसी प्रकार से स्त्री के बिना पुरूष बेकार है और पुरूष के बिना स्त्री बेकार है।

* स्त्री रचना का उद्देश्य :—स्त्री की रचना करने में परमेश्वर का उद्देश्य यह है कि मनुष्य के लिए परिपूरक बनें। उत्पत्ति दो जध्याय में १८ पद में परमेश्वर कहता है मैं आदम के लिए एक सहायक बनाऊगा। और ऐसा सहायक जो एक दूसरे से मेल खाए। मनुष्य अकेला पन महसूस न करे और जीवन में एक दूसरे के साथी बन कर रहें।

* पतन के कारण:— धर्म शास्त्र बतलाता है कि स्त्री के द्वारा पाप जगत में आया। यहां पर एक प्रश्न उत्पन्न होता है कि स्त्री के द्वारा शैतान ने पाप क्यों कराया ? आदम को शैतान ने क्यों नहीं बहकाया। उत्पत्ति तीन अध्याय में मानव के पतन के बारे में लिखा हुआ है। स्त्री के पाप में गिरने के सात कारण हैं जा उत्त० ३: १-६ पद में मिलता है।

१ अकेलापन :—उत्त० ३:१ को पढ़ने से प्रतीत होता है कि जिस समय शैतान हव्वा के पास आया उस समय वह अकेली थी। यदि इस समय आदम भी होता तो शैतान की चाल कामयाब नहीं होती। स्त्री को अपने पति से दूर नहीं रहना चाहिए। पति से अलग रहने वाली स्त्रियों के सामने शैतान की परीक्षाएं अधिक आती हैं। इसलिए जहां तक सम्भव हो सके स्त्री अपने पति के साथ रहे ताकि शैतान की परीक्षा से बच सके।

२ वार्तालाप :—स्त्रियों की एक आदत होती है बात-चीत करने की। पाप में गिरने का दूसरा कारण यह है कि हव्वा ने शैतान से बात-चीत करने में रूचि लिया। इससे हमें यह शिक्षा लेना चाहिए कि स्त्री को अन्य लोगों से वार्तालाप में दिलचस्पी लेना खतरे से खाली नहीं होता। विशेष कर तर्क वितंक करना अच्छा नहीं होता है।

३ दूसरों की सलाह को तुरन्त मान लिया :— बहुत सी स्त्रियां ऐसी होती हैं जो अपने पति की किसी भी बात को नहीं मानती हैं। कोई भी शिक्षा या सलाह पति देगा तो नहीं मानेंगी। परन्तु यदि कोई दूसरा व्यक्ति गलत शिक्षा या गलत सलाह देगा तो तुरन्त मान लेती हैं। यह आदत स्त्री के लिए हानि का कारण होती है।

४ किसी के सलाह पर विचार न करना :— शैतान ने हव्वा को फल खाने की सलाह दिया और हव्वा ने बिना विचार किए खा लिया। हव्वा को उचित था कि शैतान की सलाह मानने से पहले उसपर विचार करती कि यह कदम सही है या गलत है।

Gossner Mission

* किसी की बातों को तुरन्त नहीं मानना चाहिए बल्कि उसपर पहले विचार कर लेना चाहिए।

५ हव्वा ने फल खाने से पहले अपने आप में नहीं सोचा :—कभी-कभी ऐसा होता है कि कोई कार्य विना सोचे समझे कर बैठते हैं और परिणाम बुरा होता है। परमेश्वर ने हमें समझ दिया है और अच्छा बुरा का निर्णय करने की बुद्धि दिया है। कोई कार्य करने से पहले हमें उसके ऊपर सोचना चाहिए कि जो कार्य हम करने जा रहे वह सही है या गलत है। कहीं हमारे इस कार्य से परमेश्वर को अप्रसन्नता तो नहीं होगी

६ हव्वा ने फल खाने से पहले आदम से सलाह नहीं लिया :—शैतान ने हव्वा को फल खाने के लिए सलाह दिया और हव्वा ने आदम से सलाह लिए विना फल खा लिया। स्त्री के लिए यह उचित है कि कोई भी निर्णय लेने से पहले अपने पति से सलाह लें। हव्वा को यही चाहिए था कि फल खाने से पहले आदम से सलाह लेती। कहती आज सर्प आया था और उसने बताया कि कि इस फल के खाने से नहीं मरोगे इसलिए क्या हम लोग इसे खा लें। मैं सोचता हूं इस प्रकार से यदि आदम से हव्वा पहले इस प्रकार से सलाह मशविरा लेती तो शायद पतन नहीं होता। जो स्त्री अपनी मन मानी करती है पति की सलाह से कोई कार्य नहीं करती वह पतन की ओर जाती है।

७ हव्वा ने आज्ञा उल्लंघन किया और आदम को भी भागीदार बनाया :—उत्पति ३:६ में लिखा है कि 'तब उसने तोड़कर खाया और अपने पति को भी दिया'। धर्मशास्त्र में कई ऐसे उदाहरण है जिसमें स्त्री ने गुनाह किया और साथ-साथ अपने पति को भी उसी गुनाह में खींचा। १ राजा २१, अध्याय में हम पढ़ते हैं राजा अहाब की पत्नी ईजेबेल ने नाबोत की हत्या करवाया और परिणाम स्वरूप दोनों को घृणित मृत्यु का दण्ड मिला। प्रेरितों के काम की पुस्तक में हनन्याह और सफीरा ने गुनाह किया और दोनों को मृत्यु दण्ड मिला

उपर्युक्त सात बातें हमें स्मरण रखना है कि स्त्रियों को चाहिए कि इन बातों से हमेशा सावधान रहें।

पति से अलग न रहे, दूर न रहें बल्कि साथ रहें। दूसरों के साथ अकेले बैठना बात-चीत करना तर्क-वितर्क करना नहीं चाहिए। किसी को चिकनो चुपड़ी बातों में नहीं आना चाहिए। जो भी कार्य करें सोच समझ कर करें और प्रत्येक कार्यों में पति के साथ सलाह लें हर कार्य एक दूसरे के परामर्श से होना चाहिए। और कोई भी ऐसा कार्य न करें जिसमें स्वयं के साथ साथ पति भी दण्डित हो। परमेश्वर आप को आशीष प्रदान करे और इन बातों को समझने में सहायता करे।

समाचार

शादी लाएसेंस अब कहां से मिलेगी।

पहले शादी लाएसेंस के लिए आवेदन सचिव राजस्व एवं भूमि-सुधार विभाग, बिहार सरकार पुराना सचिवालय पटना—१ के पास भेजा जाता था। अब आवेदन प्रधान निबन्धक बिहार सरकार नया सचिवालय, बेली रोड, पटना—२ के पास भेजना होगा। उन्हीं के कार्यालय से शादी लाएसेंस मिलेगी।

(Dr. P. C. Horo)

Gossner Mission

इलाका युवा संघ चट्टी–एक नजर

पी० मिंज, अध्यक्ष (इलाका युवा-संघ)

नोर्थ वेस्ट अंचल के अन्तंगत एक छोटा सा चट्टी इलाका है, इस इलाका की स्थापना गत १९७६-७७ ई० में हुई। पहले यह लोहरदगा इलाका के अधिनस्त एक पेरिश था।

चट्टी इलाका युवा संघ की गति विधी एवं प्रगति के विषय संक्षेप में प्रकाश डाला जा रहा है। गत १०-५-८५ को चट्टी खिस्त गिर्जे में हुए फैसलानुसार निम्न सज्जन इलाका युवा संघ के पदाधिकारी चुने गये।

१) अध्यक्ष - प्र० पैकस मिंज, चाल्हो, २) उपध्यक्ष - श्री बरदान मिंज, भाईसमुन्दो, ३) सचिव - प्र० विलयम बेक, सियाग, ४) उपध्यक्ष- क० ए० जे० एक्का भरनो, ५) कोषाध्यक्ष - श्री हरन लकड़ा चाल्हो, ६) सदस्य - श्री इलियस केरकेट्टा चट्टी, (वनटोली) ७) श्री अबिनास बाड़ा मोरगांव, ८) श्री अब्रहाम तिर्की, मोरगांव ९) श्री जुनास किन्डो, सियाग, १०) सुश्री सरोजनी बेक सियाग, ११) श्री विश्राम पन्ना भाईस मुन्दो, १२) श्री चोन्हास पन्ना, भाईस मुन्दो, १३) प्र० पुरन प्रसाद कुजूर, जयरा १४) श्रीमती विमोला बरला भरना। इलाका स्तर में इलाका युवा संघ संगठन विछेद हो चुका था इलाका की स्थिति दयनीय थी आत्मिक जीवन संकट के घेराब में पड़ा था। मसीही भाई बहन तितर बितर की स्थिति में बिना चारवाहे भेड़ों की नई भटक रहे थे। क्योंकि चट्टा इलाका में शतप्रतिशत विश्वासी कलीसिया का बोल बाला था। ऐसी स्थिति में ईश्वर ने इलाका युवा संघ के भाई-बहनों को बुलाया, और निन्द्र से जगाया और अपने कार्य की जिम्मेदारी सौंपा मत्ती ११:२८ यशा० ६०:१, मत्ती २८:१९-२०। इलाका युवा संघ ने इस पुनीत कार्य को निवाहने के लिए इस कठिन बिड़ा को अपने उपर लिया।

विशेषकार अध्यक्ष महोदय ने स्वयं मण्डली मण्डली भ्रमाण करके भाई बहनों को जगाया, और मण्डली-मण्डली में युवा संघ और सन्ड स्कूल को पुन: रुपेन खड़ा किया। अध्यक्ष महोदय के अथाह प्रयास और परिश्रम का ही प्रतिफल है कि चट्टी इलाका और इलाका युवा सघ एक कदम आगे आप के एक नजर में है।

इलाका युवा संघ ने इस पुनीत बेले में अपने कार्यवाही को पूरा करने के लिए दूसरा कदम बढ़ाया, और वार्षिक बैबल क्लास का अयोजन किया। इलाका के भाई-बहनों के सहयोग से निम्नांकित स्थान, तिथि एवं विषयों को लेकर वार्षिक बैबल क्लास सकुशल सम्पन्न हुआ।

स्थान (मडली)	तिथि	विषय
चाल्हो	२१-२२ मई ८५	लू० ८:४९
मोरगांव	२५-२७ ,, ८५	मत्ती ३:२
सियाग	२८-३० ,, ८७	यशा. ४१:१०
भरनो	२९-३० ,, ८८	भ. सं. ३२:८
जयरा	२८-३० ,, ८९	२ तीमो. ३:१६

प्रथम—(१०) बैबल क्लास चाल्हो में डा. आई. टोप्पो भरनो मुख्यवक्ता के रूप में अमांत्रित थे, वर्षा पानी खूब पड़ने पर भी कार्यक्रम सुकुशल सम्पन्न हुआ। उपस्थिति १०५ थी।

दूसरा--(११) सेमिनर मोरगांव मण्डली में हुआ इस सुअवसर में Rev. Dr. C.A.B. Tirkey और Mrs. S.M. Minz अध्यक्ष महिला संघ रांची आमांत्रित थे, दोनों मुख्य धर्म वक्ताओं के मार्गदर्शन, से जवान युवतियों के बीच आत्मिक उमंग आयो एवं इलाका युवा संघ को भविष्य के लिए प्रेरणा मिली। इस पुनीत बेला में अध्यक्ष के सिफारिश पर २१ जवान युवतियों को Rev. Dr C.A.B. Tirkey और Rev. J. Tirkey के

Gossner Mission

द्वारा पवित्र दृढ़िकरण दिया गया। अन्तिम दिन शाम को साक्षी, एवं भजन होड़ का कार्यक्रम था। सभी कार्यक्रम ईश्वर के निगाह में सफलीभूत रहा कार्यक्रम की सफलता के लिए अध्यक्ष महोदय ने ईश्वर को धन्यवाद दिया और अगन्तुक धर्म अगुवों के प्रति सहानुभूति प्रगट किया।

तीसरा—(१२) युवा शिविर सियांग मण्डली में हुआ इस पुनीत बेला में Rev. Dr. C.K.P. Singh, और Mrs. S.M. Minz, मुख्य प्रवक्ता के रुप में सदर आमंत्रित थे। प्रवक्ताओं ने दिए गए विषय पर जन सामुह को सम्बोधित किए वक्ताओं के निराले प्रवचन, जवान-युवतियों की उपस्थिति और मसीही गान-भजन से ऐसा अनुमान लगाया जा सकता था कि हम आत्मिक प्रगति में हैं।

अध्यक्ष महोदय के सिफारिश पर सुश्री सोसन मिंज, नरौली और हेरमन बेक, सियांग का पवित्र दृढ़िकरण Dr. C.K.P. Singh, Ranchi, के करकमलों में सकुशल सम्पन्न हुआ। इसी के साथ साथ एक बालक बापतिस्मा भी हुआ।

इस सुभअवसर में Mrs. S. M. Minz अध्यक्ष महोदय ने बाईबल से सम्बन्धित एक हिन्दी गीत से अगुवाई किई, जिसका मूल (सर) था "मसीही उन्नति" इस गीत का सत्रक हमारे युवा संघ के लिए "उन्नति का केन्द्र बिन्दु" बना इसे आज भो हम आनन्द से गाते हैं।

इलाका युवा संघ की ओर से नोर्थ वेस्ट अंचल के लिए दान स्वारूप ८८.६५ पै० भेंट प्रदान किया गया। कार्य कुशलता की सफलता के लिए अध्यक्ष महोदय ने कहा हम तीसरी साल तीन कदम आगे हैं और कार्यशील रहेंगे, तो परिश्रम का परिणाम अच्छे और सच्चे होंगे, हम ईश्वर को धन्यवाद देते हैं, और उपस्थित धर्म वक्ताओं के प्रति अभारी का कामना करते हैं। भाई बहनों की सहयोग के लिए धन्यवाद इन्हीं शब्दों के साथ अध्यक्ष महोदय का धन्यवाद ज्ञापान अन्त हुआ। गत तोन साल को उपस्थिति क्रमश: १०५, २२५, २६२ रही है।

चौथा—(१३) वार्षिक युवा अधिवेशन भरनों में हुआ इस पुनीत बेला में अध्यक्ष महोदय अपने विशेष कार्य के कारणवस अनुपस्थित थे।

भरनो बैबल क्लास पाद्री ए० जे० एक्का साहब के अध्यक्षता में हुई, इस बैबल क्लास में O. M. Team I.E.H.C. के जवान धर्म अगुओं के रूप में आमंत्रित थे, इस अवसर में गत १९९६ का लॉटरी इनाम जो इलाका युवा संघ की ओर से निकाला गया था। इलाका चेयरमेन के हाथों से बाँटा गया।

पांचवी—(१४) वार्षिक धर्म मेला "जयरा-मण्डली" में हुआ, इस वर्ष मार्ग दर्शन एवं आत्मिक आगुवाई के लिए, १) पाद्री डा० आर० डांग, रांची। २) पाद्री ओ० लकड़ा, चैनपुर। ३) पाद्री टी० किस्पोट्टा, गुमला, आनंत्रित थे। किन्तु तीनों धर्म अगुवे अनुपस्थित का परिचय दिए। ऐसी स्थिति में इलाका के माने धर्म अगुवों से मार्ग दर्शन मिला, इस वर्ष भी जवान युवतियों को पवित्र दृढ़िकरण पाद्री ए० जे० एक्का के द्वारा दिया गया। अन्तिम दिन शाम को भजन होड़ एवं स्थानीय मण्डली के भाई बहनों द्वारा कौमिक का प्रदर्शन किया गया। मेस्स मैंनेजर के अनुसार कुल ७३१.२५ आय, एवं बिभिन्न मद में कुल ७०५.६० व्यय और इलाका युवा संघ हेतु २५.६५ बचत का रिर्पोट दिया, इसी क्रम में १०.०० ईश्वर सहाय बाड़ा, मोरगांव ओर १५.०० प्रभु सहाय तिर्की जुरी ने इलाका युवा संघ को भेंट स्वरुप दान दिए। धन्यवाद ज्ञापान इलाका चेयरमेन पाद्री एक्का साहब ने अपने शब्दों से युवा संघ की भविष्य उज्जवाल हेतू कहा।

इलाका युवा संघ चट्टी के अध्यक्षता में मानव

Gossner Mission

हीत एवं इलाका के जन कल्याण के लिए निम्न कार्य सम्पन्न हुई।

१ मण्डली-मण्डली में युवा संघ और सन्डे स्कूल का गठन• १९८५, २) युवा शिविर में पवित्र दृढ़िकरण का अनुष्ठान १९८६-८७, ३) बालक का बापतिस्मा १९८७, ४) चट्टी इलाका महिला संघ का गठन ३०-५-८७, ५) चट्टी इलाका का पुनः गठन १३-६-८७।

गत ३०-५-८७ को इलाका युवा संघ चट्टी पुनः परिवर्त्तनशील किया गया, नये पदाधिकारियों की सूची नीचे अंकित है।

१) अध्यक्ष—प्र. पी. मिंज, चाल्हो, २) उपध्यक्ष-श्री टी. एक्का सियांग, ३) सचिव—श्री प्र. बी. बेक, सियांग ४) उपसचिव—पाद्री ए. जे· एक्का भरनो ५) कोषाध्यक्ष—श्री एच. लकड़ा, चाल्हो ६) उपकोषा. - सुश्री एन. टोप्पो, सियांग ७) सदस्य—श्री एस. खाख, चट्टी ८) श्री ए. बाड़ा मोरगांव ९) एस. पन्ना; भाईसमुन्दो १०) पी. बी. बाड़ा, भरनो ११) प्र. पी. कुजूर जयरा १२) सुश्री एस· बेक, सियांग १३) एस. मिंज नरौली १४) ए· टोप्पो जयरा १५) श्री बी.-लकड़ा, चाल्हो।

चट्टी इलाका युवा संघ पांच वर्षों के पश्यचात आप के नजर में एक है कार्य अनेक सेवक और पदाधिकारी बहुत होते हुए भी, दान और वरदान प्राप्त करके एक ही आशा, विश्वास और बापतिस्मा के मध्यम से एक ही परमेश्वर की निगाह में आत्मिक उन्नति की ओर "एक नजर में" रोमी १२:४-८, इफिसी ४:४-६। धन्यवाद

"अगले अंक :—चट्टी इलाका की एक झांकी" प्रस्तुत किए जायेंगे।

अन्धियारे में ज्योति चमकी

सी० डी० के० कुजूर

बाइबल हमें बतलाती है, "जो लोग अन्धियारे में चल रहे थे उन्होंने बड़ा उजियाला देखा; और जो लोग घोर अंधकार से भरे हुए मृत्यु के देश में रहते थे, उनपर ज्योति चमकी।" यशायाह ९।२१

बाइबल में सृष्टि की घटना को पढ़ते समय हमें ज्ञात होता है, कि "आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की। और पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी: और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था ··· तब परमेश्वर ने कहा, उजियाला हो; तो उजियाला हो गया।" यों उजियाला के हो जाने से सारी पृथ्वी में जहां बेडौलपन और सुनसान सा था, अजीब डरावना भी था; न केवल इतना ही परन्तु इस अवस्था विशेष के विषय हम और भी क्या क्या सोच सकते हैं। परन्तु ज्योंही उजियाला आ गया अजीब तरह का दृश्य चारों ओर बिखर गया। आप अनुभाव कर सकते हैं, अन्धेरी रात में घर अथवा बाहर में जब बिजली की बत्ती या किसी प्रकार की चिराग नहीं दिखती, कैसा लगता है? लेकिन जब बिजली या चिराग आ जाए तो चारों ओर आनन्द की लहर बिखर जाती है और बहुत सारे कार्य आरम्भ हो जाते हैं। चारों ओर जगमगाने लगता है।

अभी हाल मई महिने में आप ने एक परचा पाया (**Project Russia**) जो भारत की बाइबल सोसाइटी, बिहार शाखा द्वारा दिया गया था। रूस देश जो कम्युनिष्ट राज्य है, जहां ख्रिस्त विश्वासियों को विभिन्न दर्दनाक यातनाएँ सहनी पड़ी, जेल जाना पड़ा, जहां बाइबल को तुच्छ दृष्टि से देखा गया, तुच्छ माना गया। परमेश्वर के वचन के लिए रूस अन्धियारा था। यद्यपि रूस में ख्रिस्त विश्वासियों की संख्या काफी है,

Gossner Mission

फिर भी वे खुलेआम अपना धार्मिक अनुष्ठान नहीं कर पाते। परन्तु आज अब वह नहीं रहा, क्योंकि अन्धियारे में ज्योति चमक चुकी है। गत् साठ वर्षों से रूप अन्धियारे में था, अब वहां ज्योति चमकी है। १९८८ में युनाइटेड बाइबल सोसाइटी ने सोवियत संघ रूस को दो लाख बाइबल की प्रतियां भेजी। फल यह हुआ कि अभी उन्हें अर्थात सोवियत संघ रूस को और छः लाख बाइबल की प्रतियां चाहिए। इतिहास में सोवियत संघ रूस के लिए यह पहिली घटना

जिस देश में सुसमाचार के लिए दरवाजा वर्षों तक बन्द था, आज खुल गया है। परमेश्वर के इस महान और प्रेममय सुप्रबन्द के लिए कि जहां उसके वचन के लिए द्वार बन्द थे, अब खुल गए, जहां अन्धियारा था, उसने कहा "उजियाला हों"। हम उसे धन्यवाद दें।

परमेश्वर के वचन के लिए जब रुस के बन्द दरवाजे खुल गए, जहां अंधियारा था, अब उजियाला आ गया है, आप को परचा मिला, परचा नहीं भी मिला या इसके विषय आप ने सुना ही केवल। फिर भी विभिन्न कलीसिया और मण्डलियों से ही रोमी मन्डलियों से भी, संस्थाओं से, टोले-महलों से, दूर-दराज गांव-देहातों से व्यक्तिगत् और सामुहिक रुप में आप ने अपना प्रेमपूर्ण सहयोग दिया। जब आप के द्वारा प्राप्त रकम की रसीद काट रहे थे तो आश्चर्य हुआ कि कुछ ऐसे व्यक्तियों ने भी अपना अनुदान जमा किया, अर्थात नहीं दे सकने वालों ने भी दिया है। सब का नाम लिखना सम्भव नहीं। परन्तु इस समय मात्र एक का नाम काफी है और हमारे लिए एक चुनौती है; नेत्रहीन भाई हेरन हेम्ब्रोम, राँची, ऐसे और भी हो सकते हैं।

इस निमित्त बिहार शाखा का हमारा जो लक्ष्य था वह एक हजार बाइबल प्रतियों का मूल्य। परन्तु आप के प्रेमपूर्ण सहयोग और प्राप्त अनुदान से हम अति प्रभावित हुए हैं। आप में से प्रत्येक को जिन्होंने उस रेश रुस के हमारे संगी विश्ववसियों को परमेश्वर का वचन देने में अपना योगदान दिया, कितनों को आप ने देने के लिए उभाड़ा और कितनों ने अनुदान जमा करने में सहयोग, दिया सभों को धन्यवाद।

इस पत्रिका में छापने के लिये लिखे इस लेख की पूरी होने तक में प्राप्त अनुदान तीन हजार दो सौ बाइबल प्रतियों का मूल्य प्राप्त हुआ है। मिलने की और आशा है, क्योंकि अभी भी परचे लिए जा रहे हैं। क्योंकि दरवाजे खुल गए हैं, न जाने कब बन्द हो जाए और बहुतों के लिए सुनहरा अवसर बीत जाए

"जो लोग अंधियारे में चल रहे थे, उन्होंने बड़ा उजियाला देखा·····और उन पर ज्योति चमकी।"

बाइबल हाउस
राँची।

कलीसिया महिला संघ

श्रीमती एस० एम० मिंज

कार्यरत्त—प्रचारिकाओं का प्रथम शिक्षा शिविर :—

बड़े हर्ष का विषय है कि मेरी ६ वर्ष की लगातार प्रार्थना परमेश्वर पिता के द्वारा सुनी गई। मैं परमेश्वर पिता का हृदय से धन्यवाद करती हूं कि उनकी दया एवं अगुवाई के कारण प्रचारिकाओं का शिक्षा शिविर दिनांक १२, १५ अगस्त में जी० ई० एल० चर्च कम्पौण्ड लाल बंगला में सफलता पूर्वक सम्पन्न किया गया। सोलह प्रचारिकाएं क्रमशः उत्तरी पच्छमी अंचल से दो, उड़ीसा अंचल से तीन और दक्खनि पूर्बी से ग्यारह थीं। इस शिक्षा शिविर में शिक्षक डा० सी० के० पी० सिंह के द्वारा बहुत ही प्रभाव

Gossner Mission

पूर्ण एवं सारर्भित बैबल अध्ययन दिया गया। इस अध्ययन के द्वारा प्रचारिकाओं एवं साथ ही हम संघ के अफसरों को हमारे कार्य और सेवकाई का आगे बढ़ाने के लिए आत्मिक गार्मथ एवं मार्ग दर्शन प्राप्त हुआ। हमें यह बताया गया हम क्या हैं कहाँ है और हमें क्या करना है। दूसरे शिक्षक पादी एम० एक्का प्रध्यापक आध्यात्मिक महाविद्यालय के द्वारा वर्त्तमान परिवेश में महिलालों के कार्य के सम्बन्ध में बहुत ही सुन्दर शिक्षा दी गई। तीसरे शिक्षक हमारे प्रमुख अध्यक्ष थे किन्तु उनके अनुपस्थिति में हम उनकी शिक्षा से बंचित रहे इसका हमें खेद है। किन्तु उनका सहयोग प्रचारिकाओं को एक ओर के यात्रा भत्ता देने में हमारे साथ रहा। जिससे हम उनका धन्यवादी और आभारी हैं।

सब से अधिक प्रभाव पूर्ण प्रचारिकाओं के कार्य का प्रतिवेदन रहा। जिसके माध्यम से हमें प्रचारिकाओं के कार्य उनकी परिस्थिति एवं कलिसिया में उनका स्थान और पहचान क्या है, स्पष्ट हुआ। यह प्रतिवेदन कलोसिया महिला संघ के लिए मार्ग दर्शक साबित हुआ है। हमें मार्ग दर्शन मिला है कि हम उनकी समस्याओं का समाधान कलीसिया के अधिकारियों से मिलकर दशक सुनहरे अवसर पर करें। हम इसके लिए प्रतिज्ञा वद्ध हैं। शिविर की पूरी जानकारी क्रमशः अगले अंकों में दिया जायगा जिससे पूरी कलिशिया प्रचारिकाओं के कार्य और समस्याओं को जानें और हमें कार्य करने में सहायता प्रदान कर सकें।

कलीसिया महिला संघ १५ मई से रांची में **English spoken class** चला रही है। प्रचारिका शिक्षा शिविर उसकी आमदनो का पहला फल है। आगे भी महिलाओं के बीच कार्य करने वाली वहनों की तैयारी के लिए अगुओं का प्रशिक्षण और प्रति वर्ष प्रचारिका शिक्षा शिविर किया जायगा।

जी. ई. एल. कलीसिया महिला संघ छोटानागपुर और असम का वार्षिक शिक्षा सम्मेलन

दिनांक—६-१२ अक्टूबर १९८९

मूल वचन—"मैं ने नये आकाश और नई पृथ्वी को देखा क्योंकि पहिला आकाश और पहली पृथ्वी जाते रहे।" प्र० वा० २१:१

आप सभी बहनों, युवा वर्ग एवं भाइयों को सूचित करते हमें हर्ष हो रहा है कि इस वर्ष हम बड़े धूमधाम के साथ मध्य अंचल के खूंटी टोली जी० ई० एल० मिशन अहाते में कलीसिया महिला संघ का शिक्षा सम्मेलन प्रति वर्ष की तरह करने जा रहे हैं। महिला दशक का आह्वान है कि हम पूरी मसीही मण्डली के साथ है अतः सब को हार्दिक निमंत्रण है।

शिक्षा का विषय—"एक नया समुदाय एक जीवित समुदाय" और 'हमने अपने लोगों की प्रार्थना सुनी है"

दिनांक—६-१०-१९८९ संध्या आगमन।
उद्घाटन—संध्या ७.३० द्वारा अंचल अध्यक्ष, मध्य अंचल पाद्री अ० डुंगडुंग।

१०-१०-१९८९

४.०० वजे सुवह उठना।
६ से ७ वजे चाय नाशता।
७.१५ से ८.३०—महिला दशक का उद्घाटन द्वारा प्रमुख अध्यक्ष पाद्री एम० टेटे।
दशक के विषय—श्रीमती एम० एम० मिंज, सभापति कलीसिया महिला संघ।
८.३०—८.४५ संगीत।
८.४५—९.३० बैबल अध्ययन, डा. सी. के. पी. सिंह।

Gossner Mission

६.३०—६.४०	अवकाश ।
६.३०—६.५०	संगीत
६.५०—१०.४५	"मैं अपने लोगों की प्रार्थना (पुकार) सुनी" । पाद्री एम. टेटे प्रमुख अध्यक्ष ।
१०.५० – १२.००	वाद-विवाद
१२.००—२.००	भाजन एवं विश्राम
२.००—२.१५	संगीत और उपासना, श्रीमती अ० केरकेट्टा, सहायक सचिव, क० म० सं०
२.१५—३.००	"नया समुदाय, जीवित समुदाय पाद्री सी० एस० आर० टोपनो अध्यक्ष द. पू. अंचल ।
३.००—४.००	बाद-विवाद
४.०० – ५.००	रिर्पोट (बाद-विवाद का)
५.००—७.३०	चाय और अवकाश
७.३०—८.३०	खाना और आराम
(६.००—९.००	कार्य-कारोणी सभा)

११-८-८ :

४.००	सुबह उठना
७—८	चाय, नास्ता
७.१५—:	उपासना (प्रचारिका रहिल-टेटे) और संगीत
८.००—८.४५	बैबल अध्ययन
८.४५—९.३०	बाद-विवाद
९.३०—९.४०	अवकाश
९.४०—९.५०	संगीत
९.५०—१०	"एक नया समुदाय, एक जीवित समुदाय" पादी सी. एम. आर. तोपनो, अध्यक्ष द. पू. अंचल
१०.४५—११.३०	वाद-विवाद
११.३०—१२	दिल्ली कार्य-शाला का प्रति-वेदन । खजांची कलीसिया महिला संघ श्रीमती एस०-पूर्ती ।
१२.००—२.००	भोजन एवं विश्राम
२ .००—२.१५	संगीत और उपासना प्रचारिका एसरेन हेरेंज
२.१५—२.४५	स्वास्थ्य—श्रीमती एच. टेटे, उप सभापति क. म. सं. ।
२.४५—३.३०	समापन्न, प्रमुख अध्यक्ष एम.-टेटे ।
३.३०—४.३०	निचोड़ निकालना और कार्य-क्रम निर्धारित करना
४.३०—५.३०	संघ और अंचल रिर्पोट
५. ०—५.४०	अवकाश
५.४०—६.३०	धन्यावाद ज्ञापन, सभापति एवं विदाई, प्रमुख अध्यक्ष, पाद्री-एम० टेटे ।
७—८.३०	प्रेम भोज
८.३०—९-३०	मनोरंजन ।

आवश्यक सूचना :—९ अक्टूबर आगमन १३ अक्टूबर प्रस्थान ।

मेस्स खर्च प्रतिबेला :—चावल आधा किलो। दाल एक छाटक । (१०० ग्राम) और २ रूपया ।

सिर्फ पैसा देने वालों के लिए प्रति बेला ६ रूपैया । अपना जरूरी सामान के साथ गिलास लेते आवें सम्मेलन में नियमावली और बेज बेचा जायगा । अंचल प्रतिनिधिगण अपना वार्षिक लिखित रिपोर्ट, संघ देन, दशक और विश्व प्रार्थना दिवस का आराधना पुस्तिका का दाम और विश्व प्रार्थना दिवस दान लेते आवें ।

विनीत

सभापति	उप-सभापति	खजाँची	उप-सचिव
एम० मिंज	एच० टेटे	एस० पुर्ति	अ० केरकेट्टा

कलीसिया महिला संघ

Gossner Mission

जीवन साथी का चयन

जीवन साथी के चयन में युवक-युवतियां परमेश्वर पिता को रबर स्टाम्प के सदृश्य काम में लाते हैं। यह बड़ा भूल है। अतः इस विषय पर निम्नांकित कदम उठाना आवश्यक है।

कदम : १) प्रार्थना :–जीवन साथी के चयन के लिए आप को ईश्वर से प्रार्थना करना है। परमेश्वर से आप जीवन साथी मांगिए। आप का जीवन साथी ईश्वर के पास है। आप के समस्त जीवन की जिम्मेवारी परमेश्वर के हाथ में है। ईश्वर आप के मनोरथों को पूरा कर सकता है (भजन ३७:४-५)। जीवन साथी के निमित्त प्रार्थना करने के उपरान्त विश्वास कीजिए कि ईश्वर प्रार्थना का उत्तर देगा, (मत्ती ७:७-११, २६-४१; ६:८; मार्क ११:२४; फिलि. ४:१६; उत्पति २४:१२-१४)।

कदम : २) ईश्वर की इच्छा :–रोमी १२:१-२ में ईश्वर की तीन प्रकार की इच्छाओं का वर्णन किया गया है, (१) ग्रहण योग्य इच्छा (२) सदइच्छा (३) पूर्ण इच्छा। जीवन साथी की इच्छा करते हुए आप अपनी पसन्द की विपरित लिंग के भिन्न-भिन्न सदस्यों को मिलेंगे। पर आप को ईश्वर की संपूर्ण इच्छा के साथ होने वाला/वालो को ढूंढ़ेंगे। यह सच है कि जीवन साथी की खोज में ईश्वर की पूर्ण इच्छा पाना कठिन प्रतीत होता है। इस विषय में धीरज की आवश्यकता है। हडबड़ी न करें। प्रार्थना करे। ईश्वर अगुवाई देगा। प्रभु अपने ठहराये हुए समय में बतलावेगा।

बहुत से जवान इस विषय में अपनी इच्छा को प्रधानता देकर गलत करते हैं। ईश्वर की इच्छा से अलग आप गलत जीवन साथी चुन सकते और अपने जीवन को दुःखी बना सकते हैं।

कदम : ३) ईश्वर की अगुवाई—ईश्वर आप को जीवन साथी चुनने में अगुवाई देगा। ईश्वर को कार्य करने दीजिए। अपनी इच्छा छोड़ दें। अपनी सारी चिन्ता उस पर डाल देवें। चूंकि ईश्वर को आप की आवश्यकताओं की चिन्ता है, (१ पतरस ५:७) बैबल के अनुसार तो ईश्वर जवानों से प्रेम रखता है ईश्वर शादी स्थपन के विषय भी आप प्रबन्धक हैं। उसकी अगुवाई में अपने आप को सौंप देवें। (भ. सं ३७ नीति ३:५; ६:२१-२६; ८:१०; ३१:१०-३१)।

कदम : ४) आज्ञापालन—बैबल में कहा गया है कि आज्ञापलन बलिदान से उत्तम है। जीवन साथी चयन में भी ईश्वर को अगुवाई आवश्यक है। आज्ञापलन अवश्य कभी कभी कठिन है परन्तु इसका प्रतिफल अन्त में मीठा ही है।

ढूंढ़ो तो पाओगे। ईश्वर ढूंढ़ने वालों को उत्तम वस्तु देता है। शादी स्वर्ग में ठहरायी जाती है। ईश्वर आज्ञापालन करने वालों को उत्तम पत्नी देगा। (१ शमु. १५:२२, क्रिया ५:२६; यिर्म. २६:१३; ७:२)।

कदम : ५) कलीसिया का विश्वस्त सदस्य बने रहे—कितने युवक केवल जीवन साथी प्राप्त करने के लिए कलीसिया की सदस्यता ग्रहण करते हैं। शादी के उपरान्त उनका असली रूप प्रगट होता है।

ईश्वर नहीं चाहता है कि ज्योति एवं अंधकार मिश्रित हो जावें। अतः मसीही युवक एवं युवति को मसीही युवक/युवति से शादी करना है।

जोवन साथी के चयन में, प्रार्थना, ईश्वर की इच्छा, अगुवाई और कलीसिया का विश्वस्त सदस्य बना रहना आवश्यक है। ईश्वर की इच्छा के अनुसार पांच कदम बढ़ाइये और सुखी ईश्वरीय परिवार में जीवन बिताइये।

— (लगातार)

Gossner Mission

संक्षिप्त रिपोर्ट

Asian Pre-Assembly Meeting

June 29–July 4, 1989, Penang

खिस्त सहाय तिग्गा

लुथेरान वर्ल्ड फेडरेसन का Pre Assembly meeting मलेशिया के पेनांग टापू में २९-६-८९ से ४-७-८९ को ठहराया गया था। जहां Asia के देशों के लुथेरान कलीसिया के कलीसा के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। यह meeting L.W.F. के जगतीय स्तर पर Brazil में ३०-१-९० से ८-२-९० तक होना है कि तैयारी meeting थी। प्रत्येक महादेश में यह तैयारी meeting रखी गई थी जहां उस महादेश के लुथेरान कलीसियाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। पेनांग में भारत, वंगलादेश, चीन, इन्डोनेशिया, जापान, जार्डन, कोरिया; मलेशिया पपुवा, न्यू-ग्युनिया, फिलीपीन और ताइवान के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसके अलावे मेहमान प्रतिनिधि के रूप में आस्ट्रेलिया, थाईलेण्ड और जिम्बाबे के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया।

भारत के सभी नौ लुथेरान कलीसियओं के प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया। हमारी कलीसिया से प्रमुख अध्यक्ष Rev. M. Tete, महिला प्रतिनिधि श्रीमती हिरलीन टेटे एवं Layman प्रतिनिधि श्री खिस्त सहाय तिग्गा ने भाग लिया।

पेनांग एक रमनीय छोटा टापू है जहां एक तीन सितारे हॉटल में ठहरने एवं meeting की व्यवस्था की गई थी meeting ८.३० A. M. से ४.३० P. M. तक होती थी।

इस meeting का मुख्य Theme था "I have heard the cry of my people."

इस Theme को चार भागों में बांटा गया था।

(i) Life in communion
(ii) Salvation
(iii) Peace with justice
(iv) A liberated creation

प्रत्येक भागों पर विद्वान धर्म-वेत्ताओं ने प्रकाश डाला इसके बाद Group discussion के लिए 6 Group बनाया गया, जिसमें उपस्थित प्रतिनिधियों को उनके रूचो के Group में रखा गया। Group इस प्रकार था।

1 I have heard the cry of my people.
2 Life in communion
3 Peace with justice
4 Salvation
5 Liberated creation
6 Restructure

Group discussion के बाद प्रत्येक Group discussion का सारंश सभा के सामने प्रस्तुत किया।

प्रत्येक कलीसिया का संक्षिप्त Report भी सभा के सामने प्रस्तुत किया गया। बंगला देश की लुथरान कलीसा सब से नई है और आर्थिक कठिनाइयों के बीच गुजर रही है। इसके पाद्रियों को जीवन यापन के लिए दूसरा काम भी करना पड़ रहा है। महिला संघ से भी महिला प्रतिनिधियों ने अपने विचार रखे। महिलाएं कलीलिया में अपनी भागीदारी के लिए जोर दिया। कलीसिया में महिलाओं को पुरोहित के रूप में स्वीकारने पर बल दिया।

जवानों के समस्याओं को भी सभा के बीच रखा गया। आज पूरे विश्व में जवान धर्म से

(शेष पृष्ट २१ में)

Gossner Mission

समाचार

पाद्रियों का शिक्षा क्लास

(१) आयोजन कर्त्ता : - Senate of Serampore College—तिथि,

अक्टूबर २५, २८-१९८९

केवल एक पीठ का भाड़ा पादियों को वाहन करना है। स्थान सिरामपुर। खाना-पीना एवं एक पीठ का भाड़ा College की ओर से दिया जायगा। Registration fee Rs. 30/- पादी को देना है।

(२) आयोजन कर्त्ता :—
विहार खिस्टियन कौंसिल।

स्थान :— Bandorjury Mission
P. O. Dumka.
814101
Dt. Dumka, (Bihar)

समय :—सितम्बर १९, २२-१९८९ बिहार क्रिस्चियन कौंसिल की ओर से निम्नांकित कलीसियाओं के पादीगण शरीक होंगे

	नाम	संख्या
१	जी. ई. एल.	१०
२	पटना (CNI)	१०
३	एन. ई. एल. सी.	२०
४	छोटानागपुर (CNI)	८
५	मेथोडिस्ट	२
६	मेनोनाइट	४
७	अन्य कलीसियाओं से	५

(३) UELCI की ओर से डुमका में शिक्षा क्लास अगस्त २७, सितम्बर २/१९८९ हुई। शिक्षा क्लास में GELC, NWGBLC, MPELCI और NELCI के पादिगण शरीक हुए।

डा० राजारत्नम का जन्म दिन मनाया गया।

६ अगस्त को डा० राजारत्नम का ६८ वां जन्म दिन मनाया गया। पहली बेला उसके नाम में गुरूकुल थियोलोजिकल कॉलेज में धन्यवाद को आराधना की गयी। दूसरी बेला जन्म दिन मनाया गया। सभी लुथरन कलीसियाओं के प्रतिनिधिगण उपस्थित थे। राजारत्नम के नाम में गुरूकेल चतुर्थ वर्ग के कर्मचारियों के लिए पेन्शन की व्यवस्था को गयी। छात्राओं को रंगीन टेलेविजन दिया गया। राजारत्नम को भी कलीसियाओं की ओर से इनाम दिया गया।

(पेज २० का लगातार)

दूर होते जा रहे हैं और कहीं कहीं तो बगावत पर भी उतर आते हैं। कलीसिया में उनकी भी भागीदारी देना आवश्यक है।

Meeting के दरमियान २-७-८९ रविवार को पेनांग के एक सुन्दर गिरजा घर में अराधना के लिए पूरी सभा ने भाग लिया। पवित्र प्रभुभोज का अनुष्ठान भी था। उसी दिन Site Seeing का प्रोग्राम था।

Meeting प्रार्थना के साथ समाप्त हुआ।

यह Meeting खास कर मेरे लिए सदा स्मरणीय रहेगा। भारत के सभी नौ कलोसिया के विषय जानने एवं उनकी संगति का आनन्द लेना बहुत आनन्द दायक अनुभव था। पूरे Asia के लुथरान प्रतिनिधियों की संगति भी एक अच्छा अनुभव था। इतना विशाल लुथरान परिवार है इसको जानकर हृदय गद्गद् हो उठा। Lutheran world federation ने इस सभा का पूरा खर्च बहन किया (हमारी कलीसिया के प्रतिनिधियों को मद्रास तक आने-जाने का खर्च छोड़ कर) वहां की व्यवस्था बहुत ही सुन्दर थी।

Gossner Mission

प्रभु में प्रियो,

यीशु सहाय।

अगस्त अंक में आप का नया वेतन मान प्रकाशित किया गया है। नया वेतन मान आप को मंडली देगी। मंडली आप का दाखबारी/खेतीबारी है। इसी दाखवारी/खेतीवारी से आप के लिए एतवार सिरनी/घड़ा सिरनी/मंडली पैसे/धन्यवाद दान आदि फल मिलेंगे। इन फलों की प्राप्ति के लिए आप को समयानुसार परमेश्वर के वचन के बीज को बोना है। जैसा आप समयानुसार निर्मल वचन का बीज बोवेंगे वैसा ही आनन्द की कटनी अर्थात एतवार सिरनी आदि आप प्राप्त करेंगे। अत: आप का उपदेश मंच वचन की सेवा के लिए है। आप दाखवारी/खेती वारी के विण्यस्त माली/किसान परमेश्वर की ओर से नियुक्त हैं। अत: मंडली के सदस्यों के दु ख/सुख दोनों परिस्थितियों–समय/असमय में आप उपस्थित हैं। युवक/युवतियों को भटकने से बचावें। बूढ़े/बुढ़ियों को शान्ति देवें। मंडली सुधार के लिए शिक्षा, आचार व्यवहार में निष्कलंक रहें। मंडली सेवा को उपरी कमाई का आधार न बनावें। सम्पूर्ण जीवन मंडली को देवें, मंडली आप को सम्पूर्ण नया वेतनमान देगा।

मार्टिन टेटे
प्रमुख अध्यक्ष
१-६-८६

टाटा नगर लोटरी रेजल्ट

(1) Sewing Machine (No. A. 4393) Gossner Middle School (Ranchi).
(2) Tharmas (No A. 469) —Dumka.
(3) Bag (No. B. 588) — Mr. J. M. Nag, Token Khatanga, (Marcha-Ranchi).
(4) Torch Light (No. A. 2808)—Mr. M. C. Barla, Borbil
(5) Plastic Bncket (No. B 400) — Asisan Kandulna, (Kulahauded Marcha)
(6) Tray (No. B. 716) — Marcha
(7) Steel Tiffin (No. B. 9864)

कृपया पत्र व्यवहार या मनीआर्डर भेजते वक्त अपना ग्राहक न० अवश्य लिखें।

एडिटर, घरबन्धु।

Edited & Published by Rev. Martin Tete, Pramukh Adhayaksh on behalf of the G. E. L. Church and printed by Mr Hans Rashan Surin at G. E. L. Church Press Main Road, Ranchi

Gossner Mission

aus Akte

G1/125

(Lfd. Nr. 66)

Gossner Mission

धर्मबन्धु

रजिस्टर्ड न० आर० एन० सी० ४
वार्षिक मूल्य १४ रु०
एक प्रति मूल्य १ रु० ५० पै०

वर्ष— १०५ राँची, अक्टूबर १९८५ संख्या न०—१०

अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष 1985

अपनी जवानी के दिनों में अपने सृजनहार को स्मरण रख, इससे पहले कि विपत्ति के दिन और वे वर्ष आएं, जिनमें तू कहे कि मेरा मन इन में नहीं लगता।

सभोपदेशक १२ : १

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

Editor & Publisher

Pramukh Adhyaksh

Rev. S Mohan MG.

Associate Editor

Rev. S. Toppo

Promoter

Rev. Saban Martin Topno

Editorial Committee

1 Sri A. Kerketta
2 Mrs. M. Minz
3 Rev. Cyril Hembrom
4 Srimati Sisi Baha Topno

घरबन्धु में विज्ञापन छपवाने की दरें

पिछले आवरण का बाह्य पूर्ण पृष्ठ	१७५)
,, ,, ,, अर्द्ध पृष्ठ	९०)
,, ,, ,, अन्तः पूर्ण पृष्ठ	१५०)
,, ,, ,, अर्द्ध पृष्ठ	८०)

x x x

अन्दर के पूर्ण पृष्ठ	१२५)
,, ,, ,, अर्द्ध पृष्ठ	७२)
,, ,, ,, एक चौथाई पृष्ठ	४०)
,, ,, ,, दो तिहाई पृष्ठ	९०)
,, ,, ,, एक तिहाई पृष्ठ	५०)

सूची

१ सम्पादकीय ३
पाठकों की आवाज ४
पत्र मिला ... ६
उपदेश की तैयारी ... ७

२ लेख
मतसंशोधन ९
मसीही युवा एवं मसीही संगीत ... १४
१९८५ युवा-वर्ष बनाम युवावर्ग १५
तरंग १८
अकेलापन २०

३ समाचार-जगत
दक्षिण-पूर्वी अंचल युवा-संघ २१
लॉटरी का परिणाम २३
घरबन्धु लेख प्रतियोगिता न० (एक) का परिणाम २४
घरबन्धु विचार मंच २५

४ ज्ञान-विज्ञान
बाइबिल पहेली प्रतियोगिता(एक) २६

Gossner Mission

आप सभों को अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष १९८५ के नाम से मसीही नमस्कार। हमारे देश तथा विश्व के युवा-वर्ग को वधाई देता हूँ एवं उनके लिए शुभ-कामनाएं चाहता हूँ। हमारे लिए युवा-वर्ष गौरव का वर्ष है कि हमारे भारत देश के प्रधान मंत्री श्री राजीव गाँधी एक युवा नेता देश के शासन का कठिन भार अपने ऊपर लिए हैं युवाओं को दिन रात जल थल तथा वायु सेना में रह कर देश की रक्षा में नित्य तत्पर्य हम पाते हैं। युवा ही देश के रक्षक, उन्नति की शक्ति और धन के स्रोत है। युवा ही हमारे देश, घर, समाज, के भावी सहारा है। अतः हमारे युवक-युवतियों का हरएक परिवार से लेकर उच्च शिक्षण संस्थाओं में उचित मार्ग दर्शन हो। हमारे युवा देश, समाज एवं परिवार के लिए योग्य आदर्श युवा बने ताकि माता पिता समाज एवं राष्ट्र को गौरव प्राप्त हो। पाठकों से निवेदन है कि सभी युवाओं के लिए ईश्वर से प्रार्थना करे ताकि हमारे युवा-वर्ग देश एवं विश्व के लिए आशीषमय हों।

सम्पादक

पाद्री एस० मोहन एम०सी०।

Gossner Mission

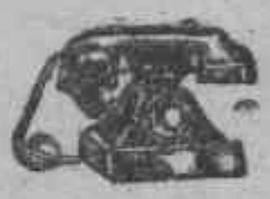

पाठकों की आवाज

जवाब हमारे

आवाज—जीदेन मुन्डू, अधीक्षण अभियन्ता, सिंचाई विभाग याँत्रिक अंचल
वीरपुर सहरसा (बिहार) से लिखते हैं—

सेवा में, सम्पादक घरबन्धु!

मैं आप की पत्रिका घरबन्धु के द्वारा हमारी कलीसिया के प्रबन्धकों एवं पाद्रियों तथा स्कूल प्रधानाध्यापकों एवं अध्यापकों का ध्यान मिशन कम्पाउन्ड, शिक्षण संस्थानों एवं अन्य सभी संस्थानों में पेड़-पौधों की उजड़ती हुई हालत की ओर दिखाना चाहता हूँ।

आज उनकी दशा देखने से ऐसा लगता है कि पेड़-पौधे लगाना विदेशी मिश्नरियों का ही काम है और उसके बाद के प्रबन्धकों का नहीं। ज्यादातर पेड़ उन्हीं लोगों के समय लगाये गए और अब पेड़ पौधे बूढ़े होकर खत्म होते जा रहे हैं।

फिर भी हमलोगों का ध्यान इस हल्के कार्य की ओर नहीं जा रहा है। इस प्रकार तमाम क्षेत्र उजाड़ दिखता है।

आजकल सरकार भी देश में ज्यादा पेड़ लगाने का प्रयास कर रही है और बहुत सुविधायें प्राप्त कराये जा रहे हैं। जगह-जगह पर केन्द्र बनाये गये हैं जहां से विभिन्न पेड़ों के गाछी प्राप्त किये जा सकते हैं।

शीशम, सागवान, युकलिप्टस तथा अन्य सुन्दर छायादार (गुलमोहर आदि) वृक्षों की हमारे संस्थानों के रास्तों के किनारे, खाली जगहों पर और सीमान्तों पर कतारों में लगाया जा सकता है।

ये सब ऐसे कार्य नहीं हैं जिसके लिए कोई विदेशी मिश्नरी आ कर सुझाव दें। इसे तो हम लोगों को स्वयं करना चाहिए। जरूरत अगर महसूस हो तो आजकल हमारे बीच बहुत से रेंजर, फोरेस्टर और जंगल विभाग के अन्य उच्च अधिकारी भी उपलब्ध हैं उनसे सलाह विचार किया जा सकता है। या रिटायर्ड ऐसे पदाधिकारियों को दो-तीन साल सवैतनिक रख कर वृक्षारोपण का कार्य सुचारु रूप से चलाया जा सकता है।

कुछ तलावों के मेंड़ पर अनेकों जगहों खजूर के पेड़ अपने-अपने बुढ़ापे को रो रहे हैं। बहुत उखड़ भी गए परन्तु उनकी जगह या हट कर नये पेड़ नहीं लगाये जा रहे हैं। तलाव के चारों ओर खजूर के पेड़ कितने सुन्दर लगते हैं। सब जानते हैं। पेड़ लगाना क्यों जरूरी है, आज के प्रगतिशील युग में यह बताना आवश्यक नहीं है।

आशा है आप अपनी पत्रिका घरबन्धु के द्वारा मेरे इस सुझाव को लोगों के समक्ष रखेंगे।

सधन्यवाद।

जवाब— आप के सुझावों का हम हार्दिक स्वागत करते हैं।

"और यहोवा परमेश्वर ने भूमि से सब भाँति के वृक्ष, जो देखने में मनोहर और जिनके फल खाने में अच्छे हैं, उगाए ... ...

उत्पत्ति २ : ९।

Gossner Mission

आवाज

गुवा पेरिस चेयरमेन पाद्री पी० टोपनो

सिंह भूम (बिहार) से लिखते हैं— 'घरबन्धु' पत्रिका का कार्यालय यदि राँची मैन रोड पर स्थित सी० सी० पी० एच० 'बुक लैन्ड' में रखी जाय तो अति उत्तम होगी। क्योंकि एक समय इसी पुस्तक दुकान में ही कार्यालय था जिसमें ग्राहकों को काफी सुविधादायक जँचा। क्योंकि बहुत से पाठकें अपने व्यक्तिगत कामों पर राँची पहुँचते और अपने कामों से निपटने के पश्चात् तुरन्त ग्राहक मूल्य चुकाने में सुगमता होती है। के० एस० एस० ऑफिस जो जी० ई० एल० चर्च कम्पाउन्ड के अन्दर जहाँ पहुँचने के लिए उन्हें समय नहीं मिलता। चूँकि अपने अपने घरों को वापस लौटने के लिए बस, ट्रेन स्टेशन समय पर जाना पड़ता है।

जवाबः— टोपनो साहब ! आपके सुझाव को हम के०एस०एस० में अवश्य पेश करेंगे। क्योंकि हमें तो इससे ज्यादे लाभदायक होगी कि अधिक से अधिक जनसम्पर्क रखने की सुविधा उपलब्ध हो। इस प्रगतिशील युग में ग्राहकों के सुविधा हेतु यदि के० एस० एस० की ध्यान आपके द्वारा दिए गए सुझाव पर अम्ल करेगी तो निश्चय घरबन्धु पत्रिका की ऑफिस आपके निर्देशित स्थान पर रखी जाएगी।

इस हितकारी सुझाव के प्रति हम आपको धन्यवाद देते हैं।

जी०ई०एल० चर्च उत्तरी पश्चिमी अंचल युवा विभाग

युवा निर्देशक

पादरी ए० बी० के० महतो, जी० ई० एल० चर्च, उ० प० अंचल।

उत्तरी पश्चिमी अंचल युवा विभाग की चुनाव सभा दिनांक २० अगस्त १९८५ के जी० ई० एल० चर्च गुमला में सम्पन्न हुई।

चुनाव प्रतिफल निम्नाकित है :--

सभापतिः— श्री एरियल केरकेटा,
गोरारजोर, किनकेल ईलाका।

सह सभापति—श्री विश्राम तिग्गा
गुमला, ईलाका, गुमला।

सचिव — श्री उम्बलन संगा।

सह सचिव — श्री सारादीप शशि टोप्पो
कोकर, राँची ईलाका।

कोषाध्यक्ष :—श्री दुलार एक्का
गुमला, ईलाका गुमला।

Gossner Mission

पत्र मिला

● अगस्त अंक में 'प्रशान्त' द्वारा 'अच्छी औषधि' प्रस्तुत लेख बहुत ही अच्छा लगा। क्योंकि अक्सर ऐसा हुआ करते हैं और घटित हो रही है। लेखक ने आध्यात्मिक एवं पारिवारिक जीवन के लिए वास्तविक दर्पण प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इस लेख एवं प्रयास के लिए लेखक को बधाई।

मनोहर टोपनो, इरोड़ तामिलनाडु
दक्षिण भारत।

● घरबन्धु पत्रिका अगस्त ८५ पाकर मुझे बेहद खुशी हुई कि यह बीते दिनों की घटियों को दूर करते जा रही है। अब यह पत्रिका नियमित रूप से निकलने लगी है। सभी वर्ग बच्चे, युवा, वयस्कों ग्राहकों तथा अन्य पाठकों के लिए आकर्षक लाभप्रद तथा सहायक बनते जा रही है।

पाद्री एस० मुन्डू,
लोहरदगा, बिहार।

● घरबन्धु पत्रिका पाने से उतना खुशी नहीं है जितना कि लिखी गई पवित्र बचनों को पढ़ने से मिली। यह पत्रिका मेरे लिए दीपक बना जो मेरा अन्धकारमय जीवन को ज्योति-याला बना दिया। क्योंकि पत्रिका में प्रभु का स्थान है। पवित्र वचन में एक जगह मैंने पढ़ा कि यीशु मसीह आज और कल और युगानुयुग एक सा है। यीशु मसीह सारे मानव के लिए है। जो उस पर विश्वास करे वह उनके मन में वास करेगा। प्रभु में होकर सदा वह उसके प्रेम में बढ़ते जाएगा। अन्ततः स्वर्ग राज्य का भागी हो जाएगा।

४२४७८२३ न.
एच. टोप्पनो।

● घरबन्धु पढ़कर अपनी बीमारी को भी दूर करता हूं परमात्मा की बड़ी दया। मैं बहुत दिन से बीमार तो हूं पर जब घरबन्धु पत्रिका मिलता है तो पढ़ कर खुश होता हूं। अगस्त अंक मुझको समय पर मिला है। महीना के १३ या १४ ता० में मिलने से बहुत ही अच्छा होता है। इस महीना का 'घरबन्धु' पढ़कर यूहन्ना १४: ही याद में आया।

श्री ए० एम० टोपनो, पेंगारी टी० ई०
डिब्रूगढ़ असम।

शान्ति देनेवाली बात जीवन-वृक्ष है,
परन्तु उलट फेर की बात से आत्मा दुःखित होती है।
नीति वचन १५ : ४

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

त्रिनितातिस के बाद २१वाँ एतवार

मार्क १०:११—१६।

पवित्र बाल-बपतिस्मा द्वारा उद्धार कर्त्ता के हाथों बालकों को सौंपा जाता है। बालकों के समान विश्वास में बने रहना है। वयस्को में भला-बुरा का ज्ञान रहता है। किन्तु नए जन्मे बच्चों की नाई निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करना है।

विषय— स्वर्ग के राज्य के लिए।

१ बालकों की नाई बनना है :— जैसे बच्चे अपने माता-पिता के आज्ञाकारी होते हैं और उनके लिए पृथ्वी पर अधिक दिनों तक जीने की प्रतिज्ञा है वैसे ही मसीही विश्वास एवं वचन में बने रहने तथा परमेश्वर पिता के आज्ञाकारी होने से स्वर्ग राज्य के प्रजा एवं परमेश्वर के संतान होने की प्रतिज्ञा मसीह में पूर्ण होती है।
मत्ती १८:४ "जो अपने आप को इस बालक के समान छोटा करेगा वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा।"

२ बालकों की नाई अपने अपराधों को मानना है :—
पश्चातापी मन से हर दिन के जीवन में नए बनते जाएं। पुराने आदम को त्यागना है। नए आदम को धारण करना है। "नये जन्में हुए बच्चों की नाई निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिए बढ़ते जाओ।" (१ पतरस २:२)। हरएक पश्चातापी पापी से मसीह प्रेम रखता है तथा वह उद्धार कर्त्ता होकर उसे स्वर्ग के राज्य में ले जाने के निमित्त अनुग्रह पर अनुग्रह देता है।

समाप्ति :— अतः मसीह मत्ती १८:३ में कहते हैं—" मैं तुमसे सच कहता हूँ यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे।

त्रिनितातिस के बाद २२वाँ एतवार

लूका ६:५७—६२

दुनिया-दारी के बंधन से मुक्त होकर स्वर्गीय बातों की ओर अपने मन को लावें। दिखावे की हमारी मसीही जीवन न रहे बल्कि वास्तविकता को महत्व दें।

विषय:— मसीह के पीछे हो लेना है।

१ बपतिस्मा की वाचा देकर:— बपतिस्मा की वाचा का हमने उच्चारण किया है। मसीही धर्म एवं मसीह के पीछे चलने के लिए वाचा का उच्चारण मात्र ही नहीं अपितु उसके अनुसार अनुसरण करना है। पवित्र वचन और सक्रामेन्त का व्यवहार पवित्र रीति से करना है। इब्रानियों ६:२ और बपतिस्मों और हाथ रखने और मरे हुओं के जी उठने और अन्तिम न्याय की शिक्षारुपी नेव फिर से न डालें।

२ अपना सब कुछ देकर :—मसीही धर्म में रहकर अपना सब कुछ परमेश्वर का हुआ समझकर मसीह में धन्यवादी बनें। "क्योंकि जिन्होंने एक बार ज्योति पाई है, और स्वर्गीय वरदान का स्वाद चख चुके हैं और पवित्र आत्मा का भागी हो गए हैं।" (इब्रानियों ६:४)। मसीही कार्यक्रमों के प्रति बहाना न करे परन्तु अपना पूर्ण हृदय से योगदान दें। व्यक्तिगत जीवन में मसीही बने। पारिवारिक में हम व्यावहारिक मसीही हों। समाज के कामों में लगे रहें।

समाप्ति :—मसीही जीवन में जीने के लिए पवित्रात्मा हमें अगुवाई दे। धर्मशास्त्र संबंधी ज्योति में हमारे कामों के लिए अगुवाई पा सकें।

Gossner Mission

त्रिनितातिस के बाद २३वाँ एतवार

मत्ती १०:२४—३३

सांसारिक बातों, व्यावहारों, रीति-रिवाजों में मन लगाकर उसके अनुसार अनुसरण नहीं करना है पर मसीही बातों, व्यावहारों तथा रीति रिवाजों में मन लगाकर मसीही गवाही देना।

विषय—मसीही गवाही देना है :—

१ मसीही रीति-रिवाजों द्वारा :— पवित्र वचन के अनुसार मसीही रीति-रिवाज हो। यदि मसीही महिलाएं सिन्दूर टीका लगाकर मसीही रीति-रिवाजों से शर्माते हों, यदि मसीही भाई-बहने सांसारिक रीति-रिवाजों को अपनी खुशी एवं बड़प्पन के लिए अपनाते हों तो मसीह कहते है मार्क ८:३८ "जो कोई इस व्यभिचारी और पापी जाति के बीच मुझ से और मेरी बातों से लज्जाएगा मनुष्य का पुत्र भी जब वह पवित्र दूतों के साथ अपने पिता की महिमा सहित आएगा, तब उससे भी लजाएगा।

२ मसीही व्यावहारों के द्वारा :— पवित्र वचन के अनुसार मसीही व्यवहार हो। मसीही आचरण एवं वचन में सिद्ध होते जाएं। मसीही होना अपने मन वचन कर्म से प्रगट कर सकें। यशायाह कहते हैं— यशायाह ८:११ "क्योंकि यहोवा दृढ़ता के साथ मुझ से बोला और इन लोगों की सी चाल चलने को मुझे मना किया।" यदि मसीही भाई-बहनें मतवाले होकर सांसारिक व्यावहारों के अनुसार व्यवहार करते हों तो पिता परमेश्वर के संतान होने से वंचित किए जाने का अवसर अपना लेते।

समाप्ति :— अतः मसीही गवाही देने की आत्मिक वरदान मिले। हमारी दुर्बलता में प्रभु की सामर्थ मिले। मसीही व्यावहारिकता में प्रगति कर सके।

त्रिनितातिस के बाद २४वाँ एतवार

यूहन्ना १०:२३—३०

मसीह हमें अनन्त जीवन देता है। वह हमें जानता है। वही हमें स्वर्ग के राज्य में ले जाएगा। मसीह ने सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर को प्रगट किया है।

विषय—सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर मसीह में प्रगटहै।

१ पवित्र वचन सुननेहारे मसीह के है :— प्रे० कि० ३रा अध्याय में मसीह में परमेश्वर की महिमा को प्रगट करते हुए क्रूस घातित मसीह का पतरस ने गवाही दिया। यूहन्ना कहते है १ यूहन्ना ४:४ "हे बालको तुम परमेश्वर के हो और तुम ने उन पर जय पाई है क्योंकि जो तुममे है वह उससे जो संसार में है, बड़ा है।" भ० सं० १४५:३ दाउद राजा भजन गाते हैं— "यहोवा महान और अति स्तुति के योग्य है और उसकी बड़ाई अगम है। अतः मसीह में वचन सुननेहारे बने।

२ पवित्र वचन नहीं सुननेहारे शैतान के हैं :— यूहन्ना ८:४३—४७ में मसीह कहते हैं— "तुम मेरी बात क्यों नहीं समझते ? इसलिए कि मेरा वचन सुन नहीं सकते तुम अपने पिता शैतान से हो और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो, वह तो आरम्भ से हत्यारा और सत्य पर स्थिर न रहा ... . परमेश्वर की ओर से नहीं हो।

समाप्ति :— मसीह कहते हैं यूहन्ना १०:३० मैं और पिता एक हैं। अतः सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर को मसीह ने प्रगट किया है।

Gossner Mission

मतसंशोधन

सिरिल हेम्ब्रोम, गोस्नर थिओलोजीकल कॉलेल, राँची।

मतसंशोधन नाम और उसके अर्थ से हरएक मसीही पूर्णपरिचित है (?)। यों तो हम मतसंशोधन के विषय यदा-कदा सुनते रहते हैं और इस के पीछे छिपे हुए अर्थ से भी परिचय लेते रहते हैं, फिर भी उसके विषय फिर से, नये सिरे से सुनने और जानने में कोई हर्ज की बात तो नहीं परन्तु लाभ की ही बात होगी। इसीलिए यहां उसपर एक दृष्टिपात प्रस्तुत किया जा रहा है।

३१ अक्टोबर का दिन प्रायः संसार की सभी कलीसियाओं के लिए एक विशेष स्मरणीय दिन है। यह दिन लुथेरान और रोमन कथोलिक कलीसियाओं के लिए तो और अधिक महत्वपूर्ण दिन हो जाता है। यह दिन लुथेरान कलीसियाओं में (और अन्य कलीसियाओं में भी !) मतसंशोधन दिवस के नाम से स्मरण किया जाता है। एक प्रश्न किया जा सकता है कि इस दिन को क्यों मतसंशोधन दिवस के नाम से स्मरण किया जाता है? इसके उत्तर स्वरूप यह कहा जा सकता है कि १५१७ ईश्वी के ३१ अक्टोबर के दिन जर्मनी देश के विटेनबर्ग नामक शहर के गिरजे घर के मुख्य द्वार पर डाक्टर मार्टिन लूथर ने ९५ सूत्र लटकाया था। यहीं से रोमन कथोलिक कलीसिया में मतसंशोधन की प्रक्रिया ने निर्णयात्मक रूप और चरम सीमा को प्राप्त किया। विटेनबर्ग की उक्त घटना वह थी जिसे यदि लुथेरान कलीसियाओं की उत्पति की शुरुवात बिन्दु कहा जाय तो संभवतः अतिशयोक्ति न होगी। उस दिन की घटना ऐसी घटना थी जिसने उस समय की रोमन कथोलिक कलीसिया में व्याप्त कुरीतियों और गलत विचारों में संशोधन के लिए जबर्दस्त अभियान का आह्वान किया। डाक्टर मार्टिन लूथर के इस काम में कलीसिया के इतिहास में और मतसंशोधन के इतिहास में एक नये अध्याय और युग का आरंभ कर दिया। इसी लिए ३१ अक्टोबर के दिन को हम मतसंशोधन दिवस के नाम से स्मरण करते हैं और वर्तमान कलीसियाओं में व्याप्त भूलों के प्रति सचेत होते हैं तथा उनके निराकरण और सुधार के लिये प्रेरणा लेते हैं। अतः मतसंशोधन की पृष्ठभूमि तथा उसके नतीजों को संक्षिप्त रूप में देखने और समझने के लिए नीचे बहुत ही संक्षेप में कलीसियाई इतिहास की एक झांकि प्रस्तुत की जा रही है।

कलीसिया का आरंभ यीशु के दैहिक जीवन और लोकप्रिय सेवा के दिनों में ही हो चुका था। उस समय कलीसिया अत्यंत छोटी थी और बारह शिष्यों तथा कुछ और यीशु के अनुयायियों तक ही सीमित थी। यीशु के दुःख भोग, मृत्यु, पुनरुत्थान तथा स्वर्गारोहण के बाद पेन्तीकोष्ट के दिन से कलीसिया की बृद्धि ने जोर पकड़ा। बहुत लोग यीशु पर विश्वास करके उसकी नवजात कलीसिया में शामिल होते गये। इस तरह कलीसिया आस पास के गांवों और शहरों में (विशेष कर यहुदिया और सामरिया में) स्थापित होती गयी। तदनन्तर पतरस तथा पौलुस प्रेरित के सुसमाचार प्रचार से यहुदिया और सामरिया के बाहर अन्य देशों के शहरों में भी कलीसिया की स्थापना होने लगी। मसीहियों की तथा मंडलियों की बढ़ती के साथ कुछ अन्य चीजें भी बढ़ने लगी।

मसीहियों तथा मंडलियों की बढ़ती के साथ-साथ अनेक कुरीतियां मंडलियों में प्रवेश करने लगी। उन कुरीतियों का निराकरण भी उसी के साथ ही साथ होने लगा। (देखिये प्रेरितों के काम १५वां अध्याय)। नवजात कलीसिया में कोई व्याक्ति पाद्री या बिशप के नाम पर नहीं

Gossner Mission

जाना जाता था। उनदिनों मंडलियों की चरवाही के लिए जो व्यक्ति चुने और ठहराये गये, उन्हें प्रेस बीटर या प्राचीनों नाम से जाना जाता था। मंडलियों की बढ़ती के साथ-साथ इन प्रेस बीटर या प्राचीनों के अधिकारों की सीमा में भी वृद्धि होने लगी। अनेक नये प्राचीनों की नियुक्ति की गयी और अनेक नये प्राचीन पुराने प्राचीनों के अधीन नियुक्त किये गये। इस तरह कई अन्य प्राचीनों के ऊपर भी प्राचीन या अधिकारी हो गये। ऐसे ही बड़े और मुख्य प्राचीनों को आगे चल कर बिशप की संज्ञा दी गयी (१ तिमोथी ३; तितुस १:७)। ऐसे ही बिशपों में सिकंद्रिया, यरूशलेम और रोम इत्यादि शहरों के बिशपों के अधिकार बहुत अधिक बढ़ गये। रोग के बिशप के अधिकार और भी अधिक बढ़े और आगे चल कर उसने मसीही कलीसिया के सभी अन्य बिशपों के ऊपर अपने आप को प्रधान घोषित कर दिया। उनके ऐसे दावों का अनेक बिशपों ने खंडन किया और उसके अधीन आने से इन्कार कर दिया। ऐसे विरोध के फलस्वरूप कलीसिया में विभाजन होने लगे। इसी के साथ ही साथ अनेक भ्रांत मत भी कलीसिया में घुस आयी जिनको सुधारने के लिए अनेक कलीसियाई महासभाएं बुलायी गयी। परन्तु ऐसी महासभाओं का परिणाम कलीसिया के विभाजन के रूप में प्रगट हुआ।

रोम का बिशप अपने आप को रोमी सम्राज्य की राजधानी में रहने के कारण अन्य बिशपों से ऊपर ही समझने लगा। अनेकों ने उसके दावों को मान लिया और वही रोम का बिशप आगे चलकर पोप (या पापा) के नाम से जाना जाने लगा। पोप के अधिकार क्षेत्र में और भी विस्तार होने लगा और बहुत जल्द ही वह आत्मिक तथा लौकिक जीवन के तमाम अधिकारों का दावा करने लगा। उसने अनेक राजाओं, यहां तक कि सम्राटों को भी सिंहासन पर बैठाया और आवश्यकता पड़ने पर उन्हें गद्दी से भी उतारा। राजा और महाराजे अपनी गद्दी पोप से दान स्वरूप प्राप्त होने वाली समझने लगे। इस तरह पोप राजाओं और महाराजाओं के ऊपर भी अधिकारी हो गया क्योंकि उसके दावे थे कि उसे मसीह ने आत्मिक और लौकिक दोनों अधिकार दिये हैं। उसके ऐसे दावों के कारण कलीसिया में अनेक गलत सिद्धान्तों तथा शिक्षाओं की संख्या बढ़ने लगी जिनके विरुद्ध यदा-कदा आवाज उठाये गये। पोप के राजनीतिक दावे यों तो अशोभनीय थे, परन्तु कभी २ उन्होंने ऐसे काम किये जो किसी राजा और महाराज के द्वारा करना कठिन और असंभव ही थे जैसे बर्बर जाति का नेता एलारिक ने रोम पर आक्रमण नहीं किया। यह उसने पोप इनोसेंट I के सम्मान में किया। इसी तरह हून जाति का नेता अटीला ने जब इटली पर आक्रमण किया तो पोप लेओ I ने उससे भेंट की और अपनी वाकपटुता के कारण उसे(एलारिक को) वापस लौटने पर विवश कर दिया। फिर भी राजाओं और पोपों के बीच समय २ पर तनाव होते रहते थे।

१०५४ ईश्वी में पूर्वी और पश्चिमी कलीसिया का विभाजन हुआ। फिर भी पोपों के अधिकार पश्चिम में बरकरार ही रहे। उन्होंने सारे युरोप के राजाओं पर अपना अधिकार जताना आरंभ कर दिया। सारे युरोप में मसीही धर्म के अनुयायी हो गये थे और अधिकांश राजा मसीही थे। इतना होते हुए भी युरोप में राजाओं ने पोपों के अधिकारों (विशेष कर राजनीतिक या लौकिक अधिकार) का विरोध किया ऐसे विरोध उस समय अधिक स्पष्ट और निर्णयात्मक रूप से दृष्टिगोचर हुए जब कि पोप बोनीफास आठवां (१२९४—१३०३

Gossner Mission

ई०) ने युरोप के राजाओं को मंडली बाहर की धमकी दी अगर उन्होंने पाद्रियों पर उसकी इजाजत के बिना किसी भी प्रकार का कर लगाया। उसकी ऐसी धमकी को इंगलैंड के राजा एडवर्ड और फ्रांस के राजा फिलिप ने चुनौती दी। फ्रांस के सलाहकार डीनोगारेट ने सशस्त्र सैनिकों के साथ पोप पर आक्रमण कर दिया और उसे बंदी बना लिया। पर थोड़े दिनों में ही पोप बोनीफास आठवां की मृत्यु हो गयी।

तत्पश्चात १३०५ ईश्वी में क्लेमेन्ट पांचवां पोप बना। परन्तु १३०६ ईश्वी में राजा फिलिप ने पोप की गद्दी को रोम से हटा कर (रोन) नदी के किनारे अविगनोन में बैठा दिया। वहां पोप की गद्दी करीब ७० (सत्तर) वर्षों तक बनी रही। उन दिनों पोप पूर्णतः फ्रांसीसी राजाओं के अधीन और प्रभाव में थे। उन सत्तर वर्षों को कलीसिया की बाबुल की बंधुवाई (द बेबीलोनिश केप्टीभिटी ऑफ द चर्च) की संज्ञा भी दी जाती है। पोप के दावों के विरोध युरोप के अन्य देशों में भी हुए। जर्मनी में डान्टे ने भी पोपों के दावों को ललकारा और राष्ट्रीयता, नयी शिक्षा तथा नयी धार्मिक जागृतियों के कारण अनेक धर्मसुधारकों का अभ्यूदय हुआ जैसे-जोन विकलिफ और जोन हुस्स इत्यादि।

इसी तरह की कलीसियाई परिस्थितियों के बीच डाक्टर मार्टिन लूथर का अभ्यूदय हुआ। उसने उच्चतम धार्मिक शिक्षा प्राप्त की और यह पाया कि पोपों के आत्मिक और लौकिक अधिकारों के दावे सुसमाचारों की शिक्षाओं के विरुद्ध हैं। इसी लिए उसने पोप लोगों के दावों से उत्पन्न और व्याप्त, कलीसिया की कुरीतियों तथा कुशिक्षाओं को सुधारने के लिए उनकी सुची विटेनवर्ग के गिरजे के मुख्य द्वार पर लटका दिया। लूथर ने रोमन कथोलिक कलीसिया से अलग एक नयी कलीसिया बनाने का कभी विचार नहीं किया था। वह तो केवल भूल और भ्रांत शिक्षाओं में सुधार लाना चाहता था। परन्तु उसके उद्देश्यों के विपरीत पोप लेयो दशवां (पोप लेओ) का कोप भजन बनना पड़ा। डाक्टर मार्टिन लूथर के ९५ सूत्रों ने सारी रोमी कलीसिया में भारी उथल-पुथल और तहलका मचा दिया जिसके फलस्वरूप लुथेरान कलीसिा का अभ्यूदय हुआ और अनेक अन्य कलीसियाओं की भी उत्पत्ति हुई।

इस मतसंशोधन के परिणाम स्वरूप निकले लुथेरान कलीसिया में फादर योहन्नेस एवंजलिस्ता गोस्सनर ने रोमी कलीसिया से आकर १८२६ ईश्वी के २३वीं जुलाई को प्रवेश किया। अपने सुसमाचार प्राचार के जोश के कारण ही उसने चार मिश्नरियों को छोटानागपुर भेज कर यहां के लोगों को मसीह की ज्योति से आलोकित किया। उसके चार मिश्नरी २ नवम्बर १८४५ को रांची पहुंचे और उन्होंने सुसमाचार प्रचार का काम आरंभ कर दिया जिसके फलस्वरूप १८४६ २५ जून को मार्था नामक बहन की बपतिस्मा के साथ ही हमारे गोस्नर एवंजेलीकल लुथेरान कलीसिया की स्थापना हुई। उसके बाद दूसरे ही दिन २६ जून १८४६ को थोमस, जेकब मेरी, मतियास, योहन्नेस और बरनर्द अनसोर्गे आदि लोगों की बपतिस्मा से एक छोटी गोस्सनर मसीही मंडली बन गयी। उपरोक्त लोगों की बपतिस्मा लेने के पांच साल बाद ही अन्य लोगों ने बपतिस्मा लिया और आज यह कलीसिया भारत की अनेक बड़ी कलीसियाओं की गिनती में आती है।

मतसंशोधन १६वीं शताब्दी की ही एक स्मृति नहीं है। परन्तु यह आज भी एक अविरल प्रक्रिया है। आज भी मतसंशोधन की आवश्यकता

(शेष पृष्ठ १३ पर)

Gossner Mission

१५१७ ई० में मतसंशोधन दिवस जी.ई.एल. चर्च में एक सुनहला प्रतीक

जोन बोदरा, गंधामरधन माइन्स, उड़ीसा। उत्पति २८ : २२।

संसार में बहुत सी कलीसियाएं हैं जो कि विविध मतसंशोधन के अनुसार स्थापित हैं। यदि हम सम्पूर्ण बाइबल के पेज-पेज अध्ययन करें (यूहन्ना ५:३६) और विचार विमर्श करें तो केवल लुथेरान कलीसिया के जन्मदाता स्वर्गीय डा० माटिन लूथर ही मतसंशोधक का एक मात्र प्रभु यीशु मसीह की अनुग्रह से चुना हुआ औजार है (प्रेरित ६:१५) और लुथेरान कलीसिया का चट्टान है (मत्ती १६:१८), जिस चट्टान पर प्रत्येक विश्वासीगण रोपे गये हैं। (२ कुरिन्थियों ५:१७)। किन्तु जिस चट्टान पर मसीही विश्वासीगण नहीं रोपे गये हैं वे उखाड़े जायेंगे (मत्ती १५:१३, यूहन्ना १५:६)। जो नींव स्वर्गीय डा० मार्टिन लूथर ने यीशु मसीह की प्रेरणा से डाल दी है उसके अतिरिक्त अन्य नींव कोई नहीं डाल सकता (१ कुरिथियो ३:११)। परमेश्वर को हम सदा धन्यवाद देवें कि प्रतिदिन रात इस नींव पर शुभ सन्देश की शक्ति पाते हैं (रोमियों १:१६-१७) जो कि इस शुभ सन्देश की रचना परमेश्वर की प्रेरणा से हुई है और वह धार्मिक जीवन की शिक्षा के लिए ताड़ना के लिए सुधार तथा उपदेश के लिए उपयोगी है (२ तिमुथिस ३:१६) जिससे परमेश्वर का भक्त योग्य बने और प्रत्येक शुभ कार्य को पूरा कर सकें। यदि हम स्वर्गीय डा० मा० लूथर का मतसंशोधन के हैं तो कलीसिया में दलबंदी न बनावे (१ कुरिथियों १:११-१५ १ कुरिथियों ३:३) क्योंकि हम लुथेरान कलीसिया के मसीही विश्वासीगण हैं (प्रेरित ११:२६)। हमारी कलीसिया की सुरक्षा (प्रेरित २०:२८) के लिए मसीह के दुःख भोग में सह-भागी होना है (१ पतरस ४:१२-१६)। हमारी इस कलीसिया का मतसंशोधन को छोड़कर अन्य मतसंशोधन में नहीं चलना है (रोमियों १६:१७-१८, प्रेरित २०:२६-३०), किंतु सदा जागते रहना है प्रेरित २०, ३१–३२, १ कुरिथियों १६:१३)। अन्य कलीसिया के मतसंशोधन के सोना-चांदी, और वस्त्रों का लोभ नहीं करना है (प्रेरित २०:३३) क्योंकि लेने की अपेक्षा देना धन्य है (प्रेरित २०:३५)। हमारी कलीसिया के भाई बहनों का उत्तरदायित्व है कि अन्य मतसंशोधन धर्मावलम्बी को परिमार्जिन मतसंशोधन का पवित्र वचन (भ०सं० १२:६) (१ तिमु० ४:४-५) सुनावें और सिखावें (व्यवस्था विवरण ६:७, ११:१६)। इस तरह कलीसिया संख्या में वृद्धि हो (प्रेरित २:४७)। लुथेरान कलीसिया मसीह की देह है (इफिसुस १:२३) जिसका शिरोमणि स्वर्गीय डा० मा० लूथर है (इफिसुस १:२२)। हमारी कलीसिया के भाई-बहनें परमेश्वर के पहिलौठे पुत्र के हैं (इब्रानि १२:२३)। नयी वाचा के संतान है (इब्रानि ११:२४)। वह हमें अंधकार के अधिकार से मुक्त कर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में ले आया (कुलुस्सियो १:१३)। स्वर्गीय डा० मा० लूथर परमेश्वर का सच्चा भण्डारी होने के कारण (तीतुस १:७) वह हमें नया मार्ग दिखाया है (भ० सं० १६:११) वहां पर सदा सर्वदा स्वर्ग सुख है। क्योंकि पिता परमेश्वर डा० मा० लूथर को सच्चा आराधक (युहन्ना ४:२३) चुन लिया है (मत्ती १२:१८)। अतः (मत्ती १२:१८)। हमारी कलीसिया की आराधना विधि परमेश्वर की प्रेरणा से रचित है (यूहन्ना ४:२४)। इसका प्रमाण है कि आराधना शुरु करने के पूर्व हम जी०ई०एल० चर्च के भाई बहनें परमेश्वर का नाम लेते है (मत्ती ६:६, मत्ती

Gossner Mission

२८:१६) और अन्य मतसंशोधन धर्मावलम्बी के जैसा भूल में नहीं पड़े हैं (मरकुस १२:२४)।

यही कारण है कि इस कलीसिया की आराधना विधि तथा मतसंशोधन पर्व (पवित्र वचन) को प्रचार करने के लिए २री नोवेम्बर १८४५ ई० में वेर्लिन के गोस्सनर साहब, शत्स वत्स ब्रान्त और यानके इन चार मिश्नरियों को हमारी इस माता कलीसिया राँची में भेजा। ये भाई लोग प्रभु में स्वर्गीय डा० मा० लूथर के पक्का शिष्य थे।

मतसंशोधन पर्व सर्वप्रथम जर्मन के वेटेन वर्ग (Wittenberg) में ३१-१०-१५१७ ई० को हुआ था, जिसका मुख्य० अगुवाई स्वर्गीय डा० मा० लूथर थे। हमारी कलीसिया की आध्यात्मिक ज्ञान तथा विश्वास की सुरक्षा के लिए अपना मतसंशोधन पर दृढ़ होना है (१ कुरिथ १:८) ताकि हम कलीसिया का मतसंशोधन विश्वास से भटक न जायं (भ० सं० ३७:३१) क्योंकि प्रभु में हम सब एक ही तन है (इफिसस ४: ४-५)। परमेश्वर मनुष्य को भले बुरे का विचार करने का ज्ञान प्रदान किया है (उत्पत्ति ३:२२)। परमेश्वर की इच्छा है कि मनुष्य अच्छाई का ज्ञान को अपनावें (१ तिमु० थियुस २:४) तथा उसी की योजना के अनुसार इस कलीसिया का निर्माण करने के लिए डा० मा० लूथर जैसा योग्य व्यक्ति को अभिषिक किया (प्रेरित १०:४२, प्रेरित २:७ १ तिमुथियुस १:११)।

अनेक मतसंशोधन में से परमेश्वर उसे बुलाया (१ तिमुथयुस १:६) और सम्पूर्ण कार्य भार उसे सौंप दिया गया (मत्ती २८-१९-२०) वह कठिन परिश्रम किया (लूका ५:५-६)। उसका पवित्र परिश्रम सजीव हुआ (लूका ५:६)। यीशु मसीह का पक्का शिष्य होकर (प्रेरित ११:२६) कलीसिया की सेवाकाई का कार्य सहर्ष ग्रहण किया (१ तिमुथियुस २:७)। वह कलीसिया को एक नवीन रूप में स्थापित किया (प्रेरित १६:५) जिनकी शाखाएं कलीसिया के भाई-बहनें हैं (यूहन्ना १५:५)। इस महान् मतसंशोधन की यादगारी में मतसंशोधन पर्व को तन मन से कलीसिया में रसमय और हरे-भरे रखें (भ:सं० ६१:१०)। और १५१७ ई० को १९८५ ई० में कलीसिया में पर्व के द्वारा पुनः जीवित रखें। पर्व जर्मन के वेटेनवर्ग में ही नहीं किन्तु हमारा भारतवर्ष (एस्तर १:१) में भी सदा प्रतीक के रूप में महिमा मण्डित करें।

• • •

(पृष्ठ ११ का शेष)

है। आज भी कलीसियाओं में और हमारी कलीसिया में भी अनेक कुरीतियां, भ्रष्टाचार, अत्याचार बानाशाही व्याप्त है। आज हमें उनके सुधार के लिए आगे आना है। १६वीं शताब्दी में एक लूथर ने मतसंवोधन का झंडा फहराया। आज हमारी कलीसिया में सभी लुथेरान है। अतः हरएक का फर्ज है एक जुट होकर कलीसिया से तमाम भ्रष्टाचार को उखाड़ फेंके। कलीसिया की तमाम रूढ़ियों तथा धर्मान्धताओं को दूर करें। कलीसिया की एकता अखंडता तथा उन्नति के लिए जागरूक हो। सुसमाचार प्रचार की सेवा एक अदर्श कलीसियाई जीवन के द्वारा पूरी कर सकें। परमेश्वर हम सभों की अगुवाई करे और हमें आशीष देवें।

Gossner Mission

मसीही युवा एवं मसीही संगीत

अजीत कुमार होरो, नई दिल्ली फीवा रेडियो, भारत

यह सर्वविदित तथ्य है कि संगीत के माधुर्य में व्यथासिक्त हृदयों को करार प्रदान करने की क्षमता है, जीवन की नीरसता को सरसता में परिवर्तित कर सकने की ताकत है, जिन्दगी की लयात्मकता एवं ध्वन्यात्मकता एवं गत्यात्मकता देने की सामर्थ्य है ! संगीत वह छलकता आत्मिक जाम है जिसमें अतीत की कटुता, वर्त्तमान का व्यंग्य एवं भविष्य की मायूसी को आत्मसात कर लेने की विशेषता है। संगीत, वास्तविक अर्थों में किसी पाबन्दी का मोहताज नहीं अपितु संगीत वही है जो कर्णप्रिय हो। हृदय स्पर्शी हो और अंतरात्मा को झकझोर देने की ताकत रखता हो। संगीत कलीसिया का अविभाज्य अंग है। संगीत एक कला है जिसे प्रार्थना की संज्ञा देना श्रेयस्कर है। किन्तु प्रश्न यह है कि कलीसियाओं को वर्त्तमान संगीत व्यवस्था किस हद तक उपयुक्त है ? इसमें चन्द परिवर्त्तन इसे अधिक ग्राह्य एवं आकर्षक बना सकता है। सांसारिक संगीत में सकून की तलाश करने वाली युवा पीढ़ी को इसमें कार्यशील बनाना कलीसिया का कर्त्तव्य है। यह चुनौती हर कलीसिया के समक्ष है कि गुमराही के अन्धेरों में गुमनाम होती युवा पीढ़ी को मसीही संगीत के हेतु उत्प्रेरित किया जाय।

जवानो ! स्मरण रहे प्रभु ने आप सभों को बहुत से गुण दिये हैं, कला दी है। क्या आपने समझने का प्रयास किया है कि अपने गुणों के द्वारा प्रभु की क्या सेवा कर रहे हैं ? प्रभु आप के कामों के मुताबिक आपका लेखा लेगा ? आधुनिक मसीही संगीत के पिछड़े होने की क्या वजह है ? सिर्फ यही कि आपने इसे उपेक्षित समझा है। यह तर्क दिया जा सकता है कि हमें अवसर नहीं दिया गया किन्तु दरअसल अवसर तलाश करने से ही प्राप्त होता है।

मसीह की कलीसिया आप को आशाभरी निगाहों से निहार रही है। प्रभु सलीब पर लटका आप से कुछ अपेक्षा करता है। जागृत हो जाइये। क्रान्ति के संगीत की। क्या आपने स्वयं से एकान्त में पूछा है कि आपने प्रभु और उसकी कलीसिया को अपने गुणों के द्वारा क्या दिया है ? पाश्चात्य संगीत और चलचित्रों के संगीत से आप के कदम थिरकने लगते हैं, होंठ गुनगुनाने लगते हैं किन्तु क्या आपने विचारा है आप अपने अस्तित्व को भूल रहे हैं, अपने जीवते मसीह के अनुराग को उपेक्षित कर रहे हैं। आप स्वीकार करते हैं कि प्रभु का वचन जीवता है, दोधारी तलवार के सदृश है किन्तु क्या वजह है कि जीवते वचनों का संगीत सुनते ही आप की महफिलें वीरान हो जाती हैं, कहने लगते हैं कोई अच्छा रिकार्ड लगाओ दोस्त ?

जी हाँ मैंने साँसारिक गीतों के रिकार्ड को ब्लैक में बिकते देखा है। मसीही घरानों में इन कैसेटों और रिकार्डों का अम्बार देखा है। भय की तरंग में झूमते हुए युवाओं को मसीह के स्नेहमय प्रतिबिम्ब से दूर होते देखा है।

मसीह की मेड़शाला में खलबली है। अशान्ति है। मायूसी है और बेतहाशा भगदड़ है और हम जो युवा हैं बेफिक्र सो रहे हैं। शान्ति की तलाश संसारिकता में कर रहे हैं। स्मरण रहे आप को लेखा देना होगा। आज हम मसीह के हेतु शरमाते हैं किन्तु यह न भूल जायं मसीह भी न्याय के दिन में हमारे लिए शरमाएगा। अब भी

(शेष पृष्ठ १७ पर)

Gossner Mission

१९८५ "युवा-वर्ष बनाम युवा-वर्ग"

कार्यक्रम सचिव—भूषण दास; एस० सी० एम, राँची

वास्तव में यह बड़ी खुशी की बात है कि सन १९८५ को अन्तराष्ट्रीय युवा वर्ष घोषित किया गया है, और "ये हम युवक युवतियों का वर्ष है," कहा जाय तो इसमें दो मत नहीं।

हमारे देश भारत में स्वतंत्रता के आगमन के साथ-साथ "युवा" शब्द बहस का विषय भी बना, इसे विद्वानों ने तरह तरह से परिभाषित करने की कोशिश किया है।

मेरा यह लेख विशेष कर उन जवान भाई-बहनों के नाम समर्पित है जो कि मसीही दुनियाँ से सबंध रखते हैं! मसीही होने के नाते हम युवा वर्ग स्वयं को कलीसिया से अलग नहीं कर सकते क्योंकि "कलीसिया मसीह की दुल्हन है"।

अब सवाल ये नहीं कि युवा कौन है? वरन् यह है कि युवा किसे माना जाय। मानव जीवन में तीन स्तर सामान्यतः आते हैं और वो तीन स्तर है मनुष्य का बचपन अर्थात बाल्यावस्था दूसरा उसका युवावस्था और तीसरा वृद्धावस्था। तत्-पश्चात मनुष्य मृत्यु को प्राप्त करता है। हमारे देश में मनुष्यों की औसतन आयु ७० (सत्तर) वर्ष मानी गयी है और अब अगर इसके मध्य काल पर दृष्टिपात किया जाय तो ज्ञात होगा कि १५ वर्ष तक हम बाल्यवस्था में ही रहते है और उसके बाद अर्थात् १६ वर्ष से ३५-४० वर्ष तक की अवस्था को युवा अवस्था की संज्ञा दी जाती है। इसका सीधा अर्थ ये हैं कि मनुष्य ४० वर्ष की आयु गुजार लेने के बाद वृद्धा अवस्था में प्रवेश करता है।

कलीसियाई स्तर पर भी वर्त्तमान समय में युवा वर्ग एक चर्चा का विषय बन गया है। चूंकि प्रत्येक मसीही जन का जीवन कलीसिया (चाहे वो कोई सा भी क्युं न हो!) से जुड़ा है अतः हमारा ध्यान स्वतः ही कलीसिया के "युवा वर्ग" पर केन्द्रित है।

यहाँ कलीसियाई केन्द्रित युवा वर्ग को भी कई भागों में विभक्त किया जा सकता है;

मसलन; मसीही युवा वर्ग

↓ ↓ ↓ ↓

शिक्षित अशिक्षित बेरोजगार रोजगर प्राप्त

मसीही युवा वर्ग

↓ ↓

ग्रामीण क्षेत्र में शहरी क्षेत्र में

युवा वर्ग जो कि सामाजिक-आर्थिक रूप से तीन स्तर में बाँटे जा सकते है—

(१) आर्थिक रूप से सम्पन्न स्तरीय
(२) आर्थिक रूप से मध्य स्तरीय
(३) ,, रूप से निम्नस्तरीय

सामाजिक और राजनैतिक दृष्टिकोण से सम्पन्न और मध्य वर्गीय युवा वर्ग ही आज के समाज में अपना स्थान बना पाने में सफल होते नजर आये हैं। बुनियादी धरातल पे काम करने योग्य बातें एक फैशनेबुल नारा बन गया है; जब कि बुनियादी स्तर से जूड़े युवा वर्ग की बुनियादी आवश्यकता भी पूर्ण नहीं हो पाती; भला समाज-शास्त्री विचारक भी क्या कर सकते हैं सिर्फ "मेहनत" के! युवा वर्ग की आवश्यकता क्या२ है? खेद इस बात का है कि अभी तक हमने इस अवधारण को और इसकी सत्यात्मकता को पूरी

Gossner Mission

तरह से नहीं समझा है। इस क्षेत्र में सक्रिय लोग सिर्फ इसकी उपरी धरातल में तैरने के समान कार्य में लिप्त है; जबकि बुनियादी धरातल में जुड़ने की बात जब हम करते हैं तो उसका अर्थ ये होता है कि उस विशेष विषय की समस्या या स्थिति के मूल वर्गी कारण पर विचार कर, कार्य करना। समाज के आमुल्य पल रूपान्तर, वाक्यांश का महत्व केवल इसलिए हैं क्योंकि यह सामाजिक बुराइयों के मूल कारणों को निराकरित करता है!

क्या पढ़ाई समाप्ती के पश्चात् शानदार नौकरी प्राप्त कर लेना ही युवाओं का चरम लक्ष्य है अथवा व्याह कर अपना जीवन समायोजित कर लेने तक ही सीमित है; हाँ! उपर लिखित बातें भी कुछ हद तक ठीक ही है और उसमें कोई आपत्ति नहीं है लेकिन यदि हम "प्रभु यीशु मसीह" के जीवन का ही निष्पक्ष भाव से अध्ययन करें तो इस बात में दो मत नहीं कि उनका जीवन अपना जीवन था लेकिन पूरी जिन्दगी उन्होंने मानव सेवा में लगा दिया; उस जीवन का हद तो यह था कि मृत्यु को भी सूली पर औरों के लिए ही प्राप्त किया।

आज युवा वर्ग कहाँ जा रहा है?
किसके लिए इनका जीवन है?
दूसरी ओर.....
कलीसियाई स्तर में.....

कलीसिया के पास इन युवकों के लिए क्या कार्य क्रम है? क्या योजना है?

आत्मिक बृद्धि के लिए किस तरह के कार्यक्रम क्रियान्वित किए जा रहे हैं?

कलीसिया में कितने युवाओं को सेवाओं का अवसर "पूरे समय" में मिला है? युवा-वर्ग करना नहीं चाहता? या कि उन्हें अवसर तथा स्थान नहीं दिया जाता। वास्तव में यह एक बहुत ही गंभीर विषय है विशेष कर इस युवा वर्ष में; जब हम कलीसिया के विकास, नवीनिकरण और एकता की बातें करते हैं, ये आवश्यक हैं कि कलीसिया में विकास हो; कलीसियाई सामाजिक आर्थिन और आत्मिक स्तर पर, इनमें नवीनीकरण आए तथा एकता के सूत्र में बधकर निष्पक्ष और पवित्र विचार भावों से कार्य करें। युवा वर्ग इन सब के प्रति "जागरूक" हों। मुझे विश्वास है कि युवा वर्ग जागरूक है! अतः उदाहर्णार्थ ये बातें कहना चाहूँगा कि "सोये हुओं को जगाना आसान है बनिस्पत कि सोने की ढ़ोंग करने वालों को!

इस वर्ष हमारा लक्ष्य में होना चाहिए कि अपनी समस्याओं के निराकरण करते हुए अधिक से अधिक युवाओं युवतियों का हृदय प्रभु यीशु मसीह के लिए जीते ताकि युवा- आत्मा का उद्धार हो। इसके साथ ही.... ..."एक तथ्य और...." "Participation, Development and Peace" ही तो मुख्य नारा अथवा आह्वान है युवा- वर्ष का; १९८५ का सम्मिलित अथवा "भाग लेना" विकास और शांती का नारा इसी वर्ष लगाया जा रहा है ऐसी बात नहीं है हां इतना जरूर है कि ये आधार शब्द है और इन्हीं बातों को मद्देनजर रखते हुए इस वर्ष को युवा वर्ष घोषित किया गया है।

प्रशन स्वाभाविक रूप से मानस पटल पर चित्रित हो रहा है! कि कैसी शांति? कैसा विकास? और कैसे भाग लेना? जवाब भी शायद यही होगा कि .....

चहुमूंखी विकास!

चिरस्थायी शांति! और उन प्रत्येक स्थानों में भाग ले सकने का अवसर; जिनके द्वारा कि सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास हो! तथा जीवन सही मायने में सफल जीवन हो!

आज के इस युग में; जब युवाओं का वर्ष चारों ओर बहुत ही जोश के साथ क्रियान्वित किया जा रहा है। कैसे लोग युवाओं के लिए

Gossner Mission

कार्यक्रम और योजना तैयार कर रहे हैं ? युवा कल्याण योजना निर्माण किनके द्वारा हो रहा है।

युवाओं को स्वयं के लिए योजना निर्माण का कार्य कहाँ और कैसे दिया जा रहा है या कितने युवक और युवतियाँ स्वयं के लिए जिवनोपयोगी योजना निर्माण कर रहे हैं ? कैसे ? कहाँ ? कब ? मुल्याकंन की कोई व्यवस्था हो पाई है या नहीं ! खुशी की बात है कि सन् १९८४ का "युवा" हमारे देश में वर्त्तमान प्रधान मंत्री श्री राजीव गाँधी को घोषित किया गया और हमारी ओर से वे भी बधाई के पात्र हैं।

बाल वर्ष, महिला वर्ष ; "और भी" वर्ष घोषित किए गये। इसी तरह ये युवा वर्ष भी घोषित किया गया; और हम में से प्रत्येक जब जानता है कि एक साल में बारह महीने आते हैं और अब दो महीने खत्म हो चुके हैं; योजना निर्माण और कार्यक्रम की तैयारी में बाकी के दस महीने बचे हैं और ठीक १९८५ के ३१वीं दिसम्बर के रात १२:०० बजे युवा वर्ष भी अन्य घोषित वर्षों की तरह समाप्त हो जाएगा !

क्या हमने अब तक "कुछ" करने का निर्णय किया है ? क्या ? कहीं ऐसा तो नहीं कि ये युवा वर्ष हम युवक युवतियों के लिए एक ठोकर का कारण बनते हुए ठोकर का वर्ष होकर रह जाय।

सकल्प करें कि ये युवा वर्ष हमारे लिए प्रभु यीशु मसीह का वर्ष हो विशेष रूप से; तथा हम सचमुच में प्रभु के लिए एक चुने हुए युवा बन जाएँ और आदर्श बने; प्रेरणा बने इन वचनों को ध्यान में रखते हुए कि हे जवान अपनी जवानी में आनन्द कर; और अपनी जवानी के दिनों में मगन रह; अपनी मनमानी कर और अपनी आंखों की दृष्टि के अनुसार चल। परन्तु यह जान रख कि इन सब बातों के विषय परमेश्वर तेरा न्याय करेगा।

अपने मन से खेद; अपनी देह से दुःख दूर कर।
लड़कपन और जवानी; दोनो व्यर्थ है॥
अपनी जवानी में; सृजनहार को स्मरण कर।
विपत्ति के दिनों में; संकट के समय में,
क्यों कहें कि नहीं लगता मन मेरा इनमें॥

आइए कुछ ऐसा करें कि ये युवा वर्ष; युवा वर्ग के लिए मुक्ति और उद्धार का वर्ष हो।

● ● ●

(शेष १४ पृष्ठ)

वक्त है मेरे मित्रो ! अब भी कुछ नहीं बिगड़ा मेरी बहनो ! जरुरत है जागृति का चिराग रौशन करने की। मसीही संगीत का इस्तेमाल करने की एवं मसीह के प्रति पूर्ण समर्पण की।

अन्तिम दिनों के आने में देर नहीं। धर्मशास्त्र का एक-एक शब्द पूरा हो रहा है। भूकम्प हो रहे हैं। प्यार और प्रेम की दीवार में दरारें पड़ रही हैं। अकाल और जल प्रकोप से विश्व त्राहि-त्राहि कर रहा है और.... इस्राएल पुनर्गठित हो गया है। भाई को भाई के रक्त की पियास है। प्रभु का वचन विश्व के कोने-कोने में प्रशस्त हो रहा है। कौन सा चिन्ह चाहिए आप को ?

आज आप से अपेक्षा की जाती है कि आपका जीवन समर्पित हो। आप में निहित संगीत का गुण निखर कली से फूल बन जाय। मसीही जीवन महमहा उठे।

आज संकल्प कीजिए क्योंकि वक्त नहीं। परमेश्वर आप को आशीष दे एवं आप का मार्ग प्रशस्त करे।

Gossner Mission

लेख

तरंग

सिरिल हेम्बरोम, गोस्नर थियोलोजिकल कॉलेज, राँची।

एक संध्या मैं हिन्दमहासागर और अरब सागर के किनारे उनकी सुन्दरता के आनन्द का रसास्वादन कर रहा था। तेज हवा बह रही थी। तेज हवा की झोकों से दोनों समुद्रों में भारी तहलका और कोलाहल मचा हुआ था। ऐसे तहलके और कोलाहल उन दोनों समुद्रों की ऊँची-ऊँची तरंगों के कारण ही थे। ऐसे तहलके और कोलाहल से उस सारे जलाशय में भारी गड़बड़ी और अस्तव्यस्तता मची हुई थी। वहाँ उस समय किसी जहाज या नाव का चलना कठिन ही नहीं असंभव था, क्योंकि उस समस्त जलाशय में मानों भयंकर प्रलयकारी नृत्य हो रहे थे। इन दोनों समुद्रों की ऐसी उत्ताल तरंगों तथा उनसे उत्पन्न होनेवाली शोरगुल ने न केवल मुझे आनन्द विभोर कर दिया, परन्तु मुझे चिंतन रुपी सागर की गहराई में जाने को भी विवश कर दिया।

विचार आये कि तरगें तो आखिर जल ही हैं। जल तो प्राणीजगत के जीवन के मूलभूत तत्वों में से एक है। जल से जीवधारियों के जीवन की रक्षा होती है। परन्तु यही जल तेज हवा के झोकों से तिलमिला कर उन्माद तरंगों में परिणत होकर भीषण प्रलयकारी रूप धारण करता है। तेज हवा के झोकों के अभाव में ऐसी तरंगों का नामोनिशान नहीं रह जाता। परन्तु हवा के झोकों की चपेट में आकर जल तरंगों के भीषण प्रलयकारी रूप धारण कर किसी को भी विनाश के लिए मुंह बायें प्रतीत होता है। वे तरंगें स्वयं तो क्षणभंगूर होते ही हैं, परन्तु दूसरों के जीवन को भी क्षणभंगूर बनाने पर तुले रहते हैं।

युवा भाईयो और बहनों, जवानी भी उपरोक्त उत्ताल तरंगों के समान है। यह जीवन की एक तरंग है जो मनुष्य जीवन और सामान्य रूप से सारे प्राणी जीवन में एक बार आती है। अपने आप में वह सुन्दर है, आकर्षक है, शक्तिशाली है, और अत्यन्त लाभकारी है। परन्तु दुनियां के भिन्न-भिन्न प्रकार की तेज हवाओं के चपेट में आकर यह तिलमिला जाती है। उन हवाओं की झोकों से इसका सन्तुलन बिगड़ जाता है और यह कुरुप, घृणित, नालायक, निष्क्रिय और अत्यन्त विनाशकारी बन जाता है। इन्हीं चीजों को मद्दे नजर रखते हुए मैं कुछ विशेष बातों को प्रस्तुत करना चाहता हूं।

घमंड मसीही जीवन के लिए बिल्कुल अशोभनीय है जवानों के लिए तो यह कलंक है। यह ईश्वर की ओर से नहीं परन्तु शैतान की ओर से है। (१ यूहन्ना २:१६)। यह सांसारिक है इसका अंत अत्यन्त बुरा होता है। इसका नतीजा पतन है। (यहेजकेल २८:१-१६)। घमंड का नतीजा अपमान भी होता है (नीति वचन ११:२, १८:१२, २९:२३ यशायाह २८:३)। इसका अंत विनाश है। नी०व० १६:१८)। यह मूर्खता का प्रतीक है।नी०व० १४:३)। इस तरह से घमंड हर प्रकार से बुरी चीज है जिसका परित्याग करना जवानों को करना आवश्यक है।

घमंड रूपी शैतान की सेवा का परित्याग

घमंड अनेक चीजों के लिए किया जा सकता है। जवानी का घमंड, शक्ति और सुन्दरता का घमंड, कला और योग्यता का घमंड, बुद्धि तथा उपलब्धि का घमंड या किसी भी चीज का घमंड गलत है।

(शेष अगले अंक में)

Gossner Mission

(१८ पेज का लगातार)

किसी भी चीज का घमंड टिकने वाला नहीं है। यह हमेशा पतन और पतितावस्था का प्रतीक है। यह एक शैतान ही है जिसकी सेवा जवानी को बिल्कुल त्याग देना चाहिए। ऐसे शैतान की सेवा के साथ वे कभी मसीह की सेवा नहीं कर सकते हैं। अतः अवश्य है कि वे उससे दूर होकर अपनी जवानी और अपनी सारी योग्यताओं को परमेश्वर के सुनहले और उत्तम दान समझ कर परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए उसकी महिमा के लिए जीवन बितायें।

प्रत्येक मसीही जवानों को हमेशा अपनी सीमितता तथा अपनी जवानी की अनित्यता का ध्यान होना चाहिए। यह क्षणभंगुर है। इसका ढलना अवश्य और निश्चित है। यह उन तरंगों के समान है जो तेज हवा के झोकों से फुफकार उठती है परन्तु अविलम्ब ही गिर कर निर्बल हो जाती है।

जवानी की सीमितता और अनित्यता का ज्ञान और ध्यान

जवानी एक बार आती है, परन्तु वह या तो अपने शर्मनाक या आदर्शपूर्ण छाप छोड़ देती है जिसका प्रतिफल संबंधित व्यक्ति को भोगना पड़ता है। जवानी तो जिंदगी की आधी दूरी तय कर लेना है। इसके बाद आप को और उतना ही जीना है जितने दिन आप जी चुके हैं। परन्तु इसमें भी कोई गारंटी नहीं है कि आप वह बची हुई जिंदगी को पूरी तरह जी सकते हैं, क्योंकि जीवन परमेश्वर के हाथ में है। जैसा जीवन वैसी ही जवानी भी परमेश्वर का दान है। यह एक भंडारीपन है। यह एक थाती है। अतः अवश्य है कि जवान अपनी सीमितता को समझे और जीवन को सही मार्ग पर चलावे ताकि उससे उसकी अपनी, अपने परिवार की, समाज की, देश की तथा कलीसिया की सेवा हो सके। सभों के लिए उसकी जवानी और जीवन आदर्श और आशीष का कारण बन सके। यह जीवन और यह जवानी थोड़े दिन के हैं और देखते ही देखते जाते रहते हैं। (भ० सं० १०३:१५ यशायाह ४०: ६-७, नहूम १:४, याकूब १:१०, १ पतरस १:२४)। यीशु के सम्पर्क में ही इस जीवन और जवानी का सही रूप से समझ कर उसका सदुपयोग संभव है। जवानों को आत्म संयम पर ध्यान देना भी अत्यावश्यक है।

आत्मसंयम पर अमल

अनेक बातों में आत्म संयम की आवश्यकता है — नकल की होने में, क्रोध में, जोश में, साहस में निराशा में और अनुशासन इत्यादि में। आत्मसंयम के अभाव में ही बहुत बार बहुत ही असमझ (नन्सेन्स) फैशनों के पीछे लोग दौड़ पड़ते हैं। अपने क्रोध को वश में न कर पाने के कारण अनेक महामूल्य कर बैठते हैं। जोश में आकर अपने होश खो बैठते हैं। साहस के नाम पर दुःसाहस करने लगते हैं। निराशा का सामना न करके हार बैठते हैं और अनुशासन हीनता के शिकार हो जाते हैं। अतः अवश्य है कि वे अपने आपको वश में करना जानें क्योंकि यह किसी नगर को या देश को जीत लेने से भी उत्तम है, और बढ़कर भी है। (नीति० १६:३२)। अपने आत्म संयम के द्वारा कोई उस जवानी को तुच्छ न समझेगा वरन उससे शिक्षा ग्रहण करेगा। २ तिमोथी ४:१२। परमेश्वर पर भरोसा ही जवानी का आत्म संयम और सही मार्ग पर चलाने का उपाय हो सकता है यशायाह ६४। हर एक जवान को यह भी जानना चाहिए कि जो कुछ वह करता है उसका लेखा उसे अन्त में परमेश्वर को देना पड़ेगा। सभोपदेशक ११:९।

शुभकामना है कि जवानी रूपी तरंग घमंड से परे रहकर अपनी सीमितता और उत्तरदायित्व को समझे तथा आत्मसमर्पण का सुन्दर नमूना पेश करके परमेश्वर की महिमा का उत्तम हथियार बन सके।

Gossner Mission

अकेलापन

श्री एस० सोय, जी० टी० कॉलेज राँची

बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था में माता-पिता, भाई-बहन आदि साथ देते, सहायता करते और मार्गदर्शन करते हैं किन्तु जैसे-जैसे वो अवस्था पे गुजर जाती है तथा मनुष्य युवावस्था में पदार्पण करता है, वह स्वयं में अकेलापन महसूस करने लगता है। भले ही दूसरे उसका साथ दें या न दें, अकेलापन उसके जीवन में केन्द्र बिन्दु बन जाता है! आखिर ऐसा क्यों?

मानव-सृष्टि का बयान इस प्रकार किया जाता है कि यहोवा ने पुरुष (आदम) को मिट्टी से बनाए मगर स्त्री (हव्वा) की रचना मिट्टी से न करके पुरुष के अस्थि-पंजर में से निकाली गई एक पसुली से की। अकेलापन महसूस करने की वजह कहीं यह तो नहीं कि युवक उस निकाली गई पसुली को पुनः हासिल करना चाहता हो और युवती पुनः वहीं समा जाना चाहती हो जहाँ से निकाली गई!

बाईबिल बतलाती है, "एक से दो अच्छे हैं। क्योंकि उनके परिश्रम का अच्छा फल मिलता है क्योंकि यदि उनमें से एक गिरे तो दूसरा उसे उठाएगा, परन्तु हाय उसपर जो अकेला होकर गिरे और उसका कोई उठानेवाला नहो।" (सभो० ४-१०)। यहाँ हम क्या पाते हैं कि जब कोई अकेला होकर जिन्दगी में सफर करता तो गिर जाने पर पुनः उठकर सफर करना उसके लिए मुश्किल पड़ जाता है। जब ऐसी स्थिति सामने आती है तो अकेलापन का वजन दुगुना हो जाता है अतएव शारीरिक तौर पर परिवार में, समाज में और कलीसिया में परस्पर सहयोग देकर रहना अतयंत आवश्क है। परस्पर सहयोग का फल मीठा होता है तथा एक-दूसरे को प्रगति के शिखर पर उठाने में सहायता मिलती है।

अब आध्यात्मिक दृष्टिकोण से 'गिर जाना' का अर्थ है, पतितावस्था। जब कोई परमेश्वर की दृष्टि में गिर जाता या अपराध का शिकार हो जाता तो वह अकेला उठ नहीं सकता। उसे एक ऐसे सहायक की आवश्यकता है जो उसको उठा सकें, उस अवस्था से मुक्त कर सके, अकेलापन का एहसास करने से वह वंचित रख सके। एक समय की बात है, यीशु के शिष्य गहिरे समुंद्र में नाव पर सफर कर रहे थे। एकाएक विपरीत हवा और आंधी की चपेट में पड़ जाने के कारण उनकी नाव डगमगाने लगी। यद्यपि वे बहुत थे मगर यीशु की अनुपस्थिति में सब अत्यन्त व्याकुल और घबराये हुए थे। उन्हें अकेलेपन का एहसास हो रहा था। वक्त के साथ-साथ यीशु जल पर चलते हुए उनके समीप आकर कहा "धैर्य रखो मैं हूँ, डरो मत (मर० ६:४०) संसार एक अथाह सागर है जिसमें जीवन रुपी नाव पर सफर करते कई आंधियों का मुकाबला करना पड़ता है। ऐसे समय पर हमारे अकेलेपन तथा घबराहट का अनुभव करना स्वभाविक हो जाता है। यीशु हमारे लिए भी यही कहता है "धैर्य रखो, मैं हूँ डरो मत।"

अब समस्या रह जाती है कि यीशु के उक्त कथन को साकार कैसे किया जाय! बाइबिल में लिखा है कि, "देख मैं द्वार पर खड़ा हुआ खट-खटाता हूँ, यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा और वह मेरे साथ। प्र०वा०

(शेष कभर पेज पर)

Gossner Mission

दक्षिण-पूर्वी अंचल युवा-संघ पंचम वार्षिक सम्मेलन

— रेभ० जे० एम० तोपनो, युवा-निर्देशक द० पू० अंचल खूँटी।

दक्षिण-पूर्वी अंचल युवासंघ बीते कई वर्षों से किसी न किसी रूप में कलीसिया में संगठनात्मक रूप से कार्यरत है। नया तथा पुनः संगठन होने के बाद यह पंचम वार्षिक सम्मेलन तिथि ४ से ६ जून ८५ स्थान जी० ई० एल० चर्च मरचा में बड़े धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

यह सम्मेलन बहुत ही महत्वपूर्ण रहा। करीब पाँच हजार से अधिक जवान-युवतियां, भाई-बहन तथा बच्चे सम्मिलित हुए। विशेषता यह थी कि केवल गोस्नर कलीशा के ही जवान-युवति नहीं परन्तु पड़ोसी कलीसियाओं के जवान-युवतियाँ भी उत्साह पूर्वक सम्मिलित हुए। इतनी अधिक संख्या होने के कारण सब लोगों के लिए रहने का उत्तम प्रबन्ध नहीं होने सका साथ ही मेस में भी समस्याएँ हुई। लोग जहाँ कहीं भी सम्मेलन स्थल के बाहर भी मैदानों में, पेड़ के नीचे तथा चौराहों में रात काटे। ईश्वर पिता की दया हुई कि किसी प्रकार की कठिनाइयाँ नहीं आयीं। सम्मेलन के पूरे दिन शान्ति पूर्वक बीत गये।

सम्मेलन का मूल विषय "तुम मेरे गवाह हो" लूक २४:४८ पद सम्मेलन में बाइबिल अध्ययन विषयों पर प्रकाशन के साथ आकर्षण के निम्न विषय थे :—

(क) द० पू० अंचल रजत जयन्ती को सफल बनाने के लिए लॉटरी का खोला जाना।

(ख) महिलाओं का हॉकीखेल।

(ग) आधुनिक गीत संगीत तथा भजन। बाइबिल प्रश्नोतर प्रतियोगिता तथा व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर तर्क-वितर्क एवं बहस। आधुनिक गीत संगीत में जमशेदपुर, चाइबासा, गुआ, पथलकुदवा रांची, तोरपा तथा चीकारो स्टीलसिटी के संगीत दलों का योगदान सराहनीय रहा।

हर बेले में बाइबिल अध्ययन की अगुवाई डा० सी० के० पौल सिंह मिशन डाईरेक्ट (प्रे० कि० १:८), रेभ० पी० डी० बुढ़ गो० थियो० कॉलेज (मत्ती २८:१९-२०) तथा रेभ० सी० डी० के० कुजूर बाइबिल सोसाईटी (१ तिमो० ४:१२) के द्वारा की गई। सम्मेलन में प्रकाशन के विषय तथा अन्य विशेष विषय इस प्रकार थे :—

१ वर्तमान सामाजिक तथा राजनैतिक जीवन की परिस्थिति में हमारी मसीही गवाही— इस विषय पर नवजीवन प्रकाश गोविन्दपुर के डाइरेक्टर डा० एम० बागे द्वारा प्रकाशन दिया गया तथा जवान युवतियों को प्रोत्साहित किये कि हमारा सर्वांगीन विकाश के क्रम में मसीह की गवाही हर परिस्थिति में देना आवश्यक है।

२ वर्तमान सामाजिक तथा राजनैतिक जीवन की परिस्थिति में पवित्र बपतिस्मा—डा० सी० के० पौल सिंह द्वारा बहुत ही सरल शब्दों में तथा विस्तार पूर्वक बपतिस्मा का भेद तथा उसकी वास्तविकता का प्रकाशन दिया गया।

३ कलीशा में दान-देन एवं अर्थ-व्यवस्था के संबंध में प्रमुख अध्यक्ष रेभ० एस० मोहन एम० जी० द्वारा कलीशा के प्रति आस्था रखकर दान एवं देन के द्वारा तथा उसकी गंभीरता में कलीशा को सुव्यवस्थित तथा सुदृढ़ होने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

Gossner Mission

४ वर्तमान सामाजिक तथा राजनैतिक जीवन की परिस्थिति में आध्यात्मिक गंभीरता— हमारे अंचल अध्यक्ष रेभ०सी०एस०आर० तोपनो द्वारा बहुत ही गंभीरता पूर्वक जवान-युवतियों को शिक्षा दिया गया। वे इस बात पर जोर दिये कि जब कि इस वर्तमान युग में हर कहीं भ्रष्टाचार का राज्य दिखता है भलाई के स्थान पर बुराई की ही जीत सी लगती है। परन्तु परमेश्वर सब जगह सभी परिस्थितियों में हमारे साथ है। कोई ऐसा स्थान नहीं जहाँ परमेश्वर नहीं है। चंकि परमेश्वर सृष्टिकर्ता है अतः हम उससे दूर नहीं जा सकते। सब जगह उसकी निगाह हम पर पड़ेगी। चाहे हम किसी भी राजनैतिक या सामाजिक परिस्थिति में रहें। अतः हम उसकी दृष्टि तथा मसीही होकर पड़ोसी प्रेम में आगे बढ़ें। आज के बिगड़ी समाज में भी न्याय और प्रेम को स्थान देकर आगे बढ़ें तो भ्रष्टाचार तथा बुराइयाँ जाती रहेंगी।

५ वैचल प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता (उत्पत्ति १-१७ अ०) रेभ० जे० एम० तोपनो युवानिर्देशक द्वारा संचालन किया गया। यह प्रतिवर्ष का रोचक विषय है। जिसके लिए विद्यालयों तथा महाविद्याललों में पढ़ने वाले छात्र-छात्राएँ तैयारी कर आते हैं। इस बार भी काफी उत्साह पूर्वक जवान युवतियों ने भाग लिया।

प्रतियोगिता का फल इस प्रकार हुआ है :—

प्रथम—सुनील सागेन बागे—बोकारो स्टील सिटी
द्वितीय—रोशन होरो—बोकारो स्टील सिटी
तृतीय—विरसन गुड़िया—बोकारो स्टील सिटी।

इनके साथ ही— विश्वासी सोरेन, मरचा, माइकेल एक्का बोकारो, ज्योति सोरेन, दिपा केरकेट्टा, अनरित पुर्ती पंजाब, ग्लोरिया होरो गोविन्दपुर, कुसुदनी सुरीन कोटरी तथा सबन समद बोकारो ने अच्छे अंक प्राप्त किये।

६ व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर तर्क वितर्क एवं बहस

विषय—"हमें खुस्तान होना ही नहीं चाहिए" तथा "हमें खुस्तान होना ही चाहिए"। यह विशय बहुत ही रोचक रहा। बहुत से जवानों ने अपने अनुभव के आधार पर इस विषय पर तर्क वितर्क एवं बहस में भाग लिया तथा लोगों ने अनुभव किया कि हमें खुस्तान क्यों नहीं होना चाहिए तथा क्यों खुस्तान होना ही चाहिए। डा० सिंह द्वारा सुन्दर सुझाव दिये गये तथा इसी विषय के आधार पर जवान युवतियों को पत्राचार के द्वारा अपने कार्यालय से बाइबिल पाठ लेने का सुझाव दिये।

७ अंत में जब सभी लोग थक चुके थे, सब से रोचक खेल महिलाओं का हॉकी खेल तथा लॉटरी का खोला जाना सम्पन्न हुआ।

महिलाओं के हॉकी खेल में मरचा, हुदरू, टकरमा तथा गोविन्दपुर इलाका की टीमों ने भाग लिया। फाइनल खेल टकरमा तथा गोविन्दपुर के साथ बड़े संघर्षपूर्ण सम्पन्न हुआ। अंत में गोविन्दपुर इलाका की ही विजय हुई तथा लगातार तीसरी विजय के साथ उनको चैम्पियन घोषित किया गया।

लॉटरी का खेल ६ जून शाम में सम्पन्न हुआ। चाईबासा पेरिस कैथरमेन रेभ० ए० बी० सुरीन उसके अनुभवी हाथ के द्वारा बहुत ही सुन्दर ढंग से सम्पन्न किया गया। हमारे प्रमुख अध्यक्ष द्वारा लॉटरी परिणाम की घोषणा कि गई। अंततः शांतिपूर्वक सम्मेलन की समाप्ति प्रार्थना गीत भजनों के साथ किया गया।

Gossner Mission

लॉटरी का परिणाम

जी० ई० एल० चर्च द० पूर्वी अंचल, खूटी रजत जयन्ती को सफ़ल बनाने के लिए तिथि ६.६.८५ स्थान जी०ई०एल० चर्च मरचा में द० पू० अंचल युवासंघ सम्मेलन के अवसर पर निकाली गई लॉटरी का परिणाम :—

१	पुरस्कार :—राजदूत मोटर साइकिल	— A 6363	—	अब्राहम हेड़िः, असंगी चेड़ा सिंहभूम।
२	,, टी० वी० एस० ५०	— B 3144	—	अंजोरा तिर्की, राजा बंगला, राँची।
३	,, एक जोड़ा बैल	— E 6891	—	बी० राव ध्रुवा।
४	,, सिलाई मसीन	— F 2659	—	नमन सुरीन, खिजुरी कुलबुरु, राँची।
५	,, पेट्रोमेक्स	— B 8285	—	गब्रीएल होरो, चिड़ियां सिंहभूम
६	,, लेदर सूटकेश	— F 0222	—	जुज़ेन संगा, किताडीह, जमशेदपुर।
७	,, कम्बल	— B 0719	—	सचिदानन्द कन्डुलना, ओसंगी सिंहभूम।

अन्य आकर्षक पुरस्कार (सांत्वना)

१	पुरस्कार— ऊनी चादर (पुरुष)	— B 6168	—	प्रताप ठाकुर, गुआ सिंहभूम।
२	,, ऊनी चादर (महिला)	— C 0244	—	प्र० जुनास समद, कहूपानी।
३	,, टार्च २ सेल	— D 6213	—	भुदु मडव, राजसहूल साहेबगंज।
४	,, साड़ी सूती	— D 6236	—	किरामी नायक बोड़िल।
५	,, हेण्ड बेग	— A 0849	—	सुधीर केरकेट्टा, महूआँक।
६	,, छाता	— B 7203	—	(देवेन्सी गुआ, सिंहभूम।

सी० एस० आर० तोपनो, अध्यक्ष द० पू० अंचल, खूँटी।

Gossner Mission

लेख प्रतियोगिया न० (एक) का परिणाम

१ प्रथम पुरस्कार — डा० एम० एम० मुन्डु
दुमसा टोली, राँची ८३४००१ (बिहार)
पुरस्कार की राशि ३०) रु० भेज दिया जा रहा है।

२ द्वितीय पुरस्कार — श्रीमती कनक तिर्की
ओल्ड हजारीबाग रोड राँची (बिहार)
पुरस्कार की राशि २०) रु० भेज दिया जा रहा है।

३ तृतीय पुरस्कार — मीस्त त्रासा पतरस मुन्डू
जी० ई० एल० चर्च कम्पाउन्ड चाईबासा
जिला—सिंहभुम (बिहार)
पुरस्कार की राशि १०) रु० भेज दिया जा रहा है।

लेख प्रतियोगिता न० (एक) में

प्रथम स्थान प्राप्त, डा० एम० एम० मुन्डु द्वारा प्रस्तुत 'मसीही परिवार की महिलाओं को सिन्दूर लगाना आवश्यक है या नहीं ? पुरस्कृत लेख अगले अंक में प्रकाशित की जाएगी।

इनके लेख भी प्रशंसनीय रहे—

१ श्री बसन्त कुमार बरला द्वारा / मिस बिनको मिंज
जी० ई० एल० चर्च कम्पाउन्ड बाबूलेन राँची ८३४००१ (बिहार)

२ सुमन बरला, क्वाटर न० २ / १८०, सेक्टर—१५ राउरकेला—३,
जिला—सुन्दरगढ़ (उड़ीसा)।

३ श्री सुसारन सोय, गोसस्नर थेओलोजिकल कॉलेज राँची
८३४००१ (बिहार)।

४ नमजन एम० होरो, कोरोंजो जी० ई० एल० चर्च
प्लाथपुर, गुमला ८३५२२७ (बिहार)।

Gossner Mission

विचार-मंच

(१) पाठकों के अनुरोध पर घरबन्धु विचार मंच (तीन) की अवधि दो महीने तक बढ़ा दी जा रही है। आप के विचार पहुंचने की अंतिम तिथि १० दिसम्बर १९८५ तक। प्रतिमाह आपके विचार छपते जाएगी।

(२) घरबन्धु विचार मंच (तीन) पर इस बार विचार नहीं भेजी गयी। जिनके विचार दोनों पक्ष पर पेश हुए हैं तथा १५० शब्दों से ज्यादा का है, प्रकाशन हेतु हम लाचार हुए।

घरबन्धु विचार मंच (तीन)

एक मसीही के लिए मद्यापान निषेध है या नहीं ?

जुलाई अंक में 'सीमा का परिवार' कहानी प्रकाशित है। सीमा अपने बच्चों को शिक्षा दी— मद्यपान निषेध है। शराब पीने से मृत्यु होती है। सोमा और धोमा दोनो भाइयों ने माँ की शिक्षा को हमेशा ध्यान में रखा। सीमा के आसुओं में प्रेम तपस्या की बूंदे थी। माँ की ममता में अमर वाणी थी। सीमा के सबल हाथों ने बच्चों का प्यारा चेहरा सँवारा।

उपरोक्त कहानी के संकेत पर अपना विचार प्रगट कीजिए। आप के विचार कम से कम पच्चासी शब्दों का हो। नीचे छपे कूपन के साथ १० दिसम्बर १९८५ तक भेजते रहना चाहिए। प्रति माह आप के विचार छपते जाएगी।

कूपन रहित विचार पर घरबन्धु विचार मंच ध्यान नहीं देगी।

पता—घरबन्धु विचार मंच
द्वारा / सम्पादक 'घरबन्धु'
के० एस० एस० ऑफिस
जी० ई० एल० चर्च कम्पाउन्ड राँची
राँची – ८३४००१
(बिहार)

घरबन्धु विचार मंच (तीन)

नाम.....उम्र.....

पता.....

.....

Gossner Mission

बाइबिल पहेली प्रतियोगिता (एक)

१ आदम को सहायक देने के लिए परमेश्वर ने कौन सा पहला उपाय किया ?
२ अदन की बारी में भले और बुरे ज्ञान के पेड़ के फल खाने में कौन अधिक दोषीदार था ?
३ पृथ्वी को फिर से जलप्रलय द्वारा नाश न करने के लिए परमेश्वर ने कौन सा उपाय ठहराया ?
४ लोग कब से यहोवा से प्रार्थना करने लगे थे ?
५ पशु बलिदान का आरम्भ कब से शुरु हुआ ?
६ नूह की जहाज (नौका) में कितने लोग जल प्रलय से बच गए और कौन-कौन ?
७ खेती बारी का आरम्भ करने वाला कौन था ?
८ नूह अपने परिवार सहित कितने दिनों तक जहाज (नौका) के अन्दर रहा ?
९ नूह के पिता का नाम क्या था ?
१० नूह के जहाज (नौका) के दरवाजे को किसने बन्द किया ?

इस प्रतियोगिता में केवल १६ वर्ष तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं। आपके उत्तर से बाइबिल के पदों को लिखना न भूलें, अन्यथा अधूरे होंगे। प्रथम दो सर्वयुद्ध हल पर सुन्दर उपहार दिया जाएगा तथा अन्य विजेताओं के नाम हम छापेंगे। १० अक्टूबर १९८५ तक पत्र भेजने का पता है-

बाइबिल पहेली प्रतियोगिता (एक)
द्वारा/सम्पादक घरबन्धु
के० एस० एस० आफिस
जी० ई० एल० चर्च कम्पाउन्ड
राँची ८३४००१ जिला राँची (बिहार)

मांगो तो तुम्हें दिया जाएगा, ढूंढ़ो तो तुम पाओगे, खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा। क्योंकि जो कोई मांगता है उसे मिलता है, और जो ढूंढ़ता है वह पाता है और जो खटखटाता है उसके लिए खोला जाएगा। मत्ती ७:७-८

क्या आपने 'घरबन्धु' के लिए अपना ग्राहक चन्दा भेज दिया ? नहीं !— तो आज ही मनीआर्डर से भेजकर पुण्य करें धन्यवाद !

सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर, क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।
(नीतिवचन ४:२३)

घरबन्धु अक्टोबर १९८५

(२० पेज का लगातार)

३:२० क्या आप अपने मन का द्वार यीशु के खटखटाने पर खोलते हैं ? मन का द्वार खोलना और बन्द रखना आप का अधिकार है। जब जब हम परमेश्वर का वचन सुनते या पढ़ते हैं तब तब यीशु हमारे मन के द्वार पर खटखटाता है जब हम परमेश्वर के वचन का पालन करते, उस का अनुसरण करते हैं तब यीशु सदैव हमारे संग-संग रहता है। हम अकेलापन नहीं महसूस करेंगे।

यीशु के साथ रहना या उसका अनुसरण करना कठिन अवश्य है। यही वजह है कि बाइबिल में एक जगह लिखा है, "आत्मा तो तैयार है, पर शरीर दुर्बल है।" मर० १४:३८। अतः अकेलापन से राहत पाने तथा पतितावस्था से मुक्त होने के लिए हमें यीशु अर्थात् आत्मिक शक्ति प्राप्त करने की जरुरत है जो परमेश्वर से नित्य प्रार्थना करने और सदैव जागृत रहने से संभव है।

भूल-सुधार :— "तरंग" लेख इसी अंक में लगातार १८ पृष्ठ पर समाप्त हुई। शेष अंक नहीं रहेगा।

सूचना

राउरकेला इलाका युवा-संघ की ओर से बड़े धूम-धाम के साथ आगामी २४-२५ अक्टूबर १९८५ को राउरकेला जी० ई० एल० चर्च रेलवे कॉलोनी गिर्जा घर प्रांगण में युवा-सम्मेलन का होना निश्चित किया गया है।

२४ अक्टूबर शाम ६ बजे से सम्मेलन का शुभारम्भ।

२५ अक्टूबर शाम ६ बजे भजन-होड़ के बाद सम्मेलन समाप्त होगी।

सम्मेलन का मुख्य आकर्षक द्रष्टव्य कलीसिया के प्रमुख वक्ताओं का आगमन धार्मिक चलचित्र का प्रदर्शन एवं सांस्कृतिक समारोह है।

राउरकेला के बाहर से आने वाले जवान युवतियों के निमित्त ठहरने के लिए अलग-अलग सुव्यवस्था तथा खाने के लिए मेस का उत्तम प्रबन्ध है।

प्रभु में आप का भाई

आनन्द खलखो

सचिव, राउरकेला इलाका युवासंघ

Gossner Mission

आप का ग्राहक चन्दा [21. 8. 1985 तक]

सधन्यवाद प्राप्त हुआ

❀ ❀ ❀

1	31	Miss Salomi Topno; Khunti	14.00
2	211	Mr. P. Dayal, Sewanagar	26.00
3	1018	Mr. Pyara Kullu, North Andaman	14.00
4	408	Mr. Suleman Samad, Tilayara	14.00
5	389	Mr. Kalyan Aind, MECON Ranchi	14.00
6	653	Mr. E.M.Kandulna Kudalvi	14.00
7	658	Rev A.B. K. Mahto, Pathalkudwa	14.00
8	1024	Mr. Premchand Jojo, Raikera	14.00
9	668	Mr. Junas Tiru, Jurdag	14.00
10	153	Mr. Elias Topno, Howrah	14.00
11	727	Mr. Hanuk Horo, Hatia toli	28.00
12	1025	Mr. Ambrojius Kullu, Jamadohar	14.00
13	343	P.U. Bara, Mango, J S R	100.00
14	667	Miss Nelan Dhan, Jurdag	32.00

कृपया पत्र व्यवहार या मनीआर्डर भेजते वक्त अपना ग्राहक न० अवश्य लिखें

एसोसियेट एडिटर, धरबन्धु।

Edited & Published by Rev. S. Mohan MG. Pramukh Adhyaksh on behalf of the G.E.L. Church and printed at G.E.L. Church Press Main Road Ranchi.

Gossner Mission

aus Akte
G1/124
(Lfd. No. 65)

Gossner Mission

घनश्याम

रजिस्टर्ड नं० आर० एन० सी० ४
वार्षिक मूल्य १० रु०
एक प्रति ,, १ रु०

वर्ष—१०० रांची, जून १९८१ संख्या न०—१८

G.E.L. Church Ministerium Sabha

Date 22-3-81

प्रार्थना :—प्रमुख अध्यक्ष रेभ० पी. डी. सोरेंग की अगुवाई में सा० गा० २३:१-३ पद गाया गया वचन यूह० १ : २९ पढ़ा जाकर सप्रर्थना सभा आरम्भ हुई।

उपस्थिति :— १०४ उपस्थित थे।

स्वर्गवासी पादियों का नाम सभा में लाया गया :—

Rev. S. Barla (Ex Pramukh Adhyaksh)
Rev. K. M. Topno ··· Bano
Rev. N. M. Lugun — Gua
Rev. C. K. Guria .... Ranchi
Rev. Junas Dang — Tutikel
Rev; K. D. Soy — Kurki

इन सभी स्वर्गवासी पादियों का संक्षिप्त में जीवन परिचय प्रमुख अध्यक्ष द्वारा बतलाया गया। एवं रेभ० सी० बी० आईन्द की अगुवाई में शोक प्रस्तुत करते हुए मौन प्रार्थना सहित शोक प्रार्थना हुई।

विषयों पर बात-चीत :—

अपने क्षेत्र से बाहर सेवा करने के विषय :— एक अंचल से दूसरे अंचल एक इलाका से दूसरे इलाका, एक प्रेरिस से दूसरे पेरिस में सेवकाई न करने के सम्बन्ध में।

सेवकाई एवं प्रशासन के लिये कलीसिया सुविधानुसार विभिन्न क्षेत्र एवं दायरे में विभाजित है। अपने क्षेत्र से दूसरे सेवकाई एव प्रशासन क्षेत्र में बिना क्षेत्रीय अधिकारी के अनुमति कदापि ही प्रवेश न करें। वरन इस बात का भी हम ख्याल रखें कि वचन एवं सक्रामेन्ट की सेवकाई में कदापि ही भाई-बहनों को दूर न रखें।

उदाहारण मिला :—(a) उड़ीसा अंचल के बाऊरकेला एवं कथीमटी इलाका के कपीलास क्षेत्र में S.E. Anchal एवं Theological college द्वारा सेवकाई दी गयी।

(b) S. E. Anchal के भीतर ही Tokad Ilaka के अंतर्गत Anandpur parish के पादी द्वारा एवं Koronjo toli parish के पादी द्वारा सेवा दी गयी। ऐसा करना प्रशासनिक विचार से गलत है।

अंतिम निशकर्ष :— (a) प्रमुख अध्यक्ष द्वारा प्रसारित नियम को हम अनुपालन करें।

(b) वचन और सक्रामेन्ट से कभी भी वंचित न करें (सेवा का पहला स्थान रखें) प्रशासन के क्षेत्र में कदापि ही दूसरे क्षेत्र में प्रवेश न करें।

२ आज कल बिना शादी हुए पादी बनाया जा रहा है यह नियम कब से कैसे बदल गया ?

पुराने समय में यह पहले Practice कलीसिया में थी कि बिना शादी के पादी पद नहीं दिया जाता था। परन्तु यह निर्णय की बात नहीं है।

३ दृढ़ीकरण के समय का तोसरा इकरारनामा जो दूसरी कलीसिया में लड़कियाँ शादी होकर चली जाती है गुनाहगार हो जाते हैं इसलिये यह प्रतिज्ञा उठा दिया

Gossner Mission

आय। जबाव इस प्रतिज्ञा में जबर्दस्त ठोस (कठोर) प्रतिज्ञा की बात नहीं है कि "(चाहते हो या चाहती हो) चाहे तो रह सकता है / रह सकती है / नहीं चाहने पर स्त्री-पुरुष के शादी के समय का बन्धन जैसे कोई कठोर प्रतिज्ञा नहीं है।

४ शादी विवाह की समस्या — बहुविवाह करना चाहते हैं।

कलीसिया होकर बहुविवाह की अनुमति कदापि नहीं दी जा सकती है।

विदाई :— अन्त में कुशाटोरियम चेयरमेन डा० हंस ग्रोटहाऊस को मिनिस्टैरियम सभा की ओर से विदाई दिया गया। उनको हमारे बीच में उपस्थिति एवं इस शिक्षा क्लास में शिक्षा देने में हमारी अगुवाई किये इन सारी बातों के लिए हम आप के हार्दिक धन्यवादी हैं और इसी प्रेम के कारण विदाई में हमारी यादगारी एवं चरवाही के—एक चरवाही (मूसा की छड़ी) एवं एक प्लेट दी गयी।

पुनः अन्त में हम गोस्सनर कलीसिया की ओर से कुशाटोरियम के सभी सदस्यों को पुराने कुशाटोरियम सदस्यों को, हंस क्लोकिस को, और परिवार के सभी छोटे बड़े सदस्यों को हमारा मसीही नमस्कार देते हैं।

अन्त में पुनः सभी पाद्री भाईयों को इस Refresher class में उपस्थिति के लिये धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इसके साथ ही साथ प्रमुख अध्यक्ष ने अपने लिये प्रार्थना करने की निवेदन किये।

अन्तिम प्रार्थना :— मिनिस्ट्रेरियम सचिव रेभ० एम० टेटे की अगुवाई में सा० बा० १२६ का अन्तिम ५वाँ पद गाया गया एवं प्रार्थना रेभ० एम० टेटे द्वारा एवं डा० ग्रोटहाऊस के ईश्वर आशीर्वाद सहित सभा अन्त की गयी।

—:०:—

Social Action

—by Bishop Dr. Hans

"पहले पेट भीतर तब देव पीतर" (लोगों की कथन) पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तब तुम्हें सब वस्तुएं प्रदान की जाएगी।

उदाहरण :—जब कोई चीज का सौदा करते हैं तभी ही उपाय मिलता है, बिना सौदा किये उपाय नहीं मिलता है।

पहले :—आत्मिक उत्थान होना चाहिए तभी हमारा शारीरिक जीवन का भी विकास होगा।

यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा ही हमें जो कुछ अभी हमें मिला है, वह शारीरिक जीवन के लिये है।

हमारी आत्मिक उन्नति के साथ ही साथ आर्थिक उन्नति की भी आवश्यकता है।

हमारे बीच में आर्थिक उत्थान (उन्नति) नहीं है विदेशों में Money Economic है जिसके कारण उनके लिये कोई भी उत्थान का कार्य सहज से कर सकते हैं परन्तु हमारे छोटानागपुर में कोई उत्थान के लिये Money Economic नहीं है।

आरम्भ में हमारे बीच में Jesuit father दिल्ली से आये और छोटानागपुर का सर्वेक्षण किया गया। और मांडर में एक बैठक Arch Bishop Kerketta & Dr. Hans, Joint Chairman की अगुवाई में हुई। पश्चात् विकास मैत्री संघ का काम आरम्भ तत्पश्चात् Xavier Social Institute स्थापित किया गया।

क्रमशः इस बीच छोटानागपुर के अर्न्तगत कुंआ, तलाब आदि के विकास का काम आप के बीच में भी यहाँ वहाँ हो रहे हैं।

L. W. S. — (Lutheran World Service) L. W. S. का काम Integrated Rural development, जिसमें Agriculture विशेष ध्यान दिया गया।

Agriculture द्वारा—जहाँ एक बार खेती होती है वहाँ दो बार तक खेती करके विकास करना।

Con..... 3rd Cover Page.

Gossner Mission

धर्मोपदेश

आज कल कितने दिनों से वेस्ट इण्डिया द्वीपों के क्यूबा टापू में वहां के निवासियों और स्पेन के लोगों में लड़ाई हो रही है। यह द्वीप कई सौ बरसों से स्पेन के वश में है परन्तु उसके निवासी उसकी प्रभुता से निर्बन्ध होने चाहते हैं और अमेरिका के लोग बरसक छिपके उनकी सहायता करते हैं। उनमें से एक जन क्यूबा द्वीप को व्यापार करने के लिए गया था और वहां स्पेन के सिपाहियों ने पकड़ा जाकर बन्दगृह में डाला गया क्योंकि उसपर यह दोष लगाया गया था कि उसने राज्य-द्रोहियों की सहायता की। किन्तु इसका कुछ प्रमाण नहीं था और जो लोग उसको अच्छी तरह जानते थे सो बोले कि इसका कुछ दोष नहीं है। तिस पर भी स्पेन के सिपाहियों के प्रधान ने उस पर मृत्यु दण्ड की आज्ञा दी कि वह बन्दूक से मारा जावे।

यूरोप के और अमेरिका गवर्नमेण्टों की ओर से इन २ देशों और टापुओं में सज्जन ठहराये जाते हैं जिनको कोनसुल अर्थात वकील कहते हैं जिनका कर्त्तव्य यह है कि वे जिस गवर्नमेण्ट के वकील हैं उसके प्रजाओं की रक्षा करें। इस रीति के अनुसार क्यूबा में अमेरिकन और इंगलेण्ड राज्य के भी कोनसुल रहते हैं। उन्होंने पूर्वोक्त बात सुनकर उस आदमी के मारे जाने के विरुद्ध स्पेनीय पल्टन पति के पास उत्तम दरखास्त दिया क्योंकि उसकी जन्म भूमि इङ्गलिस्थान थी और वह अमेरिका का निवासी था। उन्होंने अपने दरखास्त में उसके निर्दोषी होने का सबूत भी दिया था किन्तु पल्टन-पति ने उनकी विन्ती ग्रहण न की वरन आज्ञा दी कि कल ही वह मारा जायगा। दूसरे दिन भोर होते ही इङ्गलेण्ड और अमेरिका के दोनों कोनसूल अपने-अपने राज्य का झण्डा लेकर उस स्थान पर उपस्थित हुए जो उनके मारे जाने के लिए ठहराया गया था। और थोड़ी देरी के पीछे वह भी सिपाहियों से बांधा हुआ पहुंचाया गया। उसके हाथ बांधे गये और सिपाही पांति बांध भरी हुई बन्दूक उठाकर उसे मारने को प्रस्तुत हुए तब अंग्रेज और अमेरिकन कोनसूल दोनों ने आगे दौड़कर उस मनुष्य को अपने झण्डों से ढांपकर पल्टनपति को पुकारा कि यदि आप इसको मारेंगे तो हमारे राज्य के अपराधी होंगे क्योंकि वह हमारा रक्षित प्रजा है यह सुनकर स्पेनीय पल्टनपति ने सिपाहियों को लौटने का हुकुम दिया और उस मनुष्य को छुट्टी दी।

इस बात से हम लोग अच्छी रीति से बता सकते हैं कि यीशु ख्रिस्त के द्वारा पापी मनुष्य किस प्रकार से बच जाता है। पाप के कारण दण्ड की आज्ञा हम लोगों पर हो चुकी है परन्तु जो प्रभु यीशु के लोग हैं उन्हें वह अपने धर्म कमाई रूपी झण्डे से ढांपकर रक्षा करता है और वह जो हमारी ओर है तो हमारे विरुद्ध कौन होगा?

हे प्यारे पाठक, क्या तू उसके झण्डे के तले आ चुका है, क्या तू बचाव पाने के लिए यीशु पर भरोसा रखता है? जल्दी से उसका शरण ले कि तू नष्ट न हो जाय।

—:o:—

Gossner Mission

गोसनर कलीसिया और फादर गोसनर

द्वितीय विश्व-महायुद्ध के तुरंत बाद सन १९४७ ई० में हिन्दुस्तान के एवंजेलिकल लूथेरान गोसनर कलीसिया के प्रेसिडेण्ट ने बेर्लिन में गोसनर मिशन का दर्शन किया। उस समय जर्मनी की राजधानी बेर्लिन केवल खंडहर था। इतना ही नहीं गोसनर मिशन बंगला भी खंडहर था तथा जिस एलिजबेथ महिला-डाक्टर केन्द्र एवं अस्पताल को एक बार पादरी योहोनेस एवं एवजेलिस्ता गोस्सनर ने स्थापित किया था वह भी केवल खडहर था। पर उस खण्डहर से वे कुछ भी प्रभावित नहीं जान पड़ते थे। जब बेर्लिन के एक पादरी ने जानने के लिये उसे पूछा तब उसने जवाब दिया– "हाँ", पादरी साहब क्या आप नहीं जानते हैं कि यह जगत मिटने वाला है!" यह तो बैबल की शिक्षा के अनुसार ही था। जरूर, बैबल की शिक्षा ने गोस्सनर कलीसिया के अगुवों में अच्छा स्थान पाया है।

वह हिन्दुस्तानी कलीसिया का प्रेसिडेण्ट पहला ऑफिसियल दर्शक था जिसने सौ वर्ष पूर्व स्थापित गोस्सनर मिशन एवं हिन्दुस्तान में आत्मशासित गोस्सनर कलीसिया के बीच व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित किया। वह अपने बर्लिन दर्शन से क्या देखना चाहता था उसे मेहमानी करने वाला जान गया। एलिजाबेथ अस्पताल में स्वागत पाते समय उसने प्रश्न किया–"फादर गोसनर वास्तव में कहाँ रहता था और काम करता था जहाँ से हिन्दुस्तान में मिशन काम के लिए वह प्रार्थना करता था। लोगों ने उसको पत्थरों एवं ईटों के ढेर को दिखाया जहाँ दिवाल का कुछ ही अंश बचा हुआ था उसने तुरत निश्चय कर लिया एवं गोस्सनर कलीसिया में काम करने वाले एक मिशनरी के साथ वह उस खण्डहर पर चढ़ गया। उसने उस मिशनरी के साथ उस खण्डहर के बीच प्रार्थना की।

इसके बाद उसने फादर गोस्सनर की कब्र का दर्शन किया। उसकी कब्र बेथलेहम मंडली में थी जहाँ फादर गोस्सनर ने वर्षों तक एक पादरी के रूप में प्रभु को सेवा की। शहर का यह भाग भी केवल खण्डहर ही पड़ा चूँकि इसी क्षेत्र में बेर्लिन के लिए अंतिम लड़ाई हुई। गोस्सनर की कब्र सुरक्षित थी। इस कब्र पर उसने इस प्रकार का प्रोग्राम चालू किया गीत, बैबल पाठ, प्रार्थना, और चार हिन्दुस्तानी भाषाओं में गीत। इस स्मरणार्थ छोटी आराधना में वह सब मसीही आदिवासियों के नाम में और दूसरे गैर-आदिवासी मसीहियों के नाम में प्रार्थना की जो छोटानागपुर में रहते हैं। उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया जिसने अपने हथियार फादर योहानेस गोस्सनर को भेजकर सुसमाचार के द्वारा छोटानाग-पुरियों को अपने पास बुलाया है।

जब वह गोस्सनर की कब्र को छोड़ रहा था तब उसने दो बातें कही – "अभी पहली बार मुझे समझ में आया, बैबल में अब्राहाम के विषय कहा गया है वह जो ईश्वर का जन था अपनी कमर में भविष्य की सारी इस्राएल को ढोया या लिया हुआ था। तब उसने आगे कहा–"उसी प्रकार 'पिता' गोस्सनर के व्यक्तित्व में गोस्सनर कलीसिया की ओटोनोमी बीज के रूप में मौजूद था। दोनों बातें यह साफ कर देती हैं कि उसमें धन्यवाद की भावना थी, एवं गोस्सनर कली-सिया फादर गोस्सनर को कभी भूल नहीं सकती है।

हिन्दुस्तान के कितने मसीही फादर गोस्सनर के नाम से अपरिचित हो सकते हैं पर गोस्सनर कली-सिया के स्थापक और गोस्सनर कलीसिया में बहुत घनिष्ट सम्बन्ध है। यही कारण है सन् १९१९ की नियमावली के अनुसार आत्मशासित गोस्सनर कली-सिया का ऑफिसियल नाम रखा गया है—"छोटा-नागपुर और आसामस्थ गोस्सनर एवजेलिकल लूथेरान कलीसिया।"

फादर गोस्सनर कहता है—अगर हम मिशनरी बनना छोड़ देते है, तो हम मसीही होना भी छोड़ देते हैं।

Gossner Mission

लूथेरान महिला संघ जवाबदेह

गोसनर कलीसिया में बहनों याने माताओं का जवाबदेहित्व बड़ा ही कठिन है यह होते हुए भी माताएँ इसे निभा ही रही हैं। यह सराहनीय है। यह कहना कदापि गलत न होगा कि गोसनर कलीशा में माताएँ ही ओटानोमी सब से पहले ली हैं और उसे निभाते चली आ रही हैं। माताओं को इसके लिए अनेक भयानक आंधी-तूफान याने घटी, विसहाय और लड़ाई झगड़ों का जोर-दार सामना करना है।

एक विवाहित माँ का सबसे बड़ा जवाबदेह अपने पति के काम, स्वस्थ्य, सेवा व्यवहार, आदतों और अच्छी संगति को सच्चे मसीही ढांचे में ईश्वर के भय-प्रेम में रह करके धीरज से सुधारना और बनाना है।

अपने ससुराल और ननीहाल के सब गिरे और उठों को, पढ़ और अपढ़ को, समझ और बेसमझों के साथ असल मसीही व्यवहार ईश्वर को अपने सामने जान के विन्ती के बल पर अच्छी आशा में पूर्ण हो के सुधार करना जरुरी है।

अपना घर :—हर माँ को अपने घर को मसीही घर हाँ एक नमूना योग्य घर बनाना है कैसे ? घर और उसमें जो कुछ है सो किसी का नहीं ईश्वर का है यह सब से बड़ी बात और विश्वास हर बहन का होना है।

बच्चे :—बहन के गोद में दिये गये हर बच्चा एक अमूल्य मुहर है जिसका दाम सारा जगत मिल के नहीं दे सकती ऐसों की भण्डारिन बहन है इन लिए हर बच्चे के लिए सुबह शाम गिड़गिड़ा के विन्ती करना और ईश्वर पिता के हाथ बेर-बेर बच्चों के जीवन भर सौंपा करना, ताकि यीशु जब आवे तब माँ बाप और बच्चों को अपने योग्य पावे। कोई माँ अपने किसी एक बच्चे को भी नाश न होने दे और न खो देवे। यीशु इसका लेखा खाना अवश्य लेगा। यह जानते हुए, बच्चों के स्वास्थ्य उनका पीना पढ़ना अच्छी आदतें, अच्छी संगति, अच्छे विचार की ओर अगुवाई ईश्वर को संगति और ईश्वर के वचन की खोज में लोलीन रहने को सिखाना माँ का ही काम है अच्छी बातें बोल कर दस आज्ञाएँ और उसके अर्थ वचन को सिखा-सिखा कर घरेलू बिन्ती करने, गिर्जा और बिन्ती समाजों में साथ ले जा कर घरेलू काम बटवारा करने से, घर की आमदनी और उपज ही के सीमाने पर खाने और खर्च करने की आदत डालते हुए यह सिखाना कि हम मिहनत कर के खाना खावें आलस से या चोरी :करके कभी नहीं। मुर्गी के छोटे चिगनों, चोटियों और मधु-मक्खियों को दिखा के परिश्रम करने की शिक्षा दें। अपने बच्चों को घमण्डी होने और फजूल खर्ची होने से जोर लगा के रोकना समय के सुव्यवहार और बड़ों की अच्छी आज्ञाओं की पहचान में सदा आगे बढ़ते रहना है बच्चों को आज्ञा-कारी होना अभ्यास करा-करा के आदत डालना सभों को पसन्द होगा। पूरे घर और घराने में आनन्द बना रहेगा। ऐसा करने से सब दिखने और होने वाली कठिनता दूर भागेंगे।

माताएँ खेतों से घर लाये अनाज और वेतन पाये हुए रुपयों को अपना नहीं पर ईश्वर का बहुत बड़ा दान जानें और ठीक अच्छे कामों में खर्च ऐसा करें कि किसी से पैचा-उधार मांगना न हो परन्तु दुःख सुख और लाचारों, भूखों और कंगालों को थोड़ा बांट देने को कुछ पास रहे। ईश्वर की इच्छा यह भी है हर माँ अपने बाल-बच्चों समेत अनाज और सभी वस्तु जो उनके पास है बहुत यत्न से से काम में लाना कभी न भूले।

हर माता को अपनी बुद्धि, शक्ति, समय और धन को दो हिस्सों में बांटना है एक हिस्सा ईश्वर के लिए देन कर के अलग रखें जिस में से मण्डली सेवा कलीसिया सेवा और अन्य धार्मिक सेवा में अर्पित हो। दूसरा हिस्सा अपने घर, घराने और अड़ोस-पड़ोस के बहुत ही लाचारों की मदद में खर्च होवे। घर में बच्चों और पति के स्वास्थ्य, शिक्षा और प्रतिपालन में खर्च हो बड़े ऐश-आराम दिखाना और बड़पन में खर्च न हो।

बचाने में जो बड़े यत्न से चलता, मतवालापन से बचा हुआ हो उसके बड़े मिहनत पर भी जरुरत पूरी न हो सके तो उसे कुछ बांट दें।

Gossner Mission

अड़ोस पड़ोस में लाचार कंगाल हो तो उनके दुःख-सुख और मदद की विशेष दांव देख उन की सहायता करना।

मनुष्य जीवन में सबसे उत्तम और बड़ा धन समय ही है जो हमें बिना मिहनत और बेदाम का ईश्वर से दिया जाता है।

हर माँ के घर में बहुत काम हैं हर तरह से मिहनत कर के घर की जरूरतों को पूरी करना है अपने बल बुद्धि पर नहीं पर ईश्वर की इच्छा अनुवाई और संगति में सब कुछ करना है ऐसा करने ही पर तो माताओं को विजी, बिस्ती, समाज सेवा, समाज, गैर मसीहियों की खोज और उन के सुधार के ज्ञान और सब दान के देने हारे के पास आने की फुरसत मिलेगा और माँ नहीं कह सकेगी कि मुझे समय नहीं मिलता है।

समय ईश्वर का विशेष दान हर एक के लिए है। जब हम कहते धर्म के काम के लिए समय नहीं मिलता तो हम सोचें ईश्वर हम से क्या कहेगा और लेखा लेगा क्या हम निरुत्तर न होंगे ? ऐसा न होवे समय सुधरने का अब है।

मुट्ठी दान से, मण्डली देव से, चन्दा दान से, समाज दान से धर्म सेवक के बोझ उठाने वालों का वेतन बिन रुके ही बनाते जाना है वेतन लेना नहीं पर वेतन देने की चिन्ता करना है और सेवकों से आत्मिक बातों की सुझाव के लिए ईश्वर वचन की सेवकाई खोजते रहना है।

माँ इस प्रकार अपने निज घर अर्थात् पति, बच्चे छोटे भाई बहनों से एक सच्चा मसीही घराना बनावे जो क्रीष्ट के क्रूश के नीचे लड़ने वाली सेना बनावे, मण्डली को ईश्वर का जान के पवित्र माने, अपनी कलीशा को ईश्वर की बाड़ी अदन जाने जहाँ ईश्वर का आना शाम सुबह हो और ईश्वर के लोग उसकी आवाज सुनें और मानें।

इस प्रकार मसीही कलीशा में कलीशा को बनाने और ईश्वर की संगति में रखे रहने का बड़ा भारी अवाब देह है। इस को उचित रूप से कर सकने और हियाव न छोड़ने संसार और शैतान के सब जल फन्दों से बचे रहने के लिए आयें हम सब अपने और गोसनर कलीशा की माताओं के लिए निरंतर प्रार्थना करें और उन की सहायता के लिए आगे बढ़ा करें। ईश्वर हमारे साथ है हम कभी अकेले न होंगे।

—:o:—

सेवा में,

माननीय गृहमंत्री,
मध्य प्रदेश शासन, भोपाल।

विषय :—अन्तर्गत धारा २९५ (क) दण्ड प्रक्रिया संहिता "विमर्शित और विद्वेशपूर्ण कार्य जो किसी वर्ग के धर्म या धार्मिक विश्वासों का अपमान करके उसकी धार्मिक भावनाओं को आहत करने के आशय से किये गये हों — जो कोई भारत के नागरिकों के किसी वर्ग की धार्मिक भावनाओं को आहत करने के विमर्शित और विद्वेश पूर्ण आशय से उस वर्ग के धर्म के धर्म व धार्मिक विश्वासों का अपमान (उच्चारित या लिखित शब्दों द्वारा या संकेतों द्वारा, या दृश्य प्रमाणों द्वारा या अन्यथा करेगा या करने का प्रयत्न करेगा)।

महाशय,

उपयुक्त धारा के आधार पर गोस्सनर एवंजेलिकल लुथेरान चर्च जिसकी स्थापना दिनांक १-६-१८५० को हुआ है और अन्तर्गत Registration of Society Act. .... रजिस्टर्ड न० ....
उसका मुख्यालय केन्द्रिय सलाहकारी सभा जी० ई० एल० चर्च, रांची (बिहार) है। जी० ई० एल० चर्च का विश्वास संगठन एवं प्रशासन का आधार संविधान १९६० के अनुसार आज तक प्रमाणित है।

१९६० का चर्च संविधान की प्रशासनिक इकाईयाँ पाँच भोगोलिक क्षेत्रों (१) उत्तरी पश्चिमी अंचल जिसमें रांची, लोहरदगा तहसील, गुमला तहसील, मध्यप्रदेश, पश्चिम, बंगाल का चाय बगान क्षेत्र अर्थात् डुवर्स ( ) २) दक्षिणी-पूर्वी अंचल ३) आसाम अंचल ४) उड़ीसा अंचल एवं ५) मध्य अंचल।

धरबन्धु जून १९८१

Gossner Mission

उत्तरी-पश्चिमी अंचल के उरांव समाज के उरांव अगुवे चर्च का १९६० का संविधान अनुसार १६ वर्षों तक याने १९७७ तक जी०, ई०, एल० चर्च के अधीन रहकर प्रशासक बने रहे।

उक्त उत्तरी-पश्चिमी अंचल के अगुवे चर्च का संविधान १९६० का प्रशासनिक ईकाई उत्तरी-पश्चिमी अंचल को बिना सम्पूर्ण चर्च को स्वीकृति एवं मान्यता प्राप्त दिनांक १३-७-७७ को "नोर्थ वेस्टर्न जी० ई० एल० चर्च" के नाम से उक्त उत्तरी-पश्चिमी अंचल के जी० ई० एल० चर्च के सदस्यों को बिना सहमति से उनको गुमराह करके उनका ईसाई विश्वास एवं भावना के विरुद्ध अवैध रूप से किस तरह अमेरिकन लुथेरान चर्च से स्वर्थ पद एवं पैसा की लालच में डोलर हड़पने की चर्च पोलिटिक्स खेला जा रहा है। अमेरिकन डोलर को हड़पने के लिए उक्त कथित "नोर्थ वेस्टर्न जी० ई० एल० चर्च" के अगुओं ने अमेरिकन पाद्री लोमपैरिश को बांची में धोखा दे रखा है।

जी० ई० एल० चर्च विधिपूर्ण सरकार से रजिस्टर्ड बोड़ी है जिसमें "उत्तरी-पश्चिमी" शब्द के साथ जी० ई० एल० का नाम जोड़कर आज लिखित रूप से उक्त धारा के विरुद्ध सन् १८५० को विधिपूर्ण स्थापित जी० ई० एल० की भावना को आघात पहुँचाया गया है। फलस्वरूप आज जशपुर थाना के अन्तर्गत, जशपुर नगर ग्राम गलोन्डा, डोपाटोली, बनपुर' विषतपुर एवं तहसील जशपुर के अन्य ग्राम सगीभावना, बटाईकेला, छेराघोघरा आदि जगहों में जी० ई० एल० चर्च का सर्वजातीय ईसाई एकता एवं विश्वास की भावना को आघात पहुँचाया जा रहा है। और साम्प्रदायिक झगड़ों, दुश्मनी, उरांव-मुण्डा आदि के नाम से फैलाई जा रही है। जिसके विरुद्ध शासन को कड़ी कारवाई करनी अति आवश्यक है कि अवैध रूप से घोषित स्वतंत्र "नोर्थ वेस्टर्न जी० ई० एल० चर्च" के अगुवे जिस तरह अखबार कागजों में प्रकाशित मुस्लिम राष्ट्रों में धर्म के आड़ में धन-ऐश की प्राप्ति से अमेरिकी सी० आई० ए० द्वारा दुखद साम्प्रदायिक दंगे फैलाए गए उसी तरह आज जशपुर के अन्दर भी अवैध रूप से घोषित "नोर्थ वेस्टर्न जी० ई० एल० चर्च" के अधिकारी भी उरांव समाज के बीच झगड़ा का विष बो रहे हैं और विधिपूर्ण सन् १८५० के स्थापित जी० ई० एल० के ईसाई विश्वास, एकता, अखण्डता एवं धार्मिक भावनाओं में ठेस पहुचाते जा रहे हैं।

अवैध रूप से घोषित "नोर्थ वेस्टर्न जी० ई० एल० चर्च" ने अपना स्वतंत्र चर्च का संविधान भी निर्माण किया है। और विधिवत जी० ई० एल० चर्च का संविधान १९६० का प्रशासनिक क्षेत्र "नोर्थ वेस्टर्न अंचल" में जी० ई० एल० चर्च के धार्मिक भावनाओं के विरुद्ध अवैध रूप से घुसपैठ जारी है।

अवैध रूप से घोषित एवं कथित "नोर्थ वेस्टर्न जी० ई० एल० चर्च" ने विधिवत स्थापित जी० ई० एल० अंचल" के लोगों को गुमराह करके तथा छल पूर्वक माना अमेरिकन डोलर किस तरह पद एवं पता से प्राप्त किया जाय दिनांक ३-६-८० को डाक्टर निर्मल मिंज को उक्त कथित एवं अवैध रूप से घोषित क्षेत्र "नोर्थ-वेस्टर्न जी० ई० एल०" के लिए पद का स्थापन किया गया और धार्मिक एवं चर्च की परम्परा के अनुसार तमाम देश-विदेश में विशप का संस्कार एवं अभिषेक (Consecration) के लिए कपटपूर्ण ( ) निमंत्रण भेजे गए और उक्त तिथि को ३-६-८० को डा० निर्मल मिंज का विशपीय कोई संस्कार एवं अभिषेक नहीं हुआ। परन्तु कथित नोर्थ वेस्टर्न जी० ई० एल० के स्वार्थपूर्ण भावनाओं से डा० निर्मल मिंज को उसका विशप घोषित किया गया।

डा० निर्मल मिंज को विधिवत स्थापित जी० ई० एल० चर्च ने ही ऊंची धार्मिक एवं लौकिक (Secular) शिक्षा के लिए अमेरिका भेजा था ताकि उसके द्वारा जी० ई० एल० चर्च को धार्मिक एवं लौकिक अच्छी अगुवाई एवं सेवा मिल सके। किन्तु खेद का विषय है कि डा० निर्मल मिंज अमेरिका से ऊंची शिक्षा हासिल करके जी० ई० एल० चर्च की एकता, अखण्डता (Integrity) एवं ईसाई विश्वास के साथ धार्मिक भावना को आघात पहुंचाते हुए उसकी अगुवाई में ही किस तरह अमेरिकन डोलर पैसा से मालामाल होकर ईसाह के शाह भांति भ्रान्ति एवं ऐश-आराम हासिल करने की मनोकामना में जुटा हुआ है। फलस्वरूप अवैध विशप

Gossner Mission

डा० निर्मल मिंज धार्मिक परम्परा एवं संस्कार से बिना अभिषिक्त होकर मध्यप्रदेश का ग्राम इचकेला थाना जशपुरनगर, तहसील जशपुर, जिला रायगढ़ में दिनांक ६-एवं ७ ओक्टोबर १९८० को अपना प्रथम दौरा का कार्यक्रम रखा। और विधिवत स्थापित गोस्पनर एवंजेलिकल लुथेरन चर्च का ईसाई विश्वास एवं धार्मिक भावनाओं के विरुद्ध जातीय आधार पर अवैध रूप से घोषित "बोर्थ वेस्टर्न जी० ई० एल० चर्च" का विशप डा० निर्मल मिंज के विरुद्ध कानूनी कार्यवाई करने की पूरी छानबीन की जाय और स्वार्थपूर्ण उनकी धार्मिक अगुवाई, मानो अमेरिकन डोलर किस तरह से हासिल किया जाय की प्रवृत्ति पर पूर्ण अंकुश लगाया जाय तथा मध्य प्रदेश के भोले-भोले विधिवत स्थापित जी० ई० एल० चर्च के आदिवासी सदस्यों के बीच ईसाई विश्वास एवं धार्मिक भावनाओं के साथ साम्प्रदायिक अप्रिय घटनाओं से वंचित रखा जा सके।

हम आप माननीय महोदय की शीघ्र कारगी जांच एवं कार्रवाई के लिए अति ऋणी रहेंगे।

आप का विश्वस्त

१ पादरी (सो० पी० बड़ा) चेयरमेन,
जी० ई० एल० चर्च इचकेला इलाका।

२ श्री (एस० पी० टोपनो) सचिव,
जी० ई० एल० चर्च इचकेला इलाका।

३ श्री (शशि भूषण कुजूर) कोषाध्यक्ष,
जी० ई० एल० चर्च इचकेला इलाका।

प्रतिलिपि :—

१ माननीय गृहमंत्री, भारत सरकार, नई दिल्ली।

२ माननीय मुख्य मंत्री, म० प्र० शासन, भोपाल।

३ श्रीमान् एस० डी० ओ० (पुलिस) जशपुरनगर, जिला रायगढ़।

४ श्रीमान् थानेदार, थाना जशपुरनगर, जिला रायगढ़।

को सूचनार्थ एवं आवश्यक शीघ्र कार्रवाई हेतु प्रेषित।

(एस० पी० टोपनो सचिव)

—:०:—

Gossner Mission

PENTECOST 1981

Message from the Presidents of the World Council of Churches

"WE BELIEVE IN THE HOLY SPIRIT, THE LORD AND LIFE-GIVER"

(Nicene Creed)

Christians throughout the ages have affirmed their trust in the presence and power of God the Spirit at work in the Church and the world. This is never more evident than when we celebrate the coming of the Holy Spirit at Pentecost.

The Christian belief in the Holy Spirit is an integral part of the confession of faith that originated at the Second Ecumenical Council in Constantinople in A.D. 381, and became known as the Creed of Nicea-Constantinople.

This year we celebrate the 1600th anniversary of this great event in the life of the universal Church. Christians all over the world will respond joyfully to the call of the Ecumenical Patriarchate of Constatinople to give thanks for the ongoing power of the Holy Spirit.

We express our conviction that both the content of this ancient Creed and the fellowship of this ecumenical Council have a continuing significance of our own worship and witness.

Our worship today, through our confession of the Triune God, keeps us in the footsteps of the Church of the New Testament. We worship and glorify the Holy Spirit along with the Father and the Son. It is the Person of the Holy Spirit who renews life by enlightening our minds and inspiring our hearts. The Holy Spirit is thereby essential to the divine plan of salvation. The Lord Jesus promised Christians that they would be guided into all truth "when the Spirit of truth come" (John 16:13). Faithful witnesses were also assured, "you shall receive power when the Holy Spirit has come upon you" (Acts 1:8)

The Nicene Creed, as the most widely used of all the creeds, is a foundation for Christian unity and a standard for the ecumenical movement. The Creed's doctrine of the Trinity is the major Christian affirmation of faith. In the course of Christian history, however, there has arisen controversy about the right wording of one phrase in the Creed and this has led to disunity between Christians in the Eastern and Western traditions of the Church.

We thankfully acknowledge through the life-giving work of the Spirit, there are now growing theological convergences in our ecumenical efforts to reconcile Christian communions. We are hopeful that these convergences will enable us to confess the apostolic faith with one voice, thereby fulfilling our common calling to manifest the unity of Christ's Church more visibly.

The Second Ecumenical Church is not just a historical event; it also serves as a source of inspiration for Christians today.

Gossner Mission

Under the guidance of the Holy Spirit, this Council was able to reconcile ambiguities and conflicts, and witness to the truth of the Gospel while firmly rejecting error. The presence and witness of the Holy Spirit, in fulfilment of Christ's prayer, consecrated Christians into a conciliar fellowship : "Santify them in the truth; Thy word is truth" (John 17:17).

Building on this firm foundation, we express our own determination to grow into a full fellowship that is not just a Utopian dream. Our common witness already anticipates the fuller realization of our unity in Christ The more Christians can grow together into such a fellowship, the more hope they will give to a dangerously divided world At the same time, the Spirit empowers Christians to witness directly to the truth of the Gospel, in the world in struggles against poverty, injustice and oppression.

On this day of Pentecost, we call on the life-giving Holy Spirit to enable us to confess the apostolic faith more convincingly as a witnessing fellowship of the one, holy, catholic, and apostolic Church that lives in and for the world.

The Presidents of the World Council of Churches :

Hon. President : Rev. Dr. W. A. Visser't Hooft, Geneva, Switzerland.

His Holiness Ilia II, Catholicos and Patriarch of All Georgia, Georgian SSR.

The Honourable Mrs. Justice A. R. Jiagge, Accra, Ghana

Prof. Jose Miguez-Bonino, Buenos Aires, Argentina

Dr. T. B. Simatupang, Jakarta-Pusat, Indonesia

Archbishop Olof Sundby, Uppsala, Sweden

Dr. Cynthia Wedel, Alexandria, Va. USA.

APPENDIX : This is the original text of the Creed of Nicea-Constantinople (A. D. 381) :

"We believe in one God, the Father All Governing, creator of heaven and earth, of all things visible and invisible;

And in one Lord Jesus Christ, the only-begotten Son of God, begotten from the Father before all time, Light from Light, true God from true God, begotten not created, of the same essence as the Father, through Whom all things came into being, Who for us men and because of our salvation came down from heaven, and was incarnate by the Holy Spirit and the Virgin Mary and became human. He was crucified for us under Pontius Pilate, and suffered and was buried, and rose on the third day, according to the Scriptures, and ascended to heaven, and sits on the right hand of the Father, and will come again with glory to judge the living and the dead. His Kingdom shall have no end.

And in the Holy Spirit, the Lord and life-giver, Who proceeds from the Father, Who is worshipped and glorified together with the Father and Son. Who spoke through the prophets; and in one, holy, catholic, and apostolic Church. We confess one baptism for the remission of sins. We look forward to the resurrection of the dead and the life of the world to come. Amen."

(John H. Leith (ed), **Creeds of the Churches,** Doubleday, New York, 1963, P. 33).

Gossner Mission

Church and its Ministry today

(कलीसिया और आज कलीसिया की सेवा)

By Rev. M. Tete

कलीसिया—कलीसिया के विषय पूर्व वक्ताओं द्वारा इसकी परिभाषा भिन्न भिन्न रूप में दी गयी है। हम कलीसिया विषय को नहीं लेंगे परन्तु इसको सेवा के विषय बात चीत करेंगे।

गोस्सनर कलीसिया के विषय जब हम ध्यान करेंगे तो तीन प्रकार के क्षेत्रों में विभक्त कर सकते हैं।

१ ग्रामीण कलीसिया — देहात की कलीसिया जहाँ अधिकतर कृषि का कार्य करते हैं।

२ शहरी कलीसिया — जैसे राँची।

३ कारखाना क्षेत्रीय कलीसिया—

सर्वप्रथम हम कारखाना क्षेत्रीय कलीसिया की समस्या के विषय बात चीत करेंगे।

(i) गिर्जा आराधना :—कारखाना में काम करने वाले भाई बहनों के लिये एक समस्या है। आज्ञा के द्वारा हम यह जानते हैं कि विश्रामवार को पवित्र रखने के लिये मत भूल (रविवार को)।

मान लिया कोई भाई को रविवार के दिन ही Shift duty पड़ गया तो वह गिरजा आराधना से वंचित हो गया उसके लिये क्या उपाय हो सकता है।

आप (पादरी) House Visiting के द्वारा आप इनके पास विन्ती प्रार्थना कर सकते हैं।

(ii) धर्म शिक्षा की समस्या :— बहुत जगहों में विश्वासी मंडली, यहोवा विटनेस, पेन्तीकोस्टल मंडली अपनी शिक्षा देकर उन्हें गुमराह में ले चलते हैं जो उनकी शिक्षा के द्वारा उन कलीसिया में चले गये हैं तो उनको लाने का उपाय क्या हो सकता है। एक तो शादी विवाह के समय उनके साथ बेटी-बहन देने या उनके घर से नहीं लाने का रोक करेंगे।

(iii) मिश्रित शादी की समस्या—

R C. Church या अन्य दूसरे कलीसिया के साथ शादी विवाह करने के सम्बन्ध में समस्या है।

(iv) खाने पीने की समस्या —शराब पीने की समस्या। जहाँ पैसा की अधिकता है पीने की समस्या अधिक पायी जाती है।

समस्याओं पर बात चीत :—

गिरजा आराधना की समस्या :— ४थी आज्ञा का समस्या

असाम से :— चाय बगान में काम करने वालों के बीच रविवार छोड़ कर किसी भी दिन में ही सुविधानुसार गिरजा आराधना किया जा रहा है।

जमशेदपुर — बूढ़े बुजुर्गों के लिये समस्या नहीं है परन्तु जवान गिरजा आराधना में उपस्थित बिल्कुल नहीं होते हैं।

समाधान — Youth Service स्थापित करने (जैसे Debadih में) उनकी समस्या दूर की जा सकती है। या cottage prayer meeting के द्वारा भी।

बंगाल की समस्या —वहाँ न केवल रविवार परन्तु कई महीनों तक काम के कारण बाहर ही रहते हैं। जिसके कारण उनकी सेवा कैसे कर सकते हैं एक समाधान Touring Pastor (Mobil Pastor) द्वारा उनकी सेवा की जा सकती है।

जवान युवातियों की समस्या : का समाधान—

(ii) Youth Service (ii) Cottage Prayer Meeting (iii) उनको काम का अवसर दिया जाय।

सैद्धान्तिक समस्या— दूसरे कलीसिया (Penticost Baptist, Yahova witness) के प्रभाव में हम अपनी कलीसिया के भाई बहनों कैसे बचाए रख सकते हैं।

Gossner Mission

कलीसियाओं की फूट के कारण दूसरे कलीसियाओं को भी हमारे मंडली के भाई बहनों को अपने पक्ष में लेने में सहज अवसर मिल गया है। इस समस्या को हम कैसे समाधान कर सकते हैं।

२ शहरी मंडली की समस्या :—जिसमें पांच विशेष समस्या पर बात चीत करेंगे—

(i) जमीन जायदाद – जिसमें जमीन, गिरजा घर आदि है। जमीन जायदाद की रक्षा के लिये कभी-कभी हमें कोर्ट-कचहरी भी जाना पड़ता है और कचहरी में झूठ बोलने की भी नौबत आ जाती है !

दूसरे जमीन जायदाद की रखवाली करना या कोई Projects रखने बनाने के सम्बन्ध में हमारा न केवल सेवा का भार है परन्तु प्रशासन का भी अवश्यकता है।

(ii) परिवारिक समस्या :—शिक्षा प्रसार के साथ ही साथ हमारी कलीसिया के परिवारों के बीच पीने की समस्या भी आ गयी है। जैसे शादी ब्याह में पर्व त्योहारों में जिससे हमारा परिवार बिगड़ते जा रहा है।

(iii) सामाजिक समस्या – दूसरे-दूसरे जगहों भाई-बहन नौकरी के लिये चले जाते हैं, उनको एक समाज में रहना उनकी देख भाल करना हमारे लिये एक समस्या हो जाती हैं। जिनका मर्दुमसुमारी (Census) करने में भी समस्या रह जाती है।

(iv) युवक युवतियों की समस्या—शहरों में जवान युवती शिक्षा दीक्षा में आगे बढ़ते जा रहे हैं। साधारणता जवानों से युवतियाँ शिक्षा में बढ़ रही हैं। उनके लिये बराबरी शिक्षा का वर मिलने में समस्या हो जाती यह तो है शादी की समस्या।

कम शिक्षा पाये हुए युवकों की समस्या—शहरों में अधिकतर युवक मैट्रिक पास भी नहीं कर सकते हैं वे गुण्डा गर्दी कामों के लिये प्रशिक्षण पाते है और पाकेट मार और गुण्डा गर्दी कामों में पड़ जाते हैं और यह भी कि वे ऐसे कामों के कारण जेल में हैं, उनकी सेवा, और उनको कैसे हम आराधना में शामिल कर सकते हैं।

(V) कलीसियाई एकता—बाइबिल सोसाइटी कलीसियाई एकता का एक विशेष संस्था है, वैसे राँची में एकता दिवस प्रार्थना का आयोजन कितने दिनों से किया जा रहा है। जिसके द्वारा एकता के लिये प्रार्थना की जा रही है। परन्तु बहुत ऐसे जगहों में जहाँ मिश्रित कलीसिया है कब्र स्थान का झगड़ा आदि है तो इन समस्याओं को हम कैसे सुलझा सकते है।

समस्याओं पर सुझाव

(i) युवक कम शिक्षित होते हैं और युवती अधिक तो शादी की समस्या होती है।

कोशिश किया जाय लड़कियों को कम से पढ़ाने का तब शादी की समस्या दूर हो जाएगी।

(ii) जमीन समस्या – जहाँ बेकार जमीन है उनको Boundry wall (घेरा) बनाकर रक्षा कर सकते है (कब्जा में)

(iii) जहाँ अधिक जमीन है उन जमीनों को बेच कर पैसा बैंक में रखा जाय, उस पैसे के सूद से कलीसिया के काम में उपयोग किया जाय।

(iv) हरेक समस्याओं के लिये केन्द्र से विभिन्न Board बने हुए हैं उन Board के द्वारा समस्याओं को सुलझाने के लिये ही बनाया गया है, वहाँ समस्याओं को लाया जाय।

(v) जमीन की समस्या (Board of Property) द्वारा कोई उचित ध्यान नहीं दिया जा रहा है। इसी प्रकार Board of Education द्वारा भी स्कूल की समस्याओं पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जा रहा है Rev. Paulus Minz द्वारा विस्तृत समस्याओं को प्रदर्शित किया गया।

समाधान :— जमीन जायदाद की सुरक्षा उसी आय से ही समाधान हो सकती है। चूँकि यह तो आपसी फूट की बात है। कहावत है जिस घर में फूट पड़ जाती है वह घर उजड़ जाता है।

Gossner Mission

३ ग्रामीण कलीसिया की समस्या :—

अधिकतर हमारी गोस्सनर कलीसिया में ग्रामीण क्षेत्रों में मंडलियाँ स्थापित हैं। शहरी और देहात की मंडलियों में अनेक बातों में विभिन्नता है। शहरों में अधिक समय तक गिरजा आराधना में बैठना भी पसन्द नहीं करते हैं। इसका ठीक उलटा देहात की मंडलियों में है। लेकिन आज न केवल शहरी एवं औद्योगिक क्षेत्र में इस प्रकार की समस्या है परन्तु देहाती क्षेत्रों में भी यह समस्या आ गयी है। पीने की समस्या न केवल शहरी एवं औद्योगिक क्षेत्र के लिये समस्या है परन्तु यह देहाती क्षेत्रों के लिये भी समस्या आ गयी है। इन समस्याओं को हम निम्न समाधानों के द्वारा दूर कर सकते हैं।

House visit — पाद्री प्रचारक का काम न केवल गिरजा आराधना द्वारा मंडली सेवा करना है परन्तु House visit करके परिवार-परिवार से मिलकर उनके साथ व्यक्तिगत रूप से उनकी समस्याओं को दूर कर सकते हैं। कभी-कभी मंडलियों में Centralization शोक देते हैं तो आप पेरिस होकर उनको Sacrament शोक देते हैं यह न केवल एक पक्ष से गलती होती है परन्तु दोनों ही पक्ष से गलती हो सकती है। कभी-कभी हम सेवा देने में भी चूक जाते हैं तब ऐसी परिस्थिति दूसरी कलीसिया के लोग लाभ उठा लेते हैं मंडली दूसरी कलीसिया की ओर चले जाने की संभावना हो सकती है।

आज देहातों में भी Penticostal, Baptist कलीसिया के लोग पहुँच जाते और भाई बहन उनके पक्ष में चले जाते हैं जैसे खूंटीटोली में तीन बहनें उनके चगुल में आ गये हैं। तो ऐसे लोगों को हम कलीसिया से निकाल देते हैं तो ऐसी परिस्थिति में हमें क्या करना चाहिए क्या नहीं करना चाहिए हम भारी संकट में पड़ जाते हैं। कभी कभी दूसरे कलीसिया में चले गये भाई बहनों के मर जाने से कब्र स्थान में जगह के लिये भी झगड़ा हो जाती है इस संदर्भ में किस प्रकार वचन संक्रामेन्त की सेवा कर सकते हैं। साथ ही साथ उनकी मृत्यु के समय मिट्टी देने की समस्या हो जाती है तो ऐसी परिस्थिति में हम क्या कर सकते हैं।

सवाल—जवाब

प्रश्न १ :- एक ही गोत्र के बीच में शादी सम्पन्न हो सकता है अथवा नहीं ?

जवाब :- पाद्री शादी देने वाला Registrar है उसे गोत्र देखना नहीं है, परन्तु यह तो सामाजिक पड़हा को शोक है।

एक ही गोत्र के बीच शादी करने में मंडली और समाज के बीच बिगाड़ होने का डर रहता है।

अगर उनके बीच छुटा-छुट्टा होने की संभावना नहीं है और पड़हा पंचों की ओर से पहले रास्ता साफ हो ले तब पाद्री को शादी देने में कोई डर और समस्या नहीं हो सकती है।

प्रश्न २ :- ७वीं आज्ञा उलंघन के द्वारा से छोटी सजा में हैं और उनकी शादी कोर्ट से हो गयी उनको हम मंडली में ग्रहण करने शादी दे़ा सकते हैं या नहीं।

जवाब :- मंडली ग्रहण कर सकते हैं, परन्तु उनका शादी तो हो ही गया शादी देने की क्या आवश्यकता।

प्रश्न ३ :- जो बड़ी सजा में हैं वे फिर से ग्रहण किये जा सकते हैं या नहीं ?

जवाब :- जिनके लिये संभव है उन्हें किया जा सकता है परन्तु जो दो स्त्री एक पुरुष के हैं तो ग्रहण करना संभव नहीं है।

प्रश्न ४ :— एक ही माँ-बाप के बेटा-बेटी असम में एक साथ हैं बच्चे भी हैं उनको शादी दे सकते हैं या नहीं।

उत्तर :— लाइसन्स के आधार पर शादी देने में कोई रोक नहीं, परन्तु समाज बिगड़ने की संभवना है अतः परिस्थिति देख कर शुरू किया जाय।

प्रश्न ५ :— कितने पाद्रीगण हम अपने सेवकाई क्षेत्र से बाहर भी उस क्षेत्र की पाद्री के बिना सलाह सेवा करते हैं। यह करना ठीक नहीं है।

प्रश्न ६ :—पाद्री हमलोग कभी-कभी दूसरे जगहों में गिरजा करने को बिना थलर के करना पड़ जाता है, गिरजा कर सकते हैं या नहीं।

उत्तर :—गिरजा भी कर सकते हैं प्रभुभोज सक्रामेन्त की सेवा कर सकता है चूँकि आप पाद्री हैं।

Gossner Mission

Church's Involvement in Social Action

by Rev. Dr M. Bage

कलीसिया का सामाजिक कार्य :— कलीसिया (Ecclesia) अकेला का बोध नहीं करता, एक समुह का बोध करता है। कलीo विश्वासियों का समूह है जिनके बीच परमेश्वर का निर्मल वचन सुनाया जाता है और जो उनके बीच सक्रामेन्त दिया जाता है।

इस कलीसिया के अर्न्तगत जो कि मसीही कलीसिया का एक कार्य क्षेत्र है उस क्षेत्र पर हम अध्ययन करेंगे—

"सामाजिक कार्य क्षेत्र" पर।

समाज (लोगों का समूह) :— मनुष्य सामाजिक प्राणी है। मनुष्य का जन्म, पालन पोषण, जीवन निर्वाह, विकास, मरण समाज के बीच ही होता है, चाहे ख्रिस्त विश्वासी हो या गैर ख्रिस्त विश्वासी हो। सभी का सुख दुःख समाज के अन्तर्गत ही होती है।

कलीसिया का सम्बन्ध भी समाज के साथ है हम सामाजिक कार्य — Mother Teresa, CASA, L.W.S, विकास मैत्री के कार्य आदि से परिचित हैं।

Social Action :— मनुष्यों का समाज भिन्न २ काल में देश में इसकी सामाजिक, नैतिक, आर्थिक, राजनैतिक स्थिति भिन्न २ होता है। यह हमारे रीति रस्तुों पर भी होता है। मसीही विश्वास का चाल है भी हम उन सामाजिक, नैतिक, आर्थिक, राजनैतिक स्थिति को उसी प्रकार से देखते हैं। तब हमारे लिये प्रश्न आ जाता है इस परिस्थिति में हम कैसे करें। जैसे हमारे बीच में भाईयों का खेत-बारी एवं बहनों का घर दरवाजा के कामों का बंटवारा सा देखते हैं।

स्त्रियों का हमारे समाज के बीच हल चलाना सक्त मना है। इस सामाजिक रीत-रस्तुम का परिस्थिति को बदलने और कार्य करना चाहते है यही है, "Social Action"

I "God the creater made man for society" (ईश्वर मनुष्य की सृष्टि समाज के लिए की है। William Words worth—का कथन—आधुनिक युग में अन्य धर्मों से प्रभावित.मसीही धर्म अन्तगत मुक्ति धर्म कलीसियाई समुह से अलग है। परमेश्वर ने आदम की सृष्टि की। उत्पति २:१८ परन्तु उसको अकेला रहना अच्छा नहीं यह परमेश्वर की पूर्व योजना है वह हवा को उसके लिए बनाया। यह न केवल पति-पत्नी के लिए है परन्तु यहाँ सामाजिक, रिस्तेदारी को भी बोध करता है। मनुष्य को अकेले रहना ठीक नहीं है, दूसरे लोगों की भी आवश्यकता है। हमारे बीच अनेक गोष्ठीयाँ हैं, कलीसियाई गोष्ठी, सामाजिक गोष्ठी, राष्ट्रीय गोष्ठी, क्योंकि परमेश्वर ने हमारी सृष्टि ही उसी प्रकार की है।

II Bible is much concerned in the man in social— "William" अब्राहम को जब परमेश्वर बुलाता है, तेरे द्वारा सब लोग आशिषित होंगे, इस पंक्तियों को बुलाहट एक अकेले की बुलाहट नहीं है समुह को बुलाता है। पतरस प्रेरित को पत्री में भी हम यह पाते हैं कि हम एक याजकीय समाज चुनी हुई जाति को बोध करता है।

III God holds man for other man :— हम दूसरों के लिए उत्तरदायी होते हैं। परमेश्वर हमारे लिए अपने उत्तरदायी को प्रगट करता है। आदम को ढूंढता है "तू कहां है"। कैन से पूछता तेरा भाई कहाँ है, कैन के लिए भी उत्तरदायी है कि तेरा भाई हबिल है। याकूब के १२ पुत्रों के लिए भी यही उत्तरदायी को पाते हैं

उड़ाव पुत्र के वर्णन में भी इस उत्तरदायी को दर्शाता है। यही उत्तरदायी हमारे बीच मसीह को भेज रूप प्रगट करता है। यु० २०:२१ में हमारे लिए भी उत्तरदायी देता है, वह हमें भेजता है। कहाँ हम भेजे जाते हैं वहाँ भी हमारे लिए काम है। हम भी दूसरों के लिए उत्तरदायी हैं। मसीह ने खुद हमारे लिए अपने उत्तरदायी को पेश किया है (मत्ती ९:३६-३८) प्रभु को तरस आयी। वे वे रखवाला भेड़ की नाई हैं

Gossner Mission

उन्हें देखकर तरस खाता है। बाद में फिर आगे कहता है खेत तो तैयार है, बनिहारों की आश्यकता है।

यीशु अपने पकड़ा जाने के पूर्व अपने चेलों के पैर धोता है, और कहता है ऐसा ही तुम भी करो। वह यहां खुद ही नमूना देता है।

वैसा ही हम भी बुलाये और भेजे गये हैं, दोनों ही काम एक दूसरे से हमारे लिए घनिष्ठ है।

परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजकर उसने अपना उत्तर-दायी को यीशु में भेजता है, और आज प्रभु ने हमें भी वही उत्तरदायी को सौंपा है, दिया है।

अब हमारे लिए भी वही आधार है कि जो Social Action है, सिर-केवल परमेश्वर का प्यार है। उसी प्यार के द्वारा हमें बुलाता है और प्यार से वही उत्तर-दायी को देता है जो हरएक क्रिस्त विश्वासी के लिए है। परमेश्वर का प्रेम पापी के लिए और पापी जगत के लिए है। मसीही Social Action का आधार और अन्य संस्थाओं के आधार में भिन्नता होगा।

सुद्धी लेना :—कलीसिया के प्रारंभिक काल प्रेरितों के काल में एक दूसरे की सहायता करना उनका एक लक्ष्य था प्रे० कि० ४ अध्याय में लंगड़े के साथ पतरस, युहन्ना का सेवा कार्य। उसी प्रकार प्रेरित क्रि० ६ अध्याय में आर्थिक स्थिति में भी दूसरों की सहायता का चर्चा हम पाते हैं। हमें इस ओर भी ध्यान देना है, कि दूसरों की सहयता करना परन्तु व्यवहारिक रीति से कैसे हम गरीब विधवा, अंधे लंगड़ों की हम सहायता करें।

प्रेरितों के काल में जो कुछ भी उनके पास था सब साझे की थी, भाई-बहनें रुपया, पैसा धन जो कुछ भी लाते थे प्रेरितों के चरण तले अर्पण करते थे। और जमा करने के लिए उनके पास जो कुछ भी रूप रेखा था वह उनके सामुहिक जीवन में हम पाते हैं। बाद में धीरे-धीरे हमारे कलीसिया का विकास होते हुए कलीसिया के अन्दर अनेक उतथल-पुथल होते आयी, कभी बताहट उनके बीच आयी कभी सुख का दिन भी रहा। और यह मतसंशोधन के काल तक यह रूप देखने को मिलता है। यह स्थिति न केवल उसी समय की स्थिति का इतिहास नहीं है परन्तु आज भी हमारे कलीसियाई जीवन में यही परिस्थिति, उतथल-पुतथल होते आ रही है। इस प्रकार की परिस्थितियों में आरंभिक काल से ही अनेक योजनाएं प्रयास होते आयी जैसे मठवासी संस्था या अन्य दूसरे प्रकार से कार्य-कर्मों को अपनाया। यह उनके बीच में Social Action लिया गया। इसी प्रकार कलीसिया शुद्ध करने के लिए शिक्षा के द्वारा भी कलीसियों के बीच लायी गयी।

पश्चिमी देश के इतिहास में हम लोग पाते हैं :— फ्रांसिसी विद्रोह आदि जिसमें साधारण भाई-बहनों ने विद्रोह खड़ा किया, जिस विद्रोह सभी वर्ग के लोगों को पकड़ लिया।

Napoleon अगुवा निकला और एकतंत्रवाद से उसने अपना शासन कार्य आरंभ किया और जर्मनी आदि देशों को जीत लिया।

१८४६-४७ की बात है कि मध्य देशों में अनेक योद्धा मर गये। बहुत से घर में विधवा हो गये बच्चे निसहाय हो गये। भयंकर परिस्थिति आ गयी तब Communist-party पार्टी संगठित किया गया। बच्चों एवं जवानों की स्थिति बिलकुल बेकार सोचनीय परिस्थिति हो गयी। तब पुरोहितों ने सोचा कि हम कहाँ किस ओर जा रहे है। तब अनेक समाधान के उपाय एवं प्रयास किया गया। १८४८ में कलीसिया का महा सभा बुलायी गयी जिसमें पाद्रो Wicharn बड़ा भाषण दिया और लोगों जमा करने का प्रयास किया गया। पुन: जवानों की समस्या को Wicharn ने देखा कि उनकी स्थिति बड़ा गड़बड़ है वे दंगा-फसाद कामों से बदलें। एक पाद्रो पुन: उनके बीच बन्दीगृह में जाकर सुसमाचार सुना कर उनके बीच में उन्हें जमा करने एवं बठाने का प्रयास किया। इसी प्रकार की स्थिति के कारण जर्मनी में Inner-mission खोला गया, एवं Co-ordination का संगठन किया गया। जिसके लिए उन्होंने कलीसिया से Affiliation मांगा और धीरे-धीरे Affiliation दिया गया कि उनके कलीसिया के कामों में मदद देवे। और कलीसिया के कामों में यह संस्था बड़ा सहयोगी रहा।

Gossner Mission

इसी समय में और एक काम का भी प्रयास किया गया। Worker तैयार करने के लिए विभिन्न कामों के लिए प्रशिक्षण दिया जाने शुरू किया उसमें Training period में बड़ा कटु (कठोर) प्रणाली थी अतः इस कठोरता के विरुद्ध पादियों ने आवाज निकाले कि मालिक इस प्रकार का कठोर व्यवहार न करें, कानून निकाला जावे। Trade union में काम करने वालों के लिए गिरजा आने में भी असम्भव थी चूंकि वे गिरजा आने के लिए इनके पास साफ सुथरा कपड़ा बिना पहने आना यह मुश्किल है। कितनों का विचार था साफ कपड़ा पहने बिना कैसे गिरजा जाए। इस समस्या को दूर करने के लिए उनके पास आकर गिरजा करने का प्रयास किया गया, उनके लिए चिन्ता किया गया। आज दुर्गापुर में भी इसी प्रकार की परिस्थिति है। जैसे आज-कल बनारस में एक पुराऊ Trade union बनाने का प्रयास एक वकील द्वारा अगुवाई किया जा रहा है कि समाज की इस स्थिति में सुधार लाया जाय। इसी प्रकार कलीसिया के द्वारा हमारा ऐसा ही प्रयास होना चाहिए। C. R. L. S. के द्वारा या अन्य दूसरी संस्थाओं को चाहे अन्य दूसरे Method को अपना कर कलीसिया के अर्न्तगत आगृत संस्थाओं के द्वारा एक Social Action किया जा सकता है। जो कलीसिया के लिए Church-Action किया जा सकता है।

—:०:—

सन्डे स्कूल क्या है ?

"खोक्कर लिटा भाई"

मुबाफिर

राबर्ट रेक्स संडे स्कूल आन्दोलन के पिता माने जाते हैं। वे इंग्लैण्ड के ग्लोस्टर नामक नगर में एक साप्ताहिक पत्र के प्रकाशक थे। सन् १७८० में जब उन्होंने प्रत्येक रविवार को बहुत अधिक संख्या में निर्धन और उपेक्षित बच्चों को नगर की सड़कों पर बिना ध्येय घूमते देखा तो इस दृश्य से उनकी आत्मा को गहरी चोट पहुंची। उन दिनों में गरीब बच्चे सप्ताह भर कारखानों में थोड़ी सी मजदूरी के लिए काम किया करते थे और रविवार उनके अवकाश "REST" का दिन हुआ करता था। राबर्ट रेक्स बच्चों के प्रेमी थे और इसके अलावे वह एक समाज-सुधारक तथा परोपकारी भी थे। जब उन्होंने बच्चों के उपद्रवों और हुलड़बाजी के विषय में सुना तो उन्होंने इन बच्चों के लिए एक कमरा किराये पर लेकर अपने ही खर्च से इन्हें शिक्षित करना शुरु किया। यह स्कूल रविवार ही को चलाया जाता था क्योंकि अन्य दिनों में तो बच्चों को काम करना पड़ता था। इसलिये इस स्कूल का नाम अंग्रेजी में Sunday School पड़ा जिसका हिन्दी अनुवाद रविवारीय पाठशाला है। ये स्कूल सही अर्थ में धर्म सम्बन्धी नहीं थे। उनका विचार था कि बच्चों को पढ़ने-लिखने या हिज्जे करने और अंक गणित की मुख्य-मुख्य आवश्यक बातों का ज्ञान दिया जा सके। राबर्ट रेक्स अपने ही जेब से चार अध्यापकों को वेतन दिया करते थे जो कि बच्चों को पढ़ना, लिखना, आचरण और धर्म की शिक्षा प्रदान किया करते थे। हर रविवार को पहली बेला १० बजे से १२ बजे तक और दूसरी बेला २ बजे से ५ बजे तक चलती थी। सन् १८११ तक समूचे इंग्लैण्ड में यह स्कूल विशालरुप में हर कहीं भी स्थापित हो चुके थे। इस कार्य को आगे बढ़ाने में दो सज्जनों ने अधिक योगदान दिया। वे विलियम फाक्स और जान वेसली थे। फाक्स साहिब एक सम्पन्न सौदागर थे। उनकी प्रबल इच्छा थी कि "हरएक जन बैबल पढ़ सकें। आस-पास के जोशिले मसीहीयों को जमा करके ७ सितम्बर १७८५ में सन्डे स्कूल संस्था निर्माण किया। इस संस्था का ध्येय संडे स्कूलों का संगठन करना और उन्हें सहायता प्रदान करना था। यह संस्था स्कूलों के लिये बैबल, नया नियम जैसे धार्मिक पुस्तकों का प्रबन्ध किया करती

Gossner Mission

और अध्यापकों को वेतन भी दिया करती थी। जॉन वेसली ने अच्छी तरह सन्डे स्कूल के कार्यों की सम्भावनाओं को समझ लिया था इसलिये अपने अनुयायियों को प्रेरित किया, वे बच्चों तक पहुँचे और उन्हें मसीह के लिये बचा लें। उसका महान् योगदान यह था कि उसने संडे स्कूल के कार्य को वेतन के आधार से बदल कर स्वेच्छानुसार स्वंय सेवक आधार पर कर दिया। संडे स्कूल का उद्देश्य प्रत्येक छात्र को परमेश्वर की संगति में लाना है। हर वर्ष "विश्व सन्डे स्कूल दिवस अक्सर नवम्बर माह के पहले एतवार को मनाया जाता है जो सन्डे स्कूल अपने वर्ष भर की आमदनी खर्च का योजना बना लेते हैं उन्हें इससे बहुत सहायता मिलती है। हमारी आशा है कि यदि "हर कहीं Sunday School" सुचारु रुप से सब मण्डलियों में चलने लगे तो आप ही आप युवक संघ, माता समाज और कलीसिया मसीही जीवन में दृढ़ ठहरेगी। जो परमेश्वर की पवित्र इच्छा है जिससे सब सबल-सुखी और अमन चैन में स्वर्ग राज्य के वारिशदार हो सकेंगे।

माता पिता परमेश्वर का स्थान लिये हुए होते हैं इस लिए आइये कुछेक बातों को ध्यान में रखें कि अपने बालकों का जीवन हमें बैबल की शिक्षा के अनुसार है क्योंकि बालक ईश्वर की ओर से हमें दान स्वरुप दिये गये हैं। हे बच्चे वालो अपने बच्चों को खिस न दिलाओ परन्तु प्रभु की शिक्षा चितावनी देते हुए उनका पालन पोषण करो (इफिसी ६:४), अपने बालक को ऐसा शिक्षा दो कि वह बुढ़ापे तक उसी में बना रहे। नी० ब० २२:६ बच्चे के ऊपर आत्मिक प्रभाव डालना अति आवश्यक है। मेरी इच्छा यह हो कि मेरे पुत्र पुत्री मेरी समानता में बने, मेरे गुणों को लें तो उसके लिये मुझे स्वंय को आत्मिक बनना होगा और अपना स्वभाव परमेश्वरीय रखना होगा तभी बच्चे को सही मसीही जीवन में ढाल सकूंगा जो मेरा फर्ज है।

—:o:—

"सबसे बड़ी आज्ञा"

मूल वचन मत्ती २२:३७-४०,

"सोवकर किटाभाई" मुंसाफिर"

हम पूरे समय कर्मचारी तो नहीं, पर ईसाई तो जरुर हैं इसलिए परमेश्वर के सन्तान की मर्दुम सुमारी हिसाब में लाये गये हैं क्योंकि बपतिस्मा द्वारा परमेश्वर के प्यारे पुत्र या पुत्रियां हैं। पुराने नियम में पाते हैं कि मूसा ने कई वरषों तक मुंह जबानी से ही इस्राएलियों को हर मुसीबतों से रक्षा रखवाली करते हुए, सम्भालते हुए चरवाही का काम निभाया। इस्राएलियों को लिखित रुप में, जब कि वे पथ भ्रष्टी, हठ्ठी, घमंडी, अत्याचारी आदि पापों के वाहियों का दस आज्ञा दिया गया। यही आज्ञा उनके समय के लिए एक कड़ा अनुशासन का पक्का नियम था। आज्ञाउल्लंघन करने वालों को मौत की सजा मिलती थी क्योंकि पाप की मजदूरी मृत्यु है। मनुष्यों की स्वाभाविक आदत है पाप करना, क्योंकि हम सब पापी हैं। रोमी ३:२३।

परमेश्वर ने हम मानव जाति को एक ही कीमत से अर्थात् अपने निष्कलंक खून से यीशु ख्रिस्त के माध्यम से मोल लिया है। उसके आगे जात-पात का मुंह देखा न्याय नहीं है क्योंकि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता। सबका सच्चा न्यायी है।

अभी इन दिनों हर कहीं मसीही लोग प्रभु यीशु मसीह के दुःख भोग के बारे में दिन रात चर्चा करते हैं। सबसे मुख्य बात तो यह है कि हम मानव जाति के प्रति उसका कितना प्यार है— बताता है। प्रभु यीशु के माध्यम से हम आध्यात्मिक जीवन कैसे प्राप्त कर सकते हैं यह हमें बैबल बताती है। इसमें सामाजिक और पारिवारिक बातों से सम्बन्धित एक व्यावहारिक शिक्षा है। हम सम्पूर्ण बैबल को, उसके एक-एक अध्याय को अथवा हरएक

Gossner Mission

पद को और यहाँ तक कि प्रत्येक शब्द को भी पढ़ने और गहराई से अध्ययन के क्रम मान सकते हैं। स्वर्गीय शिक्षक अपने अनुयायीयों और समाज संचालकों से ख्रिस्तानी जीवन को कायम रखने के लिये कहा था "मुझसे सीखो"। वह खरा शिक्षक था क्योंकि सच्चाई को बिन्दु मात्र भी छोड़ता नहीं था। इसी कारण दुनियावी मान-मर्यादा चाहने वाले यहूदियों, रोमी अफसरों और धर्म गुरुओं को तथा घमंड से भरे हुओं को आत्मिक और मानसिक गहरा चोट और धक्का लगा। उनसे मत डरो जो शरीर और प्राण आत्मा को नरक में नाश कर सकता है। मनुष्यों की आज्ञा से बढ़ कर हम परमेश्वर की आज्ञाओं को मानें। यीशु ने कहा मैं जगत की ज्योति हूँ। जो मेरे पीछे आता है, बुरा-भला को पहिचानते हुए अंधकार के कामों को त्याग कर ज्योति में चलेगा और मसीही जीवन को बनाये रखेगा, (यू० १:६)

परमेश्वर प्रेम है। मनुष्यों के हृदय की कुंजी है प्रेम है। पौलुस प्रेरित हमें चिताता है कि यदि मुझमें "प्रेम" नहीं तो मैं झनझनाता झाँझ और ठनठनाता पीतल, यहां तक की खाली टीन को जो आवाज पीटने से होती है, वही एक ऊंचा आवाज भर हूँ। गोस्सनर एवजेलिकल लुथेरान कलीसिया के प्रमुख अध्यक्ष द्वारा जो चरवाही पत्र दिनांक ५-३-१९८१ से चारों ओर सही ढंग से रहने के लिए हम सभों को दिया गया है, उस पर हम गौर करें और स्थिर रहें क्योंकि शुरू से ही यह मसीही धर्म में सताहट होती आयी है, फिर भी हमारे पुरखे कलीसिया की हिफाजत में अपना तन-मन धन और जान तक निछावर कर दिए। देखिए इब्रानी ग्यारह अध्याय को पढ़ कर मनन करें। हम केवल मसीह में धमड करें। सच्चाई को धरे रहें।

ईश्वर के साथ ठीक होने के लिए दुनियां में हमें एक दूसरे के साथ ठीक होना आवश्यक है। यीशु ने कहा—वेदी पर भेंट चढ़ाने से पहिले जा, अपने भाई से मेल-मिलाप कर लो तब आकर बलिदान चढ़ाने से परमेश्वर को ग्रहण योग्य होगा। मनुष्य की सृष्टि परमेश्वर के समानता में थी। पवित्र संगति में समेट कर तथा उद्धार के काम को पूरा करके हमें यीशु ने—एक नई आज्ञा दिया। मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ कि एक दूसरे से प्रेम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो (यू० १३:३४, ३५,)। तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपने सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा यही है। और उसी के समान दूसरी भी है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। ये ही दो आज्ञाएं सारी व्यवस्था और नबियों का आधार है। उत्पति की पुस्तक से लेकर प्रकाशित वाक्य तक ६६ पुस्तकों के निचोड़ में यही "ठोस वचन" प्रत्येक ख्रिस्तान के लिए उपयोगी है जिसका अन्त अनन्त जीवन है आईए हम मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा मानें।

—:०:—

Gossner Mission

(शेष पेज दो का)

सिंचाई— तलाब, बांध, कुंवा, के द्वारा Pump Set के द्वारा, एवं खाद (कम्पोस्ट) के द्वारा काम हो। फिर इसके अलावा Agriculture द्वारा —Animal Husbandry का काम भी किया गया—गाय, बकरी, सुअर, मुर्गीपालन एवं मच्छली पालन का काम भी किया जा रहा है।

सामाजिक सेवा–शिक्षा, बाइबी ज्ञान, Cultural Centre आदि का कार्य किया जा रहा था। जिसमें भवन आदि का निर्माण किया गया।

परन्तु अचानक सरकार से रोक पड़ने के कारण L. W. S. को काम छोड़ना पड़ा परन्तु काम रोका नहीं गया परन्तु G. E L. Church के अधीन रहकर काम को आगे करना है। और L. W. S. का नाम मिटा दिया गया। उसके बदले G. E. L. Church Assistance नाम दिया जा रहा है। जिसके अधीनस्त ही विगत दिनों से कार्य होते आ रही है, किया जायगा एवं उन्हीं Staff को भी रखा जायगा।

सवाल—जवाब

(i) क्या कारण है L.W.S. के कार्य को सरकार रोक दी :—

जवाब :—सरकार नाजुक क्षेत्र में काम करने के लिए डरती है यही एक कारण हो सकता है चूँकि ऐसे क्षेत्र के लिये सरकार Block द्वारा ऐसे Deveplopment के कामों को करने का पैसा दिया गया है इसी बात को लेकर सरकार के लिये दूसरे जरीये से काम करना उनके लिये लज्जा की बात हो सकती है।

(ii) क्या मध्य प्रदेश के लिये यह कार्य हो सकता या नहीं।

जवाब :—चूँकि छोटानागपुर Rural Community का प्रधान क्षेत्र है इसलिये छोटानागपुर का ही प्रथम स्थान (निशान) रखा गया।

(iii) हंड़िया दारु बेचने। पीते हुए कैसे हम ऐसे विकास की ओर बढ़ सकते हैं।

जवाब :—हंड़िया के बदले दूसरा चीज बनाकर उन्हें दें।

—:o:—

गोस्सनर एवंजेलिकल लुथेरान कलीसिया

पी० डी० खोरेंग

कलीसिया के सभी भाई बहन, बाँचो

जी० ई० एल० चर्च, तिथि ५-३-८१

गोस्सनर कलीसिया के सभी भाई बहनों को मेरी ओर से यीशु सहाय। आप सभों को हमारे पिता परमेश्वर और उद्धारकर्त्ता यीशु क्रिस्त की ओर से अनुग्रह और शांति मिलती रहे।

उन भाई बहनों को जो अपने को कथित उत्तरी पश्छमी गोस्सनर कलीसिया के अंग समझते हैं, मुझे बड़ी इच्छा हुई कि कलीसिया के सम्बन्ध में कुछ सच्ची बात को बता दूं जो वर्त्तमान में हो रही है।

प्यारे भाईयों और बहनों, आप जो अपने को कथित उत्तरी पश्छमी गोस्सनर कलीसिया के अंग समझते हैं, मैं अभी भी पूर्ण विश्वास करता हूँ कि आप लोगों के मन में गोस्सनर कलीसिया के प्रति प्रेम और भक्ति है, परन्तु आप के कुछ अगुवे आप लोगों को गोस्सनर कलीसिया से निकाल कर एक अलग लुथेरान कलीसिया खड़ा करने की कोशिश कर रहे हैं। इस सम्बन्ध में निम्न बातों पर गम्भीर रीति से गौर करें और अपना फैसला करें।

१ गोस्सनर कलीसिया से अलग और एक लुथेरान कलीसिया खड़ा करना उचित नहीं :—

गोस्सनर कलीसिया का विभाजन अनेकानेक कारणों से उचित नहीं है। विभाजन से आत्मिक, नैतिक, आर्थिक और सामाजिक कमजोरी कलीसिया में होगी। और भी अनेक कठिनाईयां और बुराईयां कलीसिया में आएंगी जिन्हें अभी सब कोई नहीं देख सकेंगे। इन्हीं बातों को देखकर और जान कर हिन्दुस्तान की लुथेरान कलीसिया, गोस्सनर कलीसिया के विभाजन के पक्ष में नहीं हैं। जर्मनी में गोस्सनर मिशन भी विभाजन के पक्ष में नहीं है और इसी

Gossner Mission

रजिस्टर्ड न० आर० एन० सी० ४

वार्षिक मूल्य १० रु०

एक प्रति ,, १ रु०

लिये हिन्दुस्तान के लूथेरान कलीसियाओं की सभा (यू० ई० एल० सी० आई०) के अधिकारियों को अर्जी किया कि एक पीस कमिटि (शाँति सभा) बुलावे, जिसका पुरा खर्च देने का भार अपने ऊपर लिया।

इस योजना के अनुसार २-४ मार्च ८१ को जर्मनी से मिशन डाईरेक्टर पाद्री क्रिबेल और चेयरमेन डाक्टर ग्रोटहाउस, दक्खिन भारत के तीन तथा उत्तरी भारत से विशप टुडू, कुल छः महान अनुभवी लोग आये, परन्तु आप के अगुवों ने जर्मन से आये हुएँ दो सदस्यों का भारी अपमान किया। ये दो वे ही अधिकारी हैं जो गोस्सनर कलीसिया की हर तरह से सहायता करते हैं। आप के अधिकारियों ने इन से किसी प्रकार की सहायता लेना इनकार कर दिया, और अपने बीच में आना मना कर दिया। उनको इतना भी कह दिया गया कि वे जल्द हिन्दुस्तान से चले जाएं। हिन्दुस्तान के चार सदस्यों ने भी अपमान अनुभव किया क्योंकि आप के अधिकारियों ने इन से असहयोग किया और बैठकों में नहीं आये।

२ गोस्सनर कलीसिया का बटवारा असम्भव :—

देश विदेश से आये हुए महान अनुभवी लोग जानते थे कि गोस्सनर कलीसिया का बटवारा करना उनकी शक्ति से बाहर की बात थी। इस कारण से उन्होंने बटवारा की बात ही नहीं की। आप के अगुवे भी इस बात को जानते हैं कि दुनियाँ की कोई सभा गोस्सनर कलीसिया का बटवारा नहीं कर सकती है। परन्तु झूठा प्रचार कर आप लोगों को बताया गया था कि मार्च के २-४ तारिख को बटवारा हो जायगा। ऐसा झूठा प्रचार क्यों ? केवल आप को ठग के अपने साथ बनाके रखने के लिये। कृपा कर आप गम्भीरता से सोचिये। आप निश्चय जानिये कि देश विदेश से आये हुए सज्जन गोस्सनर कलीसिया का बटवारा करने नहीं, पर शाँति का मार्ग ढूंढ़ने और शाँति स्थापित करने आये थे, जिसको आप के अगुवों ने अपमान किया। वे निराश होकर लौट गये।

३ कथित उत्तरी पच्छमी गोस्सनर कलीसिया का मान्यता प्राप्त करना असम्भव :—

अफशोस की बात है कि आप के अगुवे आप की ऐसी अगुवाई कर रहे हैं कि जिस नई कलीसिया का आप दर्शन देख रहे है उसे कभी साक्षात नहीं देख सकेंगे। मैं जानता हूँ कि आप के मन में गोस्सनर कलीसिया के प्रति प्रेम और भक्ति है और आप गोस्सनर कलीसिया को छोड़ना नहीं चाहते हैं, परन्तु आप के कुछ अगुवे आप को साथ लेकर गोस्सनर कलीसिया से अलग होना चाहते हैं। ऐसी बात जानकर कथित उत्तरी पच्छमी गोस्सनर कलीसिया से १२ पाद्री और २५ हजार भाई बहिन निकल चुके हैं जो उत्तरी पच्छमी अंचल जी० ई० एल० चर्च में संगठित हैं। ऐसी परिस्थिति को देख कर कथित उत्तरी पच्छमी गोस्सनर कलीसिया की मान्यता कौन देगा ?

गोस्सनर कलीसिया से अलग होकर, नई कलीसिया बनाने में आप के अगुवों ने बुनियादी भूल की है। जब अलग होना ही चाहते हैं तो चुपचाप से अलग हो जाएं, उनको कौन रोक सकता है ? जैसे एंगलिकन (एस० पी० जी०) कलीसिया। पर आप अगुवे तो डेग डेग में गोस्सनर कलीसिया से दुश्मनी मोल ले रहे हैं। वे जानते हैं कि गोस्सनर कलीसिया के चल अचल सम्पति पर अपना अधिकार खो बैठा है, पर अब लुट पाट करने लगे हैं। ऐसी कलीसिया की मान्यता कौन देगा।

यू० ई० एल० सी० आई० और गोस्सनर मिशन, मान्यता देने में पहला हो सकते थे पर आप के अगुवों ने उनका खुला अपमान किया। ऐसी कलीसिया की मान्यता कौन देगा।

अतः मैं आप सभी भाई बहनों से निवेदन करता हूँ कि आप तुरन्त अपनी माता कलीसिया में चले आवें। गोस्सनर कलीसिया द्वारा आप ने आत्मिक और लौकिक आशीष बहुत पायी है। गोस्सनर कलीसिया आगे भी आप की उचित रखवाही करेगी।

अब मैं पाद्री भाईयों से विशेष रूप से कहना चाहता हूँ। आप ईश्वर के बुलाये और अभिषिक्त जन हैं कि भेड़ों को हरी हरी चराई में चरावें। जरा सोचें तो कि आप भेड़ों की रखवाही किस प्रकार कर रहे हैं ? आप अपने भेड़ों को किस जंगल में ले जा रहे हैं ? जो आप कर रहे हैं उसके द्वारा आप भेड़ों को घबराहट में डाल दिये हैं। आप भी आत्मिक और लौकिक हानि की ओर जा रहे हैं। गम्भीरता से सोचिये और तुरन्त लौट आईये।

अन्त में सभों से मैं अर्जी करता हूँ कि जल्द विभाजन का आत्मा को छोड़ दें और गोस्सनर कलीसिया लौट आवें। मैं आप सभों को निश्चयता देता हूँ कि गोस्सनर कलीसिया, बिना कोई शर्त के सभों को ग्रहण करेगी और एक झुण्ड और एक रखवाहा (मसीह) की अधीनता में सब कोई परमेश्वर की महिमा करेंगे।

Edited & Published by : Rev. P. D. Soreng Pramukh Adhyaksh on behalf of the G. E. L. Church and Printed at G. E. L. Church Press. Main Road, Ranchi.

Gossner Mission

धर्मबन्धु

रजिस्टर्ड नं० आर० एन० सी० ४
वार्षिक मूल्य १० रु०
एक प्रति ,, १ रु०

वर्ष—१०० रांची, जून १९८१ संख्या नं०—१८

G.E.L. Church Ministerium Sabha

Date 22-3-81

प्रार्थना :—प्रमुख अध्यक्ष रेभ० पी. डी. सोरेंग की अगुवाई में सा० वा० २३:१-३ पद गाया गया वचन यूह० १ : २९ पढ़ा जाकर सप्रर्थना सभा आरम्भ हुई।

उपस्थिति :— १०४ उपस्थित थे।

स्वर्गवासी पादियों का नाम सभा में लाया गया :—

Rev. S. Barla (Ex Pramukh Adhyaksh)
Rev. K. M. Topno ··· Bano
Rev. N. M. Lugun — Gua
Rev. C. K. Guria .... Ranchi
Rev. Junas Dang — Tutikel
Rev. K. D. Soy — Kurki

इन सभी स्वर्गवासी पादियों का संक्षिप्त में जीवन परिचय प्रमुख अध्यक्ष द्वारा बतलाया गया। एवं रेभ० सी० बी० आईन्द की अगुवाई में शोक प्रस्तुत करते हुए मौन प्रार्थना सहित शोक प्रार्थना हुई।

विषयों पर बात-चीत :—

अपने क्षेत्र से बाहर सेवा करने के विषय :— एक अंचल से दूसरे अंचल एक इलाका से दूसरे इलाका, एक पेरिस से दूसरे पेरिस में सेवकाई न करने के सम्बन्ध में।

सेवकाई एवं प्रशासन के लिये कलीसिया सुविधानुसार विभिन्न क्षेत्र एवं दायरे में विभाजित है। अपने क्षेत्र से दूसरे सेवकाई एव प्रशासन क्षेत्र में बिना क्षेत्रीय अधिकारी के अनुमति कदापि ही प्रवेश न करें। वरन इस बात का भी हम ख्याल रखें कि वचन एवं सक्रामेन्ट की सेवकाई में कदापि ही भाई-बहनों को दूर न रखें।

उदाहरण मिला :—(a) उड़ीसा अंचल के राऊरकेला एवं कदीमटी इलाका के कपीलास क्षेत्र में S.E. Anchal एवं Theological college द्वारा सेवकाई दी गयी।

(b) S. E. Anchal के भीतर ही Tokad Ilaka के अंतर Anandpur parish के पादी द्वारा एवं Koronjo toli parish के पादी द्वारा सेवा दी गयी। ऐसा करना प्रशासनिक विचार से गलत है।

अंतिम निष्कर्ष :— (a) प्रमुख अध्यक्ष द्वारा प्रसावित नियम को हम अनुपालन करें।

(b) वचन और सक्रामेन्ट से कभी भी वंचित न करें (सेवा का पहला स्थान रखें) प्रशासन के क्षेत्र में कदापि ही दूसरे क्षेत्र में प्रवेश न करें।

२ आज कल बिना शादी हुए पादी बनाया जा रहा है यह नियम कब से कैसे बदल गया ?

पुराने समय में यह पहले Practice कलीसिया में थी कि बिना शादी के पादी पद नहीं दिया जाता था। परन्तु यह निर्णय की बात नहीं है।

३ दृढ़ीकरण के समय का तोसक एकरारनामा को दूसरी कलीसिया में लड़कियाँ शादी होकर चली जाती है गुनाहगार हो जाते हैं इसलिये यह प्रतिज्ञा उठा दिया

Gossner Mission

जाय। जबाव इस प्रतिज्ञा में जबर्दस्त ठोस (कठोर) प्रतिज्ञा की बात नहीं है कि "(चाहते हो या चाहती हो) चाहे तो रह सकता है / रह सकती है / नहीं चाहने पर स्त्री-पुरुष के शादी के समय का बन्धन जैसे कोई कठोर प्रतिज्ञा नहीं है।

४ शादी विवाह की समस्या — बहुविवाह करना चाहते हैं।

कलीसिया होकर बहुविवाह को अनुमति कदापि नहीं दी जा सकती है।

विदाई :— अन्त में कुशाटोबियम चेयरमेन डा० हंस ग्रोटहाँऊस को मिनिस्टेबियम सभा की ओर से विदाई दिया गया। उनको हमारे बीच में उपस्थिति एवं इस शिक्षा क्लास में शिक्षा देने में हमारी अगुवाई किये इन सारी बातों के लिए हम आप के हार्दिक धन्यवादी हैं और इसी प्रेम के कारण विदाई में हमारी यादगारी एवं चरवाही के—एक चरवाही (मुसा की छड़ी) एवं एक प्लेट दी गयी।

पुनः अन्त में हम गोस्सनर कलीसिया की ओर से कुशाटोबिम के सभी सदस्यों को पुराने कुशाटोबिम सदस्यों को, हँस लोकिस को, और परिवार के सभी छोटे बड़े सदस्यों को हमारा मसीही नमस्कार देते हैं।

अन्त में पुनः सभी पाद्री भाईयों को इस Refresher class में उपस्थिति के लिये धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इसके साथ ही साथ प्रमुख अध्यक्ष ने अपने लिये प्रार्थना करने की निवेदन किये।

अन्तिम प्रार्थना :— मिनिस्ट्रेबियम सचिव रेभ० एम० टेटे की अगुवाई में सा० बा० १२९ का अन्तिम ५वाँ पद गाया गया एवं प्रार्थना रेभ० एम० टेटे द्वारा एवं डा० ग्रोटहाऊस के ईश्वर आशीर्वाद सहित सभा अन्त की गयी।

—:o:—

Social Action

—by Bishop Dr. Hans

"पहले पेट भीतर तब देव पीतर" (लोगों की कथन) पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तब तुम्हें सब वस्तुएं प्रदान की जाएगी।

उदाहरण :—जब कोई चीज का सौदा करते हैं तभी ही उपाय मिलता है, बिना सौदा किये उपाय नहीं मिलता है।

पहले :—आत्मिक उत्थान होना चाहिए तभी हमारा शारीरिक जीवन का भी विकास होगा।

यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा ही हमें जो कुछ अभी हमें मिला है, वह शारीरिक जीवन के लिये है।

हमारी आत्मिक उन्नति के साथ ही साथ आर्थिक उन्नति की भी आवश्यकता है।

हमारे बीच में आर्थिक उत्थान (उन्नति) नहीं है विदेशों में Money Economic है जिसके कारण उनके लिये कोई भी उत्थान का कार्य सहज से कर सकते हैं परन्तु हमारे छोटानागपुर में कोई उत्थान के लिये Money Economic नहीं है।

आरम्भ में हमारे बीच में Jesuit father दिल्ली से आये और छोटानागपुर का सर्वेक्षण किया गया। और मांडर में एक बैठक Arch Bishop Kerketta & Dr. Hans, Joint Chairman की अगुवाई में हुई। पश्चात् विकास मैत्री संघ का काम आरम्भ तत्पश्चात् Xavier Social Institute स्थापित किया गया।

क्रमशः इस बीच छोटानागपुर के अर्न्तगत कुंवा, तलाब आदि के विकास का काम आप के बीच में भी यहाँ वहाँ हो रहे हैं।

L. W. S. — (Lutheran World Service) L. W. S. का काम Integrated Rural development, जिसमें Agriculture विशेष ध्यान दिया गया।

Agriculture द्वारा—जहाँ एक बार खेती होती है वहाँ दो बार तक खेती करके विकास करना।

Con..... 3rd Cover Page.

Gossner Mission

धर्मोपदेश

आज कल कितने दिनों से वेस्ट इण्डिया द्वीपों के क्यूबा टापु में वहां के निवासियों और स्पेन के लोगों में लड़ाई हो रही है। यह द्वीप कई सो वर्षों से स्पेन के वश में है परन्तु उसके निवासी उसकी प्रभुता से निर्बन्ध होने चाहते हैं और अमेरिका के लोग अचसक छिपके उनकी सहायता करते हैं। उनमें से एक जब क्यूबा द्वीप को व्यापार करने के लिए गया था और वहां स्पेन के सिपाहियों ने पकड़ा जाकर बन्दगृह में डाला गया क्योंकि उसपर यह दोष लगाया गया था कि उसने राज्य-द्रोहियों की सहायता की। किन्तु इसका कुछ प्रमाण नहीं था और जो लोग उसको अच्छी तरह जानते थे सो बोले कि इसका कुछ दोष नहीं है। तिस पर भी स्पेन के सिपाहियों के प्रधान ने उस पर मृत्यु दण्ड की आज्ञा दी कि वह बन्दूक से मारा जावे।

यूरोप के और अमेरिका गवर्नमेण्टों की ओर से इन २ देशों और टापुओं में सज्जन ठहराये जाते हैं जिनको कोनसुल अर्थात वकील कहते हैं जिनका कर्त्तव्य यह है कि वे जिस गवर्नमेन्ट के वकील हैं उसके प्रजाओं की रक्षा करें। इस रीति के अनुसार क्यूबा में अमेरिकन और इंगलैण्ड राज्य के भी कोनसूल रहते हैं। उन्होंने पूर्वोक्त बात सुनकर उस आदमी के मारे जाने के विरुद्ध स्पेनीय पल्टन पति के पास उजूर दरखास्त दिया क्योंकि उसकी जन्म भूमि इङ्गलिस्थान थी और वह अमेरिका का निवासी था। उन्होंने अपने दरखास्त में उसके निर्दोषी होने का सबूत भी दिया था किन्तु पल्टन-पति ने उनकी विन्ती ग्रहण न की बरन आज्ञा दी कि कल ही वह मारा जायगा। दूसरे दिन भोर होते ही इङ्गलेण्ड और अमेरिका के दोनों कोनसूल अपने-अपने राज्य का झण्डा लेकर उस स्थान पर उपस्थित हुए जो उनके मारे जाने के लिए ठहराया गया था। और थोड़ी देरी के पीछे वह भी सिपाहियों से बांधा हुआ पहुंचाया गया। उसके हाथ बांधे गये और सिपाही पांति बांध भरी हुई बन्दूक उठाकर उसे मारने को प्रस्तुत हुए तब अंग्रेज और अमेरिकन कोनसूल दोनों ने आगे दौड़कर उस मनुष्य को अपने झण्डा से ढांपकर पल्टनपति को पुकारा कि यदि आप इसको मारेंगे तो हमारे राज्य के अपराधी होंगे क्योंकि वह हमारा रक्षित प्रजा है यह सुनकर स्पेनीय पल्टनपति ने सिपाहियों को लौटने का हुकुम दिया और उस मनुष्य को छुट्टी दी।

इस बात से हम लोग अच्छी रीति से बता सकते हैं कि यीशु ख्रिस्त के द्वारा पापी मनुष्य किस प्रकार से बच जाता है। पाप के कारण दण्ड की आज्ञा हम लोगों पर हो चुकी है परन्तु जो प्रभु यीशु के लोग हैं उन्हें वह अपने धर्म कमाई रूपी झण्डे से ढांपकर रक्षा करता है और वह जो हमारी ओर है तो हमारे विरुद्ध कौन होगा?

हे प्यारे पाठक, क्या तू उसके झण्डे के तले आ चुका है, क्या तू बचाव पाने के लिए यीशु पर भरोसा रखता है? जल्दी से उसका शरण ले कि तू नष्ट न हो जाय।

—:o:—

Gossner Mission

गोसनर कलीसिया और फादर गोसनर

द्वितीय विश्व-महायुद्ध के तुरंत बाद सन १९४७ ई० में हिन्दुस्तान के एवंजेलिकल लुथेरान गोसनर कलीसिया के प्रेसिडेण्ट ने बेर्लिन में गोसनर मिशन का दर्शन किया। उस समय जर्मनी की राजधानी बेर्लिन केवल खंडहर था। इतना ही नहीं गोसनर मिशन बंगला भी खंडहर था तथा जिस एलिजबेथ महिला-डोकन केन्द्र एवं अस्पताल को एक बार पाद्रो योहोनेस एवं एवजेलिस्ता गोस्सनर ने स्थापित किया था वह भी केवल खंडहर था। पर उस खण्डहर से वे कुछ भी प्रभावित नहीं जान पड़ते थे। जब बेर्लिन के एक पाद्री ने जानने के लिये उसे पूछा तब उसने जवाब दिया– "हाँ", पाद्रो साहब क्या आप नहीं जानते हैं कि यह जगत मिटने वाला है!" यह तो बेबल की शिक्षा के अनुसार ही था। जरूर, बेबल की शिक्षा ने गोस्सनर कलीसिया के अगुवों में अच्छा स्थान पाया है।

वह हिन्दुस्तानी कलीसिया का प्रेसिडेण्ट पहला ऑफिसियल दर्शक था, जिसने सौ वर्ष पूर्व स्थापित गोस्सनर मिशन एवं हिन्दुस्तान में आत्मशासित गोस्सनर कलीसिया के बीच व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित किया। वह अपने बर्लिन दर्शन से क्या देखना चाहता था उसे मेहमानी करने वाला जान गया। एलिजाबेथ अस्पताल में स्वागत पाते समय उसने प्रश्न किया–"फादर गोसनर वास्तव में कहाँ रहता था और काम करता था जहाँ से हिन्दुस्तान में मिशन काम के लिए वह प्रार्थना करता था। लोगों ने उसको पत्थरों एवं ईंटों के ढेर को दिखाया जहाँ दिवाल का कुछ ही अंश बचा हुआ था उसने तुरत निश्चय कर लिया एवं गोस्सनर कलीसिया में काम करने वाले एक मिशनरी के साथ वह उस खण्डहर पर चढ़ गया। उसने उस मिशनरी के साथ उस खण्डहर के बीच प्रार्थना की।

इसके बाद उसने फादर गोस्सनर की कब्र का दर्शन किया। उसकी कब्र बेथलेहम मंडली में थी जहाँ फादर गोस्सनर ने वर्षों तक एक पादरी के रूप में प्रभु को सेवा की। शहर का यह भाग भी केवल खण्डहर ही पड़ा चूँकि इसी क्षेत्र में बेर्लिन के लिए अंतिम लड़ाई हुई। गोस्सनर की कब्र सुरक्षित थी। इस कब्र पर उसने इस प्रकार का प्रोग्राम चालू किया गीत, बेबल पाठ, प्रार्थना, और चार हिन्दुस्तानी भाषाओं में गीत। इस स्मरणार्थ छोटी आराधना में वह सब मसीही आदिवासियों के नाम में और दूसरे गैर-आदिवासी मसीहियों के नाम में प्रार्थना की जो छोटानागपुर में रहते हैं। उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया जिसने अपने हथियार फादर योहानेस गोस्सनर को भेजकर सुसमाचार के द्वारा छोटानाग-पुरियों को अपने पास बुलाया है।

जब वह गोस्सनर की कब्र को छोड़ रहा था तब उसने दो बातें कहीं – "अभी पहली बार मुझे समझ में आया, बेबल में अब्राहाम के विषय कहा गया है वह जो ईश्वर का जन था अपनी कमर में भविष्य की सारी इस्राएल को ढोया या लिया हुआ था। तब उसने आगे कहा–"उसी प्रकार 'पिता' गोस्सनर के व्यक्तित्व में गोस्सनर कलीसिया की ओटोनोमी बीज के रूप में मौजूद था। दोनों बातें यह साफ कर देती हैं कि उसमें धन्यवाद की भावना थी, एवं गोस्सनर कली-सिया फादर गोस्सनर को कभी भूल नहीं सकती है।

हिन्दुस्तान के कितने मसीही फादर गोस्सनर के नाम से अपरिचित हो सकते हैं पर गोस्सनर कली-सिया के स्थापक और गोस्सनर कलीसिया में बहुत घनिष्ट सम्बन्ध है। यही कारण है सन् १९१९ की नियमावली के अनुसार आत्मशासित गोस्सनर कली-सिया का ऑफिसियल नाम रखा गया है—"छोटा-नागपुर और आसामस्थ गोस्सनर एवजेलिकल लूथेरान कलीसिया।"

फादर गोस्सनर कहता है—अगर हम मिशनरी बनना छोड़ देते है, तो हम मसीही होना भी छोड़ देते हैं।

Gossner Mission

लूथेरान महिला संघ जवाबदेह

गोसनर कलीसिया में बहनों याने माताओं का जवाबदेहित्व बड़ा ही कठिन है यह होते हुए भी माताएँ उसे निभा ही रही हैं। यह सराहनीय है। यह कहना कदापि गलत न होगा कि गोसनर कलीशा में माताएँ ही ओटानोमी सब से पहले ली हैं और उसे निभाते चली आ रही हैं। माताओं को इसके लिए अनेक भयानक आंधी-तूफान याने घटी, विसहाव और लड़ाई झगड़ों का जोर-दाव सामना करना है।

एक विवाहित माँ का सबसे बड़ा जवाबदेह अपने पति के काम, स्वस्थ्य, सेवा व्यवहार, आदतों और अच्छी संगति को सच्चे मसीही ढांचे में ईश्वर के भय-प्रेम में रह करके घीरज से सुधारना और बनाना है।

अपने ससुराल और ननीहाल के सब गिरे और उठों को, पढ़ और अपढ़ को, समझ और बेसमझों के साथ असल मसीही व्यवहार ईश्वर को अपने सामने जान के विन्ती के बल पर अच्छी आशा में पूर्ण हो के सुधार करना जरुरी है।

अपना घर :—हर माँ को अपने घर को मसीही घर हाँ एक नमूना योग्य घर बनाना है कैसे ? घर और उसमें जो कुछ है सो किसी का नहीं [ईश्वर का है यह सब से बड़ी बात और विश्वास हर बहन का होना है।

बच्चे :—बहन के गोद में दिये गये हर बच्चा एक अमूल्य मुहर है जिसका दाम सारा जगत मिल के नहीं दे सकती ऐसों की भण्डारिन बहन है इन लिए हर बच्चे के लिए सुबह शाम गिड़गिड़ा के विन्ती करना और ईश्वर पिता के हाथ देर-देर बच्चों के जीवन भर सौंपा करना, ताकि यीशु जब आवे तब माँ बाप और बच्चों को अपने योग्य पावे। कोई माँ अपने किसी एक बच्चे को भी नाश न होने दे और न खो देवे। यीशु इसका लेखा खाना अवश्य लेगा। यह जानते हुए, बच्चों के स्वास्थ्य उनका पीना पढ़ना अच्छी आदतें, अच्छी संगति, अच्छे विचार की ओर अगुवाई ईश्वर को संगति और ईश्वर के वचन की खोज में लोलीन रहने को सिखाना माँ का ही काम है अच्छी बातें बोल कर दस आज्ञाएँ और उसके अर्थ बचन को सिखा-सिखा कर घरेलू विन्ती करने, गिर्जा और विन्ती समाजों में साथ ले जा कर घरेलू काम बटवारा करने से, घर की आमदनी और उपज ही के सीमाने पर खाने और खर्च करने की आदत डालते हुए यह सिखाना कि हम मिहनत कर के खाना खावें आलस से या चोरी :करके कभी नहीं। मुर्गी के छोटे चिगनों, चोटियों और मधु-मक्खियों को दिखा के परिश्रम करने की शिक्षा दें। अपने बच्चों को घमण्डी होने और फजूल खर्ची होने से और लगा के रोकना समय के सुव्यवहार और बड़ों की अच्छी आशाओं की पहचान में सदा आगे बढ़ते रहना है बच्चों को आज्ञा-कारी होना अभ्यास करा-करा के आदत डालना सभी को पसन्द होगा। पूरे घर और घराने में आनन्द बना रहेगा। ऐसा करने से सब दिखने और होने वाली कठिनता दूर भागेंगे।

माताएँ खेतों से घर लाये अनाज और वेतन पाये हुए रुपयों को अपना नहीं पर ईश्वर का बहुत बड़ा दान जानें और ठीक अच्छे कामों में खर्च ऐसा करें कि किसी से पैचा-उधार मांगना न हो परन्तु दुःख सुख और लाचारों, भूखों और कंगालों को थोड़ा बांट देने को कुछ पास रहे। ईश्वर की इच्छा यह भी है हर माँ अपने बाल-बच्चों समेत अनाज और सभी वस्तु जो उनके पास है बहुत बरत से काम में लाना कभी न भूलें।

हर माता को अपनी बुद्धि, शक्ति, समय और धन को दो हिस्सों में बांटना है एक हिस्सा ईश्वर के लिए देन कर के अलग रखें जिस में से मण्डली सेवा कलीसिया सेवा और अन्य धार्मिक सेवा में अर्पित हो। दूसरा हिस्सा अपने घर, घराने और अड़ोस-पड़ोस के बहुत ही लाचारों की मदद में खर्च होवे। घर में बच्चों और पति के स्वास्थ्य, शिक्षा और प्रतिपालन में खर्च हो बड़े ऐश-आराम दिखाना और बड़पन में खर्च न हो।

घराने में जो बड़े यत्न से चलता, मतवालापन से बचा हुआ हो उसके बड़े मिहनत पर भी जरूरत पूरी न हो सके तो उसे कुछ बांट दें।

Gossner Mission

अड़ोस पड़ोस में लाचार कंगाल हो तो उनके दुःख-सुख और मदद की विशेष दांव देख उन की सहायता करना।

मनुष्य जीवन में सबसे उत्तम और बड़ा धन समय ही है जो हमें बिना मिहनत और बेदाम का ईश्वर से दिया जाता है।

हर माँ के घर में बहुत काम हैं हर तरह से मिहनत कर के घर की जरूरतों को पूरी करना है अपने बल बुद्धि पर नहीं पर ईश्वर की इच्छा अनुसार और संगति में सब कुछ करना है ऐसा करने ही पर तो माताओं को विधवा, विधवा, समाज सेवा, समाज, गैर मसीहियों की खोज और उन के सुधार के ज्ञान और सब दान के देने हारे के पास आने की फुरसत मिलेगा और माँ नहीं कह सकेगी कि मुझे समय नहीं मिलता है।

समय ईश्वर का विशेष दान हर एक के लिए है। जब हम कहते धर्म के काम के लिए समय नहीं मिलता तो हम सोचें ईश्वर हम से क्या कहेगा और लेखा लेगा क्या हम निरुत्तर न होंगे ? ऐसा न होवे समय सुधरने का अब है।

मुट्ठी दान से, मण्डली सेवा से, चन्दा दान से, समाज दान से धर्म सेवक के बोझ उठाने वालों का वेतन बिन रुके ही बनाते जाना है वेतन लेना नहीं पर वेतन देने की चिन्ता करना है और सेवकों से आत्मिक बातों की सुझाव के लिए ईश्वर वचन की सेवकाई खोजते रहना है।

माँ इस प्रकार अपने निज घर अर्थात् पति, बच्चे छोटे भाई बहनों से एक सच्चा मसीही घराना बनावे जो खीष्ट के क्रूश के नीचे लड़ने वाली सेना बनावे, मण्डली को ईश्वर का जान के पवित्र माने, अपनी कलीशा को ईश्वर की बाणी अदन जाने जहाँ ईश्वर का आना शाम सुबह हो और ईश्वर के लोग उसकी आवाज सुनें और मानें।

इस प्रकार मसीही कलीशा में कलीशा को बनाने और ईश्वर की संगति में रखे रहने का बड़ा भारी अवाब देह है। इस को उचित रूप से कर सकने और हियाव न छोड़ने संसार और शैतान के सब बल फन्दों से बचे रहने के लिए आयें हम सब आयें और गोसनर कलीशा की माताओं के लिए निरंतर प्रार्थना करें और उन की सहायता के लिए आगे बढ़ा करें। ईश्वर हमारे साथ है हम कभी अकेले न होंगे।

—:o:—

सेवा में,

माननीय गृहमंत्री,

मध्य प्रदेश शासन, भोपाल।

विषय :—अन्तर्गत धारा २९५ (क) दण्ड प्रक्रिया संहिता "विमर्शित और विद्वेशपूर्ण कार्य जो किसी वर्ग के धर्म या धार्मिक विश्वासों का अपमान करके उसकी धार्मिक भावनाओं को आहत करने के आशय से किये गये हों — जो कोई भारत के नागरिकों के किसी वर्ग की धार्मिक भावनाओं को आहत करने के विमर्शित और विद्वेश पूर्ण आशय से उस वर्ग के धर्म के धर्म व धार्मिक विश्वासों का अपमान (उच्चारित या लिखित शब्दों द्वारा या संकेतों द्वारा, या दृश्य प्रमाणों द्वारा या अन्यथा करेगा या करने का प्रयत्न करेगा)।

महाशय,

उपयुक्त धारा के आधार पर गोस्सनर एवंजेलिकल लुथेरान चर्च जिसकी स्थापना दिनांक १-६-१८५० को हुआ है और अन्तर्गत Registration of Society Act. .... रजिस्टर्ड न० ....
उसका मुख्यालय केन्द्रिय सलाहकारी सभा जी० ई० एल० चर्च, रांची (बिहार) है। जी० ई० एल० चर्च का विधान संगठन एवं प्रशासन का आधार संविधान १९६० के अनुसार आज तक प्रभावित है।

१९६० का चर्च संविधान की प्रशासनिक इकाईयाँ पाँच भौगोलिक क्षेत्रों (१) उत्तरी पश्चिमी अंचल, जिसमें रांची, लोहरदगा तहसील, गुमला तहसील, मध्यप्रदेश, पश्चिम, बंगाल का चाय बगान क्षेत्र अर्थात् डुवर्स ( ) २) दक्षिणी-पूर्वी अंचल ३) आसाम अंचल ४) उड़ीसा अंचल एवं ५) मध्य अंचल।

Gossner Mission

उत्तरी-पश्चिमी अंचल के उरांव समाज के उरांव अगुवे चर्च का १९६० का संविधान अनुसार १६ वर्षों तक याने १९७७ तक जी०, ई०, एल० चर्च के अधीन रहकर प्रशासक बने रहे।

उक्त उत्तरी-पश्चिमी अंचल के अगुवे चर्च का संविधान १९६० का प्रशासनिक ईकाई उत्तरी-पश्चिमी अंचल को बिना सम्पूर्ण चर्च को स्वीकृति एवं मान्यता प्राप्त दिनांक १३-७-७७ को "नोर्थ वेस्टर्न जी० ई० एल० चर्च" के नाम से उक्त उत्तरी-पश्चिमी अंचल के जी० ई० एल० चर्च के सदस्यों को बिना सहमति से उनको गुमराह करके उनका ईसाई विश्वास एवं भावना के विरुद्ध अवैध रूप से किस तरह अमेरिकन लुथेरान चर्च से स्वर्थ पद एवं पैसा की लालच में डोलर हड़पने की चर्च पोलिटिक्स खेला जा रहा है। अमेरिकन डोलर को हड़पने के लिए उक्त कथित "नोर्थ वेस्टर्न जी० ई० एल० चर्च" के अगुओं ने अमेरिकन पादरी लोमपेरिस को बांधी में लेकर दे रखा है।

जी० ई० एल० चर्च विधिपूर्ण सरकार से रजिस्टर्ड होकर है जिसमें "उत्तरी-पश्चिमी" शब्द के साथ जी० ई० एल० का नाम जोड़कर आज लिखित रूप से उक्त धारा के विरुद्ध सन् १८५० को विधिपूर्ण स्थापित जी० ई० एल० की भावना को आघात पहुँचाया गया है। फलस्वरूप आज जशपुर थाना के अन्तर्गत, जशपुर नगर ग्राम गलोन्डा, डोपाटोली, रनपुर' विशनपुर एवं तहसील जशपुर के अन्य ग्राम सगीभावना, बटाईकेला, खैराघोघरा आदि जगहों में जी० ई० एल० चर्च का सर्वजातीय ईसाई एकता एवं विश्वास की भावना को आघात पहुँचाया जा रहा है। और साम्प्रदायिक झगड़ों, दुश्मनी, उरांव-मुण्डा आदि के नाम से फैलाई जा रही है। जिसके विरुद्ध शासन को कड़ी कारवाई करनी अति आवश्यक है कि अवैध रूप से घोषित स्वतंत्र "नोर्थ वेस्टर्न जी० ई० एल० चर्च" के अगुवे जिस तरह अखबार कागजों में प्रकाशित मुस्लिम राष्ट्रों में धर्म के आड़ में धन-ऐश की प्राप्ति से अमेरिकी सी० आई० ए० द्वारा दुखद साम्प्रदायिक दंगे फैलाए गए उसी तरह आज जशपुर के अन्दर भी अवैध रूप से घोषित "नोर्थ वेस्टर्न जी० ई० एल० चर्च" के अधिकारी भी उरांव समाज के बीच झगड़ा का बिष बो रहे हैं और विधिपूर्ण सन् १८५० के स्थापित जी० ई० एल० के ईसाई विश्वास, एकता, अखण्डता एवं धार्मिक भावनाओं में ठेस पहुचाते जा रहे हैं।

अवैध रूप से घोषित "नोर्थ वेस्टर्न जी० ई० एल० चर्च" ने अपना स्वतंत्र चर्च का संविधान भी निर्माण किया है। और विधिवत जी० ई० एल० चर्च का संविधान १९६० का प्रशासनिक क्षेत्र "नोर्थ वेस्टर्न अंचल" में जी० ई० एल० चर्च के धार्मिक भावनाओं के विरुद्ध अवैध रूप से घुसपैठ जारी है।

अवैध रूप से घोषित एवं कथित "नोर्थ वेस्टर्न जी० ई० एल० चर्च" ने विधिवत स्थापित जी० ई० एल० अंचल" के लोगों को गुमराह करके तथा छल पूर्वक माना अमेरिकन डोलर किस तरह पद एवं पैसा से प्राप्त किया जाय दिनांक ३-६-८० को डाक्टर निर्मल मिंज को उक्त कथित एवं अवैध रूप से घोषित क्षेत्र "नोर्थ-वेस्टर्न जी० ई० एल०" के लिए पद का स्थापन किया गया और धार्मिक एवं चर्च की परम्परा के अनुसार तमाम देश-विदेश में बिशप का संस्कार एवं अभिषेक (Consecration) के लिए कपटपूर्ण ( ) निमंत्रण भेजे गए और उक्त तिथि को ३-६-८० को डा० निर्मल मिंज का बिशपीय कोई संस्कार एवं अभिषेक नहीं हुआ। परन्तु कथित नोर्थ वेस्टर्न जी० ई० एल० के स्वार्थपूर्ण भावनाओं से डा० निर्मल मिंज को उसका बिशप घोषित किया गया।

डा० निर्मल मिंज को विधिवत स्थापित जी० ई० एल० चर्च ने ही ऊंची धार्मिक एवं लौकिक (Secular) शिक्षा के लिए अमेरिका भेजा था ताकि उसके द्वारा जी० ई० एल० चर्च को धार्मिक एवं लौकिक अच्छी अगुवाई एवं सेवा मिल सके। किन्तु खेद का विषय है कि डा० निर्मल मिंज अमेरिका से ऊंची शिक्षा हासिल करके जी० ई० एल० चर्च की एकता, अखण्डता (Integrity) एवं ईसाई विश्वास के साथ धार्मिक भावना को आघात पहुंचाते हुए उसकी अगुवाई में ही किस तरह अमेरिकन डोलर पैसा से मालामाल होकर ईमान के साथ भांति भ्रान्ति एवं ऐश-आराम हासिल करने की मनोकामना में जुटा हुआ है। फलस्वरूप अवैध बिशप

Gossner Mission

डा० निर्मल मिज धार्मिक परम्परा एवं संस्कार से बिना अभिषिक्त होकर मध्यप्रदेश का ग्राम इचकेला थाना जशपुरनगर, तहसील जशपुर, जिला रायगढ़ में दिनांक ६-एवं ७ ओक्टोबर १९८० को अपना प्रथम दौरा का कार्यक्रम रखा। और विधिवत स्थापित गोस्पनर एवंजेलिकल लुथेरन चर्च का ईसाई विश्वास एवं धार्मिक भावनाओं के विरुद्ध जातीय आधार पर अवैध रूप से घोषित "नोर्थ वेस्टर्न जी० ई० एल० चर्च" का विशप डा० निर्मल मिज के विरुद्ध कानूनी कार्यवाई करने की पूरी छानबीन की जाय और स्वार्थपूर्ण उनकी धार्मिक अगुवाई, मानो अमेरिकन डोलर किस तरह से हासिल किया जाय की प्रवृत्ति पर पूर्ण अंकुश लगाया जाय तथा मध्य प्रदेश के भोले-भोले विधिवत स्थापित जी० ई० एल० चर्च के आदिवासी सदस्यों के बीच ईसाई विश्वास एवं धार्मिक भावनाओं के साथ साम्प्रदायिक अप्रिय घटनाओं से वंचित रखा जा सके।

हम आप माननीय महोदय की शीघ्र कारगर जाँच एवं कार्रवाई के लिए अति ऋणी रहेंगे।

आप का विश्वस्त

१ पादरी (सो० पी० बड़ा) चेयरमेन,
जी० ई० एल० चर्च इचकेला इलाका।

२ श्री (एस० पी० टोपनो) सचिव,
जी० ई० एल० चर्च इचकेला इलाका।

३ श्री (शशि भूषण कुजूर) कोषाध्यक्ष,
जी० ई० एल० चर्च इचकेला इलाका।

प्रतिलिपि :—

१ माननीय गृहमंत्री, भारत सरकार, नई दिल्ली।

२ माननीय मुख्य मंत्री, म० प्र० शासन, भोपाल।

३ श्रीमान् एस० डी० ओ० (पुलिस) जशपुरनगर, जिला रायगढ़।

४ श्रीमान् थानेदार, थाना जशपुरनगर, जिला रायगढ़।

को सूचनार्थ एवं आवश्यक शीघ्र कार्रवाई हेतु प्रेषित।

(एस० पी० टोपनो सचिव)

—,०:—

Gossner Mission

PENTECOST 1981

Message from the Presidents of the World Council of Churches

"WE BELIEVE IN THE HOLY SPIRIT, THE LORD AND LIFE-GIVER"

(Nicene Creed)

Christians throughout the ages have affirmed their trust in the presence and power of God the Spirit at work in the Church and the world. This is never more evident than when we celebrate the coming of the Holy Spirit at Pentecost.

The Christian belief in the Holy Spirit is an integral part of the confession of faith that originated at the Second Ecumenical Council in Constantinople in A.D. 381, and became known as the Creed of Nicea-Constantinople.

This year we celebrate the 1600th anniversary of this great event in the life of the universal Church. Christians all over the world will respond joyfully to the call of the Ecumenical Patriarchate of Constatinople to give thanks for the ongoing power of the Holy Spirit.

We express our conviction that both the content of this ancient Creed and the fellowship of this ecumenical Council have a continuing significance of our own worship and witness.

Our worship today, through our confession of the Triune God, keeps us in the footsteps of the Church of the New Testament. We worship and glorify the Holy Spirit along with the Father and the Son. It is the Person of the Holy Spirit who renews life by enlightening our minds and inspiring our hearts. The Holy Spirit is thereby essential to the divine plan of salvation. The Lord Jesus promised Christians that they would be guided into all truth "when the Spirit of truth come" (John 16:13). Faithful witnesses were also assured, "you shall receive power when the Holy Spirit has come upon you" (Acts 1:8)

The Nicene Creed, as the most widely used of all the creeds, is a foundation for Christian unity and a standard for the ecumenical movement. The Creed's doctrine of the Trinity is the major Christian affirmation of faith. In the course of Christian history, however, there has arisen controversy about the right wording of one phrase in the Creed and this has led to disunity between Christians in the Eastern and Western traditions of the Church.

We thankfully acknowledge through the life-giving work of the Spirit, there are now growing theological convergences in our ecumenical efforts to reconcile Christian communions. We are hopeful that these convergences will enable us to confess the apostolic faith with one voice, thereby fulfilling our common calling to manifest the unity of Christ's Church more visibly.

The Second Ecumenical Church is not just a historical event; it also serves as a source of inspiration for Christians today.

Gossner Mission

Under the guidance of the Holy Spirit, this Council was able to reconcile ambiguities and conflicts, and witness to the truth of the Gospel while firmly rejecting error. The presence and witness of the Holy Spirit, in fulfilment of Christ's prayer, consecrated Christians into a conciliar fellowship : "Santify them in the truth; Thy word is truth" (John 17:17).

Building on this firm foundation, we express our own determination to grow into a full fellowship that is not just a Utopian dream. Our common witness already anticipates the fulier realization of our unity in Christ. The more Christians can grow together into such a fellowship, the more hope they will give to a dangerously divided world. At the same time, the Spirit empowers Christians to witness directly to the truth of the Gospel, in the world in struggles against poverty, injustice and oppression.

On this day of Pentecost, we call on the life-giving Holy Spirit to enable us to confess the apostolic faith more convincingly as a witnessing fellowship of the one, holy, catholic, and apostolic Church that lives in and for the world.

The Presidents of the World Council of Churches :

Hon. President : Rev. Dr. W. A. Visser't Hooft, Geneva, Switzerland.

His Holiness Ilia II, Catholicos and Patriarch of All Georgia, Georgian SSR.

The Honourable Mrs. Justice A. R. Jiagge, Accra, Ghana

Prof. Jose Miguez-Bonino, Buenos Aires, Argentina

Dr. T. B. Simatupang, Jakarta-Pusat, Indonesia

Archbishop Olof Sundby, Uppsala, Sweden

Dr. Cynthia Wedel, Alexandria, Va. USA.

APPENDIX : This is the original text of the Creed of Nicea-Constantinople (A. D. 381) :

"We believe in one God, the Father All Governing, creator of heaven and earth, of all things visible and invisible;

And in one Lord Jesus Christ, the only-begotten Son of God, begotten from the Father before all time, Light from Light, true God from true God, begotten not created, of the same essence as the Father, through Whom all things came into being, Who for us men and because of our salvation came down from heaven, and was incarnate by the Holy Spirit and the Virgin Mary and became human. He was crucified for us under Pontius Pilate, and suffered and was buried, and rose on the third day, according to the Scriptures, and ascended to heaven, and sits on the right hand of the Father, and will come again with glory to judge the living and the dead. His Kingdom shall have no end.

And in the Holy Spirit, the Lord and life-giver, Who proceeds from the Father, Who is worshipped and glorified together with the Father and Son. Who spoke through the prophets; and in one, holy, catholic, and apostolic Church. We confess one baptism for the remission of sins. We look forward to the resurrection of the dead and the life of the world to come. Amen."

(John H. Leith (ed), **Creeds of the Churches,** Doubleday, New York, 1963, P. 33).

Gossner Mission

Church and its Ministry today

(कलीसिया और आज कलीसिया की सेवा)

By Rev. M. Tete

कलीसिया—कलीसिया के विषय पूर्व वक्ताओं द्वारा इसकी परिभाषा भिन्न भिन्न रूप में दी गयी है। हम कलीसिया विषय का नहीं लेंगे परन्तु इसकी सेवा के विषय बात चीत करेंगे।

गोस्सनर कलीसिया के विषय जब हम ध्यान करेंगे तो तीन प्रकार के क्षेत्रों में विभक्त कर सकते हैं।

१ ग्रामीण कलीसियाँ – देहात की कलीसिया जहाँ अधिकतर कृषि का कार्य करते हैं।

२ शहरी कलीसिया – जैसे राँची।

३ कारखाना क्षेत्रीय कलीसिया—

सर्वप्रथम हम कारखाना क्षेत्रीय कलीसिया की समस्या के विषय बात चीत करेंगे।

(i) गिर्जा आराधना :—कारखाना में काम करने वाले भाई बहनों के लिये एक समस्या है। आज्ञा के द्वारा हम यह जानते हैं कि विश्रामवार को पवित्र रखने के लिये मत भूल (रविवार को)।

मान लिया कोई भाई को रविवार के दिन ही Shift duty पड़ गया तो वह गिरजा आराधना से वंचित हो गया उसके लिये क्या उपाय हो सकता है।

आप (पाद्री) House Visiting के द्वारा आप इनके पास बिन्ती प्रार्थना कर सकते हैं।

(ii) धर्म शिक्षा की समस्या :– बहुत जगहों में विश्वासी मंडली, यहोवा विटनेस, पेन्तीकोस्टल मंडली अपनी शिक्षा देकर उन्हें गुमराह में ले चलते हैं जो उनकी शिक्षा के द्वारा उन कलीसिया में चले गये हैं तो उनको लाने का उपाय क्या हो सकता है। एक तो शादी विवाह के समय उनके साथ बेटी-बहन देने या उनके घर से नहीं लाने का शोक करेंगे।

(iii) मिश्रित शादी की समस्या—

R C. Church या अन्य दूसरे कलीसिया के साथ शादी विवाह करने के सम्बन्ध में समस्या है।

(iv) खाने पीने की समस्या –शराब पीने की समस्या। जहाँ पैसा की अधिकता है पीने की समस्या अधिक पायी जाती है।

समस्याओं पर बात चीत :—

गिरजा आराधना की समस्या :– ४थी आज्ञा का समस्या

असाम से :— चाय बगान में काम करने वालों के बीच रविवार छोड़ कर किसी भी दिन में ही सुविधानुसार गिरजा आराधना किया जा रहा है।

जमशेदपुर – बूढ़े बुजुर्गों के लिये समस्या नहीं है परन्तु जवान गिरजा आराधना में उपस्थित बिलकुल नहीं होते हैं।

समाधान — Youth Service स्थापित करने (जैसे Debadih में) उनकी समस्या दूर की जा सकती है। या cottage prayer meeting के द्वारा भी।

बंगाल की समस्या —वहाँ न केवल रविवार परन्तु कई महीनों तक काम के कारण बाहर ही रहते हैं। जिसके कारण उनकी सेवा कैसे कर सकते हैं एक समाधान Touring Pastor (Mobil Pastor) द्वारा उनकी सेवा की जा सकती है।

जवान युवातियों की समस्या : का समाधान—

(ii) Youth Service (ii) Cottage Prayer Meeting (iii) उनको काम का अवसर दिया जाय।

सैद्धान्तिक समस्या—दूसरे कलीसिया (Penticost Baptist, Yahova witness) के प्रभाव में हम अपनी कलीसिया के भाई बहनों कैसे बचाए रख सकते हैं।

Gossner Mission

कलीसियाओं की फूट के कारण दूसरे कलीसियाओं को भी हमारे मंडली के भाई बहनों को अपने पक्ष में लेने में सहज अवसर मिल गया है। इस समस्या को हम कैसे समाधान कर सकते हैं।

२ शहरी मंडली की समस्या :—जिसमें पांच विशेष समस्या पर बात चीत करेंगे—

(i) जमीन जायदाद — जिसमें जमीन, गिरजा घर आदि है। जमीन जायदाद की रक्षा के लिये कभी-कभी हमें कोर्ट-कचहरी भी जाना पड़ता है और कचहरी में झूठ बोलने की भी नौबत आ जाती है !

दूसरे जमीन जायदाद की रखवाली करना या कोई Projects रखने बनाने के सम्बन्ध में हमारा न केवल सेवा का भार है परन्तु प्रशासन का भी अवश्यकता है।

(ii) परिवारिक समस्या :—शिक्षा प्रसार के साथ ही साथ हमारी कलीसिया के परिवारों के बीच पीने की समस्या भी आ गयी है। जैसे शादी ब्याह में पर्व त्योहारों में जिससे हमारा परिवार बिगड़ते जा रही है।

(iii) सामाजिक समस्या — दूसरे-दूसरे जगहों भाई-बहन नौकरी के लिये चले जाते हैं, उनको एक समाज में रहना उनकी देख भाल करना हमारे लिये एक समस्या हो जाती हैं। जिनका मर्दुमसुमारी (Census) करने में भी समस्या रह जाती है।

(iv) युवक युवतियों की समस्या—शहरों में जवान युवती शिक्षा दीक्षा में आगे बढ़ते जा रहे हैं। साधारणता जवानों से युवतियाँ शिक्षा में बढ़ रही हैं। उनके लिये बराबरी शिक्षा का वर मिलने में समस्या हो जाती यह तो है शादी की समस्या।

कम शिक्षा पाये हुए युवकों की समस्या—शहरों में अधिकतर युवक मैट्रिक पास भी नहीं कर सकते हैं वे गुण्डा गर्दी कामों के लिये प्रशिक्षण पाते है और पाकेट मार और गुण्डा गर्दी कामों में पड़ जाते हैं और यह भी कि वे ऐसे कामों के कारण जेल में हैं, उनकी सेवा, और उनको कैसे हम आराधना में शामिल कर सकते हैं।

(V) कलीसियाई एकता—बाइबिल सोसाइटी कलीसियाई एकता का एक विशेष संस्था है, वैसे राँची में एकता दिवस प्रार्थना का आयोजन कितने दिनों से किया जा रहा है। जिसके द्वारा एकता के लिये प्रार्थना की जा रही है। परन्तु बहुत ऐसे जगहों में जहाँ मिश्रित कलीसिया है कब्र स्थान को झगड़ा आदि है तो इन समस्याओं को हम कैसे सुलझा सकते है।

समस्याओं पर सुझाव

(i) युवक कम शिक्षित होते हैं और युवती अधिक तो शादी की समस्या होती है।

कोशिश किया जाय लड़कियों को कम ही पढ़ाने का तब शादी की समस्या दूर हो जाएगी।

(ii) जमीन समस्या — जहाँ बेकार जमीन है उनको Boundry wall (घेरा) बनाकर रक्षा कर सकते है (कब्जा में)

(iii) जहाँ अधिक जमीन है उन जमीनों को बेच कर पैसा बैंक में रखा जाय, उस पैसे के सूद से कलीसिया के काम में उपयोग किया जाय।

(iv) हरेक समस्याओं के लिये केन्द्र से विभिन्न Board बने हुए हैं उन Board के द्वारा समस्याओं को सुलझाने के लिये ही बनाया गया है, वहाँ समस्याओं को लाया जाय।

(v) जमीन की समस्या (Board of Property) द्वारा कोई उचित ध्यान नहीं दिया जा रहा है। इसी प्रकार Board of Education द्वारा भी स्कूल की समस्याओं पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जा रहा है Rev. Paulus Minz द्वारा विस्तृत समस्याओं को प्रदर्शित किया गया।

समाधान :— जमीन जायदाद की सुरक्षा उसी आय से ही समाधान हो सकती है। चूँकि यह तो आपसी फूट की बात है। कहावत है जिस घर में फूट पड़ जाती है वह घर उजड़ जाता है।

Gossner Mission

३ ग्रामीण कलीसिया की समस्या :—

अधिकतर हमारी गोस्सनर कलीसिया में ग्रामीण क्षेत्रों में मंडलियाँ स्थापित हैं। शहरी और देहात की मंडलियों में अनेक बातों में विभिन्नता है। शहरों में अधिक समय तक गिरजा आराधना में बैठना भी पसन्द नहीं करते हैं। इसका ठीक उलटा देहात की मंडलियों में है। लेकिन आज न केवल शहरी एवं औद्योगिक क्षेत्र में इस प्रकार की समस्या है परन्तु देहाती क्षेत्रों में भी यह समस्या आ गयी है। पीने की समस्या न केवल शहरी एवं औद्योगिक क्षेत्र के लिये समस्या है परन्तु यह देहाती क्षेत्रों के लिये भी समस्या आ गयी है। इन समस्याओं को हम निम्न समाधानों के द्वारा दूर कर सकते हैं।

House visit — पाद्री प्रचारक का काम न केवल गिरजा आराधना द्वारा मंडली सेवा करना है परन्तु House visit करके परिवार-परिवार से मिलकर उनके साथ व्यक्तिगत रूप से उनकी समस्याओं को दूर कर सकते हैं। कभी-कभी मंडलियों में Centralization रोक देते हैं तो आप पेरिस होकर उनको Sacrament रोक देते हैं यह न केवल एक पक्ष से गलती होती है परन्तु दोनों ही पक्ष से गलती हो सकती है। कभी-कभी हम सेवा देने में भी चूक जाते हैं तब ऐसी परिस्थिति दूसरी कलीसिया के लोग लाभ उठा लेते हैं मंडली दूसरी कलीसिया की ओर चले जाने की संभावना हो सकती है।

आज देहातों में भी Penticostal, Baptist कलीसिया के लोग पहुँच जाते और भाई बहन उनके पक्ष में चले जाते हैं जैसे खूंटीटोली में तीन बहनें उनके चगुल में आ गये हैं। तो ऐसे लोगों को हम कलीसिया से निकाल देते हैं तो ऐसी परिस्थिति में हमें क्या करना चाहिए क्या नहीं करना चाहिए हम भारी संकट में पड़ जाते हैं। कभी कभी दूसरे कलीसिया में चले गये भाई बहनों के मर जाने से कब्र स्थान में जगह के लिये भी झगड़ा हो जाती है इस संदर्भ में किस प्रकार वचन संक्रामेन्त की सेवा कर सकते हैं। साथ ही साथ उनकी मृत्यु के समय मिट्टी देने की समस्या हो जाती है तो ऐसी परिस्थिति में हम क्या कर सकते हैं।

सवाल—जवाब

प्रश्न १ :— एक ही गोत्र के बीच में शादी सम्पन्न हो सकता है अथवा नहीं ?

जवाब :— पाद्री शादी देने वाला Registrar है उसे गोत्र देखना नहीं है, परन्तु यह तो सामाजिक पड़हा की रोक है।

एक ही गोत्र के बीच शादी करने में मंडली और समाज के बीच बिगाड़ होने का डर रहता है।

अगर उनके बीच छुटा-छुट्टा होने की संभावना नहीं है और पड़हा पंचों की ओर से पहले रास्ता साफ हो ले तब पाद्री को शादी देने में कोई डर और समस्या नहीं हो सकती है।

प्रश्न २ :— ७वीं आज्ञा उलंघन के द्वारा से छोटी सजा में है और उनकी शादी कोर्ट से हो गयी उनको हम मंडली में ग्रहण करने शादी दुहरा सकते हैं या नहीं।

जवाब :— मंडली ग्रहण कर सकते हैं, परन्तु उनका शादी तो हो ही गया शादी देने की क्या आवश्यकता।

प्रश्न ३ :— जो बड़ी सजा में हैं वे फिर से ग्रहण किये जा सकते हैं या नहीं ?

जवाब :— जिनके लिये संभव है उन्हें किया जा सकता है परन्तु जो दो स्त्री एक पुरुष के हैं तो ग्रहण करना संभव नहीं है।

प्रश्न ४ :— एक ही माँ-बाप के बेटा-बेटी असम में एक साथ हैं बच्चे भी हैं उनको शादी दे सकते हैं या नहीं।

उत्तर :— लाइसन्स के आधार पर शादी देने में कोई रोक नहीं, परन्तु समाज बिगड़ने की संभवना है अतः परिस्थिति देख कर शुरू किया जाय।

प्रश्न ५ :— कितने पाद्रीगण हम अपने सेवकाई क्षेत्र से बाहर भी उस क्षेत्र की पाद्री के बिना सलाह सेवा करते हैं। यह करना ठीक नहीं है।

प्रश्न ६ :— पाद्री हमलोग कभी-कभी दूसरे जगहों में गिरजा करने को बिना थलर के करना पड़ जाता है, गिरजा कर सकते हैं या नहीं।

उत्तर :— गिरजा भी कर सकते हैं प्रभुभोज सक्रामेन्त की सेवा कर सकता है चूँकि आप पाद्री हैं।

Gossner Mission

Church's Involvement in Social Action

by Rev. Dr. M. Bage

कलीसिया का सामाजिक कार्य :— कलीसिया (Ecclesia) अकेला का बोध नहीं करता, एक समूह का बोध करता है। कलीo विश्वासियों का समूह है जिसके बीच परमेश्वर का निर्मल वचन सुनाया जाता है और और इनके बीच सक्रामेन्त दिया जाता है।

इस कलीसिया के अर्न्तगत जो कि मसीही कलीसिया का एक कार्य क्षेत्र है उस क्षेत्र पर हम अध्ययन करेंगे— "सामाजिक कार्य क्षेत्र" पर।

समाज (लोगों का समूह) :— मनुष्य सामाजिक प्राणी है। मनुष्य का जन्म, पालन पोषण, जीवन निर्वाह, विकास, मरण समाज के बीच ही होता है. चाहे ख्रिस्त विश्वासी हो या गैर ख्रिस्त विश्वासी हो। सभी का सुख दुःख समाज के अर्न्तगत ही होती है।

कलीसिया का सम्बन्ध भी समाज के साथ है हम सामाजिक कार्य — Mother Teresa, CASA, L.W.S, विकास मैत्री के कार्य आदि से परिचित हैं।

Social Action :— मनुष्यों का समाज भिन्न २ काल में देश में इसकी सामाजिक, नैतिक, आर्थिक, राजनैतिक स्थिति भिन्न २ होता है। वह हमारे रीति दस्तुरों पर भी होता है। मसीही विश्वास का चाल है भी हम इन सामाजिक, नैतिक, आर्थिक, राजनैतिक स्थिति को उसी प्रकार से देखते हैं। तब हमारे लिये प्रश्न आ जाता है इस परिस्थिति में हम कैसे करें। जैसे हमारे बीच में भाईयों का खेत-बारी एवं बहनों का घर दरवाजा के कामों का बंटवारा सा देखते हैं।

स्त्रियों का हमारे समाज के बीच हल चलाना सक्त मना है। इस सामाजिक रीत-दस्तुर का परिस्थिति को बदलने और कार्य करवा चाहते है यही है, "Social Action"

I "God the creater made man for society" (ईश्वर मनुष्य की सृष्टि समाज के लिए की है। William Words worth—का कथन—आधुनिक युग में अन्य धर्मों से प्रभावित मसीही धर्म अन्तगत मुक्ति धर्म कलीसियाई समूह से अलग है। परमेश्वर ने आदम की सृष्टि की। उत्पति २:१८ परन्तु उसको अकेला रहना अच्छा नहीं यह परमेश्वर की पूर्व योजना है। वह हवा को उसके लिए बनाया। यह न केवल पति-पत्नी के लिए है परन्तु यहाँ सामाजिक, रिस्तेदारी को भी बोध करता है। मनुष्य को अकेले रहना ठीक नहीं है, दूसरे लोगों की भी आवश्यकता है। हमारे बीच अनेक गोष्ठीयाँ हैं, कलीसियाई गोष्ठी, सामाजिक गोष्ठी, राष्ट्रीय गोष्ठी, क्योंकि परमेश्वर ने हमारी सृष्टि ही उसी प्रकार की है।

II Bible is much concerned in the man in social— "William" अब्राहम को जब परमेश्वर बुलाता है, तेरे द्वारा सब लोग आशिषित होंगे, इस्त्रायलियों को बुलाहट एक अकेले को बुलाहट नहीं है समूह को बुलाता है। पतरस प्रेरित को पत्रो में भी हम यह पाते हैं कि हम एक याजकीय समाज चुनी हुई जाति को बोध करता है।

III God holds man for other man :— हम दूसरों के लिए उत्तरदायी होते हैं। परमेश्वर हमारे लिए अपने उत्तरदायी को प्रगट करता है। आदम को ढूढ़ता है "तू कहां है"। कैन से पूछता तेरा भाई कहाँ है, कैन के लिए भी उत्तरदायी है कि तेरा भाई हाबिल है। याकूब के १२ पुत्रों के लिए भी यही उत्तरदायी को पाते हैं

उड़ाव पुत्र के वर्णन में भी इस उत्तरदायी को दर्शाता है। यही उत्तरदायी हमारे बीच मसीह को भेज कर प्रगट करता है। यु० २०:२१ में हमारे लिए भी उत्तरदायी देता है, वह हमें भेजता है। कहाँ हम भेजे जाते हैं. वहाँ भी हमारे लिए काम है। हम भी दूसरों के लिए उत्तरदायी हैं। मसीह ने खुद हमारे लिए अपने उत्तरदायी को पेश किया है (मत्ती ९:३६-३८) प्रभु को तरस आयी। वे वे रखवाला भेड़ की नाई हैं

Gossner Mission

उन्हें देखकर तरस खाता है। बाद में फिर आगे कहता है खेत तो तैयार है, बनिहारों की आवश्यकता है।

यीशु अपने पकड़ा जाने के पूर्व अपने चेलों के पैर धोता है, और कहता है ऐसा ही तुम भी करो। वह यहां खुद ही नमूना देता है।

वैसा ही हम भी बुलाये और भेजे गये हैं, दोनों ही काम एक दूसरे से हमारे लिए घनिष्ठ है।

परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजकर उसने अपना उत्तर-दायी को यीशु में भेजवा है, और आज प्रभु ने हमें भी वही उत्तरदायी को सौंपा है, दिया है।

अब हमारे लिए भी वही आधार है कि जो Social Action है, निर-केवल परमेश्वर का प्यार है। उसी प्यार के द्वारा हमें बुलाता है और प्यार से वही उत्तर-दायी को देता है जो हरएक क्रिस्त विश्वासी के लिए है। परमेश्वर का प्रेम पापी के लिए और पापी जगत के लिए है। मसीही Social Action का आधार और अन्य संस्थाओं के आधार में भिन्नता होना।

सुद्धी लेना :—कलीसिया के प्रारंभिक काल प्रेरितों के काल में एक दूसरे की सहायता करना उनका एक लक्ष्य था प्रे० कि० ४ अध्याय में लंगड़े के साथ पतरस, युहन्ना का सेवा कार्य। उसी प्रकार प्रेरित क्रि० ६ अध्याय में आर्थिक स्थिति में भी दूसरों की सहायता का चर्चा हम पाते हैं। हमें इस ओर भी ध्यान देना है, कि दूसरों की सहयता करना परन्तु व्यवहारिक रीति से कैसे हम गरीब विधवा, अंधे लंगड़ों की हम सहायता करें।

प्रेरितों के काल में जो कुछ भी उनके पास था सब साझे की थी, भाई-बहनें रुपया, पैसा धन जो कुछ भी लाते थे प्रेरितों के चरण तले अर्पण करते थे। और जमा करने के लिए उनके पास जो कुछ भी रूप रेखा था वह उनके सामुहिक जीवन में हम पाते हैं। बाद में धीरे-धीरे हमारे कलीसिया का विकास होते हुए कलीसिया के अन्दर अनेक उत्थल-पुत्थल होते आयी, कभी उतार्हट उनके बीच आयी कभी सुख का दिन भी रहा। और यह मतसंशोधन के काल तक यह रूप देखने को मिलता है। यह स्थिति न केवल उसी समय की स्थिति का इतिहास नहीं है परन्तु आज भी हमारे कलीसियाई जीवन में यही परिस्थिति, उत्थल-पुत्थल होते आ रही है। इस प्रकार की परिस्थितियों में आरंभिक काल से ही अनेक योजनाएं प्रयास होते आयी जैसे मठवासी संस्था या अन्य दूसरे प्रकोष से कार्य-कर्मों को अपनाया। यह उनके बीच में Social Action लिया गया। इसी प्रकार कलीसिया शुद्ध करने के लिए शिक्षा के द्वारा भी कलीसिया के बीच लायी गयी।

पश्चिमी देश के इतिहास में हम लोग पाते हैं :— फ्रांसिसी विद्रोह आदि जिसमें साधारण भाई-बहनों ने विद्रोह खड़ा किया, जिस विद्रोह सभी वर्ग के लोगों को पकड़ लिया।

Napoleon अगुवा निकला और एकतंत्रवाद से उसने अपना शासन कार्य आरंभ किया और जर्मनी आदि देशों को जीत लिया।

१८४६-४७ की बात है कि मध्य देशों में अनेक योद्धा मर गये। बहुत से घर में विधवा हो गये बच्चे निसहाय हो गये। भयंकर परिस्थिति आ गयी तब Communist-party पार्टी संगठित किया गया। बच्चों एवं जवानों की स्थिति बिलकूल बेकार सोचनीय परिस्थिति हो गयी। तब पुरोहितों ने सोचा कि हम कहाँ किस ओर जा रहे है। तब अनेक समाधान के उपाय एवं प्रयास किया गया। १८४८ में कलीसिया का महा सभा बुलायी गयी जिसमें पाद्रो Wicharn बड़ा भाषण दिया और लोगों जमा करने का प्रयास किया गया। पुनः जवानों की समस्या को Wicharn ने देखा कि उनकी स्थिति बड़ा गड़बड़ है वे दंगा-फसाद कामों से बदलें। एक पाद्रो पुनः उनके बीच बन्दीगृह में जाकर सुसमाचार सुना कर उनके बीच में उन्हें जमा करने एवं उठाने का प्रयास किया। इसी प्रकार की स्थिति के कारण जर्मनी में Inner-mission खोला गया, एवं Co-ordination का संगठन किया गया। जिसके लिए उन्होंने कलीसिया से Affiliation मांगा और धीरे-धीरे Affiliation दिया गया कि उनके कलीसिया के कामों में मदद देवे। और कलीसिया के कामों में यह संस्था बड़ा सहयोगी रहा।

Gossner Mission

इसी समय में और एक काम का भी प्रयास किया गया। Worker तैयार करने के लिए विभिन्न कामों के लिए प्रशिक्षण दिया जाने शुरू किया उसमें Training period में बड़ा कटु (कठोर) प्रणाली थी अतः इस कठोरता के विरुद्ध पादियों ने आवाज निकाले कि मालिक इस प्रकार का कठोर व्यवहार न करें, कानुन निकाला जावे। Trade union में काम करने वालों के लिए गिरजा आने में भी असम्भव थी चूंकि वे गिरजा आने के लिए उनके पास साफ सुथरा कपड़ा बिना पहने आना यह मुश्किल है। कितनों का विचार था साफ कपड़ा पहने बिना कैसे गिरजा जाए। इस समस्या को दूर करने के लिए उनके पास जाकर गिरजा करने का प्रयास किया गया, उनके लिए चिन्ता किया गया। आज दुर्गापुर में भी इसी प्रकार की परिस्थिति है। जैसे आज-कल बनारस में एक पुराऊ Trade union बनाने का प्रयास एक वकील द्वारा अगुवाई किया जा रहा है कि समाज की इस स्थिति में सुधार लाया जाय। इसी प्रकार कलीसिया के द्वारा हमारा ऐसा ही प्रयास होना चाहिए। C. R. L. S. के द्वारा या अन्य दूसरी संस्थाओं को चाहे अन्य दूसरे Method को अपना कर कलीसिया के अर्न्त-गत जागृत संस्थाओं के द्वारा एक Social Action किया जा सकता है। जो कलीसिया के लिए Church-Action किया जा सकता है।

—:०:—

सन्डे स्कूल क्या है ?

"खोवकर लिटा भार्इ"

मुशाफिर

राबर्ट रेक्स संडे स्कूल आन्दोलन के पिता माने जाते हैं। वे इंग्लैण्ड के ग्लोस्टर नामक नगर में एक साप्ताहिक पत्र के प्रकाशक थे। सन् १७८० में जब उन्होंने प्रत्येक रविवार को बहुत अधिक संख्या में निर्धन और उपेक्षित बच्चों को नगर की सड़कों पर बिना ध्येय घूमते देखा तो इस दृश्य से उनकी आत्मा को गहरी चोट पहुंची। उन दिनों में गरीब बच्चे सप्ताह भर कारखानों में थोड़ी सी मजदूरी के लिए काम किया करते थे और रविवार उनके अवकाश "REST" का दिन हुआ करता था। राबर्ट रेक्स बच्चों के प्रेमी थे और इसके अलावे वह एक समाज-सुधारक तथा परोपकारी भी थे। जब उन्होंने बच्चों के उपद्रवों और हुल्लड़बाजी के विषय में सुना तो उन्होंने इन बच्चों के लिए एक कमरा किराये पर लेकर अपने ही खर्च से इन्हें शिक्षित करना शुरु किया। यह स्कूल रविवार ही को चलाया जाता था क्योंकि अन्य दिनों में तो बच्चों को काम करना पड़ता था। इसलिये इस स्कूल का नाम अंग्रेजी में Sunday School पड़ा जिसका हिन्दी अनुवाद रविवारीय पाठशाला है। ये स्कूल सही अर्थ में धर्म सम्बन्धी नहीं थे। उनका विचार था कि बच्चों को पढ़ने-लिखने या हिज्जे करने और अंक गणित की मुख्य-मुख्य आवश्यक बातों का ज्ञान दिया जा सके। राबर्ट रेक्स अपने ही जेब से चार अध्यापकों को वेतन दिया करते थे जो कि बच्चों को पढ़ना, लिखना, आचरण और धर्म की शिक्षा प्रदान किया करते थे। हर रविवार को पहली बेला १० बजे से १२ बजे तक और दूसरी बेला २ बजे से ५ बजे तक चलती थी। सन् १८११ तक समूचे इंग्लैण्ड में यह स्कूल विशालरुप में हर कहीं भी स्थापित हो चुके थे। इस कार्य को आगे बढ़ाने में दो सज्जनों ने अधिक योगदान दिया। वे विलियम फाक्स और जान वेसली थे। फाक्स साहिब एक सम्पन्न सौदागर थे। उनकी प्रबल इच्छा थी कि "हरएक जन बेबल पढ़ सकें। आस-पास के ओशिले मसीहीयों को जमा करके ७ सितम्बर १७८५ में सन्डे स्कूल संस्था निर्माण किया। इस संस्था का ध्येय संडे स्कूलों का संगठन करना और उन्हें सहायता प्रदान करना था। यह संस्था स्कूलों के लिये बेबल, तथा नियम जैसे धार्मिक पुस्तकों का प्रबन्ध किया करती

Gossner Mission

और अध्यापकों को वेतन भी दिया करती थी। जॉन वेसली ने अच्छी तरह सन्डे स्कूल के कार्यों की सम्भावनाओं को समझ लिया था इसलिये अपने अनुयायियों को प्रेरित किया, वे बच्चों तक पहुँचे और उन्हें मसीह के लिये बचा लें। उसका महान् योगदान यह था कि उसने संडे स्कूल के कार्य को वेतन के आधार से बदल कर स्वेच्छानुसार स्वंय सेवक आधार पर कर दिया। संडे स्कूल का उद्देश्य प्रत्येक छात्र को परमेश्वर की संगति में लाना है। हर वर्ष "विश्व सन्डे स्कूल दिवस अक्सर नवम्बर माह के पहले एतवार को मनाया जाता है जो सन्डे स्कूल अपने वर्ष भर की आमदनी खर्च का योजना बना लेते हैं उन्हें इससे बहुत सहायता मिलती है। हमारी आशा है कि यदि "हर कहीं Sunday School" सुचारु रुप से सब मण्डलियों में चलने लगे तो आप ही आप युवक संघ, माता समाज और कलोसिया मसीही जीवन में दृढ़ ठहरेगी। जो परमेश्वर को पवित्र इच्छा है जिससे सब सबल-सुखी और अमन चैन में स्वर्ग राज्य के वारिशदार हो सकेंगे।

माता पिता परमेश्वर का स्थान लिये हुए होते हैं इस लिए चाहिये कुछेक बातों को ध्यान में रखें कि अपने बालकों का जीवन हमें बैबल की शिक्षा के अनुसार है क्योंकि बालक ईश्वर की ओर से हमें दान स्वरुप दिये गये हैं। हे बच्चे वालो अपने बच्चों को खिस न दिलाओ परन्तु प्रभु की शिक्षा चितावनी देते हुए उनका पालन पोषण करो (इफिसी ६:४), अपने बालक को ऐसा शिक्षा दो कि वह बुढ़ापे तक उसी में बना रहे। नी० ब० २२:६ बच्चे के ऊपर आत्मिक प्रभाव डालना अति आवश्यक है। मेरी इच्छा यह हो कि मेरे पुत्र पुत्री मेरी समानता में बने, मेरे गुणों को लें तो उसके लिये मुझे स्वंय को आत्मिक बनना होगा और अपना स्वभाव परमेश्वरीय रखना होगा तभी बच्चे को सही मसीही जीवन में ढाल सकूंगा जो मेरा फर्ज है।

—:०:—

"सबसे बड़ी आज्ञा"

मूल वचन मत्ती २२:३७-४०,

"सोवकर किटाभाई "मुसाफिर"

हम पूरे समय कर्मचारी तो नहीं, पर ईसाई तो जरुर हैं इसलिए परमेश्वर के सन्तान की मर्दुम सुमारी हिसाब में लाये गये हैं क्योंकि बपतिस्मा द्वारा परमेश्वर के प्यारे पुत्र या पुत्रियां हैं। पुराने नियम में पाते हैं कि मूसा ने कई बरसों तक मुंह जबानी से ही इस्राएलियों को हर मुसीबतों से रक्षा रखवाली करते हुए, सम्भालते हुए बरबाही का काम निभाया। इस्राएलियों को लिखित रुप में, जब कि वे पथ भ्रष्टी, हठ्ठी, घमंडी, अत्याचारी आदि पापों के वाहियों का दस आज्ञा दिया गया। यही आज्ञा उनके समय के लिए एक कड़ा अनुशासन का पक्का नियम था। आज्ञाउलंघन करने वालों को मौत की सजा मिलती थी क्योंकि पाप की मजदूरी मृत्यु है। मनुष्यों की स्वाभाविक आदत है पाप करना, क्योंकि हम सब पापी हैं। रोमी ३:२३।

परमेश्वर ने हम मानव जाति को एक ही कीमत से अर्थात् अपने निष्कलंक खून से यीशु ख्रिस्त के माध्यम से मोल लिया है। उसके आगे जात-पात का मुंह देखा न्याय नहीं है क्योंकि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता। सबका सच्चा न्यायी है।

अभी इन दिनों हर कहीं मसीही लोग प्रभु यीशु मसीह के दुःख भोग के बारे में दिन रात चर्चा करते हैं। सबसे मुख्य बात तो यह है कि हम मानव जाति के प्रति उसका कितना प्यार है— बताता है। प्रभु यीशु के माध्यम से हम आध्यात्मिक जीवन कैसे प्राप्त कर सकते हैं यह हमें बैबल बताती है। इसमें सामाजिक और पारिवारिक बातों से सम्बन्धित एक व्यावहारिक शिक्षा है। हम सम्पूर्ण बैबल को, उसके एक-एक अध्याय को अथवा हरएक

Gossner Mission

पद को और यहाँ तक कि प्रत्येक शब्द को भी पढ़ने और गहराई से अध्ययन के क्रम मान सकते हैं। स्वर्गीय शिक्षक अपने अनुयायीयों और समाज संचालकों से क्रिस्तानी जीवन को कायम रखने के लिये कहा था "मुझसे सीखो"। वह खरा शिक्षक था क्योंकि सच्चाई को बिन्दु मात्र भी छोड़ता नहीं था। इसी कारण दुनियावी मान-मर्यादा चाहने वाले यहूदियों, रोमी अफसरों और धर्म गुरुओं को तथा घमंड से भरे हुओं को आत्मिक और मानसिक गहरा चोट और धक्का लगा। उससे मत डरो जो शरीर और प्राण-आत्मा को नरक में नाश कर सकता है। मनुष्यों की आज्ञा से बढ़ कर हम परमेश्वर की आज्ञाओं को मानें। यीशु ने कहा मैं जगत की ज्योति हूँ। जो मेरे पीछे आता है, बुरा-भला को पहिचानते हुए अंधकार के कामों को त्याग कर ज्योति में चलेगा और मसीही जीवन को बनाये रखेगा, (यू० १२:६)

परमेश्वर प्रेम है। मनुष्यों के हृदय की कुंजी है प्रेम है। पौलुस प्रेरित हमें चिताता है कि, यदि मुझमें "प्रेम" नहीं तो मैं झनझनाता झाँझ और ठनठनाता पीतल, यहां तक की खाली टीन को जो आवाज पीटने से होती है, वही एक ऊंचा आवाज भर हूँ। गोस्सनर एवजेलिकल लुथेरान कलीसिया के प्रमुख अध्यक्ष द्वारा जो चरवाही पत्र दिनांक ५-३-१९८१ में चारों ओर सही ढंग से रहने के लिए हम सभों को दिया गया है, उस पर हम गौर करें और स्थिर रहें क्योंकि शुरू से ही यह मसीही धर्म में सताहट होती आयी है, फिर भी हमारे पुरखे कलीसिया की हिफाजत में अपना तन-मन धन और जान तक निछावर कर दिए। देखिए इब्रानी ग्यारह अध्याय को पढ़ कर मनन करें। हम केवल मसीह में धमड करें। सच्चाई को धरे रहें।

ईश्वर के साथ ठीक होने के लिए दुनियां में हमें एक दूसरे के साथ ठीक होना आवश्यक है। यीशु ने कहा—वेदी पर भेंट चढ़ाने के पहिले जा, अपने भाई से मेल-मिलाप कर ले तब आकर बलिदान चढ़ाने से परमेश्वर को ग्रहण योग्य होगा। मनुष्य की सृष्टि परमेश्वर के समानता में थी। पवित्र संगति में समेट कर तथा उद्धार के काम को पूरा करके हमें यीशु ने—एक नई आज्ञा दिया। मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ कि एक दूसरे से प्रेम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो (यू० १३:३४, ३५,)। तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपने सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा यही है। और उसी के समान दूसरी भी है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। ये ही दो आज्ञाएं सारी व्यवस्था और नबियों का आधार है। उत्पति की पुस्तक से लेकर प्रकाशित वाक्य तक ६६ पुस्तकों के निचोड़ में यही "ठोस वचन" प्रत्येक क्रिस्तान के लिए उपयोगी है जिसका अन्त अनन्त जीवन है आईए हम मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा मानें।

—:०:—

Gossner Mission

(शेष पेज दो का)

सिंचाई— तलाव, बांध, कुंआ, के द्वारा Pump Set के द्वारा, एवं खाद (कम्पोस्ट) के द्वारा काम हो। फिर इसके अलावा Agriculture द्वारा —Animal Husbandry का काम भी किया गया—गाय, बकरी, सुअर, मुर्गीपालन एवं मच्छली पालन का काम भी किया जा रहा है।

सामाजिक सेवा–शिक्षा, बाइबी ज्ञान, Cultural Centre आदि का कार्य किया जा रहा था। जिसमें भवन आदि का निर्माण किया गया।

परन्तु अचानक सरकार से रोक पड़ने के कारण L. W. S. को काम छोड़ना पड़ा परन्तु काम रोका नहीं गया परन्तु G. E L. Church के अधीन रहकर काम को आगे करना है। और L. W. S. का नाम मिटा दिया गया। उसके बदले G. E. L. Church Assistance नाम दिया जा रहा है। जिसके अधीनस्त ही विगत दिनों थे कार्य होते आ रहीं है, किया जायगा एवं उन्हीं Staff को भी रखा जायगा।

सवाल—जवाब

(i) क्या कारण है L.W.S. के कार्य को सरकार रोक दी :—

जवाब :—सरकार नाजुक क्षेत्र में काम करने के लिए डरती है यही एक कारण हो सकता है चूँकि ऐसे क्षेत्र के लिये सरकार Block द्वारा ऐसे Deveplopment के कामों को करने का पैसा दिया गया है इसी बात को लेकर सरकार के लिये दूसरे जरीये से काम कराना उनके लिये लज्जा की बात हो सकती है।

(ii) क्या मध्य प्रदेश के लिये यह कार्य हो सकता या नहीं।

जवाब :—चूंकि छोटोनागपुर Rural Community का प्रधान क्षेत्र है इसलिये छोटानागपुर का ही प्रथम स्थान (निशान) रखा गया।

(iii) हंड़िया दारु बेचने। पीते हुए कैसे हम ऐसे विकास की ओर बढ़ सकते हैं।

जवाब :—हंड़िया के बदले दूसरा चीज बनाकर उन्हें दें।

—:o:—

गोस्सनर एवंजेलिकल लुथेरान कलीसिया

पी० डी० चोरंग

राँची

कलीसिया के सभी भाई बहन,

जी० ई० एल० चर्च,

दिनांक ५-३-८१

गोस्सनर कलीसिया के सभी भाई बहनों को मेरी ओर से यीशु सहाय। आप सभों को हमारे पिता परमेश्वर और उद्धारकर्त्ता यीशु खिस्त की ओर से अनुग्रह और शांति मिलती रहे।

उन भाई बहनों को जो अपने को कथित उत्तरी पछमी गोस्सनर कलीसिया के अंग समझते हैं, मुझे बड़ी इच्छा हुई कि कलीसिया के सम्बन्ध में कुछ सच्ची बात को बता दूं जो वर्त्तमान में हो रही है।

प्यारे भाईयों और बहनों, आप जो अपने को कथित उत्तरी पछमी गोस्सनर कलीसिया के अंग समझते हैं, मैं अभी भी पूर्ण विश्वास करता हूँ कि आप लोगों के मन में गोस्सनर कलीसिया के प्रति प्रेम और भक्ति है, परन्तु आप के कुछ अगुवे आप लोगों को गोस्सनर कलीसिया से निकाल कर एक अलग लुथेरान कलीसिया खड़ा करने की कोशिश कर रहे हैं। इस सम्बन्ध में निम्न बातों पर गम्भीर रीति से गौर करें और अपना फैसला करें।

१ गोस्सनर कलीसिया से अलग और एक लुथेरान कलीसिया खड़ा करना उचित नहीं :—

गोस्सनर कलीसिया का विभाजन अनेकानेक कारणों से उचित नहीं है। विभाजन से आत्मिक, नैतिक, आर्थिक और सामाजिक कमजोरी कलीसिया में होगी। और भी अनेक कठिनाईयां और बुराईयां कलीसिया में आएंगी जिन्हें अभी सब कोई नहीं देख सकेंगे। इन्हीं बातों को देखकर और जान कर हिन्दुस्तान की लुथेरान कलीसिया, गोस्सनर कलीसिया के विभाजन के पक्ष में नहीं हैं। जर्मनी में गोस्सनर मिशन भी विभाजन के पक्ष में नहीं है और इसी

Gossner Mission

रजिस्टर्ड न० आर० एन० सी० ४

वार्षिक मूल्य १० रु०

एक प्रति ,, १ रु०

लिये हिन्दुस्तान के लूथेरान कलीसियाओं की सभा (यू० ई० एलc सी० आई८) के अधिकारियों को अर्जी किया कि एक पीस कमिटि (शाँति सभा) बुलावे, जिसका पूरा खर्च देने का भार अपने ऊपर लिया।

इस योजना के अनुसार २-४ मार्च ८१ को जर्मनी से मिशन डाईरेक्टर पादरी क्रिबेल और चेयरमेन डाक्टर ग्रोटहाउस, दक्खिन भारत के तीन तथा उत्तरी भारत से बिशप टुडू, कुल छः महान अनुभवी लोग आये, परन्तु आप के अगुवों ने जर्मन से आये हुए दो सदस्यों का भारी अपमान किया। ये दो वे ही अधिकारी हैं जो गोस्सनर कलीसिया की हर तरह से सहायता करते हैं। आप के अधिकारियों ने इन से किसी प्रकार की सहायता लेना इनकार कर दिया, और अपने बीच में आना मना कर दिया। उनको इतना भी कह दिया गया कि वे जल्द हिन्दुस्तान से चले जाएं। हिन्दुस्तान के चार सदस्यों ने भी अपमान अनुभव किया क्योंकि आप के अधिकारियों ने इन से असहयोग किया और बैठकों में नहीं आये।

२ गोस्सनर कलीसिया का बटवारा असम्भव :—

देश विदेश से आये हुए महान अनुभवी लोग जानते थे कि गोस्सनर कलीसिया का बटवारा करना उनकी शक्ति से बाहर की बात थी। इस कारण से उन्होंने बटवारा की बात ही नहीं की। आप के अगुवे भी इस बात को जानते हैं कि दुनियाँ की कोई सभा गोस्सनर कलीसिया का बटवारा नहीं कर सकती है। परन्तु झूठा प्रचार कर आप लोगों को बताया गया था कि मार्च के १-४ तारिख को बटवारा हो जायगा। ऐसा झूठा प्रचार क्यों ? केवल आप को ठग के अपने साथ रक्खा के रखने के लिये। कृपा कर आप गम्भीरता से सोचिये। आप निश्चय जानिये कि देश विदेश से आये हुए सज्जन गोस्सनर कलीसिया का बटवारा करने नहीं, पर शाँति का मार्ग ढूंढ़ने और शाँति स्थापित करने आये थे, जिसको आप के अगुवों ने अपमान किया। वे निराश होकर लौट गये।

३ कथित उत्तरी पच्छमी गोस्सनर कलीसिया का मान्यता प्राप्त करना असम्भव :—

अफशोस की बात है कि आप के अगुवे आप की ऐसी अगुवाई कर रहे हैं कि जिस नई कलीसिया का आप दर्शन देख रहे है उसे कभी साक्षात नहीं देख सकेंगे। मैं जानता हूँ कि आप के मन में गोस्सनर कलीसिया के प्रति प्रेम और भक्ति है और आप गोस्सनर कलीसिया को छोड़ना नहीं चाहते हैं, परन्तु आप के कुछ अगुवे आप को साथ लेकर गोस्सनर कलीसिया से अलग होना चाहते हैं। ऐसी बात जानकर कथित उत्तरी पच्छमी गोस्सनर कलीसिया से १२ पादरी और २५ हजार भाई बहिन निकल चुके हैं जो उत्तरी पच्छमी अंचल जी० ई० एल० चर्च में संगठित हैं। ऐसी परिस्थिति को देख कर कथित उत्तरी पच्छमी गोस्सनर कलीसिया की मान्यता कौन देगा ?

गोस्सनर कलीसिया से अलग होकर, नई कलीसिया बनाने में आप के अगुवों ने बुनियादी भूल की है। जब अलग होना ही चाहते हैं तो चुपचाप से अलग हो जाएं, उनको कौन रोक सकता है ? जैसे एंगलिकन (एस० पी० जी०) कलीसिया। पर आप अगुवे तो डेग डेग में गोस्सनर कलीसिया से दुश्मनी मोल ले रहे हैं। वे जानते हैं कि गोस्सनर कलीसिया के चल अचल सम्पति पर अपना अधिकार खो बैठा है, पर अब लुट पाट करने लगे हैं। ऐसी कलीसिया की मान्यता कौन देगा।

यू० ई० एल० सी० आई० और गोस्सनर मिशन, मान्यता देने में पहला हो सकते थे पर आप के अगुवों ने उनका खुला अपमान किया। ऐसी कलीसिया की मान्यता कौन देगा।

अतः मैं आप सभी भाई बहनों से निवेदन करता हूँ कि आप तुरन्त अपनी माता कलीसिया में चलं आवें। गोस्सनर कलीसिया द्वारा आप ने आत्मिक और लौकिक आशीष बहुत पायी है। गोस्सनर कलीसिया आगे भी आप की उचित रखवाही करेगी।

अब मैं पाद्री भाईयों से विशेष रूप से कहना चाहता हूँ। आप ईश्वर के बुलाये और अभिषिक्त जन हैं कि भेड़ों को हरी हरी चराई में चरावें। जरा सोचें तो कि आप भेड़ों को रखवाही किस प्रकार कर रहे हैं ? आप अपने भेड़ों को किस जंगल में ले जा रहे हैं ? जो आप कर रहे हैं उसके द्वारा आप भेड़ों को घबराहट में डाल दिये हैं। आप भी आत्मिक और लौकिक हानि की ओर जा रहे हैं। गम्भीरता से सोचिये और तुरन्त लौट आईये।

अन्त में सभों से मैं अर्जी करता हूँ कि जल्द विभाजन का आत्मा को छोड़ दें और गोस्सनर कलीसिया लौट आवें। मैं आप सभों को निश्चयता देता हूँ कि गोस्सनर कलीसिया, बिना कोई शर्त के सभों को ग्रहण करेगी और एक झुण्ड और एक चरवाहा (मसीह) की अधीनता में सब कोई परमेश्वर की महिमा करेंगे।

Edited & Published by : Rev. P. D. Soreng Pramukh Adhyaksh on behalf of the G. E. L. Church and Printed at G. E. L. Church Press. Main Road, Ranchi.

Gossner Mission

aus Odisha G.E.L. Church
1977-78 / (64)

61/122

Gossner Mission

बन्धु

रजिस्टर्ड नं० आर० एन० सी० ४
वार्षिक मूल्य १२ रु०
एक प्रति ,, १ रु० २५ पै०

वर्ष—१०३ रांची, जनवरी १९८३ संख्या नं०—१३

"सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुँचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।"
(मत्ती ७ : १४)

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

Editor & Publisher

Pramukh Adhyaksh

Rev. Dr. M. Bage

Associate Editor

Rev. S. Toppo

Editorial Committee.

1. Sri. A. Kerketta
2. Cand. Cyril Hemrom.
3. Sri. Anup Bakhla.
4. Miss. Mejhren Tirkey
5. Sri. S. Bhengra.

सूची

१ सम्पादकीय — १
२ आनन्दमयी आशा — ४
३ वचन देहधारी हुआ — ५
४ सम्पादक के नाम पत्र — ७
५ प्रमुख अध्यक्ष की ओर से गोस्सनर कलीसिया के भाई-बहनों के नाम आवश्यक सूचना एवं निवेदन—९
६ प्रभु का आगमन —१०
७ उपदेश की तैयारी —१२
८ स्वप्निल संघर्ष —१५
९ मसीही एकता —१६
१० "नूतन वर्ष का सन्देश" —१७
११ अति मूल्यवान वस्तु —१८

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणतः १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य बारह रुपये है।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक-संख्या लिखना न भूलें।

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिए गये पते पर ही भेजें। एसोसिएट एडी, घरबन्धु, के० एस० एस० ऑफिस, जी० ई० एल० चर्च, रांची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ ली ता० तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इसमें बांयी ओर १½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १ इच का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित पते लिफाफे भेजें।

८ स्मरण रहे कि लेखकों के भावों के लिए सम्पादक वा सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास आवश्यक रहनी चाहिए, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगी।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका भेजी जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक-संख्या माह के १० ता० के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चंदा भेजने पर सम्भवतः ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छापे जाते हैं, ग्रहक चदा के घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही घरबन्धु के प्रबन्धकर्त्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवतः डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित्त कुछ लिखा लें।

Gossner Mission

सम्पादकीय

अन्तर्राष्ट्रीय कलीसिया-संघ का ६वां सम्मेलन

१९८३ मसीहियो के लिये एक विशेष महत्व का वर्ष है। इस वर्ष के २४वीं जुलाई से १०वीं अगस्त तक कनाडा देश के वंकुवर शहर में अन्तर्राष्ट्रीय कलीसिया-संघ (वर्ल्ड कौंशिल ऑफ चर्चेस) का सम्मेलन होने जा रहा है। इस संघ का गठन १९४८ में हुआ था। जब से इसका गठन हुआ तब से हर ६वें साल इस प्रकार का सम्मेलन होता आ रहा है। इस सम्मेलन का उद्देश्य न सिर्फ मसीही विश्वास को सामुहिक रूप से अंगीकार करना और उसका उचित अध्ययन करना रहता है, परन्तु इसका उद्देश्य कलीसियाओं के कार्य्यों की समीक्षा करने और भविष्य के कार्य्यक्रमों के सम्बन्ध में सैद्धान्तिक मार्ग-दर्शन हेतु आवश्यक निर्णय लेने के द्वारा यीशु मसीह एवं उसके राज्य के लिए हम मसीहियों की जो उत्तरदायित्व है उसको उचित गवाही और सेवा के द्वारा मजबूत करना भी रहता है। इस तरह से विगत सम्मेलनों की छाप जगत के मसीही कलीसियाओं पर पड़ चुका है।

१९४८ में होलेंड देश के अमस्टरडम शहर में यह सम्मेलन का मुख्य विषय था : "मनुष्य की गड़बड़ी और परमेश्वर की योजना।" १९५४ में उतरी अमेरिका के एवन्सटन शहर में यह सम्मेलन हुआ था। मुख्य विषय था। "यीशु क्रीस्त—जगत की आशा।" १९६१ में हमारे भारत देश के नई दिल्ली ही में यह सम्मेलन हुआ था। इस समय सम्मेलन का मुख्य विषय था : "यीशु क्रीस्त—जगत की ज्योति।" १९६८ में स्वीडेन देश के उपसाला शहर में यह सम्मेलन हुआ था। उपसाला का मुख्य विषय था। "देखो, मैं सब कुछ नया कर देता हूँ।" अफ्रीका महादेश के नाइरोवी शहर में यह सम्मेलन १९७५ में हुआ था—मुख्य विषय था। "यीशु क्रीस्त हम लोगों को स्वतंत्र भी करता है और मिलाता भी है।" इस वर्ष के सम्मेलन का मुख्य विषय है : यीशु क्रीस्त—जगत का जीवन।"

इस सम्मेलन में विभिन्न प्रकार के प्रतिनिधि भाग लेंगे। संघ के सदस्य-कलीसियायों के प्रतिनिधि ९०० होंगे। संघ के साथ सम्पर्क रखने वाली कलीसियाओं के प्रतिनिधि १०० होंगे। संघ से बाहर की कलीसियाओं से दर्शक के रूप में करीब ६० व्यक्ति रहेंगे। सलाहकारों की संख्या ९०, अतिथियों की संख्या ५० और केन्द्रीय समिति के पूर्व सदस्य १५ होंगे। इसके अलावे सेवक (स्टूवार्ड) १९०, कार्य्यकर्त्ता १५०, सह-योजक कार्य्यकर्त्ता १५० होंगे। संघ के द्वारा पाहुन १००० और स्वीकृत पत्रकार १००० रहेंगे।

इस सम्मेलन के मुख्य विषय का चुनाव १९८१ के प्रारम्भ ही में हुआ। चुनने के समय हरेक का यह स्पष्ट विचार रहा कि सम्मेलन मात्र भाषाओं मंच न रहे, किन्तु इसका मुख्य विषय सभों के सामुहिक विश्वास को व्यक्त करे। अतएव इस कार्य्य में सभों की यथा सम्भव सहभागिता प्राप्त करने के हेतु मुख्य विषय चार उप-विषयों में विचार विमर्श करने को विभक्त किया गया :—(१) जीवन—परमेश्वर का एक मात्र दान, (२) जीवन—मृत्यु से मुटभेड़ करने वाला एवं मृत्यु पर जय प्राप्त करने वाला, (३) जीवन—उसकी पूर्णता और (४) जीवन—उसकी एकता।

जितने भी मसीही वंकुवर के सम्मेलन में उपस्थित हो सकेंगे उनको सम्मेलन के जीवन की प्रत्यक्ष सहभागिता प्राप्त होगी। हजारों या करोड़ों मसीही सम्मेलन स्थान से दूर रह कर ही सम्मेलन की सहभागिता प्राप्त करने को इच्छुक रहेंगे। आवश्यक है कि हम सम्मेलन के मुख्य विषय पर एवं उसके उप-विषयों पर जहां भी हम हैं वहीं रह कर यथा सम्भव ध्यान देने एवं मनन करने का प्रयास करें। सर्वोपस्थित प्रभु आप ही हमें इस ओर अगुवई करे एवं हमारे ध्यान अथवा मनन पर आशीष देवे।

घरबन्धु, जनवरी १९८३।

Gossner Mission

आनन्दमयी आशा

विचार से विश्वास की शक्ति अधिक है। जिस चीज का विश्वास हो उसकी आशा की जाती है। विश्वास पथ दर्शक है। दृढ़ आशा इच्छाओं की पूर्त्ति का मार्ग प्रदर्शन करती है। आशा एक सशक्त चुम्बक है, जो गुलाब के फूल से भी अधिक सौन्दर्य और मन को आनन्द देने वाली है। जिस आशा की क्षीण रेखा दूर तट पर से चीरती सी दिखाई पड़ती है, जो बर्बस मन को खींची रहती है। जैसे-जैसे उस ओर बढ़ने की आकांक्षा होती है, आशा में मिश्रित आनन्द से विभोर होती जाती है। जीवन में नया अनुभाव मिलता है। जीवन की पहेली का हल होना सम्भव प्रतीत होती जाती है। जीवन में नया अनुभव मिलता है। जीवन की पहेली का हल होना सम्भवत प्रतीत होती जाती है। तन-मन में ताजगी बिखरती है। प्रकृति में बहारों से आच्छादित चहुँ ओर जीवन का संचार व्यापित होती जाती है चेहरे को रौनक कमल फूल सी खिल उठती है।

विपत्तियों की स्थिति में निराशाओं के मध्य से छुटकारा प्राप्त करने की आशा स्थापित रखना विश्वास की शक्ति पर ही अवलम्बित है। जिस आशा को घटाना बढ़ाना मानसिक शक्ति पर आधारित है। उत्साह, विश्वास तथा इच्छा से प्रभावित इन्तजार की घड़ी में 'आनन्दमयी आशा' द्वारा अनेकों परिक्षाओं, भयानक घटनाओं तथा दुःखों का दूर होना जीवन में परिवर्तन लाती है। पाप के बंधन से, प्रत्येक विघ्न बाधा तथा उलझनों से मुक्त होना, अध्यवसाय पूर्वक क्रूश मार्ग पर निर्विष्ट रखे रहना तथा उसकी दया पर आशा लगाए रहना आनन्दमयी आशा को पाना है।

यहूदियों में आनेवाला मसीह की आशा विभिन्न दृष्टिकोण से थी। पुराने नियम के नबियों की नबूवतों द्वारा मसीह के आने का तात्पर्य बताया गया। यशायाह ६१ : १ में आने वाले उद्धारकर्त्ता के विषय में यह बताया गया कि वह आनन्द का समाचार सुनाने वाला अपने लोगों का कष्ट दूर करने वाला तथा परमेश्वर का अनुग्रह प्रगट करने वाला है। वस्तुतः सबों की 'अनन्दमयी आशा' यह थी कि परमेश्वर का अनुग्रह तथा उद्धार करनेवाली शक्ति का प्रकाशमान होना जो उसके संकेतिक योजना पर, समय की पूर्णता पर पूरा हुआ। किन्तु कितने यहूदियों ने नहीं समझा न उसे पहचाना। क्योंकि यहूदी लोग पार्थिव राजसत्ता के धुन में थे।

जिन्होंने मसीह को पहचाना, जिसकी बाट सदियों से वे जोह रहे थे उनमें आनन्दमयी आशा मचल पड़ी। उन्होंने प्रत्यक्ष रूप में परमेश्वर की शक्ति को देखा और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उस धर्म राजा की गवाही दिए। पावल प्रेरित रोमी १५ : १३ में कहता है "सो परमेश्वर जो आशा का दाता है तुम्हें विश्वास करने में सब प्रकार के आनन्द और शान्ति से परिपूर्ण करे, कि पवित्र आत्मा की सामर्थ से तुम्हारी आशा बढ़ती जाए।"

मानव जाति के निमित्त यीशु मसीह को क्रूशित किया गया। लोहू बहाया गया, कि उसके बलिदान होने से क्रिस्त विश्वासियों को मसीह ने शैतान के बंधन तथा मृत्यु से छुड़ाया है। अतएव अनन्त जीवन की आनन्दमयी आशा उसने क्रिस्त विश्वासियों के निमित्त प्रदान किया है। जिस आशा को पवित्रात्मा के बदौलत दीप्तिमान और आनन्द से देखा जा सकता है। अपितु मानव की कोई स्थिति मसीह के लिए आशाहीन नहीं है। वह हर स्थिति का स्वयं प्रभु है। प्रत्येक मसीहियों के व्यक्तिगत जीवन से मसीह संबंध रखता है। पाप, से ग्रसित पश्चाताप करनेवाला पापी से मसीह अनुग्रह और उद्धार देने की आशा दिलाता है। पाप, दुःख, मृत्यु से छुटकारा पाने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति अपने विश्वास से यीशु द्वारा मुक्ति का भागी होता है। व्यक्तिगत विश्वास की निष्ठता पर यीशु मसीह से

Gossner Mission

आनन्दमयी आशा मिलती है। जो साक्षात मसीह के महिमापूर्ण द्वितीय आगमन में ज्वलन्त से उसके दर्शनाभिलाषियों के तथा मानव जात के न्याय के हेतु प्रगट होगा। प्रभु के दिन की बाट जोहना ही क्रिस्त विश्वासियों के लिए अपने जीवन की पहेली का होना सम्भव है।

पाद्री सबन मार्टिन टोपनो, राँची।

बचन देहधारी हुआ

और वचन देहधारी हुआ, और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसे पिता के एकलौते की महिमा।" युहन्ना १।१४।

सभों को हमारे उद्धारकर्त्ता एवं सृजनहार प्रभु का जन्म तिथि मुबारक हो समस्त पृथ्वी में मसीही विश्वासियों का सबसे बड़ा उत्सव २५ दिसम्बर माना जाता है। जिसे बड़ा दिन या क्रिस्त जयन्ती कहते हैं। यह घटना इतिहास में महत्त्वपूर्ण मानी जाती जो आज से करीब दो हजार वर्ष पूर्व पलिस्तीन देश में हुई। किन्तु क्या सभी जानते हैं कि यह क्रीस्तमस (क्रिसमस) के नाम पर क्यों जाना जाता है। क्रीस्तमस का अर्थ क्रिस्त का मिस्सा है। यह पुरानी अंग्रेजी Christes-Maess अथवा Cristes-Maesse से बना है। आज तक क्रिस्त के जन्म का बिलकुल सही तारीख और दिन मालूम नहीं किया जा सका है। क्रिस्त के जन्म घटना को ऐतिहासिक वातावरण में रखते हुए अनुसन्धानकर्त्ता तथा धर्मपंडितगण क्रिस्त के जन्म का दिन २५ दिसम्बर और ६ जनवरी रखते हैं। यह त्योहार उत्तरी अफ्रिका में बहुत पहले से प्रचलित था। सबसे पुराना क्रिस्तमस उपदेश सन् ३८३ के लगभग ही पाया जाता है। स्पेन में भी सन् ३८४ ई० के पहले से ही मनाया जाता था। पहले में यह त्योहार ६ जनवरी को रखा गया था। लेकिन चौथी शताब्दी के आखरी में २५ दिसम्बर को मनाया जाने लगा। सन्त वासिल सन् ३७९ के पूर्व क्रीस्तमस उपदेश दे चुके थे। पलिस्तीन में यह त्योहार ७वीं शताब्दी के मध्यकाल तक ६ जनवरी को मनाया जाता था, फिर बाद में २५ दिसम्बर को मनाया जाने लगा। क्रिस्तमस ट्रिब अथवा चरनी सन्तफ्रांसीसी असीसी के द्वारा सन् १२२३ में शुरू की गई। क्रिस्तमस गाना ५वीं शताब्दी से, क्रीस्तमस ट्री १७०५ से और क्रिस्तमस वैरोल सन्त फ्रांसीसी असीसी के प्रेरणा से गाए जाने लगे और तरह तरह के प्रतीक जैसे क्रिस्तमस फादर, क्रिस्तमस कार्ड, सान्ता-क्लौज और नाना प्रकार के क्रिस्तमस गिफ्टस शुरू हो गए।

उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह का जन्म बाइबल के कहावतानुसार इसे "बचन देहधारी हुआ" कहा गया है। अदृश्य परमेश्वर को किसी ने देखा नहीं पर उसे हम प्रभु में देख सकते हैं। प्रभु यीशु के जन्म दिन की खुशी में स्वर्ग दूतों ने गीत गाया था। उसके आनन्द का कारण यही था कि वे उस अदृश्य परमेश्वर के रूप को प्रभु यीशु मसीह में देख सके। उसी अदृश्य परमेश्वर की सेवा वे बिन देखे रात और दिन स्वर्ग में लगातार करते हैं।

प्रभु को सबसे उत्तम नाम "यीशु" दिया गया। जिसका अर्थ है "हमारे लिए यहोवा का उद्धार।" जो आदि में था जो ऐश्वर्य में ईश्वर के साथ था, जिसके द्वारा सब कुछ सृजा गया उसी का नाम "बचन" रखा गया है। यूनानी भाषा में इसको "लोगोस" कहते हैं। उस शब्द से परमेश्वर की बुद्धि और शक्ति का बोध होता है। शिष्य युहन्ना ने विद्वानों के मुख से यह शब्द सुना था। प्रभु यीशु मसीह उसी लोगों का अवतार हो करके आया। इसलिए कि परमेश्वर को प्रगट करें। इससे यह अर्थ निकला कि पुराने नियम शास्त्र और नए नियम शास्त्र के अनुसार इस शब्द से जो अर्थ निकलता था प्रभु यीशु मसीह वही है, वह परमेश्वर को प्रगट करनेहारा है। इस कारण हमारा प्रभु सनातन "बचन" कहलाता है। जब जो मनुष्य न बोले तब जो हम

Gossner Mission

जान नहीं सकते कि इस मनुष्य का विचार किस प्रकार का है। प्रभु में ईश्वर के मन का भेद खोल देता है। उसके मन का भेद क्या है? वह अनुग्रह और सच्चाई है। (१) अनुग्रह—यीशु सदा सभों पर ईश्वर का अनुग्रह प्रगट करता था। बालकों पर, रोगियों पर, दुःखितों पर, पापियों पर उसका अनुग्रह प्रेम से पूरा हुआ कि परमेश्वर दयालु, अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवान और अति करूणामय सत्य है। (२) सच्चाई—प्रभु यीशु झुठ कभी नहीं बोला, वह सच्चा ही था। चंचल नहीं था जैसे बहुधा मनुष्य लोग अपने विचार बदलते रहते हैं। आज ऐसे कल वैसे बोलते हैं। यीशु ईश्वर के सम्मान, धर्म और प्रेम में विश्वास योग्य हैं। उसकी पहली बात उसके अन्तिम बात से मिलती हैं। कभी बुरा को भला नहीं और पाप को धर्म नहीं कहा। सदा अपनी प्रतिज्ञाएँ पूरी करता रहा। यीशु अपनी सच्चाई से सच्चे ईश्वर को प्रगट करता है।

प्रभु यीशु का देह धारण करना और ईश्वर को प्रगट करना क्रिस्तमस के तौर पर प्रति वर्ष आता जाता रहता है फिर भी प्रति बार हमारे लिए नूतन सा लगता है। इसकी नवीनता का कारण एक महान रहस्यात्मक घटना का स्मरण है। जो हमारे मुक्ति के रहस्यात्मक घटनाओं को अमर बना दिया और आश्चर्यजनक तरीके से अध्यात्मिक रूप में प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में जन्म लेते हैं। यह उत्सव रोशनियों के प्रकाश की ऋतु है। ये प्रकाश हमारे घरों को सिंगारते हैं, सुन्दरता के लिए नहीं पर गूढ़ अर्थों में पथ प्रकाशित करते हैं क्योंकि ये रोशनियां हमारे विश्वास, आसरा तथा प्रेरणा के प्रतीक है। तो आइये हम जीवित यीशु से फैलने वाली प्रकाश धारा को हमारे दिलों में प्रज्जवलित करने दें जिससे अज्ञान, अभक्ति, उदासीनता, ईर्ष्या कुइच्छा और संसार की गरीबी के अन्धकार को दूर भगायेंगे। इतिहास हमें बतलाता है कि मानवीय राह हमें कहीं भी नहीं ले जा सकते। केवल एक रास्ता है—शाँति के राजकुमार की राह जिन्होंने बेथलेहेम में एक नन्हे शिशु के रूप में धरती में जन्म लिया। वही ईश्वर का सनातन वचन है और ईश्वर का सच पुत्र है। फिर भी लोगों को विश्वास करना कठिन लगता है कि प्रेम और शुद्ध दिल संसार की ईर्ष्या और स्वार्थ परता पर विजयी हो सकते हैं। क्रिस्तमस की शिक्षा यही है कि हम संसार को अणु-परमाणु-विस्फोटों से बदल नहीं सकते। केवल यीशु के निःस्वार्थ उदारता और प्रेम के जबरदस्त बिस्फोटों से पूरे संसार की काया बदल सकते हैं। नए जीवन की सोता क्रिस्त ही है। जिसके जन्म का संदेश देने के लिए आकाश में नया तारा दिखाई दिया। जिसके दर्शनार्थ पूर्व देश से ज्योतिषीगण तारे की अगुवाई पाकर आए और अपने अनमोल भेंट सोना, लोहबन और गन्धरस चढ़ाये। "ज्योतिषी" शब्द अंग्रेजी भाषा में मेजाई (Magi) का अनुवाद है जिसे मूलतः फारसी और बेबीलोनी भाषाओं से लिया गया है जिसका अर्थ है बुद्धिमान पुरुष या पुजारी जो तारों का ज्ञान रखते हैं तथा स्वप्नों के अर्थ बताया करते हैं इसके अतिरिक्त अनेक रहस्यमय शक्तियां उनके पास होती थी। उन्हीं लोगों की आज्ञानुसार राजा लोग अपने बलिदानों को चढ़ाते थे क्योंकि वे वहाँ मंदिरों के पुजारी भी थे। कुछ लोग ज्योतिषियों के भेंटों के आधार पर यह कहते हैं कि वह अरब देश से आए थे किन्तु भौगोलिक स्थिति से यह गलत है क्योंकि अरब दक्षिण में है जब कि वे पूर्व देश की फूरात नदी पार कर बेबीलोन या फारस जैसे देशों की ओर से आए थे। यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि कुछ लोग भेटों के तीन होने के कारण तीन ज्योतिषी मानते हैं किन्तु यह भी भ्रामक है। बाइबल हमें उनकी कोई गिन्ती नहीं बताती केवल यह कि "कई" थे। जो तारा के प्रतीक पर आए थे जिस तारे को परमेश्वर ने विशेष रूप से ज्योतिषियों के लिए निकाला था। जो सचमुच प्रत्येक दृष्टिकोण से अद्भुत था। तारा पूर्व में उदय होकर पश्चिम में ज्योतिषियों को आगे बैतुलहम में यूसफ के घर की ओर ले गया। अन्य तारे पूब से पश्चिम की ओर जाते दिखाई देते हैं किन्तु यह तारा उसके विपरीत दक्षिण की ओर जा रहा था। बालक के स्थान पर पहुंच कर तारा रुक गया और बैतुलहम के अन्य घरों के ऊपर न चमक कर, तारा उस विशेष घर की ओर संकेत कर रहा था जहां बालक

Gossner Mission

"यीशु" चरनी में थे। प्रभु के जन्म की खुशी में स्वर्ग दूतों ने गीत गाया तथा चरवाहे जिन्हें यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि वे भी स्वर्गदूतों के समाचार के अनुसार नन्हें बालक यीशु जो जगत का उद्धारकर्त्ता होकर आया था, उनका दर्शन करने पाए।

इस प्रकार हम देखते हैं कि समय की पूर्णता में प्रभु का जन्म इस संसार में हुआ ताकि प्रभु जगत का उद्धार कर्त्ता होकर हम पापियों का मेल ईश्वर के साथ करा सकें। किन्तु जब हम पढ़ते हैं कि प्रभु के लिए सराय में भी जगह न मिली तो बड़ा दुःख होता है। यह कैसी आश्चर्य की बात है कि मनुष्य की पतित दशा को दर्शाता है। अन्त में उसे एक गौशाले में जन्म लेना पड़ा जिसे गाय-बैलों ने खुशी से वह स्थान खाली कर दिया और वे आप बाहर चले गए। मनुष्य परमेश्वर की उत्तम सृष्टि है जो अपने सृजनहार को नहीं पहचान सका और पशुओं से भी नीचे गिर चुका। यही कारण है चरवाहों को छोड़ और कोई भी स्वर्गदूतों का दर्शन नहीं कर सका और न उनके गीत सुन सके। इसी प्रकार ज्योतिषी को छोड़ किसी को भी तारा दिखाई नहीं दिया। बहुधा लोग बड़े दिन में नए वस्त्र पहनते घरों को साफ सुथरा करते, केक खाते हैं किन्तु हम विश्वासियों को क्या करना चाहिए—प्रभु चाहता है हम अपने मन रूपी घर के प्रभु के अनमोल लोहू से धोकर साफ और पवित्र करें और धार्मिकता के वस्त्र पहनकर विश्वास से उद्धार पायें।

इस प्रकार वचन मनुष्य हो गया। ईश्वर का पुत्र धरती पर उसके ऐश्वर्य में न उतरा, न स्वर्गदूत के रूप में न बड़े राजा के रूप में पर दास का रूप धारण किया, क्यों? यह ईश्वर के प्रेम का भेद है। हमारा मन ऐसा होवे जैसे गड़ेरियों का और ज्योतिषी का था कि वे जब तक नहीं पाए तब तक ढूंढ़ते रहे। क्या हम आज उसे ढूंढ़ते हैं, वह कुचले हुए और दीन हीन हृदय को चाहता है।

प्रिय मित्रो प्रभु के प्रथम आगमन में लोगों ने स्वागत नहीं किया। अब उनका द्वितीय आगमन निकट है। वह अपने विश्वासियों को लेने शीघ्र आने वाला है। क्या हम सभी उनसे मिलने के लिए तैयार हैं। बड़े दुःख की बात है कि अविश्वासीगण इसी पृथ्वी पर छोड़ दिए जायेंगे और विश्वासी बादलों पर ऊपर उठा लिए जायेंगे कि प्रभु के साथ हवा में मिलें। इस घटना के बाद पृथ्वी में महा क्लेश का समय और दुष्टों का राज्य होगा। तत्पश्चात का एक हजार वर्ष का राज्य स्थापित होगा। शैतान बांधा जायगा और विश्वासी प्रभु के साथ एक हजार वर्ष राज्य करेंगे। क्या हम मसीही बड़े दिन के पुनीत अवसर पर प्रभु के द्वितीय आगमन की तैयारी कर रहे हैं अथवा खुशी सांसारिक रीति से मना रहे हैं—

प्रभु हम सभों पर अनुग्रह करे कि हम सभी प्रभु के द्वितीय आगमन की तैयारी में हो। ऐसा न हो अनुग्रह के द्वार बन्द हो जाय और हम बाहर ही खड़े रह जायें। यह कितनी भयानक बात होगी कि सर्वज्ञानी परमेश्वर हमें उस समय पहचानने से इन्कार करें। प्रभु हम सबों को उन भयानक दिनों से बचाये और अपनी आशीष हमको दें और अपने देह के वचन रूपी धारण करने के गूढ़ रहस्य को इस पावन समय में समझायें – आमीन॥

Ashim Kr. Nathaniel

सम्पादक के नाम पत्र

आदरनीय सम्पादक जी,

'घरबन्धु' सदैव फुलती-फलती रहे, सब का बन्धु बने। अक्टोबर अंक मिला। सभी लेख, कहानियाँ बहुत अच्छे लगे। 'उपदेश की तैयारी' देकर आपने उपदेशकों की बड़ी मदद की। फिर भी अब तक हमारी पत्रिका में बहुत सारी कमियाँ रह गई हैं जिनकी पूर्ति की मांग आप से कर रहा हूँ साथ ही कुछ सुझाव भी दे रहा हूँ। ये मांग सुझाव निम्नलिखित हैं—

(१) आये दिन यह प्रिय पत्रिका बन्द होते छपते चली आ रही है पर अब यह कुछ महिनों से लगातार ही

Gossner Mission

छपने लगी है। कभी-कभी यह हमें इतनी देर से मिलता है कि इसके अन्दर छपे कुछ विषयों की उपयोगिता ही समाप्त हो जाती है। जैसे विज्ञापन, उपदेश की तैयारी वगैरह हो। अतः मेरी यह सलाह है कि यह छप कर माह के पहले सप्ताह में ही ग्राहकों / पाठकों के पास भेज दिए जायँ। कारण कि १७ तारीख तक इन्तजार करते-करते आँखें धँसने लगती हैं।

(२) सचमुच यह हमारे लिए एक पथ-प्रदर्शिका पत्रिका है। कितनों को सही मार्ग पर ले आयी है और कलीसिया की गिरती अवस्था के लिए तो यह अत्यन्त ही चमकदार दर्पण है। लेकिन अफसोस इस बात के लिए है कि इसमें छपे, लेख, कविताओं, कहानियों का पाठकों के मनों में क्या प्रभाव डालता है कहा नहीं जा सकता। ऐसा लगता है, अवश्य ही पाठकगण इन विषयों से सम्बन्धित लेख या पत्र लिखते होंगे। हम लेखकों की यह जानने की जिज्ञासा होती है कि पाठकगण कि रूपों में इन्हें ग्रहण करते हैं या सिर्फ सरसरी निगाहों से पढ़ लेते हैं। कृपया "पाठकों की कलम से" कालम जोड़ कर उन लिखे पत्रों को या उनका सारांश छापने का कष्ट करें

(३) हम लेखक गण पत्रिका की स्थिति से पूर्णतः अवगत है। "यह हमारी अपनी घर की पत्रिका है"— यह समझ कर पारिश्रमिक की अपेक्षा नहीं करते। फिर भी आप से हमारी घोर अर्जी है आप हमें कम-से कम (खास कर लेखक, कवि या कहानीकारों की) एकाध पत्र अवश्य ही लिखें तथा इन्हें यह भी जिक्र किया करें कि आप पत्रिका के लिए कैसे कैसे लेख, कहानियाँ या कविताएँ चाहते हैं।

(४) बड़ा-दिन, नव वर्ष या इसी प्रकार के पर्वों में विशेषांक निकालने का प्रयत्न करें।

(५) अन्तिम बात यही कहना चाहता है कि पत्रिका की सुन्दरता के लिए 'प्रूफ रिडिंग पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाय। क्योंकि कभी-कभी ऐसे ऐसे शब्द छप जाते हैं जिनसे अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

आशा है सम्पादक जी इस ओर ध्यान देंगे।

आप का

—"मनजन"

सूचना

गोस्सनर थियोलोजिकल कॉलेज, रांची में १९८३-८४ सत्र के लिये नये विद्यार्थी लिये जायेंगे। मैट्रिक पास या अधिक शैक्षणिक योग्यता रखने वाले इच्छुक जवान सादे कागज पर निज लिखित आवेदन पत्र संक्षिप्त जीवनी एवं आवश्यक सिफारिशें (पंच, पेरिश, इलाका से) तथा प्रमाण पत्र प्रतिलिपि सहित कार्य वाहक प्राचार्य के नाम ३१ मार्च १९८३ तक अवश्य भेजें।

इलाका चेयरमेन से आशा की जाती है कि वे उन्हीं आवेदकों का आवेदन सिफारिश करेंगे, जो सुस्वस्थ, सुशील एवं धार्मिक एवं सामाजिक सेवा में विशेष रुचि रखते हों और जिनके लिए इलाका या उनकी कोई इकाई कम से कम ५० रु० प्रतिमाह छात्रवृत्ति देने को तैयार हैं। ५० रु० प्रतिमाह बी० एस० एस० की ओर से भी मिलेगा।

जो जवान अपने खर्च से पढ़ना चाहते हैं उनके लिये भी सिफारिश अनिवार्य है।

विद्यार्थी का खर्च इस प्रकार है :

खाने-पीने आदि	—	१०० रु० प्रतिमाह माहवारी अग्रेतर
मिश्रित	—	६० रु० प्रतिवर्ष जुलाई में देय
पंजीकरण (यूनिवर्सिटी)	—	२५ रु० आरम्भ ही में
परीक्षा फीस	—	२० + १०० रु० अगस्त माह देय
क्लास फीस (गैर बी० ई० एल० सी०)		२५ रु० प्रतिमाह

अप्रील अन्तिम सप्ताह में बराली परीक्षा (हिन्दी, अंग्रेजी, सामान्य ज्ञान और धर्म विषय में) होगी, आवेदकों को सूचना मिलने पर अपने खर्च से रांची आना है। पत्र व्यवहार करें :

कार्यवाहक, प्राचार्य
गोस्सनर थियोलोजिकल कालेज
रांची ८३४००१, बिहार।

Gossner Mission

प्रमुख अध्यक्ष की ओर से गोस्सनर कलीसिया के भाई-बहनों के नाम
आवश्यक सूचना एवं निवेदन

प्रभु में प्यारे भाइयो एवं बहनो,

आप सभों को मेरा यीशुसहाय ।

मेरा कर्त्तव्य है कि मैं कलीसिया के उन सुख-दुःखों का, जो केन्द्रीय स्तर पर मुझे अनुभव करने को मिलते हैं, समाचार आप लोगों तक पहुँचाऊ। समाचार तो अनेक हो सकते हैं, पर मैं इस पत्र में कलीसिया के आर्थिक पहलु तक ही समाचार को सीमित करना चाहता हूँ ।

१९६० में नई नियमावली बन जाने और अंचलों का संगठन होने के बाद से अंचल एवं केन्द्र अपनी-अपनी आर्थिक स्थिति को संभालने का प्रयास करते आ रहे हैं। इनको इसके लिये विशेष संघर्ष करना पड़ रहा है। १९८२ के दिसम्बर १०–११ को जो के० एस० एस० की बैठकी हुई थी उसमें यह स्पष्ट हो गई कि कलीसिया किस परिस्थिति में आ पहुँची है। एक ओर हरेक अंचल पर अपने क्षेत्र के मिशन कार्य के लिये आवश्यक अतिरिक्त रकम खोजने का बड़ा बोझ पड़ा है और साथ ही साथ अपने अंचलीय स्तर के कार्यक्रम के संचालन हेतु पर्याप्त रकम की व्यवस्था करनी है। दूसरी ओर केन्द्र को अब तक अपने केन्द्रीय खर्च के लिये बाह्य (लूथेरान वर्ल्ड फेडेरेशन से) सहायता पाता आया था जिसका ३१ दिसम्बर १९८१ को अन्त होने जा रहा है। केन्द्रीय खर्च की आवश्यकता न केवल के० एस० एस० के संचालन के लिये, परन्तु अध्यात्मिक प्रशिक्षण संस्थाओं को, जिनमें रांची स्थित गोस्सनर थेओलोजिकल कालेज और गोविन्दपुर स्थित प्रचारक प्रशिक्षण संस्था एवं तबिता बेबल एवं बुलियादि प्रशिक्षण संस्था है, संभालना है। आवश्यक रकम के बिना ये कार्यक्रम न चल और न चलाये जा सकते हैं। गत के० एस० एस० की बैठकी में १९८३ साल के लिये अनुमानित खर्च (बजट) इस प्रकार स्वीकृत हुआ है :—

		रु०	पै०
के० एस० एस० का खर्च - कुल		१४१६५०	५२
गोस्सनर थेओलोजिकल कालेज का घटा	—	८४४८३	०८
प्रचारक एवं तबिता प्रशिक्षण संस्था	—	४६८६६	४०
कुल घटा	—	२७५०००	००
गोस्सनर मिशन से ५००००			
अवदाद विभाग से १००००	—	६००००	००
आत्म पालन के प्रासङ्ग	—	२१५०००	००

उपरोक्त परिस्थिति पर उचित गौर करने के पश्चात् विचार-विमर्श करते हुए के० एस० एस० ने यह निर्णय लिया कि :—

१ अंचलों के खर्च की आवश्यकता को देखते हुए मंडली पैसा जो अब तक प्रति इद्दिकुत सालाना १) रु० था, जनवरी १९८३ से २) रु० किया जाय। यह दान अंचल स्तरीय कार्यों को संभालने के लिये अंचल के केन्द्रीय स्तर पर एकत्र किया जाए।

२) केन्द्रीय खर्च को वहन करने के हेतु एक ही दान रहा जाता है वह है आत्म पालन दान। आवश्यकता के कारण १९८३ साल से प्रत्येक परिवार को अनिवार्य रूप से कम से कम ५) रु० आत्म पालन दान देने को आग्रह किया जाय।

धरवन्धु जनवरी १९८३

Gossner Mission

जैसा होता आया है इस वर्ष भी आत्म पालन दान संग्रह निमित्त केन्द्र से लिफाफे वितरित होंगे। हरेक पेरिश की जिम्मेदारी है कि समय पर इनका वितरण किया जाय। इस दान को वेदी पर चढ़ाने का दिन समस्त कलीसिया के लिए पलमारूम रविवार ठहराया गया है। इस साल यह रविवार २७वीं मार्च को पड़ रहा है। निवेदन है कि सभी परिवार उक्त तिथि में यह दान वेदी पर चढ़ावें। यदि किसी कारणवश कोई परिवार उस दिन को यह नहीं कर सका तो उसके बाद के रविवार अर्थात् ओ उठना पर्व के दिन चढ़ावें। इसके बाद भी यदि कोई परिवार वेदी पर यह दान न चढ़ा सका तो ऐसों के पास पंचगण स्वंय जाकर दान बटोरें। पंचगण लिफाफों पर सिलसिलेवार नम्बर देकर परिवारों को लिफाफा दें। यह ध्यान दिया जाय कि लिफाफा देने ओर इसी तरह उसके दान बटोरने में कोई परिवार छूट न जाय। पेरिश चेयरमेन एवं मंडली चेयरमेन इसके लिये अपने को विशेष रीति से जिम्मेदार समझें। केन्द्र हरेक पेरिश चेयरमेन से इस संबंध में विशेष सम्पर्क रखेगा।

बोल्डर कलोसिया के भाई-बहन अपनी कलीसिया को प्यार करने में पीछे नहीं हैं। संचालकगण आप के प्रति धन्यवादी हैं। आइये, सभी भाई-बहन एवं संचालकगण प्रभु के अपार प्रेम, जो इस कलोसिया की स्थापना के द्वारा प्रगट है, धन्यवादी मन अर्पण करते हुए आत्म पालन दान हर्षोल्लास वेदी पर चढ़ायें। प्रभु का आशीर्वाद सभों पर बना रहे।

रेभ० डा० एम० बागे,
प्रमुख अध्यक्ष
बी. ई. एल. चर्च छोटानागपुर ओर असाम, रांची।

प्रभु का आगमन

"पिता ईश्वर का महानुग्रह हम पापी जगत के मनुष्यों पर और हमारा संगति यीशु मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा छुटाए और बटोरे हुओं की जीवन।"

जब कभी हम पवित्र बैबल के वचनों को ध्यान करते हैं और हमारे अपनी देह धारी जीवन को नजर में करते हैं तो हमें ये अनुमान होता है कि हम बिलकुल आज तक जिसका जीवन जीवित है, वह जीवन मरा हुआ के समान है। क्यों? इस लिए कि हम वचन को ध्यान करते हैं पर मन से नहीं, उपरी मूँह से. हम प्रभु का बचन को पढ़ते, मनन करते हैं। अगर अपनी कर्तव्य, व्यवहार को जांचते हैं और अपने आप देखते हैं तो हम में ये मिलता है कि हम में कुछ नहीं, केवल खोखला पन है। यहां तक कि, मैं क्यों? किसका? किस लिए दुनियां में भेजा जाकर बदले यीशु मेरे पास आया, नहीं पहिचाना, मैं अब तक ये नहीं पहिचान पाता हूँ कि मैं क्या हूँ और मुझे कैसी आत्मा, जीवन मिला है। जिसके कारण आज उसके बहुमोलता का संगति से हम मनुष्य दूर हो जाते, पवित्र आशिर्वाद के बदले उसके भयानक क्रोध का वारिस बन जाते हैं। सपन्याह १ : १४-१८ इस पवित्र वचन को सामने रखते हुए हम इस छोटी सी फूल की नाई जीवन को प्रभु के लिए समर्पण करके, उसके लिये सर्वदा प्रार्थना, सेवा, स्तुति करते हुए उसके दूसरी आगमन के लिये तैयार होना है। मत्ती २४ : ४२।

सच कहा जाए तो आज हम उसके पवित्र आगमन के काल में जीवन व्यतीत करते हैं, ये आगमन काल के विषय आज नहीं, पर जन्म से सुनते और सुनाते हैं, तिस पर भी हम मनुष्य अपने आप को नहीं पहिचाना है। कैसे—आज ही हम जांचें उसके आगमन को मनसे तैयार करते हैं कि, उसको मनसे निकाल देकर, कैसा पहनेंगे, खाएंगे पियेंगे इत्यादि।

Gossner Mission

हम पवित्र वचन से पाते हैं कि परमेश्वर की बड़ी अनुग्रह और प्रेम हम मनुष्यों पर हुई। कि अपने पुत्र को हमारे लिए देकर अनन्त दन्ड से बचाया और अनन्त जीवन का वारिस बनाया। हम उसके पवित्र परिवार के सन्तान और मसीह के भाई बहिन हो गए हैं। अगर हम उसके वचन और इच्छा पर चलते हैं तो। मरकुस ३ : ३४-३५।

हम जानते हैं दूसरी आगमन कब और कैसे और किस समय होगा ? उस समय आकाश और पृथ्वी पर क्या चिन्ह होंगे ? मरकुस १३वें अध्याय।

ऐसा ही और हमें पवित्र धर्मशास्त्र में मिलते हैं। हमको परमेश्वर आदि से ही अपने पवित्रता में अपने स्वरूप लेकर सृष्टि किया कि इस मनुष्य के द्वारा मेरा सर्वदा महिमा हो। आज हम अपने जीवन के साथ साथ परिवार, मंडली, कलिशा। क्या उसके आगमन के आनन्द में शामिल होने को, उसके साथ पवित्र परम प्रधान परमेश्वर के भवन में जाने को तैयार हैं ? हमें एक ही ईश्वर एक ही पवित्र आत्मा, एक ही संगति के लिए बुलाए और बटोरे गए जन हैं। अतः हमें एक ही विश्वास में दृढ़ होकर जीवन भर उसके लिए तैयारी करना है। प्र०व० २ : १०।

प्रभु मसीह हम पापियों के लिए जगत में आया, पापी को ग्रहण और पापी का पाप को दूर करने तथा पापी का सारे पाप गुनाहोंके बदले दुःख, मृत्यु दण्ड सह कर हमें अनन्त जीवन देने के निमित अपने उपर लिया। उसने हर जाति और कूल के लिए एक बार आया और मृत्यु तक हमारे लिए दे कर पिता ईश्वर से मेल मिलाप कराया और वह मसीह आज हम मसिहीयों को कहता है कि, "तुम सब जाओ, सब देशों के सब जातियों पर चिताओ, सिखाओ और उन्हें पिता, पुत्र, पवित्रात्मा से बापतिस्मा दो' मत्ती २८ : १०। फिर कहता है—

(i) "मनुष्य हमें मसीह के सेवक और परमेश्वर के भन्डारी समझें" १ कोरि० ४।१।

(ii) "सो हम मसीह के राज्य दूत हैं" २ कोरि० ५ : २०।

इस तरह से प्रभु कहता है जगत के, संसार के व्यर्थ बातों, विषयों से भागो, अलग रहो, मत छुओ और मैं तुम्हें ग्रहण करके मेरे बेटे बेटियाँ होंगे। २ कोरि० ६ : १७-१८।

प्रभु का आगमन की तैयारी करते हुए एक छोटी गीत—

१ सालागी उत्तर सिर्मा सा:ते, हिजु: लेनाए मसीह हो।
जोहारिपे माइनीपे हे सोबेन मनोवा को।

२ 'ओते दिसुम नुवा: जना, जेताएयो काको नेलोवा।
मसीह प्रभु धर्म राजा तुवा कनाए ओतेरे।

३ मसीह राजाए हिजु: तना, साड़ी हुदु हुदुआ।
दुतामिको दुरङ तना, हो जनव माइनन गी।

डी० एम० तोपनो
सम्बलपुर

No. 1 / 60 / LS

OFFICE OF THE REGISTRAR OF JOINT STOCK COMPANIES,
ANDAMAN AND NICOBER ISLANDS

Port Blair, the 5th December, 1972

Certificate of Registration.

Certified that the "Gossner Evangelical Lutheran Church Society" Police line Port Blair has been registered as a Society under the Societies Registration Act, 1860.

The Registration number is 31.

Sd/-
For Registrar of Joint Stock Companies
Andaman and Nicober Islands.

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

सेप्तुआगेसिमे (७० वाँ दिन)

(मत्ती २० : १-१६)

प्रभु ने स्वर्ग राज्य का भेद सुनने वालों को अनेक दृष्टांतों के द्वारा बताया। इस दृष्टांत में एक गृहस्थ के द्वारा अपनी दाख की बारी में मजदूरों को लगाने और उनको उनकी मजदूरी देने की बात बतायी गई है। दाख की बारी यह जगत है जहाँ स्वर्ग राज्य के कार्य हो रहे हैं। इस कार्य में मजदूरों को लगाने वाला प्रभु यीशु ख्रीस्त स्वयं है।

यीशु मजदूरों को बुलाता और कार्य में लगाता है

१ वह निमंत्रण सभों को देता है :—दृष्टांत में खेत का स्वामी दिन में सुबह नौ बजे, बारह बजे, तीन बजे और शाम पांच बजे निकलकर मजदूरों को खड़ा हुआ पाता है और काम में लगाता है। जो भी इस बुलाहट को स्वीकार करता है काम में लग जाता है इसका अर्थ यहा कि बालकों को, नवयुवक एवं युवतियों को, किशोरी अवस्था के युवक-युवतियों को, वयस्कों को और वृद्धों को सभों को ही निमंत्रित करता एवं अपने कार्य में लगाता है।

२ वह सभों को एक समान मजदूरी देता है:—दृष्टान्त में जो पहले काम में लगाये गये उन्हें एक दीनार देने की बात कही गई। यही मजदूरी उनको भी मिली जो शाम शाम को काम में लगाये गये थे। स्वर्ग के राज्य में जो भी निमंत्रित होते हैं सभों के लिये प्रभु की वही प्रतिज्ञा है।

३ वह मजदूरों को उनके परिश्रम की मजूरी नहीं परन्तु संतमेंत दान देता है:—स्वर्ग राज्य का यही बड़ा भेद है कि हम जो प्रभु द्वारा बुलाये गये हैं उसके संतमेंत दानों के भावी होते हैं, क्योंकि हमारा परिश्रम उन दानों को प्राप्त करने के योग्य हम लोगों को बना नहीं सकता।

यह दृष्टान्त यीशु के शिष्य पतरस के प्रश्न का उत्तर है। उसका प्रश्न था : "हम तो सब कुछ छोड़ के तेरे पीछे हो लिए हैं, तो हमें क्या मिलेगा ?" यीशु ने उस प्रश्न का उत्तर तो दिया, परन्तु पतरस के समक्ष को गलत ओर जाने से बचाने को यह दृष्टान्त दिया। आवश्यक है कि हम अपनी बुलाहट एवं उन स्वर्गीय दानों के भेद को समझें जो प्रभु हमें संतमेंत अधिकाई से देता है।

सेक्सागेसिमे (६० वाँ दिन)

लूक ८ ; ४-१५

यीशु इस दृष्टांत के द्वारा भी परमेश्वर के राज्य का भेद बतलाता है। पद ४ - ८ में दृष्टांत है पद ९ – १५ में दृष्टांत का अर्थ बतलाया जाता है।

"बीज (वचन) बोया जा रहा है।

१ मण्डली के कुछ लोगों का मन मार्ग के किनारे की भूमि के समान है :—वे वचन सुन रहे हैं पर शैतान बीज (वचन) को उसके मन से उठा लेता है। —आप जांचे कि आप इस प्रकार की भूमि है अथवा नहीं। देखो यहूदा इस्करियोती का जीवन।

२ मण्डली के कुछ लोगों का मन चट्टान के समान है :— वे आनन्द से वचन सुनते हैं। वचन के अनुसार चलने की प्रतिज्ञा करते हैं पर परीक्षा अर्थात् जांच एवं दुःख के समय यीशु को छोड़ देते हैं। पतरस प्रेरित का जीवन एक समय ऐसा ही था। वह जांच के समय यीशु को छोड़ दिया था। आप किसके समान है ?

३ मण्डली के कुछ लोगों का मन झाड़ियों के बीच की जमीन के समान है। परन्तु धन की चिन्ता सुख-विलास की चिन्ता, आदि के कारण वचन में बने नहीं रहते हैं।

Gossner Mission

आप देखिये कि आप को किस प्रकार का सुख-विलास दबा डाला है ?

४ मण्डली के कुछ लोगों का मन अच्छी भूमि के समान है :— वे वचन सुन रहे हैं। वचन को अपने जीवन में फल लाने देते हैं। क्या आप का मन अच्छी भूमि के समान है ?

सुसमाचार प्रचार क्षेत्रों में भी चार प्रकार के लोग पाये जाते हैं। अच्छी भूमि बनने का निर्णय ले लेवें।

एस्तोमिही (मेरे लिये हो)

लूक १८ : ३१-४३

प्रभु यीशु पृथ्वी पर के जीवन की यात्रा का अन्त करते हैं। (१८:३१-१९।४४) इसका प्रकाशन वे आप ही देते हैं।

"यीशु की घोषणा"

१ मनुष्य के पुत्र के विषय लिखी हुई भविष्यद्वाणी पूरी हुई (३१–३३) शिष्य लोग यीशु के दुःख मृत्यु एवं पुनरुत्थान की बातों को एकदम नहीं समझते थे। आज की मंडली इस विषय को समझने में असफल हैं। इसी कारण मसीही जीवन का वर्णन केवल सुखद शब्दों में किया जाता है। स्वर्ग का फाटक तो मृत्यु है। दुखियादायी वर्णनों में मृत्यु भयानक बतलायी गयी है। परन्तु पौलुस की भाषा में मृत्यु आशीष की ओर संकेत करती है जो यीशु पर विश्वास करता है सो कभी नहीं मरेगा। यदि वह मर भी जाय तोभी जीएगा।

२ यीशु की घोषणा अन्धे के जीवन में पूरी होती है— देखो लूक ४:१६-१९।

यीशु की घोषणा के अनुसार अंधा दृष्टि पाता है। आज भी कलीसिया के जीवन में इस घोषणा का अनुभव किया जाता है।

३ विश्वास करने वाले चंगे किये जाते हैं:—
अंधा चंगा किया गया। आज भी सुनने वाले यीशु के पास आते हैं और चंगापन प्राप्त करते हैं। आज यीशु हमारे बीच में है। हम उसकी सुने। उससे प्रार्थना करें। उससे चंगापन प्राप्त करें। और परमेश्वर की महिमा करें।

इनवोकावित

(उसने मुझे पुकारा) मत्ती ४।१-११

यीशु की परीक्षा उसके बपतिस्मा के साथ है। वह परीक्षा में भी अपने आप को मसीह प्रकट करता है। उसके जीवन में भजन २:७ की बातें पूरी होने वाली थीं। वह इसी कारण परीक्षा के समय भी अपने विश्वास में सावधान रहता है। अर्थात वह मसीह की सामर्थ को वहाँ व्यवहार नहीं करता जहाँ ईश्वर की इच्छा नहीं है।

तीन प्रकार की परीक्षाएँ

१ वह दे कि ये पत्थर रोटियाँ बन जाएँ (४।३): यह परीक्षा शारीरिक इच्छा की ओर संकेत करती है। यीशु शारीरिक इच्छा को पूरी करने के लिए पत्थर को रोटी नहीं बना सकता था। वह मसीह होकर पत्थर को रोटी नहीं बना सकता था—परन्तु शरीर की इच्छा को पूरी नहीं कर सकता था। इसी प्रकार मसीही लोग भी शरीर की इच्छा को पूरी करने के लिए मसीही शक्ति को व्यवहार न करें।

२ अपने आप को नीचे गिरा दे (६) चोट न लगने पर लोग विश्वास करते। परन्तु ईश्वर की इच्छा थी कि उसका पुत्र क्रूस को लोगों के लिए प्राण कमावे। देखो यशायाह ५३ दुःख एवं क्रूस के द्वारा ही यीशु मसीह प्रकट किया जायगा। आज भी मसीही का वास्तविक रूप दुःख में प्रगट होता है। देखो पतरस एवं पावल का जीवन।

Gossner Mission

१ पिता कर पुत्रे प्रणाम कर (९) यीशु ईश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए आया था। वह किसी कीमत पर शैतान की इच्छा पूरी नहीं कर सकता था। वह क्रूस के द्वारा ही राज्य प्राप्त करेगा। वह कंटीला मुकुट पहन कर ही शासन करता है। एक मसीही को भी ईश्वर की इच्छा के अनुसार महिमा प्राप्त करना है।

यीशु अपने आप को ईश्वर की इच्छा में सौंप देता था। हम भी परीक्षा के समय ईश्वर की इच्छा के अनुसार चलें एवं रहें।

रेमिनेसजेरे (स्मरण कर)

मत्ती १५:२१-२८

वचन से प्रगट होता है कि सुसमाचार में सब प्रकार की रुकावटें टूटने का आरंभ है। यीशु अन्य जातियों के जगत में प्रवेश करता है और अपना काम आरंभ कर देता है। लोग विश्वास से आशीष प्राप्त करते हैं। आशीष के लिए विश्वास की विशेष आवश्यकता बतलायी जाती है।

"आशीष खींचने वाला विश्वास"

१ इस प्रकार के विश्वास में प्रेम होता है।—
प्रेम के कारण स्त्री यीशु की दया को पहचानती है। वह अपनी बेटी के लिए दया मांगती है। वह यीशु को प्रभु स्वीकार करती है। वह प्रेम के कारण आप भी ईश्वर के लिए बदल जाती है।

२ इस प्रकार का विश्वास आराधना में पूर्ण होता है:—
वह चिल्लाती हुई पीछे आती है। वह झुक कर प्रणाम करती है। हम भी जब यीशु के पास आते हैं तब उसकी महानता की आराधना करें और अन्त में अपनी आवश्यकताओं के लिए विनती करें।

हम भी इसी स्त्री के जोड़े। परमेश्वर ऐसा विश्वास चाहता है जिसमें आशा की ज्योति हो। परमेश्वर ऐसा विश्वास पसंद करता है जो अंधकार को प्रकाशमय कर सकता है।

प्रतिलिपि

सेवा में,

अध्यक्ष,
नोर्थ-वेस्टर्न अंचल
बी० ई० एल० चर्च, राँची।

महाशय,

सश्रद्ध निवेदन ऐसा है कि हम लोग कुड़ू मंडली के भाई-बहन भ्रम में पड़कर अब तक कई कलीसिया में बहते आये।

अब हम लोग इधर-उधर से अगुवों के साथ बात चीत किये। और अपनी अपनी भूल को पहचान लिये हैं। बी०ई०एल० चर्च के अधिकारियों और भाई-बहनों से क्षमा मांगते हैं। क्षमा दीजिये। फिर हम लोगों को सेवा अंचल आफिस से ही किया जावे। इसलिए अविलम्ब हमारी सुधि लेने के लिए कुड़ू आकर हमें १-१-८३ से ग्रहण करने का प्रबन्ध कीजिये। मंडली में पुकार किया गया है।

इस उपकार के लिए नोर्थ-वेस्टर्न अंचल के अधिकारियों और सदस्यों का धन्यवादी बने रहेंगे।

आप सबों का विश्वस्त

मंडली के पंच और पंचों की सही।—

१ प्रभुदास लकड़ा २ धर्म देवोन लकड़ा ३ विश्वास मिंज लकड़ा ४ प्रकाश कुजूर ५ विश्वास लकड़ा
६ एस० टोप्पो ७ सैम्हस लकड़ा। कुड़ू मंडली।

१४ परवन्धु जनवरी १९८३

Gossner Mission

स्वप्निल संघर्ष

— सिरिल हेम्बरोम

"जीवन एक संघर्ष है", यह कथन अक्षरश: सत्य है। इसी संघर्ष में ही जीवन है। संघर्ष अनेक प्रकार के और अनेक प्रकार से किये जाते हैं। मसीही जीवन भी एक संघर्षमय जीवन है। संघर्ष साक्षात या परोक्ष भी होते हैं; वे जागृत और निद्रावस्था में भी होते हैं। संघर्ष छोटे या बड़े भी होते हैं। वे लौकिक और आत्मिक भी होते हैं। मैं ने भी उक्त संघर्षों का अपने ढंग से अनुभव किया है। परन्तु यहां मैं स्वप्नों में शैतान (विरोधी शक्तियों) से संघर्ष करने की बातों की चर्चा करना चाहता हूँ। इसीलिए मैं ने इस लेख का शीर्षक भी "स्वप्निल संघर्ष" दिया है।

मेरा अब तक का सम्पूर्ण जीवन संघर्षपूर्ण रहा है और इसमें मुझे विजय भी प्राप्त हुआ है, जिसका श्रेय एक मात्र उद्धारकर्ता परमेश्वर को है। विगत सितम्बर माह १९८२ में मुझे एक अविराल कठिन संघर्ष का सामना करना पड़ा है, जिसमें मुझे विजय भी मिली है। मैं उसी स्वप्निल संघर्ष की यहां चर्चा करूंगा। मैं ने विगत उक्त माह में ६ ऐसे स्वप्न देखे जो एक से एक संघर्षमय थे। मैं उसकी एक-एक करके चर्चा करूंगा। इस चर्चा का यहां लक्ष्य है कि मैं परमेश्वर की सामर्थ और सहायता से किस तरह उन संघर्षों में विजयी हुआ उसकी साक्षी दूं ताकि अनेक लोग भी परमेश्वर की सामर्थ तथा सहायता से उस प्रकार के संघर्षों में डटे रहकर विजयी होने की प्रेरणा प्राप्त करें।

सर्वप्रथम राँची ही में मैं ने एक स्वप्न देखा जिसमें एक बाघ को मैं ने पीछा करते हुए देखा। वे उसके सामने से भागा पर वह मेरा पीछा करने के सिलसिले में दो महिलाओं (भारत की प्रधान मंत्री और इंगलैंड की रानी) में परिणत हो गया। भागने का उपाय न पाकर मैं उनसे लड़ने को तैयार हो गया। वे दोनों अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित थीं। वे मुझे मारना ही चाहती थी कि मैं ने परमेश्वर से सामर्थ और सहायता की प्रार्थना की और दोनों को एक लकड़ी की कुर्सी से मार कर अपंग कर दिया और वे बेकाम की हो गयीं।

दूसरे स्वप्न में मैं ने देखा कि एक कौवा मेरे सिर पर झपट मारना चाहता है। दो तीन बार उसने यह कोशिश किया पर मैं ने उसे मार भगाया। फिर जब उसने यही प्रयास किया तो मैं ने भी पक्षियों की भांति उड़कर उसका पीछा कर ऐसा भगाया कि वह बिलकुल लापता हो गया।

तीसरे स्वप्न में मैं ने देखा कि एक काला पागल कुत्ता मुझे काटने दौड़ा आ रहा है। पहले तो मैं उससे भगाने की कोशिस किया पर न भाग सकने पर मैं ने प्रार्थना किया कि "हे प्रभु मुझे इससे लड़ने की शक्ति दे और मैं ने उसे पकड़ कर फाड़ डाला और वह मर गया।

चौथे स्वप्न में मैंने देखा कि एक जवान मुझ से लड़ने के लिए दौड़ा आ रहा है। मेरे पास आते ही वह एक छोटा बच्चा बन गया। वह क्रोध भरी नजरों से मुझे देखता हुआ मुझ से भिड़ गया। मैं ने उसको दोनों हाथों से गले में जोर से दबाया और प्रार्थना की कि "हे प्रभु मुझे ऐसी शक्ति दे कि मैं इसे खत्म कर दूं।" मुझे निश्चय था कि वह शैतान था क्योंकि उसके मुझे छूते ही मेरी शक्ति क्षीण होती हुई प्रतीत हो रही थी। मैं ने उक्त प्रार्थना तीन बार दुहरायी तब मेरे विद्यार्थियों ने मुझे जगा दिया। मुझे याद है कि मैं उसे भली भांति गले में दबाया था जिससे वह भाग ही नहीं सकता था। (१७।९-८२)

पांचने स्वप्न में मैंने देखा कि एक बाघ मुझे पकड़ने के लिए दौड़ा आ रहा है। मैंने परमेश्वर से शक्ति के लिए प्रार्थना की और उसे पकड़कर पूर्ण रूप से फाड़ डाला और वह मर गया।

Gossner Mission

छठे स्वप्न में मैंने देखा कि एक भैंसा सभी लोगों को सींग मारना चाहता है। मैंने डंडा उठाया और उसे ऐसा मार मारा कि वह जान लेकर भाग खड़ा हुआ। मैंने उसकी पीछा किया और वह शेर बन गया। फिर भी मैं उसे मारता ही रहा। फिर वह बिल्ली बन गया और फिर भी मैं उसे दौड़ाता हुआ मारता रहा। मुझे विश्वास है मैं सदा विजयी होऊंगा यद्यपि संघर्ष कठिन है।

विजय देने वाले परमेश्वर को मैं धन्यवाद देता हूँ।

मसीही एकता

धार्मिक दृष्टिकोण से आज संसार में मसीही बहुतसी भागों में बंटी हुई है। देखा जाता है कि कुछ लोग प्रोटेस्टेंट एवं कुछ लोग कैथलिक है, किन्तु इनमें भी अनेक सम्प्रदाय संगठन एवं समुदाय है। सभी अपने अपने विचार धारा के अनुसार एक ही श्रद्धाकर्त्ता प्रभु परमेश्वर की सेवा एवं उपासना में लगे हैं। सभी स्वीकार करते हैं कि हममें कुछ न कुछ त्रुटियां अवश्य है। वर्त्तमान में विश्व कौंसिल की ओर से ऐसा प्रयत्न किया जा रहा है कि सब में एकता हो जाय धार्मिक गुरुओं के बीच में सभाएँ एवं सेमीनार किए जा रहे हैं कि उनमें ऐसी कोई विचार हो जिस्से सभी सम्प्रदाय एक ही मार्ग में सहमत हो जायें। जिसके ऊपर एकता की नींव डाली जाय। किन्तु इस बात का अनुभव बहुत ही कम लोग कर रहे हैं। वास्तव में एकता तब तक नहीं आ सकती जब तक कि सभी सम्प्रदाय अपने अपने विधि विश्वासों, शिक्षाओं, विधियों इत्यादि को छोड़कर पूर्ण रुप से बाइबल की ओर नहीं आ जाते और उनकी सारी शिक्षाओं को नहीं अपनाते। यदि ऐसा किया जाय तो एकता अवश्य ही विद्यमान होगी।

परमेश्वर फूट तथा झगड़े से बैर रखता है। धर्म-शास्त्र बाइबल में इसका वर्णन स्पष्ट रुप से हुआ है। उदाहरण स्वरूप कुरिन्थुस में प्रभु की कलीसिया की एक मंडली में जब फूट हुई तो प्रेरित पौलुस ने इस बात की निन्दा की जो हमें १ कुरि० १:१०-१७ में पूरी रीति से मिलता है। इस पदों में हम एकता के विषय पौलुस के निवेदन को पाते हैं। पौलुस इन पदों में तीन प्रश्न पूछे जो हमें उनकी मूर्खतापूर्ण दशा को दर्शाती है। (१) क्या मसीह बंट गया? (२) क्या पौलुस तुम्हारे लिए क्रूस पर चढ़ाया गया? (३) क्या तुम्हें पौलुस के नाम बपतिस्मा मिला? कदापि नहीं, निष्कर्ष यह था कि सबको मसीह में एक होना चाहिए।

रोमियों १६:१७-१८ में फिर पौलुस ने कहा— अब हे भाइयों मैं तुमसे विनती करता हूँ, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुमने पाई है, फूट पड़वे और ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो और उनसे दूर रहो। क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु यीशु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते हैं। और अपनी चिकनी चुपड़ी बातों के द्वारा सीधे सादे मन के लोगों को बहकाते हैं। बहुतेरे आज इसी बहकावे में है क्योंकि वे आज सेवावनी के सच्चे और पवित्र सन्देश में ध्यान नहीं देते।

यीशु मसीह एकता के लिए प्रार्थना की, साथ ही उनके लिए भी जो वचन के द्वारा विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हो। जैसा तू हे पिता मुझ में है और मैं तुझमें हूँ, वैसे वे भी हममें हों, इसलिए कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा। (यूहन्ना १७:२०-२१)

फिर हम पौलुस के लेखों में पाते है कि एकता के लिए एक नींव का वर्णन हुआ है जो हमें इफिसियों ४:१-६ में मिलता है इसमें सारी वस्तुएँ एक है। यदि संसार में अनेकों विभागें अथवा कलीसियाएँ है और यदि उन सबको मिलाकर एक कलीसिया बन सकती है, तो यही बात परमेश्वर एवं प्रभु यीशु मसीह के विषय में भी कही जा सकती है। कितनी मूर्खतापूर्ण बात है।

प्रिय मित्रों, परमेश्वर ने हमें एक ही पुस्तक बाइबल दी है। यदि हम सब इसी पुस्तक को पढ़े, इसी में विश्वास करें, इसकी शिक्षाओं को माने तो हम सब एक ही शिक्षा पर चलने वाले होंगे, एक ही कलीसिया में मिलाये जायेंगे, एक ही नाम से कहलावेंगे, एक ही तरह से उपासना करेंगे और एक ही प्रकार का प्रचार करेंगे। बाइबल हमें कभी भी अलग-अलग नहीं करेगी पर हम सबको एक करेगी। मसीह यीशु ने यह प्रार्थना नहीं की थी कि

Gossner Mission

हममें फूट हो परन्तु यह कि हम सब एक हो। इसलिए जब हम सब अपने उद्धार कर्त्ता प्रभु यीशु मसीह की इच्छा एवं आज्ञा के वचनानुसार पालन करेंगे एवं पूर्ण करेंगे तभी हम सब एक होंगे, इसके अतिरिक्त नहीं। निकट भविष्य में हमारे उद्धारकर्त्ता का पुनः आगमन बहुत शीघ्र होने वाला है, जिसकी भविष्यवाणियां वचनानुसार पूरी हो रही है। एक समय आयगा जब हमें शैतान की शक्तियों का सामना करना पड़ेगा। यदि हम सब प्रभु में एक नहीं होंगे तो हम सभी शैतान की शक्तियों का सामना नहीं कर पायेंगे और सदा काल का दण्ड भोगेंगे। सो आइए हम सभी अपनी एकता के लिए आज ही से प्रभु से प्रार्थना करें और तैयारी करें कि जिस शैतान की शक्तियों पर विजयी हो प्रभु परमेश्वर हम सभों की अगवाई करें और सर्वदा अपने पवित्र हाथों के नीचे रखते हुए आशीषित करें।

॥ आमीन ॥

— Ashim Kumar Nathaniel

"नूतन वर्ष का सन्देश"

वर्ष के प्रथम दिन में उस महान प्रेमी परमेश्वर पिता का धन्यवाद हो जिसने वर्ष १९८२ में हमें सारी दुःख तकलीफों एवं बिमारी से रक्षा करके हमारे जीवन में अपरम्पार आशीष प्रदान की। अब हम नये वर्ष १९८३ की ओर अग्रसर हो चुके हैं। हम विश्वास करते हैं कि जिस प्रकार परमेश्वर की आशीषों से हमारा बीता वर्ष सुखी और सफल पूर्वक बीता, वैसा ही यह वर्ष भी होगा।

दिन और साल तो बीतते जाते, आदम जात सब मरते जाते किन्तु परमेश्वर अचल और अटल है। वह कल और आज और सर्वदा एकसा है। इतना ही नहीं पर ईश्वर हमें निश्चयता देकर कहता है कि मत डर क्योंकि मैं तेरे संग हूँ, तेरी सहायता करता और अपने हाथों से तुझे सम्भालता रहूँगा। ईश्वर हमों के साथ सदाकों रहता है। प्रभु ने भी कहा है कि मैं जगत के अन्तलों सब दिन तुम्हारे संग हूँ। इस नए साल में हमारा प्रभु हमारे साथ चलता है और हमारे जीवन का साथी बनता है। ईश्वर के साथ की यह संगति इस साल में घनिष्ठ और जीवित होवे। यह संगति केवल इस दुनिया ही तक नहीं पर सनातन को हो जाती। यहां केवल शुरू है पर चिरस्थाई संगति स्वर्ग की है। जो उद्धार पाए हुओं के साथ होगा। जिसका आरम्भ इसी नए वर्ष में होवे। धन्य है वे जिनको प्रभु इस नए साल में अपनी संगति का अनुग्रह देता है। अब प्रभु हमारे साथ है जो वह हमें घटी टुटी, संकट, क्लेश, घबराहट शैतान, अकाल, मरी पर हमारा साथी आनन्द से बेड़ा पार कर देगा।

ईश्वर सदा सर्वदा हमारी सुधि लिता रहता है। जीवो हम निकम्मे हैं ईश्वर को हमारा स्मरण है। हमारा आना जाना हमारा उठना बैठना सबको परमेश्वर जानता है। प्रभु कहता है तुम्हारे सिर के बाल भी गिने हुए हैं मत डरो! तुम गौरैयों से बढ़कर हो। नए साल के हर एक क्षण गिने गए हैं। ईश्वर हर समय हमारे लिए चिन्तित है। ऐसा कोई समय नहीं जिसमें ईश्वर अपना ध्यान हमसे हटायें और उसको एक ही चिन्ता है कि हमारी रक्षा करें। इससे हम दाढ़स लेवे कि हमारे साथ एक हमारा शुभ चिन्तक जा रहा है जो हमको हर समय आड़ किये हुए रहेगा। आगे पीछे, दाहिने, बांये उसके दूत रहेंगे और हम आनन्द के साथ आगे बढ़ेंगे। नए वर्ष की सब चिन्ता और फिक्र मन के सारे भय हम इसी हमारे शुभ चिन्तक को सौंप देवे। वह हमारे लिए सदा जागृत रहेगा और सुधि लेता रहेगा और न सिर्फ इस वर्ष की यात्रा, पर सारी जीवन यात्रा को भी हम पूरा कर सकेंगे। हम मनुष्यों को प्रायः जोखिम और विपत्तियों का डर घिरा ही रहता है। इस नए साल में विभिन्न लोग विभिन्न किस्म की विपत्ति का मन में रखते हैं। किसी को बिमारी का डर, किसी को व्यापार का डर किसी को अकाल को भूख का डर और अधिक से अधिक लोगों को मृत्यु का डर लगा रहता है। किन्तु ईश्वर का वचन हमें हिदायत करता है कि यहोवा तेरी सारी विपत्ति से रक्षा करेगा, वह तेरे प्राण की रक्षा करेगा। यहोवा तेरे आने जाने में रक्षा अब से सदाकों करता रहेगा। यहोवा सारी विपत्ति से हमारी रक्षा कर सकता है। सचमुच में ईश्वर हमारी बुराई नहीं चाहता है। अनेक विपत्तियों को ईश्वर हमारे

Gossner Mission

लिए भेजता है जिस्से हम ईश्वर में भरोसा करना सीखें और इस संसार के प्यार में न डूब जावें। जैसा सोना तापा जाकर चोखा सोना निकलता है वैसे ही हम भी विपत्ति रूपी ईश्वरीय परीक्षा में तापा जाकर खरे एवं पवित्र निकलें। ऐसे विपत्तियों से हमें नहीं डरना है क्योंकि ईश्वर का वचन कहता कि परमेश्वर सच्चा है और वह तुम्हें सामर्थ के बाहर परीक्षा में पड़ने न देगा, वरन् परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको।

ईश्वर पिता विपत्तियों को अपने विश्वासियों से भेजता है और हमारी सर्वदा रक्षा करता है। इसी विश्वास और निश्चयता के साथ हम नये साल में नए उमंग, स्फूर्ति एवं आगृति सहित प्रवेश करें। प्रभु दुःख को सुख में बदल देगा। हर एक विश्वासी की रक्षा करेगा घर-घराने की रक्षा करेगा। दुःख-सुख में, संकट-क्लेश में अकाल-मृत्यु जो मरी में, घटी-टूटी में, बैरियों की सताहट जो षड्यंत्र से आंख-मूंद से षैतान के अग्नि बाणों से, भयानक परीक्षा से पाप के विष से, पवित्र आत्मा के विरुद्ध के पाप से ईश्वर हमारी रक्षा समूचा साल और जीवन भर करता रहेगा। मुर्गी जब खोजने-खाने को निकलती है, बराबर बच्चों को अपने साथ रखती है कभी उनको अकेले नहीं छोड़ती है। बराबर सावधान रहती है कि बच्चों को तकलीफ न हो। इस तरह जिम्मेदारी की रखवाली करती रहती है। जब आराम करती है तो बच्चों को डैनों के तले ढांप कर रखती है। ऐसा ही हमारा स्वर्गीय पिता भी हमारा रक्षक होकर साथ साथ रहता है और बुराई आने से हमको छुड़ाता और ओढ़ करता है। आदम के अवाज्ञाकारी होने से सब पाप-दुःख मृत्यु इस दुनिया में आये, दूसरे आदम अर्थात यीशु के आज्ञाकारी होने से दुनियां को इस पाप दुःख-मृत्यु से मुक्ति मिली।

हम यह न समझें कि सारी विधियों को पूरी करने से आज्ञाकारी होना सीख चुके। इस नए साल में दिल दिल ईश्वर की पवित्र इच्छा को पूरी करें एवं आज्ञाकारी बनें रहें। आनेवाला १९८३ वर्ष हमारे (सभी मसीही विश्वासी के) लिए प्रतिज्ञा का वर्ष हो और हम सभी मसीह के उद्देश्यों और कार्यों को पूरा करने के लिए निम्न कुछ प्रतिज्ञाएं करें —

(१) मेरा हर पल यीशु की छत्र छाया में व्यतीत होवा और मैं यीशु के प्रिय कार्यों को करूंगा। (२) मैं प्रत्येक रविवार को चर्च में परमेश्वर की आराधना करूंगा और जो प्रभु से दूर है उसे परमेश्वर के पास लाने का प्रयत्न करूंगा। (३) प्रत्येक मसीही संगति में भाग लूंगा और अधिक से अधिक आत्माओं को जीतकर मसीह के पास लाऊं। (४) पिछले वर्ष जिन लोगों से चाहे मित्र, रिश्तेदार या पड़ोसी हो क्यों न हो मेरा व्यवहार ठीक नहीं था उनकी ओर मित्रता का हाथ बढ़ाते हुए उन से सहयोग लेकर प्रत्येक काम समाज की उन्नति के लिए करूंगा। इन कार्यों में मसीहीपन झलके ऐसा हो काम करूंगा, अधिक से अधिक समय प्रार्थना में बिताऊंगा।

साथ प्रभु हम सभों को ऐसी सामर्थ दे कि उपरोक्त प्रतिज्ञाओं को पूरा करते हुए इस नूतन वर्ष में अपने उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह की शरण लेवें और प्रभु यीशु मसीह को अपना अगुवा और सहायक जानकर प्रभु में जीवन व्यतीत करें। प्रभु परमेश्वर सर्वदा अपने शरण में रखे और अनन्त जीवन में पहुँचावे—आमीन।

Ashim Kumar Nathaniel

Burdwan

अति मूल्यवान वस्तु

(Most precious thing in the world)

संयोगवश एक राहगीर अपने गंतव्य स्थान पर (Destination) पहुँच जाने की इच्छा से जाने लगा, जाते-जाते वह बहुत दूर चला गया। बहुत दूर की यात्रा के पश्चात् वह एक स्थान पर आराम करने की जगह देखने लगा। अपनी मन पसन्द जगह पा कर कुछ क्षणिक आराम किया। तत्पश्चात् पुनः अपनी यात्रा पर चल पड़ा।

Gossner Mission

उसने अपनी निगाहें इधर उधर डाली। वह अपने व्यक्तिगत चिन्तन में मगन भी था। ठीक ऐसी ही अवस्था में उस राहगीर को रास्ते ने एक ऐसी जगह पर पहुँचाया जहाँ दीवार के उपरी हिस्से में लिखा था—"खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा" (मत्ती ७:७) उसने दीवार पर अपनी आंखें टिका दी। लिखे हुए एक-एक शब्द को पढ़ डाला और वहाँ उसने खटखटाया। दरवाजा खुल गया, उसने देखा, एक द्वारपाल खड़ा है, जो अति भड़कीले वस्त्रों से विभूषित था। उसकी गतिविधियाँ कष्टदायी सी लगती थी। फिर भी वह उस द्वारपाल के सामने प्रस्तुत हुआ। द्वारपाल नम्रतापूर्वक उस राहगीर से पेश आया—उसने राहगीर से कहा—"आप अपने साथ अति मूल्यवान वस्तु लाये हो तो इस भवन के अन्दर आने के काबिल हैं अन्यथा नहीं"। यह सुनकर उस व्यक्ति को भवन के अन्दर जाने की अत्याधिक इच्छा हुई। उसके मन में प्रवेश करने की उत्सुकता यहाँ तक बढ़ गयी कि वह संसार की अति मूल्यवान वस्तु की खोज में तुरन्त चला गया। ज्योंहि वह जाने लगा, लोगों के बीच में यह बातचीत होते सुना कि सिकन्दर महान की तलवार मूल्यवान पदार्थों से बनी थी जिसके प्रयोग से उसने बहुत सारे देशों को जीत लिया था। राहगीर ने सोचा कदाचित यही तलवार अति मूल्यवान वस्तु हो सकती है। किसी तरह उस तलवार की उपलब्धि की इच्छा उसे हुई और तब वह उस तलवार को प्राप्त कर उस बड़े फाटक तक पहुँच गया, चूँकि उसे उस अत्यन्त भव्य भवन के अन्दर प्रवेश होना है। उसने दरवाजा खटखटाया। द्वारपाल से साक्षात्कार हुआ। सिकन्दर महान की तलवार उसने भेंट की। द्वारपाल होले से मुस्कुराया और राहगीर को तलवार फेंकने का आदेश दिया। मतलब यह अति मूल्यवान वस्तु में नहीं गिना गया। राहगीर अफसोस की उसांस छोड़ कर पुनः सिकन्दर महान की तलवार से अधिक मूल्यवान वस्तु की खोज में चल पड़ा। रास्ते पर अथवा चौराहों पर लोगों के माध्यम से सोने की चीजों अति मूल्यवान वस्तुएँ जान पड़ी। विभिन्न स्थानों में घूमते हुए उसे दुनिया के लोगों के विचार से सोने की जंजीर ही अति मूल्यवान वस्तु हो सकती है। अपनी लगन से तनिक भी न हटकर वह सोने की जंजीर पाने में सफल हो गया और उस द्वारपाल के पास हाजिर हो गया। उसने वह सोने की जंजीर उसे दिखाया। द्वारपाल अति विस्मय की दृष्टि से उसे देखकर अग्राह्य योग्य साबित किया, उसने कहा इस भवन की नलियाँ सोने की बनी है अतएव यह अति मूल्यवान वस्तु कदापि नहीं है। वह व्यक्ति भवन के भीतर पांव रखने को अत्यन्त इच्छुक है। मन ही मन वह दृढ़ संकल्प करता है। आखिर संसार की अति मूल्यवान वस्तु क्या है? वह मन ही मन में बुदबुदाया। और फिर उस वस्तु की खोज में चल दिया। कितने चढ़ाओं उतारों को पार करते हुए भिन्न-भिन्न देशों के कोने-कोने में पहुँच कर उस राहगीर की समझ में आया कि हीरे जवाहरात की चीजें ही अति मूल्यवान वस्तु है। इस निष्कर्ष में आकर वह सोचने लगा संसार महाराजाओं के राजसिंहासन में जड़ित हीरे के कण से निर्मित वस्तु ही वह है। आखिर वह उन दिनों में बहुचर्चित महाराजा के राजसिंहासन में सुशोभित कोहिनूर हीरे से भी अधिक मूल्यवान चीज पाने में सफलवन्त हो गया। उसके चेहरे में आनन्द की लहर फैल गयी। वह आत्मविभोर हो गया। उसका मन भी गवाही देने लगा कि इस बार उसे अवश्य ही इस भवन में प्रवेश करने की अनुमति मिलेगी। राहगीर पहले की तरह उस द्वारपाल के पास पहुंचा और अति मूल्यवान वस्तु पेश किया, परन्तु द्वारपाल ने इसे भी ग्रहण नहीं किया। उसने राहगीर को दिखाया—भव्य भवन की दीवारें वह नलियाँ हीरे जवाहरात की हैं। ये चीजें अति मूल्यवान वस्तुओं की गिनती में नहीं हैं। ये सारी चीजें क्षणभंगुर हैं, नाशमान हैं यह सुन कर राहगीर अत्याधिक दुःखित हुआ, लेकिन भव्य भवन के अन्दर प्रविष्ट होने की उत्कंठ इच्छा उसके दिल में ऐसा घर कर गयी कि वह तनिक भी भूल नहीं सकता। वह गम्भीर हो अति चिन्तित मन से उस फाटक के इर्द गीर्द एक छायेदार वृक्ष के नीचे बने बैठक में बैठ कर कुछ खाने की चीज निकाल कर खाने लगा। वह ऐसी स्थिति में था कि जब उसके पास के खाने की चीजें समाप्ति पर थी और कुछ नहीं रह गया था। ठीक ऐसे ही अवसर पर एक दूसरा व्यक्ति वहाँ आ गया और उससे कुछ खाने को मांगा। पहले राहगीर को यह सोचने का मौका नहीं मिला कि इसके बाद खाने के लिए अपने पास कुछ है या

Gossner Mission

नहीं। वह शीघ्र ही दया और अनुग्रह के वशीभूत होकर दूसरे व्यक्ति को अपने बचे हुए खाने की सारी चीजें सुपुर्द कर दिया। ज्योंहि सुपुर्द करने की गतिविधि समाप्त हुई शीघ्रातिशीघ्र उस द्वारपाल ने प्रथम शाहगीर को उस भव्य भवन में प्रविष्ट होने का आदेश दे दिया। उस व्यक्ति की समझ में यह बात नहीं आयी। जिसको अनगिनत मुद्राएँ, अति मूल्यवान वस्तु के लिए पानी की तरह बहाने के बावजूद भी उपलब्ध नहीं हुआ और अब दया से सिर्फ खाने की चीजें दे दिया तो उससे भव्य भवन में प्रवेश होने की अनुमति मिल गयी।

प्रिय पाठको, आपको मालूम हो गया होगा कि इस कहानी से यह स्पष्ट है कि लाखों, करोड़ों रुपये से दया अनुग्रह नहीं खरीदे जाते परन्तु मन हृदय पटल पर पवित्र आत्मा की अगुवाई में आंकी जाती है। प्रथम शाहगीर ने द्वितीय व्यक्ति को अपने कर्त्तव्य परायण के साथ-साथ मन एवं हृदय से क्षमा तथा अनुग्रह दिखाई। इसी तरह हमलोगों के हृदय में भी दया और अनुग्रह होनी चाहिए। स्वार्थसिद्धि हेतु नहीं अपितु परमार्थ के निमित्त हमेशा तत्पर एवं मुस्तैदी रहना परमावश्यक है।

इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हिचक बाधकर चले कि हम पर दया हो और वह अनुग्रह पाएँ जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।

(इब्रानियों ६४:१)।

Suman Augustin Barla.
Raurkela.

विश्वास

बड़े बाड़ वृक्ष के तले मेरे पहुँचने से पहले ही एक परिवार चिलचिलाती धूप से बचने के लिए बैठा था। पास ही उनसे कुछ ही दूरी पर एक सन्यासी चिलम पीने की तैयारी में व्यस्त था। मैं भी धूप से बचने के ख्याल से वहीं एक पत्थर पर जा बैठा। गर्म हवा का झोंका आता और मुँह को जलाकर चला जाता था। बच्चों में चंचलता स्वभाविक है, लेकिन उस परिवार के बच्चों को देखने से विदित हुआ कि शायद उन्हें बहुत दिनों से उचित भोजन उपलब्ध नहीं हुआ है, जिसके कारण उनके चेहरे मुरझाये तथा सूखे दिखाई पड़ते थे। एक लड़का अपने सिर को दोनों ठेहुनों के बीच डालकर सोया था। दूसरी लड़की जमीन पर लेटी थी। सबसे छोटी माँ को गोदी के लिये तंग कर रही थी। परिवार के पास एक पोटली को छोड़ और कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। शायद उसमें उनके कपड़े तथा बर्त्तन थे। माँ, बहुत भूख लगी है, कुछ खाने को दे, बच्ची बार-बार यही दोहरा रही थी। ऐसा विदित होता था कि वह एकाग्र हो कुछ गम्भीर बातें सोच रही थी। इतने में बच्ची ने फिर साड़ी टानकर कहा—"माँ, रोटी दे नहीं तो मर जाऊँगी" "बेटी, थोड़ा सब्र कर, गांव पहुँचने दे, कहीं से भी रोटी लाकर तुम्हें दूँगी—माँ ने प्यार से कहा। लेकिन जब लड़की जिद करती रही तो माँ ने आक्रोश में आ कहा—"कपाल थेके दीबो, आमार काछे रोटी नाय" मैंने सोचा कि बिहार के इस निर्जन इलाके में यह बंगाली स्त्री कहाँ से आ फंसी। मुझे भी बच्ची पर तरस आ गई लेकिन मेरे पास भी खाने की कोई वस्तु न थी। उसका पति दूर बैठा सन्यासी के चिलम की तैयारी देखने में लीन था। इसके पश्चात बच्ची जोर-जोर से रोने लगी।

मैंने हमदर्दी दिखाने के ख्याल से पूछा—"क्या आपलोगों के पास बच्ची को देने के लिए कुछ भी नहीं है? सफर करते समय कुछ न कुछ जरूर लेनी चाहिए। अभी तो गाँव काफी दूर है, तबतक में बच्ची की हालत और भी खराब हो सकती है। मेरी बातों का कुछ भी प्रत्युत्तर न दे वह स्त्री दूर में उड़ते हुए चीलों को देखने लगी। फिर उसने कहा—"बेटी, यदि ईश्वर की कृपा हुई तो निश्चय ही तुझे रोटी मिलेगी"। बच्ची का सिसकना जारी रहा। इतने में एक पत्तल में चार पूड़ी तथा तरकारी "धप" की आवाज के साथ लड़की के फ्राक में आ गिरी। उसकी माँ आश्चर्य से वृक्ष के उपर देखने

(शेष अगले अंक में)

Edited & Published by : Rev. Dr. M. Bage, Pramukh Adhyaksh on behalf of the G. E. L Church and Printed at G. E. L. Church Press. Main Road, Ranchi.

Gossner Mission

aus Ordner G.E.L. Annual
1975-1976 (63)

G1/120

Gossner Mission

धर्मबन्धु

रजिस्टर्ड न· आर· एन·सी.४

वार्षिक मूल्य ५ रु०

वर्ष — ६५ रांची, मई १९७५ संख्या न० — ५

EINGEGANGEN
14. AUG. 1975
Erledigt .....

"सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुँचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं"
(मत्ती ७:१४)।

गोस्सनर चर्च को मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

Editor & Publisher
Pramukh Adhyaksh,

Associate Editor
Rev. C. S. R Topno

Editorial Committee

Rev. M. Tete
Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय		—	३
उपदेश की तैयारी	रेभ टेटे	—	४
कलीसियाई समाचार		—	६
अंडामन जी. ई. एल. चर्च में दौरा		—	७
„ द्वीप समूह में प्रथम महिला संघ		—	८
कलीसिया और हम		—	९
सूचना		—	१७
ग्राहक चंदा		—	१८
खून का लेखा		—	१९

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणत: १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य पांच रूपये हैं ।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें ।

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये पते पर ही भेजें। एसोसिएट एडीटर, घरबन्धु; जी० ई० एल० चर्च [कि० एस० एस० ऑफिस], राँची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता० तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए ।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इसमें बांयी ओर 1½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है ।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेज

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा ।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रखनी चाहिये, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगा ।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालू की जायगी ।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें ।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १०-ता० के पहले ही भेजें ।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवत: ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छपे जाते हैं; ग्राहक चन्दा के बाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें ।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवत : डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित कुछ लिखा लें ।

Gossner Mission

सम्पादकीय

कलीसियाई जीवन से मनुष्य का जीवन कलीसिया के काम में सीमित होना नहीं है, पर कलीसिया के काम में रत हो कर कलीसिया के लोगों के लिये और इससे अधिक कलीसिया के बाहर के लोगों के लिये जीना और काम करना है।

शिक्षा काम के द्वारा न केवल अपने बेटे-बेटी, भाई-बहन और कलीसिया के अन्य लोगों के लिये केवल शिक्षा की चिन्ता नहीं, पूरे क्षेत्र, अपने गांव, टोले महले के लोगों के लिये भी उपाय और कोशिश करें। अनेक स्थानों में शिक्षा की "भरपूरी" है, पर उद्देश्य पूर्ण शिक्षा न होने के कारण बेरोजगार की हैरानी और बढ़ जाती है, अतः इस ओर विशेष ध्यान दें—

स्वस्थ्य जीवन की चिन्ता भी अपने निजी लोगों के लिये केवल नहीं पर अगल-बगल वालों के लिये भी सोचना अनिवार्य है, क्योंकि बीमारी सिर्फ निजी कमजोरी या असावधानी से केवल नहीं पर छूत से भी होती है। आज गाँव और टोले महले में बीमारियों के रोक के लिये विशेष शिक्षा और उपाय की कोशिश करना आवश्यक है; स्वस्थ्य की सेवा में लोगों को तैयार करना आवश्यक है और जो स्वस्थ्य सेवा के लिये तैयार हैं ऐसों को उचित और आवश्यक स्थानों में लगाना और लाना भी आवश्यक है हम इस तरह भी सेवा कर सकते हैं।

आर्थिक बातों के लिये अधिकांश निजी परिवार, सम्बन्धी, व कुटुम्बियों की ही सोची जाती है, और उन्हीं के लिये ही कुछ उपाय किये जाते हैं। चाचा-भतीजे की नीति। पर मसीही को इस से भी आगे चलना है, लोगों के लिये खेती बारी, विभिन्न पेशा व व्यवसाय की सलाह देना अनिवार्य है, लोगों को ऋण देकर तबाह करना और उनकी सम्पति पर दखल जमाना मसीही प्यार का मजाक करना है। अपने लोगों की सीमा से पार न जावें।

धार्मिक शिक्षा, उपदेश मसीही झुंड तक सीमित नहीं पर अन्य लोगों, अन्य विचार वालों तक भी पहुँचाना आवश्यक है, मिशन सीमित और कृत्रिम नहीं, पर स्वाभाविक किया जाय। समय, जगह और कुल के लोगों में आधारित नहीं—

प्राण देने तक विश्वासी रह, और मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा। विश्वासी रहना कलीसिया के जीवन-पहलु में केवल नही पर उपरोक्त कहे पहलुओं के अतिरिक्त अन्य विभिन्न पहलुओं में भी विश्वासी रहना है।

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

मार्टिन टेटे

रोगाते

(बिन्ती करो)

लूक ११:५-१३

पहाड़ी उपदेश में यीशु ने शिष्यों को प्राथना करने की शिक्षा दिया है। उसने प्रार्थना का उदाहरण भी दिया (११:१-४)। प्रभु की प्रार्थना में सच्ची प्रार्थना की सब आवश्यकताएं हैं।

प्रार्थना के विषय यीशु की शिक्षा

१ निरन्तर प्रार्थना करो –

(क) प्राथना के द्वारा यीशु को संगति प्राप्त होती है। प्रार्थना में विश्वास और ईश्वर आपस में बात चीत करते हैं। प्रार्थना ही के द्वारा विश्वासी अपने सारे संकटों को ईश्वर को बतलाता है।

(ख) ईश्वर सुनने के लिए तैयार है। वह प्यारा मित्र है। वह कभी सोता नहीं परन्तु आप ही सुनने के लिए सदा जागृत है (५-८)।

२ प्रार्थना में प्रतिज्ञा—(९+१०)।

(क) मांगने वाले को दिया जाता है। ईश्वर आप ही देता है। अच्छा दान देता है।

(ख) ढूंढ़ने वाला पाता है। ईश्वर ढूंढ़ने वाले को मिल जाता है। ईश्वर में सब कुछ है।

(ग) खटखटाने वाले के लिए खोला जाता है अर्थात प्रार्थना सुनी जाती है।

३ प्रार्थना में शर्त — विश्वास सहित प्रार्थना सुनी जाती है। विश्वासी को ईश्वर पिता सांप नहीं परन्तु मच्छली ही देगा। अर्थात उचित वस्तु देगा, हानिकारक नहीं।

हे यीशु हमें ऐसा मन दे कि निरन्तर तेरी संगति में रहें।

स्वर्गारोहण

(प्रभु का स्वर्ग पर चढ़ना)

लूक २४.४६-५३

प्रभु यीशु पुराने नियम का सारांश बतलाता है अर्थात दुःख उठावेगा और मर जायगा। दुःख उठाना और मर जाना यीशु का कार्य्य है।

स्वर्गारोहण का आदेश

क, तुम उन सब बातों का गवाह हो — चेलों का कार्य्य है कि यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान की गवाही देंगे। यीशु की कलीसिया भी यीशु की मृत्यु की गवाही है।

ख, मन फिराव और पापों की क्षमा का प्रचार — यीशु की कलीसिया और सेवकों को प्रचार करना है कि यीशु की मृत्यु में पापों की क्षमा है। जीवन पाने के लिए लोग यीशु की ओर फिरें।

ग, पवित्रात्मा गवाहो के कार्य्य में सहायक होगा — वह आवेगा और चेलों को सामर्थ देगा (४९)। पवित्रात्मा की सहायता के विना गवाही का कार्य्य असम्भव है।

घ, गवाही और प्रचार के लिए बाहर जाना होगा — यीशु चेलों को शहर के बाहर और मंदिर से बाहर ले गया। यीशु बिदाई आशीष और आदेश देकर स्वर्ग को गया। वह आत्मिक रीति से हमारे मध्य में है। विश्वासी विश्वास से यीशु को देखता है और गवाही के कार्य्य के लिए यीरूशलीम से बाहर चला जाता है।

एकसौदी-मेरी सुन

यूहन्ना ७:३३-३९

यहूदियों के बीच में यीशु की व्यक्तित्व, शिक्षा और अभिप्राय के विषय विवाद होता रहा। वचन देहधारण किया। परमेश्वर का अधिकार उसके विचार प्रचार में प्रभावित हुआ। वह प्रचार करता हो चला गया।

घरबन्धु, मई १९७५

Gossner Mission

यीशु की निजी गवाही

क, मैं मर जाऊंगा :— फरीसियों ने यीशु को पकड़ना चाहा (३२) परन्तु यीशु का समय नहीं पहुँचा था। ईश्वर के समय में यीशु की मृत्यु हुई।

ख, मैं स्वर्ग में चढ़ जाऊंगा :— (३३-३६) यीशु मृत्यु से जो उठ कर स्वर्ग को चला जायगा। यीशु की मृत्यु पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के विषय साधारण मनुष्य नहीं बूझ सकता है। जब तक यीशु अपने को लोगों "पर प्रगट न करेगा" तब तक उसे कोई नहीं बूझेगा। लोग आत्मिक बातों को नहीं बूझ सकते थे। वे आत्मिक रीति से अन्धे थे। इसलिए यीशु की बातों को नहीं समझते थे।

ग, मैं जीवन का जल हूँ :— प्रभुभोज को ओर भी संकेत है। जो कोई यीशु की संगति में रहेगा वह कभी आत्मिक बातों के लिये प्यासा नहीं होगा (३७-३८)

घ, मैं, मुझ पर विश्वास करने वालों को जीवन की नदियाँ बनाऊँगा :— विश्वासी के द्वारा पवित्रात्मा काम करेगा और यीशु की महिमा को विश्वासी के द्वारा प्रगट करावेगा (३८+३९ ।

आज यीशु हमें और हमारी कलोसिया को जीवन की नदियां बनाने चाहता है। क्या हम यीशु पर इतना विश्वास करते हैं ताकि जीवन की नदियां बन जावें।

पेन्तिकोष्ट पर्व—(५० वां दिन)

यूहन्ना ३:१३-२७

यीशु और नीकुदिमुस की बात चीत में धर्म्म शिक्षा का प्रकाशन होता है। यीशु साफ साफ कहता है कि मैं ईश्वर का प्रिय बेटा हूँ। मुझ ही में लोगोस देह धारण किया है। मैं लोगोस हूँ। जो मुझ पर विश्वास नहीं करेगा वह तो नाश होगा (१३+१६+१८)। परन्तु इन बातों को निकुदिमुस नहीं बूझता है। वह यह नहीं बूझता है कि यीशु में ईश्वर छुड़ाने हारा होकर उपस्थित है।

यीशु धर्म की शिक्षा

क, पापी मनुष्य का नया जन्म हो सकता है:— क्योंकि ईश्वर यीशु में प्रगट है (१३)। यीशु में मनुष्य के पाप का प्रायश्चित हो गया है। यीशु में ईश्वर और मनुष्य हाथ मिला कर बैरता को भूल जाते हैं। पापी को ईश्वर आप ही बचाने का उपाय करता है (१४)।

ख, पापी मनुष्य धर्मी ठहराया जाता है:— यीशु के कारण ही पापी धर्मी ठहराया जाता है (१६+१८)। यीशु के कारण ईश्वर पापी को नाश नहीं करता है परन्तु बचाने का आयोजन करता है। यीशु ही में ईश्वर का महान प्रेम प्रकट है।

ग, पापी मनुष्य पवित्र किया जाता है :—यीशु के कारण ही पापी पवित्र किया जाता है (२१)। यीशु के बिना पवित्रता को प्राप्त करना असम्भव है। ईश्वर ने प्रेम के द्वारा पापी को बचाने का आयोजन किया। यीशु प्रेम के कारण ईश्वर के आयोजन को पूरा किया। पवित्रात्मा यीशु के पूरा किये हुए आयोजन को मनुष्य के जीवन में लागू करते हैं।

त्रिनितातिस पर्व—त्रिएक परमेश्वर का पर्व

मत्ती २८:१६-२०

यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान ने यीशु और उसकी महिमा को प्रज्वलित किया। उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान उस पर विश्वास करने वालों को सुसमाचार सुनाने के लिये बाध्य करता है। वह मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है और हमें भी अपनी महिमा के देह के अनुकूल बना दे सकता है (फिलि. ३:२१)।

त्रिएक परमेश्वर का आदेश

क, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओं:— त्रिएक परमेश्वर का यह विशेष आयोजन है। यीशु का कार्य्य सब लोगों के लिए पूरा किया है। वह सब लोगों को बचाने सकता है। पिता और पुत्र और पवित्रात्मा का छाप सब लोगों के माथे में देने के लिए कहता है। इसीलिये मसीही कलीसिया के सब लोगों के पास सुसमाचार पहुंचाना है और बपतिस्मा देना है।

ख, स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझको दिया गया है:— स्वर्ग और पृथ्वी का सृजनहार त्रिएक परमेश्वर है। सारी सृष्टि उसी ईश्वर के सामने अपना

Gossner Mission

घुटना झुकावेगा। जीवन देने का आयोजन पिता ने बनाया। जीवन देने के आयोजन को पुत्र ने पूरा किया। पूरा किये आयोजन को पवित्रात्मा विश्वासियों के मन में रोपता है। सब कोई ईश्वर के हैं और ईश्वर सबों का है।

ग, सब बातें मानना सिखाओ:—पश्चाताप, पाप, विश्वास, अनन्त जीवन, प्रेम इत्यादि के विषय शिक्षा दो।

आदेश के साथ प्रतिज्ञा भी है। जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ।

कलीसियाई समाचार

रांची...एल०डब्ल्यु०एफ० के छात्रवृति विभाग के माननीय पाद्री ओटो इम्मोनेन तथा अमेरिका के इसी विभागीय प्रतिनिधि डा० वेस्टलुंड रांची आये हुए थे। उनके लिये रांची ही में विचार-विमर्श के लिये कुछ विशेष प्रोग्राम बनाये हुए थे। विशेष कर छात्र वृति सम्बन्धित समस्याओं पर बात चीत हुई; छात्रवृति पाने वालों की समस्यायें, विदेश में और वहां से लौट कर स्वदेश में, भाषा, आवहवा, परिवार इत्यादि से सम्बंधित विषयों पर भी बात चीत हुई।

अफशोस की बात है, कि इस बार के आवेदकों में से किसी का भी आवेदन छात्रवृति के लिये नहीं चुना गया। (शसि)

लताकेल/टकरमा—लताकेल पेरिश में दृढ़िकरण उम्मीदवारों को पवित्र सप्ताह के लिये बुलाया गया कि वे शिक्षा पाकर भलाशुक्रवार को दृढ़िकरण पावें। ऐसे अवसर पर साक्षी का आयोजन किया गया था; राँची से डा० सी० के० पी० सिंह, मिशन डाइरेक्टर आमंत्रित थे, साक्षी वहां के स्कूल के प्रागंण में आयोजित था, दूर-दूर से ख्रिस्तान व हिन्दु भाई बहन आये हुए थे। (शिसि)

रांची—इस प्रभुभोज स्थापन रात एवं भला शुक्रवार आराधना हिन्दुओं के पर्व होली तथा मुसलमानों के जुम्मा/नमाज पढ़ने का विशेष दिन होने से सभों के मन में शंका पैदा हो गयी थीं, परन्तु रांची के नागरिकों ने दिमाग से काम लिया और इस तरह सभों के त्योहार बिना कुछ अप्रिय घटना के ही बीत गया।

रांची—असम अंचल के बैठाभंगा में ७५ वर्षीय जुबिली मनायी गयी, इधर से अंचल अध्यक्ष मंडल, युवा एवं महिला प्रतिनिधियों ने भी अपनी उपस्थिति दे कर असम बासी गोस्सनर कलीसिया के सदस्यों का आनन्द बढ़ाया। (शिसि)

कोटायम—एशिया की प्रथम "मसीही शान्ति सभा" जो प्राग की मसीही शान्ति सभा की शाखा है, यहां आयोजित की गयी, सीरियन ओर्थोडोक्स कलीसिया ने सभा की मेजबानी की। सभा का मुख्य विषय था—"न्याय सहित शान्ति के लिये आन्दोलन—एशिया के मसीहियों की जबाबदेही।" बीस एशियाई देशों से १२० से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

दिल्ली—मिस्स आइभी खांक्रो, जो राष्ट्रीय वाई०डब्ल्यु०सी०ए० की महा सचिव हैं, अपने सेवाओं के निमित राष्ट्रपति का "पद्म श्री" प्रदान किया गया। श्री के०एम० फिलिप, राष्ट्रीय वाई०डब्ल्यु० सी०ए० के अध्यक्ष जगत संघ के सभापति चुने गये हैं, यह यहां के संघ के इतिहास में पहली बार मौका आया है।

न्यु दिल्ली—सी०एन०आई० ने एक नयी आराधना तैयार कर ली है। इस आराधना में प्रारम्भिक कलीसिया की आराधना की तरह प्रभु भोज पर विशेष जोर दिया गया है। ओर्थोडोक्स चर्च सी०एस०आई० तथा रोमन कैथोलिक की नयी आराधना से विशेष सहायता लिये गये हैं।

Gossner Mission

एन०सी०सी०आई० ने श्री थोसम मैथ्यु, चार्टर्ड एकाऊन्टेन्ट जो 'फाइनान्स सेक्रेटेरी' नियुक्त किये गये हैं, फाइनन्स सम्बन्धित सभी बातें अब यही देख भाल करेंगे।

पहली बार रूस देश के कलीसियाई प्रतिनिधि भारत के विभिन्न मसीही संस्थाओं संगठनों, कलीसियाई प्रतिनिधियों से भेंट मुलाकात किये। अनेक स्थानों में अतिथियों के लिये भव्य स्वागत का आयोजन किया गया—"कलीसियाई को संस्थायी करण से आज अलग हो कर देश में काम करने के लिये निकल आना है", यह विचार अतिथियों के आगमन से जागृत हो गया है।

अंडामन जो० ई० एल० चर्च में दौरा का संक्षिप्त विवरण

पाद्री सबन मार्टिन तोपनो
प्रेसिडेन्ट, अन्डामन और निकोबर जी०ई०एल० चर्च
पोर्टब्लेयर।

कलकत्ता से १ला सेप्तेम्बर १९७४ को अन्डामन जहाज द्वारा पोर्टब्लेयर पहुँचा। सेप्तेम्बर १९७४ से फरवरी १९७५ तक पोर्टब्लेयर से डिगलीपुर द्वीप समूह तक का दौरा रहा। इस दौरा के दरमियान कई द्वीप समूह में पहूँचना पड़ा।

राजनैतिक दृष्टिकोण से अंडामन द्वीप समूह तीन भागों में बांटा गया। साउथ अंडामन, मिडिल अंडामन तथा नोर्थ अंडामन। समूचे अंडामन द्वीप समूह की संख्या ३५० हैं। सभी क्षेत्रों में शिप, बोट, डोंगी बस तथा पैदल द्वारा भ्रमण किया जाता है जो अनिश्चित समय के भ्रमण पर निर्भर करना पड़ता है। अधिकांश यात्रा समुद्री रास्ते पर है।

अंडामन और निकोबर जी०ई०एल० चर्च की केन्द्र स्थान पोर्टब्लेयर सम्भव है। पोर्टब्लेयर शहर अंडामन की राजधानी है। यह साउथ अंडामन का मुख्य शहर है। अतः अंडामन जी०ई०एल० चर्च के संविधान के मुताबिक भी पोर्टब्लेयर चर्च को हेड क्वाटर होगी। साउथ अंडामन के क्षेत्र में निम्न मंडलियां हैं—पोर्टब्लेयर (यहां एक गिर्जा घर बनाया जा रहा है) कालाटांग, सोलवेग न० १७, पोचांग, पुनानाला, (इन स्थानों में आराधना सुचारु रूप से चलाया जाता है।) पर निम्नस्थानों में मंडलियां निर्माण की सम्भव एवं आवश्यक है—झिरगीटांग, टुसनाबाद, कालापहाड़ ये जंगल स्थाने हैं। फोरेस्ट तथा पी०डब्ल्यू०डी० में लोग काम करते हैं जहां २०० से ३०० तक हमारे लोग छिपे हुए हैं। गिर्जा आराधना से वंचित हैं। बाराटांग द्वीप समूह में ओरलकच्छा, रपटाक्रीक, झरनानाला, मिडिल स्टेट पावाजी मंडलियां हैं। नील आइलैण्ड तथा हेव्लोक द्वीप में लोग छितरे हुए हैं। दक्षिण की ओर, लिटिल अंडामन, ननकौड़ी, कार निकोबर तथा कमलवे द्वीप समूह हैं जहां मंडलियां हैं। इस तरह सेसाउथ अंडामन में पोर्टब्लेयर, पेरिस एवं इलाका रुप ग्रहण कर सकेगा।

मिडिल अडामन में दूसरी पेरिस का निर्माण आवश्यक एवं सम्भव है। इस क्षेत्र का केन्द्र रंगत है। जहां पेरिश केन्द्र सम्भव है। इस क्षेत्र में निम्न मंडलियां हैं – रंगत, बकुलताला, वोरीईनियोल ११:७, न० ६, बेटापुर, धुराटांग, लोंग आइलैण्ड तथा कदमताला हैं। इस क्षेत्र में भी कई द्वीप समूह है जहां लोग छितरे हुए हैं। इस क्षेत्र में गिर्जा घर स्थायी रुप में नहीं है। यह आवश्यक है कि इस क्षेत्र का मिशन स्टेशन रंगत शहर हो जो पेरिस का रूप भी ग्रहण कर सकता है।

Gossner Mission

अंडामन में सबसे पहले हमारी कलीसिया का विकास नोर्थ अंडामन में हुआ। कलीसिया की नेव, नोर्थ अंडामन में सन १६५६ ई० में पाद्री बाबुलाल तोपनो के आने से शुरु हुआ। मायाबंदर इस क्षेत्र का केन्द्र स्थान है। मायाबंदर शहर में गिर्जाघर बनाया गया। अतएव पेरिस का केन्द्र तथा मिशन स्टेशन के लिए मायाबंदर, अधिकार रखता है। इस क्षेत्र में निम्न मंडलियां हैं:— मायाबंदर, करमाटांग, रामनगर, डिगलीपुर, लक्ष्मी पुर, कृष्णानगर तथा स्मिथ आइलैण्ड हैं।

इस तरह से अंडामन के समूचे द्वीप समूह में वर्तमान ३ पेरिसों का निर्माण करना आवश्यक है। चूँकि समूचे अंडामन और निकोबर द्वीप समूह में लगभग २००० लूथरन हैं।

संगठन—गत वर्षों की संगठन अनियमित है, अव्यवस्थित है। इसलिए लोगों को मंडली, प्रचारकपन, पेरिस, इलाका अंचल, तथा के०एस० एस० के विषय परिचय दिया गया। अतएव इस क्रमानुसार शासन एवं प्रबंध से लोग अनभिज्ञ हैं। अभी तक यहां के लोग चर्च कौंसिल के ही प्रबंध में पीछे पड़े हुए हैं। चर्च संविधान के परिवर्तन में इनको ज्ञान नहीं मिली है।

बैठकी—कलीसिया के प्रबंध तथा शासन के प्रारुप को बताते हुए दौरा के दरमियान चार बैठकियां हुई। इन बैठकियों में यह प्रयास रहा कि वर्तमान कलीसिया के शासन को जानना तथा उसका अनुकरण करते हुए अंडामन कलीसिया को सम्भालना तथा समस्याओं को अंचल एवं के०एस०एस० में पहुँचाना है।

हमारे लोगों की पेशा—लगभग ६६ प्रतिशत लोग मजदूर हैं जो फोरेस्ट तथा पी०डब्ल्यू०डी० में काम करते हैं।—अतः कई द्वीप समूह में लोग छितरे हुए हैं। धार्मिक ज्ञान का अभाव है। इनकी सुधि लेना परम आवश्यक है।

सामाजिक जीवन—लोगों की सामाजिक जीवन बिलकुल गिरी हुई है। क्योंकि छोटानागपुर से आकर अंडामन में बसने से नए परिवार तथा समाज की गठन में कई समस्याएं हैं।

नैतिक जीवन—लोगों की नैतिक जीवन दिन व दिन गिरती जा रही है। क्योंकि मतवालपन में लगभग ६० प्रतिशत लोग डूबे हुए हैं।

अंडामन कलीसिया की पुकार—कलीसिया की यह पुकार है कि मिशन हाता का निर्माण हो। उक्त भावी पेरिसों में पाद्रीयों का बहाली हो। अतः पाद्री क्वाटर, स्कूल हॉस्टेल, दवाखाना तथा कृषि उद्योग क्षेत्र खोले जाएं। दुःख दर्द को देखने के लिए जी०ई०एल० चर्च का ध्यान अवश्य अंडामन द्वीप समूह पर हो।

अण्डामन द्वीप समूह में प्रथम महिला-संघ गठन

अंडामन द्वीप समूह में महिला संघ का गठन, मिडिल अंडामन के बोरोइनियोल ११:७ मंडली के ख्रिस्त गिर्जा में प्रथम बार हुआ। निम्नलिखित कार्यकर्त्तागण चुने गए।

सभापति	श्रीमती	शान्तिदानी मिंज
सेक्रेटेरी	,,	बहालेन मुण्डू
खजाँची	,,	नाईमी तोपनो
सदस्य	,,	शुभरंगी एक्का
,,	,,	बेरथा तिर्की

इसी तरह विभिन्न द्वीपों के सभी मंडलियों में महिला संघ कायम हो रहा है। यह आशा है कि १६७५ ई० में सारे अंडामन और निकोबर द्वीप समूह में महिला संघ का गठन होगा। फलतः आगामी वर्ष से समूचे जी०ई०एल० चर्च महिला

Gossner Mission

संघ की सम्मेलन में, अंडामन और निकोवर द्वीप समूह से एक महिला प्रतिनिधित्व करेगी। बर्तमान अंडामन जी०ई०एल० चर्च पिछड़ी स्थिति में है, इसलिए सभी धार्मिक संस्थाओं के गठन की आवश्यक है। क्योंकि गत १५ वर्षों में कलीसिया ने अंडामन पर बिलकुल ध्यान नही दिया है। किन्तु स्थायी रूप से अंडामन कलीसिया ने आशा किया है कि अवश्य जी०ई०एल० चर्च के अधिकारीगण द्वारा सुधि लिया जायगा। इसके साथ-साथ, जी०ई०एल० चर्च महिला संघ का प्रेसिडेन्ट अंडामन द्वीप ममूह में दौरा करेगी और यहां के महिलाओं को व्यावहारिक शिक्षा देकर मसीही जीवन पर प्रकाश देंगी। यह हमारी पूर्ण आशा है। अतः जी०ई०एल० चर्च के सभी महिला संघ वा माता समाज से हमारी यह निवेदन है कि आप सब अंडामन द्वीप समूह के महिला संघ को अपने समाज की प्रार्थना में याद कीजिएगा। ताकि पिता परमेश्वर से आशीष तथा सामर्थ मिले और अंडामन महिला संघ की बढ़ती हो।

कलीसिया और हम

प्रभुदयाल कन्डुलना
मनोहरपुर (सिंहभूम)

हमारी कलीसिया का नाम गोस्नर एवंजेलिकल लूथेरान कलीसिया है। यह कलीसिया ईश्वर के वचन (यीशु ख्रिस्त जो स्वंय जीवित चट्टान है) के नेव पर स्थापित है।

कलीसिया का आरम्भ घरों में हुआ या आरम्भ में कलीसिया घरों में थी। मसीही कम थे। गिर्जा घर नहीं था। किसी नगर या गांव में एक, किसी में दो, परिवार या घर के लोग मसीही थे। यदि किसी नगर या गाँव में एक ही घर (परिवार) के लोग मसीही थे तो वहीं, उसी घर में गिर्जा आराधना होती थी। वही कलीसिया या मण्डली (Church) कहलाती थी। रोमी १६ : ५ में लिखा हुआ है कि प्रिस्किला के घर के लोग मसीही थे। पौलुस लिखता है "उनके घर एकत्रित होने वाली कलीसिया को नमस्कार।" फिलिमोन १ : २ में पौलुस प्रेरित फिलिमोन को लिखता है—"तुम्हारे घर में इकट्ठा होने वाली कलीसिया के नाम.....।" कुलुस्सियों ४ : १५ में पौलुस प्रेरित लिखता है—नुम्फास और उनके घर एकत्रित होनेवाली कलीसिया को मेरा नमस्कार कहना.....।" इस तरह आरम्भ में कलीसिया घरों में थी। या घर या परिवार ही कलीशिया थी।

कलीसिया ख्रिस्त विश्वासियों से बनी है। यह विश्वासियों का झुण्ड या मण्डली है अर्थात जो मसीह यीशु पर विश्वास करते और बपतिस्मा लेते हैं उनसे कलीसिया बनी है।

इस तरह हर एक ख्रिस्त विश्वासियों का घर (परिवार) कलीसिया है और यह कलीसिया परमेश्वर का घर है (१ तीमुथियुस ३ : १५..... "परमेश्वर का घर जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है) और यह घर या परिवार या कलीसिया प्रभु यीशु मसीह का देह है (इफिसियों १ : २३..... कलीसिया उसकी देह है.....)। फिर प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर का एक लौटा प्रिय पुत्र है। तो कलीसिया परमेश्वर का है, (परमेश्वर का घर है)।

जब हर एक ख्रिस्त विश्वासियों का घर (परिवार) कलीसिया है और कलीसिया परमेश्वर का घर है तो हम ख्रिस्त विश्वासी ईश्वर के घर के हैं। ईश्वर के घराने के हैं। (इफिसियों २ :१९...

Gossner Mission

तुम अब···परमेश्वर के घराने के हो गए) ईश्वर के सन्तान (बेटा-बेटी) हैं। (१ यूहन्ना ३ : १ "देखो पिता ने हमसे कैसा प्रेम किया है कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएँ और हम हैं भी।") रोमी ८ : १६—"आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं)।" इस तरह हम ईश्वर के घर या परिवार के सदस्य हैं। कितनी बड़ी बात है? कैसी खुशी की बात है कि आप का घर परमेश्वर का घर है। आप का परिवार परमेश्वर की कलीसिया है, आप परमेश्वर के सन्तान हैं; परमेश्वर के परिवार के सदस्य हैं।

इस संसार के सांसारिक जीवन में हम अलग-अलग घरों में अलग-अलग परिवार में रहते हैं। हर एक परिवार में कोई न कोई एक मुखिया होता है। परिवार के मुखिया को परिवार के सदस्यों के सुख-सुविधा के लिए, परिवार के सफल संचालन के लिए चिन्ता करना पड़ता है। वह मुखिया अपने परिवार के सफल संचालन के लिये योजना बनाता है और योजनानुसार परिवार का काम होता है। परिवार के मुखिया परिवार के हरएक सदस्य को योग्यतानुसार काम (जिम्मेवारी) बाँट देता है तथा परिवार के लोग परिवार के सफल संचालन में मुखिया को सहयोग देते हैं। योग्यतानुसार परिवार के हर एक सदस्य अपने-अपने जिम्मेवारी (भण्डारीपन) को निभाते हैं। मिल-जुल कर काम करते हैं। कठिन से कठिन समस्यों का सामना करते और हल करते हैं। सब एक दूसरे की सुख-सुविधा का ख्याल करते हैं।

इसी तरह हम ख्रिस्त विश्वासी परमेश्वर के घर या परिवार के सदस्य हैं। आज परमेश्वर के परिवार या कलीसिया का क्षेत्र किसी घर या घराना तक ही सीमित नहीं है, किन्तु अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत है। आज सारी दुनिया ही कलीसिया का क्षेत्र है। सारी दुनिया ही परमेश्वर का घर परिवार है। हम इस परिवार के सदस्य हैं। इस परिवार का मुखिया परमेश्वर है। परमेश्वर हम में से हरएक को इस परिवार के सफल संचालन के लिए जिम्मेवारी (भण्डारीपन का काम) सौंप दिया है। जिसे हमें करना है। निभाना है।

हम जिम्मेवारी शब्द को समझने की कोशिश करें यूनानी भाषा (जिसमें बाईबल का सर्वप्रथम अनुवाद हुआ) में "Oikos" एक शब्द है। "Oikos" शब्द का अर्थ "घर" या "घराना" होता है। नये नियम के समय से Oikos शब्द का विशेष अर्थ—"परमेश्वर का घराना" के अर्थ में व्यवहार होता है। "Oikonome" का अर्थ "गृहनिर्माण" है। Oikonomia का अर्थ "गृह प्रबन्ध" या घर-द्वार चलाना" है। "Oikonomas" का अर्थ किसी दूसरे के सम्पति के "प्रबन्धकर्त्ता" से है (मालिक नहीं)। "Oikonomi" का अर्थ "भण्डारीपन" है। तो हम ख्रिस्त विश्वासी परमेश्वर के सम्पत्ति (धन) के "Oikonomi" (भण्डारी) हैं।

अब हम देखें कि परमेश्वर की सम्पत्ति क्या है? हमें किन-किन धनों का भण्डारी ठहराया है?

परमेश्वर अपने सम्पति (धन) को हमें बरदान स्वरूप अर्थात आशीष के रूप में दिया है; और विभिन्न व्यक्तियों को विभिन्न धन, बरदान स्वरूप दिया है। इन धनों (बरदानों) को हम आत्मिक और लौकिक दो वर्गों में हम बांट सकते हैं। लौकिक धन के वर्ग में हम निम्न बरदानों को रख सकते हैं—[क] जमीन-जयदाद या किसी नौकरी की पदवी या कोईधन्धा जो आप कर रहे हैं और अपना जीविकोपार्जन कर रहे हैं। [ख] शरीर (सभी शारीरिक योग्यताओं सहित) [ग] जीवन (उम्र या समय) [घ] बाल-बच्चे आदि तथा आत्मिक धन के वर्ग में निम्न धनों को रख सकते हैं:— [क] बुद्धि [ख] ज्ञान [ग] विश्वास [घ] चंगा करने की सामर्थ [ङ] सामर्थ के काम करने की शक्ति [च] भविष्यवाणी अर्थात आगे की घटनाओं को बता सकने की शक्ति [छ] आत्माओं को परखने की शक्ति [ज] अनेक प्रकार की भाषा

Gossner Mission

और भाषाओं का अर्थ बताने की सामथ आदि तथा सुसमाचार जो परमेश्वर का अगम्य धन है (इफिसियों ३ : ८)।

ये सभी धन परमेश्वर ही के हैं। परमेश्वर ने इन धनों को हमें दिया है। परमेश्वर से हमें मिले हैं। हमारा अपना कुछ नहीं है। हम लोग स्वयं अपने नहीं हैं (१ कुरिन्थियों ६ : १६-२०)—क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो, क्योंकि दाम देकर मोल लिए गए हो इसलिए अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।" भ०सं० १०० : ३—"उसी ने हमको बनाया और हम उसी के हैं।" इफिसियों २ : १०—क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सिरजे गए।" कुलुस्सियों ३ : ३ "क्योंकि तुम तो मर गए और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है)।" जब तक शारीरिक जीवन रहता है तब तक हम इन्हें अपना समझते हैं। इन धनों पर अधिकार जताते हैं। जब शरीर से प्राण निकल जाता है, इन सब चीजों (धनों) पर हमारा कोई अधिकार नहीं रह जाता है। हम इन्हें अपने साथ नहीं ले जा सकते हैं। खाली हाथ आते हैं। खाली हाथ लौट जाते हैं। (१ तीमुथियुस ६ : ६—"क्योंकि न हम जगत में कुछ लाये हैं और न कुछ ले जा सकते हैं)।" फिर हमारा जीवन क्षणिक है। हम भाप के समान हैं। हमारे जीवन के सिवाने बांधे गए हैं। उसे हम पार नहीं कर सकते हैं (याकुब ४ : १४ "सुन तो लो तुम्हारा जीवन है ही क्या? तुम तो मानो भाप समान हो जो थोड़ी देर दिखाई देती है फिर लोप हो जाती है", अय्यूब १४ : ५ "मनुष्य के दिन नियुक्त किए गए हैं और उसके महीनों की गिनती तेरे पास लिखी है और तूने उसके लिए ऐसा सिवाना बांधा है जिसे वह पार नहीं कर सकता", प्रेरितों के काम १७ : २६-२७ "उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिए बनाई हैं और उनके ठहराये हुए समय और निवास के सिवानों को इसलिए बांधा है, कि वे परमेश्वर को ढूंढ़ें, कदाचित उसे टटोल कर पा जांय.....")। इस तरह से इस संसार में हमारा कुछ नहीं है। वास्तव में ये सारे धनों को हमें दिया है। देता है कि हम इन धनों (बरदानों) के द्वारा परमेश्वर की महिमा प्रकट करें। इन सब धनों के हम भण्डारी हैं।

अब सवाल है कि इन बरदानों (धनों) का हम क्या करें?

ये बरदान या धन हमें सबके कल्याण (लाभ) के लिए मिले हैं (१ कुरिन्थियों १२ : ७) और हम उसके भले कामों के लिए सिरजे गए हैं (इफिसियों २ : १०)। फिर हम परमेश्वर के घर के, परमेश्वर के, परिवार के, परमेश्वर के कलीसिया के हैं और जो बरदान (धन) हमें मिले हैं; सबके कल्याण के लिए मिले हैं। इसलिए इन बरदानों (धनों) को कलीसिया के कल्याण (लाभ) में उपयोग करें (१ पतरस ४ : १०—"जिसको जैसा बरदान प्राप्त है, वह उसका एक दूसरे की सेवा में वैसा ही उपयोग करे मानो परमेश्वर के नाना विधि अनुग्रह का योग्य भण्डारी है)।" इन बरदानों का उपयोग परमेश्वर की महिमा के लिए करें (१ कुरिन्थियों १० : ३१) "चाहे जो कुछ करो सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो)।" हम इन बरदानों (धनों) का उपयोग ईश्वर की इच्छा के अनुसार करें। ईश्वर की इच्छा क्या है? (१ तीमोथियुस २ : ४ "वह यह चाहता है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो और वे सत्य को भली-भांति पहचान लें।" कुलुस्सियों ३ : २.....वे पूरी समझ का सारा धन प्राप्त करें और परमेश्वर पिता के भेद को अर्थात मसीह को पहचान लें।" २रा पतरस ३ : ६ प्रभु...तुम्हारे विषय में धीरज धरता है और नहीं चाहता है कि कोई नाश हो, वरन यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले)।" परमेश्वर की

Gossner Mission

इच्छा है कि मनुष्य जाति का कल्याण (उद्धार) हो। वह यह चाहता है कि जो उनके भेड़शाला (कलीसिया) में नहीं हैं वे उनके भेड़शाला में आ जाँय (यूहन्ना १० : १६) इसके लिए वह चाहता है कि सुसमाचार का प्रचार सारे जगत में हो। वह अपने विश्वासियों को आशा देता है कि सुसमाचार का प्रचार करें (मती २८ : १६-२०)। यीशु कहता है कि "मैंने अपनी ओर से कुछ नहीं कहा वरन पिता जिसने मुझे भेजा है, आज्ञा दी है कि क्या कहूँ और क्या बोलूं" (यूहन्ना १२ : ४६)। तो यह आज्ञा परमेश्वर ही का है। वह मनुष्य जाति को बचाने के लिए योजना बनाई है (१ पतरस १ : २०, इब्रानी १ : १-२, प्रेरित २ : २३, प्रेरित ४ : २८)। इस योजना के सफलता के लिए वह आप का सहयोग चाहता है और वह चाहता है कि इसी योजना में आप अपने पास जो धन (बरदान) है का सदुपयोग करें। परमेश्वर देखता है कि आप इन धनों का कहां तक सदुपयोग कर रहे हैं; कहां तक कितना अधिक इन धनों से परमेश्वर की महिमा प्रगट कर रहे हैं या नहीं? (भ०सं० ११ : ४—"उसकी आंखें मनुष्य की सनतान को नित देखती रहती हैं और उसकी पलकें उनको जांचती है)।" इन धनों को (जो हमें दिया गया है) पिता अपने एक लौटे पुत्र यीशु मसीह को सौंप दिया है (लूक १० : २२ "...मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंप दिया है.....।" मती २८ : १८ "यीशु ने उनके पास आकर कहा कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।" इन धनों पर पुत्र का पूरा अधिकार है। पुत्र ने हमें इन धनों का "भण्डारी" ठहरा दिया है; हमें इन धनों को सौंप दिया है। इन धनों का भण्डारी रख कर (हमें सौंप कर) मानो वह परदेश (स्वर्ग) (मती २५ : १४-३० के मनुष्य की तरह) गया है। याद रखें एक दिन (अंतिम दिन) वह लौटेगा और हम में से हरएक से इन बरदानों (धनों) का लेखा लेगा। हमें इन धनों के भण्डारीपन का लेखा देना पड़ेगा (लूक १२ : ४८—"जिसे बहुत मिला है उससे बहुत मांगा जायगा और जिसे बहुत सौंपा गया है, उसे बहुत सा लिया जायगा)।" यदि हमने इन धनों का सदुपयोग किया है, सब के कल्याण में उपयोग किया है तो इससे अधिक और अनन्त धन (अनन्त जीवन) का अधिकारी ठहरायगा। वह हमसे कहेगा—"हे उत्तम और विश्वासपात्र दास, तुम थोड़ी वस्तुओं में विश्वास पात्र निकले मैं तुमको बहुत वस्तुओं पर अधिकार दूँगा, अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो (मती २५ : २३)।

अब हम देखें कि इन धनों का सदुपयोग कैसे करें? इन धनों को सब के कल्याण में किस तरह उपयोग करें?

मान लिया आप को चंगा करने का या आत्माओं को परखने का या भविष्यवाणी करने का या विश्वास आदि का बरदान (धन) मिला है। तो आप इमानदारी और लगन के साथ इन बरदानों का उपयोग करें। निष्पक्ष एवं निस्वर्थ भाव से सेवा का काम करें। आप को ये बरदान (धन) सेंतमेंत (बिना दाम के) मिले हैं। आप भी सेंतमेंत इन धनों से लोगों की सेवा करें। अपने इन धनों को सबके कल्याण में उपयोग करें क्योंकि इसीलिए आप को ये बरदान मिले हैं। वचन कहता है—जिसको भविष्यवाणी का बरदान मिला हो, वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यवाणी करे। यदि सेवा करने का दान मिला हो तो सेवा में लगा रहे। यदि कोई सिखानेवाला हो तो सिखाने में लगा रहे। जो उपदेशक हो वह उपदेश देने में लगा रहे। दान देने वाला उदारता से दे, जो अगुवाई करे वह उत्साह से करे, जो दया करे वह हर्ष से करे (रोमी १२ : ६-६)।

यदि आप को गाने या किसी खेल का बरदान मिला हो तो ऐसा गायें कि लोग मंत्रमुग्ध हो जांय। आप का गाना सुन कर लोगों में—भक्ति, प्रेम, उत्साह, शोक, ग्लानि, दीनता आदि भाव उत्पन्न हो जाय तथा करूण, वीर, शान्त आदि रस आप के गाना से टपकने लगे। आप का गाना सत्य हो,

Gossner Mission

सुन्दर हो और कल्याणकारी हो। यदि आप को किसी खेल का बरदान मिला हो तो आप ऐसा खेलें कि लोग आप के खेल को देख कर दंग रह जांय। प्रसन्न हो जांय और परमेश्वर की बड़ाई करें।

आप को अगर लड़के-बच्चे हैं तो ये भी बरदान (धन) ही हैं। लड़के-बच्चे ईश्वर के ही बरदान हैं (भ०सं० १२७ : ३—"देखो लड़के यहोवा के दिए हुए भाग हैं, गर्भ का फल उसकी ओर से प्रतिफल हैं)।" इनका भी हमें सदुपयोग करना है। हमें चाहिए कि हम इनके सुशिक्षा का प्रबन्ध करें। सन्डे स्कूल और गिर्जा में बराबर भाग लेने दें। बचपन से ही इन्हें सुशिक्षा देते जांय ताकि ये ईश्वर के भय और प्रेम में बढ़ते जांय, आगे ये कलीसिया के सच्चे पक्के जंग बन जांय और इनके द्वारा परमेश्वर की महिमा प्रगट हो सके।

आप को परमेश्वर ने जीवन (समय या उम्र) दिया है। आप सदा समय का भी सदुपयोग करें समय को पहचान कर चलें। समय को कभी भी बेकार जानें न दें। आप का कोशिश रहे कि आप के जीवन का हरएक क्षण मसीह की संगति में बीते। आप को जितना अधिक समय मिले कलीसिया की सेवा में, सबके कल्याण में व्यतीत करें।

मान लिया आप को खेत जमीन है। आप किसान हैं। या आप कोई नौकरी कर रहे हैं। किसी कल-कारखाने में काम कर रहें। पाद्री या प्रचारक या शिक्षक हैं। दर्जी या बढ़ाई का काम कर रहे हैं। या कुली मजदूरी कर रहे हैं या अन्य कोई धन्धा (पेशा) अपनाये हैं। आप को बल, बुद्धि और ज्ञान है। तो ये सब भी परमेश्वर के बरदान (धन) हैं। ये सब ईश्वर की दया से ही आप को मिले हैं जिससे आप जीविकोपार्जन कर रहे हैं (नी०व० २ : ५-६ "क्योंकि बुद्धि यहोवा ही देता है, ज्ञान और समझ की बातें उसी के मुँह से निकलती हैं।" व्यवस्थाविवरण ८ : १७-१८ "और कहीं ऐसा न हो कि तू सोचने लगे कि यह संपति मेरी ही सामर्थ और मेरे ही भुज-बल से मुझे प्राप्त हुई, परन्तु तू अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण रखना क्योंकि वही है जो तुम्हें संपति प्राप्त करने का सामर्थ.....देता है.....)।

अतः आप अगर किसान हैं। जमीन जयदाद है। तो आप का कर्तव्य है कि आप अपने खेत पर ईमानदारी के साथ लगन से परिश्रम करें या पूरी नौकरी कर रहे हैं या दूसरे धंधा (पेशा)में हैं तो इमानदारी और लगन के साथ अपने काम को करते जांय क्योंकि ईश्वर ने ही वह काम आप को सौंपा है। उस काम को करने को दिया है और उस खेत की उपज से नौकरी या अपने अपनाये धंधा से मिलने वाली आमदनी (आय) या रकम से अपने परिवार का पालन-पोषण करें। खाने पहनने और रहने का सुप्रबन्ध करें, लड़के-लड़कियों के सुशिक्षा का प्रबंध करें। यथा समय गरीब-दुखी और निःसहाय लोगों की सहायता करें, (नीति वचन १९ : १७ "जो कंगाल पर अनुग्रह करता है वह यहोवा को उधार देता है और वह अपने इस काम का प्रतिफल पाएगा।"

नीति वचन २२ : ९—"दया करने वाले पर आशीष फलती है क्योंकि वह कंगाल को अपनी रोटी में से देता है।"

नीति वचन २१ : १३ जो कंगाल की दोहाई पर कान न दे वह आप पुकारेगा और उसकी सुनी न जायगी।" नीति बचन २२ : २७ जो निर्धन को दान देता है उनको घटी नहीं होती परन्तु जो उससे दृष्टि फेर लेता हैं वह शाप पर शाप पाता है)।" जो देन सरकार को देना है, समय पर दें। यीशु मसीह ने भी कर देकर हमें नमूना दिखा दिया कि हम कर दें। (मती १७ : २७)। फिर उसी उपज या कमाई के हिस्से में से जो देन परमेश्वर का (कलीसिया का) है परमेश्वर को दें (मती २२ : २१—"जो कैसर का है अर्थात जो देन कैसर को देना है वह

Gossner Mission

कैसर (सरकार) को दो और जो परमेश्वर का है अर्थात जो देन परमेश्वर को अर्थात परमेश्वर की कलीसिया को देना है वह परमेश्वर को (कलीसिया) को दो)." अर्थात कलीसिया के ठहराये हुए देनों को सुसमय पर बिना कुड़कुड़ाए, परमेश्वर के भय और प्रेम से देते जाँय (२ कुरिन्थियों ९ : ७ परमेश्वर हर्ष से देने वाले से प्रेम रखता है)।" कलीसिया के ठहराए हुए दानों को भी समय-समय पर देते जांय और इन दानों के द्वारा परमेश्वर की महिमा प्रगट करें (भ०सं० ४ : ५ धर्म के बलिदान चढ़ाओ और यहोवा पर भरोसा रखो।" भ०सं ९६ : ८ "यहोवा के नाम की ऐसी महिमा करो जो उसके योग्य है, भेंट लेकर उसके अंगनों में आओ)।"

इन दानों को देने के सम्बन्ध में वचन हमें सिखाता है— कि "हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे, न कुड़-कुड़ा के और न दबाव से क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देने वाले से प्रेम रखता है (२ कुरिन्थियों ९ : ७)। जो थोड़ा बोता है (दे सकने पर भी थोड़ा दान करता है) वह थोड़ा काटेगा भी (कम ही आशीष मिलेगी) और जो बहुत बोता है वह बहुत काटेगा (बहुत आशीष पायगा)—(२ कुरिन्थियों ९ : ६)। दिया करो तो तुम्हें भी दिया जायगा.....जिस नाप से तुम नापते हो उसी नाप से तुम्हारे लिए भी नापा जायगा (लूक ६:३८) अर्थात आप यदि सामर्थ्य होते हुए भी या धन (रकम) रहते हुए भी कम देते हैं तो परमेश्वर से भी आप को कम ही आशीष मिलेगी। क्योंकि वह तो सब कुछ जानता है ("क्योंकि वह तो मन की गुप्त बातों को जानता है" भ०सं० ४४ : २१) कि आप के घर में या आप के पास कितना है और आप उस में से कितना दे रहे हैं। हम उसे ठग नहीं सकते हैं। उसे धोखा नहीं दे सकते हैं। हम उस दरिद्र विधवा से दान सीखें जिसकी प्रशंसा यीशु ने किया, जो अपना सब (सर्वस्व) कुछ दान कर दिया (मरकुस १२ : ४१, ४४)।

कुछ लोग इन देनों एवं दानों का भेद न जानने के कारण देन और दानों को देने से हिचकते हैं, कुड़कुड़ाते हैं। वे समझते हैं कि ये देन और दान सिर्फ पाद्री प्रचारकों के खाने के लिए है। पाद्री-प्रचारक लोग खाते हैं। उड़ाते हैं। कृपया ऐसे लोगों को समझायें कि इन देन और दानों को देकर हम अपने बरदानों का सदुपयोग कर रहे हैं। "भण्डारीपन" को निभा रहे हैं। जिसका हमें अंतिम दिन में जब प्रभु अपनी महिमा में आएगा लेखा देना पड़ेगा। ऐसे देन और दानों को देकर हम धन के लोभ से जो मूर्ति पूजा के बराबर है (लूक १२ : १५, कुलुस्सियों ३ : ५, १ तीमुथियुस ६ : १०) से बचते हैं। वचन कहता है "जो लालच का बैरी होता है वह दीर्घायु होता है" (नी०व० २८ : १६)। देन और दानों को देकर परमेश्वर की महिमा प्रगट करते हैं। परमेश्वर की बड़ाई करते हैं। अपना सम्बन्ध (प्रेम) परमेश्वर से मजबूत करते हैं। चूँकि प्रेम लेन-देन में ही है।

कुछ लोग सोचते हैं कि इन देन और दानों को देने से हमारी आमदनी (धन) घट जायगी, मुझे अमुक चीज खरीदना है। अमुक व्यवस्था करनी है उसके लिए रकम घट जायगा। अमुक काम करना है अगर मैं दे दूँ तो अमुक काम नहीं हो सकेगा आदि। ऐसा सोचना स्वभाविक ही है चूँकि हमारे मन में कई तरह की कल्पनायें आती रहती हैं जिन्हें साकार करने के चिन्ता में हम उलझे रहते हैं। पर ऐसा सोचना गलत है। निराधार है। क्योंकि सब कुछ का देनेहारा तो परमेश्वर ही है नी०व० १० : २२ "धन यहोवा की आशीष ही से मिलता है" यशायाह ५५ : १०—"वह बोने वाले को बीज और रोटी देता है)।" इन देनों और दानों को देने से हमारी कोई घटी नहीं होगी जब हम उसके आज्ञाओं का पालन करते हैं, उनके आज्ञाओं के अनुसार देनों और दानों को हर्ष से देते हैं तो वह हमसे प्रेम रखता है और हमें प्रचूर आशीष देता है (२ कुरिन्थियों ९ : ६-८ "जो थोड़ा काटेगा भी

Gossner Mission

और जो बहुत बोता है वह बहुत काटेगा। हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे न कुढ़-कुढ़ के और न दबाव से क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देने वाले से प्रेम रखता है, और परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है, जिससे हर बात में और हर समय, सब कुछ जो तुम्हें आवश्यक हो तुम्हारे पास रहे और हर एक भले काम के लिए तुम्हारे पास कुछ हो)।" हमें किसी बात की चिन्ता नहीं करनी चाहिए सिर्फ उस पर भरोसा करना चाहिए। प्रभु कहता है किसी भी बात की चिन्ता मत करो (मती ६ : ३२-३३, फिलिपी ४ : ६, १ पतरस ५ : ७)। फिर हम चिन्ता करके भी कुछ नहीं कर सकते हैं। हम धन कमाने, बढ़ाने या संचय करने का कितना ही कोशिश करें पर ईश्वर की इच्छा बिना कुछ भी नहीं कर सकते हैं। (नी०व० १६ : २१—"मनुष्य के मन में बहुत सी कल्पनाएँ होती हैं परन्तु जो युक्ति यहोवा करता है, वही स्थिर रहती है।" नी०व० ११ : २४—"ऐसे हैं जो छितरा देते हैं तौभी उनकी बढ़ती ही होती हैं, और ऐसे भी हैं जो यथार्थ से कम देते हैं और इससे उनकी घटती ही होती है।" नी०व० १३ : ७ कोई तो धन बटोरता है, परन्तु उसके पास कुछ नहीं रहता है और कोई धन उड़ा देता है, तौभी उसके पास बहुत रहता है)।" मलाकी ३ : १० में यहोवा कहता है कि "ऐसा करके (देन और दानों को देकर) मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिए खोलकर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की वर्षा करता हूं कि नहीं? २रा इतिहास १६ : ६ "देखो यहोवा की दृष्टि सारी पृथ्वी पर इसलिए फिरती रहती है कि जिनका मन उसकी ओर निष्कपट है उनकी सहायता में वह अपना सामर्थ दिखाय)।"

हमें परमेश्वर के प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करना चाहिए और उसके आज्ञानुसार काम करना चाहिए परमेश्वर सच्चा है; उसका वचन सत्य है। जैसा वह वचन में कहता है वैसा ही होगा। हमें विश्वास से उसकी आज्ञा पालन कर, विश्वास रूपी हाथ बढ़ाकर उसके आशीषों को ग्रहण करना चाहिए। वह अपने प्रतिज्ञानुसार हमें सब प्रकार का आशीष देने को सदा जीवित है। तैयार है। वह आप को आशीष देने को अत्यन्त सामर्थी है। यीशु ने पांच हाजर से अधिक लोगों को पांच रोटी और दो मच्छली से तृप्त किया फिर भी बचे हुए टुकड़ों से भरी हुई बारह टोकरियां उठाई गई (मती १४ : १६-२१) चार हजार से अधिक लोगों को सात रोटी और थोड़ी सी छोटी मच्छलियों से तृप्त किया और बचे हुए टुकड़ों से भरी सात टोकरियां उठाई गई (मती १५ : ३४-३६)। यहोवा ने सीदोन के सारपत नगर में एलिय्याह को एक विधवा और उस विधवा के परिवार समेत मुट्ठी भर मैदा और थोड़ा सा तेल से करीब तीन साल तक पाला-पोषा (१ राजा १७ : १-२४)। अय्यूब परीक्षा काल में अपने सारे धन-सम्पत से वंचित कर दिया गया था पर परमेश्वर के आशीष से वह पहले से दूना धन सम्पत पाया (अय्यूब ४२ : १० १६)। इस तरह परमेश्वर अत्यन्त सामर्थी है। दयालु है। अतः आप को कोई घटी नहीं होगी। इसलिए आप अपने धनों से—दान देकर, देनों को चुकाकर परमेश्वर को उनके योजना को सफल बनाने में सहयोग दें तथा इन धनों के द्वारा परमेश्वर की महिमा प्रगट हो।

कलोसिया में आप को बहुत सा अवसर मिलते रहता है जिसमें आप परमेश्वर की बड़ाई कर सकते हैं। अपने धनों का सदुपयोग कर सकते हैं। प्रत्येक रविवार को गिर्जा आराधना में आप को दान देने का अवसर मिलता है। आप हर्ष मन से दिल खोल कर जैसा मन में ठानते हैं वैसा दान दें। परमेश्वर हमें नित देखता रहता है उसकी पलकें हमें जांचती है (भ०स० ११ : ४)। किसी बिमारी से चंगा हो जाने पर या किसी दुर्घटना से बच जाने पर या किसी काम पर सफलता मिलने पर परमेश्वर को धन्यवाद देना न भूलें क्योंकि परमेश्वर ही हमें रोगों से चंगा करता, सब विपत्तियों से

Gossner Mission

बचाता और सब कामों में सफलता देता है भ० सं० ३७ : १८, भ०सं० ३४ : १८-१६, भ०सं० २७ : ५, भ०सं० ५४ : ६-७, भ०सं० ५६ : १२-१३, भ०सं० ६६ : ८-६, भ०सं० १०३ : १-४)। दस कोढ़ी जब कोढ़ से शुद्ध हो गए तो उनमे से एक ने परमेश्वर की दया को पहचान कर यीशु को धन्यवाद देने आया—(लूक १७ : ११-१६)। खेत में बीज बोने के पहले आशीष लें। बुना समाप्त होने पर बुना-बुनी में सफलता मिलने के कारण या रोपनी में सफलता मिलने के कारण परमेश्वर को धन्यवाद दें—(जकर्याह १० : १-२, यशायाह ५५ : १०, भ० सं० ६५ : ६-१३, नी०व० १० : २२)। जब नया अन्न या नया फल मिल जाय तो परमेश्वर को नया अन्न या नया फल देकर धन्यवाद दें (नी०व० ३ : ६-१०)। कटनी पर्व्व में भी अपने खेत के उपज में से कुछ परमेश्वर को भेंट चढ़ावें (निर्गमन ३३ : १६-१६, निर्गमन २२ : २६, व्य० वि० १६ : ६ १२+१७, भ०सं० १०४ : २८, भ० सं० ६६ : ८-६, भ०सं० ५० : २३) : पुत्र और पुत्री के नये जन्म में भी परमेश्वर को धन्यवाद दें (भ०सं० १२६ : ३, ११३ : ६) इसी तरह और भी कई अवसर हैं जिस में हम दान देकर परमेश्वर की महिमा प्रगट कर सकते हैं।

पकाने के समय जो भी अन्न आप को उपलब्ध हो उसमें से परमेश्वर की दया और प्रेम को स्मरण कर उसकी महिमा के लिए कुछ रख छोड़ा करें। उससे आशीष लेकर ही पकाना आरम्भ करें। इस तरह प्रति बेला के जमा किए हुए अन्न को गिर्जा के दिन परमेश्वर को अर्पण करने के लिए ले जांए।

आप के चुकाये देन और दान महान हैं चूँकि इससे परमेश्वर का अगम्य धन सुसमाचार को जगत के सारे लोगों के पास पहुंचाने में अत्याधिक मदद मिलती है। मती २८ : १६-२० में प्रभु आप को आज्ञा देता है कि "तुम जाकर जगत के सब जातियों को सुसमाचार सुनाओ और सिखाओ।" आप अपने हाथ-पैर से सब जगह पहुँच नहीं सकते हैं। पर आप के देन और दानों से उन दूर-दूर स्थानों में भी सुसमाचार प्रचारक भेजे जाते हैं। सुसमाचार छापा जाता है। सुसमाचार प्रचारक आप के बदले (आप की शांति) उन दुर्गम स्थानों में भी पहुँचा कर सुसमाचार सुनाते हैं। प्रचार करते हैं। उन पाद्रो, प्रचारकों को (जो सुसमाचार सुनाते हैं। प्रभु को ग्रहण किए हुओं को सम्भालते हैं। कलीसिया के लोगों को आत्मिक भोजन (ईश्वर का वचन) खिलाते हैं। कलीसिया से भटकने से बचाते हैं)—जीवन निर्वाह के लिए वेतन देते हैं। उनके रहने के लिए डेरा का प्रवन्ध करते हैं और मसीह को ग्रहण करने वालों के गिर्जाआराधना के लिए गिरजा घर बनाते हैं। पुराने घरों की मरम्मति की जाती है। शिक्षा-दीक्षा के लिए स्कूल-कॉलेज चलाया जाता है। रोगियों की सेवा के लिए अस्पताल, तथा जीवन निर्वाह की समस्यों को हम हल करने के लिए ट्रेनिंग स्कूल, होस्टेल आदि खोले जाते हैं। सुसमाचार प्रचार के कई साधन हैं। गिर्जाघर, स्कूल, अस्पताल, ट्रेनिंग स्कूल आदि भी सुसमाचार प्रचारने के साधन हैं। जरिया हैं।

इस तरह जैसे-जैसे सुसमाचार का प्रचार होता जायगा। जगत के लोग परमेश्वर के भेद को मालूम करेंगे। सत्य को पहचानेंगे तथा मसीह को ग्रहण करेंगे और वे परमेश्वर की महिमा प्रगट करेंगे। इस तरह से आप इन धनों के सदुपयोग के द्वारा सुसाचार जो ईश्वर का अगम्य धन है और जो आप को सौंपा गया है का सदुपयोग करते हैं। अपने भण्डारीपन को निभाते हैं। अगर आप कलीसिया के ठहराये हुए देनों और दानों को देने में ढिलाई करेंगे। लापरवाह हो जायेंगे तो आप को सौंपे गए धनों का जिसका आप भण्डारी हैं, सदुपयोग नहीं कर सकेंगे। इन धनों से परमेश्वर की महिमा नहीं हो पायगी। इसका लेखा आप को अंतिम दिन में देना पड़ेगा।

इन देनों और दानों से संचित (जमा) होने वाली रकम बांटने या खर्च करने वाले अधिकारियों

Gossner Mission

को भी चाहिए कि वे ईमानदारी और सतर्कता के साथ, उचित-अनुचित को मद्दे नजर रखते हुए इन धनों को खर्च करें। इन धनों का सदुपयोग—परमेश्वर की महिमा के लिए करें वरना इन्हें भी अंतिम दिन में इसका लेखा देना पड़ेगा। जिसको जितना अधिक मिला है उससे उतना ही अधिक लेखा लिया जायगा।

आज हमारी कलीसिया की आर्थिक और आत्मिक हालत सोचनीय है। यदि कलीसिया के हर एक विश्वासी अपने-अपने भण्डारीपन को समझ जाँय तो शीघ्र ही कलीसिया की हालत सुधर जायगी और प्रभु की महिमा होगी।

प्रभु इसमें हमारी सहायता करे ॥ आमीन ॥

सूचना

फुदी टेक्निकल ट्रेनिङ्ग सेन्टर, फुदी/राँची में अगस्त, १९७५ से फिटर एवं शिल्प-कला व्यवासय के प्रशिक्षण निमित, नये विद्यार्थियों का प्रवेश होगा। उम्मेदवारों की शैक्षणिक योग्यता कम से कम नवें श्रेणी उतीर्ण हो। विज्ञान तथा गणित विषयों के विद्यार्थियों को प्राथमिक्ता दी जायगी।

इसके अलावे ग्रामीण स्तर के शिल्प-कला का भी प्रशिक्षण दिया जायगा। इस व्यवासय के लिये उम्मेदवारों की शैक्षणिक योग्यता कम से कम ७वें श्रेणी उतीर्ण हो।

दरखास्त संस्था के दरखास्त फार्म पर लिया जायगा जो निःशुल्क निम्न स्थानों से उपलब्ध होगा—(1) Fudi Technical Training Centre, Fudi, Ranchi (2) K·S.S. office G. E. L. Church, Ranchi (3) Office of Chotanagpur Diocese, Church of North India, Old Hazaribagh Road, Ranchi और (4) Office of the Inspector of Schools, R.C. Church, Post Box No .2 Purulia Road, Ranchi. दरखास्त प्राप्ति की अन्तिम तिथि ११ जून, १९७५ होगी। अधिक जानकारी के लिये संस्था का प्रोसपेक्टस देखें जो उपर्युक्त स्थानों से प्राप्त हो सकता है।

Rev· C. B. Aind
Director
Fudi Technical Training Centre
Fudi. Ranchi

सूचना

सूचित किया जाता है कि बेथेसदा महिला प्रशिक्षण विद्यालय में प्रवेशार्थ आवेदन पत्र भेजने की अन्तिम तिथि २०-६-१९७५ है। प्रशिक्षणार्थियों की योग्यता मैट्रिक पास होनी चाहिए।

प्रभारी
श्रीमती ए० लकड़ा
बेथेसदा महिला प्रशिक्षण विद्यालय
राँची।

Gossner Mission

धन्यवाद, आप का ग्राहक चन्दा [३१वीं मार्च ,,७५ तक]मिला।

1 Mr. P.S. Lugun ,Junain
2 Cat. A. Kerketta, Tarajan
3 Shri Kalyan Mundu, Ruguddih
4 Mr. Saban Barla, Mandamunda
5 ,, Samuel Mundu, Takra
6 ,, B. Kongari, Mosabani
7 ,, Pawal Lakra, Rayosily
8 ,, Santosh Bodra, Bimalgarh
9 ,, Paul Bage, Kereya
10 ,, Nuas Mundu. Kalapani
11 ,, P.S. Baga, Koira
12 ,, Bardan Ekka, Patna
13 Shri M.P. Minz, Bandamunda
14 Mr. Peter Hurad,'Kadru Semartoli
15 Rev. S. K. Jojo, Karimati
16 Rev. P. Ekka, Chandwa
17 Rev. Halan Samad, Churdag
18 Mr. C.A. Tirkey, Chainpur
19 Shri Dhankunwar Knjur
20 Dr. M.M. Mundu, Hotwar
21 Rev. Sursen Kerketta, Simdega
22 Mr. C.M. Ekka, Bokaro
23 Rev. S. Burh, Jharsuguda
24 Prachin Stiphan Horo, Kendughati
25 Mr. Mansukh Topno, Rajadeori
26 ,, Nehemiah Mundu, Hulhundu
27 ,, Immanuel Kandulna, Dhurwa
28 Shri Benjamin Lugun, Kaplas
29 ,, M. Bage, Panisani
30 Mr. Bijay Kumar Bage, Rourkela
31 ,, Patras Sanga, Asingibera
32 Cat. Johan Barla, Deogaon
33 Mr. Niroj Bara, Kinbira
34 ,, M. Indwar, Jamshedpur
35 Cat. Daud Tete, Mugalkata
36 Mr. Bisram Ekka, Patkapara
37 ,, Suleman Purti,
38 ,, Johan Topno, Sarhua
39 ,, Adrias Khess, Salaimunda
40 ,, J. Bodra, Suakati
41 Mrs. T. Soy, Mosabani
42 Mr. J. Barla, Hulong
43 Miss D. Topno, Kiriburu
44 Mr. Junul Lugun, Lanjiberna
45 ,, Komal Dungdung
46 ,, K.M. Kujur, Bhagalpur
47 ,, B.K. Lakra, Andal
48 ,, A. Sanga, Banki
49 ,, Manohar Surin, Hathibari
50 ,, Marcus Bage, Gopur
51 ,, Mansukh Purti, Kundrugutu
52 Cat. Patras Bage, Birkera
53 Mrs Susari Bhengra, Amlesa
54 Rev. J.M. Bhuinya, Lomboi
55 ,, A. Lakra, Chatti
55 Mr. P. Purti, Murhu
57 Miss Shanti Tutti, Govindpur

—:o:—

Gossner Mission

खून का लेखा

यहेज ३३:७-९ ।

जुनुल लुगुन

यदा-कदा घरबन्धु पत्रिका में यह समाचार पढ़ने को मिलती है कि अमुक गांव में इतने धर्म खोजकों ने प्रभु को ग्रहण किया, और अमुक पाद्रो के द्वारा बपतिस्मा लेकर कलीसिया के अंग बन गये। ऐसी खबरों को पढ़-सुनकर कलीसिया के संचालकों का गर्व के साथ खुशी होना स्वभाविक ही है। क्योंकि इस तरह कलीशिया में भाई-बहनों की जन-संख्या दिनों-दिन बढ़ते जायगी और बहुतों को उद्धार (मुक्ति) दिलवाने के एवज में प्रतिज्ञा के अनुसार प्रभु इनाम देगा। पर उनका यह खुशी होना परमेश्वर की दृष्टि में कहाँ तक ठीक है, यह एक विचारणीय विषय है। क्योंकि इस्राइलियों का राजा दाऊद जब अपनी प्रजा की गिनती कराई तो दाऊद के उपर परमेश्वर का क्रोध भड़का। क्यों ?··· आखिर दाऊद ने अपनी प्रजा इस्राइलियों की गिनती करवा के कौन सा महापाप किया था ? जो परमेश्वर का क्रोध न केवल दाऊद पर भड़का बल्कि लाखों इस्राइलियों को महामरी के द्वारा परमेश्वर नाश कर डाला। आज कलीशिया के संचालकों को इन बचनों पर गंभीरता पूर्वक सोच-विचार करना चाहिए। स्पष्ट है कि दाऊद ने अपनी मनुष्यीय दृष्टि से इस्राइलियों की बहुत बड़ी जन-संख्या को देख कर घमंड किया कि में इतनी बड़ी प्रजा का शासक (चरवाहा) हूँ। दर-असल जिन इस्राइलियों को परमेश्वर अपनी निज जाति चुन कर दाऊद को सौंपा था, वास्तव में वे इस्राइली प्रजा पाप और बुराई में फंसकर शैतान की प्रजा (जाति) बन चुके थे, जिनकी गिनती दाऊद ने अपनी बड़ाई के लिये कराई थी।

ठीक यही हाल है आज हमारी कलीशिया की, जिस पर संचालक गण गर्व कर सकते हैं। पर आप हर मंडलियों में जाइये और गौर से देखिये तो हर मंडली में लड़ाई-झगड़े और नाना प्रकार की बुराइयों में फंस कर भाई-बहनों को आत्मिक जीवन मृत प्राय है। बल्कि बहुतों के आत्मिक जीवन तो एकदम ही मर चुकी है। पर वाकायदा जब-कभी कोई अधिकारी मंडली में या कोई सम्मेलन में जाते हैं तो भाई-बहन बडे ही उत्साह के साथ स्वागत-सत्कार करते हैं, और तब अधिकारी गण अपनी मनुष्योय दृष्टि से भाई-बहनों की गर्म जोशी उत्साह को देखकर उनके मरे हुए आत्मिक जीवन को समझने में भूल कर बैठते हैं। सच देखा जाय तो भाई-बहनों के चेहरे पर न परमेश्वर के प्रति प्रेम है न भय। बस ! इसी तरह स्वागत सत्कार करके भाई-बहन अपना मसीही जीवन का रस्म-अदायगी पूरो कर लेते हैं।

आज कलीशिया के भाई-बहनों की दशा ऐसी क्यों है ? इस सवाल का जवाब थोड़े शब्दों में नहीं दिया जा सकता। क्योंकि इसके एक नहीं, पर कई कारण हैं जिनको तबिलम्ई हटाना जरूरी है। इन कई कारणों में से एक कारण का जिक्र मैं नीचे कर रहा हूँ जो कलीशिया के भाई-बहनों के आत्मिक जीवन को मृत प्राय की दशा में पहुंचाने का एक सब से बड़ा जिन्दा प्रमाण है। आज हमारे कलीशिया के उपदेशक यह भूल गये कि पवित्र बाइबल परमेश्वर के दो रुप को प्रगट करता है, और वह दो रुप परमेश्वर का असीम प्रेम और भयंकर क्रोध है। परमेश्वर प्रेमी है यू· ३:१६ और परमेश्वर क्रोध से जलने वाला ईश्वर भी है व्य. वि. ५:९। पर आज-कल के उपदेश में जो कि पंजिका से लिया जाता है, उपदेशक लोग सब मिल-जुल कर परमेश्वर के प्रेम और दया को ही तोते की तरह अलाप कर अन्त कर देते हैं और परमेश्वर का दूसरा भयंकर रुप को मंडली के भाई-बहन नहीं देख-सुन पाते हैं। यह कहना गलत नहीं होगा, कि आज के डरपोक उपदेशक लोग मरे हुए सांप को ही सौ-सौ लठियाँ पीट कर अपना समय फिजुल गवां रहे हैं। पढ़िये यशा. ८:२०-२२।

हमारे उपदेशकों को मालूम होना चाहिये कि बपतिस्मा देने हारा यूहन्ना चिल्ला-चिल्ला कर सिर्फ यही नहीं कहता फिरा कि पश्चात्ताप करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है। पर उसने यह भी किया कि दुष्ट हेरोदेश

Gossner Mission

को दृढ़ता के साथ उसका अपराध जना दिया। कपट से बपतिस्मा लेने के लिये आने वालों को "हे सांप के बच्चों" कह कर फटकारा। यीशु ख्रीष्ट ने केवल परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार ही सुनाता फिरा, बल्कि हेरोदेस को "लोमड़ी" कहा और ढींठ और कठोर यहूदियों को "हे सांपों हे करैंतों" कह कर उल्हना दिया। योना नबी नीनवे नगर इसलिये नहीं भेजा गया था कि वहां के राजा और प्रजा को उद्धार (प्रेम) का सन्देश देवे, पर इसलिये भेजा गया कि राजा और प्रजा दोनों को उनके अपराध और परमेश्वर का क्रोध जता देवे।

आज हमारी कलीशिया नीनवे नगर के समान पाप रुपी आग से धू धू करके जल रही है, और इधर अधिकारियों को महलों (मिशन हाता) से निकलने की फुर्सत नहीं। भले ही सभा-सम्मेलनों में भाग लेने के बहाने बार-बार रांची का चक्कर काट लेवें। क्योंकि अधिकारियों को सेन्ट-पर्सेन्ट विश्वास है कि बार-बार सभा-सम्मेलनो में एटेण्ड करने से कलीशिया के भाई-बहनों को मुफ्त में स्वर्ग राज्य मिल जायगी। समय आ गया है, अब हमारे कलीशिया में डांट और फटकार सुनाने वाले उपदेशकों की जरूरत है, ना कि लल्लो-चप्पो उपदेश देने वाले उपदेशकों की, जो सिर्फ अपने और अपने परिवार के पेट की चिन्ता में ग्रस्त हैं। यदि कलीशिया को जिन्दा रखना है तो उपदेश देने के पुराने ढर्रे (तरीके) जिसमें कई (जंग) लग चुकी है, तुरन्त बदलना होगा यशा० १:२१-२३। अन्यथा परमेश्वर के पुत्र यीशु ख्रीष्ट शान्ति का राज कुमार मरी हुई दुल्हिन (कलीशिया) को नहीं, पर निष्कलंक और पवित्र दुल्हिन-प्र० वा० २१:१०-१२ को लेने के लिये महिमा के साथ लाखों स्वर्ग दूतों के बीच बादलों पर सवार हो कर आ रहा है। प्र० वा० १:७।

इस संसार की परिस्थिति स्पष्ट बता रही है कि नबी और यीशु ख्रीस्ट जिस भयंकर युग की भविष्यवाणी किये हैं, वह भयंकर युग एकदम सामने आ रही है। काश; हमारे कलीशिया के अगुवों की नींद समय से पहिले टुटे और होश में आ जांय तो बहुतों के आत्माओं को विनाश से बचाया जा सकता है। क्योंकि परमेश्वर की यही सबसे बड़ी और पवित्र इच्छा है कि कुछ भी (आत्मा) खोया न जाय। पर...कहावत ही तो है, कि सौ चूहे हजम कर बिल्ली चली भक्तिन बनने। शायद इसी बात को चरितार्थ करने पर हमारे अगुवे तुले हुए हैं।

घरबन्धु के पाठक-गणों,

को यीशुसहाय।

आप लोगों के सहयोग के लिए सभों को हार्दिक धन्यवाद। आप लोगों ने इस पत्रिका के सदस्य रह कर हमारे साथ संगति स्थापित की है, फिर उन भाई-बहनों को विशेष धन्यबाद जिन्होंने अपने लेखों, कविताओं, या सामाचारों को भेजकर हमारे काम में बहुमोल सहयोग दिया है।

आगे आप सभों से हमारा यह निवेदन है कि आप लोग यथा शक्ति इस पत्रिका के ग्राहक बनने और बनाने में हमें बहुमोल सहयोग दें। यह 'घरबन्धु' हर घर का बन्धु हो यही हमारी शुभकामना है। विशेष कर स्कूलों तथा अन्य शैक्षणिक संस्थाओं में तो इसकी कुछ प्रतियाँ अवश्य ही रखी जानी चाहिये क्योंकि यह आप ही की पत्रिका है, इसको आप ही की संगति आवश्यक है, साथ ही आप को तथा आपके बच्चों को भी इससे आत्मिक लाभ है। यह भी निवेदन है कि जहां तक बन पड़े आप लोग समय-समय पर लेख कविता तथा सामाचार आदि छापने के लिये भेजें ताकि पाठकगण आप की योग्यता का लाभ उठा सकें और आपके यहाँ का विशेष सामाचार जान सकें। हमारा ख्याल है, कि शिक्षक-शिक्षिकाएं विशेष शिक्षा प्राप्त लोग हैं अत. उन्हें तो लेख आदि देना आवश्यक ही है ताकि आप की यह पत्रिका उन्नति के पथ पर आगे बढ़ती जाए। लेख आदि के लिये दूसरे पृष्ठ के हिदायतों पर विशेष ध्यान दिया जाए ताकि सम्पादक मंडल को काम करने में सहुलियत हो।

इधर कुछ दिनों से पत्रिका ठीक समय पर नहीं भेजी जा सकी हैं. इसके कई विशेष कारण है। हमें मालुम है सब ही पाठकों को खेद हो रहा है। पत्रिका के इस परिस्थिति से हम भी दुःखी हैं तथा आप सभों से क्षमा प्रार्थी हैं। हमारी आशा है कि आप सभों के सहयोग और प्रार्थना से संपादक मंडल ठीक समय पर घरबन्धु भेजने में सफलवन्त हो सकेंगे। स-ध-न्य-वाद।

सम्पादक।

रजिस्टर्ड नं. आर. एन. सी. ४
वर्ष—६५ रांची, मई १९८५, संख्या ५

Edited and published by Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G.E.L. Church and Printed at G. E. L. Church Press, Main Road, Ranchi / Bihar.

Gossner Mission

धर्मदूत

रजिस्टर्ड नं॰ आर॰ एन॰सी॰.४

वार्षिक मूल्य ५ रु॰

EINGEGANGEN
14. AUG. 1975
Erledigt .....

वर्ष — ९५ रांची, अप्रेल १९७५ · संख्या नं॰ —४

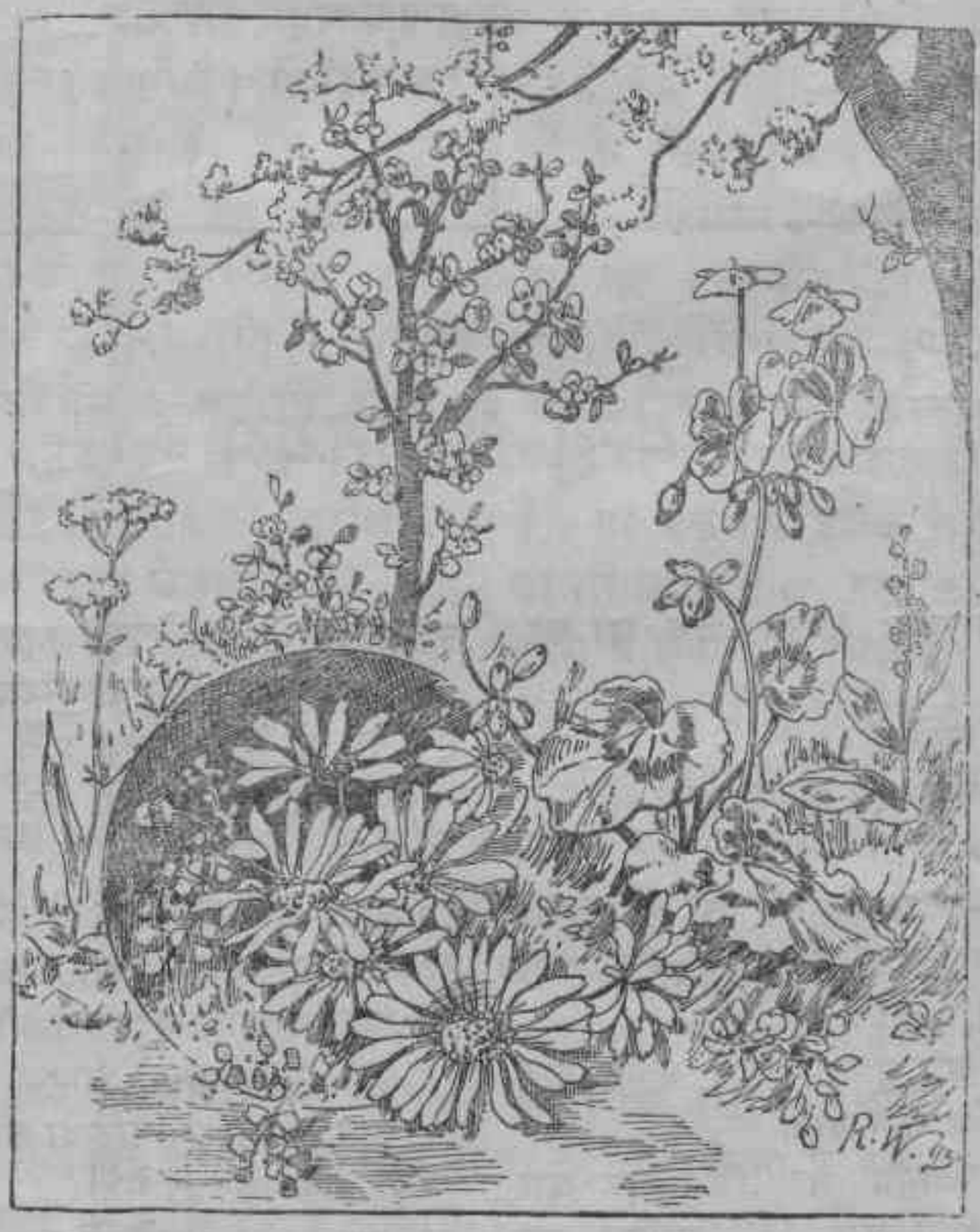

सो यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा,
तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे।

यूहन्ना ८:३६

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

Editor & Publisher
Pramukh Adhyaksh,

Associate Editor
Rev. C. S. R. Topno

Editorial Committee

Rev. M. Tete
Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय	—	३
उपदेश की तैयारी रेभ टेटे	—	४
आदर्श नागरिक कौन —	—	५
जगत के लिये शिक्षा	—	७
प्रतीक्षा	—	८
गोस्सनर कलोसिया में अतिथियों···	—	९
आत्मिक दुर्दशा पर एक विलाप	—	११
प्रेम (कविता)	—	१४
कलीसियाई समाचार	—	१५
मसीही जीवन का लक्ष्य	—	१६
ग्राहक चंदा	—	१९
तुम कहां हो (कविता)	—	२०

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणतः १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य पांच रूपये हैं।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें ।

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये, पते पर ही भेजें। एसोसिऐट एडीटर, घरबन्धु; जी० ई० एल० चर्च [कि० एस० एस० ऑफिस], राँची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता० तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इसमें बांयी ओर 1½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेज

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रखनी चाहिये, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगा।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालू की जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १०-ता० के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवतः ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छपे जाते हैं; ग्राहक चन्दा के बाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवत : डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित कुछ लिखा लें ।

Gossner Mission

सम्पादकीय

'हमारे पापों का प्रायश्चित'

'प्रायश्चित' शब्द का अर्थ है, किये हुए दुष्कर्म या पाप के फल भोग से बचने के लिए चढ़ाये जाने वाला वलिदान।

पुराने नियम में ईश्वर का ऐसा चित्र प्रस्तुत किया गया है कि वह दुष्टों के प्रति क्रोधी है। (भ:स: ७:११) पुराने नियम के लोगों का ख्याल यह था कि पाप सचमुच ही ईश्वर के क्रोध को भड़काता है। लेकिन, कुछ ऐसे भी स्थल मिलते हैं, जिनमें ईश्वर दयावान दिखाई देता है। जैसे :— "ईश्वर दयालु और विलम्ब से कोपकरने वाला है (नेहेमि. ९:१७)

फिर ऐसे भी स्थल मिलते हैं, जिनमें ईश्वर अनुग्राहकारी तथा सच्चा न्यायी के रुप में दिखाई देता है। "वह कोप करने में धीरजवन्त और अति करुणामय है, और अधर्म और अपराध का क्षमा करनेवाला है,। परन्तु दोषी को किसी भी प्रकार से निर्दोष न ठहराएगा-.....।" (गिन्ती १४:१८)

जिस प्रकार लोगों को यह निश्चयता थी कि पाप के कारण ईश्वर क्रोधित होता ही है, उसी प्रकार उनको इस बात की भी निश्चयता थी, कि ईश्वर का यह क्रोध हटाया जा सकता है, और यह तो उपयुक्त वलिदान चढ़ाने के द्वारा संभव था। वलिदान को जादूई शक्ति या गुण के कारण नहीं, परन्तु यह ईश्वर की अपनी इच्छा ही के कारण संभव था। ईश्वर को यह वाणी है. कि .....'उसको मैंने तुम लोगों को वेदी पर चढ़ाने के लिए दिया है, कि तुम्हारे प्राणों के लिए प्रायश्चित किया जाए.....". लैव्य व्य १७:११)। 'क्षमा' ईश्वर का अनुग्रहकारी दान है। इसलिए भजन गानेहारा कहता है, "वह जो दयालु है, वह अधर्म को ढँपता, और नाश नहीं करता, वह बार-बार अपने क्रोध को ठंढा करता है, और अपनी जल जलाहट को पूरी रीति से भड़कने नहीं देता" (भ०स०७८:३८) यह तो ईश्वर के अटल प्रेम के कारण है। उसी प्रेम के वशीभूत होकर वह अपने क्रोध को ठंढा करता है।

नये नियम में भी अनेक स्थल हैं, जिसके द्वारा ईश्वर का क्रोध परिलक्षित होता है। इन स्थलों में यह बतलाया जाता है, कि ईश्वर बुराई का विरोध करता है। हर एक पापी ईश्वर के भयंकर न्याय में पड़ेगा ही।

लेकिन इस भयंकर न्याय से मनुष्य को छुड़ाने का भी उपाय है। इसी के सम्बन्ध में 'प्रायश्चित' का जो ख्याल नये नियम में पाया जाता है, वह पुराने नियम के ख्याल से भिन्न है। पुराने नियम में मनुष्य स्वंय ही वलिदान चढ़ाता है, नये नियम में वलिदान चढ़ाने वाला यीशु मसीह है। इसको हम रोमी ३:२४ -२५ में देख सकते हैं —"उसके (ईश्वर के) अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत मेंत धर्मी ठहराये जाते हैं, उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है।" यहाँ संत पावल के विवाद का विषय यह है कि क्या यहूदी, क्या अन्य ज़ाति सभी ईश्वर के सम्मुख दोषीदार हैं। इसीलिए परमेश्वर का क्रोध सब अधर्मियों पर स्वर्ग से प्रकाट हुआ है। (रोमी १:१८) अब इस कारण कि सारी मनुष्य जाति परमेश्वर के सम्मुख दोषी ठहर चुकी है, ख्रिस्त का कार्य इसी दोषीदार मनुष्य जाति के उद्धार के लिए आवश्यक हुआ। अपने रोमी पत्री के प्रारम्भिक अध्यायों में संत पावल ने ईश्वर के क्रोध पर जोर दिया है, और ख्रिस्त के उद्धारकारी कार्य के, उस क्रोध से मनुष्य को बचाने का एक उपाय के रुप में दिखाया है।

१ यूहन्ना २:२ में भी यीशु मसीह हमारे हां सारे जगत के पापों का 'प्रायश्चित' कहा गया है। इसमें भी यह बतलाया गया है कि यीशु का काम मनुष्य को ईश्वरीय क्रोध से बचाना है। यह भी ध्यान देने की बात है, कि यीशु का उद्धारकारी कार्य ईश्वर का अपना ही उपाय है। यह उपाय ईश्वर के प्रेम की महानता को दर्शाता है। सच है कि यीशु ने अपने आप को हमारे बदले क्रूश पेड़ पर वलिदान कर दिया, और सामर्थ - सहित मृतकों में से जी उठने के द्वारा हमारे उद्धार का काम पूर्ण कर दिया है।

आइये हम उस महान् उद्धार के कर्त्ता को, अपनावें, ताकि हमारे सारे पाप क्षमा किए जाएँ और हम परमेश्वर के उस उपाय में प्रवेश कर सकें, जो समस्त मानव जाति के 'प्रायश्चित' के लिए यीशु मसीह में सम्पन्न किया जा चुका है।

घरबन्धु, अप्रेल १९७५

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

मार्टिन टेटे

क्वासीमोदोगेनेती

(नये जन्मे बालकों की नई) योहन २१ : १५-१६

पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बीच यीशु अपने चेलों को दर्शन दिया और उन्हें विशेष आज्ञा भी दिया।

प्रभु की आज्ञा

क, प्रेम से मेरी भेड़ों की रखवाली कर (१५-१७) पुरोहित का काम, प्रचारक का काम, चरवाही का काम, सेवा, पंच का काम, प्रचीन का काम प्रेम से कर।

ख, मेरे पीछे हो ले (१९) मैं जैसा काम किया वैसा ही कर, भेड़ों के लिए प्राण दे। जवानी के दिनों में मनमाना (१८) जीवन व्यतीत किया परन्तु मसीही होने के उपरान्त मसीह की इच्छा के अनुसार जीवन व्यतीत करना है (१८) क्रूश उठाना होगा। क्रूश की मृत्यु सहना होगा।

जीवित प्रभु आज भी हमें यही आज्ञा देता है। मसीही होने का अर्थ क्रूश उठाना और प्रेम से उसकी आज्ञाओं को पालन करना है।

मिसेरीकोरदियस दोमिनी

(प्रभु की दया) यूहन्ना १४ : १-६

यहुदियों के लिये परमेश्वर पर विश्वास करना विशेष बात थी। उनका विश्वास था कि ईश्वर सब कुछ करता है। परन्तु यीशु पर विश्वास करना उनके लिये कठिन विषय हो गया था।

क, मैं मार्ग हूँ मुझ पर विश्वास रखो—मैं पिता के पास पहुँचने का मार्ग हूँ। मैं पिता परमेश्वर के घर में जाने का मार्ग हूँ। मैं ही तुम्हें पिता का घर ले जाऊँगा।

ख, मैं सत्य हूँ—मैं पिता (ईश्वर) का सत्य प्रकाशन हूँ। मैं सारी सृष्टि के विषय सच्ची बातों को बतलाता हूं। मै सब जीवित प्राणियों के विषय में सच-सच बोल सकता हूँ। मेरा बचन सत्य है। मै नहीं बदलता हूँ।

ग, मैं जीवन हूँ—पिता का जीवन मुझ में है। मैं सारी सृष्टि को जीवन देता हूँ और संभालता हूँ। हम यीशु पर विश्वास करें। क्योंकि उसका बचन सत्य है जिससे हम पवित्र किये जाते हैं।

युबिलाते

(ललकारो) यूहन्ना १२ : २०-२६

यीशु का समय निकट है। यीशु ही के समय में यीशु की मृत्यु होगी। यीशु के समय में यीशु की मृत्यु में यीशु की महिमा होगी। यह ईश्वर की इच्छा के अनुसार है।

यीशु की महिमा

क, यीशु की महिमा मृत्यु में है—यीशु अपनी महिमा को गेहूं के दाने के दृष्टान्त से समझाता है। गेहूँ मृत्यु के द्वारा बहुत संख्या में बढ़ जाता है। ऐसा ही यीशु की मृत्यु होगी और मृत्यु के द्वारा बहुतों को अपनी ओर खींच लेगा और अपने लिये जीत लेगा। यह मृत्यु के द्वारा युनानियों और अन्य जातियों को जीतेगा। लोग उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लेंगे और यीशु की कलीसिया में आवेंगे।

ख, यीशु की महिमा यीशु के विश्वासियों की मृत्यु में है:—यीशु पर विश्वास करने वाला अपनापन (स्वार्थ) "अहम" "मैं" को बलिदान कर देता है। लोग यीशु के लिए "मैं" को मार डालते हैं तब उसकी महिमा होती है। (२५)

Gossner Mission

आप की बपतिस्मा में यीशु और आपकी मुलाक़ात हुई है। क्या आप यीशु के लिये "अहम्" "मैं" को बलिदान करने के लिये तैयार हैं? यीशु ने आपके लिये अपनी जान दी है— क्या आप अपनी जान को यीशु के लिए देने को तैयार हैं?

कन्ताते

(गीत गाओ) यूहन्ना ६ : ६०-६६

यीशु सचमुच में जीवन की रोटी है। इस में भेद की बात है। यीशु इसी बात में जोर देता है कि मेरा वचन आत्मा और जीवन है। आत्मा और जीवन के विषय वचन में प्रकाशन है।

जीवन की रोटी की गवाही

क, आत्मिक जीवन के विषय— वचन देहधारण किया है। देहधारी वचन में सामर्थ है जो मनुष्य को अनन्त जीवन में पहुँचाता है। इस बात को वही बूझ सकता है जो यीशु पर विश्वास करता है (यूहन्ना ४ : १४)। विश्वास तो कार्य्यकारी होता है। विश्वास से ही विश्वासी का जीवन परिवर्त्तन होता है।

ख, पुनरुत्थान के विषय—जीवन की रोटी खाने वाला पुनरुत्थान का भागी होगा। थोड़ी सी रोटियों से अधिक लोगों को खिलाना इस बात की ओर संकेत करता है कि यीशु विश्वासियों को जिला उठावेगा। वह मृत्यु से लोगों को छुड़ाने की सामर्थ रखता है। (६ : ५४)।

ग, स्वर्गारोहण के विषय—यीशु स्वर्गीय रोटी है। स्वर्गीय रोटी खानेहारा स्वर्ग की ओर बढ़ेगा। रोटी खानेहारा न केवल जी उठेगा परन्तु स्वर्ग की ओर यीशु के संग बढ़ेगा। यीशु के संग पानी पर चलेगा और उसकी हानि नहीं होगी। (६२) क्या आज हम भी यीशु के शिष्यों के समान यीशु से मुख मोड़ना चाहते हैं? क्या अब तक हम अविश्वस्त हैं?

"आदर्श नागरिक कौन और उसका कर्त्तव्य क्या?"

'जयमसीह सुरीन'
गोस्सनर आध्यात्मिक महाविद्यालय, राँची।

हम भारत देश के सभी मसीही, प्रजातंत्र देश के नागरिक होने के नाते, इतना तो हमको अवश्य ही विदित है कि हम कैसे इस देश का नागरिक बनते हैं और किन शर्त्तों के आधार पर हमें नागरिकता प्राप्त होती है। तात्पर्य यह है कि हम इस देश के नागरिक तब ही कहलायेंगे या तो नागरिकता तब ही मिल सकती है जब हम या हम नहीं तो हमारे माता-पिता इस देश में जन्म लेते हैं, या जब कोई इस देश में किसी निश्चित अवधि से रहा हो। ठीक ऐसा ही हमारे स्वर्गीय शाश्वत देश की नागरिकता प्राप्त करने और उस देश के नागरिक बनने के लिए भी एक विशेष शर्त्त या प्रक्रिया है। वह शर्त्त तो मसीही धर्म सिद्धांतानुसार बाईबिल की भाषा में, 'नये सिरे से जन्म लेने को ही कहा गया है' (यूहन्ना ३:३)। जब से हम मसीही, यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा प्राप्त करते हैं तब से ही हम परमेश्वर के स्वर्गीय परिवार का अभिन्न सदस्य बन जाते हैं और हम उस (शाश्वत) देश के नागरिक बन जाते हैं। परन्तु यहीं एक विशेष ध्यान देने का भी विषय है। कुछ मसीही यह दावा रखते हुए ललकार के रूप में कहते हैं, 'अरे भाई! मेरा जन्म तो एक मसीही परिवार में हुआ है मेरे माता-पिता, दादे और परदादे सभी मसीही थे और ईश्वर ने उन मेरे प्रियों को अपने अनन्त बिश्राम में बुला भी लिया। अर्थात मैं तो एक जन्म जात मसीही हूं। इन से बढ़कर यदि मैं दूसरे शब्दों में कहूँ तो यह हो

Gossner Mission

सकता है कि पवित्र वपतिस्मा पाकर अब तो स्वर्गीय शाश्वत देश का एक नागरिक भी बन गया हूँ। अब सोचने और ध्यान देने की बात यह है, यहां क्या दिखाई देता है ? ऐसे-ऐसे मसीहियों में स्वभाविक रूप से आत्मभिमान जागता है और इसी परीक्षा में फंसकर वे शाश्वत देश के आदर्श नागरिक बने रहने के बनिस्पत प्राप्त नागरिकता को भी खोते हुए सांसारिकता की ओर मुड़ जाते हैं।

खेद की बात हो जाती है, इसका क्या कारण है ? संभवतः मुख्य रूप से दो कारण हो सकते हैं। प्रथम यह कि ऐसे मसीही लोग वपतिस्मा की गलत टीका करते हुए वपतिस्मा को ही उद्धार का साधन समझते हैं। द्वितीय यह कि वे नागरिक या नागरिकता शब्द के अर्थ से ही अनभिज्ञ रहते हैं। इसीलिए यीशु मसीह ने स्पष्टतः अपने मुख से कहा था, 'कि जो कोई यीशु नाम में वपतिस्मा लेता है, उसको साथ में आजीवन उसी यीशु नाम में विश्वास करना भी होगा' (मार्क १६:१) अधिक संभव है वैसे मसीही लोग नागरिकता या नागरिक शब्द के अर्थ से ही अनभिज्ञ रहते हैं। फलतः ऐसे लोग शाश्वत देश के नागरिक बन जाने पर भी, अपने अधिकार और कर्त्तव्यों को पूर्णतः पहचानने में जीवन पर्यन्त लाचार ही रह जाते हैं। यहां दर-असल बात यह है कि हमको जब किसी देश की नागरिकता प्राप्त हो जाती है और हम उस देश के नागरिक बन जाते हैं; तो नागरिकता प्राप्त होने और नागरिक बन जाने का अर्थ यह होता है कि हमको उस देश में जीने, रहने और यथाशक्ति धनोपार्जन करने और उसका उपभोग करने के लिए उस देश की सरकार द्वारा संवैधानिक अधिकार प्राप्त होते हैं। अब इसी अधिकार का उपभोग करते हुए और इसी अधिकार की आड़ में रहते हुए हम नागरिकों का कर्त्तव्य भी हो जाता है कि हम उस देश के प्रति निष्ठा रखें। यही है नागरिकता का अर्थ। ठीक इसी रीति से हम मसीहियों के साथ भी यही बात लागू होती है। जैसा हमने ऊपर देख ही चुका है; हमको पवित्र वपतिस्मा (नये सिरे से जन्म लेने से) के द्वारा उस शाश्वत देश की नागरिकता प्राप्त हो चुकी है और हम उस देश के हम नागरिक भी बन चुके हैं, तो हमें भी सृष्टि के आरम्भ से निर्मित परमेश्वर के उस शाश्वत देश में पहुँचने, प्रवेश पाने और इनसे बढ़कर परमेश्वर के नित्य पुत्र-पुत्रियों के रूप में ग्रहण होने की और उस देश की सारी सम्पतियों का वारिसदारी और उपभोक्ता बनने के लिए एक मौलिक अधिकार प्राप्त है (यूहन्ना १:१२; रोमियों ८:१७)। परन्तु अधिकार और कर्त्तव्य में अन्योन्यश्रय संबंध रहने के कारण और हम उस देश के नागरिक होने के नाते, परमेश्वर की पवित्र इच्छा एवं आज्ञानुसार उस शाश्वत देश के प्रति निष्ठा दिखाने के लिए कुछ कर्त्तव्य काम हमारे जिम्मे सौंपे गये हैं। जैसे :— सुसमाचार प्रचार करने की विशेष आज्ञा (मत्ती २८:१९–२०) और साथ में अपने सृजनहार परमेश्वर और पड़ोसियों से अपने समान प्रेम पूर्ण व्यवहार करने के लिए हम से कहा जाता है (देखें, लैव १९:१८; लूका १०:२७)। परन्तु अब पुनः हमारे समक्ष एक नया सवाल उत्पन्न होता है; सवाल है, क्या भारत देश या स्वर्गीय शाश्वत के प्रत्येक नागरिक अपने-अपने क्षेत्रों में, प्रदत्त अधिकारों एवं कर्त्तव्यों को सही ढंग से निभा रहे हैं ? उत्तर मिलता है, हमारे देश के प्रत्येक नागरिक सरकार द्वारा प्रदत्त संवैधानिक अधिकारों का तो उपभोग करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं परन्तु देश के प्रति जहां निष्ठा दिखाने की बात आती है, साधारणतः वे इस बिंदु पर तो चूक जाते हैं फलतः एक कारण यह भी है, हमारे भारत देश की अवन्नति का। देश के नागरिकों में स्वार्थपरता, साम्प्रदायिकता, आलस्य ये सारे दुर्गुण भरे पड़े हैं। फलस्वरूप वे अपने-अपने कर्त्तव्य कामों को जो देश के प्रति रहते हैं, पूर्ण रूपेण पूर्ण करने में असफल ही रह जाते हैं। शत् प्रतिशत यदि हम कहें तो हम मसीहियों के साथ भी उपरोक्त बातें लागू होती हैं। इसी कारण से आज हमारे लिए पारिवारिक

Gossner Mission

प्रार्थना पर जोर देना, बाइबल का अध्ययन करना और उस पर मनन करना पहाड़ सा हो जाता है। हम उद्धार पाये हुए लोग अपने आपको कहते तो हैं परन्तु उद्धार के संवाद को गैर-मसीहियों तक पहुँचने में डरते एवं हिचकिचाते हैं; अपने पड़ोसियों और बैरियों से स्नेह रखने के बदले, हम अपने-आप को स्वार्थ और प्रतिशोध की भावना रूपी अभूषणों से अभूषित करने में ही अपने जीवन का अमूल्य अवसर गवांते जा रहे हैं। इस पार्थिव जीवन में जीते हम मसीहियों को यीशु मसीह की शिक्षा एवं आज्ञानुसार गैर-मसीहियों के बीच आदर्श छोड़ना है। ताकि हमारे मसीही जीवन और आचरण द्वारा प्रभावित होकर मसीही जीवन के आदर्श पथ और इसमें निहित आंतरिक अलौकिक रहस्य को पहचान सकें। क्योंकि कहा जाता है, "कि ख्रीष्ट के सच्चे अनुगामियों का आदर्श जीवन ही गैर-मसीहियों के लिये 'सुसमाचार' है।" इस तरह से हम साक्षात देख सकते हैं कि भारत देश चाहे स्वर्गीय शाश्वत देश में आदर्श नागरिक तो वही है; जो ऊपर वर्णित कर्त्तव्य कामों को सही ढंग से पूर्ण कर रहा है और उसके जिम्मे दिये गये उन्हीं जिम्मेदारियों को विश्वस्तता से निबाहना ही उसका परम कर्त्तव्य है।।

!!जगत् के लिए क्षमा का संदेश!!

सी० आर० होरो (शिक्षक) लाली।

एक बार विद्रोही पुत्र अपने पिता के घर से भागकर डाकुओं के झुण्ड में जा मिला, और थोड़े ही दिनों में उन्हीं के जैसा साहसी और क्रूर बन गया। पिता ने नौकरों को बुलाकर उन्हें आज्ञा दी कि मेरे पुत्र के पास जाकर उससे कहो कि यदि वह पश्चात्ताप करे और अपने घर को लौट आये तो उसके सारे अपराध क्षमा किये जायेंगे और उसे अपने घर में फिर स्वीकार कर लूँगा। परन्तु नौकरों ने भयानक जंगलों और क्रूर डाकुओं से भयभीत होकर जाने से इन्कार कर दिया। तब उस लड़के का बड़ा भाई जो पिता के समान ही उस-से प्रेम करता था; क्षमा का सन्देश लेकर स्वयं चल पड़ा। परन्तु ज्योंही उसने जंगल में प्रवेश किया डाकुओं का एक दल उस पर टूट पड़ा और उसे सख्त घायल कर दिया। उस दल के साथ उसका छोटा भाई भी था। जब उसने अपने बड़े भाई को पहचाना तो उसका मन शोक और पछतावे से भर गया। बड़े भाई ने मरने से पहले उसे क्षमा का सन्देश दे दिया और कहा कि मेरे जीवन का उद्देश्य पूर्ण हो गया और प्रेम का कर्त्तव्य भी पूरा हो गया। यह कह कर उसने प्राण त्याग दिया। बड़े भाई के इस बलिदान का उस विद्रोही युवक पर इतना प्रभाव पड़ा कि वह पश्चात्ताप की भावना लेकर अपने पिता के पास लौट गया और उसी दिन से एक नया जीवन व्यतीत करने लगा। तो क्या मेरे बालकों के लिए यह उचित नहीं है कि जैसे मैंने सब के त्राण और मुक्ति के निमित्त अपना प्राण बलिदान किया वैसे ही वे भी अपने उन भाईयों के पास जो सीधे मार्ग से भटक कर पाप में नष्ट-भ्रष्ट हो रहे हैं कृपा का सन्देश पहुँचाने के लिए अपना बलिदान देने को तत्पर हों? खृस्तान लोगों को सभी (कलीसियाओं को) जीवित मसीह की ओर से यह निमंत्रण दिया गया है कि वे अपना प्राण देकर (जीवित-बलिदान) द्वारा दूसरे लोगों को आत्मिक जीवन का अनुभव कराएँ और उन्हें मृत्यु बंधन से मुक्त करें।

परन्तु सवाल यह है कि खृस्तानों में भी अधिकांश लोगों को आत्मिक जीवन के बारे में

Gossner Mission

खुद ही कुछ अनुभव नहीं है; क्योंकि वे आत्मिक जीवन नहीं बिताते हैं। मार्ग की वास्तविकता मार्ग में चले बिना नहीं जानी जा सकती है। मार्ग के विषय (यीशु के विषय) तो गैर-मसीही भी जानते हैं। हमको ईश्वर ने इसलिए चुना है कि हम मार्ग को जानें (यूहन्ना १४:६) सच्चा मार्ग को नहीं जानने के कारण ही कुछ अगुओं ने लोगों को सीधे रास्ते से भटका दिया है। क्योंकि वे अगुवे खुद ही मार्ग को नहीं जानते; सिर्फ मार्ग के विषय में जानते हैं। अतः हम में से प्रत्येक का कर्त्तव्य यह है कि हम यीशु मसीह (जो मार्ग है) को पकड़ें, उसके द्वारा सम्पन्न किये गए उद्धार को अपनावें। मत्ती २८:१९,२० और १ पितर २:९ के अनुसार हम हर एक को सामान्य पुरोहिताई सौंपी गई है। हम अपनों को प्रभु के हाथों समर्पित करें और उस क्षमा का सन्देश जगत को दें, जिसका प्रदर्शन क्रिस्त ने आप ही कलवरी पर दिखाया। वह हर एक के पापों को क्षमा करना चाहता है,..... यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात धार्मिक यीशु मसीह और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है : और केवल हमारे ही नहीं, बरन सारे जगत के पापों का भी"। १ यूहन्ना २:१-२

"प्रतीक्षा"

सी० डी० एल० कुजूर
बारोबीसा।

प्रतीक्षा किस बात की? हरएक व्यक्ति भिन्न-भिन्न विषयों तथा बातों की प्रतीक्षा करते हैं। समय-अनुकूल जब प्रतीक्षा पूर्ण हो जाती, तब क्या ही आनन्द होता है। हरएक प्रतीक्षक की प्रतीक्षा पूर्ण होने पर, मानो उसके जीवन का मोड़ ही बदल जाता है। उसकी बड़ाई करता है। उसके सम्बन्ध में प्रचार करता है। पम्पलेट आदि निकाल कर वितरण करता है।

प्रतीक्षा से मेरा मतलब—गोस्सनर लूथरन कलीसिया की प्रतीक्षा। पांच वर्ष के मन-मुटाव के पश्चात् अंचलीय संविधान, महासभा द्वारा सर्व-सम्मति से ग्रहण किया गया। विश्वास था—इस संविधान से कलीसिया संगठित हो जायगी; परन्तु हुआ क्या? कितने क्षेत्रों ने आरम्भ से इस संविधान को ग्रहण नहीं किया। के०एस०एस० ने बुद्धि, बल और धन बेहिसाब खर्च किया, फिर भी संविधान के अन्दर कितने क्षेत्रों को नहीं ला सका। संविधान बलहीन पाया गया। प्रतीक्षा थी—सम्पूर्ण कलीसिया एक सूत्र में बन्ध जाएगी, परन्तु जैसा समय बीतते गया—जगह-जगह मन-मुटाव और निष्प्रेमता का बीज उदय होने और पनपने लगा।

गत १३-१५ मई १९६९ की बैठक में के.एस.एस. ने संविधान सम्बन्धी समस्याओं के विषय बारीकी ढंग से विचार कर स्वीकार किया कि हमारी गोस्सनर कलीसिया के अन्तर्गत पूरी शान्ति एवं एकता अंचलीय नियमावली द्वारा स्थापित न हो सकी है। के०एस०एस० ने बर्त्तमान संविधान के खोखलेपन को देखा। ऐसी परिस्थिति में पन्द्रह व्यक्तियों की एक संविधानी सभा का गठन किया गया। संविधानी सभा ने बड़े परिश्रम से नया संविधान तैयार किया। प्रतीक्षा थी, निकट भविष्य में कलीसिया का रूप बदल जाएगा। प्रतीक्षा थी—अब शान्ति और प्रेम का राज्य स्थापित हो जाएगा। परन्तु कोरोबोरेटिव वोट ने संविधानी सभा के सारे

Gossner Mission

परिश्रम और रुपये को मिट्टी में मिला दिया। प्रतीक्षा का मियाद बढ़ गया। प्रतीक्षा...प्रतीक्षा... प्रतीक्षा...कब तक प्रतीक्षा? अब भी कलीसिया के प्रत्येक सदस्य की आँखें के०एस०एस० की ओर लगी हैं, परन्तु ऐसा दिखता है कि कलीसिया के अगुवों की नजर सदस्यों की ओर नहीं है।

क्या सत्य नहीं कि प्रतीक्षा करते-करते लोगों का प्रेम और जोश ठण्ढा होते जा रहा है? इधर गरीबी और अकाल की भयंकरता के कारण दान देने में कठिनाई हो रही है। कब-तक निर्बुद्धियों की आँखों में पट्टी बन्धी रहेगी?

प्रतीक्षा का प्रश्न है—संविधान है क्या? मेरे समझ में—संविधान तो सदस्य-समूह का मार्ग-दर्शक है, जिससे हरएक व्यक्ति शान्ति और आनन्दपूर्वक परमेश्वर के राज्य में रहे। उसकी आज्ञानुसार काम करे। उसकी महिमा बढ़ावे। परन्तु जहाँ जीवन (उद्धार) की बातें आती हैं—मसीह यीशु से है, संविधान से नहीं। इससे मेरा मतलब नहीं कि संविधान न रहे। संविधान में जोड़-घटाव या रद्दो बदल की आवश्यकता है। जैसा परमेश्वर का संविधान मसीह यीशु में अन्तिम और ठोस है, वैसा हमारी कलीसिया का संविधान नहीं है, तो कितनों को संविधान के सुधार विषयों पर क्यों खटकता है? क्या यह प्रभु की कलीसिया से खिलवाड़ करना नहीं है?

प्रतीक्षा है, कब कलीसिया का नव निर्माण होगा? क्या कलीसिया में जातियता-जनित समस्याएँ और अशान्ति नहीं है? फिर भी चेतन-शक्ति अब-तक क्यों उत्पन्न नहीं होती? किसी ने सत्य कहा है—"मुँह में राम-राम बगल में छूरा।" केन्द्र के सभा-समितियों में जोरदार रूप से विचार और निर्णय लिया जाता है; परन्तु इकाई में जा कर उन्हीं विचारों एवं निर्णयों का खंडन किया जाता है। यह तो अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने के बजाय है क्या?

प्रतीक्षा में हमारा विश्वास छिछला होते जा रहा है। आदर्श की बातें मिटती जा रही हैं; तो फिर हम से परमेश्वर की महिमा कैसे हो सकती है? परमेश्वर ने अपने प्रेम के बहुतायत के कारण गोस्सनर कलीसिया को बार-बार बाहर और भीतर के बवंडर से बचाया है। अतः आवश्यक है, गोस्सनर कलीसिया के बेटे-बेटियाँ नये-जन्मे बालकों की नाईं निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करें। वही हमें स्वर्गीय वरदानों से भरपूर करेगा, ताकि गोस्सनर कलीसिया का पुनः नव-निर्माण होगा और हमारी प्रतीक्षा पूरी हो जाएगी।

प्रभु कहता है—"तू ने अपना पहिला सा प्रेम छोड़ दिया है। सो चेत कर, कि तू कहां से गिरा है, और मन फिरा और पहिले के समान काम कर।"

इस कारण "सब बातों को परखो, जो अच्छी है उसे पकड़े रहो।"

गोस्सनर कलीसिया में अतिथियों का आगमन

डॉ. सी. के. पॉल सिंह

बीते नोवेम्बर माह से हमारे कलीसिया में अतिथियों का मानों तांता लग गया, कोई दल में आये, कोई जोड़े होकर आये कोई अकेले आये फिर तो कोई जर्मनी से तो कोई अमेरिका से और कोई स्वीट्जरलैंड से? अनेकों के मन में प्रश्न उठा क्यों इतने मेहमान आ रहे हैं? हमें विशेष सहायता देने के लिये? आर्थिक सहायता? या हमारे झगड़े व अशान्ति को दूर करने की सलाह के लिये? क्या ये विदेशी हमें सलाह व सहायता दे सकते हैं? इस और भी अनेक प्रश्न हैं। यहां कुछ आवश्यक बातें यह दी जाती हैं।

Gossner Mission

आज जगत छोटा हो गया है, आने जाने के साधन एवं अन्य आवागमन एवं समाचार साधनों से भी ऐसा ही दीखता है। एक दूसरे के यहां जाना और अधिक बातों को जानना अनेक अभिरुचियों कुछ विशेष अभिरुचि हो गये हैं; साथ ही पश्चिमी देशों के मुद्रा भी हमारे देश के लिये विशेष सहायक हो गये, उनका अधिक मोल होने से वे सहज में ही यहां अधिक धन और सामग्री जुटा सकते हैं।

अनेक मेहमान आये कि यहां आकर उन बातों को और जगहों को स्वयं देखें जिनके विषय वे सिर्फ सुनते और पढ़ते थे। बहुत तो गोस्सनर कलीसिया के लोगों और जगहों से अपने दानों और प्रार्थनाओं द्वारा सम्बन्धित थे अत: उनको देखना चाहते थे, चूँकि उनके रूपैये का मोल अधिक है इस लिये वे आने जाने तथा रहने के खर्च के लिये सथेष्ट रकम जमा कर सकते हैं, अत: अन्य जगह छुट्टियों बिताने के खर्च को जमा कर हमारे देश तक और हमारी कलीसिया तक पहुंचने में उनको आनन्द है। अत: कुछ सहज से इधर आने की सोच सकते थे, कि लौट कर हमारे बीच की बातों को बतला सके यहां के आनन्द, दु:ख और अन्य बातों को भी समझ सकें, तस्वीरों को दिखा सकें और उसके द्वारा वहां अपनी मंडली में भी बतला सकें और उसको हमारे लिये प्रार्थना और बिचार में उनको व्यस्त रखते हुए जाग्रत भी कर सकें। हमारे यहां ऐसे भी अतिथि आये जो संगठन के प्रतिनिधि भी थे। वे हमारी परिस्थितियों को जानने और तद्नुसार योजना सोचने विचारने के लिए भी आये। एक ओटोनोमस कलीसिया के प्रशासनिक, आर्थिक और आत्मिक परिस्थिति में कितना बाहर वाले हाथ डाल सकते हैं, गोस्सनर कलीसिया की अपनी सामर्थ, योग्यता और कमजोरी क्या है, इन बातों का भी कितनों ने विशेष ध्यान किया। प्रशासन में बाहर वालों को कुछ कहना या करना चाहिए या सिर्फ आर्थिक बातों के लिए ? आत्मिक जीवन के लिए बाहर से आये मेहमान कितना कर सकते हैं, इन बातों पर अनेकों मेहमानों ने विशेष गौर किया।

हमारी कलीसिया आत्मशासन के लिये तो बाहर वालों को हाथ डालने नहीं देने चाहती है, पर आर्थिक सहायता के लिए भी इनकार नहीं है, पर उल्टे हम अपनी परिस्थिति को इतनी हीन दिखाता की आर्थिक दया की बुन्दे बरस पड़े– यह कहाँ कितना और कैसे उचित हैं इनपर भी मेहमानों ने गौर किया।

अनेक मेहमान तो हमारी कलीसिया के विश्वास, आनन्द आत्मपालन और आत्मशासन के विषय और अधिक जानना चाहते थे, क्योंकि वे इसको हमारी कलीसिया की सामर्थ समझते हैं, ताकि वे उसको अपनी कलीसिया में भी बतला सकें। अत: उनका आगमन हमारी सहायता के लिये नहीं पर निजी सहायता के लिए था।

कुछ मेहमान इस लिए भी आये कि हमारी और उनके साथ एक साझेदारी की भावना जाग्रत हो कि हम एक दूसरे से दूर होते हुए भी बहुतों के साथ बहुत बातों के विषय आदान-प्रदान कर सकें और इस तरह एक दूसरे से अच्छी बातों व कामों को सीख सकें। आज अनेकों विचार में बदलाहट आ गयी है कि पश्चमी देशों के लोग भी पूर्वी देशों (एशिया-अफ्रिका) से कुछ सीख सकते हैं, अत: इसी विचार को लेकर भी हमारे यहां मेहमान आये हैं। यों तो मेहमान स्वयं कहते हैं कि गोस्सनर कलीसिया का आनन्द, विश्वास एवं उसकी जागृति दी गयी अन्य समस्याओं (गरीबता निरक्षरता, स्वार्थता, आदि) के बावजूद भी सराहनीय है ! यह अपने देश की मंडलियों में भी होना आवश्यक है।

हमारे यहां कुछ ऐसे मेहमान भी आये जिनको विशेष योजनाओं के अन्तर्गत कुछ निरीक्षण एवं सलाह-विचारादि के साथ ही कुछ कार्यशिविर, विचारगोष्ठी इत्यादि भी करना चाहते ताकि गोस्सनर कलीसिया के भाई-बहनों में अधिक सेवा, सहायता एवं सहयोग की भावना कलीसियाई विशेष जबाबदेहियों के प्रति बढ़ सकें; यह विशेष कर एल.डब्ल्यु. एफ. के प्रतिनिधि का उद्देश्य था, जब वे हमारे बीच आये।

हमारे यहां कुछ ऐसे भी अतिथि आये, जो दरअसल दूसरे लक्ष्य वे उद्देश्य से अपने देश से निकले, परन्तु वे हमारे देश होकर गुजरनेवाले थे या हमारे देश के अन्य क्षेत्र में आये, अत: वे हमारे पास भी थोड़ा अधिक समय और खर्च देकर हमारी कलीसिया भी चले आये, क्योंकि उन्होंने भी हमारी कलीसिया के भाई बहनों, यहां के कामों आदि

Gossner Mission

के विषय सुने थे या अन्य तरह से सम्बन्धित थे। संयोगवस इस बार अनेक लोग विभिन्न कार्यों में एशियाई क्षेत्र में आये अत: हमारे बीच भी आ गये।

अत: हमारे लोगों को यह सोचना कि अब गोस्सनर मिशन या दूसरी संस्थायें हमारे स्वशासन व स्वपालन में कोई बदलाहट लायेंगे, गलत होगा। हमारी ओटोनोमी के आधार पर वे हमारे साथ काम करना चाहते हैं पर वे हमारी सहमति पर ही करेंगे, हमें भी स्वशासन एवं स्वपालन के आधार ही उनसे किसी बात या वस्तु की आशा करनी चाहिए। न हमें ओटोनोमी को ठुकरा देना है और न अथितियों को ही ठुकरा देना है।

शोक समाचार

राजगांगपुर (उड़ीसा) के पाद्री शमूएल बरला की धर्मपत्नी श्रीमती बहालेन बरला को बहुत दिनों से लोहू बहने की बिमारी थी। अनेक प्रकार के इलाज के बावजूद भी बढ़ती ही गयी। अन्त में वह माता-पिता के यहाँ कोटबो: लायी गयी। वहीं १, ३, ७५ को सुबह साढ़े आठ बजे वह प्रभु में सो गयी। स्थानीय कब्रस्थान में ही उसे मिट्टी दी गयी। वह करीब ३२ साल के उम्र की थी।

श्रीमती बरला राजगांगपुर इलाका के महिला समिति की सभापति थी। जब तक ताकत था वह धीरज से समिति का काम चलाती थी। निवेदन है कि आप सभी, शोकित परिवार के लिए प्रार्थना करें।

आत्मिक दुर्दशा पर एक बिलाप

शेमेर, बिरमित्रापूर

१. गोस्सनर कलीसिया का जलप्रलय—

नूह के दिनों में पाप जगत में बढ़ गई (उत्पत्ति ६ : ५)। नूह के समय मानव और दानव में कोई अन्तर परमेश्वर ने नहीं देखा, जिसके कारण परमेश्वर जल-प्रलय के लिए विवश हो जाता है कि ये सारी दुष्ट जाति विनाश किये जाएं। क्या मनुष्य, पशु पक्षी, जीव-जन्तु सबको परमेश्वर नाश करता है। परमेश्वर ने नूह को आज्ञा दिया कि वह एक विशाल नौका बनावे और परिवार सहित उसमें प्रवेश करे तथा जो पशु-पक्षियाँ जल में ठहर नहीं सकते उनमें से एक-एक जोड़ा नौका के अंदर रखे। क्योंकि नूह परमेश्वर की दृष्टि में एक धर्मी जन था। जो परमेश्वर से डर, भय और प्रेम रखता था। नूह परमेश्वर के आज्ञानुसार सारा काम कर चुका तब परमेश्वर सारी पृथ्वी पर जल-प्रलाय भेजा और सारी दुष्ट जाति नाश किई गई। पर नूह और उसका परिवार बचाये गए और परमेश्वर ने उन्हें आशीष दिई।

हे गोस्सनर कलीसिया देख तेरी दुर्दशा भी नूह के दिनों की नाईं है। क्या तू भी उन लोगों की नाईं

Gossner Mission

जो पाप और भ्रष्टाचार में जीते थे और नहीं जानते थे हम नाश होंगे, उसी प्रकार तू ऐस-आराम, हंसी-मजाक, ईर्ष्या, डाह, मतवालपन, विधर्म में जीवन बिता रही है ?

परमेश्वर ने गोस्सनर कलीसिया को नूह के नौका के समान बनाया, सुरक्षित रखा पर वह नौका डूबने पर है। आज हमें नूह के समान परमेश्वर का आज्ञा पालन करते हुए नौका रुपी गोस्सनर कलीसिया की रक्षा करना है, बाहर-भीतर राल लगाना है कि नूह के जहाज के समान गोस्सनर कलीसिया ऊंचे चोटी पर अर्थात् स्वर्ग तक पहुँच जाए।

हे गोस्सनर कलीसिया, पर देख, जिन्हें परमेश्वर ने आज्ञा दी कि गोस्सनर कलीसिया की रक्षा करना, बाहर-भीतर राल लगाना, खिड़की बंद करना वे नूह कहां गए ? क्या गोस्सनर कलीसिया में एक भी नूह नहीं ?

आज स्वार्थी, झूठ के चाहने और गढ़ने वाले दुष्ट लोग गोस्सनर कलीसिया रुपी नौका के राल को उचाड़ रहे हैं, पाप रुपी बर्छे से नौका को बेध रहे हैं, जिसके कारण कलीसिया डूबती हुई चली जा रही है।

प्रिये पाठको अगर नौका में पानी घुस जाए तो आप बैठे रहेंगे या कुछ बचने का उपाय ढूंढ़ निकालेंगे ? आओ आज हम अपनी डूबती हुई कलीसिया को बचावें। अब उन राल उचाड़ने और सेंधमार करने वाले अगुवों के भरोसे में नौका डूब ही जाएगी। क्योंकि अगुवों के भ्रष्टाचार एवं अत्याचार ही के कारण गोस्सनर कलीसिया के चारों ओर बाहर और भीतर हवा, बाढ़ें और आंधियां चलने लगी है। आओ हम प्रभु को पुकारें जिस प्रकार चेलों ने समुद्र के बीच प्रभु को पुकारा प्रभु ने उन्हें बचाया वैसे ही प्रभु हमारी कलीसिया को भी बचाएगा।

हे गोस्सनर कलीसिया आज बुराई जल-प्रलय की नाईं तेरे चारों ओर हिलकोरे मार रही हैं, क्या तू सो रही है ? न कि जागती है ? देख कितने छेद आप के शरीर में हैं। राल लगा, खिड़की बंद कर नहीं तो तेरा सारा गोस्सनर परिवार नाश हो जाएगा।

२. सदोम और अमोरा रुपी गोस्सनर कलीसिया—

सदोम और अमोरा का पाप यहोवा की दृष्टि में बहुत भारी हो गया (उत्प० १८ : २०)।

वहां की दुर्दशा ऐसी सोचनीय थी कि परमेश्वर यहोवा ने दो दूत भेज कर वहां की परिस्थिति को जानना चाहता था। साथ ही साथ जितने धर्मी जन थे उन्हें बचाने चाहता था। लूत ने उन दूतों से बहुत अर्जी-बिनती किई कि एक रात मेरे घर में ठहरो। तब वे दूत वहीं लूत के घर में रात बिताये। पर सदोम और अमोरा के दुष्ट लोगों ने उनसे भी भ्रष्टाचार का काम करना चाहा। बूढ़े, जवान, पुरनिये सब मिल कर लूत के घरों में छापा मारे और बलवा किए, पर दूतों ने लूत को मना किया कि बाहर मत जाना। और उन सब दुष्टों को वे दूत अंधे कर दिए जिसके कारण वे बलवा करने हारे तितर-बित्तर हो गए और कुछ न कर सके।

अंत में परमेश्वर ने सदोम और अमोरा को आग एवं गंधक द्वारा सत्यनाश किया। पर लूत जो एक धर्मी जन था परिवार सहित बच निकला।

हे गोस्सनर कलीसिया देख तेरे बीच भी कितने दूत मिशनरियों के रुप में परमेश्वर ने भेजे कि तेरे दुःख एवं अशांति को दूर करे और तेरे ऊपर तरस खाए, पर तू ने न चाहा। कितने जर्मन मिशनरी आ आकर कितने धन तथा ज्ञान दिए कि तू शांति से रहे और आगे बढ़े। पर तू सब धन को धूल और मिट्टी में मिला दिया।

हे गोस्सनर कलीसिया के अगुवो वह भोग-बिलास जो गोस्सनर कलीसिया के धन-संपत्ति और जयदाद से भोग रहे हो, वह कब तक तुम्हारा साथ

Gossner Mission

देगा। क्या परमेश्वर तुम्हारे मन की बातों और कानों को नहीं देखता है ?

हे गोस्सनर कलीसिया के अगुवो परमेश्वर देर न करेगा देखो वह कुल्हाड़ी तुम्हारे पैर पर लगा है और वह ऐसा गिरेगा कि तुम चूर-चूर हो जाओगे। तुम सोचते हो कि हमें कोई नहीं देखता और दिन रात गुट और सभा समिति ठहराते हो कि कलीसिया के खजाना पर किस प्रकार छापा मारा जाए, हम किस प्रकार सही स्थान और पद में पहुंच जाएं।

आज गोस्सनर कलीसिया के दीन-हीन विश्वासियों को जंगली दाने के साथ पीस रहे हो और गेहूँ के खेत में जंगली दाने बो रहे हो कब तक परमेश्वर रहम दिखा सकता है ? वह हमारा तुरन्त न्याय करेगा। आग और गंधक के झील में तुम्हारे सौदा बाजी का तनख्वाह मिलेगा। मन फिराओ हरएक को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने दो और आप भी सच्चाई और धार्मिकता के साथ अपने भेड़ों को लेकर प्रवेश करो।

३. "नीनवे नगर गोस्सनर कलीसिया"—

नीनवे नगर की बुराई यहोवा की दृष्टि में बढ़ गई थी (योना १ : २)। पाप और बुराईयों की बढ़ती से यहोवा प्रसन्न नहीं होता पर उसे रोकता है। परमेश्वर यहोवा योना नबी को लोगों के बुराई के विरुद्ध प्रचार करने के लिए भेजता है, पर योना आज्ञा न मान कर परमेश्वर के आदेश से दूर भागता है। परमेश्वर उसे दंड देकर लौटाता है और प्रचार कार्य के लिए विवश करता है जिससे नीनवे नगर तथा नगर वासियों की रक्षा होती है वे अपने पाप एवं बुराई के लिए उपवास एवं प्रार्थना करते और स्वतंत्र किए जाते हैं।

क्या गोस्सनर कलीसिया के सदस्यों के द्वारा या गोस्सनर कलीसिया के अगुवों द्वारा कलीसिया आज बड़ी दुर्दशा में पड़ी है ? कि इसके दुःख एवं घाव क्यों ऐसे भयंकर बढ़ते जा रहे हैं ?

प्रभु परमेश्वर ने कितने विश्वासियों, प्रचारकों एवं पुरोहितों को गोस्सनर कलीसिया में योना नबी की नाईं आज्ञा दे कर रखा कि वे पाप एवं बुराई की बढ़ती को रोकें तथा उनके विरुद्ध प्रचार करें। जिस्ते कि कलीसिया और विश्वासियों की रक्षा हो। पर यही दिखाई देता है कि गोस्सनर कलीसिया के अगुवों ही के द्वारा पाप एवं बुराई की बढ़ती एवं प्रचार हो रही है। पाप की बढ़ती को रोकने के बदले पाप का भयंकर सौदा-बाजी कर रहे हैं और पाप से जो भेड़ें अज्ञात थीं उन्हें भी पापी ठहरा रहें हैं। क्रूश मुहर देने के बदले पाप की मुहर दे रहे हैं।

हे गोस्सनर कलीसिया के सदस्यो हमारी भयंकर दशा को कौन नहीं जानता दीवाल भी आज हमारी दुर्दशा के विषय साक्षी दे सकता है। निर्दोष मेम्नों (विश्वासियों) को अगुवों ने दोषीदार ठहराया और हमें भेड़ और बकरी की नाईं बना दिया। आज कितने अगुवे हुँडारों की नईं भेड़ों का छाल उतार कर बकरी का स्वरूप दे रहे हैं। हे गोस्सनर कलीसिया के सदस्यो हम क्या करें ? गोस्सनर कलीसिया रुपी जहाज डूबा मगा रहा है, डूबने पर है। क्या योना के समय के मल्लाहों की नाईं चिट्ठी डालें, और देखें कि चिट्ठी किस के नाम से निकलती है ?

वैसे ही हर एक अगुवों के नाम में चिट्ठियां डालें। आईये हम हरएक विश्वासी परमेश्वर को सम्मुख जानकर अगुवों के नाम पर उपवास, प्रार्थना और विलाप करते हुए चिट्ठी डालें ताकि परमेश्वर दोषीदार का सही न्याय करे।

निश्चय परमेश्वर उन बुरे अगुवों को पानी के समुद्र में नहीं पर आग और गंधक की झील में डालेगा जो कभी बुझने का नहीं। निश्चय परमेश्वर एक-एक भेड़ का पाप रुपी बोझ उसके सिर पर डालेगा, वे फिर कभी उठने न पावेंगे। जब कि प्रभु यीशु ने यहूदा को नहीं छोड़ा, जिसको स्वयं

Gossner Mission

चुना था, तो आज प्रभु भ्रष्टाचारियों को कैसे छोड़ सकता है ?

क्या हमारी दुर्दशा ऐसी ही दूर हो जाएगी ? आज पूरे गोस्सनर कलीसिया को जाग उठना है क्योंकि अगुवे तो भूखमरे कुत्तों की नाईं सूखी हड्डियों के लिये लड़ रहे हैं।

आईये आज हम अपने दीयों एवं मशालों को ठीक करें ताकि उस अंधकार को और अंधकार के हाकिमों (अगुवों) को पहिचान सकें। आज प्रभु हमें कहता है कि तुम अंधकार के नहीं पर दिन (ज्योति) के संतान हो। क्योंकि हम मसीह के राज्य के संतान हैं। आज हमें किसी धर्म राज्य, अंचल राज्य, जाति राज्य में जीवन और शांति नहीं क्योंकि इससे तो वाद-विवाद ही होता है। ये विभिन्न राज्य, जो संकेत किया गया है यह तो स्वार्थी राज्य है जहाँ स्वार्थी लोग राजा बनना चाहते हैं।

हे गोस्सनर कलीसिया के भाईयो तथा बहनों आईये गोस्सनर कलीशा रुपी नौका (जहाज) को आशा, विश्वास और प्रेम के साथ ऊपर उठाईये हाँ अरारत पहाड़ की चोटी पर पहुंचाईये। सदोम और अमोरा के अगुवो से अपने को बचाईये, जल्दी कीजिए सदोम और अमोरा रुपी गुट, सभा समिति मंडली और अगुवों को जांचिये नहीं तो नाश हो जाओगे। लूत की नाईं बरबस निकल जाईये। नीनवे नगर के लोगों की नाईं अपने पापों को पहिचानिये। प्रार्थना एवं उपवास कीजिए ताकि प्रभु आप की रक्षा करेगा।

आओ हम अपनी इस बड़ी दुर्दशा के लिये प्रार्थना और विलाप करें —

हे प्रभु तू पवित्र और सामर्थी पिता है। तू पिता, पुत्र और पवित्रात्मा एक है। तेरा राज्य एक है और वह तो अनन्त राज्य होगा।

देख प्रभु हम आंसू बहाते हुए अपनी दुर्दशा को तेरे सन्मुख रखते हैं क्योंकि बिनाश हमें घेरे हुए हैं। हमें बचा। हे प्रभु आज हमारी गोस्सनर कलीसिया में जितनी भी भेड़ें हैं चरवाहे रहते हुए भी बिना चरवाहे की नाईं तितर-बितर किए जा रहे हैं क्योंकि हमारे पाप भारी हैं, क्षमा कर प्रभु। हे प्रभु हमें तू नया बना, हमारे दागों को मिटा, कलीसिया विभाजन को हटा, और दुष्ट अगुवों को मिटा ताकि तेरी पवित्र इच्छा सारी कलीसिया में पूरी हो। सारी कलीसिया तेरी गवाही देने सके और तेरी महिमा से सारी कलीसिया भर जाए। तेरे पुत्र हमारे त्राणदाता मसीह के नाम में।

आमीन ॥

प्रेम

वह प्रेम है अगापे,
जिसे किया योशु ने आके।
दिया प्राण लोहू बहाके,
मुझे और तुझे बचाके ॥
है प्रेम का देखो उत्तर !
होते हैं हम निरुत्तर !

प्रेम को मैंने देखा,
दुनिया को लड़ते देखा।
खीस्तीय को लड़ते देखा
अन्याय भी करते देखा।
है प्रेम का देखो उत्तर !
होते हैं हम निरुत्तर !

हैं बड़ी अनोखी बातें,
बदली हैं देखो बातें।
प्रभु ने कहा प्रेम करो तुम,
दुनिया को यों हरो तुम ॥
क्या दिया है हमने उत्तर ?
क्या नहीं हैं हम निरुत्तर ?

प्रभु मुझको माफ करो तूने,
मेरे दिल को साफ करो तुम।
दे सकूं मैं सब कुछ तुझको,
वैरी को दूँ प्रेम, शक्ति दे मुझको ॥

एस० दयादान

Gossner Mission

मसौहो सेवकाई के अवसर

अगले कुछ महीनों के वाद सिस्टर इल्जे मार्टिन स्वदेश चलो जायगी, अत: उनके द्वारा चलाये जाने वाले दवाखानों के लिये एक महिला डाक्टर की सेवकाई की आवश्यकता है, उम्मीदवार व इच्छुक व्यक्ति मिस्स मार्टिन, जी. ई. एल. दवाखाना, टकरमा, पी॰ ओ. लसिया, जिला रांची से सम्पर्क करें।

नेपाल के विभिन्न अस्पतालों एवं दवा खानों में अनुभवी नर्सों की आवश्यकता है, जो व्यक्ति विषय को पढ़ा भी सकते हैं, उन्हें प्राथमिकता दी जायगी। यह काम "युनाईटेड मिशन टू नेपाल" के अधीनस्थ चल रहा है, और इसमें गोस्सनर मिशन वर्लिन भी साझेदार है, उम्मीद की जाती है कि गोस्सनर कलीसिया के लोग भी नेपाल में सेवकाई के काम में सहायता करें। इच्छुक व्यक्ति अधोहस्तक्षरी के पास पत्र व्यवहार करें।

डा० सी० के० पी० सिंह
जी० ई० एल० चर्च रांची

कलीसियाई समाचार

रांची : फरवरी माह में भी अनेक विदेशी मेहमान आये और कलीसिया के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा किया, अनेक तो वही थे जो जनवरी माह हो में आये।

पूर्वी जर्मनी से पाद्री रीख्तेर और शुल्सगेन भी आये हुए थे, वे अपने कार्य-क्रम के अनुसार अधिक दिन नहीं रह सके। उन्हें ग्रामीण एवं औद्योगिक क्षेत्र की मंडलियों से अवगत कराने लायक कार्य क्रम बना कर घुमाया गया। वे विशेष कर कलकत्ता की गन्दी बस्तियों में काम करने वाली संस्था के काम को देखने आये। डा. शेफेर और डा. लेमा दो जन एल॰ डब्ल्यु॰ एफ॰ से आये। इन्होंने विशेष कर मसीही शिक्षा (प्रति पालन) पर एक कार्य शिविर (वर्कशॉप) चलाया। विभिन्न अंचलों से भी अनेक प्रतिनिधि आये और रांची में लगभग दस दिन का मिल-जूल कर काम किया। आशा की जाती है कि इस वर्कशॉप से अनेकों को फायदा होगा। मसीही शिक्षा के लिये पाठ्यक्रम बनाना विशेष निशान था। अगले दिनों में इस विषय पर और भी अधिक काम किया जायगा।

कुआलालम्पुर/रांची : विशप कार्ल फिशर अपने दौरे के दरमियान रांची भी आ गये थे, ये एल. डब्ल्यु. एफ. की ओर से एशिया में "शेल्फ स्टडी" का अभियान पर विशेष ध्यान रख रहे हैं। इसमें मसीही भंडारी पन की जवाब देही को ठीक से समझने की बात है।

रांची : डोर्टमुन्ड (जर्मनी) से पाद्री जोबेल और इनार भी अपने कलकत्ता के दौरा के लगातार यहां भी हमारी कलीसिया को देखने आये। डोर्टमुन्ड, जहां से डा. फॉन स्टीग्लीत्स आते हैं, ये दोनों पाद्री भी विशेष कर मिशन और सामाजिक सेवा के काम में लगे हैं, हमारी कलीशिया के ऐसे कामों को देखने आये।

गोस्सनर थियोलोजिकल कॉलेज के अधोलिखित विद्यार्थीगण अप्रील १९७५ में प्रशिक्षण समाप्त कर रहे हैं। उन्हें शीघ्र मंड़ली सेवा में लगाया जाय।

१ निमिया संडी गुड़िया—असम अंचल।
२ मनमसीह एक्का—उड़िसा अंचल।
३ जयमसीह सुरीन—द० पू० अंचल।
४ सुदर्शन डांग—द० पू० अंचल।
५ क्रीस्तोराय तिग्गा—उ० पू० अंचल।
६ ओनोन डुंगडुंग—उ० पू० अंचल।
७ गोस्सनर केरकेट्टा—मध्य अंचल।

Gossner Mission

रांची: एल· डब्ल्यु. एफ. के एक विभाग की ओर से यहां एक मसीही शिक्षा प्रतिपालन कार्यशिविर (वर्कशॉप) का आयोजन किया गया था, अनेकों इलाकाओं से प्रतिनिधि आये हुए थे। पूरा कार्य आठ दिनों का था, ऐसा लगता था कि अनेक तो ऊबकर भाग ही जायेंगे, परन्तु डॉ० शेफर और डॉ० लेमा थी कुशल अगुवाई से सब ही ऐसे व्यस्त कर दिये गये कि दिनों का गुजरना स्वप्न सा हो गया है। कार्य शिविर में प्रतिनिधियों का मौका नहीं था पर उनकी जवाबदेही थी। सीखना अपने लिये केवल नहीं पर पूरी कलीसिया के बच्चों, युवा-युवतियों, व्यस्कों तथा बुर्जुगों के लिये मसीही शिक्षा के लिये सामग्री या पाठ्यक्रम तैयार करना था, अब तक काम पूर्ण नहीं हुआ है कलीसिया की इच्छा के आधार आगे काम जारी किया जायगा। अभी विशेष बात है, कि हम कलीसिया होकर मसीही शिक्षा को प्राथमिकता देते हैं या अन्य बातों को, इसी पर सोच विचार कर योजना बनाना है, समय, व्यक्ति और आर्थिक दृष्टिकोण से! आशा की जाती है कि इस विषय की ओर आगे बढ़ने के लिये सभी मिलकर सही रास्ते अपनायेंगे!

माइन्स/रांची : माइन्स (जर्मनी) में स्थित गोस्सनर मिशन की शाखा की महिला पाद्री स्तीस्ता स्प्रींगे अपनी एशियाई यात्रा के दौरान यहां भी आयी थीं। कम समय होने के कारण अधिक कार्यक्रम नहीं बनाया जा सका। उनके लिये हमारी कलीसिया के उन पाद्रियों से मुलाकत करने का मौका बनाया गया था जो दुर्गापुर में प्रशिक्षण पाये हैं। "अर्बन आयन्ड इन्डस्ट्रीयल मिशन" (यु० आई० एम०) एक विशेष विषय और जबावदेही है। यह काम माइन्स में पाद्री सिमानोस्की द्वारा आरम्भ किया गया और उसी की शाखा दुर्गापुर में भी खुली। महिला पाद्री स्तीस्ता स्प्रींगे पा० सिमानोस्की की उत्तराधिकारीनी बनायी गयी है, और इसी सम्बन्ध में वह कलकत्ता, जपान, कोरिया आदि स्थानों में विशेष कार्यों के निमित दौरा कर रही हैं।

आज के शहरीकरण और औद्योगीकरण में जहां रोजी, रोटी, मकान, स्वस्थ्य, मनोरंजन का प्रश्न है वहां प्रभु यीशु का सम्बाद कैसे पहुँचाये? यही प्रश्न इस यु० आई० एम० की समस्या है, इसी का उत्तर विभिन्न तरीकों से दे देने की कोशिश में है. हमारे मेहमान से बात चीत करते हुए हमारे प्रशिक्षित पाद्रियों में भी जागृति आ गयी है और वे भी अब संगठित रूप से काम करना चाहते हैं, अभी तक उनको सहयोग और प्रोत्साहन न मिलने से वे गुमसुम हैं, पर समय आ गया है कि इस ओर विशेष ध्यान दिया जाय। [शेष पेज २० पर]

मसीही जीवन लक्ष्य

जुनुल लुगुन, लंजीबेरना

उपरोक्त कहावत बहुत ही सुन्दर और पुरानी है। इतनी पुरानी है कि जब मैं एक सफल चिकित्सक (डॉक्टर) की तरह इस सुन्दर कहावत के एक-एक अक्षर का ऑपरेशन (चीर-फाड़) कर उसके असलियत को ढूँढ़ने की कोशिश करता हूँ, तो लगता है, कहीं बाबा आदम ही ने तो इस सुन्दर कहावत को अपने पीछे की पीढ़ी वालों के लिये 'वसीयत' के नाम पर नहीं बना गये? वैसे मैं इस बात की गारण्टी नहीं दे सकता। क्योंकि इस बेशर्म महंगी के दुलत्ती मार से मेरा अपना माइन्ड भी खवामखाह नॉर्मल प्वाइन्ट पर खिसक गया है। कुछ भी हो बेगैरत मनुष्य का स्वभाव ही तो ऐसा है कि ऐसे सुन्दर कहावत से बाकयदा आकर्षित होना मामूली बात है। तो भला, मैं ही कौन से पताल लोक का राजकुमार हूँ जो इस कहावत से साफ-सुथरा बच निकलता? मैं एक खानदानी मसीही घराने का सदस्य हूँ, मेरे अपने माइन्ड के माप-तौल के हिसाब से मैं सेन्ट-पर्सेन्ट पक्का मसीही

Gossner Mission

हूं। इतना सारा दावा के साथ मैं इस लिये कह सकता हूँ कि मेरे अच्छे-भले दादा-परदादा लोग भी मसीही को भक्ताई करते-करते स्वर्ग सिधर गये। यानि कि सब मिला-जुला कर मेरे नकली मसीही होने का सवाल ही पैदा नहीं होता। पर घबड़ाइये नहीं, मेरे भोंडी अक्ल का भी जवाब नहीं। मैं अब-तक धरम-करम के अपने मसीही जीवन में स्वर्ग राज्य जाने के लिये बस इतना ही विश्वास समेट-बटोर पाया था कि सिफ बपतिस्मा लेने, मसीही नाम रखने और पर्व-त्योहारों में ईश्वर भक्ति के नाम पर डट के खाने-पीने और सुन्दर कपड़े पहिनने को ही सच्चा मसीही जीवन समझता था यही सब कर-धर के सोचता था कि दुर्ग विजय हो गया और इस झूट्ठी दुनिया को एक दिन दूर से हाथ-गोड़ जोड़कर लम्बा नमस्ते करके चान्द-सितारों के उस पार स्वर्ग का राज्य मानों अपना ही रजिस्टर्ड घर-वार हो जायगा। क्योंकि उस अनोखा और उत्तम देश में जाने के लिये सभी कोई तो यही सब करते-धरते हैं।

यदि सच्चाई नाम की कोई वस्तु मेरे पास है, तो मैं आपको सच बताता हूँ, मैं दरिद्र और कंगाल हूँ। पढ़-अनपढ़ दोनों के सेन्टर में हूँ, पर सच मानिये, मुझे इन बातों का कतई गम नहीं है। क्योंकि मसीही होने की बदौलत मैं परमेश्वर का सपूत सन्तान और उसके राज्य-पाट का वारिसदार जो हूँ। और भाइयो! कम्बख्त इसी उल्टी गंगा (व्यर्थ विश्वास) ने मेरे मन में घमंड को जन्म दिया। मैं गिर्जा (पवित्र आराधना) में जूता-मोजा पहिन कर और खूब बन-ठन कर जाता था। गिर्जा न होकर वहां मानो मेरा ही नुमायंदा होने वाला हो। या कोई कादो-कीचड़ में मुझे उठना-बैठना हो। गिर्जा घर में जब प्रवेश करता था तो सब से पहले मेरी दृष्टि खाली बेन्च या कुर्सी पर जाती थी। बद्किस्मती से यदि कोई एतवार बेन्च या कुर्सी पर बैठने को न मिला तो मैं अपने किस्मत को सौ-सौ गालियां बकता था कि आखिर मैं देर से गिर्जा में आया ही क्यों? उस मनहूस एतवार का गिर्जा मेरे लिये मानो श्मशान में मुर्दों के बीच बैठकर आहें भरने के जैसा लगता था। मुझे क्या मालूम था कि मैं साधारण स्थान में नहीं, पर एक ऐसे वेदी (पवित्र स्थान) के सम्मुख आया हूँ, जहाँ सर्व-शक्तिमान ईश्वर अपने अगम्य ज्योति में प्रज्वलित होकर उपस्थित है।

यूँ अपोलो[1] रॉकेट की चाल से हमों, महीनों और वर्षों गुज्र गये और मैं घमंड रूपी सोयूज[2] में बैठकर शुक्रग्रह[3] के इर्द-गिर्द चक्कर काटते हुए मंड़रा रहा था। और एक दिन..... हाँ, वह दिन मुझे ठीक से मालूम नहीं, मालूम रहता भी भला कैसे? जब कि उस दिन मैं अपनी फूटी किस्मत पर बिल-बिला रहा था। हाँ तो, मैं भी लोगों की देखा-देखी बाइबल पढ़ रहा था और उस में पाया कि परमेश्वर मूसा और यहोशू को सख्त आर्डर (आज्ञा) दिया कि तुम लोग मेरे साम्हने अपनी जूतियाँ उतार कर आओ। क्योंकि जहां मैं हूँ वहां परम पवित्र स्थान है, पढ़िये-निर्ग० ३:५ और यहोशू ५:१५ में। परमेश्वर की इस आज्ञा को पढ़कर मेरे होश उड़ गये। मेरा सपनों का महल उजड़ गया, क्योंकि मैं परमेश्वर की आज्ञा को तुच्छ करता रहा। सोचने लगा, क्या मैं मूसा और यहोशू से बड़ा हूं? जिनसे ईश्वर ने बातें की, और क्या मैं नीनवे के राजा और हकिमों से बड़ा हूँ? जिन्होंने राज्य वस्त्र और मुकुट उतार टाट ओढ़कर और राख पर बैठकर विलाप (पश्चताप) किया और आग और गन्धक की ज्वाला से बच गये। नहीं मैं इन में-से किसी के समान भी नहीं हूँ। क्योंकि घमंड रूपी पाप ने मुझे एक घृणित कीड़े के समान बना दिया था। पर धन्य हो, उस प्रभु की जिसने मुझे घमंड रूपी भयंकर पाप से बचा लिया। अब मुझे अपने प्रभु के पास दीन-हीन होकर आने में और नीचे बैठकर उससे मिलने में जो आत्मिक आनन्द और शांति मिलती है, मैं अपनी लेखनी से आप को कैसे बताऊँ।

Gossner Mission

भाइयो, इस तरह मेरे नकली धरम-करम के मसीही जीवन की एक छोटी सी कहानी खतम हो गयी। आप मेरे इस आप बीती कहानी पर हंसे या रोवें, पर अब भी मैं तब रोता हूँ जब कि लोगों को अप-टू डेट बन कर आराधना में शामिल होते देखता हूं। बहुत बार मैंने ऐसा भी देखा है कि हमारी कलीसिया के अगुवे लोग भी इस घृणित आचरण को करते अपना गौरव समझते हैं। तब सोचता हूँ कि जो खुद अन्धा है वह दूसरे को राह क्या बताये। शायद वे लोग बाइबल के वचनों को परमेश्वर की आज्ञा ही नहीं मानते होंगे। मैं ऐसे अन्य कलीसियाओं को भी देखा हूँ जिनके अगुवे और साधारण भाई-बहिन लोग वेदी के सम्मुख डरते और कांपते हुए उपस्थित होते हैं और बहुत आशीष पाते हैं। क्योंकि परमेश्वर उन्हीं पर दया करता है जिनके हृदय टूटे और पिसे हुए हैं; परन्तु घमंडियों के विमुख रहता है। भ० सं० ३४:१५-१८। क्या ही भला होता, यदि पढ़े-लिखे नाम मात्र के मसीही भाई-बहन प्रति दिन थोड़ा सा समय निकाल कर पवित्र बाइबल का, जिसमें ईश्वर की पवित्र और सत्य के मार्ग की कुंजी है, मनन-चिंतन करते। विश्वास कीजिये, ऐसा करने से आप का नुकसान नहीं पर आत्मिक और लौकिक उन्नति ही होगी। क्या मैं आशा कर सकता हूँ कि हमारे कलीसिया के भाई-बहन लोग घमंडी जीवन को छोड़कर ईश्वर के ग्रहण योग्य आचरण को अपनाने की कोशिश करेंगे? ताकि नारकीय आग की ज्वाला से बच जाएं, जिस प्रकार नीनवे के मनुष्य से लेकर पशु तक बच गये?

यदि आप के पास बाइबल है, तो यह निश्चय जान लीजिये कि वह परमेश्वर का दिया हुआ तोड़ा आप को मिला है। और यदि उस तोड़े (वचन) को आप मिट्टी में (बक्सा या अलमारी में रखे रहना) गाड़ कर रखते हैं तो याद रखिये, यीशु ख्रीष्ट न्याय के दिन आप से लेखा मांगेगा और तब आप निश्चय ही उत्तर नहीं दे सकेंगे। ऐसी दशा में आप बिना दया-माया के आग और गन्धक से जलते हुए भट्ठे (नरक कुण्ड) में फेंक दिये जायेंगे, जहां आप को अनन्त काल तक रोना और दांत पीसना होगा। पढ़िये – मत्ती २५:१४-३१ में। एक बार एक उपदेशक अपने उपदेश के दौरान बोले थे, कि नाम मात्र के मसीही रहने की अपेक्षा मसीही धर्म को छोड़ देना ही बेहतर है। क्योंकि ऐसा करने से उनको न्यायक यीशु ख्रीष्ट के सामने, जिस समय उसकी महिमा का तेज (प्रकाश) इतना भयानक होगा कि नाम मात्र के मसीहियों का शरीर मोम की तरह पिघलने लगेगा, खड़ा होना नहीं पड़ेगा। क्योंकि उनका नाम लेखा पुस्तक से काट दिया जायगा, इसलिए कि वे अन्य जाति में गिने जायेंगे और बिना व्यवस्था के ही नरक में डाल दिये जायेंगे। उस महत्वपूर्ण न्याय के दिन तो धर्मी–अधर्मी मसीहियों को ही यीशु ख्रीष्ट के न्यायासन के सामने खड़ा होना पड़ेगा, इसलिये कि उन्हीं को परमेश्वर का दिया हुआ "अनमोल तोड़ा" अर्थात पवित्र दस आज्ञा दिया गया है। ये ही दस आज्ञाओं का विस्तृत वर्णन "हॉली बाइबल" है।

उस उपदेश के उपरोक्त कथन में कितनी सच्चाई है, यह तो पाठक गणों के विवेक पर निर्भर करता है। पर सच मानिये, जब भी मैं उपरोक्त कथन पर गंभीरता पूर्वक सोचता हूं तो एक अज्ञात भय से थर-थर कांपता हूँ और विवश होकर दोनों हाथों से अपना सर पकड़ लेता हूं और चिल्ला कर कहता हूँ कि धिक्कार है उसकी बुद्धि को, जिसने भी उस सुन्दर कहावत को बनाया। क्योंकि परमेश्वर कहता है कि "मेरा भवन (कलीसिया) सब देशों और जातियों के लिये प्रार्थना (आराधना) का घर कहलायगा" यशा० ५६:७। पर तुमने उस पवित्र भवन को डाकुओं की खोह अर्थात घमंडियों के बैठने का स्थान बना दिया है लूका १९:४६। हे घमंडियों की मंडली (झूण्ड) परमेश्वर के न्याय और धर्म को महानद की नाई बहने दो–आमोस ५:२४। अपने घमंड रूपी हथियार से रोकने की धृष्टता मत करो, नहीं तो उसकी ज्वालामय तेज से जल कर भस्म हो जाओगे।

Gossner Mission

नोट -: इस लेख में निम्नांकित शब्दों का अर्थ इस प्रकार है—

(१) अपोलो- यह अमरीकी निर्मित रॉकेट है, जो मानव सहित चान्द पर उतरा था।

(२) सोयूज,-यह रुसी निर्मित रॉकेट है, जो अन्य ग्रहों का पता लगाने के लिये उड़ाया गया था।

(३) शुक्रग्रह- अनदेखा देश या स्वर्ग राज्य।-२ पतरस ३:१३ में पढ़िये।

(४) लेखा पुस्तक-इस पुस्तक में हरएक मसीही का भले-बुरे काम लिखा जाता है, जो परमेश्वर के सिंहासन के पास रखा रहता है। जीवन की पुस्तक अलग है, इसमें सिर्फ अनन्त जीवन पाने वालों का नाम लिखा होता है। इन पुस्तकों का वर्णन प्रकाशित वाक्य में मिलती है।

धन्यवाद, आप का ग्राहक चन्दा [२८वीं फरवरी ,,७५ तक] मिला।

1 Mr Benjamin Lakra Jagatdal
2 Mr. Johan Surin Urmu
3 Rev. Z. Bodra Baribiringa
4 Mr. Jusaph Bodra Bhalulata
5 „ Daud Purti
6 „ B. B. Minz Kadru-Kumhartoli
7 „ Taldas Minz Gwalior
8 „ S. K. Tete Postmaster Birmitrapur
9 Rev. C. S. Lakra Birmitrapur for 30 members
10 Mr. Augustus Toppo Bagru Hills
11 „ Cyril Khalkho Bagru Hills
12 „ Paulus Soy Karandih Murgapara
13 „ P. E. Beck Hearnganj
14 „ Philip Minz Hearnganj
15 Cat. A. M. Topno Singhani
16 Mr. Daole Kujur Charuma
17 „ Isahak Minz Sonari
18 „ Masihdas Meral No. Ghoraghas·
19 „ R. Horo Rangamatia
20 „ Anandmasih Topno Harisinga
21 „ Dayalu Burh Tezpur
22 „ Suleman Kerketta
23 „ Christ Martin Tete Kolapat
24 „ Isaiah Khakha Calcutta
25 „ Nuas Samad Durgadih
26 Rev. Johan Dang Karanjtoli
27 „ Matias Bhengra Jurdag
28 Mrs Christ D. Kusum Horo Rajgangpur
29 Miss Mahima Horo Govindpur
30 „ Mudit Topno Govindpur
31 Mr. Jiwanmasih Burh Deomali
32 Mr. Ex. Sub Th. Surin Dibadih
33 „ Zakariah Hobbo Konbira
34 „ Kiran Topno Pathalkudwa
35 Rev. M. P. Jojo Kahupani
36 Mr. C. B. Lakra Anara
37 Rev. I. Kiro Jatatoli for 30 members

—:o:—

Gossner Mission

समाचार

सिरामपुर :—

१ ली फरवरी १९७५ ई० को सिरामपुर कॉलेज (यूनिवर्सिटी) में इसके स्नातकों का कॉनवोकेशन बड़े गम्भीर एंव शानदार ढंग से सम्पन्न हुआ। लगभग १०० स्नातक विभिन्न स्वीकृति प्राप्त कॉलेजों से, इस अवसर पर सिरामपुर पधारे थे। विभिन्न स्वीकृति प्राप्त कॉलेजों के प्रिंसिपल, स्थानीय थिऑलॉजी विभाग के प्राध्यापक, सिनेट के एसो-सिएट रजिस्ट्रार, तथा मास्टर श्री ए० डी० खान भी उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त अनेक देशी एंव विदेशी अतिथि तथा शुभचिन्तक भी वहाँ उपस्थित थे।

उक्त तिथि को सुबह की उपासना संत औलेव चर्च में हुई, जिसमें लिऑनार्ड थिऑलॉजिकल कॉलेज के प्रिंसिपल डा० जे· राधाकृष्ण ने ईश्वर का सन्देश सुनाया। लन्दन के डा० शोकी को, (जो थिऑलॉजिकल एडुकेशन फाड के डायरेक्टर हैं) ने कॉनवोकेशन भाषण दिया।

डिग्री पाने वालों की संख्या इस प्रकार थी:-

डाक्टर ऑफ थिऑलॉजी — १
मास्टर ऑफ थिऑलॉजी — ७
बेचलर ऑफ डिव्हिनिटी — ९६
बेचलर ऑफ थिऑलॉजी — १७३

कॉनवोकेशन के पहले के दिनों में सिनेट की सभा भी बैठी, जिसमें सिनेट को अधिक मजबूत तथा सुदृढ़ केन्द्र बनाने का निर्णय लिया गया।

सिनेट के सभापति बिशप आर· डी. जोशी ने अवकाश ग्रहण किया, तथा प्रोफेसर एस. के· चटर्जी (जो सिरामपुर कॉलेज के प्रिंसिपल हैं) उनके उत्तराधिकारी नियुक्त किए गए।

वर्त्तमान में जी० ई० एल० चर्च के निम्न विद्यार्थी सिरामपुर में थिऑलॉजी का अध्ययन कर रहे हैं :-

सीनीयर्स	१.	श्री नेम्हास एक्का
	२.	,, निर्दोष लकड़ा
	३.	,, क्रिस्तोदास जोजो
जूनियर्स	१.	,, प्रभुदान बूढ़
	२.	,, जोन मिंज
	३.	,, जोन कन्डुलना

इस सूची के सीनियर विद्यार्थी इस बार बी. डी. की पढ़ाई समाप्त कर रहे हैं।

तुम कहाँ हो ?

'इम्मानुएल पन्वू' गो० थियोलोजिकल कॉलेज, राँची

कहा किसी ने तुमसे,
तुम कहाँ पर हो ?
तुम अपने स्वामी नहीं,
परिस्थितियों के दास हो।
तुम कर्त्ता नहीं,
केवल साधन मात्र हो।
जरा देखिए तो सहीं—तुम कहाँ हो ?

निर्बलता पर विजय पाना,
मानव वृद्ध साधना है।
विजय-पराजय का क्षेत्र,
निर्जन नहीं संसार है।
तुम बाधक हो,
शांति में, उन्नति में,
केवल सुख की आशा में—तुम कहाँ हो ?
मानव का मनोबल—प्राप्त ईश्वर से,
सुख है, जीवन है—यही अमरता भी।
मन की दुर्बलता,
दुख है, रोग है मौत भी।
चिन्ता, परेशानी, बोझ से दबे,
आवाज सुनो मसीह की
बुलाता तुम्हें अपने पास—तुम कहां हो ?
परमेश्वर की आशीष,
दयाप्रेम उद्धार लो।
इतना ही नहीं, वह आया हित में हमारे।
पुकारते हुए ठहरा है, तुम कहां हो ?

रजिस्टर्ड नं. आर. एन. सी. वर्ष—९५ राँची, अप्रेल १९७५, सं● नं.—४

Edited and published by Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G.E.L. Church and Printed at G. E. L. Church Press, Main Road, Ranchi / Bihar.

Gossner Mission

धर्मबन्धु

रजिस्टर्ड न॰ आर॰ एन॰सी॰४

वार्षिक मूल्य ५ रु॰

वर्ष — ६५ रांची, फरवरी १९७५ संख्या न॰ —२

EINGEGANGEN
5. MAI 1975
Erledigt .....

हे यात्री वह तेरे पांव को टलने न देवे वह जो
तेरा रक्षक है सो कभी न ऊंघे
भ॰ सं॰ १२१:३

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

Editor & Publisher

Pramukh Adhyaksh,

Associate Editor

Rev. C. S. R. Topno

Editorial Committee

Rev. M. Tete

Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय		—	३
उपदेश की तैयारी	रेभ टेटे	—	४
पृथ्वी का सारा अधिकार		—	५
कलीसिया समाचार		—	७
कलीसियाई समाचार		—	८
समाचार देश-विदेश		—	९
१५ वर्ष के बाद अब उपासना		—	१०
मसीह यीशु सेवक एवं उसकी सेवा		—	११
लंगड़ा मुण्डा का परिवर्तन		—	१७
ढलती जिन्दगी		—	१८
जीवन और शान्ति		—	१९
धन्यवाद आप का ग्राहक चन्दा मिला		—	२०

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणतः १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य पांच रूपये हैं।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें।

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये पते पर ही भेजें। एसोसिएट एडीटर, घरबन्धु; जी० ई० एल० चर्च [कि० एस० एस० ऑफिस], राँची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता० तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इसमें बांयी ओर 1½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेजें

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रखनी चाहिये, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगा।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालू की जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १०-ता० के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवतः ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छपे जाते हैं; ग्राहक चन्दा के बाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवत : डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित कुछ लिखा लें।

Gossner Mission

सम्पादकीय

मसीह यीशु के जन्म काल से ही दीखता है कि उसने कितना त्याग किया है, वह निजी लाभ या महिमा के लिये नहीं, परन्तु दूसरों के लिये ही ऐसा किया कि उसके द्वारा परमेश्वर पिता की महिमा होवे, यह त्याग उस के पूरे जीवन में और उसके सारे कार्य में दीखता है, यह इस माह के पथ प्रदर्शक पद से भी साफ प्रकट होता है (गल ३:१३)· क्रिस्त "हमारे लिये" न केवल त्याग करता है, पर वह श्रापित भी बन जाता है और हमारी श्रापित अवस्था से हमें छुड़ाने का उपाय करता है!

ईश्वर क्यों मनुष्य हुआ ? यह प्रश्न मसीह के जन्मोद्देश्य की ओर संकेत करता है और मनुष्य अपनी बुद्धि और समझानुसार विभिन्न प्रकार का उत्तर दे सकता है। उपरोक्त पथ प्रदर्शक बतलाया जाता है कि ईश्वर यीशु में क्यों मनुष्य हुआ. इसी माह में महोपवास काल आरम्भ होता है। नाच-गान, जलसा, विशेष खान पान आदि बन्द कर दिये जाते हैं- यह हमारी गोस्सनर कलीसिया की मानो प्रथा हो गयी है! पर ऐसा लगता है कि बहुत कम लोग हैं जो महोपवास काल की ऐसी प्रथा से सहमत हैं और इसको उचित समझते हैं, कुछ तो हमारी प्रथा को असामाजिक बाधा मानते हैं ! ऐसा हो भी सकता है, जब मसीह के आने श्रापित होने ही को न समझते हैं उनके लिये तो प्रथा को स्वीकार करना अपने को धोखा देना है। अनेक लोग हैं जो महोपवास काल के महत्व को समझने की शक्ति रखने की बात कहते हैं पर ऐसों के जीवन से दीखता है यह भी धोखा है ! ऐसी महंगाई और भुखमरी के समय तो आदमी को उपवास विवश होकर करना पड़ता है· पर ऐसे समय में भी उस बड़े महोपवास को समझ नहीं सकते हैं जो मसीह ने किया; महोपवास त्याग और तैयारी का चिन्ह है जिससे दूसरों की भी कुछ सहायता व सेवा पहुँच जाय, मसीह ने तो अपने पूर्ण जीवन में कर दिखाया अपनी भरपूरी में भी वह भूखा रहा — भूखा केवल नहीं वह स्रापित भी हुआ ताकि स्रापितों को छुड़ाय,

हमारे त्याग की सफलता की नाप अपने ही जीवन से नहीं पर उससे दूसरे को क्या मिलता है इसी में दीखता है, अगर हमारे त्याग में अपनी ही प्रशंसा या लाभ केवल है तो सम्भवतः वह त्याग छीछला ही है! अतः इन दिनों हम मसीह के महान त्याग के दर्पण में अपने को जांचना आवश्यक है !

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

मार्टिन टेटे

एस्तोमिहो (मेरे लिये हो)

मार्क १०:३५-४५

मार्क ९:३५ की शिक्षा शिष्यों के हृदय में नहीं बैठी है। स्वर्गीय महिमा उनके विचार में राजकीय महिमा है। परन्तु यीशु प्रेम से समझाता है।

"स्वर्गीय महिमा का मार्ग"

क, यीशु का कटोरा पीना। कटोरा का अर्थ—दुःख संकट, क्रूस इत्यादि (यशायाह ५१:१७; यिर्मयाह ४९:१२)।

ख, यीशु का बपतिस्मा लेना – बपतिस्मा का अर्थ दुःख का बाढ़। (भजन ४२:७;६९:२; लूक १२:५०) यीशु के समान मृत्यु के मार्ग से स्वर्ग पहुंचना है।

ग, यीशु के कारण सब का दास बनना—दास में दीनताई है और दीनताई में सेवकाई सफल है। यीशु आप ही इस विषय में आदर्श है। महिमा का मार्ग (यीशु आप ही है)। यीशु के द्वारा ही विश्वासी स्वर्गीय महिमा में पहुँचता है।

सेक्सागेसिमे (६०वां दिन)

यूहन्ना ११:१५;२७

यीशु का लाजर को जिलाना परमेश्वर की महिमा और प्रेम को प्रगट करना है परमेश्वर का प्रेम मनुष्यों के बीच व्यावहारिक रूप में प्रगट है। यीशु आप ही अपने को जीवन और पुनरुत्थान प्रकट करता है।

विषय – यीशु जीवन और पुनरुत्थान दोनों है।

क, "यीशु जीवन है" :—जहाँ जीवन है वहाँ मृत्यु नहीं है (२१ + ३२) जहाँ यीशु है वहाँ मृत्यु नहीं। वह जीवन का प्रभु है। (यूहन्ना १:४; १०:१०; २ तिमोथी १:१०) इत्यादि और मृत्यु पर राज्य करता है।

ख. यीशु पुनरुत्थान है :—(२५) यीशु सब लोगों को जिला उठावेगा। लाजर को जिलाना इस बात की ओर संकेत करता है कि यीशु ही लोगों को उठावेगा। जो उस पर विश्वास करता है वह पुनरुत्थान का भागी हो गया है। (यूहन्ना ११:२६;८:५२) वह कभी नहीं मरेगा। अन्तिम दिन में उसका देह पुनरुत्थान का भागी होगा (यूहन्ना ५:२८; ६:४०; क्रिया २४:१५ १ थिस्लोनी ४:१६)।

क्या आप का विश्वास इतना स्थिर है कि आप पुनरुत्थान की आशा में हैं और कह सकते हैं कि "हे मृत्यु तेरा डंक कहाँ?"

इनवोकावित

(उसने मुझे पुकारा)

मत्ती १६:२१-२६

यीशु का यरूशलेम जाना क्रूस के रास्ते का अन्त करना और हमारे त्राण के उपाय को पूरा करना है। क्रूस के मार्ग से वह मसीही जीवन का सारांश बतलाता है। और मसीह का अर्थ बतलाता है।

क, मसीह का अर्थ – अभिषिक्त जन

१ वह दुःख उठाने के लिये अभिषिक्त किया गया है—(२१)
२ वह त्यागे जाने के लिये अभिषेक किया गया है।
३ वह मरने के लिये अभिषेक किया गया है।
४ वह जी उठेगा—धर्मशास्त्र की बात पूरी होगी।

ख, मसीह का अर्थ—मसीह का, के, की, के लिए इत्यादि।

१ अपने आप का इन्कार —(२४) हृदय का अहम (घमण्ड), शरीर की सम्पत्ति, अपनी समझ, दुनियादारी. मान, आशा, नकारना और मसीह का होना। यही तो क्रूस उठाना है।
२ दुनिया का वैरी हो जाना और मसीह का प्रेमी हो जाना।
३ विश्वास में अन्धा हो जाना और यीशु के पीछे हो लेना—यह विशेष बात है। जो मसीह का नहीं वह शैतान है। उसके हृदय में क्रूस का मसीह नहीं परन्तु दुनिया का मसीह है। वह मसीह का नहीं परन्तु शैतान का है। आप किसके हैं?

रेमिनेसजेरे

(स्मरण कर)

लूक १०:१७-२०

यीशु सत्तर जनों को चुनता है और दो-दो करके अपने आगे नगरों में भेजता है। १-१६ पद में उसने उत्तरदायित्व सौंप दिया। १७वें पद में उन्होंने अपने कार्य्य का विवरण दिया है। याशु ने १८-२० पद में उनके विवरण पर भाषण दिया है।

घरबन्धु, फरवरी १९७५

Gossner Mission

यीशु के भाषण का मूल –"देखो"।

क, देखो शैतान बिजली की नई गिरा। मेरे नाम से वह तुम्हारे वश में है। (१७)। मेरे वचन से शैतान गिराया गया है। शैतान का काम समाप्त है। मेरा कार्य्य सफल है।

ख, देखो मैं ने तुम्हें अधिकार दिया है (१९)। इसलिए शत्रु वश में है। तुम्हारी हानि नहीं होगी।

ग, देखो तुम्हारा नाम स्वर्ग में लिखा गया ह (२०) तुम स्वर्ग के हो। स्वर्ग तुम्हारा है। परमेश्वर और उसका सिंहासन भी तुम्हारा है।

वचन का भेद और सामर्थ प्रगट है। क्या आप के हृदय में वचन का भेद और सामर्थ है ?

पृथ्वी का सारा अधिकार

उत्पति १:२८

पहले-पहल जब मैं एक "हॉली बाइबल" खरीदा, तो एक दिन समय पाकर बड़े ही ध्यान पूर्वक पढ़ने लगा। पढ़ते-पढ़ते जब मनुष्य की उत्पति और ईश्वर की ओर से उसको दिये गये सारे अधिकार को पढ़ा, तो खुशी और आनन्द के मारे मैं इतना फुल गया, इतना फुल गया, जैसे बच्चों के खिलोने बेलून की तरह फुल गया। ओह! इतना महान दयालु ईश्वर! जिसने मुझे न केवल पृथ्वी का सारा अधिकार दिया बल्कि आकाश के पंछी और समुद्र के अथाह गहराई में विचरने वाले छोटी-बड़ी मछलियाँ भी मेरे अधिकार में हैं। मेरे सामने जंगल के शेर-भालुओं की क्या विसात, वे सब मेरी आज्ञा आँख-कान मुंद कर मानेंगे। क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें मेरे अधिकार में कर दिया है। चूंकि मैं भी तो उसी ईश्वर का बनाया हुआ मनुष्य हूँ।

इन्हीं सब अलौकिक आनन्द और खुशी में चूर मेरा जीवन भी समय की गति के अनुसार बीत रहा था। मुझे यह भी पता न रहा कि कब मेरे जवानी के दिन चिड़िया की नई फुर्र्र हो गयी, और अब मैं उन खूंसट बूढ़ों की कतार में ढकेल दिया गया जिनका दोनों पैर लरबस ही विधि के विधान अनुसार कब्र की ओर अग्रसर होते हैं। मनुष्य को तब नींद आती है, जब उसके तन-मन में भरपूर शाँति हो। मुझे भी अपार शांति की अनुभव हुई, क्योंकि, इतना सारा अधिकार पा कर कौन होगा जो ऐसे चैन और आनन्द के समय फिजूल जागता रहे और थोड़ी देर आराम की नींद न सोए? मैं भी दुनियां के जंजाल से अलग-थलग अपने जीवन रुपी चादर को खूब फैलाकर चैन की नींद सो रहा।

चाहे सोने वाला कोई क्यों न हो, एक दिन उसको देर या सवेर जागना ही होगा, यह नियति की नीति है। जो मनुष्य सोकर नहीं जागता या उठता, वह या तो मर चुका होता है या फिर उसको जिन्दा लाश ही कहा जायगा। मुझे शायद जागना था और एक रोज आधी रात के समय.....हां, वह भयानक रात जो मेरे सारे जीवन पर छाई हुई थी। बाहर अन्धकार के सन्नाटे में कोई चिल्ला रहा था। उस चिल्लाहट में किसी की करूण-क्रंदन दर्द भरी कहानी छिपी हुई थी। आवाज कह रही थी "पिता जी, मैंने स्वर्ग के विरूद्ध और आप के विरूद्ध पाप किया है। अब मैं आपके पुत्र कहलाने के योग्य भी नहीं हूँ। आप मुझे एक नौकर के समान अपने यहां शरण दीजिये, ताकि मैं अपना पेट भर सकूँ"। इन शब्दों को सुन कर मुझे समझते देर न लगी। एक मसीही होने के नाते मैं एकदम अक-चका गया। सोचने लगा इस रॉकेट और टेलीविजन के युग में हजारों साल पहले के उस धनवान का बेइमान छुटका पुत्र कहाँ से आ टपका ? जिसने अपने धनवान पिता के अपार धन-सम्पति में से अपना भाग (हिस्सा) लेकर वेश्याओं और जुआखोरी के पीछे बर्बाद कर डाला-पढ़िये लूका १५:११–२४ में। मैं स्वप्न देख रहा हूं या हकीकत, कुछ समझ नहीं पा रहा था।

Gossner Mission

जो भी हो, मैं उस धनवान पिता के धोखेबाज और बेईमान पुत्र की दयनीय और घृणित चेहरे को देखने को मनसा से उठा। उस समय मेरे मन में यह विचार भी उठा कि उसको देखने के बहाने साम्हने जाकर उस बेइमान को दो-चार खरी-खोटी सुनाकर और मुंह बिचका कर घृणा से जमीन पर थूक कर उसके बेइमानी का बदला तो कम से कम दे ही आऊँ। भले ही उसका बाप उसको बदला दे या न दे, उसकी मर्जी।

यही सब ताना-बाना बुनते और तय करते हुए मैं अपने गुद्-गुद्दी बिस्तर से उठा और अपनी उनिन्दी आंखों को मलते हुए बाहर निकला। बाहर सड़क पर घोर अन्धकार छाया हुआ था। मैं अपने टार्च की रोशनी में देखा, उस अन्धकार में सड़क के बीच एक मानव-आकृति औंधे मुंह पड़ा हुआ कराह रहा था। मैं उसे ठीक से देखने और अपने बनाए हुए 'बदला लेने की' स्कीम को बाकायदा पूरा करने के लिये एकदम उसके साम्हने जाकर देखा। पर उसे देखते और पहचानते ही मेरा कलेजा धक् से हो गया। उस समय की मेरी दशा के बारे आप को मैं क्या बताऊँ, आप मानें या न मानें, पर मैं सच कहता हूँ, वह बेइमान उड़ाऊपुत्र दूसरा और कोई नहीं था, वह बेइमान पुत्र तो खुद मैं ही था। हाँ, वह मेरी ही आत्मा थी, जिस आत्मा को परमेश्वर ने मेरी शरीर की रचना कर के जीवन स्वांस के रूप में फूंक दिया और पृथ्वी का सारा अधिकार भी दे दिया था। पर अब मेरा सारा अधिकार लूट गया, मैं बुरी तरह बर्बाद हो चुका था। मेरा शरीर और आत्मा उस अधिकार देने वाले ईश्वर की दृष्टि में बेइमान, दरिद्र, कंगाल और घृणित बन चुका था — पढ़िये– प्र० वा० ३:१७ में। क्योंकि मैं इस दुनिया के गफलत की नींद में सोकर ईश्वर के उस दिए हुए सारा अधिकार और वैभव को शैतान के हाथों में बेशर्मी के साथ बेच चुका था।

मेरी इस दर्द भरी कहानी को पढ़ने-सुनने वाले भाई-बहन मुझ से जानना चाहते होंगे, कि मैंने दुनिया के किस बाजार में अपना वह अधिकार को शैतान के हाथों में किन चीजों से बेच दिया? आइये, मैं आप को सुनाता हूँ, मेरे खातिर आप जरा अपना कलेजा थाम कर सुनिये।

हाँ तो, जब इस धरती में मुझे कुछ होश हवाश आया तो मैं सोचने लगा, कि धरम करम के ये ठेकेदार (पाद्री-प्रचारक) लोग भाई-बहनों के बीच स्वर्ग और नरक जैसी बेतुकी बातों का बखेड़ा नाहक मचाते हैं। यह सब एकदम बकवास है, वैसे भी स्वर्ग और नरक बिन देखा घर न घाट, कौन मूर्ख वहां जाना पसन्द करेगा? मैं एकदम तय कर चुका कि इतना बड़ा संसार रूपी अदन वाटिका में, जहां अनगिनत सुख-विलास और रंग-रंगेलियां फलों से भरा हुआ है, उन सुन्दर फलों को तोड़कर न खाने में कोई बुद्धिमानी नहीं है। यही सब सोच-विचार कर मैं दुनिया के सुख-विलास और रंग-रंगेलियों की बहती गंगा में आव देखा न ताव देखा, अपना शरीर और आत्मा दोनों को आँख मुंद कर झोंक दिया। इस बहाव में मुझे कुछ आनन्द मिला, और इसी आनन्द के हिलकोरें में मैं एकदम बेसुध हो गया। बेसुधी की दशा में मैं बहता रहा, बहता रहा, और एक दिन मेरा शरीर अचानक एक चट्टान से टकरा गया। झटका लगने से मेरी आँख खुल गयीं और मैं यह देखने की कोशिश कर रहा था कि किस अभागा चट्टान से टकराया। मैं ने उस चट्टान को बड़े ध्यान से देखा। पर हाय! यह चट्टान तो मेरे अनुमान के विपरीत "दया का चट्टान" था, जिसकी दया पृथ्वी से स्वर्ग लौं ऊंचा है। क्योंकि वह चट्टान मसीह था—१ कुरिन्थ १०:४। और उस चट्टान पर लिखा था "हे मेरे पुत्र! क्या तुम नहीं जानते थे कि तुम्हारा यह शरीर और आत्मा मेरा पवित्र मंदिर है? जिसमें निवास करने के लिए मैं ने बड़े प्यार से बनाया था? और तुमने उसे घृणित और गन्दा कर दिया है?" १ कुरिन्थ ३:१६। मैं उसको जवाब नहीं दे सका, क्योंकि उसकी दृष्टि में मैं गुनाहगार जो था। इसलिए कि उसके पवित्र मन्दिर को भ्रष्ट कर डाला था।

मैंने अदन वाटिका रूपी इस दुनिया के वर्जित फलों में से किस को नहीं तोड़ा और खाया? जिन फलों के विषय परमेश्वर ने सख्त मना किया था कि इन फलों को तुम न तो कभी छूना और न खाना, नहीं तो तुम निश्चय मरोगे। पर मैंने उन्हीं सब फलों को खाया, पीया और किया, अर्थात पान, बीड़ी-सिगरेट, शराब, छल-कपट, हिंसा-डाह क्रोध-बैर, व्यभिचार और न जाने कितने ही

Gossner Mission

ऐसे घृणित फलों को तोड़ता और खाता रहा, जो ईश्वर की दृष्टि में सूअरों (शैतान और उसके सन्तानों) के खाने-पीने की भूसी है। पर आज कलीशिया में मेरे ही जैसे अपने आपको मसीही कहलाने और परमेश्वर के सन्तान होने का दावा करने वाले लाखों मसीही भाई-बहन और कुछ अगुवे तक भी इन घृणित फलों को खाते-पीते और करते हैं। जो कि शैतान और उसके सन्तानों के खाने-पीने और करने की वस्तु (भूसी) है।

मेरी फूटी किस्मत की कहानी को सुनकर अब तो आप लोगों को बाकायदा यकीन कर लेना चाहिए कि मुझ पर अब दण्ड और श्राप की आज्ञा हो चुकी है। और मैं अपने इसी दण्ड और श्राप की गठुरी को सर पर लिये हुए इधर-उधर भटकता फिर रहा था, कि एक आवाज ने मुझे चौंका दिया। कोई मनुष्य पुकार-पुकार कर कह रहा था "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ; जो कोई मुझ पर विश्वास करे, वह यदि मर भी जाय तो भी जीयेगा" यूहन्ना ११:२५। यह आवाज मुझे कुछ अजीब सी लगी, पर साथ ही मेरे हृदय में आशा की एक किरण जागी। मै पुकारने वाले को पहचानने के लिये उसकी ओर दौड़ा। पर यह क्या? यह तो वही चट्टान मसीह था। मैं आनन्द और खुशी से उछल पड़ा, पर माफ कीजिये भाई-बहन लोग, इस बार गनीमत हुई कि मैं बेलून की तरह नहीं फूला। वैसे मैं मरा नहीं था, मैं तो सिर्फ गफलत की नींद में सोया था। उस दया का चट्टान को लाखों धन्यवाद हो, जिस पर मैं टकराया और मेरी आँख खुल गयीं। इसलिए अब मैं जीवन देने वाले और सारा अधिकार देने वाले उस चट्टान मसीह यीशु के पीछे-पीछे अपने थका-मंदा पैरों से धीरे-धीरे चलने की कोशिश कर रहा हूँ। लेकिन भाई-बहिन, आप लोग क्या सोते ही रहेंगे? नहीं जागेंगे? उठिये और आँखें खोलिये, क्योंकि भोर का तारा चमकने वाला है, अर्थात यीशु ख्रीष्ट फिर दुबारा आ रहा है। हे सोने वाले जाग! और मुर्दों मेंसे उठ, तो मसीह की ज्योति तुझ पर चमकेगी—इफिसी ५:१४।

श्री जुनुल लुगुन
लंजीवेरना मंडली
राजगांगपुर पेरिश (उड़िसा)

कलीसिया समाचार

सवनाजारा

१३ दिसम्बर १९७४ को मिशन पर्व अन्य जातियों के टोली में मनाया गया जिसमें अन्य जाति याने रौतिया भाई बहन भी हाजिर थे। करीब करीब ३५० भाई बहन जमा हुए थे। इस अवसर पर विशेष अमांत्रित अतिथि डा० पौल सिंह और दक्षिणी पूर्वी अंचल अध्यक्ष एन० भूईयाँ आये थे।

इस समारोह का आरंभ पेरिस चेयरमेन पाद्री जे०एम० भूईयाँ की अगुवाई में एक सदाना गीत और छोटी प्रार्थना से हुआ। तत्पश्चात अतिथियों का संक्षिप्त परिचय दिया गया।

सर्वप्रथम डा० पौल सिंह ने खुद ही अपना पूरा परिचय दिया और ज्योति के विषय में प्रकाश डाला। उन्होंने यही बताया कि यीशु ही ज्योति है जो उसकी ज्योति में चलेगा उसे कुछ भी डर नहीं रहेगा। उन्होंने दो-तीन सदाना गीत भी सुनाया। जिससे सभी भाई बहन एवं बच्चों का हृदय आनन्द से पुलकित हो उठा। इतना ही नहीं रौतिया भाई बहन भी दिल खोल कर उनका भाषण सुनने लगे।

तत्पश्चात एन० भूईयाँ विश्वास केविषय में बताया। उन्होंने संक्षिप्त में यही बताया कि हृदय से यीशु पर

Gossner Mission

विश्वास करना चाहिए। यीशु पर विश्वास के द्वारा ही हम लोग अपने पिता ईश्वर के पास पहुंच सकते हैं। उन्होंने एक सदाना गीत गाते हुए अपना भाषण समाप्त किया।

अन्त में स्कूल के बच्चों के द्वारा अतिथियों का अन्तिम स्वागत हुआ। महिलाओं की ओर से एक हॉटल का भी प्रबंध था। इस तरह से यह समारोह अच्छी तरह मनाया गया। सवनाजारा मंडली के भाई बहनों को अजीब एवं अद्भुत आनन्द का अनुभव हुआ। अत: ईश्वर पिता को धन्यवाद होवे जिन्होंने इस समारोह को सफल बनाया।

सचिव समुएल कन्डुलना
बी० ए०

कलीसियाई समाचार

केरया रांची : कोरिजो इलाका की बड़ी मंडली के अन्तर्गत साक्षी दिवस का आयोजन किया गया था जो मिशन पर्व के उपलक्ष में किया गया था, सड़क के किनारे खुले स्थान पर ही आयोजित था, अनेकों तैयारी के बावजूद जैसी जगह है उसकी तुलना में उपस्थिति कम ही थी, पर काम अच्छा हुआ, रांची से मिशन डाइरेक्टर तथा कदमा खुंटी से अंचल अध्यक्ष भी आमंत्रित थे, कार्य क्रम अतिरिक्त स्थानीय हिन्दू भाईयों से भी भेंट मुलाकात का उपाय किया गया था।

उपरोक्त कार्य क्रम के बाद सावनाजारा में भी साक्षी दिवस ठहराया गया था, वहां पूरे दिन का कार्य क्रम था, एक बगीचे में कार्य क्रम रखा गया था, मिश्रित भीड़ था, ऐसा लगता है कि सुनने वालों के लिये विशेष अनुभव था कि इस प्रकार का जलसा लगाने से न केवल आनन्द की बात होती है, पर अपने आनन्द को दूसरों तक पहुंचाने का अवसर भी मिलता है।

रांची गुरूकुल (मद्रास) : हिन्दुस्तान के लुथेरन मसीही महिलाओं के लिये एक सम्मेलन का आयोजन था, हमारी गोस्सनर कलीसिया की महिलाएं भी वहां प्रतिनीधित्व के लिये गयी थी। वहां के सम्मेलन के लिये विशेष कर जेनेवा के महिला विभाग की प्रतिनीधि महिला पाद्री इमा जावोलाई-सेकमें मुख्य अतिथि थी, वर्तमान युग में महिलाओं की जवाब देही अधिकार एवं अवसर पर विभिन्न पहलुओं पर विचार विमर्श-हुआ, "महिलाओं को भी अभिषिक्त किया जाय" विशेष रुप से प्रतिध्वनित हुआ। आशा है कि महिला विभाग की ओर से विशेष कर वहां गयीं हुई प्रतिनीधियों की ओर से घरबन्धु के पाठकों को भी इन विषयों पर कुछ और पढ़ने को मिलेंगे।

महिला पाद्री जबोलाई-सकेमे ने गोस्सनर कलीसिया के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा भी किया, कार्य-क्रम का भार महिला संघ ही को सुपुर्द किया गया था। (शिसि)।

गुरूकुल (मद्रास) : यहां हिन्दुस्तान के मसीही युवा वर्ग के लिये प्रशिक्षण का आयोजन किया गया था, हमारी कलीसिया की ओर से भी युवा वर्ग के प्रतिनीधि वहां गये हुए थे, हमारी आशा है कि वहां से प्रशिक्षण पाये हुए नौजवान हमारी कलीसिया के युवा वर्ग के लिये विशेष कार्य कर के दिखायेंगे। गुरूकुल में ही दिसम्बर माह के अन्तिम सप्ताह में मसीही बाल शिक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन था। हर एक लुथरन कलीसिया से एक प्रतिनीधि को बुलाया गया था। हमारी कलीसिया की ओर से श्री एच्छ० समद चुने गये थे।

रांची : दिसम्बर माह के पहले सप्ताह में के० एस० एस० की बैठकी हुई थी। विशेष कर नयी नियमावली के प्रारूप पर विचार-विमर्श करना था। अनेकों दिन की बैठकी में सूक्ष्म रीति से बात चीत एवं बहस के बाद कई प्रस्ताव, सुधार एवं संस्करण के बाद के० एस० एस० ने

Gossner Mission

प्रारूप को सर्व सम्मिति से ग्रहण कर लिया है, अब वह छप कर लोगों की जानकारी के लिये अंचलों में वितरण की जायगी, और आशा की जाती है कि वह अगली १० वीं जूलाई तक में नयी चुनाव आदि के साथ लागू हो जायगी।

इसी के० एस० एस० में गुरूकुल मद्रास में आयोजित त्रिवर्षीय सम्मेलन के लिये १४ प्रतिनीधियों को चुना, यह सम्मेलन हिन्दुस्तान लुथरान मसीही संघ के लिये ९-११ जनवरी तक के लिये आयोजित रहा।

जनवरी माह में अनेक जर्मन मेहमानों के लिये कार्यक्रम भी बनाया गया। डा० एवं श्रीमती हेस्स अपनी निजी दौरा में हमारा देश आ रहे हैं, वे गोस्सनर मिशन के कुराटोरियम (सभा) के सदस्य हैं। गोस्सनर मिशन ने हमारी कलीसिया में भ्रमण कर लोगों से भेंट मुलाकात कर बात-चीत करने की अर्जी की है। पाद्री एवं श्रीमती श्मेलटर कुराटोरियम सदस्य भी गोस्सनर मिशन एवं अपनी कलीसिया का प्रतिनीधि होकर हमारे यहां आ रहे हैं। वे नेपाल तथा भारत के अन्य भागों में भी भ्रमण करेंगे। समकालीन ही पाद्री और श्रीमती बरूता भी हमारी कलीसिया को देखने आ रहे हैं। पाद्री बरूता कुराटोरियम में डा० सिंह के सबिस्टच्वुट (एवज के) सदस्य हैं। ये मेहमान आ कर गोस्सनर कलीसिया के भाई बहनों से भेंट मुलाकात कर उनके विशेष जानना चाहते हैं। इनके लिये विस्तृत कार्यक्रम बनाया गया है। फिर समाचार मिला है कि पूर्वी जर्मनी (जर्मन जनवादी) से भी दो मेहमान आयेंगे जो वहां के गोस्सनर मिशन के विशेष संगी कर्मचारी हैं, उनके लिये भी कार्यक्रम बनाया जायगा।

इसी प्रकार समाचार दिया गया है कि माइन्स शाखा के गोस्सनर मिशन की महिला पाद्री क्रिस्ता स्प्रिंगे भी जपान से लौटते वक्त हमारे यहां एक सप्ताह के लिये आयेगी। वह महिला पाद्री माइन्स में पाद्री सिमानोस्की के साथ-साथ काम करती थी, अब तो वहां की बहो जबाबदेह व्यक्ति बन गयी है। पाठकों को विदित होगा कि माइन्स में गोस्सनर विशेष कर अपने ही देश के लिये काम करता है : "शहरी एवं औद्योगी मिशन" (Urban and Industrial Mission) का काम माइन्स से किया जाता है।

समाचार देश-विदेश

जेनेवा : इथियोपिया के राजनैतिक उत्थल-पुत्थल वहां के मसीहियों के जीवन में भी भारी संकट आ गया है। संसार के एकलाही मसीही कैसर (सम्राट), हाईलेसेलासी पर भी आफत आयी और उन्हें अपने राज्य से हाथ धोना पड़ा। मसीही जगतीय संस्थाओं एवं संगठनों ने वहां की वर्तमान सरकार से अर्जी की है कि राजनैतिक बन्दियों से अन्याय नहीं पर उचित न्याय की जाय।

वियना : यहां कलीसिया अधिकारियों ने गर्भपात की समस्या पर विशेष विचार विमर्श किया। आधुनिक युग में विकसित एवं विकासशील देशों के लिये यहां विशेष समस्या बन गयी, परन्तु मसीहियों के लिये भी यहां "मसीही-नैतिकता" क्षेत्र में कम समस्या नहीं है।

हजारीबाघ : यहां बिहार क्रिश्चयन शिक्षक संघ के लिये एक सम्मेलन का आयोजन किया गया था, वर्तमान बदलते युग में शिक्षा प्रणाली एवं पद्धति की विशेषता पर विशेष विचार विमर्श हुआ, कि ऐसे युग में मसीही शिक्षा संस्थान किस तरह अपना उचित पाठ अदा कर सकते हैं।

नयी दिल्ली : हमारे देश के नेशनल क्रिश्चियन कौंसिल ने देश के पूर्वी क्षेत्र में मसीहियों पर जो शोषण और दबाव की नीति अपनायी है, उसका घोर विरोध किया है और प्रधान मंत्री तथा गृह मंत्री के सामने समस्या को पेश किया है, कि इस ओर जल्द कदम उठाया जाय और दमन नीति खत्म की जाय।

Gossner Mission

१५ वर्ष के बाद अब उपासना प्रचारक घर से नया गिर्जा घर में-सरगुजा ओकरा मण्डली में

१५ वर्षों से ओकरा मण्डली में प्रभु की उपासना प्रचारक घर में होती थी। उस समय इस मण्डली में दो मसीही परिवार और मसीही जन संख्या सिर्फ ५ थी। प्रचारक का घर १० हाथ लम्बा और ६ हाथ चौड़ा है। ५ व्यक्तियों के लिए उपासना के वास्ते यह घर काफी बड़ा था। १० वर्ष के बाद आज इस मण्डली में ११ मसीही परिवार और कुल ६५ व्यक्ति हैं। परिवार और जन संख्या में परिवर्तन आयी। लेकिन उपासना स्थान में कोई परिवर्तन नहीं आयी थी। जहाँ पहले ५ व्यक्ति प्रभु की आराधना करते थे वहीं ६५ व्यक्ति आराधना करना चाहते और करते थे। सिर्फ ६५ व्यक्ति ही नहीं बल्कि प्रचारक का सामान, चुल्हा, मुर्गियाँ, बकरियाँ और कुत्ता भी उसमें सम्मिलित थे। इस तरह एक कोने में चुल्हा, दूसरे कोने में बकरियाँ, तीसरे में मुर्गियाँ और चौथे कोने में कुत्ता रहता था। शेष छोटी सी बीच भाग में प्रभु के उपासक-उपासना करते थे। उपासना के लिए कितनी दयनीय दशा थी। यहाँ के भाई-बहन हमेशा चिंतित थे कि कब गिर्जा घर होगा। सब के मन में एक प्रबल इच्छा थी कि उपासना के लिए उपासनालय हो।

५ मई १९७४ को सब ने फैसला किया कि हम सब मिलकर गिर्जा घर बनाएँगे। फैसला होने के तुरन्त बाद उसी दिन गिर्जा घर का नींव डाला गया। ६ मई से काम चालू हो गया। मण्डली के भाई-बहनों की आर्थिक स्थिति ऐसी है कि जब तक मजदूरी नहीं जाएँगे तब तक चुल्हा जलना भी बंद। सब के सब मजदूरी जाने लगे समस्या आयी ऐसी हालत में गिर्जा घर कैसे तैयार होगा। मण्डली में कोई ऐसी रकम नहीं है जिससे मजदूरी लगा सकें। ऐसी डावाडोल हालत में मण्डली के जवान-युवतियों ने अपने अपार कठिन भार लिया। उन्होंने फैसला किया कि हम मुर्गा बांक देने के पहले दिवाल देना शुरु करेंगे और साढ़े ६ बजे तक में समाप्त करके सात बजे से मजदूरी जाएँगे। इस तरह से यहाँ के जवान-युवतियों ने सवेरे ४ से ६.३० के बीच काम करके १९ मई तक में दीवाल देने का काम पूरा किया। दीवाल के बाद लकड़ी की समस्या आयी। लेकिन प्रत्येक परिवार से ५-५ कण्डी देने का निश्चय किया। इस तरह थोड़े दिन में ५५ कण्डी जमा हो गयी। हाउस मास्टर सामुएल एक्का अपने तरफ से ४५ कण्डी और मिशन, चिरावन बाता सहायतार्थ दिया। ओकरा मंण्डली श्री एस-एक्का और सरगुजा सुपरिंटेन्डेन्ट का धन्यवादी है।

लकड़ी के बाद खपरे की समस्या आयी। ४ दिन लगातार छोटे बड़े सब अपना निजि काम छोड़ कर खपरा बनाने में जुट गए। ४ दिन में आठ हजार खपरा बन कर तैयार हो गया। २ दिन छत बनाने और छारने में लग गए।

इस तरह अनेकों कठिनाईयों का सामना करते हुए कठिन परिश्रम और लगन के बाद १६ जून तक में २३ हाथ लम्बा ११ हाथ चौड़ा गिर्जा घर तैयार किये। २४ जून को बड़ी धूम धाम के साथ संस्कार किया गया। इस तरह १५ वर्ष के बाद अब प्रभु की उपासना प्रचारक घर से नया गिर्जा घर में होने लगा है। ११ परिवार की ओकरा मण्डली अपने परिश्रम और लग्न से एक शानदार गिर्जा डेढ़ माह में तैयार करके सरगुजा मिशन फिल्ड के ११ परिवार से ऊपर वाली मण्डली जहाँ अभी तक गिरजा घर नहीं है एक नमूना पेश करती है एवं अपना अनुभव व्यक्त करती है कि किसी कार्य को करने के लिए एकता, प्रार्थना, परिश्रम और लग्न की आवश्यकता है।

कन्डीदात-आनन्द मसीह मिंज

—:o:—

Gossner Mission

मसीह यीशु सेवक एवं उसकी सेवा

रेभ. डा. सी. के. पॉल सिंह

इस साल के प्रथम उपदेश वचन में बतलाया गया है कि यीशु का अभिषेक क्यों होता है, क्यों वह मसीह नाम और यीशु नाम पाता है, वह न केवल उनको जो परमेश्वर से दूर और एक दूसरे से दूर रहते हैं परमेश्वर से और एक दूसरे से मिलाता है पर वह उनकी अपनी परिस्थिति में इस तरह सहायता एवं सेवा करता है कि वे मनुष्य के निम्न आवश्यकता को पा सकें ! या यों कहा जाय कि उनको जो मिलना चाहिए वह मिल जाय : कंगाल को धन, अंधे को दृष्टि और शोषित को छुटकारा ! यीशु मसीह ने ऐसा काम अपनी शिक्षा, प्रचार एवं काम के द्वारा करके दिखा भी दिया। इस निमित्त उसको दुःख, निन्दा एवं ठट्ठा ही क्यों न सहना पड़ा। उसके वैरी व विपक्षी तो उसकी ऐसी सेवा के कारण उसको समाज बहिस्कृत भी करने के लिये तुल गये थे।

यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र होकर स्वर्गीय विभव छोड़ कर सेवक या दास बन जाता है। ईश्वर के जन का दास होने की बात यशायाह नबी अपनी पुस्तक में चर्चा कर चुका है। उसके दुःख उठाने की भी बात कही गयी है। सेवक होना या दास होना उसके आज्ञाकारी होने से सम्बन्धित है। वह उसके कारण औरों से तुच्छ, नीच एवं अभाग्यपूर्ण भी समझा जाता है। उसको अनेक सुख, सुविधा एवं जीवन साधनों से भी वंचित रहना पड़ता है। यीशु मसीह ने हमारे लिये और जगत के सारे लोगों के लिये सेवा करने इन सभी बातों को करके दिखा दिया। इसी सेवा के आधार पर कितनों ने मसीह यीशु के कार्य को मानवीकरण का नाम दिया है, कि उसके काम से मनुष्य अपनी यथा स्थिति में आ जाता है। जैसे मनुष्य को होना चाहिए वैसा कर दिया जाता। लेकिन इसको सिर्फ मनुष्य की अपनी परिस्थिति के आधार तक सोचना अधूरा होगा। मनुष्य अपनी स्थिति में आ जाता है कि उसके द्वारा वह परमेश्वर से और मनुष्यों से जिस सम्बन्ध में रहना चाहिए उस सम्बन्ध में आ जाता है। इसका मतलब है कि मनुष्य का न केवल सामाजिक परिस्थिति में मानवीकरण को प्रक्रिया में है परन्तु आत्मिक दृष्टिकोण की प्रक्रिया में भी है। एक के बदले में दूसरा केवल समझना और करना गलत और अधूरा है।

इतिहास में कलीसिया ने याने मसीहियों ने गलतियां की है, कभी तो यीशु मसीह की सेवा को सिर्फ आत्मिक बातों के लिये समझा और इसी धुन में काम भी किया। पर कभी इस ओर से पूरा ध्यान सामाजिक बातों पर विशेष जोर दिया। परन्तु यीशु मसीह ने दोनों को साथ में लिया, उसने आत्मिक और सामाजिक बातों की शिक्षा दी और उसी के आधार काम भी किया-सेवक बना और बहुतों की छुड़ाती के लिये अपना प्राण भी दिया। हमारी गोस्सनर कलीसिया ने वचन प्रचार पर विशेष जोर दिया है और आज भी इस ओर विशेष ध्यान है। सामाजिक उत्थान और सुधार की दिशा में सच्च कहा जाय तो शिक्षा विभाग ही से कुछ सेवा की गयी है। यह विभाग भी बहु-उद्देश्य दृष्टिकोण से सम्भव नहीं कराया गया। शिक्षा के द्वारा लोगों को विभिन्न पेशा की ओर अगुआई नहीं दी जा सकी। कृषि और तकनीकी क्षेत्र में तो करीब-करीब मात ही खा गये। परन्तु इनके अतिरिक्त और भी पहलु हैं जिससे लोगों को उनके मानवीकरण में सहायता मिल सके। रोगियों, गरीबों अंग-प्रत्यंग के कमजोर लोगों के लिये कोई खास ध्यान नहीं दिया गया। आज भी हमारी कलीसिया के अन्तर्गत अस्पताल एवं दवाखाना हैं; कुछ ही क्षेत्र हैं और कुछ ही लोग हैं जहां और जिनके द्वारा इस काम विशेष सेवा पहुंचायी गयी है। कुछ दवाखाना तो सेवकों की कमी के कारण एवं सेवा में रूचि नहीं रखने के कारण बन्द कर दिये गये, वहां रुपये की कमी नहीं रही, पर दृष्टि कोण और अभिरूचि की कमी रही। अब सम्भवतः कुछ ही दिनों में उन दवाखानों में भी समस्या आयेगी जहां अभी अच्छी सेवा दी जा रही है। वहां के कार्य कर्त्ताओं, सेवक-सेविकाओं के न रहने से ऐसे दवा-खानों की क्या स्थिति होगी उसको तो वही समझते हैं जो वहां अभी काम कर रहे हैं। चूंकि न भाई बहनों ने और

Gossner Mission

न अगुवे व आधिकारियों ने सेवा के इस पहलु पर विशेष ध्यान दिया है और अभिरूचि ही दिखायी है, ऐसा दीखता है कि मसीह यीशु की सेवा को जिसको उसने लोगों के बीच में किया, हम जारी नहीं रख सकते हैं।

आज यीशु मसीह के आधार-कार्य को यदि हम मानवीकरण का नाम देते हैं तो हमें इस ओर भी विशेष ध्यान देना है। ऐसे संस्थानों को, जहां मानवीकरण की प्रक्रिया का अध्ययन और कार्यान्वियन का उपाय हो सके, स्थापना करनी चाहिए और जहां ऐसे संस्थान है उनको हर तरह से सम्भालने का उपाय भी करना चाहिए।

अभी तत्काल आवश्यकता है कि घरबन्धु के पाठक हमारे दवाखानों को सम्भालने के लिये एक महिला डाक्टर खोजने में मदद पहुंचावें – उस महिला डाक्टर को टकरमा दवा खाना में काम करते हुए खुटीटोली और सम्भवत: पुरना पानी दवा खाना भी सम्भालना होगा। महिला डाक्टर को योग्यता और अनुभव के आधार वेतन दिया जायगा। विशेष गुण होना चाहिए कि वह सेवा भावना के साथ काम कर सके पेशा और नौकरी भावना नहीं होनी चाहिए। अत: आप सूचना फैलायं।

टकरमा दवा खाना के लिये एक महिला डाक्टर की आवश्यकता है।

सम्पर्क करें मिस्स इल्जे मार्टिन, टकरमा दवा खाना, पी. ओ. लसिया, जिला रांची।

लंगड़ा मुण्डा का परिवर्त्तन

क्या आप ने कभी लंगड़ा मुण्डा के विषय सुना है कि ये कौन थे ? इनका परिवर्तन के पश्चात क्या क्या घटनाएं हुई मालूम है ? मैं इनके विषय आप को कुछ बताना चाहता हूं और आशा करता हूँ कि उनके जीवन से आप उत्साहित होकर कुछ आत्मिक लाभ प्राप्त करेंगे।

लंगड़ा मुण्डा बमनी गांव के एक गृहस्थ थे। इनके पुरखे बहुत धनी थे पर आप एक गरीब किसान हो गये थे जिसको चर्चा आप को आगे बतायी जायगी। ये आदिवासी देवों के पूजक थे। इनसे अधिक इनकी धर्म पत्नि अपने धर्म में अधिक कौलीन थी तथा अपने धर्म की रीति दस्तूरों को बड़ा भक्ति के साथ मानती थी।

बमनी गांव में एक रौतिया जमींनदार थे। ये बहुत ही कठोर एवं निर्दयी थे। ये बल पूर्वक, बेईमानी से मुण्डा लोगों की अच्छी-अच्छी दोन एवं टांड़, रैयती हो अथवा भुईंहरी, सब को हड़प लेते थे। उन दिनों आदिवासियों की हालत बहुत ही सोचनीय थी। उनसे बेगारी लिया जाता था तथा उनके साथ पशुओं की तरह व्यवहार किया जाता था। लंगड़ा मुण्डा भी जमीनदारों की ऐसी चपचपी से बंचित नहीं थे। इनके अच्छे-से-अच्छे खेत तथा अच्छी से अच्छी दोन जमीनदारों के हाथ पड़े। बेचारा गरीब हो गया। वह बराबर चिन्ता सागर में डूबा रहता था। वह जमींदारों के पल्ले से छुटकारे की इच्छा रखता था, पर उसको कहीं से छुटकारे की आशा ही नहीं थी। खेतों के जमीनदारों द्वारा दोन लिये जाने पर, उसके बचे हुए खेतों में इतना अन्न नहीं उपजता था जिस से उसके परिवार साल भर भोजन पा सकते। ऐसी हालत में लंगड़ा मुण्डा अपनी परिवार एवं नन्हें बच्चों के पालन-पोषण के लिये, अपने घर के भेड़ बकरियों, मुर्गियों तथा पशुओं को एक-एक कर बेचता गया और अन्त में उसके यहां केवल एक ही बैल बच गया था।

लंगड़ा मुण्डा के गांव में एक पांड़ (तांती) रहता था। यह भी उस गांव का रैयत था। जमीनदारों के दबाव से इसकी भी हालत बुरी थी। इसके घर में भी सिर्फ एक ही बैल बच गया था। लंगड़ा मुण्डा और पांड़, दोनों ने

Gossner Mission

देखा कि बचे हुए खेतों को जोतना भी है। पर उनके पास एक-एक ही बैल है, कैसे खेत जोता जायगा ? इसी बीच उन दोनों में अच्छी समझौता हुई और दोनों ने मिल कर अपने अपने एक-एक बैल ला कर एक ही हल चलाने के लिये तय किया। इस तरह वे एक दिन लंगड़ा मुण्डा का खेत जोतते थे और एक दिन पांड़ का खेत जोतते थे। इस प्रकार वे अपने खेतों पर अन्न उपजाते थे।

एक दिन की बात है कि लंगड़ा मुण्डा की जोतने की बारी थी और वह रास्ते के किनारे का एक खेत पर हल चला रहा था। रास्ते पर से बाजार के बहुत से लोग गुजर रहे थे। उस रास्ते से एक गोरा साहब भी अपनी साईकिल पर से चला जा रहा था। एका एक लंगड़ा मुण्डा का ध्यान उस साहब की ओर चला गया। साहब भी लंगड़ा मुण्डा को देख कर अपनी साइकिल से उतरा, और लंगड़ा मुण्डा के खेत के किनारे खड़ा हो गया। साहब से कुछ सुनने की आशा से लंगड़ा मुंडा ने अपने बैलों को खड़ा कर दिया और साहब के निकट आ गया। साहब ने, लंगड़ा मुंडा को प्रणाम कर उससे मुंडारी में बातें करने लगा। एक विदेशी को अपनी भाषा से बातें करते सुन कर लंगड़ा मुंडा को बहुत ही आश्चर्य हुआ। वह बहुत ही ध्यान से उस की बातें सुनने लगा। साहब को देखकर और उस के मुंह से स्पष्ट मुंडारी भाषा सुन कर बाजार जाने वाले अनेक लोगों की वहां भीड़ लग गई।

भीड़ को वहां इकट्ठे हुए पाकर साहब ने उन्हें यीशु मसीह का सुसमाचार वचन सुनाया। साहब ने उन्हें यह भी बताया कि यीशु मसीह सर्वशक्तिमान प्रभु है जो मनुष्यों को सब प्रकार के रोगों से चंगा कर सकता है। अंधों को, लंगड़ों को, बहरों को, तथा भूतग्रस्त लोगों को किस तरह चंगा किया इनका भी वर्णन उसने उन्हें कह सुनाया।

यीशु मसीह भूतों को निकाल सकता है। इस बात से लंगड़ा मुंडा बहुत प्रभावित हुआ, और जब साहेब आगे बढ़ने लगा तो उनसे आग्रह किया कि उस विषय में उसे और कुछ समझावे।

बमनी गांव के उत्तर सीमे पर एक भठा हुआ बांध था। उसका क्षेत्रफल करीब दो तीन एकड़ के लगभग था। इसके नीचले हिस्से में अब तक भी कुछ पानी जमता था, किन्तु बांध के ऊपर की ओर भर कर दोन ऐसा हो गया था। यह जमीन बंजर पड़ा हुआ, "जोला बन्दा" के नाम से स्थानीय लोगों के बीच जाना जाता था। इस बांध में भूत रहता था जिसके कारण इस जमीन के अन्दर कोई आदमी नहीं जाता था। कहते हैं कि यदि कोई गलती से उसके सीमा के अन्दर घुस जाय तो वह सहसा पेट दर्द से निश्चय मर जाता था। यह भी कहते हैं कि बिना बकरा पूजे वैसे जान का बचना असम्भव था। इसी कारण लंगड़ा मुंडा, साहब से भूत प्रेत की बातें सुन कर, अधिक दिलचस्पी लेने लगा और साहब से सीधे पूछने लगा कि क्या आप का यीशु मसीह 'जोला बांध' का भूत को निकाल सकता है? साहब ने उस से कहा, कि निश्चय यीशु मसीह भूतों को निकाल सकता है क्योंकि वह उनसे बहुत ज्यादा बलवन्त है तथा भूत प्रेत यीशु नाम सुन कर थर-थराते हैं।

लंगड़ा मुण्डा, भूतों पर बहुत विश्वास करता था और वह उन की सेवा करता था। पर आज उन से भी अधिक शक्तिमान आत्मा के विषय सुन कर वह बहुत चकित हुआ। उस के मन में साहब के ऊपर विश्वास तथा भरोसा उत्पन्न हो गया। लंगड़ा मुण्डा के खेत एवं दोन छीने गये थे। वह खेत या दोन बढ़ाना चाहता था "जोला बांध" की जमीन बहुत दिनों से पड़ती पड़ी हुई थी। यह किसी को जमीन नहीं थी। इस पर लंगड़ा मुण्डा का नजर पड़ गया था। पर उस में भूत था। वह सोचता था, कि भूत को दान दक्षिणा से मना कर जमीन को आबाद कर लें। किन्तु उस को भय भी होता था। किन्तु साहब से यीशु मसीह की बातें सुन कर वह मन ही मन बहुत प्रसन्न था। उसका मन साहब की ओर झुक गया। उसकी आशा और विश्वास मसीह पर होने लगा।

ये गोरे साहब कौन थे? ये बुड़जु में रहने वाले एक मिशनरी जर्मन साहब थे जो नोत्तरोत्त साहब के नाम से प्रसिद्ध थे इन्होंने छोटानागपुर में रह कर मुण्डारी तथा अन्य स्थानीय भाषाएँ बहुत अच्छी तरह सीख ली थी और प्रभु का वचन को बहुत दूर दूर तक प्रचार करते थे। ये बुड़जु से निकल कर बमनी गांव होते हुए कुटाम मण्डली, दियांकेल मण्डली, तोरपा, तपकारा होते मर्चा तथा खुंटी

Gossner Mission

टोली - किन्केल की ओर तक भ्रमण कर लूथेरन मण्डली के लोगों को उत्साहित करते एवं प्रभु के वचन में दृढ़ाते थे। ये जब जब बमनी की ओर से गुजरते तब तब इन्होंने लंगड़ा मुण्डा से भेंट की। लंगड़ा मुण्डा भी साहब से यह पूछने को नहीं चूकते थे कि यदि मैं यीशु के नाम से उस 'जोला बांध' पर हल चलाऊं तो उस भूत से हमारी हानि होगी या नहीं ? साहब ने उससे कहा कि तेरी हानि हर्गिज न होगी प्रभु पर विश्वास करो, भूत आप ही आप भाग जायगा।

लंगड़ा मुण्डा ने यीशु मसीह के आश्चर्य कर्मों को सुन कर अपने देवताओं को उसके साथ तुलना किया। उसने यही पाया कि वे देवी देवताएं केवल मनुष्यों को दुःख दे सकते हैं, पर प्राण नहीं बचा सकते। वे खून के प्यासे हैं, पर त्राण नहीं दे सकते। पर, यीशु मसीह पर विश्वास करने से, वह मनुष्यों को सब रोगों से चंगा करता और अनन्त जीवन दे सकता है। वह भूतों के ऊपर भी प्रभुता करता है। इसी आशा और विश्वास से लंगड़ा मुण्डा मुग्ध हो गया। वह मन में ठान लिया कि मैं मसीह को अपना प्रभु और राजा स्वीकार कर लूंगा और उसी की उपासना करूंगा।

एक दिन पाद्री नोत्तरोत्त साहब बमनी हो कर किकेल की ओर जा रहे थे। लंगड़ा मुण्डा भी उसी रास्ते के एक खेत में काम कर रहा था। पाद्री साहब को देखकर लंगड़ा मुण्डा रास्ते पर निकल पड़ा और उन से निधड़क कहा कि मैंने यीशु मसीह को अपना त्राण कर्त्ता स्वीकार कर लिया है। अब मुझे अपना झोटा काट देने और बप्तिस्मा लेने में कोई आपत्ति नहीं है। पाद्री साहब उन की ऐसी बातें सुन कर बहुत प्रसन्न हुए और वहीं पर घुटने टेक ईश्वर को धन्यवाद दिया। निकट ही पर बनई नदी था। वे दोनों नदी के तट पर गये और पाद्री नोत्तरोत्त ने लंगड़ा मुण्डा का झोटा वहीं काट कर उसे यीशु नाम से बप्तिस्मा दिया और उसका नाम "मार्टिन" रखा। पाद्री साहब ने मार्टिन को यह भी ताकिद कर दिया कि मसीह पर पूर्ण विश्वास करो, प्रार्थना में लगे रहो तो तुम्हें हर एक काम में सफलता मिलेगी।

लंगड़ा मुण्डा की पत्नी अपने पुराने धर्म में लौलीन थी। वह और किसी अन्य धर्म की बातों पर कभी मन नहीं लगाती न उन पर तनिक भी विश्वास करती। उन दिनों ईसाई धर्म के लोगों को मुंडला कहा करते थे क्योंकि जितने पुरुष ईसाई हो जाते थे वे अपना चुन्दी, चुटा या झोटा कटवा देते थे। लंगड़ा मुण्डा की पत्नी, ईसाई धर्म को विदेशी धर्म समझती थी तथा उस धर्म पर चलने वालों को आछूत समझती थी।

लंगड़ा मुण्डा का परिवर्त्तन आज दिल से हो गया। उसने अपना बड़ा झोटा को कटवा कर सिर को मुंडला करा दिया। अपना खेत का काम खतम कर, जब संध्या के समय अपना घर — गया और उस की पत्नी ने पति को मुंडल किया हुआ देखा तो उस की हृदय फट गया। वह रोने लगी और कहने लगी तुम ने यह क्या किया है ? दूर हो ! मेरे घर में प्रवेश मत करो !! मेरे घर को अपवित्र मत करो !!! और ऐसा कह कर उसने लंगड़ा मार्टिन मुण्डा को घर से बाहर कर दिया। वह अछूत हो गया ऐसा सोच कर उस की पत्नी ने उस के साथ बात चीत करना भी अच्छा नहीं समझा। उसने उस दिन उसको भोजन भी नहीं दिया। बेचारा लंगड़ा-मार्टिन, गोहाल घर में, जहां उस का एक बैल रहता था, अपना डेरा बनाया और अपनी बुद्धि भर प्रभु से प्रार्थना कर रात्रि बिताया।

इस के पश्चात भी छः महिनों तक लंगड़ा मार्टिन को गोहाल घर ही में रहना पड़ा। उस की पत्नी कट्टर आदिवासी धर्म को मानने वाली थी। मार्टिन के मुंडल होने के बाद वह उस को अपने घर में कभी प्रवेश करने नहीं दी। उस को गोहाल घर में खाना दिया जाता था। खाना भी कांसे के बर्त्तन में नहीं, पर पतरी में दिया जाता था। तिस पर भी मार्टिन गोहाल घर में बड़ी खुशी से और शान्ति पूर्वक रहता था। इस बीच में कई एक बार पाद्री नोत्तरोत्त उसे देखने आये। मार्टिन भी एतवार के एतवार गिर्जा जाना नहीं भूलता था। अब तक मार्टिन विश्वास दर्पण, प्रभु की प्रार्थना तथा सुसमाचार के अच्छे अच्छे पदस्थलों को कंठस्थ कर लिया था। वह अपनी पत्नी के लिये भी लौ लगा कर प्रार्थना करता

Gossner Mission

था। उसकी पत्नी और गांव के लोग ईसाई धर्म छोड़ देने के लिये कई बार उस से आग्रह किया। किन्तु मार्टिन को प्रभु में सच्चा आनन्द मिल गया था, इसलिये ईसाई धर्म से कभी मुंह नहीं मोड़ा। उसकी पत्नी की ओर से वैसा कष्ट मिलने पर भी वह हंसमुख रहता था। उसको खुशी एवं शांति पूर्वक रहते देख कर उसकी पत्नी का मन धीरे-धीरे नम्र होते गया। वह हृदय में पश्चाताप करने लगी। मार्टिन तब तक कुछ मसीही गीतों को भी सीख लिया था जिन में "परमेश्वर एक दृढ़ पहाड़" एक है इसे जोर-जोर से गाया करता था। उसके धीरज एवं दुःख सहने के गुणों को देख उसकी पत्नी का मन नम्र और कोमल होकर परिवर्तन हो गया। वह कहने लगी हम लोग कब तक अलग-अलग रहेंगे? अब मैं भी तेरे ही धर्म को मानूंगी कह कर मार्टिन को अपने घर में ग्रहण की और उस दिन उस घर में बड़ा आनन्द हुआ।

पाद्री नोत्तरोत्त ने मार्टिन की पत्नी का परिवर्तन के विषय सुना और बहुत खुश हो कर ईश्वर को धन्यवाद दिया। इसके बाद उन के घर में जा कर प्रार्थना सहित प्रभु का वचन सुनाया और उन्हें विश्वास में दृढ़ाया।

दिन बीतता गया, मार्टिन और उसकी पत्नी ईसाई धर्म में अधिक दृढ़ होते गये। प्रभु मसीह के वचन और प्रेरितों के कार्यों से पूरा परिचित हो गये थे। दोनों अनपढ़ तो थे किन्तु धर्म पुस्तक के अच्छे पदस्थलों को, गीतों को तथा कटेखिस्म के वचनों को मुखस्त कर लिये थे। मार्टिन तो कुटाम मण्डली का आराधना आरम्भ से अन्त तक कर सकता था। प्रभु की आशीष उस घराने के साथ थी। लंगड़ा मार्टिन के प्रार्थना से बिमारी चंगे होते थे। उस की पत्नी भी विश्वास में तथा वचन में किसी प्रकार अपने पति से कम नहीं थी। वह अच्छी तरह प्रार्थना कर सकती थी।

लंगड़ा मार्टिन और जोला बांध के भूत :—

लंगड़ा मार्टिन ईसाई धर्म को ग्रहण करने के बाद बहुत स्वतंत्रता मालूम करता था। पहले वह भूत-प्रेतों से बहुत डरता था और उन्हें मनाने बुझाने या खुश करने के लिये तुरंत मुर्गी चाहे भेड़ा चाहे बकरा पूज देता था। पर अब मसीह में निर्भय एवं बड़ा साहसी हो गया। किसी काम को आरम्भ करने से पहले प्रार्थना करता था। यदि कहीं सन्देह होता तो पाद्री नोत्तरोत्त से सलाह लेता था।

आप को मालूम हो ही गया है कि मार्टिन, जोला बांध के भूत को भगाना चाहता था। वह अपने गांव के देव पूजक लोगों को बताना चाहता था कि मसीह देवों के ऊपर भी राजा है। जोला बांध का खेत पड़तो पड़ा हुआ था। वह उसे जोत कोड़ कर आबाद करना चाहता था। पर उस में भूत था। इस लिये उस ने नोत्तरोत्त पाद्री से सलाह ली कि मैं उसे जोत सकता हूं या नहीं? उस ने उसको कहा कि प्रभु से प्रार्थना करने के पश्चात तुम उस पर हल चलाओ, तुम्हारी कुछ भी हानि न होगी। मार्टिन ने पाद्री साहब की सलाह से बहुत साहस पाया और उस खेत पर हल चलाने के लिये ठान लिया।

एक दिन सूर्यास्त से पहले मार्टिन ने अपने जुंवट और हल को जोला बांध के पास ले गया और उस खेत के किनारे घुटना टेक कर प्रभु से प्रार्थना की कि उस खेत पर हल चलाने के कार्य में सामर्थ और शक्ति पावे तथा उस खेत के दुष्टात्मा के ऊपर जयवन्त होवे। प्रार्थना के बाद उसने उस खेत के भूत को ललकार कर कहा "कि मैं अपना जुवट और हल को इस खेत के भीतर डाल देता हूं। यदि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह से ज्यादा सामर्थवान हो तो इस खेत से बाहर फेंक दो और नहीं तो कल बिहान से इस खेत पर हल चलाना शुरू कर दूंगा।" और ऐसा कह कर हल और जुंवट को उस खेत के अन्दर फेंक कर अपना घर को लौट गया।

घर में मार्टिन ने इन सारी बातों को अपनी पत्नी को कह सुनाया। रात्रि में वे दोनों बड़ी गम्भीरता से प्रार्थना में लगे रहे। जब बिहान हुआ तो मार्टिन बड़ी उत्सुकता से उठा और यह जानने की लालसा की कि उसके हल और जुंवट की हालत क्या हुई। वह अपने बैलों को और फार ले कर 'जोला बांध' के पास पहुँच गया और उसने क्या देखा कि हाल और जुंवट जैसा फेंका गया था वैसा ही खेत के भीतर पड़ा हुआ था। इसके बाद मार्टिन को विश्वास हो गया कि मेरा प्रभु, भूत से अधिक शक्तिमान है

Gossner Mission

मैं अब इस खेत को बिना भय जोत सकता हूँ। वह खेत के अन्दर गया और घुटने टेक कर प्रभु से प्रार्थना की और बैलों को जोड़ कर निधड़क हल चलाना शुरू कर दिया। हल चलाते-चलाते दोपहर हो गया, कोई घटना नहीं हुई। इस के बाद वह हल चलाना बन्द किया और फिर उस खेत पर घुटना टेक कर प्रभु को धन्यवाद दिया कि उस ने उस की रक्षा की है।

घर में मार्टिन की पत्नी आशा भरी नजरों से अपने पति के आने की प्रतिक्षा कर रही थी। जब वह सही-सलामत घर लौट गया तो उनके घर में बड़ा आनन्द हुआ। रात को सब मिल कर परिवार सहित प्रभु को धन्यवाद दिया और वे प्रार्थना कर सो गये।

मार्टिन अपना एक बैल और गांव के एक पांड़ के एक बैल को लेकर एक दिन के बाद एक दिन जोला बांध का खेत पर हल चलाने जाता था। गांव के लोगों ने पांड़ को बहकाने की कोशिश की कि तुम अपने बैल को जोला बांध के खेत जोतने के लिये लंगड़ा मुंडा को मत दो। इसमें भूत है। लंगड़ा मुंडा एक दिन मर जायगा और तुम्हारा बैल भी मर जायगा। उसने उन्हें उत्तर दिया, मेरा बैल क्यों मरेगा ? अगर हानि होगी तो लंगड़ा मुंडा की होगी हमारी नहीं : यह कह कर उसने बैल देने में किसी प्रकार की आपत्ति नहीं की और लंगड़ा मुंडा बिना रोक-टोक उस खेत को जोतता गया।

जब लोगों ने देखा कि जोला बांध पर घुसने तथा उस पर हल चलाने पर भी लंगड़ा मुंडा की कुछ भी हानि नहीं हुई न उसके बैलों की हानि हुई। तो यह देख कर गांव के लोग बहुत ही चकित हुए क्योंकि यह देखा गया था कि जो मनुष्य उस बांध के सरहद के अन्दर घुसता था वह निश्चय पेट दर्द से मर जाता था। पर लंगड़ा मुंडा नहीं मरा। वे उसके लोग उसके पास घर पर जा कर पूछने लगे कि क्या बात है कि जोला बांध में घुसने पर भी उसकी कुछ हानि नहीं हुई। तब उसने अपने त्राण-कर्त्ता यीशु मसीह के विषय उनको कह सुनाया। वह उनको बताया कि यीशु मसीह, जिसकी वह उपासना करता है वह सर्वशक्तिमान है और सब देवताओं और भूतों एवं प्रेत उनके नाम से कांपते हैं। यह सुनकर उसके गांव के लोगों को भय हुआ।

लंगड़ा मुंडा धीरे-धीरे 'जोला बांध' को जोतता गया और करीब आधे-आध पर हल चला चुका था उसी समय एक रात स्वप्न में क्या देखता है कि उस खेत में एक जट्टा-धर भूत है जिसका बाल उसके एड़ी तक लटक रहा था। उसका चेहरा काला एवं डरावना था। उसकी एक पत्नी भी थी। वह भूत अपनी पत्नी से कह रहा था, "चलो, यह मनुष्य नहीं मानेगा। उनके भगवान का नाम सुनकर डर लगता है।" और यह कह कर वे हट रहे थे। भूत की स्त्री कह रही थी कि; "उस मनुष्य की पत्नी के मुख से आग निकलती है।" उससे तो मुझे बहुत डर लगता है।" मार्टिन नींद से जाग उठा और स्वप्न पर ध्यान लगाया। उसने अपनी पत्नी को अपना स्वप्न बताया; और कहा कि प्रभु का अनुग्रह उनके साथ है और वे उस खेत को दखल करने में सफलवन्त होंगे। तब उन्हों ने घुटने टेक कर प्रभु को धन्यवाद दिया।

स्वप्न देखने के बाद मार्टिन और उसकी पत्नी पूरी तरह जान गये कि प्रभु उसके साथ है। इसी कारण वे भूत उनसे डरते हुये दिखाई दिये। उनका विश्वास प्रभु में दृढ़ हो गया और साहस से भर गये। प्रार्थना ही उन का हथियार साबित हुआ। उस दिन से मार्टिन प्राय: प्रत्येक रात स्वप्न में उन भूतों को देखता था। कभी उन्हें फुस फुसाते हुए बात-चीत करते देखता था, कभी भयभीत हो अपने चेहरे को ढंकते हुए देखता था और कभी अपनी चीज वस्तुओं को सरिया कर किनारे की ओर हटाते हुए देखता था। मार्टिन प्रति दिन साहस पा कर दृढ़ता से आगे की ओर हल चलाते जाता था।

जब वह जोला-बांध के करीब दो तिहाई जमीन पर हल चला चुका तब उसने क्या स्वप्न देखा कि स्त्री भूत अपने पति से कह रही थी कि, "अब हम दोनों का यहां कोई गुजारा नहीं है। वह नहीं मानेगा। वह निकट आता ही जा रहा है। वह हमारी चीज वस्तुओं को छूवेगा। उसका भगवान का नाम सुनने से डर लगता है। चलो ! यहां से भागो !! और कह कर उस भूतिन ने अपने काले-काले घड़ा और भांड़ा इत्यादि को एक के ऊपर एक

Gossner Mission

तेंगरा कर रखी और उसके पति ने उस के सिर पर उठा दिया। भूतिन अपने सारे सामानों को सिर पर ढोकर उस खेत से निकल पड़ी। उसका पति भी उसके पीछे-पीछे चल पड़ा। वे दोनों उस खेत से भागकर बनई नदी को गुड़न्दा नामक घाघ के ऊपर पार किया। बनई नदी के तट पर ही ऊंचे-ऊंचे कुसुम के वृक्ष थे, (अभी भी कुछ वृक्ष हैं) भूतिन ने अपने सिर के सारे सामानों को उन्हीं वृक्षों के तले पहुँच कर धड़ाम से जमीन पर पटक दिया। जैसे ही भूतिन ने सिर के सामानों को वृक्षों के तले धड़ाम से पटका, मार्टिन को नींद खुली। वह अपने स्वप्न को याद करने लगा और यह जान कर कि भूत के ऊपर उसकी जीत हो गई है, घुटने टेककर ईश्वर को धन्यवाद दिया।

मार्टिन, जोला बांध को जोत कर करीब समाप्त करने ही वाला था, एक दिन की बात है कि जब वह हाल चला रहा था और अपने बैलों को "नाँव रे! दहिना !!" कहते हुए चलाने में मस्त था। वैसे ही अवस्था में उसने पीछे से किसी के पुकारने का शब्द सुना। उसने सोचा कि वह पुकार शायद किसी और को किया जा रहा था, सो उसने उस पर कुछ ध्यान नहीं दिया और वह अपने बैलों को चलाने ही में लीन था। किन्तु आवाज रूक रूक कर आने लगा और जोर होता गया। मार्टिन को ऐसा मालूम हुआ कि उसके पीछे कोई जन नजदीक कुछ पूछने हेतु चला आ रहा था। वह आवाज रूक-रूक कर पूछ रहा था—"ए! पहन केर घर कने आहे !!.....ए! पहन केर घर कने आहे !!" मार्टिन अपने बैलों को जोर जोर से बोल कर हांक रहा था इस कारण पीछे से पुकारे जाने वाली आवाज को स्पष्ट रूप सुन नहीं सका था। वह शब्द कुछ धीमे स्वर से था और रूक-रूक के निकल रहा था। मार्टिन को जब करीब नजदीक से "ए! पहन केर घर कने आहे !!" की पुकार स्पष्ट सुनाई दी तो वह थोड़ा चौंक गया और सहसा उसके मुँह से जबाब निकला, "ऊं-हुने आहे !" और ऐसा कहते हुए मुंह मोंड़ कर पीछे की ओर ताका तो उसने देखा कि अनोखा जट्टाधारी-भयंकर-भूत-करीब दस कदम पीछे खड़ा था। उसका चेहरा काला किन्तु चमकता था। उसकी बड़ी बड़ी सफेद आंखें फाड़-फाड़ कर मार्टिन को देख रही थीं। काले मुंह पर बड़े-बड़े सफेद दांत, भयंकर दिखाई देते थे। उसका सारा शरीर लम्बे-लम्बे बालों से ढंका हुआ था।

मार्टिन उसको देख कर आश्चर्य से चकित हो गया। वह दर्शन उसको चन्द पलों के लिये ही मिला था। उस के बाद वह भूत उसके नजरों से ओझल हो गया।

मार्टिन जो ईशा मसीह का भक्त था, विश्वास में दृढ़ था, मसीह से पूरा साहस और सामर्थ पा चुका था, फिर भी जब उसने उस भयंकर भूत को अपनी आंखों से साक्षात देखा तो कुछ क्षण के लिये उसका हृदय काँप गया। उस के रोंगटे खड़े हो गये। उसका सिर धड़ के सदृश्य बड़ा हो गया वैसा वह अनुभव किया। किन्तु जैसे उसने मसीह को स्मरण किया, वैसा ही उसके सब डर और भय लोप हो गये। उसने तुरन्त अनुभव किया कि उसका उद्धार कर्त्ता उसके बगल में खड़ा है। वह हल का मूठ छोड़ कर तुरंत उसी जगह मुंह के बल गिरा और अपने त्राण कर्त्ता को धन्यवाद दिया। उसके बाद वह अपने बैलों को खोल कर शांति पूर्वक अपना घर चला गया।

यह घटना बिजली की नाई उसके गाँव के लोगों के बीच में तुरंत फैल गया। बहुत से लोग उस को देखने तथा उस से सारी बातें जानने के लिये उसके पास पहुंचे। उसने बड़ी धीरज से सभों को ईश्वर के महा कार्य जो यीशु मसीह द्वारा उस पर प्रगट हुआ था कह सुनाया।

देवपूजक लोग अब भी उस खेत में जाना डरते थे। पर मार्टिन बिना डर उस खेत पर काम करता था और उसे कई एक बार जोत कोड़ कर तैयार किया और धान बोया। उस खेत के अगल बगल के खेत भी ऐसा ही परती पड़े हुए थे। इन में भी लोग जाना तथा हल चलाना डरते थे। मार्टिन इन सब को कब्जा किया और उन में भी धान बोया। आगहन में उसका खलिहान धान से भर गया और यह देखा गया कि उस वर्ष उसको, साल भर के भोजन से भी फाजिल धान उपजा। इस अनुग्रह के लिये उसने अपने गाँव के लोगों को इकट्ठा कर ईश्वर का धन्यवाद किया।

Gossner Mission

"ढलती-जिंदगी"

डी० पी० इफ्राईम 'बेबस'
(भोपाल, म० प्र०)

हर शाम ढल जाती है,
एक दिन को लिए,
हर सुबह चली जाती है,
एक रात को लिए,
हर क्षण चले जाते हैं,
इस उम्र को लिए ।

कोई मिलता है किसी पल,
जिंदगी को लिए,
कोई चला जाता है,
बस गम को दिये,
कोई जीता है किसी आश पर,
कोई चलता है अपनी लाश को लिए।

गम ही खाना और पीना,
नहीं है जिंदगी के लिए,
खुदगर्जी में लुफ्त नहीं,
खुद जीने के लिए,
जीना किसी के काम आये,
जीते हैं जीने के लिए ।
हर क्षण चले जाते हैं,
इस उम्र को लिए ॥

Gossner Mission

जीवन और शांति

सलमोन आईन्द

महान परमेश्वर के विषय जानने के लिये वचन अथवा शब्द का होना आवश्यक है। वचन बिना किसी भी वस्तु या विषय पर मानव द्वारा विश्लेषण करना असम्भव है। क्योंकि आदि में वचन था, और वचन ही परमेश्वर है। स्वर्ग और पृथ्वी की कोई ऐसी वस्तु नहीं जो उसके बिना सृष्टि हुई हो। सब कुछ उसी के लिये सृष्टि की गई है। यही वचन अर्थात ईश्वर यीशु होकर जगत में आया (यूहना १:१४;२ कुरिन्थियों ५:१९)। ईश्वर की सनातन से सनातन लों के लिये सदिच्छा मानव जातियों में प्रगट की गई यूहना १:१८; ५:३७)। इसलिये कि उसमें जीवन था, और वही जीवन जब मनुष्यों की ज्योति है (यूहना १:४)। यही जीवन एवं शान्ति पवित्रात्मा की एक महान दान है (गलतियों ५:२२+२३)। यह उसी को अनुभव हो सकता है, जो पवित्रात्मा से जन्मा हो (यूहना ३:५–६)। मनुष्य को पवित्रात्मा से जन्म लेना किसी भी अवस्था के लिये है। परन्तु प्रश्न इस बात की है, कि वह परमेश्वर पर यीशु के द्वारा विश्वास करता हो (रोमियों १०:१७)। पवित्रात्मा से जन्म लेने का अर्थ शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाना है (१ पतरस ३:२१)। विश्वास का आरम्भ वचन एवं पवित्रात्मा की दृढ़ता से होता है। शुद्धता उसे रुप देती है, सत्य उसका शृंगार करता है। जब विश्वास, आशा और प्रेम; परमेश्वर योशु मसीह और पवित्रात्मा पर होता है तब अडोल हो जाता है, और दूसरों पर भी प्रभाव होता है। अनुभवी जन जानते हैं कि बिश्वास पवित्रात्मा की शक्तियों के विकास का काम है। विश्वास आत्मा द्वारा प्रकाश एवं परम भाव का परमोदय है। जब विश्वास प्रेरणा और प्रकाश देता है तब पवित्रात्मा से जन्म और स्वर्गीय कर्म का रहस्य समझ में आता है। पवित्रात्मा से जन्म और कर्म की पहचान धन, सुन्दरता, विद्वता, उपाधियां प्राप्त मानव निर्मित विधि और न तो शब्दोच्चारण करने से होता है। दिव्य कर्म करने वालों का पहचान कुशलता, निर्भयता, धीरज और साहस से होता है। इस असार संसार में श्रद्धा और विश्वास का आधार दृढ़ और सुरक्षित रहता है, वह कभी विचलित नहीं होता और प्रेरणादायक जीवन और सत-पथ को नहीं छोड़ता है। पवित्रात्मा से जन्मोपरान्त स्वर्गीय विधि धार्मिकता के लिये पूरी की जाती है। पवित्रात्मा के द्वारा भला, बुरा और ज्ञान का प्रकाश होता है। हालांकि इस जगत के समस्त मानव जाति अद्वैत परमेश्वर को महिमा से रहित हैं (रोमियों ३:१०-१२ –२३)। तथापि प्रभु यीशु खृस्त की प्रतिज्ञा स्पष्ट है, मैं मार्ग, जीवन और सच्चाई हूँ। कोई भी व्यक्ति जीवन, शान्ति, आनन्द, अजर, अमर और अधिकार के लिये ईश्वर के पास जा सकता है (यूहन्ना १४:६)।

इस २०वीं शतब्दी में यीशु जो मानव जातियों के लिये महिमा की आशा है (कुलुस्सियों १:२७)। अनेक लोग मसीही होने पर भी अनेक दुःख, वेदना, भूखमरी और निराशा के कारण भ्रमों के शिकार हो रहे हैं। उनमें अपस्वार्थी, लोभी, डींगमार, अभिमानी, निन्दक, माता-पिता की आज्ञा टलनेवाले, कृतघ्न अपवित्र मयारहित, क्षमारहित, भले के बैरी। विश्वासघाती; ढीठ, घमण्डी और परमेश्वर के नहीं वरण सुख विलास ही के चाहने वाले हैं। वे भक्ति के भेष तो पकड़ते परन्तु जीवन, शान्ति और शक्ति को नहीं मानते हैं (२ तीमोथियुस ३:१-६)। जिसका परिणाम शरीर और देश के विनाश के साथ आत्मा की भी हनन होती है।

खीस्त ने सलीब पर अपना रक्त बहाकर दलित, पीड़ित और असहाय मानव के बीच शान्ति स्थापित की (कुलुस्सियों १:२०+२१)। कोई भी व्यक्ति खीस्तावतार में अपना विश्वास रखकर शान्ति और आध्यात्मिक जीवन का निर्माण कर सकता है। पुनर्जीवित, स्वर्गीयराज्य स्थापित और स्वर्गरोहित खीस्त में यदि मनुष्य को जीवित एवं शान्ति पूर्वक रहना है तो विश्वास करना ही पड़ेगा, और विश्वास के द्वारा धर्मीजन जीवित रहेगा (हबक्कूक २:४, रोमियों १:१७)। अनुभवी ईश्वर के साथ शान्ति

Gossner Mission

स्थापित करते हैं जिसका माध्यम प्रभु यीशु ख्रीस्त है रोमियों (५:१)। मनुष्य आंतरिक शांति और शक्ति की खोज में हैं। भौतिक प्रगति से किसी मनुष्य को शान्ति नहीं मिलती है। विश्वास, जीवन, सच्चाई, पवित्र और स्थायी शान्ति राष्ट्रीय स्तर पर असम्भव है (यिर्मयाह ८:११)। विश्व स्तर पर भी शान्ति तब तक असम्भव है जब तक मनुष्य अपने हृदय में ईश्वर की शान्ति का अनुभव नहीं कर लेता है।

ईश्वर की महिमा के लिये अपनी शान्ति जो प्रभु यीशु ख्रीस्त में प्रगट है, किसी धार्मिक अथवा राजनैतिक संस्था को नहीं दी है, जो इस पृथ्वी पर शान्ति के लिये मनुष्य का ईश्वर से समझौता कर सकते हैं। क्योंकि जो शरीर से जन्म लेता है, वह आंतरिक शान्ति एवं पवित्रात्मा के विषय अनुभव नहीं कर सकता है। मानव जातियों में विश्वास, आशा और प्रेम का अभाव है। जिसका परिणाम आत्मिक क्षेत्र में सब से भयंकर "जीवन और शान्ति" के लिये मीरास के अपेक्षा परस्पर संघर्ष हो रही है। जीवन यात्रा में भय, घृणा और कड़वाहट मिल रही है। दुष्ट की शक्तियां प्रत्येक मनुष्य के अन्दर उसकाती, कि केवल अपने लिये जीवित रहे यहां तक कि "जीवन और शान्ति" के लिये परमेश्वर को हृदय में स्थान नहीं देते हैं।

पवित्रशास्त्र में समस्त मानव जातियों के लिये सुरक्षा, अनन्त जीवन और शान्ति के विषय में प्रकाशित की गयी है। जीवन संग्राम, सुरक्षित यात्रा और अच्छा स्वास्थ्य का आश्वासन दिया गया है। परमेश्वर को जानने का मार्ग प्रगट किया गया है। दृश्य अथवा अदृश्य सब कुछ उसके हाथों में है।

सांसारिक ज्ञान, बुद्धि और सामर्थ द्वारा मानव जाति की किसी भी समस्या का हल नहीं हो सकता, न तो "जीवन और शान्ति" मिल सकती है। विनाश के लिये वह दिन अत्याधिक शक्तिशाली न केवल इस पृथ्वी पर वरन आकाश मण्डल में भी प्रकम्पित के लिये निकट है। मानव प्रतिद्वन्द्वी विचार धाराओं में पड़े हैं। जिसके लिये जगत में क्लेश होता है परन्तु "जीवन और शान्ति" का अधिकारी प्रभु यीशु ख्रीस्त ने अपने प्रेम रखने और आज्ञा मानने वालों से कहा है, तुम्हें शान्ति मिले (यूहन्ना १४.२७; २०:१९)।

धन्यवाद आप का ग्राहक चन्दा [३१वीं दिसम्बर, ७४ तक] मिला।

1	Cat. Julius Kongari, Tangarmunda	
2	Mr. Abhiram Soy, Jalangbira	
3	,, N Toppo, Gua	
4	,, Bisram Kujur, Chaibasa	
5	,, Adam Kujur Birmitrapur (Kaplas)	
6	,, Asaph Topno, Kendughati	
7	,, Anukaran Aind, Chiria	
8	,, Arun Tayade, Shaharpura	
9	,, P Kerketta, Ranchi-Gram	
10	,, Jiwan Topno, 1st Bihar Regit.	
11	,, Nirdosh Kujur, Garhara	
12	,, L M Sandil, Burda	
13	,, C. H. Guria, Barsua	
14	,, Christochit Bodra, Bisrampur	
15	,, Ch. M. Prabhudayal Topno, Bihar Bn. NCC	
16	,, Christosukh Bhengra, Kolomdega	
17	,, Benjamin Lugun, Birmitrapur for 8 Members	
18	,, Komal Minz, Baghbera	
19	,, Mansidh Bading, Torpa	
20	,, Matias Dang Tutikel	
21	,, D. Purti, Rourkela	
22	Rev. N. Kullu, Sundargarh	
23	Mr. Jusaph Hasda, Katumus	
24	,, B. J. Areya, Duania-Basti	
25	,, Abraham Guria, Ghoraghas	
26	Mrs. M. Hemrom, Purnapani	
27	Mr. A M. Guria, Manoharpur	
28	,, Nirmal Back, Parodih	
29	Mrs. S. Purty, Jaltanda	
30	Mr. N. Khes, Rato-Birkera	
31	,, K. A Reian Topno, Andamans	
22	,, Lolas Tirkey, Mathura T. E.	
33	,, Pyara Kuluu, Andamans	
34	,, Junas Ekka, Gainjur	
35	,, C. D. Topno, Kitadih/Jamshedpur	
36	,, J. K. Aind, Bokaro	
37	,, Christopher Bodra, Lanjiberna	
38	,, Egnes Minz, Golidih	
39	Rev. Obed Toppo, Ambikapur for 66 members	
40	,, N. Bhuinya Khunti-Kadma	
41	Mr. Lucas Dangwar, Loyongkel-Dumartoli	
42	,, Anandmasih Topno Manibarpur	
43	Rev. P. Topno, Chaibasa	
44	Mr. Walter Khalkho, Bokaro	
45	,, Suleman Kerketta, Sonari	
46	Cat. Y. Topno, Kereya	
47	Shri Santosh Barla, Banspani-Kyonjhar	
48	Shri Nahemiah Barla, Sukurhutu-Ranchi.	

रजिस्टर्ड नं. आर. एन. सी. ४
वर्ष—६५ रांची, फरवरी '६७५, सं. नं.—२

Edited and published by Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G.E.L. Church and Printed at G. E. L. Church Press, Main Road, Ranchi / Bihar.

Gossner Mission

भजनभु

रजिस्टर्ड न· आर· एन·सी.४

वार्षिक मूल्य ५ रु०

EINGEGANGEN
- 5. MAI 1975
Erledigt .....

वर्ष — ६५ रांची, फरवरी १९७५ संख्या न० —२

हे यात्री वह तेरे पांव को टलने न देवे वह जो
तेरा रक्षक है सो कभी न ऊंघे
भ० सं० १२१:३

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

Editor & Publisher

Pramukh Adhyaksh,

Associate Editor

Rev. C. S. R. Topno

Editorial Committee

Rev. M. Tete.

Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय	—	३
उपदेश की तैयारी रेभ टेटे	—	४
पृथ्वी का सारा अधिकार	—	५
कलीसिया समाचार	—	७
कलीसियाई समाचार	—	८
समाचार देश-विदेश	—	९
१५ वर्ष के बाद अब उपासना	—	१०
मसीह योशु सेवक एवं उसकी सेवा	—	११
लंगड़ा मुण्डा का परिवर्तन	—	१२
ढलती जिन्दगी	—	१८
जीवन और शान्ति	—	१९
धन्यवाद आप का ग्राहक चन्दा मिला	—	२०

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणतः १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य पांच रूपये हैं।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें ।

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये पते पर ही भेजें। एसोसिऐट एडीटर, घरबन्धु; जी० ई० एल० चर्च [के० एस० एस० ऑफिस], राँची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता० तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इसमें बांयी ओर 1½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेजें

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रखनी चाहिये, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगा।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालू की जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १०-ता० के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवतः ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छपे जाते हैं; ग्राहक चन्दा के बाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्ता के पास पत्र लिख, सम्भवत : डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित कुछ लिखा ल ।

Gossner Mission

सम्पादकीय

मसीह यीशु के जन्म काल से ही दीखता है कि उसने कितना त्याग किया है, वह निजी लाभ या महिमा के लिये नहीं, परन्तु दूसरों के लिये ही ऐसा किया कि उसके द्वारा परमेश्वर पिता की महिमा होवे, यह त्याग उस के पूरे जीवन में और उसके सारे कार्य में दीखता है, यंह इस माह के पथ प्रदर्शक पद से भी साफ प्रकट होता है (गल.३:१३)· क्रिस्त "हमारे लिये" न केवल त्याग करता है, पर वह श्रापित भी बन जाता है और हमारी श्रापित अवस्था से हमें छुड़ाने का उपाय करता है!

ईश्वर क्यों मनुष्य हुआ ? यह प्रश्न मसीह के जन्मोद्देश्य की ओर संकेत करता है और मनुष्य अपनी बुद्धि और समझानुसार विभिन्न प्रकार का उत्तर दे सकता है। उपरोक्त पथ प्रदर्शक बतलाया जाता है कि ईश्वर यीशु में क्यों मनुष्य हुआ. इसी माह में महोपवास काल आरम्भ होता है। नाच-गान, जलसा, विशेष खान पान आदि बन्द कर दिये जाते हैं- यह हमारी गोस्सनर कलीसिया की मानो प्रथा हो गयी है! पर ऐसा लगता है कि बहुत कम लोग हैं जो महोपवास काल की ऐसी प्रथा से सहमत हैं और इसको उचित समझते हैं, कुछ तो हमारी प्रथा को" असामाजिक बाधा मानते हैं ! ऐसा हो भी सकता है, जब मसीह के आने श्रापित होने ही को न समझते हैं उनके लिये तो प्रथा को स्वीकार करना अपने को धोखा देना है। अनेक लोग हैं जो महोपवास काल के महत्व को समझने की शक्ति रखने की बात कहते हैं पर ऐसों के जीवन से दीखता है यह भी धोखा है ! ऐसी महंगाई और भुखमरी के समय तो आदमी को उपवास विवश होकर करना पड़ता है· पर ऐसे समय में भी उस बड़े महोपवास को समझ नहीं सकते हैं जो मसीह ने किया; महोपवास त्याग और तैयारो का चिन्ह है जिससे दूसरों की भी कुछ सहायता व „सेवा पहुँच जाय, मसीह ने तो अपने पूर्ण जीवन में कर दिखाया अपनी भरपूरी में भी वह भूखा रहा — भूखा केवल नहीं वह स्रापित भी हुआ ताकि स्रापितों को छुड़ाय,

हमारे त्याग की सफलता की नाप अपने ही जीवन से नहीं पर उससे दूसरे को क्या मिलता है इसी में दीखता है, अगर हमारे त्याग में अपनी ही प्रशंसा या लाभ केवल है तो सम्भवतः वह त्याग छीछला ही है! अतः इन दिनों हम मसीह के महान त्याग के दर्पण में अपने को जांचना आवश्यक है !

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

मार्टिन टेटे

एस्तोमिहो (मेरे लिये हो)

मार्क १०:३५-४५

मार्क ९:३५ की शिक्षा शिष्यों के हृदय में नहीं बैठी है। स्वर्गीय महिमा उनके विचार में राजकीय महिमा है। परन्तु यीशु प्रेम से समझाता है।

"स्वर्गीय महिमा का मार्ग"

क, यीशु का कटोरा पीना। कटोरा का अर्थ—दुःख संकट, क्रूस इत्यादि (यशायाह ५१:१७; यिर्मयाह ४९:१२)।

ख, यीशु का बपतिस्मा लेना - बपतिस्मा का अर्थ दुःख का बाढ़। (भजन ४२:७;६९:२; लूक १२:५०) यीशु के समान मृत्यु के मार्ग से स्वर्ग पहुंचना है।

ग, यीशु के कारण सब का दास बनना—दास में दीनताई है और दीनताई में सेवकाई सफल है। यीशु आप ही इस विषय में आदर्श है। महिमा का मार्ग (यीशु आप ही है)। यीशु के द्वारा ही विश्वासी स्वर्गीय महिमा में पहुँचता है।

सेक्सागेसिमे (६०वां दिन)

यूहन्ना ११:१५;२७

यीशु का लाजर को जिलाना परमेश्वर की महिमा और प्रेम को प्रगट करना है परमेश्वर का प्रेम मनुष्यों के बीच व्यावहारिक रूप में प्रगट है। यीशु आप ही अपने को जीवन और पुनरूत्थान प्रकट करता है।

विषय—यीशु जीवन और पुनरूत्थान दोनों है।

क, "यीशु जीवन है" :—जहाँ जीवन है वहाँ मृत्यु नहीं है (२१ + ३२) जहाँ यीशु है वहाँ मृत्यु नहीं। वह जीवन का प्रभु है। (यूहन्ना १:४; १०:१०; २ तिमोथी १:१०) इत्यादि और मृत्यु पर राज्य करता है।

ख, यीशु पुनरूत्थान है :—(२५) यीशु सब लोगों को जिला उठावेगा। लाजर को जिलाना इस बात की ओर संकेत करता है कि यीशु ही लोगों को उठावेगा। जो उस पर विश्वास करता है वह पुनरूत्थान का भागी हो गया है। (यूहन्ना ११:२६ ;८:५२) वह कभी नहीं मरेगा। अन्तिम दिन में उसका देह पुनरूत्थान का भागी होगा (यूहन्ना ५:२८; ६:४०; क्रिया २४:१५ १ थिस्लोनी ४:१६)।

क्या आप का विश्वास इतना स्थिर है कि आप पुनरूत्थान की आशा में हैं और कह सकते हैं कि "हे मृत्यु तेरा डंक कहाँ ?"

इनवोकावित

(उसने मुझे पुकारा)

मत्ती १६:२१-२६

यीशु का यरूशलेम जाना क्रूस के रास्ते का अन्त करना और हमारे त्राण के उपाय को पूरा करना है। क्रूस के मार्ग से वह मसीही जीवन का सारांश बतलाता है। और मसीह का अर्थ बतलाता है।

क, मसीह का अर्थ – अभिषिक्त जन

१ वह दुःख उठाने के लिये अभिषिक्त किया गया है—(२१)
२ वह त्यागे जाने के लिये अभिषेक किया गया है।
३ वह मरने के लिये अभिषेक किया गया है।
४ वह जी उठेगा—धर्म्मशास्त्र की बात पूरी होगी।

ख, मसीह का अर्थ—मसीह का, के, की, के लिए इत्यादि।

१ अपने आप का इन्कार —(२४) हृदय का अहम (घमण्ड), शरीर की सम्पत्ति, अपनी समझ, दुनियादारी मान, आशा, नकारना और मसीह का होना। यही तो क्रूस उठाना है।
२ दुनिया का वैरी हो जाना और मसीह का प्रेमी हो जाना।
३ विश्वास में अन्धा हो जाना और यीशु के पीछे हो लेना—यह विशेष बात है। जो मसीह का नहीं वह शैतान है। उसके हृदय में क्रूस का मसीह नहीं परन्तु दुनिया का मसीह है। वह मसीह का नहीं परन्तु शैतान का है। आप किसके हैं ?

रेमिनेसजेरे

(स्मरण कर)

लूक १०:१७-२०

यीशु सत्तर जनों को चुनता है और दो-दो करके अपने आगे नगरों में भेजता है। १-१६ पद में उसने उत्तरदायित्व सौंप दिया। १७वें पद में उन्होंने अपने कार्य्य का विवरण दिया है। याशु ने १८-२० पद में उनके विवरण पर भाषण दिया है।

Gossner Mission

यीशु के भाषण का मूल –"देखो"।

क, देखो शैतान बिजली की नई गिरा। मेरे नाम से वह तुम्हारे वश में है। (१७)। मेरे वचन से शैतान गिराया गया है। शैतान का काम समाप्त है। मेरा कार्य्य सफ़ल है।

ख, देखो मैं ने तुम्हें अधिकार दिया है (१९)। इसलिए शत्रु वश में है। तुम्हारी हानि नहीं होगी।

ग, देखो तुम्हारा नाम स्वर्ग में लिखा गया ह (२०) तुम स्वर्ग के हो। स्वर्ग तुम्हारा है। परमेश्वर और उसका सिंहासन भी तुम्हारा है।

वचन का भेद और सामर्थ प्रगट है। क्या आप के हृदय में वचन का भेद और सामर्थ है ?

पृथ्वी का सारा अधिकार

उत्पति १:२८

पहले-पहल जब मैं एक "हॉली बाइबल" खरीदा, तो एक दिन समय पाकर बड़े ही ध्यान पूर्वक पढ़ने लगा। पढ़ते-पढ़ते जब मनुष्य की उत्पति और ईश्वर की ओर से उसको दिये गये सारे अधिकार को पढ़ा, तो खुशी और आनन्द के मारे मैं इतना फुल गया, इतना फुल गया, जैसे बच्चों के खिलौने बेलून की तरह फुल गया। ओह! इतना महान दयालु ईश्वर! जिसने मुझे न केवल पृथ्वी का सारा अधिकार दिया बल्कि आकाश के पंछी और समुद्र के अथाह गहराई में विचरने वाले छोटी-बड़ी मछलियाँ भी मेरे अधिकार में हैं। मेरे सामने जंगल के शेर-भालूओं की क्या बिसात, वे सब मेरी आज्ञा आँख-कान मुंद कर मानेंगे। क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें मेरे अधिकार में कर दिया है। चूंकि मैं भी तो उसी ईश्वर का बनाया हुआ मनुष्य हूँ।

इन्हीं सब अलौकिक आनन्द और खुशी में चूर मेरा जीवन भी समय की गति के अनुसार बीत रहा था। मुझे यह भी पता न रहा कि कब मेरे जवानी के दिन चिड़िया की नई फुर्र्र हो गयी, और अब मैं उन खूंसट बूढ़ों की कतार में ढकेल दिया गया जिनका दोनों पैर लरबस ही विधि के बिधान अनुसार कब्र की ओर अग्रसर होते हैं। मनुष्य को तब नींद आती है, जब उसके तन-मन में भरपूर शाँति हो। मुझे भी अपार शांति की अनुभव हुई, क्योंकि इतना सारा अधिकार पा कर कौन होगा जो ऐसे चैन और आनन्द के समय फिजूल जागता रहे और थोड़ी देर आराम की नींद न सोए? मैं भी दुनियां के जंजाल से अलग-थलग अपने जीवन रुपी चादर को खूब फैलाकर चैन की नींद सो रहा।

चाहे सोने वाला कोई क्यों न हो, एक दिन उसको देर या सवेर जागना ही होगा, यह नियति की नीति है। जो मनुष्य सोकर नही जागता या उठता, वह या तो मर चुका होता है या फिर उसको जिन्दा लाश ही कहा जायगा। मुझे शायद जागना था और एक रोज आधी रात के समय.....हां, वह भयानक रात जो मेरे सारे जीवन पर छाई हुई थी। बाहर अन्धकार के सन्नाटे में कोई चिल्ला रहा था। उस चिल्लाहट में किसी की करूण-क्रंदन दर्द भरी कहानी छिपी हुई थी। आवाज कह रही थी "पिता जी, मैंने स्वर्ग के विरूद्ध और आप के विरूद्ध पाप किया है। अब मैं आपके पुत्र कहलाने के योग्य भी नही हूँ। आप मुझे एक नौकर के समान अपने यहां शरण दीजिये, ताकि मैं अपना पेट भर सकूँ"। इन शब्दों को सुन कर मुझे समझते देर न लगी। एक मसीही होने के नाते मैं एकदम अक-चका गया। सोचने लगा इस रॉकेट और टेलीविजन के युग में हजारों साल पहले के उस धनवान का बेइमान छुटका पुत्र कहाँ से आ टपका ? जिसने अपने धनवान पिता के अपार धन-सम्पति में से अपना भाग (हिस्सा) लेकर बेश्याओं और जुआखोरी के पीछे बर्बाद कर डाला-पढ़िये लूका १५:११-२४ में। मैं स्वप्न देख रहा हूं या हकीकत, कुछ समझ नहीं पा रहा था।

Gossner Mission

जो भी हो, मैं उस धनवान पिता के धोखेबाज और बेईमान पुत्र की दयनीय और घृणित चेहरे को देखने को मनसा से उठा। उस समय मेरे मन में यह विचार भी उठा कि उसको देखने के बहाने साम्हने जाकर उस बेइमान को दो-चार खरी-खोटी सुनाकर और मुंह विचका कर घृणा से जमीन पर भूक कर उसके बेइमानी का बदला तो कम से कम दे ही आऊँ। भले ही उसका बाप उसको बदला दे या न दे, उसकी मर्जी।

यही सब ताना-बाना बुनते और तय करते हुए मैं अपने गुद्-गुद्दी विस्तर से उठा और अपनी उनिन्दी आँखों को मलते हुए बाहर निकला। बाहर सड़क पर घोर अन्धकार छाया हुआ था। मैं अपने टार्च की रोशनी में देखा, उस अन्धकार में सड़क के बीच एक मानव-आकृति औंधे मुंह पड़ा हुआ कराह रहा था। मैं उसे ठीक से देखने और अपने बनाए हुए 'बदला लेने की' स्कीम को बाकायदा पूरा करने के लिये एकदम उसके साम्हने जाकर देखा। पर···उसे देखते और पहचानते ही मेरा कलेजा धक् से हो गया। उस समय की मेरी दशा के बारे आप को मैं क्या बताऊँ, आप मानें या न मानें, पर मैं सच कहता हूँ, वह बेइमान उड़ाऊपुत्र दूसरा और कोई नहीं था, वह बेइमान पुत्र तो खुद मैं ही था। हाँ, वह मेरी ही आत्मा थी, जिस आत्मा को परमेश्वर ने मेरी शरीर की रचना कर के जीवन स्वांस के रूप में फूंक दिया और पृथ्वी का सारा अधिकार भी दे दिया था। पर अब मेरा सारा अधिकार लूट गया, मैं बुरी तरह बर्बाद हो चुका था। मेरा शरीर और आत्मा उस अधिकार देने वाले ईश्वर की दृष्टि में बेइमान, दरिद्र, कंगाल और घृणित बन चुका था — पढ़िये– प्र० वा० ३:१७ में। क्योंकि मैं इस दुनिया के गफलत को नीन्द में सोकर ईश्वर के उस दिए हुए सारा अधिकार और वैभव को शैतान के हाथों में बेशर्मी के साथ बेच चुका था।

मेरी इस दर्द भरी कहानी को पढ़ने-सुनने वाले भाई-बहन मुझ से जानना चाहते होंगे, कि मैंने दुनिया के किस बाजार में अपना वह अधिकार को शैतान के हाथों में किन चीजों से बेच दिया? आइये, मैं आप को सुनाता हूँ, मेरे खातिर आप जरा अपना कलेजा थाम कर सुनिये।

हाँ तो, जब इस धरती में मुझे कुछ होश हवाश आया तो मैं सोचने लगा, कि धरम-करम के ये ठेकेदार (पाद्री-प्रचारक) लोग भाई-बहनों के बीच स्वर्ग और नरक जैसी बेतुकी बातों का बखेड़ा नाहक मचाते हैं। यह सब एकदम बकवास है, वैसे भी स्वर्ग और नरक बिन देखा घर न घाट, कौन मूर्ख वहां जाना पसन्द करेगा? मैं एकदम तय कर चुका कि इतना बड़ा संसार रूपी अदन वाटिका में, जहां अनगिनत सुख-विलास और रंग-रंगेलियां फलों से भरा हुआ है, उन सुन्दर फलों को तोड़कर न खाने में कोई बुद्धिमानी नहीं है। यही सब सोच-विचार कर मैं दुनिया के सुख-विलास और रंग-रंगेलियों की बहती गंगा में आव देखा न ताव देखा, अपना शरीर और आत्मा दोनों को आँख मुंद कर झोंक दिया। इस बहाव में मुझे कुछ आनन्द मिला, और इसी आनन्द के हिलकोरें में मैं एकदम बेसुध हो गया। बेसुधी की दशा में मैं बहता रहा, बहता रहा, और एक दिन मेरा शरीर अचानक एक चट्टान से टकरा गया। झटका लगने से मेरी आँख खुल गयीं और मैं यह देखने को कोशिश कर रहा था कि किस अभागा चट्टान से टकराया। मैं ने उस चट्टान को बड़े ध्यान से देखा। पर हाय! यह चट्टान तो मेरे अनुमान के विपरीत "दया का चट्टान" था, जिसकी दया पृथ्वी से स्वर्ग लों ऊंचा है। क्योंकि वह चट्टान मसीह था—१ कुरिन्थ १०:४। और उस चट्टान पर लिखा था "हे मेरे पुत्र! क्या तुम नहीं जानते थे कि तुम्हारा यह शरीर और आत्मा मेरा पवित्र मंदिर है? जिसमें निवास करने के लिए मैं ने बड़े प्यार से बनाया था? और तुमने उसे घृणित और गन्दा कर दिया है?" १ कुरिन्थ ३:१६। मैं उसको जवाब नहीं दे सका, क्योंकि उसकी दृष्टि में मैं गुनाहगार जो था। इसलिए कि उसके पवित्र मन्दिर को भ्रष्ट कर डाला था।

मैंने अदन वाटिका रूपी इस दुनिया के वर्जित फलों में से किस को नहीं तोड़ा और खाया? जिन फलों के विषय परमेश्वर ने सख्त मना किया था कि इन फलों को तुम न तो कभी छूना और न खाना, नहीं तो तुम निश्चय मरोगे। पर मैंने उन्हीं सब फलों को खाया, पीया और किया, अर्थात पान, बीड़ो-सिगरेट, शराब, छल-कपट, हिंसा-डाह क्रोध-बैर, व्यभिचार और न जाने कितने ही

Gossner Mission

ऐसे घृणित फलों को तोड़ता और खाता रहा, जो ईश्वर की दृष्टि में सूअरों (शैतान और उसके सन्तानों) के खाने-पीने की भूसी है। पर आज कलीशिया में मेरे ही जैसे अपने आपको मसीही कहलाने और परमेश्वर के सन्तान होने का दावा करने वाले लाखों मसीही भाई-बहन और कुछ अगुवे तक भी इन घृणित फलों को खाते-पीते और करते हैं। जो कि शैतान और उसके सन्तानों के खाने-पीने और करने की वस्तु (भूसी) है।

मेरी फूटी किस्मत की कहानी को सुनकर अब तो आप लोगों को बाकायदा यकीन कर लेना चाहिए कि मुझ पर अब दण्ड और श्राप की आज्ञा हो चुकी है। और मैं अपने इसी दण्ड और श्राप की गठुरी को सर पर लिये हुए इधर-उधर भटकता फिर रहा था, कि एक आवाज ने मुझे चौंका दिया। कोई मनुष्य पुकार-पुकार कर कह रहा था "पुनरूत्थान और जीवन मैं ही हूँ; जो कोई मुझ पर विश्वास करे, वह यदि मर भी जाय तो भी जीयेगा" यूहन्ना ११:२५। यह आवाज मुझे कुछ अजीब सी लगी, पर साथ ही मेरे हृदय में आशा की एक किरण जागी। मै पुकारने वाले को पहचानने के लिये उसकी ओर दौड़ा। पर यह क्या? यह तो वही चट्टान मसीह था। मैं आनन्द और खुशी से उछल पड़ा, पर माफ कीजिये भाई-बहन लोग, इस बार गनीमत हुई कि मैं बेलून की तरह नहीं फूला। वैसे मैं मरा नहीं था, मैं तो सिर्फ गफलत की नींद में सोया था। उस दया का चट्टान को लाखों धन्यवाद हो, जिस पर मैं टकराया और मेरी आँख खुल गयीं। इसलिए अब मैं जीवन देने वाले और सारा अधिकार देने वाले उस चट्टान मसीह यीशु के पीछे-पीछे अपने थका-मंदा पैरों से धीरे-धीरे चलने की कोशिश कर रहा हूँ। लेकिन भाई-बहिन, आप लोग क्या सोते ही रहेंगे? नहीं जागेंगे? उठिये और आँखें खोलिये, क्योंकि भोर का तारा चमकने वाला है, अर्थात यीशु ख्रीष्ट फिर दुबारा आ रहा है। हे सोने वाले जाग! और मुर्दों मेंसे उठ, तो मसीह का ज्योति तुझ पर चमकेगी—इफिसी ५:१४।

श्री जुनुल लुगुन
लंजीबेरना मंडली
राजगांगपुर पेरिश (उड़िसा)

कलीसिया समाचार

सवनाजारा

१३ दिसम्बर १९७४ को मिशन पर्व अन्य जातियों के टोली में मनाया गया जिसमें अन्य जाति याने रौतिया भाई बहन भी हाजिर थे। करीब करीब ३५० भाई बहन जमा हुए थे। इस अवसर पर विशेष अमांत्रित अतिथि डा० पौल सिंह और दक्षिणी पूर्वी अंचल अध्यक्ष एन० भूईयाँ आये थे।

इस समारोह का आरंभ पेरिस चेयरमेन पाद्री जे०एम० भूईयाँ की अगुवाई में एक सदाना गीत और छोटी प्रार्थना से हुआ। तत्पश्चात अतिथियों का संक्षिप्त परिचय दिया गया।

सर्वप्रथम डा० पौल सिंह ने खुद ही अपना पूरा परिचय दिया और ज्योति के विषय में प्रकाश डाला। उन्होंने यही बताया कि यीशु ही ज्योति है जो उसकी ज्योति में चलेगा उसे कुछ भी डर नहीं रहेगा। उन्होंने दो-तीन सदाना गीत भी सुनाया। जिससे सभी भाई बहन एवं बच्चों का हृदय आनन्द से पुलकित हो उठा। इतना ही नहीं रौतिया भाई बहन भी दिल खोल कर उनका भाषण सुनने लगे।

तत्पश्चात एन० भूईयाँ विश्वास केविषय में बताया। उन्होंने संक्षिप्त में यही बताया कि हृदय से यीशु पर

Gossner Mission

विश्वास करना चाहिए। यीशु पर विश्वास के द्वारा ही हम लोग अपने पिता ईश्वर के पास पहुंच सकते हैं। उन्होंने एक सदाना गीत गाते हुए अपना भाषण समाप्त किया।

अन्त में स्कूल के बच्चों के द्वारा अतिथियों का अन्तिम स्वागत हुआ। महिलाओं की ओर से एक हॉटल का भी प्रबंध था। इस तरह से यह समारोह अच्छी तरह मनाया गया। सवनाजारा मंडली के भाई बहनों को अजीब एवं अद्भुत आनन्द का अनुभव हुआ। अतः ईश्वर पिता को धन्यवाद होवे जिन्होंने इस समारोह को सफल बनाया।

सचिव समुएल कन्डुलना

बी० ए०

कलीसियाई समाचार

केरया रांची : कोरांजो इलाका की बड़ी मंडली के अन्तर्गत साक्षी दिवस का आयोजन किया गया था जो मिशन पर्व के उपलक्ष में किया गया था, सड़क के किनारे खुले स्थान पर ही आयोजित था, अनेकों तैयारी के बावजूद जैसी जगह है उसकी तुलना में उपस्थिति कम ही थी, पर काम अच्छा हुआ, रांची से मिशन डाइरेक्टर तथा कदमा खुंटी से अंचल अध्यक्ष भी आमंत्रित थे, कार्य क्रम अतिरिक्त स्थानीय हिन्दू भाईयों से भी भेंट मुलाकात का उपाय किया गया था।

उपरोक्त कार्य क्रम के बाद सावनाजारा में भी साक्षी दिवस ठहराया गया था, वहां पूरे दिन का कार्य क्रम था, एक बगीचे में कार्य क्रम रखा गया था, मिश्रित भीड़ था, ऐसा लगता है कि सुनने वालों के लिये विशेष अनुभव था कि इस प्रकार का जलसा लगाने से न केवल आनन्द की बात होती है, पर अपने आनन्द को दूसरों तक पहुंचाने का अवसर भी मिलता है।

रांची गुरूकुल (मद्रास) : हिन्दुस्तान के लुथेरन मसीही महिलाओं के लिये एक सम्मेलन का आयोजन था, हमारी गोस्सनर कलीसिया की महिलाएं भी वहां प्रतिनीधित्व के लिये गयी थी। वहां के सम्मेलन के लिये विशेष कर जेनेवा के महिला विभाग की प्रतिनीधि महिला पाद्री इमा जावोलाई-सेकमें मुख्य अतिथि थी, वर्तमान युग में महिलाओं की जवाब देही अधिकार एवं अवसर पर विभिन्न पहलुओं पर विचार विमर्श-हुआ, "महिलाओं को भी अभिषिक्त किया जाय" विशेष रुप से प्रतिध्वनित हुआ। आशा है कि महिला विभाग की ओर से विशेष कर वहां गयीं हुई प्रतिनीधियों की ओर से घरबन्धु के पाठकों को भी इन विषयों पर कुछ और पढ़ने को मिलेंगे।

महिला पाद्री जवोलाई-सकेमे ने गोस्सनर कलीसिया के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा भी किया, कार्य-क्रम का भार महिला संघ ही को सुपुर्द किया गया था। (शिसि)।

गुरूकुल (मद्रास) : यहां हिन्दुस्तान के मसीही युवा वर्ग के लिये प्रशिक्षण का आयोजन किया गया था, हमारी कलीसिया की ओर से भी युवा वर्ग के प्रतिनीधि वहां गये हुए थे, हमारी आशा है कि वहां से प्रशिक्षण पाये हुए नौजवान हमारी कलीसिया के युवा वर्ग के लिये विशेष कार्य कर के दिखायेंगे। गुरूकुल में ही दिसम्बर माह के अन्तिम सप्ताह में मसीही बाल शिक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन था। हर एक लुथरन कलीसिया से एक प्रतिनीधि को बुलाया गया था। हमारी कलीसिया की ओर से श्री एच्छ० समद चुने गये थे।

रांची : दिसम्बर माह के पहले सप्ताह में के० एस० एस० की बैठकी हुई थी। विशेष कर नयी नियमावली के प्रारूप पर विचार-विमर्श करना था। अनेकों दिन की बैठकी में सूक्ष्म रीति से बात चीत एवं बहस के बाद कई प्रस्ताव, सुधार एवं संस्करण के बाद के० एस० एस० ने

Gossner Mission

प्रारूप को सर्व सम्मिति से ग्रहण कर लिया है, अब वह छप कर लोगों की जानकारी के लिये अंचलों में वितरण की जायगी, और आशा की जाती है कि वह अगली १० वीं जूलाई तक में नयी चुनाव आदि के साथ लागू हो जायगी।

इसी के० एस० एस० में गुरूकुल मद्रास में आयोजित त्रिवर्षीय सम्मेलन के लिये १४ प्रतिनीधियों को चुना, यह सम्मेलन हिन्दुस्तान लुथरान मसीही संघ के लिये ९-११ जनवरी तक के लिये आयोजित रहा।

जनवरी माह में अनेक जर्मन मेहमानों के लिये कार्य क्रम भी बनाया गया। डा० एवं श्रीमती हेस्स अपनी निजी दौरा में हमारा देश आ रहे हैं, वे गोस्सनर मिशन के कुराटोरियम (सभा) के सदस्य हैं। गोस्सनर मिशन ने हमारी कलीसिया में भ्रमण कर लोगों से भेंट मुलाकात कर बात-चीत करने की अर्जी की है। पाद्रो एवं श्रीमती श्मेलटर कुराटोरियम सदस्य भी गोस्सनर मिशन एवं अपनी कलीसिया का प्रतिनीधि होकर हमारे यहां आ रहे हैं। वे नेपाल तथा भारत के अन्य भागों में भी भ्रमण करेंगे। समकालीन हो पाद्री और श्रीमती बरूता भी हमारी कलीसिया को देखने आ रहे हैं। पाद्री बरूता कुराटोरियम में डा० सिंह के सबिस्टच्चुट (एवज के) सदस्य हैं। ये मेहमान आ कर गोस्सनर कलीसिया के भाई बहनों से भंट मुलाकात कर उनके विशेष जानना चाहते हैं। इनके लिये विस्तृत कार्यक्रम बनाया गया है। फिर समाचार मिला है कि पूर्वी जर्मनी (जर्मन जनवादी) से भी दो मेहमान आयेंगे जो वहां के गोस्सनर मिशन के विशेष संगी कर्मचारी हैं, उनके लिये भी कार्यक्रम बनाया जायगा।

इसी प्रकार समाचार दिया गया है कि माइन्स शाखा के गोस्सनर मिशन की महिला पाद्री क्रिस्ता स्प्रिंगे भी जपान से लौटते वक्त हमारे यहां एक सप्ताह के लिये आयेगी। वह महिला पाद्री माइन्स में पाद्री सिमानोस्थी के साथ-साथ काम करती थी, अब तो वहां की वहो जबावदेह व्यक्ति बन गयी है। पाठकों को विदित होगा कि माइन्स में गोस्सनर विशेष कर अपने ही देश के लिये काम करता है : "शहरी एवं औद्योगी मिशन" (Urban and Industrial Mission) का काम माइन्स से किया जाता है।

समाचार देश-विदेश

जेनेवा : इथियोपिया के राजनैतिक उत्थल-पुत्थल वहां के मसीहियों के जीवन में भी भारी संकट आ गया है। संसार के एकलाही मसीही कैसर (सम्राट) हाईलेसेलासी पर भी आफत आयी और उन्हें अपने राज्य से हाथ धोना पड़ा। मसीही जगतीय संस्थाओं एवं संगठनों ने वहां की वर्तमान सरकार से अर्जी की है कि राजनैतिक बन्दियों से अन्याय नहीं पर उचित न्याय की जाय।

वियना : यहां कलीसिया अधिकारियों ने गर्भपात की समस्या पर विशेष विचार विमर्श किया। आधुनिक युग में विकसित एवं विकासशील देशों के लिये यहां विशेष समस्या बन गयी, परन्तु मसीहियों के लिये भी यहां "मसीही-नैतिकता" क्षेत्र में कम समस्या नहीं है।

हजारीबाघ : यहां बिहार क्रिश्चयन शिक्षक संघ के लिये एक सम्मेलन का आयोजन किया गया था, वर्तमान बदलते युग में शिक्षा प्रणाली एवं पद्धति की विशेषता पर विशेष विचार विमर्श हुआ, कि ऐसे युग में मसीही शिक्षा संस्थान किस तरह अपना उचित पाठ अदा कर सकते हैं।

नयी दिल्ली : हमारे देश के नेशनल क्रिश्चियन कौंसिल ने देश के पूर्वी क्षेत्र में मसीहियों पर जो शोषण और दवाव की नीति अपनायी है, उसका घोर विरोध किया है और प्रधान मंत्री तथा गृह मंत्री के सामने समस्या को पेश किया है, कि इस ओर जल्द कदम उठाया जाय और दमन नीति खत्म की जाय।

Gossner Mission

१५ वर्ष के बाद अब उपासना प्रचारक घर से नया गिर्जा घर में-सरगुजा ओकरा मण्डली में

१५ वर्षों से ओकरा मण्डली में प्रभु की उपासना प्रचारक घर में होती थी। उस समय इस मण्डली में दो मसीही परिवार और मसीही जन संख्या सिर्फ ५ थी। प्रचारक का घर १० हाथ लम्बा और ६ हाथ चौड़ा है। ५ व्यक्तियों के लिए उपासना के वास्ते यह घर काफी बड़ा था। १० वर्ष के बाद आज इस मण्डली में ११ मसीही परिवार और कुल ६५ व्यक्ति हैं। परिवार और जन संख्या में परिवर्तन आयी। लेकिन उपासना स्थान में कोई परिवर्तन नहीं आयी थी। जहाँ पहले ५ व्यक्ति प्रभु की आराधना करते थे वहीं ६५ व्यक्ति आराधना करना चाहते और करते थे। सिर्फ ६५ व्यक्ति ही नहीं बल्कि प्रचारक का सामान, चुल्हा, मुर्गियाँ, बकरियाँ और कुत्ता भी उसमें सम्मिलित थे। इस तरह एक कोने में चुल्हा, दूसरे कोने में बकरियाँ, तीसरे में मुर्गियाँ और चौथे कोने में कुत्ता रहता था। शेष छोटी सी बीच भाग में प्रभु के उपासक-उपासना करते थे। उपासना के लिए कितनी दयनीय दशा थी। यहाँ के भाई-बहन हमेशा चिंतित थे कि कब गिर्जा घर होगा। सब के मन में एक प्रबल इच्छा थी कि उपासना के लिए उपासनालय हो।

५ मई १९७४ को सब ने फैसला किया कि हम सब मिलकर गिर्जा घर बनाएँगे। फैसला होने के तुरन्त बाद उसी दिन गिर्जा घर का नींव डाला गया। ६ मई से काम चालू हो गया। मण्डली के भाई-बहनों की आर्थिक स्थिति ऐसी है कि जब तक मजदूरी नहीं जाएँगे तब तक चुल्हा जलना भी बंद। सब के सब मजदूरी जाने लगे समस्या आयी ऐसी हालत में गिर्जा घर कैसे तैयार होगा। मण्डली में कोई ऐसी रकम नहीं है जिससे मजदूरी लगा सकें। ऐसी डावाडोल हालत में मण्डली के जवान-युवतियों ने अपने अपार कठिन भार लिया। उन्होंने फैसला किया कि हम मुर्गा बांक देने के पहले दिवाल देना शुरु करेंगे और साढ़े ६ बजे तक में समाप्त करके सात बजे से मजदूरी जाएँगे। इस तरह से यहाँ के जवान-युवतियों ने सवेरे ४ से ६.३० के बीच काम करके १९ मई तक में दीवाल देने का काम पूरा किया। दीवाल के बाद लकड़ी की समस्या आयी। लेकिन प्रत्येक परिवार से ५-५ कण्डी देने का निश्चय किया। इस तरह थोड़े दिन में ५५ कण्डी जमा हो गयी। हाउस मास्टर सामुएल एक्का अपने तरफ से ४५ कण्डी और मिशन, चिरावन बाता सहायतार्थ दिया। ओकरा मंण्डली श्री एस-एक्का और सरगुजा सुपरिंटेन्डेन्ट का धन्यवादी है।

लकड़ी के बाद खपरे की समस्या आयी। ४ दिन लगातार छोटे बड़े सब अपना निजि काम छोड़ कर खपरा बनाने में जुट गए। ४ दिन में आठ हजार खपरा बन कर तैयार हो गया। २ दिन छत बनाने और छारने में लग गए।

इस तरह अनेकों कठिनाईयों का सामना करते हुए कठिन परिश्रम और लगन के बाद १६ जून तक में २३ हाथ लम्बा ११ हाथ चौड़ा गिर्जा घर तैयार किये। २४ जून को बड़ी धूम धाम के साथ संस्कार किया गया। इस तरह १५ वर्ष के बाद अब प्रभु की उपासना प्रचारक घर से नया गिर्जा घर में होने लगा है। ११ परिवार की ओकरा मण्डली अपने परिश्रम और लग्न से एक शानदार गिर्जा डेढ़ माह में तैयार करके सरगुजा मिशन फिल्ड के ११ परिवार से ऊपर वाली मण्डली जहाँ अभी तक गिरजा घर नहीं है एक नमूना पेश करती है एवं अपना अनुभव व्यक्त करती है कि किसी कार्य को करने के लिए एकता, प्रार्थना, परिश्रम और लग्न की आवश्यकता है।

कन्डीदात-आनन्द मसीह मिंज

—:o:—

Gossner Mission

मसीह यीशु सेवक एवं उसकी सेवा

रेभ. डा. सी. के. पॉल सिंह

इस साल के प्रथम उपदेश वचन में बतलाया गया है कि यीशु का अभिषेक क्यों होता है, क्यों वह मसीह नाम और यीशु नाम पाता है, वह न केवल उनको जो परमेश्वर से दूर और एक दूसरे से दूर रहते हैं परमेश्वर से और एक दूसरे से मिलाता है पर वह उनकी अपनी परिस्थिति में इस तरह सहायता एवं सेवा करता है कि वे मनुष्य के निम्न आवश्यकता को पा सकें ! या यों कहा जाय कि उनको जो मिलना चाहिए वह मिल जाय : कंगाल को धन, अंधे को दृष्टि और शोषित को छुटकारा ! यीशु मसीह ने ऐसा काम अपनी शिक्षा, प्रचार एवं काम के द्वारा करके दिखा भी दिया। इस निमित्त उसको दुःख, निन्दा एवं ठट्ठा ही क्यों न सहना पड़ा। उसके वैरी व विपक्षी तो उसकी ऐसी सेवा के कारण उसको समाज बहिस्कृत भी करने के लिये तुल गये थे।

यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र होकर स्वर्गीय विभव छोड़ कर सेवक या दास बन जाता है। ईश्वर के जन का दास होने की बात यशायाह नब्री अपनी पुस्तक में चर्चा कर चुका है। उसके दु.ख उठाने की भी बात कही गयी है। सेवक होना या दास होना उसके आज्ञाकारी होने से सम्बन्धित है। वह उसके कारण औरों से तुछ, नीच एवं अभाग्यपूर्ण भी समझा जाता है। उसको अनेक सुख, सुविधा एवं जीवन साधनों से भी वंचित रहना पड़ता है। यीशु मसीह ने हमारे लिये और जगत के सारे लोगों के लिये सेवा करने इन सभी बातों को करके दिखा दिया। इसी सेवा के आधार पर कितनों ने मसीह यीशु के कार्य को मानवीकरण का नाम दिया है, कि उसके काम से मनुष्य अपनी यथा स्थिति में आ जाता है। जैसे मनुष्य को होना चाहिए वैसा कर दिया जाता। लेकिन इसको सिर्फ मनुष्य की अपनी परिस्थिति के आधार तक सोचना अधूरा होगा। मनुष्य अपनी स्थिति में आ जाता है कि उसके द्वारा वह परमेश्वर से और मनुष्यों से जिस सम्बन्ध में रहना चाहिए उस सम्बन्ध में आ जाता है। इसका मतलब है कि मनुष्य का न केवल सामाजिक परिस्थिति में मानवीकरण को प्रक्रिया में है परन्तु आत्मिक दृष्टिकोण की प्रक्रिया में भी है। एक के बदले में दूसरा केवल समझना और करना गलत और अधूरा है।

इतिहास में कलोसिया ने याने मसीहियों ने गलतियां की है, कभी तो यीशु मसीह की सेवा को सिर्फ आत्मिक बातों के लिये समझा और इसी धुन में काम भी किया। पर कभी इस ओर से पूरा ध्यान सामाजिक बातो पर विशेष जोर दिया। परन्तु यीशु मसीह ने दोनो को साथ में लिया, उसने आत्मिक और सामाजिक बातों की शिक्षा दी और उसी के आधार काम भी किया-सेवक बना और बहुतों की छुड़ाती के लिये अपना प्राण भी दिया। हमारी गोस्सनर कलीसिया ने वचन प्रचार पर विशेष जोर दिया है और आज भी इस ओर विशेष ध्यान है। सामाजिक उत्थान और सुधार की दिशा में सच्च कहा जाय तो शिक्षा विभाग ही से कुछ सेवा की गयी है। यह विभाग भी बहु-उद्देश्य दृष्टिकोण से सम्भव नहीं कराया गया। शिक्षा के द्वारा लोगों को विभिन्न पेशा की ओर अगुआई नहीं दी जा सकी। कृषि और तकनीकी क्षेत्र में तो करीब-करीब मात ही खा गये। परन्तु इनके अतिरिक्त और भी पहलु हैं जिससे लोगों को उनके मानवीकरण में सहायता मिल सके। रोगियों, गरीबों अंग-प्रत्यंग के कंमजोर लोगों के लिये कोई खास ध्यान नहीं दिया गया। आज भी हमारी कलीसिया के अन्तर्गत अस्पताल एवं दवाखाना हैं; कुछ ही क्षेत्र हैं और कुछ ही लोग हैं जहां और जिनके द्वारा इस काम विशेष सेवा पहुंचायी गयी है। कुछ दवाखाना तो सेवकों की कमी के कारण एवं सेवा में रूचि नहीं रखने के कारण बन्द कर दिये गये, वहां रुपये की कमी नहीं रही, पर दृष्टि कोण और अभिरूचि की कमी रही। अब सम्भवत: कुछ ही दिनों में उन दवाखानों में भी समस्या आयेगी जहां अभी अच्छी सेवा दी जा रही है। वहां के कार्य कर्त्ताओं, सेवक-सेविकाओं के न रहने से ऐसे दवा-खानों की क्या स्थिति होगी उसको तो वही समझते हैं जो वहां अभी काम कर रहे हैं। चूंकि न भाई बहनों ने और

Gossner Mission

न अगुवे व आधिकारियों ने सेवा के इस पहलु पर विशेष ध्यान दिया है और अभिरूचि ही दिखायी है, ऐसा दीखता है कि मसोह यीशु की सेवा को जिसको उसने लोगों के बीच में किया, हम जारी नहीं रख सकते हैं।

आज यीशु मसोह के आधार-कार्य को यदि हम मानवीकरण का नाम देते हैं तो हमें इस ओर भी विशेष ध्यान देना है। ऐसे संस्थानों को, जहां मानवीकरण की प्रक्रिया का अध्ययन और कार्यान्वियन का उपाय हो सके, स्थापना करनी चाहिए और जहां ऐसे संस्थान है उनको हर तरह से सम्भालने का उपाय भी करना चाहिए।

अभी तत्काल आवश्यकता है कि घरबन्धु के पाठक हमारे दवाखानों को सम्भालने के लिये एक महिला डाक्टर खोजने में मदद पहुंचावें – उस महिला डाक्टर को टकरमा दवा खाना में काम करते हुए खुटीटोली और सम्भवत: पुरना पानी दवा खाना भी सम्भालना होगा। महिला डाक्टर को योग्यता और अनुभव के आधार वेतन दिया जायगा। विशेष गुण होना चाहिए कि वह सेवा भावना के साथ काम कर सके पेशा और नौकरी भावना नहीं होनी चाहिए। अत: आप सूचना फैलायं।

टकरमा दवा खाना के लिये एक महिला डाक्टर की आवश्यकता है।

सम्पर्क करें मिस्स इल्जे मार्टिन, टकरमा दवा खाना, पी. ओ. लसिया, जिला रांची।

लंगड़ा मुण्डा का परिवर्त्तन

क्या आप ने कभी लंगड़ा मुण्डा के विषय सुना है कि ये कौन थे ? इनका परिवर्तन के पश्चात क्या क्या घटनाएं हुई मालूम है ? मैं इनके विषय आप को कुछ बताना चाहता हूं और आशा करता हूँ कि उनके जीवन से आप उत्साहित होकर कुछ आत्मिक लाभ प्राप्त करेंगे।

लंगड़ा मुण्डा बमनी गांव के एक गृहस्थ थे। इनके पुरखे बहुत धनी थे पर आप एक गरीब किसान हो गये थे जिसकी चर्चा आप को आगे बतायी जायगी। ये आदिवासी देवों के पूजक थे। इनसे अधिक इनकी धर्म पत्नि अपने धर्म में अधिक लौलीन थी तथा अपने धर्म की रीति दस्तूरों को बड़ा भक्ति के साथ मानती थी।

बमनी गांव में एक रौतिया जमींनदार थे। ये बहुत ही कठोर एवं निर्दयी थे। ये बल पूर्वक, बेईमानी से मुण्डा लोगों की अच्छी-अच्छी दोन एवं टांड़, रैयती हो अथवा भुईंहरी, सब को हड़प लेते थे। उन दिनों आदिवासियों की हालत बहुत ही सोचनीय थी। उनसे बेगारी लिया जाता था तथा उनके साथ पशुओं की तरह व्यवहार किया जाता था। लंगड़ा मुण्डा भी जमीनदारों की ऐसी चपचपी से बंचित नहीं थे। इनके अच्छे-से-अच्छे खेत तथा अच्छी से अच्छी दोन जमीनदारों के हाथ पड़े। बेचारा गरीब हो गया। वह बराबर चिन्ता सागर में डूबा रहता था। वह जमींदारों के पल्ले से छुटकारे की इच्छा रखता था, पर उसको कहीं से छुटकारे की आशा ही नहीं थी। खेतों के जमीनदारों द्वारा छीन लिये जाने पर, उसके बचे हुए खेतों में इतना अन्न नहीं उपजता था जिस से उसके परिवार साल भर भोजन पा सकते। ऐसी हालत में लंगड़ा मुण्डा अपनी परिवार एवं नन्हें बच्चों के पालन-पोषण के लिये, अपने घर के भेड़ बकरियों, मुर्गियों तथा पशुओं को एक–एक कर बेचता गया और अन्त में उसके यहाँ केवल एक ही बैल बच गया था।

लंगड़ा मुण्डा के गांव में एक पांड़ (तांती) रहता था। यह भी उस गांव का रैयत था। जमीनदारों के दबाव से इसकी भी हालत बुरी थी। इसके घर में भी सिर्फ एक ही बैल बच गया था। लंगड़ा मुण्डा और पांड़, दोनों ने

Gossner Mission

देखा कि बचे हुए खेतों को जोतना भी है। पर उनके पास एक-एक ही बैल है, कैसे खेत जोता जायगा ? इसी बीच उन दोनों में अच्छी समझौता हुई और दोनों ने मिल कर अपने अपने एक-एक बैल ला कर एक ही हल चलाने के लिये तय किया। इस तरह वे एक दिन लंगड़ा मुण्डा का खेत जोतते थे और एक दिन पांड़ का खेत जोतते थे। इस प्रकार वे अपने खेतों पर अन्न उपजाते थे।

एक दिन की बात है कि लंगड़ा मुण्डा की जोतने की बारी थी और वह रास्ते के किनारे का एक खेत पर हल चला रहा था। रास्ते पर से बाजार के बहुत से लोग गुजर रहे थे। उस रास्ते से एक गोरा साहब भी अपनी साईकिल पर से चला जा रहा था। एका एक लंगड़ा मुण्डा का ध्यान उस साहब की ओर चला गया। साहब भी लंगड़ा मुण्डा को देख कर अपनी साइकिल से उतरा, और लंगड़ा मुण्डा के खेत के किनारे खड़ा हो गया। साहब से कुछ सुनने की आशा से लंगड़ा मुंडा ने अपने बैलों को खड़ा कर दिया और साहब के निकट आ गया। साहब ने, लंगड़ा मुंडा को प्रणाम कर उससे मुंडारी में बातें करने लगा। एक विदेशी को अपनी भाषा से बातें करते सुन कर लंगड़ा मुंडा को बहुत ही आश्चर्य हुआ। वह बहुत ही ध्यान से उस की बातें सुनने लगा। साहब को देखकर और उस के मुंह से स्पष्ट मुंडारी भाषा सुन कर बाजार जाने वाले अनेक लोगों की वहां भीड़ लग गई।

भीड़ को वहां इकट्ठे हुए पाकर साहब ने उन्हें यीशु मसीह का सुसमाचार वचन सुनाया। साहब ने उन्हें यह भी बताया कि यीशु मसीह सर्वशक्तिमान प्रभु है जो मनुष्यों को सब प्रकार के रोगों से चंगा कर सकता है। अंधों को, लंगड़ों को, बहरों को, तथा भूतग्रस्त लोगों को किस तरह चंगा किया इनका भी वर्णन उसने उन्हें कह सुनाया।

यीशु मसीह भूतों को निकाल सकता है। इस बात से लंगड़ा मुंडा बहुत प्रभावित हुआ, और जब साहेब आगे बढ़ने लगा तो उनसे आग्रह किया कि उस विषय में उसे और कुछ समझावे।

बमनी गांव के उत्तर सीमे पर एक भठा हुआ बांध था। उसका क्षेत्रफल करीब दो तीन एकड़ के लगभग था। इसके नीचले हिस्से में अब तक भी कुछ पानी जमता था, किन्तु बांध के ऊपर की ओर भर कर दोन ऐसा हो गया था। यह जमीन बंजर पड़ा हुआ, "जोला बन्दा" के नाम से स्थानीय लोगों के बीच जाना जाता था। इस बांध में भूत रहता था जिसके कारण इस जमीन के अन्दर कोई आदमी नहीं जाता था। कहते हैं कि यदि कोई गलती से उसके सीमा के अन्दर घुस जाय तो वह सहसा पेट दर्द से निश्चय मर जाता था। यह भी कहते हैं कि बिना बकरा पूजे वैसे जान का बचना असम्भव था। इसी कारण लंगड़ा मुंडा, साहब से भूत प्रेत की बातें सुन कर, अधिक दिलचस्पी लेने लगा और साहब से सीधे पूछने लगा कि क्या आप का यीशु मसीह 'जोला बांध' का भूत को निकाल सकता है? साहब ने उस से कहा, कि निश्चय यीशु मसीह भूतों को निकाल सकता है क्योंकि वह उनसे बहुत ज्यादा बलवन्त है तथा भूत प्रेत यीशु नाम सुन कर थर-थराते हैं।

लंगड़ा मुण्डा, भूतों पर बहुत विश्वास करता था और वह उन की सेवा करता था। पर आज उन से भी अधिक शक्तिमान आत्मा के विषय सुन कर वह बहुत चकित हुआ। उस के मन में साहब के ऊपर विश्वास तथा भरोसा उत्पन्न हो गया। लंगड़ा मुण्डा के खेत एवं दोन छीने गये थे। वह खेत या दोन बढ़ाना चाहता था "जोला बांध" की जमीन बहुत दिनों से पड़ती पड़ी हुई थी। यह किसी की जमीन नहीं थी। इस पर लंगड़ा मुण्डा का नजर पड़ गया था। पर उस में भूत था। वह सोचता था, कि भूत को दान दक्षिणा से मना कर जमीन को आबाद कर लें। किन्तु उस को भय भी होता था। किन्तु साहब से यीशु मसीह की बातें सुन कर वह मन ही मन बहुत प्रसन्न था। उसका मन साहब की ओर झुक गया। उसकी आशा और विश्वास मसीह पर होने लगा।

ये गोरे साहब कौन थे? ये बुड़जु में रहने वाले एक मिशनरी जर्मन साहब थे जो नोत्तरोत्त साहब के नाम से प्रसिद्ध थे इन्होंने छोटानागपुर में रह कर मुण्डारी तथा अन्य स्थानीय भाषाएँ बहुत अच्छी तरह सीख ली थी और प्रभु का वचन को बहुत दूर दूर तक प्रचार करते थे। ये बुड़जु से निकल कर बमनी गांव होते हुए कुटाम मण्डली, दियांकेल मण्डली, तोरपा, तपकारा होते मर्चा तथा खुंटी

Gossner Mission

टोली - किन्केल की ओर तक भ्रमण कर लूथेरन मण्डली के लोगों को उत्साहित करते एवं प्रभु के वचन में दृढ़ाते थे। ये जब जब बमनी की ओर से गुजरते तब तब इन्होंने लंगड़ा मुण्डा से भेंट की। लंगड़ा मुण्डा भी साहब से यह पूछने को नहीं चूकते थे कि यदि मैं यीशु के नाम से उस 'जोला बांध' पर हल चलाऊं तो उस भूत से हमारी हानि होगी या नहीं? साहब ने उससे कहा कि तेरी हानि हर्गिज न होगी प्रभु पर विश्वास करो, भूत आप ही आप भाग जायगा।

लंगड़ा मुण्डा ने यीशु मसीह के आश्चर्य कर्मों को सुन कर अपने देवताओं को उसके साथ तुलना किया। उसने यही पाया कि वे देवी देवताएं केवल मनुष्यों को दु:ख दे सकते हैं, पर प्राण नहीं बचा सकते। वे खून के प्यासे हैं, पर त्राण नहीं दे सकते। पर, यीशु मसीह पर विश्वास करने से, वह मनुष्यों को सब रोगों से चंगा करता और अनन्त जीवन दे सकता है। वह भूतों के ऊपर भी प्रभुता करता है। इसी आशा और विश्वास से लंगड़ा मुण्डा मुग्ध हो गया। वह मन में ठान लिया कि मैं मसीह को अपना प्रभु और राजा स्वीकार कर लूंगा और उसी की उपासना करूंगा।

एक दिन पाद्री नोत्तरोत्त साहब बमनी हो कर किकेल की ओर जा रहे थे। लंगड़ा मुण्डा भी उसी रास्ते के एक खेत में काम कर रहा था। पाद्री साहब को देखकर लंगड़ा मुण्डा रास्ते पर निकल पड़ा और उन से निधड़क कहा कि मैंने यीशु मसीह को अपना त्राण कर्त्ता स्वीकार कर लिया है। अब मुझे अपना झोटा काट देने और बप्तिस्मा लेने में कोई आपत्ति नहीं है। पाद्री साहब उन की ऐसी बातें सुन कर बहुत प्रसन्न हुए और वहीं पर घुटने टेक ईश्वर को धन्यवाद दिया। निकट ही पर बनई नदी था। वे दोनों नदी के तट पर गये और पाद्री नोत्तरोत्त ने लंगड़ा मुण्डा का झोटा वहीं काट कर उसे यीशु नाम से बप्तिस्मा दिया और उसका नाम "मार्टिन" रखा। पाद्री साहब ने मार्टिन को यह भी ताकिद कर दिया कि मसीह पर पूर्ण विश्वास करो, प्रार्थना में लगे रहो तो तुम्हें हर एक काम में सफलता मिलेगी।

लंगड़ा मुण्डा की पत्नी अपने पुराने धर्म में लौलीन थी। वह और किसी अन्य धर्म की बातों पर कभी मन नहीं लगाती न उन पर तनिक भी विश्वास करती। उन दिनों ईसाई धर्म के लोगों को मुंडला कहा करते थे क्योंकि जितने पुरुष ईसाई हो जाते थे वे अपना चुन्दी, चुटा या झोटा कटवा देते थे। लंगड़ा मुण्डा की पत्नी, ईसाई धर्म को विदेशी धर्म समझती थी तथा उस धर्म पर चलने वालों को आछूत समझती थी।

लंगड़ा मुण्डा का परिवर्त्तन आज दिल से हो गया। उसने अपना बड़ा झोटा को कटवा कर सिर को मुंडला करा दिया। अपना खेत का काम खतम कर, जब संध्या के समय अपना घर — गया और उस की पत्नी ने पति को मुंडल किया हुआ देखा तो उस की हृदय फट गया। वह रोने लगी और कहने लगी तुम ने यह क्या किया है? दूर हो! मेरे घर में प्रवेश मत करो!! मेरे घर को अपवित्र मत करो!!! और ऐसा कह कर उसने लंगड़ा मार्टिन मुण्डा को घर से बाहर कर दिया। वह अछूत हो गया ऐसा सोच कर उस की पत्नी ने उस के साथ बात चीत करना भी अच्छा नहीं समझा। उसने उस दिन उसको भोजन भी नहीं दिया। बेचारा लंगड़ा-मार्टिन, गोहाल घर में, जहां उस का एक बैल रहता था, अपना डेरा बनाया और अपनी बुद्धि भर प्रभु से प्रार्थना कर रात्रि बिताया।

इस के पश्चात भी छः महिनों तक लंगड़ा मार्टिन को गोहाल घर ही में रहना पड़ा। उस की पत्नी कट्टर आदिवासी धर्म को मानने वाली थी। मार्टिन के मुंडल होने के बाद वह उस को अपने घर में कभी प्रवेश करने नहीं दी। उस को गोहाल घर में खाना दिया जाता था। खाना भी कांसे के वर्त्तन में नहीं, पर पतरी में दिया जाता था। तिस पर भी मार्टिन गोहाल घर में बड़ी खुशी से और शान्ति पूर्वक रहता था। इस बीच में कई एक बार पाद्री नोत्तरोत्त उसे देखने आये। मार्टिन भी एतवार के एतवार गिर्जा जाना नहीं भूलता था। अब तक मार्टिन विश्वास दर्पण, प्रभु की प्रार्थना तथा सुसमाचार के अच्छे अच्छे पदस्थलों को कंठस्थ कर लिया था। वह अपनी पत्नी के लिये भी लौ लगा कर प्रार्थना करता

Gossner Mission

था। उसकी पत्नी और गांव के लोग ईसाई धर्म छोड़ देने के लिये कई बार उस से आग्रह किया। किन्तु मार्टिन को प्रभु में सच्चा आनन्द मिल गया था, इसलिये ईसाई धर्म से कभी मुंह नहीं मोड़ा। उसकी पत्नी की ओर से वैसा कष्ट मिलने पर भी वह हंसमुख रहता था। उसको खुशी एवं शांति पूर्वक रहते देख कर उसकी पत्नी का मन धीरे-धीरे नम्र होते गया। वह हृदय में पश्चाताप करने लगी। मार्टिन तब तक कुछ मसीही गीतों को भी सीख लिया था जिन में "परमेश्वर एक दृढ़ पहाड़" एक है इसे जोर-जोर से गाया करता था। उसके धीरज एवं दुःख सहने के गुणों को देख उसकी पत्नी का मन नम्र और कोमल होकर परिवर्तन हो गया। वह कहने लगी हम लोग कब तक अलग-अलग रहेंगे? अब मैं भी तेरे ही धर्म को मानूंगी कह कर मार्टिन को अपने घर में ग्रहण की और उस दिन उस घर में बड़ा आनन्द हुआ।

पाद्री नोत्तरोत्त ने मार्टिन की पत्नी का परिवर्तन के विषय सुना और बहुत खुश हो कर ईश्वर को धन्यवाद दिया। इसके बाद उन के घर में जा कर प्रार्थना सहित प्रभु का वचन सुनाया और उन्हें विश्वास में दृढ़ाया।

दिन बीतता गया, मार्टिन और उसकी पत्नी ईसाई धर्म में अधिक दृढ़ होते गये। प्रभु मसीह के वचन और प्रेरितों के कार्यों से पूरा परिचित हो गये थे। दोनों अनपढ़ तो थे किन्तु धर्म पुस्तक के अच्छे पदस्थलों को, गीतों को तथा कटेखिस्म के वचनों को मुखस्त कर लिये थे। मार्टिन तो कुटाम मण्डली का आराधना आरम्भ से अन्त तक कर सकता था। प्रभु की आशीष उस घराने के साथ थी। लंगड़ा मार्टिन के प्रार्थना से बिमारी चंगे होते थे। उस की पत्नी भी विश्वास में तथा वचन में किसी प्रकार अपने पति से कम नहीं थी। वह अच्छी तरह प्रार्थना कर सकती थी।

लंगड़ा मार्टिन और जोला बांध के भूत :—

लंगड़ा मार्टिन ईसाई धर्म को ग्रहण करने के बाद बहुत स्वतंत्रता मालूम करता था। पहले वह भूत-प्रेतों से बहुत डरता था और उन्हें मनाने बुझाने या खुश करने के लिये तुरंत मुर्गी चाहे भेड़ा चाहे बकरा पूज देता था। पर अब मसीह में निर्भय एवं बड़ा साहसी हो गया। किसी काम को आरम्भ करने से पहले प्रार्थना करता था। यदि कहीं सन्देह होता तो पाद्री नोत्तरोत्त से सलाह लेता था।

आप को मालूम हो ही गया है कि मार्टिन, जोला बांध के भूत को भगाना चाहता था। वह अपने गांव के देव पूजक लोगों को बताना चाहता था कि मसीह देवों के ऊपर भी राजा है। जोला बांध का खेत पड़तो पड़ा हुआ था। वह उसे जोत कोड़ कर आबाद करना चाहता था। पर उस में भूत था। इस लिये उस ने नोत्तरोत्त पाद्री से सलाह ली कि मैं उसे जोत सकता हूं या नहीं? उस ने उसको कहा कि प्रभु से प्रार्थना करने के पश्चात तुम उस पर हल चलाओ, तुम्हारी कुछ भी हानि न होगी। मार्टिन ने पाद्री साहब की सलाह से बहुत साहस पाया और उस खेत पर हल चलाने के लिये ठान लिया।

एक दिन सूर्यास्त से पहले मार्टिन ने अपने जुंवट और हल को जोला बांध के पास ले गया और उस खेत के किनारे घुटना टेक कर प्रभु से प्रार्थना की कि उस खेत पर हल चलाने के कार्य में सामर्थ और शक्ति पावे तथा उस खेत के दुष्टात्मा के ऊपर जयवन्त होवे। प्रार्थना के बाद उसने उस खेत के भूत को ललकार कर कहा "कि मैं अपना जुवट और हल को इस खेत के भीतर डाल देता हूं। यदि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह से ज्यादा सामर्थवान हो तो इस खेत से बाहर फेंक दो और नहीं तो कल बिहान से इस खेत पर हल चलाना शुरू कर दूंगा।" और ऐसा कह कर हल और जुंवट को उस खेत के अन्दर फेंक कर अपना घर को लौट गया।

घर में मार्टिन ने इन सारी बातों को अपनी पत्नी को कह सुनाया। रात्रि में वे दोनों बड़ी गम्भीरता से प्रार्थना में लगे रहे। जब बिहान हुआ तो मार्टिन बड़ी उत्सुकता से उठा और यह जानने की लालसा की कि उसके हल और जुंवट की हालत क्या हुई। वह अपने बैलों को और फार ले कर 'जोला बांध' के पास पहुंच गया और उसने क्या देखा कि हाल और जुंवट जैसा फेंका गया था वैसा ही खेत के भीतर पड़ा हुआ था। इसके बाद मार्टिन को विश्वास हो गया कि मेरा प्रभु, भूत से अधिक शक्तिमान है

Gossner Mission

मैं अब इस खेत को बिना भय जोत सकता हूँ। वह खेत के अन्दर गया और घुटने टेक कर प्रभु से प्रार्थना की और बैलों को जोड़ कर निधड़क हल चलाना शुरू कर दिया। हल चलाते-चलाते दोपहर हो गया, कोई घटना नहीं हुई। इस के बाद वह हल चलाना बन्द किया और फिर उस खेत पर घुटना टेक कर प्रभु को धन्यवाद दिया कि उस ने उस की रक्षा की है।

घर में मार्टिन की पत्नी आशा भरी नजरों से अपने पति के आने की प्रतिक्षा कर रही थी। जब वह सही-सलामत घर लौट गया तो उनके घर में बड़ा आनन्द हुआ। रात को सब मिल कर परिवार सहित प्रभु को धन्यवाद दिया और वे प्रार्थना कर सो गये।

मार्टिन अपना एक बैल और गांव के एक पांड़ के एक बैल को लेकर एक दिन के बाद एक दिन जोला बांध का खेत पर हल चलाने जाता था। गांव के लोगों ने पांड़ को बहकाने की कोशिश की कि तुम अपने बैल को जोला बांध के खेत जोतने के लिये लंगड़ा मुंडा को मत दो। उसमें भूत है। लंगड़ा मुंडा एक दिन मर जायगा और तुम्हारा बैल भी मर जायगा। उसने उन्हें उत्तर दिया, मेरा बैल क्यों मरेगा ? अगर हानि होगी तो लंगड़ा मुंडा को होगी हमारी नहीं : यह कह कर उसने बैल देने में किसी प्रकार की आपत्ति नहीं की और लंगड़ा मुंडा बिना रोक-टोक उस खेत को जोतता गया।

जब लोगों ने देखा कि जोला बांध पर घुसने तथा उस पर हल चलाने पर भी लंगड़ा मुंडा की कुछ भी हानि नहीं हुई न उसके बैलों की हानि हुई। तो यह देख कर गांव के लोग बहुत ही चकित हुए क्योंकि यह देखा गया था कि जो मनुष्य उस बांध के सरहद के अन्दर घुसता था वह निश्चय पेट दर्द से मर जाता था। पर लंगड़ा मुंडा नहीं मरा। वे उसके लोग उसके पास घर पर जा कर पूछने लगे कि क्या बात है कि जोला बांध में घुसने पर भी उसकी कुछ हानि नहीं हुई। तब उसने अपने त्राण-कर्त्ता यीशु मसीह के विषय उनको कह सुनाया। वह उनको बताया कि यीशु मसीह, जिसकी वह उपासना करता है वह सर्वशक्तिमान है और सब देवताओं और भूतों एवं प्रेत उनके नाम से कांपते हैं। यह सुनकर उसके गांव के लोगों को भय हुआ।

लंगड़ा मूंडा धीरे-धीरे 'जोला बांध' को जोतता गया और करीब आधे-आध पर हल चला चुका था उसी समय एक रात स्वप्न में क्या देखता है कि उस खेत में एक जट्टा-धर भूत है जिसका बाल उसके एड़ी तक लटक रहा था। उसका चेहरा काला एवं डरावना था। उसकी एक पत्नी भी थी। वह भूत अपनी पत्नी से कह रहा था, "चलो, यह मनुष्य नहीं मानेगा। उनके भगवान का नाम सुनकर डर लगता है।" और यह कह कर वे हट रहे थे। भूत की स्त्री कह रही थी कि; "उस मनुष्य की पत्नी के मुख से आग निकलती है।" उससे तो मुझे बहुत डर लगता है।" मार्टिन नींद से जाग उठा और स्वप्न पर ध्यान लगाया। उसने अपनी पत्नी को अपना स्वप्न बताया; और कहा कि प्रभु का अनुग्रह उनके साथ है और वे उस खेत को दखल करने में सफलवन्त होंगे। तब उन्हों ने घुटने टेक कर प्रभु को धन्यवाद दिया।

स्वप्न देखने के बाद मार्टिन और उसकी पत्नी पूरी तरह जान गये कि प्रभु उसके साथ है। इसी कारण वे भूत उनसे डरते हुये दिखाई दिये। उनका विश्वास प्रभु में दृढ़ हो गया और साहस से भर गये। प्रार्थना ही उन का हथियार साबित हुआ। उस दिन से मार्टिन प्राय: प्रत्येक रात स्वप्न में उन भूतों को देखता था। कभी उन्हें फुस फुसाते हुए बात-चीत करते देखता था, कभी भयभीत हो अपने चेहरे को ढंकते हुए देखता था और कभी अपनी चीज वस्तुओं को सरिया कर किनारे की ओर हटाते हुए देखता था। मार्टिन प्रति दिन साहस पा कर दृढ़ता से आगे की ओर हल चलाते जाता था।

जब वह जोला-बांध के करीब दो तिहाई जमीन पर हल चला चुका तब उसने क्या स्वप्न देखा कि स्त्री भूत अपने पति से कह रही थी कि, "अब हम दोनों का यहां कोई गुजारा नहीं है। वह नहीं मानेगा। वह निकट आता ही जा रहा है। वह हमारी चीज वस्तुओं को छूवेगा। उसका भगवान का नाम सुनने से डर लगता है। चलो ! यहां से भागो !! और कह कर उस भूतिन ने अपने काले-काले घड़ा और भांड़ा इत्यादि को एक के ऊपर एक

Gossner Mission

तेंगरा कर रखी और उसके पति ने उस के सिर पर उठा दिया। भूतिन अपने सारे सामानों को सिर पर ढोकर उस खेत से निकल पड़ी। उसका पति भी उसके पीछे-पीछे चल पड़ा। वे दोनों उस खेत से भागकर बनई नदी को गुड़न्दा नामक घाघ के ऊपर पार किया। बनई नदी के तट पर ही ऊंचे-ऊंचे कुसुम के वृक्ष थे, (अभी भी कुछ वृक्ष हैं) भूतिन ने अपने सिर के सारे सामानों को उन्हीं वृक्षों के तले पहुँच कर धड़ाम से जमीन पर पटक दिया। जैसे ही भूतिन ने सिर के सामानों को वृक्षों के तले धड़ाम से पटका, मार्टिन को नींद खुली। वह अपने स्वप्न को याद करने लगा और यह जान कर कि भूत के ऊपर उसकी जीत हो गई है, घुटने टेककर ईश्वर को धन्यवाद दिया।

मार्टिन, जोला बांध को जोत कर करीब समाप्त करने ही वाला था, एक दिन की बात है कि जब वह हाल चला रहा था और अपने बैलों को "नाँव रे ! दहिना !!" कहते हुए चलाने में मस्त था। वैसे ही अवस्था में उसने पीछे से किसी के पुकारने का शब्द सुना। उसने सोचा कि वह पुकार शायद किसी और को किया जा रहा था, सो उसने उस पर कुछ ध्यान नहीं दिया और वह अपने बैलों को चलाने ही में लीन था। किन्तु आवाज रूक रूक कर आने लगा और जोर होता गया। मार्टिन को ऐसा मालूम हुआ कि उसके पीछे कोई जन नजदीक कुछ पूछने हेतु चला आ रहा था। वह आवाज रूक-रूक कर पूछ रहा था—"ए ! पहन केर घर कने आहे !!.....ए ! पहन केर घर कने आहे !!" मार्टिन अपने बैलों को जोर जोर से बोल कर हांक रहा था इस कारण पीछे से पुकारे जाने वाली आवाज को स्पष्ट रूप सुन नहीं सका था। वह शब्द कुछ धीमे स्वर से था और रूक-रूक के निकल रहा था। मार्टिन को जब करीब नजदीक से "ए ! पहन केर घर कने आहे !!" की पुकार स्पष्ट सुनाई दी तो वह थोड़ा चौंक गया और सहसा उसके मुँह से जबाब निकला, "ऊं-हुने आहे !" और ऐसा कहते हुए मुंह मोंड़ कर पीछे की ओर ताका तो उसने देखा कि अनोखा जट्टाधारी-भयंकर-भूत-करीब दस कदम पीछे खड़ा था। उसका चेहरा काला किन्तु चमकता था। उसकी बड़ी बड़ी सफेद आंखें फाड़-फाड़ कर मार्टिन को देख रही थीं। काले मुंह पर बड़े-बड़े सफेद दांत, भयंकर दिखाई देते थे। उसका सारा शरीर लम्बे-लम्बे बालों से ढंका हुआ था।

मार्टिन उसको देख कर आश्चर्य से चकित हो गया। वह दर्शन उसको चन्द पलों के लिये ही मिला था। उस के बाद वह भूत उसके नजरों से ओझल हो गया।

मार्टिन जो ईशा मसीह का भक्त था, विश्वास में दृढ़ था, मसीह से पूरा साहस और सामर्थ पा चुका था, फिर भी जब उसने उस भयंकर भूत को अपनी आंखों से साक्षात देखा तो कुछ क्षण के लिये उसका हृदय काँप गया। उस के रोंगटे खड़े हो गये। उसका सिर धड़ के सदृश्य बड़ा हो गया वैसा वह अनुभव किया। किन्तु जैसे उसने मसीह को स्मरण किया, वैसा ही उसके सब डर और भय लोप हो गये। उसने तुरन्त अनुभव किया कि उसका उद्धार कर्त्ता उसके बगल में खड़ा है। वह हल का मूठ छोड़ कर तुरंत उसी जगह मुंह के बल गिरा और अपने त्राण कर्त्ता को धन्यवाद दिया। उसके बाद वह अपने बैलों को खोल कर शांति पूर्वक अपना घर चला गया।

यह घटना बिजली की नाई उसके गाँव के लोगों के बीच में तुरंत फैल गया। बहुत से लोग उस को देखने तथा उस से सारी बातें जानने के लिये उसके पास पहुंचे। उसने बड़ी धीरज से सभों को ईश्वर के महा कार्य जो यीशु मसीह द्वारा उस पर प्रगट हुआ था कह सुनाया।

देवपूजक लोग अब भी उस खेत में जाना डरते थे। पर मार्टिन बिना डर उस खेत पर काम करता था और उसे कई एक बार जोत कोड़ कर तैयार किया और धान बोया। उस खेत के अगल बगल के खेत भी ऐसा ही परती पड़े हुए थे। इन में भी लोग जाना तथा हल चलाना डरते थे। मार्टिन इन सब को कब्जा किया और उन में भी धान बोया। आगहन में उसका खलिहान धान से भर गया और यह देखा गया कि उस वर्ष उसको, साल भर के भोजन से भी फाजिल धान उपजा। इस अनुग्रह के लिये उसने अपने गाँव के लोगों को इकट्ठा कर ईश्वर का धन्यवाद किया।

Gossner Mission

"ढलती-जिंदगी"

डी० पी० इफ्राईम 'बेबस'
(भोपाल, म० प्र०)

हर शाम ढल जाती है,
एक दिन को लिए,
हर सुबह चली जाती है,
एक रात को लिए,
हर क्षण चले जाते हैं,
इस उम्र को लिए ।

कोई मिलता है किसी पल,
जिंदगी को लिए,
कोई चला जाता है,
बस गम को दिये,
कोई जीता है किसी आश पर,
कोई चलता है अपनी लाश को लिए।

गम ही खाना और पीना,
नहीं है जिंदगी के लिए,
खुदगर्जी में लुफ्त नहीं,
खुद जीने के लिए,
जीना किसी के काम आये,
जीते हैं जीने के लिए ।
हर क्षण चले जाते हैं,
इस उम्र को लिए ॥

Gossner Mission

जीवन और शांति

सलमोन आईन्द

महान परमेश्वर के विषय जानने के लिये वचन अथवा शब्द का होना आवश्यक है। वचन बिना किसी भी वस्तु या विषय पर मानव द्वारा विश्लेषण करना असम्भव है। क्योंकि आदि में वचन था, और वचन ही परमेश्वर है। स्वर्ग और पृथ्वी की कोई ऐसी वस्तु नहीं जो उसके बिना सृष्टि हुई हो। सब कुछ उसी के लिये सृष्टि की गई है। यही वचन अर्थात ईश्वर यीशु होकर जगत में आया (यूहना १:१४;२ कुरिन्थियों ५:१६)। ईश्वर की सनातन से सनातन लों के लिये सदिच्छा मानव जातियों में प्रगट की गई यूहना १:१८; ५:३७)। इसलिये कि उसमें जीवन था, और वही जीवन जब मनुष्यों की ज्योति है (यूहना १:४)। यही जीवन एवं शान्ति पवित्रात्मा की एक महान दान है (गलतियों ५:२२+२३)। यह उसी को अनुभव हो सकता है, जो पवित्रात्मा से जन्मा हो (यूहना ३:५—६)। मनुष्य को पवित्रात्मा से जन्म लेना किसी भी अवस्था के लिये है। परन्तु प्रश्न इस बात की है, कि वह परमेश्वर पर यीशु के द्वारा विश्वास करता हो (रोमियों १०:१७)। पवित्रात्मा से जन्म लेने का अर्थ शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाना है (१ पतरस ३:२१)। विश्वास का आरम्भ वचन एवं पवित्रात्मा को दृढ़ता से होता है। शुद्धता उसे रुप देती है, सत्य उसका शृंगार करता है। जब विश्वास, आशा और प्रेम; परमेश्वर योशु मसीह और पवित्रात्मा पर होता है तब अडोल हो जाता है, और दूसरों पर भी प्रभाव होता है। अनुभवी जन जानते हैं कि विश्वास पवित्रात्मा की शक्तियों के विकास का काम है। विश्वास आत्मा द्वारा प्रकाश एवं परम भाव का परमोदय है। जब विश्वास प्रेरणा और प्रकाश देता है तब पवित्रात्मा से जन्म और स्वर्गीय कर्म का रहस्य समझ में आता है। पवित्रात्मा से जन्म और कर्म की पहचान धन, सुन्दरता, विद्वता, उपाधियां प्राप्त मानव निर्मित विधि और न तो शब्दोच्चारण करने से होता है। दिव्य कर्म करने वालों का पहचान कुशलता, निर्भयता, धीरज और साहस से होता है। इस असार संसार में श्रद्धा और विश्वास का आधार दृढ़ और सुरक्षित रहता है, वह कभी विचलित नहीं होता और प्रेरणादायक जीवन और सत-पथ को नहीं छोड़ता है। पवित्रात्मा से जन्मोपरान्त स्वर्गीय विधि धार्मिकता के लिये पूरी की जाती है। पवित्रात्मा के द्वारा भला, बुरा और ज्ञान का प्रकाश होता है। हालांकि इस जगत के समस्त मानव जाति अद्वैत परमेश्वर को महिमा से रहित हैं (रोमियों ३:१०-१२—२३)। तथापि प्रभु यीशु खृस्त की प्रतिज्ञा स्पष्ट है, मैं मार्ग, जीवन और सच्चाई हूँ। कोई भी व्यक्ति जीवन, शान्ति आनन्द, अजर, अमर और अधिकार के लिये ईश्वर के पास जा सकता है (यूहन्ना १४:६)।

इस २०वीं शतब्दी में यीशु जो मानव जातियों के लिये महिमा की आशा है (कुलुस्सियों १:२७)। अनेक लोग मसीही होने पर भी अनेक दुःख, वेदना, भूखमरी और निराशा के कारण भ्रमों के शिकार हो रहे हैं। उनमें अपस्वार्थी, लोभी, डींगमार, अभिमानी, निन्दक, माता-पिता की आज्ञा टलनेवाले, कृतघ्न अपवित्र मयारहित, क्षमारहित, भले के बैरी। विश्वासघाती; ढीठ, घमण्डी और परमेश्वर के नहीं वरण सुख विलास ही के चाहने वाले हैं। वे भक्ति के भेष तो पकड़ते परन्तु जीवन, शान्ति और शक्ति को नहीं मानते हैं (२ तीमोथियुस ३:१-६)। जिसका परिणाम शरीर और देश के विनाश के साथ आत्मा की भी हनन होती है।

खीस्त ने सलीब पर अपना रक्त बहाकर दलित, पीड़ित और असहाय मानव के बीच शान्ति स्थापित की (कुलुस्सियों १:२०+२१)। कोई भी व्यक्ति खीस्तावतार में अपना विश्वास रखकर शान्ति और आध्यात्मिक जीवन का निर्माण कर सकता है। पुनर्जीवित, स्वर्गीयराज्य स्थापित और स्वर्गरोहित खीस्त में यदि मनुष्य को जीवित एवं शान्ति पूर्वक रहना है तो विश्वास करना ही पड़ेगा, और विश्वास के द्वारा धर्मीजन जीवित रहेगा (हबक्कूक २:४, रोमियों १:१७)। अनुभवी ईश्वर के साथ शान्ति

Gossner Mission

स्थापित करते हैं जिसका माध्यम प्रभु योशु ख्रीस्त है रोमियों (५:१)। मनुष्य आंतरिक शांति और शक्ति की खोज में हैं। भौतिक प्रगति से किसी मनुष्य को शान्ति नहीं मिलती है। विश्वास, जीवन, सच्चाई, पवित्र और स्थायी शान्ति राष्ट्रीय स्तर पर असम्भव है (यिर्मयाह ८:११)। विश्व स्तर पर भी शान्ति तब तक असम्भव है जब तक मनुष्य अपने हृदय में ईश्वर की शान्ति का अनुभव नहीं कर लेता है।

ईश्वर की महिमा के लिये अपनी शान्ति जो प्रभु यीशु ख्रीस्त में प्रगट है, किसी धार्मिक अथवा राजनैतिक संस्था को नहीं दी है, जो इस पृथ्वी पर शान्ति के लिये मनुष्य का ईश्वर से समझौता कर सकते हैं। क्योंकि जो शरीर से जन्म लेता है, वह आंतरिक शान्ति एवं पवित्रात्मा के विषय अनुभव नहीं कर सकता है। मानव जातियों में विश्वास, आशा और प्रेम का अभाव है। जिसका परिणाम आत्मिक क्षेत्र में सब से भयंकर "जीवन और शान्ति" के लिये मीरास के अपेक्षा परस्पर संघर्ष हो रही है। जीवन यात्रा में भय, घृणा और कड़वाहट मिल रही है। दुष्ट की शक्तियां प्रत्येक मनुष्य के अन्दर उसकाती, कि केवल अपने लिये जीवित रहे यहां तक कि "जीवन और शान्ति" के लिये परमेश्वर को हृदय में स्थान नहीं देते हैं।

पवित्रशास्त्र में समस्त मानव जातियों के लिये सुरक्षा, अनन्त जीवन और शान्ति के विषय में प्रकाशित की गयी है। जीवन संग्राम, सुरक्षित यात्रा और अच्छा स्वास्थ्य का आश्वासन दिया गया है। परमेश्वर को जानने का मार्ग प्रगट किया गया है। दृश्य अथवा अदृश्य सब कुछ उसके हाथों में है।

सांसारिक ज्ञान, बुद्धि और सामर्थ द्वारा मानव जाति की किसी भी समस्या का हल नहीं हो सकता, न तो "जीवन और शान्ति" मिल सकती है। विनाश के लिये वह दिन अत्याधिक शक्तिशाली न केवल इस पृथ्वी पर वरन आकाश मण्डल में भी प्रकम्पित के लिये निकट है। मानव प्रतिद्वन्द्वी विचार धाराओं में पड़े हैं। जिसके लिये जगत में क्लेश होता है परन्तु "जीवन और शान्ति" का अधिकारी प्रभु यीशु ख्रीस्त ने अपने प्रेम रखने और आज्ञा मानने वालों से कहा है, तुम्हें शान्ति मिले (यूहन्ना १४.२७; २०:१९)।

धन्यवाद आप का ग्राहक चन्दा [३१वीं दिसम्बर, ७४ तक] मिला।

1 Cat. Julius Kongari, Tangarmunda
2 Mr. Abhiram Soy, Jalangbira
3 ,, N Toppo, Gua
4 ,, Bisram Kujur, Chaibasa
5 ,, Adam Kujur. Birmitrapur (Kaplas)
6 ,, Asaph Topno; Kendughati
7 ,, Anukaran Aind. Chiria
8 ,, Arun Tayade, Shaharpura
9 ,, P. Kerketta, Ranchi-Gram
10 ,, Jiwan Topno, 1st Bihar Regit.
11 ,, Nirdosh Kujur, Garhara
12 ,, L M Sandil, Burda
13 ,, C. H. Guria, Barsua
14 ,, Christochit Bodra, Bisrampur
15 ,, Ch. M. Prabhudayal Topno, Bihar Bn. NCC
16 ,, Christosukh Bhengra, Kolomdega
17 ,, Benjamin Lugun, Birmitrapur for 8 Members
18 ,, Komal Minz, Baghbera
19 ,, Mansidh Bading, Torpa
20 ,, Matias Dang Tutikel
21 ,, D. Purti, Rourkela
22 Rev. N. Kullu, Sundargarh
23 Mr. Jusaph Hasda, Katumus
24 ,, B. J. Areya, Duania-Basti
25 ,, Abraham Guria, Ghoraghas
26 Mrs. M. Hemrom, Purnapani
27 Mr. A M. Guria, Manoharpur
28 ,, Nirmal Back, Parodih
29 Mrs. S. Purty, Jaltanda
30 Mr. N. Khes, Rato-Birkera
31 ,, K. A Reian Topno, Andamans
22 ,, Lolas Tirkey, Mathura T. E.
33 ,, Pyara Kuluu, Andamans
34 ,, Junas Ekka, Gainjur
35 ,, C D. Topno, Kitadih/Jamshedpur
36 ,, J. K. Aind, Bokaro
37 ,, Christopher Bodra, Lanjiberna
38 ,, Egnes Minz, Golidih
39 Rev. Obed Toppo, Ambikapur for 66 members
40 ,, N. Bhuinya Khunti-Kadma
41 Mr. Lucas Dangwar, Loyongkel-Dumartoli
42 ,, Anandmasih Topno Manihарpur
43 Rev. P. Topno, Chaibasa
44 Mr. Walter Khalkho, Bokaro
45 ,, Suleman Kerketta, Sonari
46 Cat. Y. Topno, Kereya
47 Shri Santosh Barla, Banspani-Kyonjhar
48 Shri Nahemiah Barla, Sukurhutu-Ranchi.

रजिस्टर्ड नं. आर. एन. सी. ४ वर्ष—६५ राँची, फरवरी ७५, संख्या नं.—२

Edited and published by Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G.E.L. Church and Printed at G. E. L. Church Press, Main Road, Ranchi / Bihar.

Gossner Mission

धर्मबन्धु

रजिस्टर्ड नं० आर० एन० सी० ४

वार्षिक मूल्य ५ रु०

वर्ष — ६५ रांची, जनवरी १९७५ संख्या नं० — १

EINGEGANGEN
- 5. MAI 1975
Erledigt .....

क्योंकि उसकी परिपूर्णता से हम सब ने प्राप्त किया अर्थात अनुग्रह पर अनुग्रह।

योहन (१ : १७)

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

Editor & Publisher

Pramukh Adhyaksh,

Associate Editor

Rev. C. S. R. Topno

Editorial Committee

Rev. M. Tete

Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय		—	३
उपदेश की तैयारी	रेभ टेटे	—	४
पवित्रात्मा का कार्य		—	६
मिशन पर्व		—	७
मैत्री संघ का चमत्कार		—	८
संयुक्तइलाका युवा संघ		—	९
कलीसियाई समाचार		—	११
मैं ज्योति हूँ (कविता)		—	१३
तुम मेरे साथ चलो (कविता)		—	१३
साहित्य और बच्चे		—	१३
एक भटका राही		—	१७
धन्यवाद आप का ग्राहक चन्दा मिला		—	२०

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणतः १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य पांच रूपये हैं।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें ।

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये पते पर ही भेजें। एसोसिऐट एडीटर, घरबन्धु; जी० ई० एल० चर्च [के० एस० एस० ऑफिस], राँची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता० तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इसमें बांयी ओर 1½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेजें

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रखनी चाहिये, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगा।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालू की जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १०-ता० के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवतः ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छपे जाते हैं; ग्राहक चन्दा के बाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवत : डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित्त कुछ लिखा लें ।

Gossner Mission

सम्पादकीय

"स्थिरता"

समय आता है, फिर चला जाता है; नया वर्ष, नया महीना, नया दिन, और इसी के साथ न जाने और कितनी चीजें और परिस्थिति आये दिन आती है और चली जाती है, मनुष्य भी अपने समय में अपने तरह का जीवन बिताता है पर वह भी जाता रहता है; इसी प्रकार राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक उत्थल-पुत्थल होते हैं, फिर नयी परिस्थिति आ जाती है, पर एक स्थिरता है-वह है परमेश्वर की ओर से, उसकी भलाई और करूणा सदा एक सी बनी रहती है (भ० स० २३:६)।

इस नये पथ प्रदर्शक पद के साथ ही हम नये साल में प्रवेश करते हैं। नये साल में भी अनेक रद्दोबदल आयेंगी, नयी परिस्थितियां और नयी समस्याएं भी आयेंगी, पर इनके होते हुए भी परमेश्वर की स्थिरता साथ में है। ये बदलाहट, और परिस्थितियां चाहे व्यक्तिगत हो या पारिवारिक या कलीसियाई या राष्ट्रीय ही, ऐसे समय में उत्तम होगा कि परमेश्वर की ओर आंखें उठा कर दुहाई दें और उसी से स्थिरता की आशीष मांगे, उसी से भलाई और करूणा की आशा रखें।

अनेकों के जीवन में घबराहट होगी कि हमारे राष्ट्र क्या, पुरे जगत् में समस्याओं की घटा छायी दीखती है, और इससे अनिश्चयताएं ही नजर आती हैं; मुखमरी, महंगाई, रोग, राजनैतिक आदि अनेकानेक समस्याएं हमें विवश कर देती हैं, कि हम अस्थायी समाधानों पर ध्यान करें — परन्तु ये भी अस्थिर ही हैं; इसी प्रकार कलीसिया की विभिन्न समस्यायें भी कम नहीं हैं, जिसके कारण कलीसिया, मंडली एवं मसीही जीवन में भी अनिश्चयताएं दीखती सी नजर आती है, और कलीसिया के भाई बहन भी अस्थायी समाधान और वस्तुओं पर अपनी जीवन और जीविका की टेक लगाते हैं, पर ये तो जाती रहेंगी। अत: हम परमेश्वर की स्थिरता पर ही आशा और भरोसा रखें और उसी निशान के साथ इस साल में जीवन के उद्देश्य की पूर्ति करें।

नया साल आशीषमय हो !!

घरबन्धु, जनवरी १९७५

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

मार्टिन टेटे

नया साल

लूका ४:१६-२२

हमारा अपना घर और कलीसिया ईश्वर का दान है। घर और कलीसिया दोनों जगहों में ईश्वर की आराधना करना और गवाही देना आवश्यक है। परन्तु आज हमारा घर भी नासरत नगर के समान है, जो यीशु को नकारने के लिये तैयार हो जाता है। हमारी कलीसिया भी नासरत के मन्दिर के समान प्रेम, धीरज, दया और अनुग्रह हीन हो गई है। कलोसिया वचन और सक्रामेन्त के द्वारा हमें ईश्वर की दया प्रदान करती है। परन्तु हम ईश्वर की कलीसिया में ईश्वर का अनुभव करना नहीं चाहते हैं। जैसा नासरत यीशु का अनादर करता है वैसा ही हम भी यीशु की सुनना नहीं चाहते हैं, (४:२४)

नासरत के मंदिर में यीशु की गवाही :—

(क) प्रभु का आत्मा मुझ पर है :—यीशु इस बात को बपतिस्मा में अनुभव करता है। यीशु का काम पवित्र आत्मा का काम है। यीशु अपनी इच्छा के अनुसार काम नहीं करता परन्तु ईश्वर को इच्छा के अनुसार काम करता है।

(ख) सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है— सुसमाचार सुनाना यीशु की सेवकाई का विशेष भाग था। यीशु सुसमाचार सुनाता रहा और अपने आप को पिता की इच्छा पूरी करने के लिए सौंप दिया। आर्थिक दशा के द्वारा दबाये गये लोगों के लिए उसकी चिंता थी। समाज में नहीं गिने जानेवालों के लिए उसकी सहानुभूति थी। मन में दीनों का उत्साह उसके द्वारा बढ़ाया गया, दरिद्र किये गये लोगों के लिये उसने ईश्वर का अनुग्रह प्रदान किया।

(ग) बन्धुओं के लिए छुटकारे का समाचार— परिस्थिति, रीति, पाप इत्यादि के द्वारा गुलाम बनाये गये लोगों के लिये यीशु सुसमाचार था।

(घ) अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूँ— यहाँ शारीरिक और आत्मिक दोनों प्रकार के अंधों की ओर संकेत है। अंधा मनुष्य सृष्टि की सुन्दरता को नहीं देख सकता है। यीशु अंधों को दृष्टि प्रदान करता और वे सृष्टि की सुन्दरता देखते हैं। आत्मिक रीति से अन्धा मनुष्य ईश्वर की दया और प्रेम को सुन्दरता को नहीं देखता है। यीशु मनुष्य के आत्मिक आँखों को भी खोलता है। जिससे वे ईश्वर को देख सकें।

(ङ) कुचले हुओं को छुड़ाऊँ—समाज से निकाले हुओं को स्वर्ग में स्थान दिया, पापियों का विश्वस्त और प्रेमी मित्र हुआ।

(च) प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूँ— प्रभु का वर्ष ईश्वर की दया का समय है। यीशु में ईश्वर की दया का समय हमारे पास पहुँचा है, (लैव्य. २५:१०-१८, २७:१७; गिन्ती ३६:४।

क्या यह साल मेरे और आपके छुटकारे का वर्ष है?

इपिफ़ानियस पर्व

मत्ती ३:१२-१७

यूहन्ना बपतिस्मा देनेहारे का प्रचार लोगों में सनसनी फैला दिया था। लोग अपने पापों को पहचानना शुरू कर दिये थे। ऐसे ही अवसर में यीशु अपने आप को प्रकाशित करता है। मार्ग तैयार था, यीशु राजा आम जनता के बीच अपने आप को प्रकट कर देता है।

[इपिफानियस=प्रगट या प्रकाशित होना]

यीशु का प्रकाशित होना

(क) बपतिस्मा में :— यीशु स्वर्गीय राजा है। उसमें पाप नहीं है। उसने क्यों पश्चाताप का बपतिस्मा लिया? क्योंकि इसी रीति से यीशु को ईश्वर की धार्मिकता पूरा करना है। वह पापियों के लिये पाप बना। यशा. ५३ के अनुसार वह पापियों के संग गिना गया। उसने

Gossner Mission

पापियों के पाप को उठा लिया। बपतिस्मा ही मनुष्यों को बचाने का रास्ता था। बपतिस्मा का निशान क्रूश की ओर है। बपतिस्मा में भी मृत्यु, न्याय, जीवन और आग की ओर संकेत है। हमारे पाप का न्याय प्रभु की देह में किया गया। न्याय का फल यीशु की मृत्यु और हमारे लिये जीवन हुआ।

(ख) पवित्र आत्मा के अभिषेक में :— परमेश्वर का आत्मा कबूतर की नाईं उस पर उतर कर ठहर गया। यीशु और आत्मा का चिरस्थायी सम्बन्ध है। क्यों पवित्रात्मा उस पर उतरा? यीशु का जीवन आत्मा के द्वारा चलाया जाय। क्योंकि यीशु सच्चा और स्वाभाविक मनुष्य था। यीशु का अभिषेक विशेष रीति से हुआ पवित्रात्मा कपोत की नाईं पहले कभी भी प्रगट न हुआ। धर्मशास्त्र में कपोत और मेम्ना का स्वभाव भोला बतलाया गया है। यीशु ईश्वर की अभिप्राय को सिद्ध करने के लिये मेम्ना के समान भोला बना। गरीब लोगों के लिए लैव्यवस्था के अनुसार बलिदान के लिए कपोत मिल सकता था। यीशु को मंदिर में अर्पण करते समय मरियम ने कपोत ही चढ़ाई। कबूतर और मेम्ना बराबर बलिदान के लिए व्यवहार किये जाते थे। यीशु दरिद्रों के पापों के लिए भी बलिदान हुआ। यीशु का अभिषेक जीने के लिये नहीं परन्तु मरने के लिये हुआ। कपोत तो दुर्बलता का प्रतीक है। परन्तु आत्मा में नम्र होना ईश्वर के लिये सामर्थी होना है। यीशु मरने को राजी हो गया। ईश्वर ने उसे मृत्यु से भी अधिक सामर्थ का ताज दिया ताकि वह पाप और मृत्यु की लड़ाई में स्थिर रह सके।

(ग) आकाशवाणी या स्वर्गीय वाणी :— यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अति प्रसन्न हूँ। ईश्वर की घोषणा है, यीशु की आज्ञा पालन, चाल-चलन, कार्य और बलिदान से मैं प्रसन्न हूं।

बपतिस्मा में यीशु पाप करने वालों का उत्तरदायी ठहरा। अभिषेक के द्वारा वह मृत्यु और पाप से लड़ने का ताज पहिना और स्वर्गीय वाणी के द्वारा उसे लड़ाई के लिये भेजा गया।

घरबन्धु, जनवरी १९७५

इपिफानियस के पीछे १ला एतवार

यूहन्ना १:३५-४२

मत्ती, मार्क और लूक बतलाते हैं कि यीशु बपतिस्मा लेने के उपरान्त शैतान से लड़ाई करता है। लड़ाई में शैतान हार जाता है और यीशु जयवन्त होता है — परन्तु शैतान यीशु की मृत्यु तक यीशु का पीछा करता है।

यीशु का प्रकाशित होना

१ यूहन्ना बपतिस्मा देनेहारे की गवाही में :— केवल यीशु और यूहन्ना ने पवित्रात्मा को कपोत के समान यीशु पर उतरते देखा। यूहन्ना ने साफ-साफ कहा कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। परमेश्वर का मेम्ना हो कर जगत का पाप उठा ले जाता है, (१ कोरि· ५:७)। यीशु लोगों को पवित्रात्मा से बपतिस्मा देगा (३:३३) यूहन्ना की गवाही के विषय (१:२९-३४) पर ध्यान देना आवश्यक है। क्यों हम यीशु की गवाही के निमित्त अपने आपको दीन बनाने के लिए तैयार हैं?

(२) यूहन्ना के चेलों के जीवन में :—योशु के पीछे यूहन्ना के चेले हो लेते हैं। यीशु यूहन्ना से शक्तिमान है इसलिए वे योशु को ढूंढ़ते हैं। वे न केवल आप यीशु के पीछे हो लेते हैं, परन्तु अन्य लोगों को भी यीशु के पीछे ले आते हैं। अन्द्रियास, पतरस को यीशु के पास ले आता है। चेलों का जीवन अन्य लोगों के जीवन को प्रभु के पास ले आना है। क्या मेरा और आपका जीवन अन्य लोगों को यीशु की ओर खींच रहा है? अगर नहीं तो क्यों नहीं?

(३) अन्द्रियास की गवाही में :—हम को खृस्तुस अर्थात् मसीह मिल गया है। खृस्तुस का अर्थ है अभिषिक्त जन। मसीह आने वाला था, वह आ गया—हमें मिल गया। सुसमाचारों में तीन बार पाया जाता है कि अन्द्रियास किसी न किसी का परिचय यीशु को देता है। उसने अपने भाई शमौन को यीशु के पास लाया। शमौन पेन्तिकोष्ट के दिन उपदेश दिया और ३००० प्राणी ईश्वर के राज्य के लिये जीत लिए गये। क्या आपको और मुझे खृस्तुस मिल गया है? खृस्तुस शमौन के नाम को केफा अर्थात् पतरस में बदल डालता है। क्या हमारे नामों को भी यीशु बदल दिया है ताकि हम यीशु के दृढ़ विश्वासी हो जावें। (शेष पृष्ठ १७ पर)

Gossner Mission

पवित्र आत्मा का कार्य

हवा, पानी और भोजन के बिना मनुष्य का जीवन अधुरा ही है। यदि इन तीनों में से किसी एक की घटी हो तो उसके ज्ञान, बुद्धि, शक्ति और शरीर में बढ़ती की कमी होती है। उसी प्रकार मसीही जीवन में प्रार्थना, प्रेम और आत्मा के बिना हमारी मसीहियत व्यर्थ है। इन तीनों का होना अनिवार्य है। प्रेम मसीही जीवन का मूल है। प्रार्थना परमेश्वर से बातें करना या मसीही जीवन का स्वांस है। आत्मा परमेश्वर का पवित्र टुकड़ा है। जो मनुष्य के लिये बयाने के रूप में दिया गया है। तो यह पवित्र आत्मा हमारे लिये क्या करता है।

१—वह अगुवाई करता है:—जिस तरह इस्राएलियों के मिस्र से कनान देश जाने में दिन में धूप से बचा कर, रात को ज्योति से अगुवाई परमेश्वर के द्वारा हुआ। उसी तरह हम नये इस्राएल स्वर्गीय किनान की जीवन यात्रा कर रहे हैं इसमें आत्मा की अगुवाई है। प्रे० ८ : २९; १५ : २८ यो० १६ : १३।

२—आत्मा बोलता है :—धर्मशास्त्र में हम कई एक जगह यह पाते हैं कि आत्मा पौलुस से बातें किया, आज हमारे बीच में भी बचन के रूप में हो कर बोलता और बोलने की शक्ति प्रदान करता है। प्रेरित १० : २९; ११ : १२, २८ : २५।

३—वह अजीब काम करता है :—अर्थात्, बोलने की शक्ति देता और नयी-नयी भाषा की उत्पति करता है। प्रे० २ : ४।

४—वह शक्ति देता है :—पवित्र आत्मा व्यक्तिगत जीवन के साथ देश, और कलीशा के लिए शक्ति देता है। और यह आत्मा भय और उन्नति को बढ़ाता है। प्रे०९ : ३१, २५ : २६।

५—वह काम करने वालों को भेजता है :—मत्ती २८ : १९ के अनुसार हमारे लिये एक पवित्र आदेश है। इस आदेश को पूरा करने के लिये हमारे भू-खण्ड में शत्स, ब्रन्दत, बच और यानके चार मिश्नरी पवित्र आत्मा के अगुवाई में गोस्सनर साहब के द्वारा भेजे गये थे, आज हमारी कलीशा ने भी सुरगुजा, उदयपुर और खुरिया क्षेत्र में सुसमाचार कार्य के लिये मिश्नरियों को भेजा है। प्रे० १३ : ४ लूका ९ : २, १० : १।

६—वह अधिकारी अगुवे ठहरता है :—देश, दुनियां तथा कलीशा में जितने अगुवे हैं, सब समूह की सिफारिश से चुने जाते हैं। किन्तु पवित्र आत्मा से दृढ़ाये ठहराये और सुपुर्द किये जाते हैं। आत्मा की अगुवाई ही अधिकारी और अगुवे का चिन्ह है। प्रे० २० : २८, १ कुरिन्थ १२ : ८-१०।

७—वह साक्षी देता है :—आत्मा गवाही देता है कि धर्म के काम करने वालों के लिये बन्धन, क्लेश तैयार हैं। हम परमेश्वर के सन्तान हैं। इसलिये हमें दुःख उठाना है। प्रे० ५ : ३२, २० : २३, रोमी ८ : १६।

८—वह हमारे लिये प्रार्थना करता है :—रोगी, दुःखी के परिवार में जब पाद्री प्रचारक प्रार्थना करते हैं, तो उसमें आत्मा की अगुवाई से प्रार्थना होती है। और रोगी दुःखी को आत्मिक बल मिलती है। रोमी ८ : २६।

पवित्र आत्मा की सहायता ही हमारे लिये सब कुछ है उसके बिना हम किसी भी क्षेत्र में बढ़ नहीं सकते हैं। योहन १४ : ३६ इसलिये हम प्रार्थना करें, कि ईश्वर पवित्रात्मा भेज कर हमारी बढ़ती देवे, हम गीतों के द्वारा प्रार्थना करें जो नीचे है।

Song

भेजी देबे हो यीशु पवित्र आत्मा के
भेजी देबे हो मसीह पवित्र आत्मा के

१ पवित्र आत्मा हमरे के पथदर्पन करी।
२ पवित्र आत्मा बिनु हमरे मन उदास आहो।
३ पवित्र आत्मा बिनु हमरे मन मरल आही।
४ बिन्ती करेक ले हमरे ठीन बल नखे।
५ पवित्र आत्मा हमरे ले गुण, ज्ञान, शक्ति देवी।

पी. मिंज, चल्हो

घरबन्धु, जनवरी १९७५

Gossner Mission

मिशन पर्व

श्री एच० समद, राँची

मिशन पर्व हमारी कलीसिया का एक विशेष पर्व है। इसे हम २ नोवेम्बर को मनाया करते हैं। इस अवसर पर हम लोग अपनी कलीसिया की स्थापना के संबंध में चर्चा करते हैं। इसके स्थापक फादर योहनेस गोस्नर एवंजेलिस्ता और उसके द्वारा भेजे गए चार मिशनरियों यानी शत्स, वत्स ब्रन्त और यानके को स्मरण करते हैं। इनकी मेहनत का ही फल है कि छोटानागपुर के हम पिछड़े आदिवासियों के बीच मुक्ति का उजाला चमका। उस उंजाले को आगे बढ़ाना और प्रज्ज्वलित करना हमों का कर्तव्य है।

बीते कुछ वर्षों से इस पर्व का ध्येय सुसमाचार प्रचार को बल देना है। इसका दृश्य प्रमाण यह है कि इस उपलक्ष में गिर्जा-आराधना से जो आमदनी आती है उसे मिशन काम यानी सुसमाचार प्रचार काम में लगायी जाती है। गत वर्ष मिशन पर्व के अवसर पर पास्टर मार्टिन सीवेर्ग पधारे थे। इस बार पश्चिमी जर्मनो से पच्चीस मेहमान आये थे। वास्तव में वे पर्यटक के रूप में आए थे। मिशन पर्व के दिन वे सभी उपस्थित थे। उनमें से एक पाद्री विलकेन्स जो पीटर्सहागेन के पुरोहित हैं ने उपदेश दिया। पाद्री डा० सी० के० पौल सिंह, प्रभारी प्रमुख अध्यक्ष और पाद्री सी० जे० तिर्की ने आराधना में अगुवाई की। उपदेश का वचन था मार्क ३:२०-२१ और ३१-३५।

आपने कहा कि भारत के राँची में गोस्नर लुथेरान कलीशिया की स्थापना एक ऐतिहासिक घटना है। छोटा-नागपुर की लुथेरान मसीही कलीशिया जर्मनी की लुथेरान कलीशिया जो गोस्नर मिशन से सम्पर्क रखती हैं के आपसी संबंध की शुरूआत होती है। यह संबंध अभी तक जारी है। उसी की बदौलत मेहमानों का आवगमन विदेश से होता रहता है। ईश्वर की कृपा से आप लोगों का और हम लोगों का एक विश्वास, एक आशा और एक ही प्रभु हैं। आप लोग हम लोगों के हैं और हम लोग आप लोगों के हो गए हैं। अब हम लोगों का एक बड़ा गोस्नर परिवार है। इससे अधिक कि हम लोग योशु के परिवार के हैं। यीशु सहाय शब्द सिखाता है कि हम यीशु परिवार के हैं। अच्छा, तो यीशु-परिवार क्या है? इसे स्पष्ट करने के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उपदेशक ने कहा कि एक कमरावाला एक विशाल घर है। उसके बीच में मसीह यीशु बैठे हैं। उनकी चारों ओर गोलाई आकार में हम लोग बैठे हैं। इस परिवार में हम आप भारतीय, हम जर्मन, हाँ पूरे जगत के मसीही हैं। इस प्रकार यीशु -परिवार का दायरा समूचे संसार में फैला है। हम यूरोप वाले जगतीय यीशु-परिवार के न होंगे जब तक कि हम पूरे जगत के मसीहियों की संगति में नहीं आते हैं। पूरे जगत के मसीही एक साथ परमेश्वर के पास उपस्थित होंगे। अतएव यीशु-परिवार मसीहियों का वह विशाल समूह है जिसका प्रधान यीशु मसीह है।

किसी परिवार के सदस्य एक तरह नहीं होते हैं। उपदेशक ने इसे स्पष्ट करने के लिए अपने तीन बच्चों का उदाहरण पेश किया जो भिन्न-भिन्न स्वभाव और विचार के हैं। उसी तरह यीशु-परिवार में भी भिन्न-भिन्न लोग होते हैं। हम लोग भिन्न-भिन्न हैं पर एक ही परिवार के हैं। एक भारतीय मसीही भक्त ने कहा है, "जीवन-जल के सोते से पानी सब पीते हैं पर पीने का पात्र अलग-अलग होता है।" आपने एक सिक्ख पंजाबी के बारे बताया जिसका एक व्यापार केन्द्र कनाडा में है और दिल्ली में भी कार्यालय है। उसने कहा कि मैं प्रतिदिन अपने काम में जाने के पहले प्रार्थना करता हूँ। यह सुन कर मुझे लज्जा अनुभव हुई क्योंकि मैं वैसा नहीं करता हूँ। आप भारतीयों से हम सबक सीख सकते हैं। आप भक्त हैं, आप शांत प्रकृति के हैं और आप लोगों का जीवन धार्मिक कामों में लगा रहता है। हमारे धर्मशास्त्र से हम जानते कि एक बार युसफ और मरियम अपने पुत्र यीशु को व्याकुलता के साथ ढूँढ़ते थे। वे यीरूशलीम में आए जहाँ उन्होंने उसे मन्दिर में याजकों और शास्त्रियों के बीच पाया। लोगों ने यीशु को बताया कि उसके माता-पिता

Gossner Mission

उसे ढूँढ़ रहे हैं। किन्तु उसने उनकी परवाह न की। यहाँ यीशु का व्यवहार भिन्न दीखता है। आवश्यक था कि अपने माता-पिता की आज्ञा मानता और उठकर चला आता। पर उसने वैसा नहीं किया। इस प्रकार स्वाभाविक खून नहीं पर मसीह के आत्मा का प्रेम हमों को एक परिवार में इकट्ठा करता है। मसीही-परिवार में शामिल हो जाने से सब नया हो जाता है। यूरोप एवं भारत के मसीही एक ही परिवार के हैं। इस नए परिवार में भाई-बहन स्त्री–पुरूष सब का स्तर समान हो जाता। इस नए मसीही परिवार में जाति-पांति की दीवाल लोप हो जाती है।

आगे आपने भेद-भाव की भावना के बारे कहा कि मेरी मंडली के लोग पेशा से खेतिहर हैं। वे कारखानों के मजदूरों को नीची निगाह से देखते हैं। किन्तु यह भेद-भाव प्रभु में दूर हो जाता है क्योंकि वह सब का प्रभु है। भेद-भाव की दीवाल को दूर करना एक कठिन काम है। हमारा धर्मशास्त्र इसे दूर करने का एक उपाय बताता है। उसे पश्चात्ताप कहते हैं। पश्चात्ताप के द्वारा हम उन क्षुद्र विचारों से छुटकारा पाते हैं जो मनुष्य को मनुष्य से अलग करते हैं। ये बिलगाव जब दूर हो जाते हैं तो मनुष्य मनुष्य के बिलकुल समीप आ जाता है। आपने बताया कि प्रत्येक दूसरे अडवेन्ट को ब्रेड फॉर दा वर्ल्ड के लिए प्रार्थना की जाती है। उस अवसर पर दूर देश के मसीही से वचन सुनते हैं। इस बार हाँगकाँग के भाई से वचन सुनेंगे। ऐसा क्यों किया जाता है? क्योंकि प्रभु में हम सब मसीही एक हैं। मसीह हमारा केन्द्र है। उसी के चारों ओर हम बैठे हैं। काँगो के मसीही यीशु को अपना बड़ा अगुवा मानते हैं। हम भी यीशु को अपने-अपने निजी परिवार में केन्द्र और अगुवा मानें। वह ऐसा प्रभु है जो हमों के पास आता है, हमारे दुःखों को हरण करता है, मेल–मिलाप लाता है और शान्ति देता है। अन्य धर्मावलम्बियों में ईश्वर मनुष्य के उतना निकट नहीं आता है। ईश्वर मसीह यीशु के द्वारा अपना पूरा प्यार प्रगट करता है। इसलिए मसीह यीशु के अनुगामी बन जाने से हम एक मसीही सूत्र में बंध गए हैं, और यीशु सहाय कहते हैं।

मैत्री-संघ का चमत्कार

दुर्गापूजा के अवसर पर २२, २३, २४ ओक्टोबर शाम को सात बजे से विरमित्रापूर "मैत्री संघ" की ओर से कथोलिक मिशन आहाते (कॉम्पाउण्ड) में विशेष कार्य-क्रम का प्रदर्शन हुआ जिसका एक मात्र उद्देश्य था पूजा के तड़क-भड़क मेला के आकर्षण से मसीहियों को अलग करना। संघ इसमें कामयाबी भी हुआ।

२२ तारीख को कथोलिक मिशन द्वारा "समय की-मांग" नामक नाटक रंग मंच पर दिखाया गया। २३ तारिख को "राजाओं का राजा" शीर्षक चल-चित्र तथा २४ ओक्टोबर को जी० ई० एल० चर्च की ओर से दूसरा नाटक मंच पर दर्शाया गया जिसका नाम था "परिवर्त्तन," इसमें डाकुओं के एक भयंकर सरदार का परिवर्त्तन होता है। वह क्रूश को ग्रहण करता है।

रंग मंच की खूबसूरती एवं अभिनायक अभिनायिकाओं की कला कुशलता ने न केवल मसीही भाई बहनों को ही आकर्षित किया हुआ था किन्तु अन्य अन्य धर्मावलम्बियों का मन भी खींच लिया था। हजारों की तदाद में भीड़ इकट्ठी थी फिर भी अन्त तक भीड़ में शांति एवं सुव्यवस्था बनी रही।

दूसरी ओर पूजा के रंग में भंग हो गया। मेले की तो चर्चा क्या करें, पण्डालों की कुर्सियाँ भी तीनों दिन खाली पड़ी रहीं।

नाटक के बाद तीसरे दिन कथोलिक फादर साहब ने अपने भाषण में मसीहियों को चौकस करते हुए कहा कि कोई मसीही भाई-बहिन, माता-पिता किसी पूजा उत्सव में भाग न लें तो उत्तम होगा।

लेखिका
एक मसीही बहन।
उड़िसा

Gossner Mission

संयुक्त इलाका [बुड़जू सिनोड] युवा संघ

५वीं वार्षिक सम्मेलन—अक्टोबर २८-३०, १९७४

मसीह में प्यारो,

आप सबों को यीशुसहाय !

आप लोगों को यह इतलाते हुए अपार हर्ष होता है कि हमारे संयुक्त इलाका युवा संघ, जो बुरजू सिनोड युवा संघ का ही परिवर्तित नाम है, का पंचम् वार्षिक सम्मेलन बुड़जू मिशन स्टेशन में बड़ी गर्मजोशों एवं सफलता पूर्वक सम्पन्न किया गया। ईश्वर पिता को धन्यवाद हो कि उसने हमें इन विकट परिस्थितियों में भी आध्यात्मिक तथा सामाजिक लाभ उठाने में सहायता की। उसकी ही स्तुति हो !

इस साल की स्थिति किसी से छिपी नहीं है। चारों ओर भूखमरी और महंगाई का नंगा नाच हो रहा है। इस हालत में इस सम्मेलन का सम्पन्न होना मुश्किल नजर आ रहा था। हम संघ के कार्यकर्त्ताओं को संदेह होने लगा था कि वार्षिक सम्मेलन धूमधाम से सम्पन्न होगा। पर यह क्या ? सूचना पत्रानुसार २८ अक्टोबर शाम को बुड़जू हाते में कुछ आदमी झोला-झक्कड़ और बजाने वाली सामानों के साथ नजर आये। हमारी चिंता, आदमियों के आगमन के साथ-साथ हटने लगी और ये ही गिने गुंथे आदमी सम्मेलन के उद्घाटन के समय तक में एक अच्छी खासी जमायत का रूप ले लिये। सब का दिल बाग बाग हुआ जा रहा था। थकान के बावजूद उद्घाटन का विधान विधि पूर्वक सम्पन्न हुआ। २ अक्टोबर सुबह से ही सम्मेलन की सरगर्मी में तीव्रता आ गयी। हर बीतते क्षणों के साथ जमायत में, पूर्व और पश्चिम, उत्तर और दक्षिण से लोग बाजे, गाजे-गीत-गोविन्द, हास उल्लास के साथ आ कर संख्या बढ़ाने लगे और यह, सम्मेलन की समाप्ति तक में छह सात सौ तक पहुंच गया। ईश्वर को शत: कोटिश धन्यवाद कि उसने इस सम्मेलन में इतने सारे आदमियों को, इस प्रतिकूल दशा में आध्यात्मिक शिक्षा से लाभ उठाने के योग्य बनाया। उसने अपनी पवित्रात्मा से मनुष्यों के मनों को वशीभूत किया और ईश्वर के वचनों से प्रेम करना सिखलाया।

इस सम्मेलन को सुन्दर शिक्षा देने के लिये हमारी कलीशा के प्रमुख अध्यक्ष पाद्री डा० सी० के० पी० सिंह द० पूर्वी अंचल अध्यक्ष पाद्री एन० भूईयां, बुड़जू इलाका चेयरमेन पाद्री जे० बागे, टोकाद इलाका, चेयरमैन पाद्री ई० होरो, अमलेशा इलाका चेयरमैन पाद्री पी० तोपनो, पाद्री एम० तोपनो युवानिर्देशक बुड़जु इलाका, पाद्री एस० बरजो निर्देशक महिला समिति बुड़जू इलाका पाद्री जे० डांग निर्देशक संडे स्कूल बुड़जू इलाका एवं अन्य माननीय सज्जन थे। इन्होंने अथक परिश्रम करके अपने व्याख्यानों द्वारा जन समूह को प्रभावित किया और एक नयी दिशा दिखाई। उन्हों ने शिक्षा देते हुए समूह से कहा कि—

यीरुशलीम नाम शहर बहुत सुन्दर बना था। उसकी शोभा, उसका सौंदर्य और उसकी सुन्दरता का बयान करना मुश्किल है। उसी तरह, यीरूशलीम का मंदिर भी भव्य था। उसकी सुन्दरता भी देखते ही बनती थी। वह हीरे मोती और चांदी से अलंकृत था। उसकी शान उसकी महिमा वर्णनातीत है। कहा जाता है इसे देख कर अधम पापी का मन भी परिवर्तित हो जाता था। इस सुन्दर शहर और मन्दिर को बनाने वाले या इस शहर में रहने वाले या इस भव्य अलंकृत मन्दिर में भजन पूजन करने वाले तो कितने सुन्दर रहे होंगे ! फिर भी इसी सुन्दर शहर को, इसी आलीशान मन्दिर को या इन सुन्दर व्यक्तियों को देख कर हमारे त्राणकर्त्ता यीशु मसीह को रोना पड़ा था। वह क्यों ? सुन्दर चीज को या सुन्दर आदमी को देख कर आदमी का मन पुलकित हो जाता है, पर, हमारे प्रभु को पुलकन महसूस नहीं हुआ, पर, उन्हें रोना पड़ा, भला क्यों ? सुन्दरता को देख कर ही हमारे मसीह को रोना आ गया, आखिर क्यों ? इसी वाक्यों का जवाब इन्होंने (व्याख्यान-दाताओं) हमारे पवित्रशास्त्र के याकुब २ : १०, प्र० वा० ३ : १२, रोमी ३ : ९-१३, प्र० वा० २ : २-१७, रोमी ६ : ११-१३, १ला तिमो० ६ : ११ - १२,

Gossner Mission

२रा कु० ६:१४-१८, जैसे सुन्दर तथा प्रभावशाली पदस्थलों से दिया। सारांशत: उन्होंने यही कहा कि यीरुशलीम में पाप की बढ़ती हो गयी थी। लोग धर्म की अवहेलना करके सांसारिक विधियों पर चलना आरम्भ कर दिये थे। उन्होंने धर्म को एक खिलौना समझ रखा था। अत: प्रभु यीशु, उनके अन्धकारमय भविष्य को देख कर रोया। जन समूह को चितापन देते हुए उन्होंने कहा कि हमारी दशा भी यीरुशलीम से या उसके निवासियों से भिन्न नहीं है। हमारा भविष्य भी अन्धकारपूर्ण ही है। अत: हमें चाहिए कि क्रूश की कथा पर, उसकी घटना पर विश्वास करें, उसकी गवाही दें। चूंकि वही हमारा धर्म है, वही हमारी मंजिल है।

बुड़जू इलाके की विभिन्न संघों के निर्देशकों ने संडे स्कूल, युवा संघ और माता समाज की महता एवं कर्त्तव्य पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आज हमारे बच्चों को धार्मिक शिक्षा नहीं मिलती है। अत: उन्हें, धार्मिक प्रक्रियाओं में या धार्मिक बातों में रुचि नहीं है। अत: हमें उन्हें धार्मिकता की ओर फेर लाना है उन्हें बाल्यावस्था से ही धार्मिक शिक्षा देना है।

परिवार में माँ का अपना विशिष्ठ स्थान है। चतुर माँ अपने परिवार की उन्नति, शोभा, शृंगार प्रतिष्ठा को गति प्रदान करती है। वह सम्पूर्ण परिवार की मालकिन की हैसियत से एक आदर्श परिवार का निर्माण करती है। इसी तरह महिला समिति कलीशिया को आदर्श बना सकती है। बच्चों में अनुशासन- शिक्षा आदि के प्रति प्रेरणा और जोश पैदा करके उन्हें कलीशिया के सच्चे कर्णधार बनने में सहायता दे सकती है।

युवा संघ, चूंकि एक शक्तिवान संघ है वह कलीशा के हर कामों में सहायता दे सकती है जिस प्रकार एक बेटा या बेटी अपनी माता या पिता की सेवा करते हैं। आज की इस कलीशिया में हमारे पंचों के कर्त्तव्य पर भी काफी प्रभावशाली व्याख्यान देते हुए यह बताया गया कि पंच न केवल प्रचारक या मंडली अधिकारियों की सहायता कर सकते हैं पर, वे मंडली के हर कामों में अधिकारियों की अगुवाई कर सकते हैं, मंडली को चुस्त और दुरूस्त बना सकते हैं।

इस शुभावसर पर मर्चा इलाका चेयरमैन पाद्री एस० सुरीन, द० पूर्वी अंचल स्कूल पर्यवेक्षक श्री जे० एस० तोपनो सचिव टकरमा इलाका युवा संघ श्री मसीह प्रकाश सुरीन, प्रो० एम० एस० हस्सा बिरसा कॉलेज खूंटी ये भी जन-समूह को संबोधित कर सुन्दर शिक्षाएं दीं और उन्नति तथा बढ़तो के लिये शुभकामनाएं दीं।

३० अक्टोबर शाम को शिक्षा तथा मनोरंजन के लिये The king of the kings और अनमोल मोती फिल्में दिखलाई गयीं। सामूहिक भजन और भजन होड़ से सम्मेलन को आलंकृत किया गया भजन होड़ के विजेताओं को अंचल अध्यक्ष पाद्री एन० भूईयाँ ने पुरस्कार दिया। पाद्री ई० होरो और श्री मुसारन तोपनो ने सामूहिक भजन को आकर्षक, लूभावना और दिलचस्प बनाने में कोई कसर बाकी नहीं रखा, फल यह हुआ कि पके बाल और काले बालों ने खुल कर इसका रसास्वादन किया।

सम्मेलन का मूल विषय=वह नगर के निकट आया और उसे देख कर उस पर रोया लूक १९ : ४१ रखा गया था।

पिता परमेश्वर को धन्यवाद हो कि उसने अमन चैन से सम्मेलन सम्पन्न कराया। संघ की ओर से उन तमाम प्यारों को धन्यवाद जो अथक परिश्रम करके सम्मेलन की सफलता में योगदान दिया। सुन्दर शिक्षा के लिये व्याख्यानदाताओं को शुक्रिया। साथ में उन अनेकों को भी धन्यवाद जो हमारी इस संघ से सहानुभूति रखते हैं। आप सबों से दीन प्रार्थना है कि हमारी इस संघ को आप अपने दैनिक प्रार्थनाओं में स्मरण करें कि यह बल पा कर नित नयी नयी ऊंचाईयां चढ़ सके। कलीशिया की अच्छी सेवकाई कर सके !!

सधन्यवाद

एन० पूरण प्र० बरजो

सचिव

Gossner Mission

कलोसियाई समाचार

रांची : पूर्व सूचित समाचारानुसार जर्मनी से एक दल नोबेम्बर माह के आरम्भ में रांची आये, दल में तीस के बदले पच्चीस ही मेहमान आ सके। पटना से रांची आने में काफी तकलीफ हुई।

१ला नोवेम्बर को रांची में शानदार स्वागत का आयोजन था, आशातीत भीड़ थी, खुशी थी, अतिथियों के आने में देर हुई, परन्तु जोश के कारण भीड़ घटी नहीं। क्रिस्त गिर्जे में ही छोटा कार्यक्रम आयोजित था; छोटा-नागपुरी प्रथानुसार स्वागत अच्छा एवं मेहमानों के लिये चिरस्मरणीय रहा। शाम को चाय पार्टी से उनका सत्कार किया गया, २रे नोवेम्बर को मिशन पर्व में मेहमानों ने खुल कर साथ दिया। विहान के गिर्जा-आराधना एवं दूसरी बेला के मीना बाजार में उन्होंने अपने उपस्थिति एवं सहयोग से लोगों के आनन्द एवं जोश को बढ़ाया। उपदेश, गीत, बातचीत एवं खरीद विक्री के कार्य में अपनी संगति का आनन्द भी बहुतों को दिया। ३रे नोबे. को जमशेदपुर का कार्य क्रम था। इसलिये कि वे पहले दिन के कार्यक्रम से थक गये थे अत: वहां पहुंचने में विलम्ब हुआ परन्तु फिर भी पहुँच कर रंगीले वातावरण का आनन्द लिया, वहां न्यू सीताराम डेरा की एकत्रित मंडली को भी अपने ढंग संवाद, परिचय एवं गीत से आनन्दित किया। वहां भोजन के बाद जो होटल में प्रबन्ध किया गया था. कारखाना भी देखने की सम्भावना दी गयी। शाम को सोनारी में कार्यक्रम चाय-पानी के साथ था, समय की कमी के कारण कुछ जल्दी बाजी हुई, परन्तु सब मिला कर कार्यक्रम अच्छा रहा।

४थे नोबे. को फूदी टी. टी. सी. में कार्यक्रम था--अपने ढंग का स्वागत क्रम एवं मंडली से मिलन-जुलन था। टी. टी. सी. के अन्तर्गत प्रशिक्षण काम, विद्यार्थी एवं शिक्षकों से भी अवगत कराया गया तथा भोजनोपरांत विदा मिली। रास्ते में लौटते बार हुलहुन्डु मंडली में रांची के इर्द-गिर्द की मंडलियों से भेंट। स्वागत का कार्यक्रम था जो संक्षिप्त पर सराहनीय रहा। उसी शाम को हटिया मेरीन डीजल भी देखने का कार्य-क्रम था।

५वें नोबे. को मेहमानों को टकरमा पहुंचाया गया। यह अनुमान लगाया जाता है कि सबसे बड़ी भीड़ यहीं थी। शानदार स्वागत कार्य-क्रम के साथ ही साथ उपहार का विशेष कार्य-क्रम था, सभों को उपहार मिले—पर सब से अधिक टकरमा जाने में ही थकित हुए। वहां के दवा-खाना की सेवा से वे विशेष प्रभावित हुए।

६वें नोवेम्बर को हजारीबाग जाना था बहुत मेहमान थक गये थे अत: थोड़ा हो दल वहां गया, दूरी और समय की कमी के कारण आना कानी हो रही थी, परन्तु वहां की तैयारी को ख्याल में रखते हुए कुछ लोगों ने अपनी इच्छा प्रकट की। रास्ते का दृश्य एवं वहां के लोगों का आनन्द और जोश ने मेहमानों के मनों को जीत लिया। शाम को रांची स्थानीय महिला समिति की ओर से प्रीति-भोज का आयोजन था, साथ संक्षिप्त कार्य-क्रम भी था और मेहमानों को उपहार भी दिये गये।

७वें नोबे. को गोविन्दपुर में प्रोग्राम था, रास्ते में दो जगह—जलटन्डा एवं करी में—मंडलियों द्वारा स्वागत कार्य-क्रम होने से पहुंचने में देर हुई फिर अतिथियों को पाकर या कहें या स्वागत पाकर सब की निराशा आनन्द में बदल गया। स्वागत के साथ ही साथ वहां के सांस्कृत कार्य-क्रम ने अतिथियों के लिये अच्छा मन बहलाव एवं आनन्द दिया। शाम को चाय के बाद विदाई मिली।

८वे नोबे. को ही यहां से कलकत्ता की ओर जाना हुआ, परन्तु पहली बेला हटिया भारी निगम के विभिन्न कारखानों को देखने का इन्तजाम बहुत मेहनत पा केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमति दिये जाने के कारण अनेक मेहमानों ने वहां जाना ही पसन्द किये। अनेक तो रांची शहर में बाजार करने भी गये।

बहुतों के जीवन में इतने मेहमानों को देखकर एक खाशा अनुभव हुआ, अतिथियों को भी अनेक अनुभव हुए। आशा है कि गोस्सनर कलीसिया को संगति का विशेष लाभ हुआ।

Gossner Mission

कोरोंजो : कोरोंजो इलाका कर्मचारियों का शिक्षा क्लास का आयोजन किया गया था जिसमें अनेक आवश्यक विषयों के लिये शिक्षक गण बुलाये गये थे इलाका के अपने शिक्षाओं के अतिरिक्त अंचल अध्यक्ष पा. एन. भुईयां, रेभ. आर. डांग तथा डा. सिंह आमंत्रित थे। (शिसि)।

सुन्दरगढ़ : नोवेम्बर माह में गोस्सनर कलीसिया के सुसमाचार–प्रचार क्षेत्र के कर्मचारियों का शिक्षा क्लास यहां लगभग एक सप्ताह के लिये आयोजित था कुल १७५ कर्मचारी विभिन्न क्षेत्रों से इकठ्ठे थे। कुछ आवश्यक सम्बन्धित विषयों के साथ गान–भजन, बात-चीत रिपोर्ट एवं उन पर के बहस से आनेवाले दिनों के लिये अनेक शिक्षा, सलाह एवं चितौनी आदि आदान–प्रदान हुआ। इस प्रकार का मिलन-जुलन आवश्यक दीखता है।

इसी अवसर पर सुन्दरगढ़ इलाका की ओर से मिशन पर्व का भी आयोजन था, स्थानीय युवा व सन्डे स्कूल दल की ओर से नाटक का अभिनय भी था।

गोविन्दपुर : नोवे. माह के अन्त में गोस्सनर बाइबल एवं बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्र के १५ छात्र-छात्राओं का दीक्षान्त सामारोह हुआ। इन्होंने दो वर्ष की प्रशिक्षण अवधि समाप्त की थी एवं अब वे कलीसिया की सेवा के निमित तैयार हैं।

नये छात्र–छात्राओं की बहाली जनवरी १५, १९७५ से करने का निर्णय भी प्रबन्धक समिति ने कर दिया है। (शिसि)।

हजारीबाग में जर्मन अतिथियों का स्वागत

प्रभु में प्रिये भाइयो तथा बहनों। आप लोगों को यह बतलाते हुए अपार हर्ष प्रकट हो रहा है कि जो अतिथि छोटानागपुर भ्रमण के लिये आये थे वे अपने कार्य क्रम के अनुसार दिनांक ६-११-७४ को हजारीबाग गये थे। वहां उनका हार्दिक स्वागत किया गया। गिरजा के सामने फाटक बनाया गया, फाटक बनाने में वहां के युवासंघ का योगदान था।

६-११ ७४ करीब ८ बजे भाई तथा बहन वहां जमा हुये वहां की संख्या तो ज्यादा नहीं है इस लिए ज्यादे लोग तो नहीं जमा हो सके। वहां एक अपर स्कूल है वहां के लड़के लड़कियां आकर जमाईत को और भी बढ़ा दिये।

अतिथियों का स्वागत् में युवा - संघ के भाई-बहनों ने खुब ही शानदार रुप से नाचा। जिसके अगुवे श्री सी० एम० होरो थे। युवा संघ के लड़के लड़कियाँ सुबह ८ बजे से ही स्वागत् के लिये ढोलक के साथ नाचने लगे। और जबतक अतिथि नहीं आये वे नाचते ही रहे।

जर्मन अतिथि करीब डेढ़ बजे हजारीबाग पहुंचे। डेढ़ बजे स्वागत् के बाद उनको गिरजा ले जाया गया। और वहां के लोगों से संक्षिप्त परिचय कराया गया। वे जर्मन भाषा में अपने परिचय बतलाये जिसे (महिला संघ सेक्रेट्री) श्रीमती मिंज (रांची) ने हिन्दी में अनुवाद कर हमें बताया और हजारीबाग इलाका का विवरण संक्षेप में (सेक्रेट्री) फिलीप मिंज (हजारीबाग) के द्वारा पूरा बताया गया। इसके बाद चाय पार्टी का प्रोग्राम था तत्पश्चात् बिदा कर दिया गया।

श्री हरुण खाखा
बी० एस० सी०
सेक्रेट्री-हजारीबाग इलाका
युवा संघ

टाटी-सिलवे :—कलीशा के भाई-बहनों को सूचित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि धर्म खोजक श्री पी० के० बालन मसीही प्रेम से प्रभावित हो कर आज दिनांक १७-११-७४ को टाटीसिलवे मण्डली में अपने चार-बच्चों सहित पवित्र बपतिस्मा के द्वारा मसीह को ग्रहण कर लिया है। यह गोस्सनर कलीशा के भाई-बहनों के प्रेम और परिश्रम का फल है।

प्रार्थना है कि यह मसीही घराना ईश्वर के प्रेम और अनुग्रह में बढ़ती जावे तथा ज्योति की गवाही के लिये अधिक सामर्थ पावे।

हिजकिएल खलखो
टाटीसिलवे
(राँची)

Gossner Mission

"मैं ज्योति हूं"

(Masca'an Barla)
D. U. Mission Boys Hostel
Hazaribagh

में ज्योति हूँ ज्योति देता हूँ,
देखो मैं ज्योति फैलाता हूँ,
दुनिया को उँजाला करता हूँ।

अंधकार में भटकने वालों को,
ज्योतित हो राह दर्शाता हूँ,
विभिन्न ठोकरों से बचाता हूँ।

पापी जग में जहाँ तुम हो,
जाति-जाति पर किरणों विखेरता हूँ,
प्रकाश से तुम्हें आलोकित करता हूँ।
मैं ज्योति हूँ॥

"तुम मेरे साथ चलो"

जीवन के दुर्गम, दुर्लभ,
ऊँच नीच की नालियों पर
कंकरीट की पट्टी चढ़ी हुई,
गलियों के पार
दुधिया, सफेद रोशनी में,
बिन छत का घर है,
नीचे सिमेंटेड फर्श है,
ऊपर आकाश कालिमा में डूबा,
कशमाकश से जुड़ा है,
प्रिये! तुम देखोगी कि,
ये खुला हुआ जीवन क्या है,
ये उघड़ा हुआ घर क्या है,
गर तुम्हें देखना हो तो,
तुम मेरे साथ चलो॥

डी० पी० इफ्राईम 'बेबस'
मिशन कम्पाऊँड
शाहपुर
बैतूल (म० प्र०)

-साहित्य और बच्चे-

बाल-अपराध एवं बुराइयों की चर्चा आज एक आम बात हो गयी है। हरेक माता-पिता चिंतित एवं परेशान हैं कि बच्चे उनके अधिकार से जाते रहे हैं। बच्चों को सही रास्ते में लाना मुश्किल हो रहा है। बच्चों का अपने माता-पिता का आदर तो दूर उनका भय भी जाता रहा है। प्रत्येक माता-पिता अवश्य चाहता है कि बच्चे अच्छे, चरित्रवान एवं "भय मानने वाले" मनुष्य बनें। लेकिन इसके विपरीत बच्चों की मनोवृति बुराई एवं अपराधपूर्ण होती जा रही है। आखिर क्यों?- इसका क्या कारण है?

माता-पिता अवश्य ही भले हों, अपने बच्चों को बहुत प्यार करते हों, आपका पारिवारिक जीवन अवश्य प्रार्थनालय हों, फिर भी हो सकता है आपके पास सभी कुछ होते हुए भी "भरपूरी का अभाव" हो। आप कहेंगे "भरपूरी का अभाव" क्या हो सकता है? 'हम बच्चों की सभी आवश्यक्ताओं का पूर्ण ध्यान रखते हैं और उन्हें किसी चीज की कमी नहीं होने देते। फिर यह "भरपूरी का अभाव" क्या है? बच्चे क्यों आज्ञाओं का उलंघन करते हैं? क्यों चोरी करते तथा झूठ बोलते हैं? हम उनकी संगति पर भी कड़ी नजर रखते हैं; फिर भी वे कैसे बिगड़ते जा रहे हैं!?"

"भरपूरी का अभाव" एक ऐसा अभाव है, जो उन पूर्तियों से ही उत्पन्न होता है जो, हम बच्चों के लाभ के लिए करते हैं, पर लाभ के बजाय उनकी हानि ही होती है। हो सकता है आप इस हानि का ध्यान नहीं दे पा रहे होंगे। आप उनकी संगति के प्रति तो पूर्ण जागरूक

Gossner Mission

हैं, लेकिन हो सकता है आप उनके साहित्य पर ध्यान नहीं देते होंगे। "साहित्य" एक मुख्य कारण है जो बच्चों के भविष्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। साहित्य का बच्चों के साथ वैसा ही सम्बंध है जैसे बीज का भरपूर अच्छे खाद के साथ। खाद के अभाव में पौधे समुचित रूप से नहीं बढ़ सकते हैं ओर मरियल, टेढ़ा-मेढ़ा पौधा अच्छे फल देने योग्य भी नहीं रह जाता। उसी तरह बच्चों पर भी साहित्य का प्रभाव होता है। आप कहेंगे— हम अपने बच्चों को साहित्य की कमी नहीं खलने देते। उन्हें अच्छी-अच्छी पुस्तकें देते हैं जिन्हें वे बड़े चाव से पढ़ते हैं।" यह बहुत अच्छा है। लेकिन आपको बच्चों के साहित्य पर ध्यान उसी प्रकार देना चाहिए जिस प्रकार आप अपने आदर्श के अनुसार पुस्तकों के चुनाव में ध्यान देते है। "हमें अपने लेखकों का चुनाव उसी प्रकार करना चाहिए जैसा हम अपने लिए हर परिस्थितियों के अनुकूल एक विश्वास योग्य मित्र का चुनाव करते हैं।" आज बच्चों की दुनियां में साहित्य की कमी नहीं है। बस कमी है ऐसे साहित्य की जो बच्चों को पूर्ण मानसिक स्वास्थ्य प्रदान कर सके, उनमें प्रेम, धीरज, संतोष एवं बड़ों के प्रति आज्ञाकारिता तथा आदर की भावना उत्पन्न कर सके। आज इस वैज्ञानिक युग में जब कि लोग अपनी योग्यता पर पूर्ण भरोसा करने लगे हैं, एक ऐसे साहित्य की आवश्यक्ता है जो बच्चों को 'परमेश्वर पर पूर्ण भरोसा की भावना" उत्पन्न कर सके।

आज बच्चों के पास बहुत सारी कहानियां, एवं रचनाएँ हैं लेकिन, उपरोक्त योग्यताओं के अभाव में वे उन्हें अच्छी तरह पढ़ने में सहायता नहीं दे पाते। बच्चे परमेश्वर के नजदीक होकर भी उससे बहुत दूर चले जा रहे हैं। बच्चे चूंकि नादान हैं, अपना भला-बुरा नहीं समझ सकते हैं। ऐसे समय में ही माता-पिता एवं अभिभावकों का कर्त्तव्य हो जाता है कि अपने मातृत्व एवं पितृत्व का पूर्ण एवं दूरदर्शिता के साथ प्रयोग करें। खृष्टियान होने के नाते तो यह और भी महत्वपूर्ण कर्त्तव्य हो जाता है कि आप अपने बच्चों को सिखाएँ और उनकी सहायता करें लेकिन अगर खुद माता-पिता निश्चित रहें, अपने को अनुशासन (न्याय एवं धर्म) में न रख सकें तो बच्चों को उनकी भलाई में कही हुई बात कुछ भी प्रभाव नहीं डाल सकती। इसलिए तो बाइबल कहती है-"तुम मेरे ये वचन अपने-अपने मन और प्राण में धारण किये रहना और तुम घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते-उठते, इनकी चर्चा करके अपने लड़के बालों को सिखाया करना" (व्यवस्था० ११:१८:१९)। जिस तरह एक छोटे पौधे को सीधा बढ़ने के लिए आरम्भ में ही लकड़ी के साथ सीधा बांध दिया जाता है; उसी प्रकार बच्चों को बाइबल रुपी लकड़ी से उनकी बाल्यावस्था में ही बांध देना चाहिए ताकि वे टेढ़े-मेढ़े न बढ़कर 'परमेश्वर का भय एवं आज्ञाओं को मानने वाले' बन सकें। अतः "लड़कों को शिक्षा उसी मार्ग की दे, जिसमें उसको चलना चाहिए: वह बुढ़ापे में भी उससे न हटेगा (नीतिवचन २२:६)।"

इसके विपरीत मसीही कलीशियाओं में इन बातों की पूर्ण अवहेलना देखी जाती है। बच्चे किस प्रकार की पुस्तकें पढ़ते है, इसकी उपेक्षा की जाती है। बच्चों के हाथों में ऐसी-ऐसी कहानियां एवं कॉमिक्स की पुस्तकें देखी जाती हैं जो गंदे चित्रों एवं भद्दी मजाकों से पूर्ण होती हैं। उनमें 'राजा-रानी' 'भूत-प्रेत,' 'जादू,' 'चोरी-डकैती', 'युद्ध-हत्या' आदि अशिक्षाप्रद कहानियाँ भरी होती हैं। ये न बच्चों को मानसिक रुप से विकसित ही कर सकती हैं, और न उनका नैतिक विकास ही हो पाता है। प्रेम, सहानुभूति के विपरीत उन्हें क्रोध, घमण्ड, घृणा, लोभ आदि ऐसी बुराइयों की ही प्रेरणा मिलती है। बहुत से माता-पिता बच्चों को ऐसे ही छोड़ देते हैं। बच्चे किस प्रकार की पुस्तकें पढ़ा करते हैं इन पर उनका कुछ भी ध्यान नहीं जाता और बच्चे रेगिस्तान के उस कंटीली झाड़ियों की तरह बढ़ जाते हैं, जिनकी लुभावनी छाया तो पथिकों को आकर्षित करती है पर, आराम करने के ख्याल से आये पथिकों को दुःख पहुँचाते हैं। बहुत से माता-पिता बच्चों को इतना अधिक प्यार-दुलार देते हैं कि वे एक छोटी परन्तु महत्वपूर्ण शब्द "नहीं" भूल जाते हैं; और बच्चों की सभी मांगों की पूर्ति करते चले जाते हैं। यही बच्चे बाद में जासूसी, प्यार-भरा उपन्यास तथा अन्य तरह-तरह की गंदी पुस्तकें पढ़ना आरम्भ कर देते हैं, जिनका उनके चरित्र पर

Gossner Mission

बुरा प्रभाव पड़ता है; और इसका परिणाम माता-पिता को लज्जा एवं दु:ख पहुँचाती है। "छड़ी और डांट से बुद्धि प्राप्त होती है; परन्तु जो बच्चा योंही छोड़ा जाता है (उसके अच्छाई-बुराई पर ध्यान नही दिये जाते हैं) सो अपनी माता की लज्जा का कारण होता है"(नीतिवचन २९:१५:१७)। अत: माता-पिता एवं अभिभावकों को बच्चों के लिए साहित्य के चुनाव में बुद्धिमानी से काम लेना चाहिए। बच्चों को उनके भरोसे एवं उनके ही भाग्य पर नहीं छोड़ देना चाहिए। उन्हें गलत ढ़ंग की एवं गंदी पुस्तकों से पूर्ण रक्षा करनी चाहिए।

आप अपने बच्चों के लिये अच्छी-अच्छी शिक्षाप्रद पुस्तक जुटाते तो हैं पर निश्चिंत हो जाते हैं। इतना ही काफी नहीं है। बच्चों पर परिवार के वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है। बच्चों को आप मिठाई खिलाते होंगे, और खुद नमकीन-तीता वस्तु खाते होंगे। पर मीठी-सुन्दर वस्तु होते हुए भी बच्चे आपके वस्तुओं की ओर ही आकर्षित होंगे, क्योंकि वह उनकी वस्तु से भिन्न है। फिर वे आपकी वस्तु को भी प्राप्त करना चाहेंगे और अगर आप उन्हें नहीं देते हैं तो, वे चुपके से उसे प्राप्त कर उसके स्वाद को जानना चाहेंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि आप बच्चों को बाइबल संबंधी पुस्तकें पढ़ने को दें और खुद उपन्यास, फिल्मी पत्रिकाएँ पढ़ें तो वे कदापि बाइबल नहीं चाहेंगे। फिर ऐसे में आप उन्हें डरा-धमका कर पढ़ा भी नहीं सकते, क्योंकि वे मानसिक रूप से और भी बिगड़ जायेंगे। किसी ने ठीक ही कहा है —"कोई व्यक्ति दूसरे पर शासन करने के योग्य नहीं कर सके।" अर्थात बच्चे तभी अच्छे स्वभाव के हो सकते हैं जब कि उनका परिवार अच्छा स्वभाव का हो, अच्छी पुस्तकें पढ़ते हों। फिर माता-पिताओं को यह भी ध्यान में रखना होगा कि कि उनके बच्चों से संगति रखने वाले बच्चे कैसी पुस्तकें पढ़ते हैं।

हाल ही की बात है। जबलपुर के एक बड़े डाकखाने में हत्या एवं चोरी की घटना से सभी जानकार होंगे। इस अपराध में चार लड़के शामिल थे। उनमें से एक पादरी का लड़का भी था। वे चारों एक ही रात में धनी बनने की कल्पना संजोये थे; और तब उन्होंने योजनानुसार डाकखाने को लूटने का प्रयास किये। लेकिन वे अपनी योजना में सफल नहीं हो पाये क्योंकि उस दिन डाकखाने में पैसा नहीं था और इसमें एक कर्मचारी की जान भी चली गयी। पुलिस को ऐन-मौके सूचना मिल जाने के कारण चारों पकड़े गये। बाद में उनके बारे में पता चला कि वे चोरी-डकैती से संबंधित विभिन्न पुस्तक पढ़ा करते थे और उसी प्रकार की फिल्में भी देखा करते थे। इन्हीं साहित्य के प्रभाव ने उन्हें अपराध करने को प्रोत्साहित किया। हो सकता है उनके माता-पिताओं ने अपने बच्चों की संगति एवं वातावरण पर पूर्ण ध्यान रखा होगा; लेकिन आरम्भ से ही उनके साहित्य के प्रति अवश्य ही उपेक्षा की गयी होगी। इसका परिणाम यह हुआ होगा कि वे बड़े होकर और भी तरह-तरह के अपराधपूर्ण उपन्यास पढ़ने लगे जिनसे उनका मानसिक ह्रास एवं नैतिक पतन हुआ और माता-पिता को दु:ख एवं लज्जा उठानी पड़ी। इसी तरह आज समाज ऐसी घटनाओं से भरपूर है जिनका कारण गलत साहित्य ही देखा जा रहा है। बहुत से लड़कों को मैं ने कहते सुना है कि "जासूसी उपन्यास पढ़ने से बुद्धि बढ़ती है। उसमें समस्याओं को इस प्रकार सुलझाया जाता है कि बुद्धि चकरा जाती है।"—लेकिन कैसी बुद्धि ? - कैसा ज्ञान ? उसमें तो लेखक खुद कभी अपराधी बन जाता है तो कभी जासूस बन जाता है। उसमें न कुछ वास्तविकता होती है न बुद्धि चकराने वाली बातें। बल्कि लेखक काल्पनिक गुत्थियों को उलझाता-सुलझाता एक ऐसी जाली बना डालता है कि पढ़ने वाले खुद उसमें मानसिक रूप से फँस जाते हैं और उनको अपराध करने का प्रोत्साहन मिलने लगता है।

आज बच्चों का सच्चा एवं उचित विकास अच्छी पुस्तकों पर निर्भर करता है। बच्चों की दुनियां में तो पुस्तकों की भरमार है पर अच्छी पुस्तकों की भरमार नहीं जो लड़के-लड़कियों के सामने सच्चा आदर्श प्रस्तुत कर सके। अगर ऐसा होता तो, आज सामाजिक पुस्तकें, तरह-तरह के उपन्यास बाजार में देखने को मिलती हैं जिनसे समाज में अवश्य ही सुधार आया होता, समाज में बुराइयाँ नहीं बढ़ने पाती। अगर उनमें सच्चा आदर्श

Gossner Mission

होता तो लड़के-लड़कियां अवश्य ही अपने आपको आदर्श चरित्र में ढाल सकते, उनका मन बेचैन न होता। कहने का तात्पर्य यह है कि ये बनावटी और काल्पनिक आदर्श बच्चों के हृदय की गहराइयों को छूने में असमर्थ हैं, जीवन के उद्देश्यों को बतलाने में गूंगे हैं। बच्चे ऐसी बनावटी आदर्श तथा जीवन की बनावटी समस्याओं को कभी ग्रहण करना नहीं चाहेंगे। एक बार जब बिली ग्रेहम भाषण देकर विद्यालय से लौट रहे थे, तब छात्र-छात्राओं की भीड़ ने उनसे कहा—"हमलोग यहाँ इसलिए हैं क्योंकि आप जीवन के बारे बात करते हैं और जिसके बारे में हमलोग जानना भी चाहते हैं। हमलोग यह जानना चाहते हैं कि जीवन का किस प्रकार सामना करें।" स्पष्ट है कि लड़के-लड़कियों को बनावटी जीवन समस्याओं संबंधी उपन्यासों, कहानियों से सही मार्ग दर्शन नहीं मिल सकता। आवश्यकता है ऐसे साहित्य की जो ठोस है एवं सही मार्गप्रदर्शन कर सकती है।

यही आवश्यकता चुनाव की समस्या खड़ी कर देती है कि सही पुस्तकों का चुनाव कैसे करें?— कौन पुस्तकें अच्छी हो सकती हैं?'— और इसी जगह माता-पिता थोड़ी-बहुत गलती कर बैठते हैं; क्योंकि उनका आधार प्रभु यीशु मसीह नहीं होता। माता-पिता बच्चों के शरीर को तो चिंता करते हैं पर उनकी आत्माओं को अछूता रखते हैं। आत्मा को भी उतनी ही देख-भाल की आवश्यकता है जितनी शरीर को। इसे अच्छी संगति और परमेश्वर को सहभागिता की आवश्यकता है। इसे आराधना, शांति और मनन की आवश्यकता है। आत्मा की आवश्यकता को प्रतिदिन पूरा न करने से, और इसे रोज-रोज कसरत न कराने से, यह दुबली और कमजोर हो जाती है। तब यह असन्तुष्ट, व्याकुल और अशांत रहती है। और तब इस आत्मा की चीख-पुकार और लालसा को दबाने के लिए बच्चे तरह-तरह के अपराध एवं बुराइयां करते हैं। अत: बच्चों के लिए ऐसी साहित्य का चुनाव करना चाहिए जो उनकी आत्मिक आवश्यकताओं को पूरा कर सके। यह साहित्य बाइबल ही हो सकती है। इसमें वर्णित सुन्दर-सुन्दर सच्ची कहानियों से संबंधित बहुत सी पुस्तकें हैं जो बच्चों के लिए बड़े उपयोगी हैं। यीशु के जीवन से संबंधित कहानियां है जो बच्चों को सत्य के नजदीक लाता है। इन साहित्यों से मन की शांति ही नहीं जो उन्हें विभिन्न परेशानियों तथा निराशाओं से बचाये रखती हैं, बल्कि आत्मिक शांति भी मिलती है जो उनके अंग-अंग में समा जाती है और जीवन के कठिन समयों में उनकी सहायक होती है। इसके अतिरिक्त और भी अन्य-अन्य धार्मिक कहानियां भी उपलब्ध हो सकती हैं जो, बच्चों में निर्मल ज्ञान, प्रेम, धीरज, सामर्थ तथा सहानुभूति उत्पन्न करती हैं एवं परमेश्वर का भय और भरोसा रखना सिखलाती हैं। अच्छे साहित्य से ही बच्चों में सुधार हो सकती है। आप कहेंगे—'इसके अतिरिक्त और जो सामाजिक पुस्तकें हैं, कहानियां तथा उपन्यास हैं वे क्या बुरी हैं? वे क्या बच्चों के सामने आदर्श शिक्षा प्रस्तुत नहीं करते?"—स्पष्ट उत्तर है—नहीं। क्योंकि एक तो ये काल्पनिक और बनावटी होते हैं, दूसरी अपूर्ण होती हैं। ये हृदय में गुदगुदी तो उत्पन्न करते हैं, पर उनके कोमल तारों को झनझना नहीं पाते। ये दिल को थोड़ी-बहुत संतावना तो देती हैं, पर पूर्ण भरोसा नहीं दिला सकती हैं। बाइबल एक ऐसा सम्पूर्ण पुस्तक है जिसमें सारे समस्याओं का हल है। इसमें ज्ञान-विज्ञान की सभी बातें प्राप्त हो सकती हैं। यह एक ऐसा पुस्तक है जो समाज में जागृति उत्पन्न कर सकती है, सही मार्गप्रदर्शन कर सकती है तथा विश्व-बन्धुत्व की भावना को सफल बना सकती है। अत: माता-पिताओं को अपने बच्चों की संगति के साथ-साथ उनके साहित्य पर भी पूर्ण ध्यान देना चाहिए।

—समसोन लकड़ा 'शाम-सुबहा"
जी० ई० एल० चर्च,
बावू लाईन, राँची।

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

पृष्ठ ५ का शेषांश)

जन्म पर्व बाद २रा एतवार

मत्ती १६:१-४

फरीसी लोग व्यवस्था के पक्ष में थे और स्वर्गदूत तथा देह के जी उठने पर विश्वास करते थे। सदूकी बैबल के लिखित वचन पर विश्वास करने तथा पुरुत्थान एवं स्वर्गदूतों पर विश्वास नहीं करते थे। फरीसी लोग किसी प्रकार के राजनैतिक दल के सदस्य नहीं थे और सभी प्रकार के सरकार की अधीनता स्वीकार करते थे। सदूकी लोग धनी वर्ग के थे और रोमी सरकार को सहयोग देने के लिये तैयार थे। परन्तु यीशु का विरोध करने में वे एक साथ थे। वे चिन्ह चाहते थे। यीशु ने उन से यों कहा—

परमेश्वर का चिन्ह यीशु आप ही है।

१ यीशु को देखो और पश्चाताप करो —क्योंकि यीशु परमेश्वर का सुसमाचार है।

२ यीशु कब्र में गाड़ा जायगा :— वह मर जायगा। उसकी मृत्यु सारे जगत के लोगों के लिये होगा। जो यीशु पर विश्वास करेगा वह जीवन पावेगा।

३ यीशु ईश्वर का बचन है :— देखो यीशु में ईश्वर का बचन प्रगट है। परमेश्वर के प्रेम का प्रचारक यीशु आप ही है।

यीशु में ही परमेश्वर का चिन्ह ढूंढ़ें और हम सन्तुष्ट हो जावें (मत्ती १२:३८-४०)।

एक भटका राही···

दिसम्बर अक से आगे

रेखा के करीब आकर न जाने क्यों ? मेरे जीवन में कुछ तहलका सा मच गया। उसके करीब रहकर मुझे जीवन में पहली बार संतोष और शांति का अनुभव हुआ। मैं अक्सर उनके घर आने-जाने लगा। उनके मां-बाप से मिला। उनका व्यवहार मुझे मोहने लगा। और मुझे अपने अन्दर कुछ परिवर्त्तन सा महसूस होने लगा। जी चाहता था उन्हीं के यहां सारा पल गुजार दूं।

मैं यह जानते हुए भी कि मैं रेखा के साथ अन्याय कर रहा हूँ। लेकिन रेखा·····कभी मुझसे बुरा बर्ताव नहीं की। रेखा अक्सर मुझसे यही कहा करती थी। विजय तुम नाम के मसीही हो, न ही कभी चर्च जाते हो, न ही बैबल पढ़ते हो ! तुम्हारे जैसे लड़कों के कारण ही तो आज हमारा मसीही समाज दिन प्रतिदिन पतन के गर्त की ओर बढ़ता ही जा रहा है।

मैं हँसकर टालते हुए यही कह देता—अरे छोड़ो ये बात, तुम तो अकेले ही मुझको बदनाम करने लगी। शायद ही आजकल कोई शरीफ लड़का तुम्हें मिलेगा जो एकाध बार चर्च जाता होगा। और हाँ यदि मैं अकेला ही चर्च न जाऊं तो क्या, सारा मसीही समाज बदनाम हो जायेगा ?

यह बात सुनकर रेखा का चेहरा गंभीर हो चला। दबी सी आवाज में बोली—हाँ विजय एक के कारण भी, विजय तुम खुद ही सोचो, यदि तुम ही अकेले प्रभु को अपना जीवन दोगे तो शायद एक के त्याग से बहुत लोग जो अंधकार में पड़े हैं, सच्ची ज्योति को देख पायेगें। बोलो, ये सच नहीं।

समय का चक्र अपनी गति से घूमता रहा। इस कश्मकस दुनियां में भला मन को कौन कब कैद कर सकता है। उस वक्त मैं उमगों और इच्छाओं से भरी हुई उम्र से गुजर रहा था। हर कदम कदम पर एक-एक इच्छा जागती थी, जिसे झूठलाया नहीं जा सकता था।

शाम का वक्त था। मन्द-मन्द हवा चल रही थी। मैं अपने ख्यालों की दुनियां में खोया हुआ सा रेखा के घर पहुँचा। देखा, रेखा कुछ बुझी-बुझी सी नजर आ रही थी। मैं उसकी खामोशी को तोड़ते हुए कहा—रेखा, आज तुम इतनी खामोश क्यों हो ? चलो कहीं घूम आयें, शायद तुम्हारा मन बहल जाये। नहीं विजय, आज मेरा जी कहीं घूमना नहीं चाह रहा है।

रेखा ऐसा भी क्या ? लगता है आज तुम मुझसे कुछ छिपा रही हो ?

विजय मैं भला तुमसे क्या छिपाऊं, जो है सो तुम्हारे सामने है लेकिन विजय···मुझे ये नाटक कब तक खेलना पड़ेगा, अब मुझसे नहीं होगा।

Gossner Mission

रेखा, यदि बुरा न मानो तो एक बात कहूंगा।
हाँ कहो, मैं भला तुम्हारी बातों का बुरा क्यों मानूं।
सच रेखा, तुम्हारे करीब आकर मुझे ऐसा लगता है! जैसा मेरी खोयी हुयी मंजिल मिल गई है जिसे मैं खोकर कभी शांति नहीं पा सकता और रेखा तुम ये जानकर भी अनजान हो? रेखा अब मुझे अपनों से दूर मत करना। मुझे अपना लो।

विजय ये तुम क्या कह रहे हो? तुम इन्सान नहीं हो विजय,··· तुम एक गरीब, मजबूर लड़की की···आत्मा को चन्द सिक्कों के सहारे मोल लेना चाहते हों? विजय··· मैंने तुम्हें एक दोस्त और भाई का प्यार दिया। आखिर क्यो तुम मेरे पवित्र स्नेह को कंलकित करना चाह रहे हो? रेखा मुझ पर तरस खाओ, रेखा काश तुम···रेखा बीच में ही बोल पड़ी नहीं···कभी नहीं, बोलो विजय क्या··· पत्नी बढ़कर बहन का प्यार नहीं।
बोलो विजय····· चुप क्यों हो गये?
मैं कुछ कह न सका, मेरी पलकें अपने आप झुक गयीं। पांव तले धरती खिसकने लगा और मैं बिना उत्तर दिये घर की ओर लौट पड़ा।

× × × × ×

उसके बाद कई दिन बीत गये पर मैं कभी रेखा के घर की ओर नहीं गया। उस रात मुझे नींद नहीं आई। जिन्दगी में यही मेरी पहली हार थी। अक्सर दुनियां में इसी बाजी से हरनेवाला मौत ही खोजता है इसलिये मैं भी बढ़ा जा रहा था मृत्यु की ओर हमेशा-हमेशा के लिये प्रतिशोध की आग में जल जाना चाहता था। मुझे अब अपने जीवन से कोई चाह नहीं थी। लेकिन कौन सी शक्ति मुझे बार-बार ये काम करने से रोक रही थी।

मैं स्वयं को रोक नहीं पा रहा था। दूर दूर तक जीवन हीन लग रहा था। मेरा चेहरा घोर निराशा से लिप्त था मेंरे नयनों के समक्ष चलचित्र की भांति मेरे सब पाप नाच रहे थे। जीवन की अनेक घटनाएं साकार हो उठी और मैं इन बुने हुए विचारों के जाल में उलझता सा चला गया। समझ नहीं आ रहा था। क्या करूँ? क्या न करूँ? मैं अपनी भावनाओं पर अधिकार करने का प्रयत्न कर रहा था। इधर मानसिक समुन्द्र में अशान्ति का भारी तूफान उठ रहा था। मेरे हृदय में अग्नि भड़क रही थी। और मैं उसमें जलने लगा। रेखा के कहे हुए शब्द बार-बार मेरे दिल में गूँज रहे थे.····· तुम इन्सान नहीं हो विजय ....तुम गरीब ....आत्मा को··· चन्द सिक्कों में·····मोल लेना चाह रहे थे। मेरे मन को धक्का सा लगा। किन्तु कुछ क्षणों में ही मेरा हृदय गद्गद् हो उठा। मेरी अन्तरात्मा चिला उठी···विजय... रेखा जैसी बहन को पाकर भी ये तुम क्या सोच रहे हो? जी चाहता था रेखा के करीब जाकर मांफी मांग लूं, लेकिन साहस नहीं कर पा रहा था। मन भी अजीब वस्ती है। मैं अपने को एक अपराधी सा महसूस करने लगा और अन्दर ही अन्दर घुटने लगा।

हर इन्सान के लिये यही युवावस्था ही निर्णय का समय है जो गिर जाता है वो कभी भी उठ नहीं सकता है। मैं इसी निर्णय के राह पर आकर ठहर गया।

सूरज डूब चुका था। चारों ओर अमावस्या का अंधकार फैलता ही जा रहा था और मैं बीते पल के बारे में सोच रहा था। कभी-कभी रेखा के उपर क्रोध आता, तो कभी प्यार। समझ नहीं आ रहा था क्या करूं? अचानक मेरे दरवाजे पर दस्तख हुई। मैं जैसे ही दरवाजा खोला। देखा, रेखा के पापा खड़े थे। बहुत घबराये हुये नजर आ रहे थे।
मैंने कहा— आप, इस वक्त।

हाँ बेटा विजय, अचानक रेखा की तबियत खराब हो गई है चलो, जल्द चलो। मैं जल्दी से गैरेज से कार निकाला और उसके पापा के साथ रेखा की घर की ओर चल पड़ा।

रेखा का शरीर तेज ज्वर से जल रहा था। लेकिन उसकी भोली आंखों में अब भी वही चमक थी। मुझे देखते ही रेखा ने बहुत प्रेम से कहा— विजय तुमने आज तक मुझे कोई जबाव नहीं दिया।

मैं चाहकर भी कुछ नहीं कह पा रहा था। मैं शून्य नेत्र से रेखा की ओर ताकने लगा। अनायास मेरे मुंह से निकल पड़ा— रेखा मुझे माफ कर दो, मैंने तुम्हारे पवित्र स्नेह को कलंकित करने की कोशिश की। मैं दो आत्मा को मिलने से जुदा किया, मैं पापी हूँ रेखा, मैं पापी हूँ।

Gossner Mission

विजय···नहीं विजय ऐसा कभी नहीं कहो, भूल जाओ उन गुजरी हुई बातों को, मर्द रोते नहीं बल्कि आंसुओं को चुपचाप पी लेते हैं। गलती का प्रायश्चित ही तुम्हारी सबसे बड़ी सजा है।

रेखा मैं अब तुम्हारे भाई कहलाने के काबिल नहीं हूँ तुम्हारे स्नेह में मैं दब गया हूँ। मुझे क्षमा कर दो, मैं अपने पाप स्वीकार करता हूँ।

विजय तुम मुझसे माफी क्यों मांग रहे हो? खुदा से माफी मांगो। जिसते तुम्हारे और हमारे पापों के लिये क्रूश पर कुर्बानी दी। मैं तड़प उठा, मुझे बचा लो, मुझे रोशनी दो, जिन्दगी दो, रेखा पाप की जिस आग में, मैं आज जल रहा हूँ उसका दर्द असहनीय है मुझे वह अनष्ट शांति दो जो तुम्हारे दिल में बसी है।····· मेरी कुछ मदद करो रेखा।

विजय····· यह कहकर रेखा बेहोश हो गयी।

अचानक मेरी अन्तरात्मा कह उठी। विजय रेखा ने तुम्हारी खुशी के लिये बहुत बड़ा त्याग किया, स्वंय रोकर तुझे हंसाया। क्या तू उसके लिये कुछ नहीं कर सकता? तुझे रेखा के एहसान का बदला चुकाना ही होगा····· चुकाना होगा।

मैं इस अन्धकार भरी रात को चीरते हुये प्रकाश की घर की ओर चल पड़ा। प्रकाश के कमरे से इस वक्त भी रोशनी आ रही थी। मैं प्रकाश के दरवाजे के पास पहुंचकर उसका दरवाजा खटखटाया। प्रकाश अपने कमरे से निकला। मुझे इस वक्त अपने दरवाजे पर खड़ा देख कर घबड़ा गया।

विजय तुम! वह मुझसे लिपट गया। प्रकाश आज मैं तुम्हे लेने आया हूँ चलो प्रकाश। और प्रकाश मेरे साथ रेखा की घर की ओर चल पड़ा। आगे मैं कुछ न कह सका।

जैसे ही हमदोनों ने रेखा के घर में कदम रखा। देखा डाक्टर निराश रेखा के पास खड़े थे। प्रकाश को देखते ही रेखा के आंखों में आंसू छलक आए।

रेखा ने कहा—मुझे माफ कर दो। मैंने तुम्हें बहुत दुःख दिया। मेरी इच्छा थी कि जाने से पहले तुम्हें एक पल देख लूँ। प्रकाश...मैं तुम्हारे दोस्त और अपने भाई विजय को तुम्हारे साथ छोड़कर जा रही हूँ। तुम अपने दोस्त को गलत मत समझना। उनकी सारी बुराईयों को भूलकर उसे अपना लो, क्योंकि हमारे मुक्तिदाता ने भी हमारी बुराईयों को भूलकर हमें अपनाया है और मेरा हाथ प्रकाश के हाथों मे देकर सदा के लिये दुनिया से चल बसी और दूसरे ही क्षण रेखा का निर्जीव शरीर रह गया। वह चली गई। खो.....गई.....। अब भी मेरा हाथ प्रकाश के हाथ में था मैं फूट-फूट कर रोने लगा।

प्यार लुट गया था.....इन्सान बिक चुका था ईमान जाता रहा। कहाँ... मुझे कुछ पता नहीं।

× × × × × ×

धरती पर जब सुबह आती है तो शाम भी अवश्य आती है। प्रकृति का यही नियम है। मनुष्य के जीवन में भी कुछ ऐसा ही होता है, क्योंकि वह भी प्रकृति का एक अंग है। हर जन्म के साथ मौत भी आते हैं। जीवन में जन्म–मरण का जोड़ तो लगा ही रहता है।

विजय अब बस करो, बहुत हो गया।

मेरे आंसू चाहकर भी रूक नहीं पा रहे थे। मैं अपने कर्मों के बन्धन में उलझता सा चला जा रहा था। दिल टूट–टूट कर चूर-चूर हो चुके थे। मेरे होंठ फड़क उठे—प्रकाश, मुझे माफ कर दो। तुमने मेरे कारण जो त्याग किया। उन्हें मैं कभी भी भूल नहीं सकता। तुमने मुझे सच्चे हितैसी का प्यार दिया। जिसके बोझ से मैं दब चुका हूँ तुम मरते दम तक मेरे दोस्त ही रहोगे।

नहीं विजय..... मैं तो एक सांसारिक दोस्त हूँ जो तुम्हें कभी भी इस संसार में अकेला छोड़कर जा सकता हूँ लेकिन विजय आज मै तुम्हें ऐसे दोस्त के पास ले जाना चाहता हूँ जो तुम्हें कभी भटकने नहीं देगा। वो तुम्हें कभी धोखा नहीं देगा। आधी राह में भी नहीं छोड़ेगा। तुझे सच्ची शांति और पापों की क्षमा। क्या तुम ऐसे दोस्त को अपना नहीं चाहोगे?

मैं सिर्फ इतना ही कह सका — प्रकाश काश मैं तुम्हें पहले पहचान पाता। आगे कुछ कह न सका। आंखों में आंसू छलक आए।

विजय पहले पहचानते भी कैसे? उस वक्त हम दोनों की राहें जुदा थीं। विजय मैं जानता हूँ, आज तुम किस

Gossner Mission

परिस्थिति से गुजर रहे हो। तुम जिन्दगी के उस मोड़ पर खड़े हो, जहां से दो राह नजर आ रही हैं। एक ओर जिन्दगी तो दूसरी ओर मौत।

विजय जीवन की समस्याओं के आगे घुटने टेकना तो बुजदिल है। इस जिन्दगी मैं हारना नहीं, जीना भी एक कला है और यदि जीवन में कुछ खोकर किसी को कुछ दे सको, वही जीवन है यही जीवन की सफलता है।

आज ही चुन लो विजय कि तुम्हें किस मार्ग में जाना है क्या ये मौत, तुम्हें कभी शांति दे सकेगी ?

मैं तड़प उठा कभी नहीं.....प्रकाश कभो.....नहीं शांति दे सकती। कभी नहीं.....

मिस नितिर तारा तोपनो
जमशेदपुर—६

धन्यवाद आप का ग्राहक चन्दा [३० नोवेम्बर, ७४ तक] मिला।

1. Cat. Titus Tete
2. Cat. J. Kerketta
3. Mr. Barnabas Dhan
4. Mr. Namza Horo
5. Mr. Niral Dang
6. Mr. B Dangwar for 14 Copies
7. Mr. Junathan Lugun for2,
8. Mr. P. P. Mundu
9. Mr. C. Kalyan Hemrom
10. Rev. C. D. Kujur
11. Rev. W Khalkho fo 40,
12. Mr. Urbanus Kujur
13. Shri Sudarsahan Kandir
14. Pracharika Esran Herenz
15. Mr. XBN Topno for 16
16. Mrs Santoshi Verma
17. Mr. Daniel Samad
18. Mr. Yakub Kandulna
19. Mr. P. S. Kujur
20. I. D. Kujur
21. Shri S. Kandulna
22. Shri Benjamin Tirkey
23. Miss Bahalen Kerketta
24. Mr. Junas Kullu
25. Mr. Michael Umbulan Purti
26. Mr. Zachariah Baba
27. Mr. Niarjan Topno
28. Shri Emmanuel Lugun.
29. Dr. Anandmasih Guria for 2,
30. Mr. H. Dahanga for 3.

रजिस्टर्ड नं. आर. एन. सी. ४
वर्ष—६५ राँची, जनवरी १९७५, संख्या नं.—२

Edited and published by Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G.E.L. Church and Printed at G. E. L. Church Press, Main Road, Ranchi / Bihar.

Gossner Mission

धर्मबन्धु

रजिस्टर्ड नं॰ आर॰ एन॰सी॰४

वार्षिक मूल्य ५ रु०

वर्ष — ६५ रांची, जनवरी १९७५ संख्या नं० — १

EINGEGANGEN
- 5. MAI 1975
Erledigt .....

क्योंकि उसकी परिपूर्णता से हम सब ने प्राप्त किया अर्थात अनुग्रह पर अनुग्रह।

योहन (१ : १७)

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

Editor & Publisher

Pramukh Adhyaksh,

Associate Editor

Rev. C. S. R. Topno

Editorial Committee

Rev. M. Tete

Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय		—	३
उपदेश की तैयारी	रेभ टेटे	—	४
पवित्रात्मा का कार्य		—	६
मिशन पर्व		—	७
मैत्री संघ का चमत्कार		—	८
संयुक्तइलाका युवा संघ		—	९
कलीसियाई समाचार		—	११
मैं ज्योति हूँ (कविता)		—	१३
तुम मेरे साथ चलो (कविता)		—	१३
साहित्य और बच्चे		—	१३
एक भटका राही		—	१७
धन्यवाद आप का ग्राहक चन्दा मिला		—	२०

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणत: १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य पांच रूपये हैं।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें ।

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये पते पर ही भेजें। एसोसिऐट एडीटर, घरबन्धु; जी० ई० एल० चर्च [के० एस० एस० ऑफिस], राँची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता० तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इसमें बांयी ओर 1½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेजें

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रखनी चाहिये, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगा।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालु की जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १०-ता० के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवत: ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छपे जाते हैं; ग्राहक चन्दा के बाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवत : डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित कुछ लिखा लें।

Gossner Mission

सम्पादकीय

"स्थिरता"

समय आता है, फिर चला जाता है; नया वर्ष, नया महीना, नया दिन और इसी के साथ न जाने और कितनी चीजें और परिस्थिति आये दिन आती है और चली जाती है, मनुष्य भी अपने समय में अपने तरह का जीवन बिताता है पर वह भी जाता रहता है; इसी प्रकार राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक उत्थल-पुत्थल होते हैं, फिर नयी परिस्थिति आ जाती है, पर एक स्थिरता है-वह है परमेश्वर की ओर से, उसकी भलाई और करूणा सदा एक सी बनी रहती है (भ० स० २३:६)।

इस नये पथ प्रदर्शक पद के साथ ही हम नये साल में प्रवेश करते हैं। नये साल में भी अनेक रद्दोबदल आयेंगी, नयी परिस्थितियां और नयी समस्याएं भी आयेंगी, पर इनके होते हुए भी परमेश्वर की स्थिरता साथ में है। ये बदलाहट, और परिस्थितियां चाहे व्यक्तिगत हो या पारिवारिक या कलीसियाई या राष्ट्रीय ही, ऐसे समय में उत्तम होगा कि परमेश्वर की ओर आंखें उठा कर दुहाई दें और उसी से स्थिरता की आशीष मांगे, उसी से भलाई और करूणा की आशा रखें।

अनेकों के जीवन में घबराहट होगी कि हमारे राष्ट्र क्या, पुरे जगत् में समस्याओं की घटा छायी दीखती है, और इससे अनिश्चयताएं ही नजर आती हैं; भुखमरी, महंगाई, रोग, राजनैतिक आदि अनेकानेक समस्याएं हमें विवश कर देती हैं, कि हम अस्थायी समाधानों पर ध्यान करें — परन्तु ये भी अस्थिर ही हैं; इसी प्रकार कलीसिया की विभिन्न समस्यायें भी कम नहीं हैं, जिसके कारण कलीसिया, मंडली एवं मसीही जीवन में भी अनिश्चयताएं दीखती सी नजर आती है, और कलीसिया के भाई बहन भी अस्थायी समाधान और वस्तुओं पर अपनी जीवन और जीविका की टेक लगाते हैं, पर ये तो जाती रहेंगी। अत: हम परमेश्वर की स्थिरता पर ही आशा और भरोसा रखें और उसी निशान के साथ इस साल में जीवन के उद्देश्य को पूर्ति करें।

नया साल आशीषमय हो !!

घरबन्धु, जनवरी १९७५

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

मार्टिन टेटे

नया साल

लूका ४:१६-२२

हमारा अपना घर और कलीसिया ईश्वर का दान है। घर और कलीसिया दोनों जगहों में ईश्वर की आराधना करना और गवाही देना आवश्यक है। परन्तु आज हमारा घर भी नासरत नगर के समान है, जो यीशु को नकारने के लिये तैयार हो जाता है। हमारी कलीसिया भी नासरत के मन्दिर के समान प्रेम, धीरज, दया और अनुग्रह हीन हो गई है। कलोसिया वचन और सक्रामेन्त के द्वारा हमें ईश्वर की दया प्रदान करती है। परन्तु हम ईश्वर की कलीसिया में ईश्वर का अनुभव करना नहीं चाहते हैं। जैसा नासरत यीशु का अनादर करता है वैसा ही हम भी यीशु की सुनना नहीं चाहते हैं, (४:२४)

नासरत के मंदिर में यीशु की गवाही :—

(क) प्रभु का आत्मा मुझ पर है :—यीशु इस बात को बपतिस्मा में अनुभव करता है। यीशु का काम पवित्र आत्मा का काम है। यीशु अपनी इच्छा के अनुसार काम नहीं करता परन्तु ईश्वर की इच्छा के अनुसार काम करता है।

(ख) सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है— सुसमाचार सुनाना यीशु की सेवकाई का विशेष भाग था। यीशु सुसमाचार सुनाता रहा और अपने आप को पिता की इच्छा पूरी करने के लिए सौंप दिया। आर्थिक दशा के द्वारा दबाये गये लोगों के लिए उसकी चिंता थी। समाज में नहीं गिने जानेवालों के लिए उसकी सहानुभूति थी। मन में दीनों का उत्साह उसके द्वारा बढ़ाया गया, दरिद्र किये गये लोगों के लिये उसने ईश्वर का अनुग्रह प्रदान किया।

(ग) बन्धुओं के लिए छुटकारे का समाचार— परिस्थिति, रीति, पाप इत्यादि के द्वारा गुलाम बनाये गये लोगों के लिये यीशु सुसमाचार था।

(घ) अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूँ— यहाँ शारीरिक और आत्मिक दोनों प्रकार के अंधों की ओर संकेत है। अंधा मनुष्य सृष्टि की सुन्दरता को नहीं देख सकता है। यीशु अंधों को दृष्टि प्रदान करता और वे सृष्टि की सुन्दरता देखते हैं। आत्मिक रीति से अन्धा मनुष्य ईश्वर की दया और प्रेम की सुन्दरता को नहीं देखता है। यीशु मनुष्य के आत्मिक आँखों को भी खोलता है। जिससे वे ईश्वर को देख सकें।

(ङ) कुचले हुओं को छुड़ाऊँ—समाज से निकाले हुओं को स्वर्ग में स्थान दिया, पापियों का विश्वस्त और प्रेमी मित्र हुआ।

(च) प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूँ— प्रभु का वर्ष ईश्वर की दया का समय है। यीशु में ईश्वर की दया का समय हमारे पास पहुँचा है, (लैव्य. २५:१०-१८, २७:१७; गिन्ती ३६:४।

क्या यह साल मेरे और आपके छुटकारे का वर्ष है?

इपिफानियस पर्व

मत्ती ३:१२-१७

यूहन्ना बपतिस्मा देनेहारे का प्रचार लोगों में सनसनी फैला दिया था। लोग अपने पापों को पहचानना शुरू कर दिये थे। ऐसे ही अवसर में यीशु अपने आप को प्रकाशित करता है। मार्ग तैयार था, यीशु राजा आम जनता के बीच अपने आप को प्रकट कर देता है।

[इपिफानियस=प्रगट या प्रकाशित होना]

यीशु का प्रकाशित होना

(क) बपतिस्मा में :— यीशु स्वर्गीय राजा है। उसमें पाप नहीं है। उसने क्यों पश्चाताप का बपतिस्मा लिया? क्योंकि इसी रीति से यीशु को ईश्वर की धार्मिकता पूरा करना है। वह पापियों के लिये पाप बना। यशा. ५३ के अनुसार वह पापियों के संग गिना गया। उसने

Gossner Mission

पापियों के पाप को उठा लियां। बपतिस्मा ही मनुष्यों को बचाने का रास्ता था। बपतिस्मा का निशान क्रूश की ओर है। बपतिस्मा में भी मृत्यु, न्याय, जीवन और आग की ओर संकेत है। हमारे पाप का न्याय प्रभु की देह में किया गया। न्याय का फल यीशु की मृत्यु और हमारे लिये जीवन हुआ।

ख) पवित्र आत्मा के अभिषेक में :— परमेश्वर का आत्मा कबूतर की नाईं उस पर उतर कर ठहर गया। यीशु और आत्मा का चिरस्थायी सम्बन्ध है। क्यों पवित्रात्मा उस पर उतरा ? यीशु का जीवन आत्मा के द्वारा चलाया जाय। क्योंकि यीशु सच्चा और स्वाभाविक मनुष्य था। यीशु का अभिषेक विशेष रीति से हुआ पवित्रात्मा कपोत की नाईं पहले कभी भी प्रगट न हुआ। धर्मशास्त्र में कपोत और मेम्ना का स्वभाव भोला बतलाया गया है। यीशु ईश्वर की अभिप्राय को सिद्ध करने के लिये मेम्ना के समान भोला बना। गरीब लोगों के लिए लेव्यवस्था के अनुसार बलिदान के लिए कपोत मिल सकता था। यीशु को मंदिर में अर्पण करते समय मरियम ने कपोत ही चढ़ाई। कबूतर और मेम्ना बराबर बलिदान के लिए व्यवहार किये जाते थे। यीशु दरिद्रों के पापों के लिए भी बलिदान हुआ। यीशु का अभिषेक जीने के लिये नहीं परन्तु मरने के लिये हुआ। कपोत तो दुर्बलता का प्रतीक है। परन्तु आत्मा में नम्र होना ईश्वर के लिये सामर्थी होना है। यीशु मरने को राजी हो गया। ईश्वर ने उसे मृत्यु से भी अधिक सामर्थ का ताज दिया ताकि वह पाप और मृत्यु की लड़ाई में स्थिर रह सके।

(ग) आकाशवाणी या स्वर्गीय वाणी :— यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अति प्रसन्न हूँ। ईश्वर की घोषणा है, यीशु की आज्ञा पालन, चाल-चलन, कार्य और बलिदान से मैं प्रसन्न हूं।

बपतिस्मा में यीशु पाप करने वालों का उत्तरदायी ठहरा। अभिषेक के द्वारा वह मृत्यु और पाप से लड़ने का ताज पहिना और स्वर्गीय वाणी के द्वारा उसे लड़ाई के लिये भेजा गया।

इपिफानियस के पीछे १ला एतवार

यूहन्ना १:३५-४२

मत्ती, मार्क और लूक बतलाते हैं कि यीशु बपतिस्मा लेने के उपरान्त शैतान से लड़ाई करता है। लड़ाई में शैतान हार जाता है और यीशु जयवन्त होता है — परन्तु शैतान यीशु की मृत्यु तक यीशु का पीछा करता है।

यीशु का प्रकाशित होना

१ यूहन्ना बपतिस्मा देनेहारे की गवाही में :— केवल यीशु और यूहन्ना ने पवित्रात्मा को कपोत के समान यीशु पर उतरते देखा। यूहन्ना ने साफ-साफ कहा कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। परमेश्वर का मेम्ना हो कर जगत का पाप उठा ले जाता है, (१ कोरि. ५:७)। यीशु लोगों को पवित्रात्मा से बपतिस्मा देगा (३:३३) यूहन्ना की गवाही के विषय (१:२९-३४) पर ध्यान देना आवश्यक है। क्यों हम यीशु की गवाही के निमित्त अपने आपको दीन बनाने के लिए तैयार हैं ?

(२) यूहन्ना के चेलों के जीवन में :—योशु के पीछे यूहन्ना के चेले हो लेते हैं। यीशु यूहन्ना से शक्तिमान है इसलिए वे योशु को ढूंढ़ते हैं। वे न केवल आप यीशु के पीछे हो लेते हैं, परन्तु अन्य लोगों को भी यीशु के पीछे ले आते हैं। अन्द्रियास, पतरस को यीशु के पास ले आता है। चेलों का जीवन अन्य लोगों के जीवन को प्रभु के पास ले आना है। क्या मेरा और आपका जीवन अन्य लोगों को यीशु की ओर खींच रहा है ? अगर नहीं तो क्यों नहीं ?

(३) अन्द्रियास की गवाही में :—हम को खृस्तुस अर्थात् मसीह मिल गया है। खिस्तुस का अर्थ है अभिषिक्त जन। मसीह आने वाला था, वह आ गया—हमें मिल गया। सुसमाचारों में तीन बार पाया जाता है कि अन्द्रियास किसी न किसी का परिचय यीशु को देता है। उसने अपने भाई शमौन को यीशु के पास लाया। शमौन पेन्तिकोष्ट के दिन उपदेश दिया और ३००० प्राणी ईश्वर के राज्य के लिये जीत लिए गये। क्या आपको और मुझे खिस्तुस मिल गया है ? खिस्तुस शमौन के नाम को केफा अर्थात् पतरस में बदल डालता है। क्या हमारे नामों को भी यीशु बदल दिया है ताकि हम यीशु के दृढ़ विश्वासी हो जावें। (शेष पृष्ठ १७ पर)

Gossner Mission

पवित्र आत्मा का कार्य

हवा, पानी और भोजन के बिना मनुष्य का जीवन अधुरा ही है। यदि इन तीनों में से किसी एक का घटी हो तो उसके ज्ञान, बुद्धि, शक्ति और शरीर में बढ़ती की कमी होती है। उसी प्रकार मसीही जीवन में प्रार्थना, प्रेम और आत्मा के बिना हमारी मसीहियत व्यर्थ है। इन तीनों का होना अनिवार्य है। प्रेम मसीही जीवन का मूल है। प्रार्थना परमेश्वर से बातें करना या मसीही जीवन का स्वांस है। आत्मा परमेश्वर का पवित्र टुकड़ा है। जो मनुष्य के लिये दयाने के रूप में दिया गया है। तो यह पवित्र आत्मा हमारे लिये क्या करता है।

१—वह अगुवाई करता है:—जिस तरह इस्राएलियों के मिस्र से कनान देश जाने में दिन में धूप से बचा कर, रात को ज्योति से अगुवाई परमेश्वर के द्वारा हुआ। उसी तरह हम नये इस्राएल स्वर्गीय किनान की जीवन यात्रा कर रहे हैं इसमें आत्मा की अगुवाई है। प्रे० ८ : २९; १५ : २८ यो० १६ : १३।

२—आत्मा बोलता है;—धर्मशास्त्र में हम कई एक जगह यह पाते हैं कि आत्मा पौलुस से बातें किया, आज हमारे बीच में भी वचन के रूप में हो कर बोलता और बोलने की शक्ति प्रदान करता है। प्रेरित १० : २९; ११ : १२, २८ : २५।

३—वह अजीब काम करता है:—अर्थात्, बोलने की शक्ति देता और नयी-नयी भाषा की उत्पति करता है। प्रे० २ : ४।

४—वह शक्ति देता है:—पवित्र आत्मा व्यक्तिगत जीवन के साथ देश, और कलीशा के लिए शक्ति देता है। और यह आत्मा भय और उन्नति को बढ़ाता है। प्रे०१ : ३१, २५ : २६।

५—वह काम करने वालों को भेजता है:—मत्ती २८ : १९ के अनुसार हमारे लिये एक पवित्र आदेश है। इस आदेश को पूरा करने के लिये हमारे भू-खण्ड में शत्स, ब्रन्दत, बच और यानके चार मिशनरी पवित्र आत्मा के अगुवाई में गोस्सनर साहब के द्वारा भेजे गये थे, आज हमारी कलीशा ने भी सुरगुजा, उदयपुर और खुरिया क्षेत्र में सुसमाचार कार्य के लिये मिशनरियों को भेजा है। प्रे० १३ : ४ लूका ९ : २, १० : १।

६—वह अधिकारी अगुवे ठहरता है:—देश, दुनियां तथा कलीशा में जितने अगुवे हैं, सब समूह की सिफारिश से चुने जाते हैं। किन्तु पवित्र आत्मा से दृढ़ाये ठहराये और सुपुर्द किये जाते हैं। आत्मा की अगुवाई ही अधिकारी और अगुवे का चिन्ह है। प्रे० २० : २८, १ कुरिन्थ १२ : ८-१०।

७—वह साक्षी देता है:—आत्मा गवाही देता है कि धर्म के काम करने वालों के लिये बन्धन, क्लेश तैयार हैं। हम परमेश्वर के सन्तान हैं। इसलिये हमें दुःख उठाना है। प्रे० ५ : ३२, २० : २३, रोमी ८ : १६।

८—वह हमारे लिये प्रार्थना करता है:—रोगी, दुःखी के परिवार में जब पादरी प्रचारक प्रार्थना करते हैं, तो उसमें आत्मा की अगुवाई से प्रार्थना होती है। और रोगी दुःखी को आत्मिक बल मिलती है। रोमी ८ : २६।

पवित्र आत्मा की सहायता ही हमारे लिये सब कुछ है उसके बिना हम किसी भी क्षेत्र में बढ़ नहीं सकते हैं। योहन १४ : ३६ इसलिये हम प्रार्थना करें, कि ईश्वर पवित्रात्मा भेज कर हमारी बढ़ती देवे, हम गीतों के द्वारा प्रार्थना करें जो नीचे है।

Song

भेजी देवे हो यीशु पवित्र आत्मा के
भेजी देवे हो मसीह पवित्र आत्मा के

१ पवित्र आत्मा हमरे के पथदर्पन करी।
२ पवित्र आत्मा बिनु हमरे मन उदास आही।
३ पवित्र आत्मा बिनु हमरे मन मरल आही।
४ बिन्ती करेक ले हमरे ठीन बल नखे।
५ पवित्र आत्मा हमरे ले गुण, ज्ञान, शक्ति देवी।

पी. मिंज, चल्हो

Gossner Mission

मिशन पर्व

श्री एच० समद, राँची

मिशन पर्व हमारी कलीसिया का एक विशेष पर्व है। इसे हम २ नोवेम्बर को मनाया करते हैं। इस अवसर पर हम लोग अपनी कलीसिया की स्थापना के संबंध में चर्चा करते हैं। इसके स्थापक फादर योहनेस गोस्नर एवंजेलिस्ता और उसके द्वारा भेजे गए चार मिश्नरियों यानी शत्स, वत्स ब्रन्त और यानके को स्मरण करते हैं। इनकी मेहनत का ही फल है कि छोटानागपुर के हम पिछड़े आदिवासियों के बीच मुक्ति का उजाला चमका। उस उँजाले को आगे बढ़ाना और प्रज्ज्वलित करना हमों का कर्तव्य है।

बीते कुछ वर्षों से इस पर्व का ध्येय सुसमाचार प्रचार को बल देना है। इसका दृश्य प्रमाण यह है कि इस उपलक्ष में गिर्जा-आराधना से जो आमदनी आती है उसे मिशन काम यानी सुसमाचार प्रचार काम में लगायी जाती है। गत वर्ष मिशन पर्व के अवसर पर पास्टर मार्टिन सीवेर्ग पधारे थे। इस बार पश्चिमी जर्मनो से पच्चीस मेहमान आये थे। वास्तव में वे पर्यटक के रूप में आए थे। मिशन पर्व के दिन वे सभी उपस्थित थे। उनमें से एक पाद्री विलकेन्स जो पीटर्सहागेन के पुरोहित हैं ने उपदेश दिया। पाद्री डा० सी० के० पौल सिंह, प्रभारी प्रमुख अध्यक्ष और पाद्री सी० जे० तिर्की ने आराधना में अगुवाई की। उपदेश का वचन था मार्क ३:२०-२१ और ३१-३५।

आपने कहा कि भारत के राँची में गोस्नर लुथेरान कलीशिया की स्थापना एक ऐतिहासिक घटना है। छोटा-नागपुर की लुथेरान मसीही कलीशिया जर्मनी की लुथेरान कलीशिया जो गोस्नर मिशन से सम्पर्क रखती हैं के आपसी संबंध की शुरूआत होती है। यह संबंध अभी तक जारी है। उसी की बदौलत मेहमानों का आवगमन विदेश से होता रहता है। ईश्वर की कृपा से आप लोगों का और हम लोगों का एक विश्वास, एक आशा और एक ही प्रभु हैं। आप लोग हम लोगों के हैं और हम लोग आप लोगों के हो गए हैं। अब हम लोगों का एक बड़ा गोस्नर परिवार है। इससे अधिक कि हम लोग योशु के परिवार के हैं। यीशु सहाय शब्द सिखाता है कि हम यीशु परिवार के हैं। अच्छा, तो यीशु-परिवार क्या है? इसे स्पष्ट करने के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उपदेशक ने कहा कि एक कमरावाला एक विशाल घर है। उसके बीच में मसीह यीशु बैठे हैं। उनकी चारों ओर गोलाई आकार में हम लोग बैठे हैं। इस परिवार में हम आप भारतीय, हम जर्मन, हाँ पूरे जगत के मसीही हैं। इस प्रकार यीशु -परिवार का दायरा समूचे संसार में फैला है। हम यूरोप वाले जगतीय यीशु-परिवार के न होंगे जब तक कि हम पूरे जगत के मसीहियों की संगति में नहीं आते हैं। पूरे जगत के मसीही एक साथ परमेश्वर के पास उपस्थित होंगे। अतएव यीशु-परिवार मसीहियों का वह विशाल समूह है जिसका प्रधान यीशु मसीह है।

किसी परिवार के सदस्य एक तरह नहीं होते हैं। उपदेशक ने इसे स्पष्ट करने के लिए अपने तीन बच्चों का उदाहरण पेश किया जो भिन्न-भिन्न स्वभाव और विचार के हैं। उसी तरह यीशु-परिवार में भी भिन्न–भिन्न लोग होते हैं। हम लोग भिन्न-भिन्न हैं पर एक ही परिवार के हैं। एक भारतीय मसीही भक्त ने कहा है, "जीवन-जल के सोते से पानी सब पीते हैं पर पीने का पात्र अलग-अलग होता है।" आपने एक सिक्ख पंजाबी के बारे बताया जिसका एक व्यापार केन्द्र कनाडा में है और दिल्ली में भी कार्यालय है। उसने कहा कि मैं प्रतिदिन अपने काम में जाने के पहले प्रार्थना करता हूँ। यह सुन कर मुझे लजा अनुभव हुई क्योंकि मैं वैसा नहीं करता हूँ। आप भारतीयों से हम सबक सीख सकते हैं। आप भक्त हैं, आप शांत प्रकृति के हैं और आप लोगों का जीवन धार्मिक कामों में लगा रहता है। हमारे धर्मशास्त्र से हम जानते कि एक बार युसफ और मरियम अपने पुत्र यीशु को व्याकुलता के साथ ढूँढ़ते थे। वे यीरूशलीम में आए जहाँ उन्होंने उसे मन्दिर में याजकों और शास्त्रियों के बीच पाया। लोगों ने यीशु को बताया कि उसके माता-पिता

Gossner Mission

उसे ढूँढ़ रहे हैं। किन्तु उसने उनकी परवाह न की। यहाँ यीशु का व्यवहार भिन्न दीखता है। आवश्यक था कि अपने माता-पिता की आज्ञा मानता और उठकर चला आता। पर उसने वैसा नहीं किया। इस प्रकार स्वाभाविक खून नहीं पर मसीह के आत्मा का प्रेम हमों को एक परिवार में इकट्ठा करता है। मसीही-परिवार में शामिल हो जाने से सब नया हो जाता है। यूरोप एवं भारत के मसीही एक ही परिवार के हैं। इस नए परिवार में भाई-बहन स्त्री–पुरूष सब का स्तर समान हो जाता। इस नए मसीही परिवार में जाति-पांति की दीवाल लोप हो जाती है।

आगे आपने भेद-भाव की भावना के बारे कहा कि मेरी मंडली के लोग पेशा से खेतिहर हैं। वे कारखानों के मजदूरों को नीची निगाह से देखते हैं। किन्तु यह भेद-भाव प्रभु में दूर हो जाता है क्योंकि वह सब का प्रभु है। भेद-भाव की दीवाल को दूर करना एक कठिन काम है। हमारा धर्मशास्त्र इसे दूर करने का एक उपाय बताता है। उसे पश्चात्ताप कहते हैं। पश्चात्ताप के द्वारा हम उन क्षुद्र विचारों से छुटकारा पाते हैं जो मनुष्य को मनुष्य से अलग करते हैं। ये बिलगाव जब दूर हो जाते हैं तो मनुष्य मनुष्य के बिलकुल समीप आ जाता है। आपने बताया कि प्रत्येक दूसरे अडवेन्ट को ब्रेड फॉर दा वर्ल्ड के लिए प्रार्थना की जाती है। उस अवसर पर दूर देश के मसीही से वचन सुनते हैं। इस बार हाँगकाँग के भाई से वचन सुनेंगे। ऐसा क्यों किया जाता है? क्योंकि प्रभु में हम सब मसीही एक हैं। मसीह हमारा केन्द्र है। उसी के चारों ओर हम बैठे हैं। काँगो के मसीही यीशु को अपना बड़ा अगुवा मानते हैं। हम भी यीशु को अपने-अपने निजी परिवार में केन्द्र और अगुवा मानें। वह ऐसा प्रभु है जो हमों के पास आता है, हमारे दुःखों को हरण करता है, मेल–मिलाप लाता है और शान्ति देता है। अन्य धर्मावलम्बियों में ईश्वर मनुष्य के उतना निकट नहीं आता है। ईश्वर मसीह यीशु के द्वारा अपना पूरा प्यार प्रगट करता है। इसलिए मसीह यीशु के अनुगामी बन जाने से हम एक मसीही सूत्र में बंध गए हैं, और यीशु सहाय कहते हैं।

मैत्री-संघ का चमत्कार

दुर्गापूजा के अवसर पर २२, २३, २४ ओक्टोबर शाम को सात बजे से विरमित्रापूर "मैत्री संघ" की ओर से कथोलिक मिशन आहाते (कॉम्पाउण्ड) में विशेष कार्य-क्रम का प्रदर्शन हुआ जिसका एक मात्र उद्देश्य था पूजा के तड़क-भड़क मेला के आकर्षण से मसीहियों को अलग करना। संघ इसमें कामयाबी भी हुआ।

२२ तारीख को कथोलिक मिशन द्वारा "समय की-मांग" नामक नाटक रंग मंच पर दिखाया गया। २३ तारिख को "राजाओं का राजा" शीर्षक चल-चित्र तथा २४ ओक्टोबर को जी० ई० एल० चर्च की ओर से दूसरा नाटक मंच पर दर्शाया गया जिसका नाम था "परिवर्त्तन," इसमें डाकुओं के एक भयंकर सरदार का परिवर्त्तन होता है। वह क्रूश को ग्रहण करता है।

रंग मंच की खूबसूरती एवं अभिनायक अभिनायिकाओं की कला कुशलता ने न केवल मसीही भाई बहनों को ही आकर्षित किया हुआ था किन्तु अन्य अन्य धर्मावलम्बियों का मन भी खींच लिया था। हजारों की तदाद में भीड़ इकट्ठी थी फिर भी अन्त तक भीड़ में शांति एवं सुव्यवस्था बनी रही।

दूसरी ओर पूजा के रंग में भंग हो गया। मेले की तो चर्चा क्या करें, पण्डालों की कुर्सियाँ भी तीनों दिन खाली पड़ी रहीं।

नाटक के बाद तीसरे दिन कथोलिक फादर साहब ने अपने भाषण में मसीहियों को चौकस करते हुए कहा कि कोई मसीही भाई-बहिन, माता-पिता किसी पूजा उत्सव में भाग न लें तो उत्तम होगा।

लेखिका
एक मसीही बहन।
उड़िसा

Gossner Mission

संयुक्त इलाका [बुड़जू सिनोड] युवा संघ

५वीं वार्षिक सम्मेलन—अक्टोबर २८-३०, १९७४

मसीह में प्यारो,

आप सबों को यीशुसहाय !

आप लोगों को यह इतलाते हुए अपार हर्ष होता है कि हमारे संयुक्त इलाका युवा संघ, जो बुरजू सिनोड युवा संघ का ही परिवर्तित नाम है, का पंचम् वार्षिक सम्मेलन बुड़जू मिशन स्टेशन में बड़ी गर्मजोशों एवं सफलता पूर्वक सम्पन्न किया गया। ईश्वर पिता को धन्यवाद हो कि उसने हमें इन विकट परिस्थितियों में भी आध्यात्मिक तथा सामाजिक लाभ उठाने में सहायता की। उसकी ही स्तुति हो !

इस साल की स्थिति किसी से छिपी नहीं है। चारों ओर भूखमरी और महंगाई का नंगा नाच हो रहा है। इस हालत में इस सम्मेलन का सम्पन्न होना मुश्किल नजर आ रहा था। हम संघ के कार्यकर्त्ताओं को संदेह होने लगा था कि वार्षिक सम्मेलन धूमधाम से सम्पन्न होगा। पर यह क्या ? सूचना पत्रानुसार २८ अक्टोबर शाम को बुड़जू हाते में कुछ आदमी झोला-झक्कड़ और बजाने वाली सामानों के साथ नजर आये। हमारी चिंता, आदमियों के आगमन के साथ-साथ हटने लगी और ये ही गिने गुंथे आदमी सम्मेलन के उद्घाटन के समय तक में एक अच्छी खासी जमायत का रूप ले लिये। सब का दिल बाग बाग हुआ जा रहा था। थकान के बावजूद उद्घाटन का विधान विधि पूर्वक सम्पन्न हुआ। २ अक्टोबर सुबह से ही सम्मेलन की सरगर्मी में तीव्रता आ गयी। हर बीतते क्षणों के साथ जमायत में, पूर्व और पश्चिम, उत्तर और दक्षिण से लोग बाजे, गाजे-गीत-गोविन्द, हास उल्लास के साथ आ कर संख्या बढ़ाने लगे और यह, सम्मेलन की समाप्ति तक में छह सात सौ तक पहुंच गया। ईश्वर को शत: कोटिश धन्यवाद कि उसने इस सम्मेलन में इतने सारे आदमियों को, इस प्रतिकूल दशा में आध्यात्मिक शिक्षा से लाभ उठाने के योग्य बनाया। उसने अपनी पवित्रात्मा से मनुष्यों के मनों को वशीभूत किया और ईश्वर के वचनों से प्रेम करना सिखलाया।

इस सम्मेलन को सुन्दर शिक्षा देने के लिये हमारी कलीशा के प्रमुख अध्यक्ष पाद्री डा० सी० के० पी० सिंह द० पूर्वी अंचल अध्यक्ष पाद्री एन० भूईयां, बुड़जू इलाका चेयरमेन पाद्री जे० बागे, टोकाद इलाका, चेयरमैन पाद्री ई० होरो, अमलेशा इलाका चेयरमैन पाद्री पी० तोपनो, पाद्री एम० तोपनो युवानिर्देशक बुड़जु इलाका, पाद्री एस० बरजो निर्देशक महिला समिति बुड़जू इलाका पाद्री जे० डांग निर्देशक संडे स्कूल बुड़जू इलाका एवं अन्य माननीय सज्जन थे। इन्होंने अथक परिश्रम करके अपने व्याख्यानों द्वारा जन समूह को प्रभावित किया और एक नयी दिशा दिखाई। उन्हों ने शिक्षा देते हुए समूह से कहा कि—

यीरुशलीम नाम शहर बहुत सुन्दर बना था। उसकी शोभा, उसका सौंदर्य और उसकी सुन्दरता का बयान करना मुश्किल है। उसी तरह, यीरूशलीम का मंदिर भी भव्य था। उसकी सुन्दरता भी देखते ही बनती थी। वह हीरे मोती और चांदी से अलंकृत था। उसकी शान उसकी महिमा वर्णनातीत है। कहा जाता है इसे देख कर अधम पापी का मन भी परिवर्तित हो जाता था। इस सुन्दर शहर और मन्दिर को बनाने वाले या इस शहर में रहने वाले या इस भव्य अलंकृत मन्दिर में भजन पूजन करने वाले तो कितने सुन्दर रहे होंगे ! फिर भी इसी सुन्दर शहर को, इसी आलीशान मन्दिर को या इन सुन्दर व्यक्तियों को देख कर हमारे त्राणकर्त्ता यीशु मसीह को रोना पड़ा था। वह क्यों ? सुन्दर चीज को या सुन्दर आदमी को देख कर आदमी का मन पुलकित हो जाता है, पर, हमारे प्रभु को पुलकन महसूस नहीं हुआ, पर, उन्हें रोना पड़ा, भला क्यों ? सुन्दरता को देख कर ही हमारे मसीह को रोना आ गया, आखिर क्यों ? इसी वाक्यों का जवाब इन्होंने (व्याख्यान-दाताओं) हमारे पवित्रशास्त्र के याकुब २ : १०, प्र० वा० ३ : १२, रोमी ३ : ९-१३, प्र० वा० २ : २-१७, रोमी ६ : ११-१३, १ला तिमो० ६ : ११ - १२,

Gossner Mission

२रा कु० ६:१४-१८, जैसे सुन्दर तथा प्रभावशाली पदस्थलों से दिया। सारांशतः उन्होंने यही कहा कि यीरुशलीम में पाप की बढ़ती हो गयी थी। लोग धर्म की अवहेलना करके सांसारिक विधियों पर चलना आरम्भ कर दिये थे। उन्होंने धर्म को एक खिलौना समझ रखा था। अतः प्रभु यीशु, उनके अन्धकारमय भविष्य को देख कर रोया। जन समूह को चितापन देते हुए उन्होंने कहा कि हमारी दशा भी यीरुशलीम से या उसके निवासियों से भिन्न नहीं है। हमारा भविष्य भी अन्धकारपूर्ण ही है। अतः हमें चाहिए कि क्रूश की कथा पर, उसकी घटना पर विश्वास करें, उसकी गवाही दें। चूंकि वही हमारा धर्म है, वही हमारी मंजिल है।

बुड़जू इलाके को विभिन्न संघों के निर्देशकों ने संडे स्कूल, युवा संघ और माता समाज की महता एवं कर्त्तव्य पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आज हमारे बच्चों को धार्मिक शिक्षा नहीं मिलती है। अत: उन्हें, धार्मिक प्रक्रियाओं में या धार्मिक बातों में रुचि नहीं है। अत: हमें उन्हें धार्मिकता की ओर फेर लाना है उन्हें बाल्यावस्था से ही धार्मिक शिक्षा देना है।

परिवार में माँ का अपना विशिष्ठ स्थान है। चतुर माँ अपने परिवार की उन्नति, शोभा, शृंगार प्रतिष्ठा को गति प्रदान करती है। वह सम्पूर्ण परिवार की मालकिन की हैसियत से एक आदर्श परिवार का निर्माण करती है। इसी तरह महिला समिति कलीशिया को आदर्श बना सकती है। बच्चों में अनुशासन- शिक्षा आदि के प्रति प्रेरणा और जोश पैदा करके उन्हें कलीशिया के सच्चे कर्णधार बनने में सहायता दे सकती है।

युवा संघ, चूंकि एक शक्तिवान संघ है वह कलीशा के हर कामों में सहायता दे सकती है जिस प्रकार एक बेटा या बेटी अपनी माता या पिता की सेवा करते हैं। आज की इस कलीशिया में हमारे पंचों के कर्त्तव्य पर भी काफी प्रभावशाली व्याख्यान देते हुए यह बताया गया कि पंच न केवल प्रचारक या मंडली अधिकारियों की सहायता कर सकते हैं पर, वे मंडली के हर कामों में अधिकारियों की अगुवाई कर सकते हैं, मंडली को चुस्त और दुरूस्त बना सकते हैं।

इस शुभावसर पर मर्चा इलाका चेयरमैन पाद्री एस० सुरीन, द० पूर्वी अंचल स्कूल पर्यवेक्षक श्री जे० एस० तोपनो सचिव टकरमा इलाका युवा संघ श्री मसीह प्रकाश सुरीन, प्रो० एम० एस० हस्सा बिरसा कॉलेज खूंटी ये भी जन-समूह को संबोधित कर सुन्दर शिक्षाएं दीं और उन्नति तथा बढ़तो के लिये शुभकामनाएं दीं।

३० अक्टोबर शाम को शिक्षा तथा मनोरंजन के लिये The king of the kings और अनमोल मोती फिल्में दिखलाई गयीं। सामूहिक भजन और भजन होड़ से सम्मेलन को आलंकृत किया गया भजन होड़ के विजेताओं को अंचल अध्यक्ष पाद्री एन० भूईयाँ ने पुरस्कार दिया। पाद्री ई० होरो और श्री सुसारन तोपनो ने सामूहिक भजन को आकर्षक, लूभावना और दिलचस्प बनाने में कोई कसर बाकी नहीं रखा, फल यह हुआ कि पके बाल और काले बालों ने खुल कर इसका रसास्वादन किया।

सम्मेलन का मूल विषय=वह नगर के निकट आया और उसे देख कर उस पर रोया लूक १९ : ४१ रखा गया था।

पिता परमेश्वर को धन्यवाद हो कि उसने अमन चैन से सम्मेलन सम्पन्न कराया। संघ की ओर से उन तमाम प्यारों को धन्यवाद जो अथक परिश्रम करके सम्मेलन की सफलता में योगदान दिया। सुन्दर शिक्षा के लिये व्याख्यानदाताओं को शुक्रिया। साथ में उन अनेकों को भी धन्यवाद जो हमारी इस संघ से सहानुभूति रखते हैं। आप सबों से दीन प्रार्थना है कि हमारी इस संघ को आप अपने दैनिक प्रार्थनाओं में स्मरण करें कि यह बल पा कर नित नयी नयी ऊंचाईयां चढ़ सके। कलीशिया की अच्छी सेवकाई कर सके !!

सधन्यवाद

एन० पूरण प्र० बरजो

सचिव

Gossner Mission

कलोसियाई समाचार

रांची : पूर्व सूचित समाचारानुसार जर्मनी से एक दल नोबेम्बर माह के आरम्भ में रांची आये, दल में तीस के बदले पच्चीस ही मेहमान आ सके। पटना से रांची आने में काफी तकलीफ हुई।

१ला नोवेम्बर को रांची में शानदार स्वागत का आयोजन था, आशातीत भीड़ थी, खुशी थी, अतिथियों के आने में देर हुई, परन्तु जोश के कारण भीड़ घटी नहीं। ख्रिस्त गिर्जे में ही छोटा कार्यक्रम आयोजित था; छोटा-नागपुरी प्रथानुसार स्वागत अच्छा एवं मेहमानों के लिये चिरस्मरणीय रहा। शाम को चाय पार्टी से उनका सत्कार किया गया, २रे नोवेम्बर को मिशन पर्व में मेहमानों ने खुल कर साथ दिया। विहान के गिर्जा-आराधना एवं दूसरी बेला के मीना बाजार में उन्होंने अपने उपस्थिति एवं सहयोग से लोगों के आनन्द एवं जोश को बढ़ाया। उपदेश, गीत, बातचीत एवं खरीद विक्री के कार्य में अपनी संगति का आनन्द भी बहुतों को दिया। ३रे नोबे. को जमशेदपुर का कार्य क्रम था। इसलिये कि वे पहले दिन के कार्यक्रम से थक गये थे अत: वहां पहुंचने में विलम्ब हुआ परन्तु फिर भी पहुँच कर रंगीले वातावरण का आनन्द लिया, वहां न्यू सीताराम डेरा को एकत्रित मंडली को भी अपने ढंग संवाद, परिचय एवं गीत से आनन्दित किया। वहां भोजन के बाद जो होटल में प्रबन्ध किया गया था. कारखाना भी देखने की सम्भावना दी गयी। शाम को सोनारी में कार्यक्रम चाय-पानी के साथ था, समय की कमी के कारण कुछ जल्दी बाजी हुई, परन्तु सब मिला कर कार्यक्रम अच्छा रहा।

४थे नोबे. को फूदी टी. टी. सी. में कार्यक्रम था—अपने ढंग का स्वागत क्रम एवं मंडली से मिलन-जुलन था। टी. टी. सी. के अन्तर्गत प्रशिक्षण काम, विद्यार्थी एवं शिक्षकों से भी अवगत कराया गया तथा भोजनोपरांत विदा मिली। रास्ते में लौटते बार हुलहुन्डु मंडली में रांची के इर्द-गिर्द की मंडलियों से भेंट। स्वागत का कार्यक्रम था जो संक्षिप्त पर सराहनीय रहा। उसी शाम को हटिया मेरीन डीजल भी देखने का कार्य-क्रम था।

५वें नोबे. को मेहमानों को टकरमा पहुंचाया गया। यह अनुमान लगाया जाता है कि सबसे बड़ी भीड़ यहीं थी। शानदार स्वागत कार्य-क्रम के साथ ही साथ उपहार का विशेष कार्य-क्रम था, सभों को उपहार मिले—पर सब से अधिक टकरमा जाने में ही थकित हुए। वहां के दवा-खाना की सेवा से वे विशेष प्रभावित हुए।

६वें नोबेम्बर को हजारीबाग जाना था बहुत मेहमान थक गये थे अत: थोड़ा ही दल वहां गया, दूरी और समय की कमी के कारण आना कानी हो रही थी, परन्तु वहां की तैयारी को ख्याल में रखते हुए कुछ लोगों ने अपनी इच्छा प्रकट की। रास्ते का दृश्य एवं वहां के लोगों का आनन्द और जोश ने मेहमानों के मनों को जीत लिया। शाम को रांची स्थानीय महिला समिति की ओर से प्रीति-भोज का आयोजन था, साथ संक्षिप्त कार्य-क्रम भी था और मेहमानों को उपहार भी दिये गये।

७वें नोबे. को गोविन्दपुर में प्रोग्राम था, रास्ते में दो जगह—जलटन्डा एवं करी में—मंडलियों द्वारा स्वागत कार्य-क्रम होने से पहुंचने में देर हुई फिर अतिथियों को पाकर या कहें या स्वागत पाकर सब की निराशा आनन्द में बदल गया। स्वागत के साथ ही साथ वहां के सांस्कृत कार्य-क्रम ने अतिथियों के लिये अच्छा मन बहलाव एवं आनन्द दिया। शाम को चाय के बाद विदाई मिली।

८वें नोबे. को ही यहां से कलकत्ता की ओर जाना हुआ, परन्तु पहली बेला हटिया भारी निगम के विभिन्न कारखानों को देखने का इन्तजाम बहुत मेहनत पा केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमति दिये जाने के कारण अनेक मेहमानों ने वहां जाना ही पसन्द किये। अनेक तो रांची शहर में बाजार करने भी गये।

बहुतों के जीवन में इतने मेहमानों को देखकर एक खाशा अनुभव हुआ, अतिथियों को भी अनेक अनुभव हुए। आशा है कि गोस्सनर कलीसिया को संगति का विशेष लाभ हुआ।

Gossner Mission

कोरोंजो : कोरोंजो इलाका कर्मचारियों का शिक्षा क्लास का आयोजन किया गया था जिसमें अनेक आवश्यक विषयों के लिये शिक्षक गण बुलाये गये थे इलाका के अपने शिक्षाओं के अतिरिक्त अंचल अध्यक्ष पा. एन. भुईयां, रेभ. आर. डांग तथा डा. सिंह आमंत्रित थे। (शिसि)।

सुन्दरगढ़ : नोबेम्बर माह में गोस्सनर कलीसिया के सुसमाचार–प्रचार क्षेत्र के कर्मचारियों का शिक्षा क्लास यहां लगभग एक सप्ताह के लिये आयोजित था कुल १७५ कर्मचारी विभिन्न क्षेत्रों से इकठ्ठे थे। कुछ आवश्यक सम्बन्धित विषयों के साथ गान–भजन, बात-चीत रिपोर्ट एवं उन पर के बहस से आनेवाले दिनों के लिये अनेक शिक्षा, सलाह एवं चितौनी आदि आदान–प्रदान हुआ। इस प्रकार का मिलन-जुलन आवश्यक दीखता है।

इसी अवसर पर सुन्दरगढ़ इलाका की ओर से मिशन पर्व का भी आयोजन था, स्थानीय युवा व सन्डे स्कूल दल की ओर से नाटक का अभिनय भी था।

गोविन्दपुर : नोवे. माह के अन्त में गोस्सनर वाइबल एवं बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्र के १५ छात्र-छात्राओं का दीक्षान्त सामारोह हुआ। इन्होंने दो वर्ष की प्रशिक्षण अवधि समाप्त की थी एवं अब वे कलीसिया की सेवा के निमित तैयार हैं।

नये छात्र–छात्राओं की बहाली जनवरी १५, १९७५ से करने का निर्णय भी प्रबन्धक समिति ने कर दिया है। (शिसि)।

हजारीबाग में जर्मन अतिथियों का स्वागत

प्रभु में प्रिये भाइयो तथा बहनों। आप लोगों को यह बतलाते हुए अपार हर्ष प्रकट हो रहा है कि जो अतिथि छोटानागपुर भ्रमण के लिये आये थे वे अपने कार्य क्रम के अनुसार दिनांक ६-११-७४ को हजारीबाग गये थे। वहां उनका हार्दिक स्वागत किया गया। गिरजा के सामने फाटक बनाया गया, फाटक बनाने में वहां के युवासंघ का योगदान था।

६-११ ७४ करीब ८ बजे भाई तथा बहन वहां जमा हुये वहां की संख्या तो ज्यादा नहीं है इस लिए ज्यादे लोग तो नहीं जमा हो सके। वहां एक अपर स्कूल है वहां के लड़के लड़कियां आकर जमाईत को और भी बढ़ा दिये।

अतिथियों का स्वागत् में युवा - संघ के भाई-बहनों ने खुब ही शानदार रुप से नाचा। जिसके अगुवे श्री सी० एम० होरो थे। युवा संघ के लड़के लड़कियाँ सुबह ८ बजे से ही स्वागत् के लिये ढोलक के साथ नाचने लगे। और जबतक अतिथि नहीं आये वे नाचते ही रहे।

जर्मन अतिथि करीब डेढ़ बजे हजारीबाग पहुंचे। डेढ़ बजे स्वागत् के बाद उनको गिरजा ले जाया गया। और वहां के लोगों से संक्षिप्त परिचय कराया गया। वे जर्मन भाषा में अपने परिचय बतलाये जिसे (महिला संघ सेक्रेट्री) श्रीमती मिंज (रांची) ने हिन्दी में अनुबाद कर हमें बताया और हजारीबाग इलाका का विवरण संक्षेप में (सेक्रेट्री) फिलीप मिंज (हजारीबाग) के द्वारा पूरा बताया गया। इसके बाद चाय पार्टी का प्रोग्राम था तत्पश्चात् बिदा कर दिया गया।

श्री हरुण खाखा
बी० एस० सी०
सेक्रेट्री-हजारीबाग इलाका
युवा संघ

टाटी-सिलवे :—कलीशा के भाई-बहनों को सूचित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि धर्म खोजक श्री पी० के० बालन मसीही प्रेम से प्रभावित हो कर आज दिनांक १७-११-७४ को टाटीसिलवे मण्डली में अपने चार-बच्चों सहित पवित्र बपतिस्मा के द्वारा मसीह को ग्रहण कर लिया है। यह गोस्सनर कलीशा के भाई-बहनों के प्रेम और परिश्रम का फल है।

प्रार्थना है कि यह मसीही घराना ईश्वर के प्रेम और अनुग्रह में बढ़ती जावे तथा ज्योति की गवाही के लिये अधिक सामर्थ पावे।

हिजकिएल खलखो
टाटीसिलवे
(राँची)

Gossner Mission

"मैं ज्योति हूं"

(Masca'an Barla)
D. U. Mission Boys Hostel
Hazaribagh

में ज्योति हूँ ज्योति देता हूँ,
देखो मैं ज्योति फैलाता हूँ,
दुनिया को उँजाला करता हूँ।

अंधकार में भटकने वालों को,
ज्योतित हो राह दर्शाता हूँ,
विभिन्न ठोकरों से बचाता हूँ।

पापी जग में जहाँ तुम हो,
जाति-जाति पर किरणों बिखेरता हूँ,
प्रकाश से तुम्हें आलोकित करता हूँ।
मैं ज्योति हूँ॥

"तुम मेरे साथ चलो"

जीवन के दुर्गम, दुर्लभ
ऊँच नीच की नालियों पर
कंकरीट की पट्टी चढ़ी हुई,
गलियों के पार
दुधिया, सफेद रोशनी में,
बिन छत का घर है,
नीचे सिमेंटेड फर्श है,
ऊपर आकाश कालिमा में डूबा,
कशमाकश से जुड़ा है,
प्रिये! तुम देखोगी कि,
ये खुला हुआ जीवन क्या है,
ये उघड़ा हुआ घर क्या है,
गर तुम्हें देखना हो तो,
तुम मेरे साथ चलो॥

डी० पी० इफ्राईम 'बेबस'
मिशन कम्पाऊँड
शाहपुर
बैतूल (म० प्र०)

-साहित्य और बच्चे-

बाल-अपराध एवं बुराइयों की चर्चा आज एक आम बात हो गयी है। हरेक माता-पिता चिंतित एवं परेशान हैं कि बच्चे उनके अधिकार से जाते रहे हैं। बच्चों को सही रास्ते में लाना मुश्किल हो रहा है। बच्चों का अपने माता-पिता का आदर तो दूर उनका भय भी जाता रहा है। प्रत्येक माता-पिता अवश्य चाहता है कि बच्चे अच्छे, चरित्रवान एवं "भय मानने वाले" मनुष्य बनें। लेकिन इसके विपरीत बच्चों की मनोवृति बुराई एवं अपराधपूर्ण होती जा रही है। आखिर क्यों?- इसका क्या कारण है?

माता-पिता अवश्य ही भले हों, अपने बच्चों को बहुत प्यार करते हों, आपका पारिवारिक जीवन अवश्य प्रार्थनालय हों, फिर भी हो सकता है आपके पास सभी कुछ होते हुए भी "भरपूरी का अभाव" हो। आप कहेंगे "भरपूरी का अभाव" क्या हो सकता है? 'हम बच्चों की सभी आवश्यक्ताओं का पूर्ण ध्यान रखते हैं और उन्हें किसी चीज की कमी नहीं होने देते। फिर यह "भरपूरी का अभाव" क्या है? बच्चे क्यों आज्ञाओं का उलंघन करते हैं? क्यों चोरी करते तथा झूठ बोलते हैं? हम उनकी संगति पर भी कड़ी नजर रखते हैं; फिर भी वे कैसे बिगड़ते जा रहे हैं!?"

"भरपूरी का अभाव" एक ऐसा अभाव है, जो उन पूर्तियों से ही उत्पन्न होता है जो, हम बच्चों के लाभ के लिए करते हैं, पर लाभ के बजाय उनकी हानि ही होती है। हो सकता है आप इस हानि का ध्यान नहीं दे पा रहे होंगे। आप उनकी संगति के प्रति तो पूर्ण जागरूक

Gossner Mission

हैं, लेकिन हो सकता है आप उनके साहित्य पर ध्यान नहीं देते होंगे। "साहित्य" एक मुख्य कारण है जो बच्चों के भविष्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। साहित्य का बच्चों के साथ वैसा ही सम्बंध है जैसे बीज का भरपूर अच्छे खाद के साथ। खाद के अभाव में पौधे समुचित रूप से नहीं बढ़ सकते हैं ओर मरियल, टेढ़ा-मेढ़ा पौधा अच्छे फल देने योग्य भी नहीं रह जाता। उसी तरह बच्चों पर भी साहित्य का प्रभाव होता है। आप कहेंगे— हम अपने बच्चों को साहित्य की कमी नहीं खलने देते। उन्हें अच्छी-अच्छी पुस्तकें देते हैं जिन्हें वे बड़े चाव से पढ़ते हैं।" यह बहुत अच्छा है। लेकिन आपको बच्चों के साहित्य पर ध्यान उसी प्रकार देना चाहिए जिस प्रकार आप अपने आदर्श के अनुसार पुस्तकों के चुनाव में ध्यान देते है। "हमें अपने लेखकों का चुनाव उसी प्रकार करना चाहिए जैसा हम अपने लिए हर परिस्थितियों के अनुकूल एक विश्वास योग्य मित्र का चुनाव करते हैं।" आज बच्चों की दुनियां में साहित्य की कमी नहीं है। बस कमी है ऐसे साहित्य की जो बच्चों को पूर्ण मानसिक स्वास्थ्य प्रदान कर सके, उनमें प्रेम, धीरज, संतोष एवं बड़ों के प्रति आज्ञाकारिता तथा आदर की भावना उत्पन्न कर सके। आज इस वैज्ञानिक युग में जब कि लोग अपनी योग्यता पर पूर्ण भरोसा करने लगे हैं, एक ऐसे साहित्य को आवश्यक्ता है जो बच्चों को "परमेश्वर पर पूर्ण भरोसा की भावना" उत्पन्न कर सके।

आज बच्चों के पास बहुत सारी कहानियां, एवं रचनाएँ हैं लेकिन, उपरोक्त योग्यताओं के अभाव में वे उन्हें अच्छी तरह पढ़ने में सहायता नहीं दे पाते। बच्चे परमेश्वर के नजदीक होकर भी उससे बहुत दूर चले जा रहे हैं। बच्चे चूंकि नादान हैं, अपना भला-बुरा नहीं समझ सकते हैं। ऐसे समय में ही माता-पिता एवं अभिभावकों का कर्त्तव्य हो जाता है कि अपने मातृत्व एवं पितृत्व का पूर्ण एवं दूरदर्शिता के साथ प्रयोग करें। खृष्टियान होने के नाते तो यह और भी महत्वपूर्ण कर्त्तव्य हो जाता है कि आप अपने बच्चों को सिखाएँ और उनकी सहायता करें। लेकिन अगर खुद माता-पिता निश्चित रहें, अपने को अनुशासन (न्याय एवं धर्म) में न रख सकें तो बच्चों को उनकी भलाई में कही हुई बात कुछ भी प्रभाव नहीं डाल सकती। इसलिए तो बाइबल कहती है-"तुम मेरे ये वचन अपने-अपने मन और प्राण में धारण किये रहना और तुम घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते-उठते, इनकी चर्चा करके अपने लड़के बालों को सिखाया करना" (व्यवस्था० ११:१८:१९)। जिस तरह एक छोटे पौधे को सीधा बढ़ने के लिए आरम्भ में ही लकड़ी के साथ सीधा बाँध दिया जाता है; उसी प्रकार बच्चों को बाइबल रुपी लकड़ी से उनकी बाल्यावस्था में ही बांध देना चाहिए ताकि वे टेढ़े-मेढ़े न बढ़कर 'परमेश्वर का भय एवं आज्ञाओं को मानने वाले' बन सकें। अत: "लड़कों को शिक्षा उसी मार्ग की दे, जिसमें उसको चलना चाहिए: वह बुढ़ापे में भी उससे न हटेगा (नीतिवचन २२:६)।"

इसके विपरीत मसीही कलीशियाओं में इन बातों की पूर्ण अवहेलना देखी जाती है। बच्चे किस प्रकार की पुस्तकें पढ़ते है, इसकी उपेक्षा की जाती है। बच्चों के हाथों में ऐसी-ऐसी कहानियां एवं कॉमिक्स की पुस्तकें देखी जाती हैं जो गंदे चित्रों एवं भद्दी मजाकों से पूर्ण होती हैं। उनमें 'राजा-रानी' 'भूत-प्रेत,' 'जादू,' 'चोरी-डकैती', 'युद्ध-हत्या' आदि अशिक्षाप्रद कहानियाँ भरी होती हैं। ये न बच्चों को मानसिक रुप से विकसित ही कर सकती हैं, और न उनका नैतिक विकास ही हो पाता है। प्रेम, सहानुभूति के विपरीत उन्हें क्रोध, घमण्ड, घृणा, लोभ आदि ऐसी बुराइयों की ही प्रेरणा मिलती है। बहुत से माता-पिता बच्चों को ऐसे ही छोड़ देते हैं। बच्चे किस प्रकार की पुस्तकें पढ़ा करते हैं इन पर उनका कुछ भी ध्यान नहीं जाता और बच्चे रेगिस्तान के उस कंटीली झाड़ियों की तरह बढ़ जाते हैं, जिनकी लुभावनी छाया तो पथिकों को आकर्षित करती है पर, आराम करने के ख्याल से आये पथिकों को दु:ख पहुँचाते हैं। बहुत से माता-पिता बच्चों को इतना अधिक प्यार -दुलार देते हैं कि वे एक छोटी परन्तु महत्वपूर्ण शब्द "नहीं" भूल जाते हैं; और बच्चों की सभी मांगों की पूर्ति करते चले जाते हैं। यही बच्चे बाद में जासूसी, प्यार -भरा उपन्यास तथा अन्य तरह-तरह की गंदी पुस्तकें पढ़ना आरम्भ कर देते हैं, जिनका उनके चरित्र पर

Gossner Mission

बुरा प्रभाव पड़ता है; और इसका परिणाम माता-पिता को लज्जा एवं दुःख पहुँचाती है। "छड़ी और डांट से बुद्धि प्राप्त होती है; परन्तु जो बच्चा योंही छोड़ा जाता है (उसके अच्छाई-बुराई पर ध्यान नहीं दिये जाते हैं) सो अपनी माता की लज्जा का कारण होता है"(नीतिवचन २९:१५;१७)। अतः माता-पिता एवं अभिभावकों को बच्चों के लिए साहित्य के चुनाव में बुद्धिमानी से काम लेना चाहिए। बच्चों को उनके भरोसे एवं उनके ही भाग्य पर नहीं छोड़ देना चाहिए। उन्हें गलत ढ़ंग की एवं गंदी पुस्तकों से पूर्ण रक्षा करनी चाहिए।

आप अपने बच्चों के लिये अच्छी-अच्छी शिक्षाप्रद पुस्तक जुटाते तो हैं पर निश्चिंत हो जाते हैं। इतना ही काफी नहीं है। बच्चों पर परिवार के वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है। बच्चों को आप मिठाई खिलाते होंगे, और खुद नमकीन-तीता वस्तु खाते होंगे। पर मीठी-सुन्दर वस्तु होते हुए भी बच्चे आपके वस्तुओं की ओर ही आकर्षित होंगे, क्योंकि वह उनकी वस्तु से भिन्न है। फिर वे आपकी वस्तु को भी प्राप्त करना चाहेंगे और अगर आप उन्हें नहीं देते हैं तो, वे चुपके से उसे प्राप्त कर उसके स्वाद को जानना चाहेंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि आप बच्चों को बाइबल संबंधी पुस्तकें पढ़ने को दें और खुद उपन्यास, फिल्मी पत्रिकाएँ पढ़ें तो वे कदापि बाइबल नहीं चाहेंगे। फिर ऐसे में आप उन्हें डरा-धमका कर पढ़ा भी नहीं सकते, क्योंकि वे मानसिक रूप से और भी बिगड़ जायेंगे। किसी ने ठीक ही कहा है —"कोई व्यक्ति दूसरे पर शासन करने के योग्य नहीं कर सके।" अर्थात बच्चे तभी अच्छे स्वभाव के हो सकते हैं जब कि उनका परिवार अच्छा स्वभाव का हो, अच्छी पुस्तकें पढ़ते हों। फिर माता-पिताओं को यह भी ध्यान में रखना होगा कि कि उनके बच्चों से संगति रखने वाले बच्चे कैसी पुस्तकें पढ़ते हैं।

हाल ही की बात है। जबलपुर के एक बड़े डाकखाने में हत्या एवं चोरी की घटना से सभी जानकार होंगे। इस अपराध में चार लड़के शामिल थे। उनमें से एक पादरी का लड़का भी था। वे चारों एक ही रात में धनी बनने की कल्पना संजोये थे; और तब उन्होंने योजनानुसार डाकखाने को लूटने का प्रयास किये। लेकिन वे अपनी योजना में सफल नहीं हो पाये क्योंकि उस दिन डाकखाने में पैसा नहीं था और इसमें एक कर्मचारी की जान भी चली गयी। पुलिस को ऐन-मौके सूचना मिल जाने के कारण चारों पकड़े गये। बाद में उनके बारे में पता चला कि वे चोरी-डकैती से संबंधित विभिन्न पुस्तक पढ़ा करते थे और उसी प्रकार की फिल्में भी देखा करते थे। इन्हीं साहित्य के प्रभाव ने उन्हें अपराध करने को प्रोत्साहित किया। हो सकता है उनके माता-पिताओं ने अपने बच्चों की संगति एवं वातावरण पर पूर्ण ध्यान रखा होगा; लेकिन आरम्भ से ही उनके साहित्य के प्रति अवश्य ही उपेक्षा की गयी होगी। इसका परिणाम यह हुआ होगा कि वे बड़े होकर और भी तरह-तरह के अपराधपूर्ण उपन्यास पढ़ने लगे जिनसे उनका मानसिक ह्रास एवं नैतिक पतन हुआ और माता-पिता को दुःख एवं लज्जा उठानी पड़ी। इसी तरह आज समाज ऐसी घटनाओं से भरपूर है जिनका कारण गलत साहित्य ही देखा जा रहा है। बहुत से लड़कों को मैं ने कहते सुना है कि "जासूसी उपन्यास पढ़ने से बुद्धि बढ़ती है। उसमें समस्याओं को इस प्रकार सुलझाया जाता है कि बुद्धि चकरा जाती है।"—लेकिन कैसी बुद्धि? - कैसा ज्ञान? उसमें तो लेखक खुद कभी अपराधी बन जाता है तो कभी जासूस बन जाता है। उसमें न कुछ वास्तविकता होती है न बुद्धि चकराने वाली बातें। बल्कि लेखक काल्पनिक गुत्थियों को उलझाता-सुलझाता एक ऐसी जाली बना डालता है कि पढ़ने वाले खुद उसमें मानसिक रूप से फँस जाते हैं और उनको अपराध करने का प्रोत्साहन मिलने लगता है।

आज बच्चों का सच्चा एवं उचित विकास अच्छी पुस्तकों पर निर्भर करता है। बच्चों की दुनियां में तो पुस्तकों की भरमार है पर अच्छी पुस्तकों की भरमार नहीं जो लड़के-लड़कियों के सामने सच्चा आदर्श प्रस्तुत कर सके। अगर ऐसा होता तो, आज सामाजिक पुस्तकें, तरह-तरह के उपन्यास बाजार में देखने को मिलती हैं जिनसे समाज में अवश्य ही सुधार आया होता, समाज में बुराइयाँ नहीं बढ़ने पाती। अगर उनमें सच्चा आदर्श

Gossner Mission

होता तो लड़के-लड़कियां अवश्य ही अपने आपको आदर्श चरित्र में ढाल सकते, उनका मन बेचैन न होता। कहने का तात्पर्य यह है कि ये बनावटी और काल्पनिक आदर्श बच्चों के हृदय की गहराइयों को छूने में असमर्थ हैं, जीवन के उद्देश्यों को बतलाने में गूंगे हैं। बच्चे ऐसी बनावटी आदर्श तथा जीवन की बनावटी समस्याओं को कभी ग्रहण करना नहीं चाहेंगे। एक बार जब बिली ग्रेहम भाषण देकर विद्यालय से लौट रहे थे, तब छात्र-छात्राओं की भीड़ ने उनसे कहा—"हमलोग यहाँ इसलिए हैं क्योंकि आप जीवन के बारे बात करते हैं और जिसके बारे में हमलोग जानना भी चाहते हैं। हमलोग यह जानना चाहते हैं कि जीवन का किस प्रकार सामना करें।" स्पष्ट है कि लड़के-लड़कियों को बनावटी जीवन समस्याओं संबंधी उपन्यासों, कहानियों से सही मार्ग दर्शन नहीं मिल सकता। आवश्यकता है ऐसे साहित्य की जो ठोस है एवं सही मार्गप्रदर्शन कर सकती है।

यही आवश्यकता चुनाव की समस्या खड़ी कर देती है कि सही पुस्तकों का चुनाव कैसे करें?— कौन पुस्तकें अच्छी हो सकती हैं?'— और इसी जगह माता-पिता थोड़ी-बहुत गलती कर बैठते हैं; क्योंकि उनका आधार प्रभु यीशु मसीह नहीं होता। माता-पिता बच्चों के शरीर को तो चिंता करते हैं पर उनकी आत्माओं को अछूता रखते हैं। आत्मा को भी उतनी ही देख-भाल की आवश्यकता है जितनी शरीर को। इसे अच्छी संगति और परमेश्वर को सहभागिता की आवश्यकता है। इसे आराधना, शांति और मनन की आवश्यकता है। आत्मा को आवश्यकता को प्रतिदिन पूरा न करने से, और इसे रोज-रोज कसरत न कराने से, यह दुबली और कमजोर हो जाती है। तब यह असन्तुष्ट, व्याकुल और अशांत रहती है। और तब इस आत्मा की चीख-पुकार और लालसा को दबाने के लिए बच्चे तरह-तरह के अपराध एवं बुराइयां करते हैं। अतः बच्चों के लिए ऐसी साहित्य का चुनाव करना चाहिए जो उनकी आत्मिक आवश्यकताओं को पूरा कर सके। यह साहित्य बाइबल ही हो सकती है। इसमें वर्णित सुन्दर-सुन्दर सच्ची कहानियों से संबंधित बहुत सी पुस्तकें हैं जो बच्चों के लिए बड़े उपयोगी हैं। यीशु के जीवन से संबंधित कहानियां है जो बच्चों को सत्य के नजदीक लाता है। इन साहित्यों से मन की शांति ही नहीं जो उन्हें विभिन्न परेशानियों तथा निराशाओं से बचाये रखती हैं, बल्कि आत्मिक शांति भी मिलती है जो उनके अंग-अंग में समा जाती है और जीवन के कठिन समयों में उनकी सहायक होती है। इसके अतिरिक्त और भी अन्य-अन्य धार्मिक कहानियां भी उपलब्ध हो सकती हैं जो, बच्चों में निर्मल ज्ञान, प्रेम, धीरज, सामर्थ तथा सहानुभूति उत्पन्न करती हैं एवं परमेश्वर का भय और भरोसा रखना सिखलाती हैं। अच्छे साहित्य से ही बच्चों में सुधार हो सकती है। आप कहेंगे—"इसके अतिरिक्त और जो सामाजिक पुस्तकें हैं, कहानियां तथा उपन्यास हैं वे क्या बुरी हैं? वे क्या बच्चों के सामने आदर्श शिक्षा प्रस्तुत नहीं करते?"—स्पष्ट उत्तर है—नहीं। क्योंकि एक तो ये काल्पनिक और बनावटी होते हैं, दूसरी अपूर्ण होती हैं। ये हृदय में गुदगुदी तो उत्पन्न करते हैं, पर उनके कोमल तारों को झंनझना नहीं पाते। ये दिल को थोड़ी-बहुत संतावना तो देती हैं, पर पूर्ण भरोसा नहीं दिला सकती हैं। बाइबल एक ऐसा सम्पूर्ण पुस्तक है जिसमें सारे समस्याओं का हल है। इसमें ज्ञान-विज्ञान की सभी बातें प्राप्त हो सकती हैं। यह एक ऐसा पुस्तक है जो समाज में जागृति उत्पन्न कर सकती है, सही मार्गप्रदर्शन कर सकती है तथा विश्व-बन्धुत्व की भावना को सफल बना सकती है। अतः माता-पिताओं को अपने बच्चों की संगति के साथ-साथ उनके साहित्य पर भी पूर्ण ध्यान देना चाहिए।

—सममोन लकड़ा 'शाम-सुबहा"
जी० ई० एल० चर्च,
बाबू लाईन, राँची।

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

पृष्ठ ५ का शेषांश)

जन्म पर्व बाद २रा एतवार

मत्ती १६:१-४

फरीसी लोग व्यवस्था के पक्ष में थे और स्वर्गदूत तथा देह के जी उठने पर विश्वास करते थे। सदूकी बैबल के लिखित वचन पर विश्वास करने तथा पुररुत्थान एवं स्वर्गदूतों पर विश्वास नहीं करते थे। फरीसी लोग किसी प्रकार के राजनैतिक दल के सदस्य नहीं थे और सभी प्रकार के सरकार की अधीनता स्वीकार करते थे। सदूकी लोग धनी वर्ग के थे और रोमी सरकार को सहयोग देने के लिये तैयार थे। परन्तु यीशु का विरोध करने में वे एक साथ थे। वे चिन्ह चाहते थे। यीशु ने उन से यों कहा—

परमेश्वर का चिन्ह यीशु आप ही है।

१ यीशु को देखो और पश्चाताप करो :—क्योंकि यीशु परमेश्वर का सुसमाचार है।

२ यीशु कब्र में गाड़ा जायगा :— वह मर जायगा। उसकी मृत्यु सारे जगत के लोगों के लिये होगा। जो यीशु पर विश्वास करेगा वह जीवन पावेगा।

३ यीशु ईश्वर का वचन है :— देखो यीशु में ईश्वर का वचन प्रगट है। परमेश्वर के प्रेम का प्रचारक यीशु आप ही है।

यीशु में ही परमेश्वर का चिन्ह ढूंढ़ें और हम संतुष्ट हो जावें मत्ती १२:३८-४०)।

एक भटका राही'''

दिसम्बर अंक से आगे

रेखा के करीब आकर न जाने क्यों ? मेरे जीवन में कुछ तहलका सा मच गया। उसके करीब रहकर मुझे जीवन में पहली बार संतोष और शांति का अनुभव हुआ। मैं अक्सर उनके घर आने-जाने लगा। उनके मां-बाप से मिला। उनका व्यवहार मुझे मोहने लगा। और मुझे अपने अन्दर कुछ परिवर्त्तन सा महसूस होने लगा। जी चाहता था उन्हीं के यहां सारा पल गुजार दूं।

मैं यह जानते हुए भी कि मैं रेखा के साथ अन्याय कर रहा हूँ। लेकिन रेखा·····कभी मुझसे बुरा बर्ताव नहीं की। रेखा अक्सर मुझसे यही कहा करती थी। विजय तुम नाम के मसीही हो, न ही कभी चर्च जाते हो, न ही बैबल पढ़ते हो ! तुम्हारे जैसे लड़कों के कारण ही तो आज हमारा मसीही समाज दिन प्रतिदिन पतन के गर्त की ओर बढ़ता ही जा रहा है।

मैं हँसकर टालते हुए यही कह देता—अरे छोड़ो ये बात, तुम तो अकेले ही मुझको बदनाम करने लगी। शायद ही आजकल कोई शरीफ़ लड़का तुम्हें मिलेगा जो एकाध बार चर्च जाता होगा। और हाँ यदि मैं अकेला ही चर्च न जाऊं तो क्या, सारा मसीही समाज बदनाम हो जायेगा ?

यह बात सुनकर रेखा का चेहरा गंभीर हो चला। दबी सी आवाज में बोली—हाँ विजय एक के कारण भी, विजय तुम खुद ही सोचो, यदि तुम ही अकेले प्रभु को अपना जीवन दोगे तो शायद एक के त्याग से बहुत लोग जो अंधकार में पड़े हैं, सच्ची ज्योति को देख पायेंगे। बोलो, ये सच नहीं।

समय का चक्र अपनी गति से घूमता रहा। इस कश्मकस दुनियां में भला मन को कौन कब कैद कर सकता है। उस वक्त मैं उमगों और इच्छाओं से भरी हुई उम्र से गुजर रहा था। हर कदम कदम पर एक-एक इच्छा जागती थी, जिसे झूठलाया नहीं जा सकता था।

शाम का वक्त था। मन्द-मन्द हवा चल रही थी। मैं अपने ख्यालों की दुनियां में खोया हुआ सा रेखा के घर पहुँचा। देखा, रेखा कुछ बुझी-बुझी सी नजर आ रही थी। मैं उसकी खामोशी को तोड़ते हुए कहा—रेखा, आज तुम इतनी खामोश क्यों हो ? चलो कहीं घूम आयें, शायद तुम्हारा मन बहल जाये। नहीं विजय, आज मेरा जी कहीं घूमना नहीं चाह रहा है।

रेखा ऐसा भी क्या ? लगता है आज तुम मुझसे कुछ छिपा रही हो ?

विजय मैं भला तुमसे क्या छिपाऊं, जो है सो तुम्हारे सामने है लेकिन विजय···मुझे ये नाटक कब तक खेलना पड़ेगा, अब मुझसे नहीं होगा।

Gossner Mission

रेखा, यदि बुरा न मानो तो एक बात कहूंगा।
हाँ कहो, मैं भला तुम्हारी बातों का बुरा क्यों मानूं।
सच रेखा, तुम्हारे करीब आकर मुझे ऐसा लगता है। जैसा मेरी खोयी हुयी मंजिल मिल गई है जिसे मैं खोकर कभी शांति नहीं पा सकता और रेखा तुम ये जानकर भी अनजान हो? रेखा अब मुझे अपनों से दूर मत करना। मुझे अपना लो।

विजय ये तुम क्या कह रहे हो? तुम इन्सान नहीं हो विजय,··· तुम एक गरीब, मजबूर लड़की की···आत्मा को चन्द सिक्कों के सहारे मोल लेना चाहते हों? विजय··· मैंने तुम्हें एक दोस्त और भाई का प्यार दिया। आखिर क्यो तुम मेरे पवित्र स्नेह को कंलकित करना चाह रहे हो? रेखा मुझ पर तरस खाओ, रेखा काश तुम···रेखा बीच में ही बोल पड़ी नहीं···कभी नहीं, बोलो विजय क्या··· पत्नी बढ़कर बहन का प्यार नहीं।
बोलो विजय····· चुप क्यों हो गये?
मैं कुछ कह न सका, मेरी पलकें अपने आप झुक गयीं। पांव तले धरती खिसकने लगा और मैं बिना उत्तर दिये घर की ओर लौट पड़ा।

× × × × ×

उसके बाद कई दिन बीत गये पर मैं कभी रेखा के घर की ओर नहीं गया। उस रात मुझे नींद नहीं आई। जिन्दगी में यही मेरी पहली हार थी। अक्सर दुनियां में इसी बाजी से हरनेवाला मौत ही खोजता है इसलिये मैं भी बढ़ा जा रहा था मृत्यु की ओर हमेशा-हमेशा के लिये प्रतिशोध की आग में जल जाना चाहता था। मुझे अब अपने जीवन से कोई चाह नहीं थी। लेकिन कौन सी शक्ति मुझे बार-बार ये काम करने से रोक रही थी।

मैं स्वयं को रोक नहीं पा रहा था। दूर दूर तक जीवन हीन लग रहा था। मेरा चेहरा घोर निराशा से लिप्त था मेरे नयनों के समक्ष चलचित्र की भांति मेरे सब पाप नाच रहे थे। जीवन की अनेक घटनाएँ साकार हो उठी और मैं इन बुने हुए विचारों के जाल में उलझता सा चला गया। समझ नहीं आ रहा था। क्या करूँ? क्या न करूँ? मैं अपनी भावनाओं पर अधिकार करने का प्रयत्न कर रहा था। इधर मानसिक समुन्द्र में अशान्ति का भारी तूफान उठ रहा था। मेरे हृदय में अग्नि भड़क रही थी। और मैं उसमें जलने लगा। रेखा के कहे हुए शब्द बार-बार मेरे दिल में गूँज रहे थे.····तुम इन्सान नहीं हो विजय ···तुम गरीब ····आत्मा को··· चन्द सिक्कों में·····मोल लेना चाह रहे थे। मेरे मन को धक्का सा लगा। किन्तु कुछ क्षणों में ही मेरा हृदय गद्‌गद् हो उठा। मेरी अन्तरात्मा चिला उठी···विजय... रेखा जैसी बहन को पाकर भी ये तुम क्या सोच रहे हो?, जी चाहता था रेखा के करीब जाकर मांफी मांग लूं, लेकिन साहस नहीं कर पा रहा था। मन भी अजीब वस्ती है। मैं अपने को एक अपराधी सा महसूस करने लगा और अन्दर ही अन्दर घुटने लगा।

हर इन्सान के लिये यही युवावस्था ही निर्णय का समय है जो गिर जाता है वो कभी भी उठ नहीं सकता है। मैं इसी निर्णय के राह पर आकर ठहर गया।

सूरज डूब चुका था। चारों ओर अमावस्या का अंधकार फैलता ही जा रहा था और मैं बीते पल के बारे में सोच रहा था। कभी-कभी रेखा के उपर क्रोध आता, तो कभी प्यार। समझ नहीं आ रहा था क्या करूं? अचानक मेरे दरवाजे पर दस्तख हुई। मैं जैसे ही दरवाजा खोला। देखा, रेखा के पापा खड़े थे। बहुत घबराये हुये नजर आ रहे थे।
मैंने कहा— आप, इस वक्त।

हाँ बेटा विजय, अचानक रेखा की तबियत खराब हो गई है चलो, जल्द चलो। मैं जल्दी से गैरेज से कार निकाला और उसके पापा के साथ रेखा की घर की ओर चल पड़ा।

रेखा का शरीर तेज ज्वर से जल रहा था। लेकिन उसकी भोली आंखों में अब भी वही चमक थी। मुझे देखते ही रेखा ने बहुत प्रेम से कहा— विजय तुमने आज तक मुझे कोई जबाव नहीं दिया।

मैं चाहकर भी कुछ नहीं कह पा रहा था। मैं शून्य नेत्र से रेखा की ओर ताकने लगा। अनायास मेरे मुंह से निकल पड़ा— रेखा मुझे माफ कर दो, मैंने तुम्हारे पवित्र स्नेह को कलंकित करने की कोशिश की। मैं दो आत्मा को मिलने से जुदा किया, मैं पापी हूँ रेखा, मैं पापी हूँ।

Gossner Mission

विजय···नहीं विजय ऐसा कभी नहीं कहो, भूल जाओ उन गुजरी हुई बातों को, मर्द रोते नहीं बल्कि आंसुओं को चुपचाप पी लेते हैं। गलती का प्रायश्चित ही तुम्हारी सबसे बड़ी सजा है।

रेखा मैं अब तुम्हारे भाई कहलाने के काबिल नहीं हूँ तुम्हारे स्नेह में मैं दब गया हूँ। मुझे क्षमा कर दो, मैं अपने पाप स्वीकार करता हूँ।

विजय तुम मुझसे माफी क्यों मांग रहे हो? खुदा से माफी मांगो। जिसने तुम्हारे और हमारे पापों के लिये क्रूश पर कुर्बानी दी। मैं तड़प उठा, मुझे बचा लो, मुझे रोशनी दो, जिन्दगी दो, रेखा पाप की जिस आग में, मैं आज जल रहा हूँ उसका दर्द असहनीय है मुझे वह अनष्ट शांति दो जो तुम्हारे दिल में बसी है।····· मेरी कुछ मदद करो रेखा।

विजय····· यह कहकर रेखा बेहोश हो गयी।

अचानक मेरी अन्तरात्मा कह उठी। विजय रेखा ने तुम्हारी खुशी के लिये बहुत बड़ा त्याग किया, स्वंय रोकर तुझे हँसाया। क्या तू उसके लिये कुछ नहीं कर सकता?. तुझे रेखा के एहसान का बदला चुकाना ही होगा····· चुकाना होगा।

मैं इस अन्धकार भरी रात को चीरते हुये प्रकाश की घर की ओर चल पड़ा। प्रकाश के कमरे से इस वक्त भी रोशनी आ रही थी। मैं प्रकाश के दरवाजे के पास पहुंचकर उसका दरवाजा खटखटाया। प्रकाश अपने कमरे से निकला। मुझे इस वक्त अपने दरवाजे पर खड़ा देख कर घवड़ा गया।

विजय तुम! वह मुझसे लिपट गया प्रकाश आज मैं तुम्हे लेने आया हूँ चलो प्रकाश। और प्रकाश मेरे साथ रेखा की घर की ओर चल पड़ा। आगे मैं कुछ न कह सका।

जैसे ही हमदोनों ने रेखा के घर में कदम रखा। देखा डाक्टर निराश रेखा के पास खड़े थे। प्रकाश को देखते ही रेखा के आंखों में आंसू छलक आए।

रेखा ने कहा—मुझे माफ कर दो। मैंने तुम्हें बहुत दुःख दिया। मेरी इच्छा थी कि जाने से पहले तुम्हें एक पल देख लूँ। प्रकाश...मैं तुम्हारे दोस्त और अपने भाई विजय को तुम्हारे साथ छोड़कर जा रही हूँ। तुम अपने दोस्त को गलत मत समझना। उनकी सारी बुराईयों को भूलकर उसे अपना लो, क्योंकि हमारे मुक्तिदाता ने भी हमारी बुराईयों को भूलकर हमें अपनाया है और मेरा हाथ प्रकाश के हाथों मे देकर सदा के लिये दुनिया से चल बसी और दूसरे ही क्षण रेखा का निर्जीव शरीर रह गया। वह चली गई। खो.....गई.....। अब भी मेरा हाथ प्रकाश के हाथ में था मैं फूट-फूट कर रोने लगा।

प्यार लुट गया था.....इन्सान बिक चुका था ईमान जाता रहा। कहाँ... मुझे कुछ पता नहीं।

× × × × × ×

धरती पर जब सुबह आती है तो शाम भी अवश्य आती है। प्रकृति का यही नियम है। मनुष्य के जीवन में भी कुछ ऐसा ही होता है, क्योंकि वह भी प्रकृति का एक अंग है। हर जन्म के साथ मौत भी आते हैं। जीवन में जन्म–मरण का जोड़ तो लगा ही रहता है।

विजय अब बस करो, बहुत हो गया।

मेरे आंसू चाहकर भी रूक नहीं पा रहे थे। मैं अपने कर्मों के बन्धन में उलझता सा चला जा रहा था। दिल टूट–टूट कर चूर-चूर हो चुके थे। मेरे होंठ फड़क उठे—प्रकाश, मुझे माफ कर दो। तुमने मेरे कारण जो त्याग किया। उन्हें मैं कभी भी भूल नहीं सकता। तुमने मुझे सच्चे हितैसी का प्यार दिया। जिसके बोझ से मैं दब चुका हूँ तुम मरते दम तक मेरे दोस्त ही रहोगे।

नहीं विजय... ..... मैं तो एक सांसारिक दोस्त हूँ जो तुम्हें कभी भी इस संसार में अकेला छोड़कर जा सकता हूँ लेकिन विजय आज मैं तुम्हें ऐसे दोस्त के पास ले जाना चाहता हूँ जो तुम्हें कभी भटकने नहीं देगा। वो तुम्हें कभी धोखा नहीं देगा। आधी राह में भी नहीं छोड़ेगा। तुझे सच्ची शांति और पापों की क्षमा। क्या तुम ऐसे दोस्त को अपना नहीं चाहोगे?

मैं सिर्फ इतना ही कह सका — प्रकाश काश मैं तुम्हें पहले पहचान पाता। आगे कुछ कह न सका। आंखों में आंसू छलक आए।

विजय पहले पहचानते भी कैसे? उस वक्त हम दोनों की राहें जुदा थीं। विजय मैं जानता हूँ, आज तुम किस

Gossner Mission

परिस्थिति से गुजर रहे हो। तुम जिन्दगी के उस मोड़ पर खड़े हो, जहां से दो राह नजर आ रही हैं। एक ओर जिन्दगी तो दूसरी ओर मौत।

विजय जीवन की समस्याओं के आगे घुटने टेकना तो बुजदिल है। इस जिन्दगी में हारना नहीं, जीना भी एक कला है और यदि जीवन में कुछ खोकर किसी को कुछ दे सको, वही जीवन है यही जीवन की सफलता है।

आज ही चुन लो विजय कि तुम्हें किस मार्ग में जाना है क्या ये मौत, तुम्हें कभी शांति दे सकेगी ?

मैं तड़प उठा कभी नहीं.....प्रकाश कभी.....नहीं शांति दे सकती। कभी नहीं.....

मिस नितिर तारा तोपनो
जमशेदपुर—६

धन्यवाद आप का ग्राहक चन्दा [३० नोवेम्बर, ७४ तक] मिला।

1. Cat. Titus Tete
2. Cat. J. Kerketta
3. Mr. Barnabas Dhan
4. Mr. Namza Horo
5. Mr. Niral Dang
6. Mr. B Dangwar for 14 Copies
7. Mr. Junathan [illegible]n for2.
8. Mr. P. P. M[illegible]
9. Mr. C. Kaly[illegible]n Hemrom
10. Rev. C. D. [illegible]
11. Rev. W [illegible]no fo 40,
12. Mr. Urbanus Kujur
13. Shri Sudarsahan Kandir
14. Pracharika Esran Herenz
15. Mr. XBN Topno for 16
16. Mrs Santoshi Verma
17. Mr. Daniel Samad
18. Mr. Yakub Kandulna
19. Mr. P. S. Kujur
20. I. D. Kujur
21. Shri S. Kandulna
22. Shri Benjamin Tirkey
23. Miss Bahalen Kerketta
24. Mr. Junas Kullu
25. Mr. Michael Umbulan Purti
26. Mr. Zachariah Baba
27. Mr. Niarjan Topno
28. Shri Emmanuel Lugun.
29. Dr. Anandmasih Guria for 2,
30. Mr. H. Dahanga for 3.

रजिस्टर्ड नं. आर. एन. सी. ४
वर्ष—६५ राँची, जन[illegible] १९७५, संख्या नं.—१

Edited and published by Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G.E.L. Church and Printed at G. E. L. Church Press, Main Road, Ranchi / Bihar.

Gossner Mission

धर्मबन्धु

रजिस्टर्ड नं॰ आर॰ एन॰सी.४

वार्षिक मूल्य ५ रु॰

EINGEGANGEN
- 5. MAI 1975
Erledigt संख्या नं॰ ... ३ .....

वर्ष — ६५ रांची. मार्च १९७५

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

Editor & Publisher
Pramukh Adhyaksh,

Associate Editor
Rev. C. S. R. Topno

Editorial Committee

Rev. M. Tete
Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय		—	३
उपदेश की तैयारी	रेभ टेटे	—	४
अंतिम निर्णय		—	६
केन्दुघाटी		—	७
खुशी का सुसंदेश		—	८
जीवन का दर्शन		—	९
जन्म पर्व की छुट्टियों के अवसर पर		—	११
कलीसियाई समाचार		—	१३
फैशन और स्टाईल		—	१६
गोस्सनर एवंजेलिकल लूथेरान.....		—	१७
धन्यवाद आप का ग्राहक चन्दा मिला		—	१८
मैं वही हूँ		—	१९
Statement about Ownership...		—	२०

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणतः १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य पांच रूपये हैं।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें।

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये पते पर ही भेजें। एसोसिऐट एडीटर, घरबन्धु; जी० ई० एल० चर्च [कि० एस० एस० ऑफिस], राँची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता० तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इसमें बांयी ओर 1½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेजें

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रखनी चाहिये, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगा।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालू की जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १०-ता० के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवतः ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छपे जाते हैं; ग्राहक चन्दा के बाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवत : डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित कुछ लिखा लें।

Gossner Mission

सम्पादकीय

यह माच महीना हमें दो विशेष बातों का स्मरण कराता है :—(१) यीशु मसीह का दुःख और मरण
(२) यीशु मसीह का पुनरुत्थान।

मसीही कलीसिया में ये दोनों बातें बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। क्योंकि इन्हीं में मसीह के जगत में आने का अभिप्राय पूर्ण होता हुआ दिखाई देता है। अगर ये दोनों ही बातें सुसमाचार से अलग कर दी जायें, तो सुसमाचार अपूर्ण ही रह जायगा। अगर ये भी अलग-अलग ली जायं, तो इनका महत्व नहीं रह जायगा। अतः दोनों को एक साथ लेकर इन पर ध्यान देना आवश्यक है।

अपनी सेवकाई के दरमियान यीशु ने स्वयं ही अपने आने का अभिप्राय इस प्रकार बतलाया—"……मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाय, पर इसलिये आया कि आप सेवा टहल करें, और बहुतों को छुड़ौती के लिए अपना प्राण दे" (मार्क १० ४५) उसका यह कथन उसकी पूरी सेवकाई में सच ठहरता है, और उसके दुःख भोग तथा क्रूश मृत्यु में इसकी सत्यता चरम सीमा पर पहुंच जाती है, जब कि वह स्वयं निर्दोष, हां पापरहित होकर भी समस्त मानव जाति के पापों के प्रायश्चित के लिए अपने आप को बलिदान कर देता है।

लेकिन यहां यह भी विशेष ध्यान देने योग्य है, 'कि बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण देने में' यीशु मसीह अपने प्राण को नहीं खो देता है, परन्तु इसके विपरीत, यीशु मसीह के प्राण को वश में रखने के प्रयास में मृत्यु ही अपनी शक्ति खो बैठती है, वही स्वयं यीशु मसीह के वश में हो जाती है। फल यह होता है कि मसीह को पुनः जीवन प्राप्त होता है। वह मृतकों में से जी उठता है। यह तो जगत के लोगों के लिए बहुत ही विचित्र बात है। मसीह का जी उठना ही उसके उद्धारकारी कार्य की छाप है। उसने स्वयं पहले ही कहा था, कि "वह जी उठेगा" मार्क १०:३४, मत्ती २०:१९, लूका १८:३३ आदि। यीशु मसीह का पुनरुत्थान ही समस्त जगत के लोगों को जो उस पर विश्वास करते हैं, अन्तिम और भयानक, शत्रु अर्थात मृत्यु से बचाता है। उस पर विश्वास करने वाले के लिए अब दण्ड की आज्ञा नहीं रही, परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।

पाठकों को पुनरुत्थान पर्व्व आनन्दमय हो।

घरबन्धु, मार्च १९७५

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

मार्टिन टेटे

ओकुली

(मेरी आंखें) लूक ६ : ५१-५६

यीशु के विचार और मनुष्य के विचार में भिन्नता है। मनुष्य की इच्छा और ईश्वर की इच्छा साथ-साथ नहीं चलती है। मनुष्य नाश करने चाहता है और यीशु बचाने चाहता है। वह लोगों को बचाने के लिए यीरुशलीम जाता है। यीरुशलीम में वह बचाने का काम पूरा करता है।

ईश्वरीय अभिप्राय—मानव विचार

क. ईश्वरीय अभिप्राय—

१ मनुष्य को बचाना—जीवन देना।

२ क्रूश उठाने के लिए यीरुशलीम जाना—क्रूश की मृत्यु से मनुष्य के लिए जीवन कमाना।

३ सामरियों का ठुकराना और चेलों के अविश्वास को सहना।

४ मनुष्य के लिए स्वर्ग में जगह तैयार करना। यीशु स्वर्गारोहण के समय स्वर्ग को उठाया गया ताकि अपने लोगों को स्वर्ग की ओर बढ़ावे (५१)।

ख. मानव विचार—

१ क्रोधित हो जाना और विनाश की इच्छा करना (५४)।

२ ठुकरा देना—जातीय भेद ले आना (५३)।

३ अज्ञानता में अन्त—मानव नहीं जानता कि नई बाचा क्षमा देने और सहने के लिये दी गयी है। विनाश की इच्छा तो शैतान की ओर से है।

आप का विचार क्या है? याकूब और यूहन्ना की जगह में होते तो आप क्या करते?

लेतारे

(आनन्द कर) यूहन्ना ६ : ४७-५७

यीशु पाँच हजार लोगों को खिलाता है। इस्राएलियों को जंगल में मन्ना खिलाया था। दोनों वर्णनों का संकेत यीशु की ओर है।

"यीशु जीवन की रोटी है"

क खाने वाला सर्वदा जीवित रहेगा (५०)। इस्राएल मन्ना खा कर मर गये। पांच हजार लोग भी मर गये। परन्तु यीशु जीवन रखता है। यीशु को ग्रहण करने वाला नहीं मरेगा। यीशु स्वर्ग से आया है। यीशु सम्पूर्ण जगत के लिए जीवन की रोटी है।

ख खाने वाला जी उठेगा (५४)। इस वचन से प्रभुभोज की ओर भी संकेत है। रोटी और दाखरस में वह अपने आप को अर्पण करता है। प्रभुभोज खाने वाला जी उठा है। यीशु आप ही पुनरुत्थान और जीवन है। जो उस पर विश्वास करता है वह जीता है। अपने पुनरागमन तक इसी भोजन से विश्वासियों को जिलाता रहेगा। यीशु आज भी वचन के द्वारा अपने लोगों को आत्मिक भोजन देता है।

युदिका

(न्याय कर) यूहन्ना १३:३१-३५

प्रभु यीशु अपनी महिमा क्रूस की मृत्यु में देखता है। क्रूस की मृत्यु में परमेश्वर का प्रेम प्रगट है। ईश्वर से प्रेम रखने वाले लोगों के बीच प्रेम वास करता है।

"यीशु की महिमा"

क क्रूस की मृत्यु में है। (३१) प्रेम के कारण उसकी मृत्यु क्रूश में हुई यहुदा इस्कारियोती यीशु की मृत्यु का प्रबन्ध करता है।

ख पुनरुत्थान में है (३२) ईश्वर उसको जिला उठावेगा और अपनी दाहिनी ओर बैठावेगा।

ग विश्वासियों के प्रेमी जीवन में है (३५)। विश्वासी प्रेम के द्वारा साक्षी देता है कि वह यीशु का है।

घ नई आज्ञा में है (३४)। मृत्यु में यीशु का प्रेम प्रगट है। इस आज्ञा को हम लैव्यवस्था १९ : १८ में भी पाते हैं। उसकी मृत्यु के स्मरण के

Gossner Mission

निमित्त प्रभुभोज के द्वारा लोग प्रेम में फिर कर दृढ़ाये जाते हैं। प्रेम के द्वारा यीशु की संगति का प्रदर्शन होता है। आपके जीवन को यीशु का प्रेम प्रभावित करे ताकि आप दूसरों से प्रेम कर सकें।

पलमारुम

(खजूर की डाली) योहन १२ : १२-१६

प्रभु यीशु यीरुशलीम में प्रवेश करने के द्वारा यह गवाही देता है कि वह पुराने नियम की प्रतिज्ञा का मसीह है। नबियों ने कहा है कि इसी मसीह के द्वारा परमेश्वर का राज्य स्थापित किया जायगा।

स्वागत का नारा

क होशाना—(अभी हमें बचा) यीशु जगत को बचाने आया। यीरुशलीम को बचाने आया। हमें बचाने आया। हमारी प्रार्थना है कि हमें अभी बचावें।

ख धन्य इस्राएल का राजा—वह इस्राएल का राजा है। इस्राएल की महिमा है। जयवन्त राजा है। खजूर की डाली से स्वागत का अर्थ है कि वह जयवन्त राजा है।

(यशायाह ६ : ७; यिर्मयाह २३ : ५ दानिएल ७ : १४; यूहन्ना १ : ४६; १८ : ३७)।

ग प्रभु के नाम से आता है—यीरुशलीम आता है। राजधानी में आता है। मेरे और आप के जीवन में आता है। ईश्वर की ओर से भेजा गया है। मुझ में और आप के राज्य करने के लिये आ रहा है। लाजर के जीवन में आया। आप के जीवन में भी आवेगा।

प्रतिज्ञा का मसीह और ईश्वर का राज्य आप के जीवन में आ गया है। क्या आप स्वागत के निमित्त तैयार हैं?

भला शुक्रवार

लूक २३:३६-४६

गलगथा पहाड़ का जीवित दृश्य हमारी आँखों के सामने है। तीन क्रूश हैं। तीनो क्रूस में पाप के कारण तीन मनुष्य टांगे गये हैं। तीनों मनुष्य मृत्यु के मुख में हैं। परन्तु एक मरता है और दो स्वर्ग में मुलाकत करते हैं।

तीन क्रूश

क पहला क्रूश में पहला डाकू— अपने पाप के कारण टांगा गया है। पश्चाताप नहीं करता है। त्राण को नहीं देखता है और मृत्यु को प्राप्त करता है। यीशु से अलग हो जाता है। उसने मसीह को ग्रहण नहीं किया परन्तु कुकर्म्मी समझा। पहला क्रूश अपश्चाताप और मृत्यु की ओर संकेत करता है जिससे निन्दा का शब्द निकलता है।

ख दूसरे क्रूश में यीशु है— दुनिया के पाप के कारण टांगा गया है। यीशु का क्रूश जीवन की ओर संकेत करता है। मसीह के क्रूश से शान्ति का शब्द निकलता है। —"आज ही तू मेरे संग स्वर्ग लोक में होगा। अर्थात तू मेरे संग जीयेगा। हे पिता मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ" कार्य पूरा हो गया। मैं तेरे साथ हूं। लोगों ने मुझे पहचाना। त्राण का कार्य सिद्ध हो गया। मसीह का क्रूश प्रमाण करता है कि वह परमेश्वर का पुत्र है। (४६-४७)।

ग तीसरे क्रूश में दूसरा डाकू है— वह अपने पापों का फल भोग रहा है। तीसरा क्रूश पश्चाताप की ओर संकेत करता है। और एक प्रार्थना सुनाई देती है। (४२)।

तीसरा डाकू यीशु के संग हो लिया उसने प्रभु पर विश्वास कर जीवन का भागी हुआ।

गलगथा आप के सामने है आप किस क्रूश की ओर दृष्टि फेरते हैं।

पुनरूत्थान पर्व्व

प्रभु का जी उठना

(लूक २४:१३-३५)

दो भाई मार्ग में हैं। उनके बीच पुनरूत्थान के विषय बात चीत होती है। परन्तु जीवित प्रभु का अनुभव उन्होंने नहीं किया था। क्योंकि वे विश्वास में कमजोर थे। (२१)।

"निश्चय प्रभु जी उठा है"

क धर्मशास्त्र साक्षी है (२५-२८) नबियों ने कहा था कि यीशु उठेगा।

Gossner Mission

ख प्रभु भोज साक्षी है (३०) प्रभु अपने को विशेष रूप से प्रगट करता है। वह रोटी तोड़ कर उन्हें देता है। रोटी तोड़ना फ़सह पर्व्व और प्रभु भोज के अनुष्ठान का स्मरण दिलाता है।

ग भाइयो और बहनों की साक्षी है (२३-२४)।
घ स्वर्ग दूतों की साक्षी है (२३)।

प्रभु सचमुच जी उठा है तुम्हें शान्ति मिले॥

अन्तिम निर्णय

C. R. Horo (Teacher)

परन्तु धन्य वे हैं, जो ईश्वर का वचन सुनते और मानते हैं। लूका ११:२८।

किसी वन के मध्य झोपड़ी में एक बकरी अपने छोटे बच्चों के साथ रहती थी। वह प्रतिदिन बाहर जाने के पहले अपने बच्चों को यह कहकर जाती थी, कि जब तक मैं वापस नहीं आऊँगी, तब तक किसी के कहने से दरवाज़ा मत खोलना। एक दिन बकरी को खाना की खोज में दूर जाना था। वह अपने छोटे बच्चों को यह आज्ञा देकर चली गयी कि मेरे लौटने तक तुम लोग घर में दरवाजा बन्द करके रहना। पास ही झाड़ी में एक भेड़िया बकरी की बातें सुन रहा था। थोड़ी देर में वह झोपड़ी के दरवाजे पर आया और अपना आवाज बदल कर छोटे बच्चों को दरवाज़ा खोलने के लिये कहा। बच्चे सोचने लगे कि अभी तुरन्त ही उनकी मां उनको कह कर गयी है कि दरवाजा मत खोलना; तो यह क्या बात है। उन्होंने दरवाजे के छेद से देखा कि दरवाजे पर एक भेड़िया बैठा हुआ है। मसीही भाईयो एवं बहनों हम समझ सकते हैं कि अपनी माँ की बात (आज्ञा) नहीं मानने से उन बच्चों का क्या हाल होता। भेड़िया उन बच्चों को चीर-फाड़ कर खा जाता। परन्तु आज्ञा पालन करने से वे छोटे-छोटे बच्चे बचाये गए। अब प्रश्न यह है, क्या हम खृस्तान लोग ईश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं? जिसके हम सेवक हैं? जिसकी आराधना हम हर रविवार या सांझ बिहान करते हैं? जिसके विषय हम गवाही देते हैं? जिसका बचन को हम रेडियो, ट्रान्जिस्टर, पत्रिका या अन्य प्रकार से सुनते और प्रचार करते हैं? ईश्वर का बचन लूका ११:२८ में हमें सिखाता है, धन्य वे हैं जो ईश्वर का बचन सुनते और मानते हैं।

ईश्वर आत्मा है, त्रिएक परमेश्वर का बचन (आज्ञा-पालन) ही सच्चा आत्मिक जीवन कहलाता है। ईश्वर की आज्ञा का पालन करने से ही हम बचाये जा सकते हैं। क्योंकि वह आत्मा है, इसलिए शारीरिक होकर हम उसको कभी नहीं जान सकते हैं। परमेश्वर से मिलने के लिए आत्मा के आनुसार चलने (आज्ञा पालन) की आवश्यकता है। परमेश्वर प्रेम है वह अपनी सारी सृष्टि से प्रेम रखता है। वह किसी पापी मनुष्य को न कभी नष्ट किया है, और न करेगा। परन्तु पापी मनुष्य अपनी सीमित बुद्धि और अपनी स्वतन्त्र शक्ति का गलत प्रयोग करके स्वंय ही नष्ट हो जाता है। प्रत्यक्ष कलीसिया के सदस्य जो नियमानुसार गिरजा बिन्तो में शामिल होते हैं। हमें आत्मा के अनुसार चलने का यत्न करना चाहिये। हम सिर्फ ज्योति का प्रचार ही न करें बल्कि ज्योति में चलते हुए ज्योति का प्रचार करें। क्योंकि प्रत्यक्ष कलीसिया में बहुत से लोग उल्लू और चमगीदड़ जैसे हैं। जिन्हें ज्योति से कुछ लाभ नहीं होता है। अतः हम अन्तिम निर्णय पर ध्यान करें। बचन कहता है कि बहुत से लोग पूर्व और पश्चिम से आकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे, परन्तु राज्य के सन्तान बाहर अन्धियारे में डाल दिए जायेंगे वहां रोना और दाँतों को पिसना होगा। मत्ती ८:११:१२।

घरबन्धु, मार्च १९७५

Gossner Mission

केन्दुघाटी

दिनांक ५ जनवरी को हमारे नये धर्मगुरू रेव्ह. एस. तोपनो हाथीओढ़ा मंडली में सुसमय पर पहुँचे जहां मण्डली ने "फूलमालाओं" से स्वागत किया। सुसमाचार में से याकूब ४:१६+१७ और मत्ती १६:१-४, पर शिक्षा जनक उपदेश देकर मंडली को सावधान किया। गिरजा के अन्त होते ही हमारे गांव केन्दुघाटी को चल पड़े जहां "सन्डे स्कूल दिवस" मनाने का न्योता था। इस प्रोग्राम में धर्म गुरु और हमारे इलाका मेम्बर श्री जेम्स रुत्ता, अपने गांव "एरगेड़ा युवा संघ" सहित हमारे गांव में पहुंच जाने के कारण खुशियों की लहर कईगुणा बढ़ गई। स्वागत के फाटक पर बच्चों ने "होशाना! होशाना !! होशाना !!! लिख कर यूहन्ना ३:२६-३१ को रंगीन रुप से सजाया था जिससे स्वागत में रौनक बढ़ी। गीत गाते हुए बच्चों ने धर्म गुरु और इलाका मेम्बर सहित "युवा संघ" को बड़ी खुशी भरा दिल से स्वागत किया। इसके बाद हमारे गांव की उपासना स्थान घर के द्वार पर गांव भर के "बूढ़ा-बुढ़ियों" ने धर्म गुरु को "फूल मालाओं सहित" समेटते हुए घर के भीतर ले चले जहां हमारे स्थानीय चेयरमेन साहब रेव्ह. एस. डुंगडुंग ने अपनी पहली बार के आगमन पर प्रभुभोज का प्रोग्राम कुछ साल पहिले रखा था। गिरजा घर खूब खचाखच भरा था। धर्म गुरु ने "धर्म शास्त्र में से हमें" दाऊद और गोलियथ की लड़ाई के बारे जोशीले रुप से उपदेश देकर परमेश्वर पर अटल विश्वास में रहने को स्थिर किया। गिरजा के बाद धर्म गुरु ने, हमारे इलाका मेम्बर के साथ बच्चों को, चाकलेट, गुलाबी रिबन, कंघी वगैरह वितरण कर "हमेशा सन्डे स्कूल आने को कहते चले। शाम को "प्रेम भोज" का प्रबन्ध था जिसमें गांव भर के सब मसीही मिलकर "परमेश्वर की महिमा की।" पाठकों से बिनय है कि हमारे सन्डे स्कूल के बच्चों को अपनी दैनिक प्रार्थना में सामिल करें, ताकि वे भी "मंडली के खूंटे और खंभे बन सकें।"

बी० तोपनो

प्रथम युवा सम्मेलन अंडामन द्वीप समूह में।

अंडामन और निकोवर द्वीप समूह जी० ई० एल० चर्च के प्रेसिडेन्ट पाद्री सबन मार्टिन तोपनो द्वारा दक्षिणी अंडामन के बाराटांग द्वीप समूह में प्रथम युवा सम्मेलन तारीख १२.१.७५ एतवार को आयोजित था। करीब २५० युवाओं ने विभिन्न द्वीप समूह से डोंगी, बोट, शिप तथा पैदल द्वारा आकर भाग लिया। इसके अलावा मारथोमा तथा जेकोबैट मिशन से रेंजर तथा डिपुटी रेंजर भी उपस्थित थे। शानदार कार्यक्रम था। उत्पत्ति ३:६ "तू कहां है" से प्रेसिडेन्ट महोदय ने युवाओं को बुलाहट की आवाज में प्रभावशाली एवं लाभदायक शिक्षा दिया। अंडामन तथा निकोवर जी० ई० एल० चर्च० के जोइन्ट सेक्रेटेरी श्री मार्सल केरकेट्टा ने युवाओं के अधिकार तथा कर्त्तव्य पर प्रभावशाली भाषण दिए। बुजुर्ग पाद्री बाबुलाल तोपनो ने युवाओं को प्रेम, धीरज तथा विश्वास पर शिक्षा दिया भजन होड़ पर ७ टीमों ने भाग लिया। प्रथम द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त टीमों की सराहनीय चर्चा चली। युवा संघ के कार्य कर्त्तागण निम्न-लिखित चुने गए—

प्रेसिडेन्ट—पावल केरकेट्टा
वाइस "—जुलियुस एक्का
सेक्रेटेरी—धर्मदास खलखो
जोइन्ट " —जोलजस एक्का
खजांची—नीमी तोपनो
तथा ७ मेम्बरगण हरएक डेराओं से चुने गए। हमारे

Gossner Mission

प्रेसिडेन्ट पाद्रो सबन मार्टिन तोपनो के अंडामन में आने से सारे द्वीप समूह जी० ई० एल० चर्च० के भाई एवं बहनें जागृत हो रही हैं इसलिए कलीसिया के अधिकारीगण भी हमारे प्रेसिडेन्ट महोदय को सहयोग दें। ताकि अंडामन तरक्की करे।

प्रचारक—निर्बन्ध गुड़िया।

नये बिशप का पदाभिषेक।

तामिल एवंजेलिकल लुथेरान कलीशा के लिए नये विशप the Rt. Rev.Lazarus Easter Raj का पदाभिषेक १४ जनवरी १९७५ को ट्रॉकोवर यीरुशलेम चर्च में बड़े धूमधाम के साथ हुआ। उनकी ओर से गोस्सनर कलीशा को नमस्कार और शुभ कामनाएँ। मुझे गोस्सनर कलीशा की ओर से प्रतिनिधित्व का अवसर प्राप्त था।

पा० मार्टिन जोजो

"खुशी का सुसन्देश"

इलियस केरकेट्टा
जी० ई० एल० मिशन कम्पाऊन्ड, गुमला

मानव जाति को दुनिया में विचरण करना है तो हरदम हँसते एवं गाते ही जीवन की गाड़ी चलाना है, थोड़ा भी दुःख एवं कठिनाईयों का अनुभव नहीं करना ही जीवन का सुसंदेश है। हमें "क्रूश दुःख" का स्मरण आते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। उस दुःख के सामने हमारा दिन प्रति दिन का दुःख एक तिनका ही कहा जा सकता है।

हाँ तो हम हंसने गाने में जीवन यापन तथा बुराई को नहीं पनपनें दें तो दुनिया सचमुच सुन्दर एवं आनन्द की झरोखे बन सकती है। हमें जीवन का अधिक से अधिक आनन्द लेना चाहिए क्योंकि इसकी अवधि बहुत लम्बी नहीं। मानव के रूप में जन्म पाना एक महान् गौरव की बात है, जिसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

ईश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना आनन्दानुभूति के ही क्षण में की होगी। उसने इन्हें आनन्द देनेवाली वस्तुओं से ही भर दी है। आकाश का गहरा सुनील, वितान सितारों की संगीतात्मक एवं सज-धज के साथ गति, अनेक तरह के आकर्षणों से परिपूर्ण पृथ्वी का हरित-वितान सभी-के-सभी सृष्टि रचना के कार्य में ईश्वर के असीम आनन्द के प्रमाण हैं। मानव का कर्त्तव्य है कि वह अपना काम करें बुराई के विरूद्ध संघर्ष करें। विराट भौतिक जगत में प्रसारित आनन्दोपभोग की वस्तुओं का रस लें।

मनुष्य को केवल प्रकृति की मनोहर छवियों का ही आनन्दोपभोग नहीं करना चाहिए वरन् अपने संगी-साथी के साथ भी हँसी-खुशी में समय बिताना है। उसे क्षुद्र स्वार्थों की दलदल से निकालना चाहिए, ईर्ष्या-द्वेष, प्रतिष्पर्द्धा आदि से मुक्त होकर किसी आरामदेह सराय में ठहरे हुए यात्रियों की तरह मिलजुलकर रहना चाहिए। धर्म, जाति, नस्ल, पेशा, सामाजिक स्तर आदि पर आधारित विभिन्न क्षुद्र प्रकोष्टों में अपने को बन्दी बनाकर रहना उचित नहीं। इस दुनियां में जो भी सुखोपभोग उपलब्ध है उनका रस लेकर जीना चाहिए— जिस तरह सराय में ठहरे हुए अतिथि नाचगान में सम्मिलित होकर उसका आनन्द लेते हैं। मनुष्य को मृत्यु-पर्यन्त हंसी-खुशी का आलम बनाये रखना चाहिए।

घरबन्धु, मार्च १९७५

Gossner Mission

कभी भी निराशा या दुःख की काली छाया अपने पास नहीं आने देना चाहिए।

इस सुन्दर सृष्टि में अपने जीवन को तृप्ति और सन्तोष के साथ बिताना, तथा इन सभी सुन्दर उपहारों के लिए ईश्वर के प्रति कृतज्ञ होना— यह मानव मात्र का पवित्र कर्त्तव्य है।

"God's in His heaven
All's right with the World"

इस माने में कहा गया है कि वे जाति, धर्म, राष्ट्र, पेशा तथा सामाजिक स्तर आदि का बिना ख्याल किये हुए सबके साथ भाई - भाई की तरह रहें। इस धरती पर हमारा निवास कुछ ही दिनों का है। जब तक जिन्दा रहें हमें इस आनन्द की मन-स्थिति को कायम रखना है, तथा निराशा या दुःख को पास भी नहीं आने देना है। खास कर मसीही भाई बहनों को ध्यान देना है, और गैरमसीही भाई-बहनों तक इस सुसंदेश को पहुंचाना है, तभी हम मसीही होने का दावा कर सकते हैं।

जीवन का दर्शन

(सलमोन आईन्द)

ईश्वरीय भावनात्मक क्रिया की आवाज अद्भूत रीति से मानव जाति के महान उद्धार के लिए आदि ही से गुंज रही है। इस भूमंडल के प्रत्येक कोने से सभी वर्ग एवं अवस्था के लिए रेडियो और समाचार पत्रों द्वारा प्रसारित किये जाते हैं। वर्त्तमान युग का प्रत्यक्ष चिन्ह, भय धमकियों, दुःखद घटनाओं एवं दुर्नीतियों का आविष्कार न नेवल राजनीतिज्ञों में बल्कि मसीही जीवन क्षेत्र में भी क्रान्तिकारी विचार जिसका लक्ष्य स्पष्ट रीति से धर्म शास्त्र (बैबल) में वर्णित है। मनुष्य द्वारा भयंकर समस्याएं एवं बुराइयां होती जा रही हैं। विकास की आशा अरुचिकर पूर्ण होती जा रही है। जिसका प्रतिफल घोर संघर्ष, दरिद्रता, आपसी मतभेद एवं अराजकता है। आदर्श जीवन की अपेक्षा आध्यात्मिक रिक्तता निराशा एवं अनुशासन का अभाव है। पापाचार, लोकाचार, अत्याचार, भ्रष्टाचार और दुष्टाचार के कारण सच्चा "जीवन का दर्शन" दिखाई नहीं देता और न तो अच्छे कार्यों में विश्वास करना पड़ता है। इस कालान्तर में शिक्षा, विज्ञान, औद्योगिक विकास सामाजिक परिवर्त्तन एवं सुविधाएं आवश्यक हैं। किन्तु यह आध्यात्मिक जीवन प्रणाली की संकेताभाव का भी प्रोत्साहन है। स्वर्गीय जीवन का योजना भूत, वर्तमान एवं भविष्य के लिए इस पृथ्वी पर ईश्वर ही के द्वारा स्थापित किया गया है। जिसका प्रकाश एवं मानवीय समस्याओं का समाधान केवल प्रभु यीशु मसीह है। क्योंकि शाश्वत मानव जीवन की सारी बातें उसी के पास हैं (यूहन्ना ६: ६८.)। समाराज्य युगानुयुग उसी के द्वारा और उसी की महिमा के लिए सब कुछ है (रोमियों ११: ३६)। मानव के आचार और व्यवहार द्वारा आनन्द, शान्ति, जीवन एवं राज्याधिकारी मार्ग को संकीर्ण कर दिया जा रहा है। जीवन संचार अथवा भक्ति-भावना की ज्योति विलीन होती जा रही है। प्रभु यीशु मसीह को अपने जीवन का उच्चतम, श्रेष्ठ प्रेरणा एवं महिमोपासना के अपेक्षा निर्गुणोपासना पर अत्यधिक महत्व देते हैं। परन्तु जो अधर्म से सत्य को दबाते हैं उनकी समस्त अशक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से परमेश्वर का कोप प्रगट हो रहा है; कारण यह कि परमेश्वर के विषय में जो कुछ जाना जा सकता है, वह उन पर प्रगट है; स्वयं परमेश्वर ने उन पर प्रगट

Gossner Mission

किया है। उसके अदृश्य गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ्य सृष्टि के आरंभ से ही रचना में स्पष्ट है, अतः उन लोगों के पास कोई उत्तर नहीं है; परमेश्वर को जानते हुए भी उपयुक्त एवं सुगुणोपासना नहीं करते हैं वरन् व्यर्थ कुतर्क में पड़ गए हैं, यहाँ तक कि उनका विवेकशून्य और मन अंधकारमय हो गया है। वे अपने को बुद्धिमान समझते परन्तु मूर्ख सिद्ध होते हैं। अविनाशी परमेश्वर के वैभव के स्थान पर जो विनाश के पथ पर हैं, उनके निकट क्रूश की कथा मूर्खता है। परन्तु जो मुक्ति के मार्ग पर हैं, उनके लिए परमेश्वर की सामर्थ्य है। पवित्र शास्त्र का लेख भी है "मैं ज्ञानियों का ज्ञान नष्ट कर दूंगा, और चतुर व्यक्तियों का चातुर्य व्यर्थ प्रमाणित करूंगा।" कहां है ज्ञानी? कहां है शास्त्री? कहां है इस युग का तार्किक? क्या परमेश्वर ने नहीं दिखा दिया कि संसार का 'ज्ञान' मूर्खता है? (१ कुरिंथियों १: १८-२०)। उसके ज्ञान का ऐसा विधान हुआ कि संसार अपने ज्ञान द्वारा परमेश्वर के ज्ञान और उसके अटल संविधान को पहिचानने में असमर्थ है। इस कारण परमेश्वर ने प्राकृतिक संबंध के स्थान पर अप्राकृतिक संबंध रखकर मन की दुर्वासनानुसार त्याग दिया, जिसके फलस्वरुप आपस में अपने शरीरों को दुर्व्यवहार द्वारा अपवित्र करते हैं। ईश्वरीय सत्य के स्थान पर झूठ को अपनाते, सृष्टि की उपासना और आराधना करते हैं, सृष्टिकर्त्ता की नहीं, जो सर्वदा धन्य है (रोमियों १:१८-२५·)

वर्तमान विभिन्न कलीसिया अथवा मसीह समाज़ में शास्त्रीय दार्शनिक कहलाने के अधिकारी एवं सांसारिक ज्ञानार्जन के लिए भी इच्छुक हैं। परन्तु उनमें प्रेम, दार्शक, प्रवीण, विधायक और अन्वेषक होने पर भी उलट वासियों के तत्वों का प्राधान्य है। विश्व में सभी को अपने-अपने धर्म संस्था पर नाज है एवं सभी पदासीन के कारण गौरव समझते हैं, क्योंकि मनुष्य को अपने लिए ठीक मार्ग दिखाई पड़ता है, किन्तु अन्त में मृत्यु है (नीति वचन १४:१२; १६:२५)। यदि सब का धर्म ठीक है तो इस जगत में अशान्त, भयाक्रान्त और कुरीतियों के निवारण अपेक्षा क्यों प्रबल है? समाज सुधार के लिए एक मात्र निष्कर्ष जो विश्वास के सिंहासन पर विराजमान मसीह सिवाए मानव रचित विविध धर्म सिद्धान्त प्रत्येक मानव जाति को प्रतिभूति लेने अथवा देने वाला क्या इस जगत में ऐसा कोई और है? मार्ग, जीवन और सच्चाई उपेक्षा करने के कारण जैसा मसीह द्वारा घोषणा किया गया है, आत्मिक पतन सिवाए और क्या कहा जा सकता है? अन्ध विश्वासियों, मिथ्याचारों, आडम्बरों, समाज के अनर्गल तत्वों एवं आचार नीतियों पर अधिक महत्व है। विश्वास, प्रेम और शान्ति आदान-प्रदान में अवहेलना है।

मनुष्यीय जीवन का लक्ष्य केवल भौतिक सुखों की प्राप्ति ही नहीं है, क्योंकि भौतिक सुख नश्वर, मोहक और मन के भीतर आकर्षक है। भौतिक सभ्यता बहुत ही प्रभाव शाली है। मन की सभ्यता आलस्य-प्रामद और कर्त्तव्य मृतप्राय है। विषय वासना प्रबल होता जा रहा है, जिसके कारण मानव जीवन के हृदय में ब्रह्मोभाव का उदय नहीं है। परमेश्वर को मन्यता नहीं देते, इसीलिए उसने उन्हें नीच बुद्धि के आश्रित छोड़ दिया, जिससे वे अनुचित काम करने लगे। वे प्रत्येक प्रकार के अधर्म, दुष्टभाव, लोभ, द्वेष, ईर्ष्या, हत्या, क्रोध, विरोध, कपट, कुबुद्धि, चुगलखोर, परनिन्दक, धृष्ट, उद्धत, आत्म-प्रशंसक, नए-नए कुकर्मों के आविष्कारक, बुद्धिरहित, विश्वासरहित, स्नेहरहित और दयारहित हैं। वे परमेश्वर का निर्णय जानते हैं कि ऐसे कुकर्म करने वालों का दंड मृत्यु है, फिर भी न केवल स्वयं ऐसे काम करते हैं, वरन् इस प्रकार के कर्म करने वालों के समर्थक भी हैं रोमियों १:२८-३२। अनुग्रह के दिन परमेश्वर की करूणापूर्ण पुकार एवं उसकी इच्छा का अनुभाव उसी की दृष्टि में मानव जीवन के लिए उत्तम, रूचिकर और परिपूर्ण क्या है? आत्मिक शान्ति और मुक्ति हेतु धर्म ग्रन्थों का अध्ययन करें।

घरबन्धु, मार्च १९७५

Gossner Mission

जन्म पर्व की छुट्टियों के अवसर पर

मैं असम का निवासी हूँ। नाम मेरा श्री नहेम्याह सन्डी गुड़िया है। कॉलेज जीवन की हर छुट्टियों में हमारे साथी घर जाने के लिए आनन्द से उछलते कूदते रहते हैं, क्योंकि अपने परिवार एवं माँ-बाप, भाई-बहनों से मिलने के लिए कौन नहीं चाहता है? पर मैं ने १९७१ से आज तक अपने माँ-बाप और भाई-बहनों की सूरत नहीं देखी है क्योंकि घर बहुत दूर है। कॉलेज जीवन की हर छुट्टियों में मैं प्रचार के कार्यों में बहुमूल्य समय को व्यतीत किया करता हूँ और वह समय मेरे लिए बहुत ही लाभदायक है। परमेश्वर को धन्य हो कि O.M. Team के द्वारा राँची, बिहार, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश आदि स्थानों में मैं ने प्रभु के वचन को गैर मसीहियों के बीच प्रचार किया। अनेक कष्ट होते हुए भी प्रभु में सदा आनन्दित होकर उत्साह, दृढ़ता और आनन्द के साथ प्रचार का कार्य किया। बड़े दुःख की बात तो यह है कि १९७१ से १९७३ तक अपर असम एवं असम क्षेत्र से केवल मैं ही अकेला था पर बड़ी खुशी की बात तो यह है कि १९७४ में नये भाई (असम से) श्री रेईड लकड़ा (राजा बहार) श्री मीका किस्सपोट्टा (मोकरोम) श्री रोवेलसन तिमुँग (मिकिर हिल्स) से अध्ययन के निमित्त आये।

इस बार जन्म पर्व मनाने के लिए प्रथम वर्ष के भाई श्री जीवन मसीह कन्डुलना (लुंगटु) अपने घर लेने को तैयार हो गये। पूरी छुट्टी में हम क्या करें, कैसे दिन बितायें? सब राँची ही में प्रोग्राम बना लिया। पर कारण वश दो भाई हमारे साथ नहीं जा सके अतः पूरी छुट्टी राँची ही में बिताये अब हमारे कॉलेज में Christmas Gathering 19-12-74 को बहुत ही धूम-धाम के साथ हुआ। 21-12-74 को हम दो भाई गोविन्दपुर को चले। वहां हम दोनों ने ट्रेक्ट वितरण बाजार में किया। P. T. S. Govindpur के Headmaster Rev. J. Soy से दरख़ास्त देकर मिकिर भाई Elias Hanse और बहन Elizabeth Timungpi के लिए छुट्टी लेकर हम चारों 22-12:74 को लुंगटु पैदल १० मील चले। लुंगटु में हम Junas Kandulna के घर में पहुंचे उनके पूरे परिवार ने हमें हार्दिक स्वागत किया अतः हम लोगों के प्रति बहुत ही खुश हुए और प्रार्थना किया। खाने पीने के बाद हम सो गये क्योंकि बहुत थक गये थे। फिर उसी रात को ३ बजे उठकर नौ रत्न देखने के लिए नगर को चले गये। कहा जाता है कि यह नगर प्रारंभिक काल में मुण्डाओं का तैयार किया हुआ मंदिर है। पर अब कुछ धसते जा ही रहा है। नगर का संक्षेप वर्णन :—

(क) ७ कोश लम्बाई और चौड़ाई है।

(ख) ५३ बगीचा, ५२ तालाब है।

(ग) नौ रत्न मंदिर सन् १२३ में तैयार किया गया है। कहा जाता है कि यह मंदिर ९ मंजिल था पर अब जमीन के अंदर घुसते जा रहा है। अभी केवल चार मंजिल जमीन के ऊपर है। खण्डरों को देखने से ऐसा लगता है कि उस जमाने के लोग बहुत ही कारीगर थे। क्योंकि पत्थर को काट कर खुटा, फूल आदि तैयार किया गया है। चट्टान के ऊपर में एक मठ है उसको जोगी मठ कहा जाता है। उसमें १०/१२ जन गैर मसीहियों से भेंट हुई। वे तीर धनुष, बर्छा बालुवा आदि लिये हुए थे। उन लोगों को चट्टान ही पर बैठाया और बैबल खोलकर बचन सुनाया, शिक्षा दिया, और अनेक उदाहरण देकर उपदेश दिया। बिशेषकर मत्ती पाँच अध्यय पर उपदेश दिया, सुन्दर ढंग से अर्थ भी बताया। सब के सब ने शान्त स्वभाव हो सुना। वे यीशु मसीह का नाम कभी नहीं सुने थे पर सुसमाचार बचन को सुनकर वे बहुत ही खुश हुए अतः हम सभों को धन्यवाद दिये। अंत में

Gossner Mission

हम उस क्षेत्र के लिए, छोटे छोटे बच्चों के लिए, उन लोगों के लिए जो बचन को शान्त से और गैर मसीहियों के लिए प्र र्थना किये और बिदा हो गये। वहां से टंगीनाथ होते हुए एक चट्टान पर चढ़े वहां हम ने मिकिर बहन और भाईयों से सुने गीत के विषय के आधार पर प्रार्थना किया। सब दार्शनिक स्थानों को भाई श्री जीवन मसीह कन्डुलना ने दिखाया सो उस भाई के कष्ट सहन के लिए मैं सदा आभारी हूँ। सारे चीजों को देखकर लुंगदु १२ मील पैदल चले आये। २४ ताः पुण्य रात और बड़े दिन को बड़े धूम धाम के साथ मनाये। लुंगदु मण्डली के सभी सदस्यों को धन्यवाद होवे कि उन्होंने हमें सुसंगति के द्वारा एवं गीत भजन के द्वारा हमारे मनों को उत्साहित किया। 26th Dec. को लुंगदु मण्डली से १० मील पैदल बसिया तक चले और वहां से बस पकड़कर उरमुड़ि चले आये। यहां हम Emmanuel Topno के घर में ठहरे।

27 Dec. को हमने मरचा बाजार में ट्रेक्ट वितरण किया। उसके बाद Cand. Sura Sagen Elias Topno ने हमें रात को मेहमान किया। मरचा का गिरजा घर को भी हमने देखा इसकी स्थापना 29:5-1874 को हुई है। यहां से हम बिरिंता बुरू (पहाड़) देखने गये। पहाड़ के ऊपर अनेक पौराणिक इतिहास को देखकर चकित हुए। कहा जाता है कि वहां राजा का कारेया, करधनी, घोड़ा-लता, शैतिन, ढेकला, तालाब, कुर्सी, मुर्गी, अण्डा है। पर वे अभी सब पत्थर बन गये हैं। ऐसा दार्शनिक स्थान को लोग हमेशा ही देखने जाते रहते हैं। सारी चीजों को देखकर हम सुसमाचार प्रचार के निमित्त उस क्षेत्र के सबसे बड़े बाजार तपकरा गये। प्रचार कार्य के लिए हम ने बिरिंता पहाड़ के जंगल ही में प्रार्थना किया। हम प्रचार के लिए राँची ही से अनेक परचा ले गये और पूरे बाजार में परचा वितरण किये। हम ने सुना कि गोबिन्दपुर पेरिस युवा संघ, पंचम वार्षिक सम्मेलन ईच्चाः मण्डली में होगा तब वहां चले गये। युवा संघ की तिथि थी २६ से ३१ दिसम्बर १९७४ और मूल विषय "धर्म जाति गणों को बढाता है।" नीति बचन १४ : ३४)। युवा संघ में हमें हार्दिक स्वागत फूल माला के द्वारा किया गया। हमें गीत गाने, भजन और गैर मसीहियों के बीच गवाही देने के लिए भी मौका मिला। Mr. Rowelson Timung ने असमीया भाषा से अपनी गवाही दी और मैं ने उसको मुण्डारी से उलथा कर पूरे युवा संघ तथा गैर मसीहियों को बहुत सुन्दर ढंग से समझाया। वहां के गैर मसीहियों ने पाद्रीगणों, प्रचारक, और हम चारों वासियों का स्वागत किया। गैर मसीहियों के बीच में बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रचार का कार्य हुआ। युवा संघ के सभापति सचिव और सभी भाई बहनों को धन्यवाद होवे कि वे हमें मेहमान के रूप में ग्रहण कर उसी प्रकार व्यवहार भी किया है अतः हमारे लिए मेस का खर्च भी नहीं देना पड़ा। हम उन लोगों के लिए आभारी हैं जिन्होंने हमें सभी प्रकार की सुविधा दिया। सभा के अंत में ३१ ताः को हम नया साल पर्व मनाने के लिए मरचा को चले।

नया साल पर्व बहुत धूम धाम के साथ मनाये। Rev. Samuel Surin के द्वारा प्रभु भोज बांटा गया, हम भी प्रभुभोज में सामिल होकर ग्रहण किया। वहां से हम गिरजे के बाद पैदल ही चले। रास्ते पर हम दोनों प्रार्थना करते करते करीब ८ बजे उरमुड़ि पहुँचे। रात को Emmanuel Topno के घर में सो गये। बड़े भोर को हम प्रचार के निमित्त चम्पाबहा को चले। रास्ते ही पर हम जंगल में मुंह हाथ धोकर फिर से चले। वहां प्रचार के लिए परचा, बैबल, कर्त्तल लिए। चम्पाबहा में पहुंचकर सभी भाई बहनों को बुलाये और बैबल पढ़कर बचन सुनाये, गीत गाये, बचन का अर्थ बताये, कर्त्तल बजाये, सभों को सरल मुण्डारी भाषा से समझाये, प्रार्थना किये। वहां के गैर मसीही लोगों ने ध्यान से सुना और हमारे प्रति वे सभी भाई एवं बहने खुश

Gossner Mission

हुए। वहां के लोगों की दशा उतनी अच्छी नहीं है। वे टोन्हा भगत भी कहलाते हैं। पूरे गांव के लोगों को हमने सुसमाचार वचन सुनाया अत: कर्त्तल से गीत भजन भी किया। वहुत जोर से प्रचार का कार्य हुआ। ऐसा लगता है कि लोग आकर्षित होकर मसीही धर्म को ग्रहण करेंगे। हम दिन भर पैदल चलते-चलते थक गये। भूख प्यास के मारे रास्ते का कच्चे बेर को तोड़कर हमने खाया वहां से लौटकर विरिंता में १०—१२ बहनों के साथ रात भर गीत सीखे। 3 Jan. को हम Govindpur चले आये। P.T.S. का Headmaster Rev. J. Soy हमें मेहमान किया। उनको और उनके परिवार को धन्यवाद। 4 Jan. को Karra मण्डली चले आये चूंकि Karra के Cand. Susil Kr. Horo ने मुझे गिरजा पारी दिया था। Cand. को और वहां के सभी भाई बहनों को हमारे स्वागत के निमित्त हार्दिक धन्यवाद। गिरजा के तुरन्त वाद हम प्रचार के निमित्त Karra वाजार को चले। वहां हम परचा और अनेक पुस्तक और साथ में क्लेण्डर भी लिए। परचा वितरण के द्वारा प्रचार कार्य सफल ही रहा, प्रचार के वाद हम मदूगम् गांव Miss, Munuren Topno, Roselind Topno के घर में मेहमान के रूप में ठहरे अत: उन्होंने हार्दिक स्वागत किया। उन सभों को भी हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

इसी रीति से हम प्रभु यीशु के जन्म पर्व की छुट्टियों पर हमारे वहुमूल्य समय को मिकिर हिल्स के दो भाई एक वहन, और मैं साथ ही में चारों जन आनन्द और दृढ़ता पूर्वक वचन का प्रचार किये, भाई वहनों से सुसंगति किये और हम अनेक रीति रिवाजों तथा अन्य प्रकार के ज्ञान प्राप्त कर खुश हैं। हमारे लिए इस देश की सभी चीजें नयी हैं। जिन वहनों ने मिकिर वहन Miss Elizabeth Timungpi को शिक्षा दिया और सुसंगति किया उन लोगों को मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ क्योंकि वे नये मसीही हैं। उन लोगों की वपतिस्मा की तारीख निम्नलिखित हैं :—

1 Rowelson Timung—17-12-1971
(Theological College, Ranchi)
2 Miss. Elizabeth Timungpi—10-7-1972
(T.T.S. Govindpur)
3 Elias Hanse— 15-2-1974 (Govindpur)

परमेश्वर का धन्यवाद हो कि हम पूरे छुट्टियों के अवसर पर प्रभु के कार्य को करने सके। मैं आशा करता हूँ कि हर छुट्टी में हम प्रभु के कार्य ही में लगे रहें चूंकि हमारा जीवन सेवकाई और प्रचार का जीवन है। आज हमें मसीही या गैर मसीहियों के वीच में जाकर ज्योति चमकाना है, सुशिक्षा देना है अन्धकार में से ज्योति में लोगों को लाना है, सभों के प्राण को वचाना हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है। सो जवान और युवतियों से अर्जी है—"उठ प्रकाशमान हो क्योंकि तेरा प्रकाश आ गया है, और यहोवा का तेज तेरे ऊपर उदय हुआ है।" यशायाह ६० : १।

श्री नहेम्याह सन्डी गुड़िया
गोस्सनर थेओलोजिकल कॉलेज
रांची।

कलीसियाई समाचार

राँची—जनवरी माह में गोस्सनर कलीसिया के लिये अनेक अतिथि जर्मनी देश से आये, डा. और श्रीमती हेस्स, पास्टर श्मेलटर और श्रीमती श्मेलटर पास्टर वरूता और श्रीमती वरूता।

इनके लिये कार्यक्रम विभिन्न दृष्टिकोण से वनाये गये थे। हमारे इन मेहमानों में से सभी भाई गोस्सनर मिशन के कुराटोरियम के सदस्य हैं, डा. हेस्स अपने खर्च से आये उसी प्रकार उनकी धर्म

Gossner Mission

पत्नी जो असम के बैठाभांगा में जन्मी हैं अपनी मातृभूमि ज़न्मभूमि देखने आयीं डा· हेस्स अपनी धर्म पत्नी के साथ दियांकेल, टकरमा, पुरना पानी, आमगांव, राजगांगपुर, चैनपुर, गोविन्दपुर, फूदी, चाइबासा, चक्रधरपुर, खुटीटोली, खुंटी आदि स्थानों को देखने गये। इन्हीं के साथ पाद्री और मिस्सेस श्मेल्टर भी कई स्थानों को देखने गये। पाद्री श्मेल्टर के लिये साथ ही टोकाद, मर्चा, खुटीटोली, बीरमित्रापुर, राँरकेला, आमगांव, देवगढ़, कुचिंडा, सुन्दरगढ़, चैनपुर, लोहरदगा, आदि स्थानों में गये। पाद्री बरूता पहले असम गये थे अतः यहां आने में देरी हुई फिर भी उनके लिये भी काफी लम्बा चौड़ा दौरा कार्यक्रम बनाया गया है, वे हाजारीबाग, पलामु, अम्बिकापुर, राजगांगपुर, चाईबासा, चक्रधरपुर आदि जगहों में जायेंगे ?

इस बार के मेहमानों के लिए रांची की हमारी विभिन्न संस्थाओं के लिये भी कार्यक्रम बनाया गया है, हरएक संस्था को अवसर व भार दिया गया कि मेहमानों की स्वागत करें और अपना कार्य-क्रम अनुसार बातचीत करें कुछ दिखायें और एक बेले का खाने-पीने और खिलाने-पिलाने का भार भी उठावें।

हमारे मेहमान अपने समय में न आने से कहीं कहीं का कार्यक्रम रद्द करना पड़ा, या रद्दो बदल करना पड़ा जिसके कारण असुविधायें और कठिनाईयां केवल नहीं पर खर्च भी बढ़ गये और अनेकों को निराश भी होना पड़ा।

इनके आने से कलीसियाई अगुओं और अधिकारियों में केवल नहीं पर आमजनता में एक अजीब भावना जाग गयी है। कुछ के विचार में ओटोनोमस कलीसिया के लिये यह एक भार समझा जाता है, कुछ लोग इसको मित्र भाव कहते हैं पर अधिक यही सोचते हैं कि अब तो साहब लोग आ गये हैं अतः अपनी दुखड़ा सुना कर अनेक प्रकार की सहयोग केवल नहीं पर सहायता की भी आशा करते हैं, स्वपालन और स्वशासन को किनारे कर माँ-बेटी के रिस्ते में ही रहना चाहते हैं, अनेक हैं जो बर्लिन से या जर्मनी की कलीसिया या व्यक्ति से सीधे सम्बन्ध रख कर सहायता लेना चाहते हैं। अतः मेहमानों का आना एक भार नहीं पर बहुतों के लिये सहायता क्या आशा के अवसर समझे जाते हैं। आने वाले दिनों में के०एस०एस० को गम्भीरता पूर्वक सोचना है।

सिरामपुर, कलकत्ता—सिरामपुर सिनेट की बैठकी में हमारे थिआलोजिकल कॉलेज के लिये भी विशेष बाते हुई। हमारे प्रिन्सिपल भी गये हुए थे। कॉलेज को रिकोगनिशन मिलने की बात है, अनेक शर्त पूरे हो ही गये, मकान, लाइब्रेरी आदि, सम्भवतः अब पूर्ण स्वीकृति हो जायगी।

पर कलीसिया की ओर से दयनीय दशा है, यहां के सम्बन्ध अनेक फैसलाओं का कार्यान्वयन हुआ ही नहीं। के० एस० एस० ने फैसला किया है (१९६६) कि प्रति दृढ़िकृत पच्चीस पैसा मंडली पैसा लिया जाकर आध्यात्मिक शिक्षा केन्द्र के लिये दिया जाय, पर आज तक कम ही लोगों व अंचलों ने इस प्रकार की आमदनी का केन्द्रीकरण किया, अभी फिर फैसला है कि प्रत्येक पेरिश कम से कम एक सौ रूपैया यहां अगले सेशन के पहले देवें, पर यह कितने पेरिश देंगे यह तो समय ही बतावेगा।

राँची—सिरामपुर की सिनेट-मिटिंग के बाद प्रो० डा० गेन्सीखने राँची अपने मित्रों से मिलने आये। वे पहले गुरूकुल मद्रास में प्रोफेसर थे, अब वे हाइडेल्वेर्ग में हैं; थेओलोजिकल कॉलेज में उनके लिये एक प्रोग्राम बनाया गया था।

इसी बीच पूर्वी जर्मनी से दो पाद्री मेहमान, पाद्री रीखतेर और पाद्री शुल्सगेन भी आ पधारे हैं, ये हमारे यहां १२वीं फरवरी तक रहेंगे; उनके लिये भी एक मिश्रित कर्य क्रम बनाया गया है।

राँची—श्री पौलुस केरकेटा, जो हमारे थिओलोजिकल कॉलेज में पढ़ाते थे, और अब मेरीन

Gossner Mission

डीजल हटिया, रांची में जर्मन भाषा से अनुवाद का काम करते हैं, रांची विश्वविद्यालय से डाक्टर ऑफ फिलासफी की उपाधि पायी है; उनको बधाई देते हुए आशा करते हैं, कि वे भविष्य में कलीसिया और समाज की सेवा में ऐसी उपाधि से उनको विशेष सहायता मिलेगी।

राँची—गिर्जाघर आदि बनाने के लिये पूरी कलीसियाई क्षेत्र में चन्दा मांगने का प्रबन्ध :

अनेक मंडली वा पेरिश केन्द्रों में गिर्जा घर बनाया जा रहा है, स्थानीय भाई-बहन चाहते हैं कि उनके निर्माण के लिये दूसरे स्थानों, अंचलों में भी पैसे जमा किये जांय; कितने तो यों ही आरम्भ करते हैं कुछ हैं अनुमति मांगते हैं, बीते के०एस०एस० की बैठकी में फैसला किया गया कि ऐसी मंडली (या पेरिश या इलाका) अपने अंचल की सिफारिश लेकर प्रमुख अध्यक्ष से अनुमति लेवें। अनुमति मिल जाने पर दूसरे क्षेत्र व अंचल के मंडलियों में चन्दा उठाने के पहले आवश्यक है कि वहां के अधिकारियों से भी अनुमति ले लेवें, तथा उचित कागजात और हिस्साब किताब के साथ ही सब काम करें। अच्छा होगा कि बाद में उस क्षेत्र व अंचल के अधिकारियों को भी खबर दें, कि उन्होंने कितनी रकम पायी।

कलीसियाई समाचार के लिये—उन सभी लोगों से आशा और अर्जी की जाती है जो विभिन्न सभा सम्मेलन, शिक्षा-शिविर आदि में भाग लेते हैं छोटा रिपोर्ट देवें, अनेक हैं जो ऐसी सभा आदि में भाग लेना सिर्फ एक अवसर समझते हैं, पर वे अपनी जवाबदेही इसमें पूरी करें कि वे इसको अन्य माध्यम से घरबन्धु से भी अपनी शिक्षा व अनुभव को दूसरों तक भी पहुँचावें। पाठक भी अपना समाचार छोटे रूप में भेजें।

घघरा—हर्ष को बात जनाई जाती है कि रांची पेरिस के अन्दर बड़ा घघरा २० घर की एक मण्डली है जो पूरे धर्म्म प्रदेश के अधीन था, उस का प्रचारक श्री गब्रीएल लकड़ा हैं उनके ही देख भाल में वहां एक नया गिर्जा बनाया जाकर तैयार है; मैं उनके साथ कई बार मुलाकात कर उनको अर्जी किया कि आप लोग कितने दिन जी०ई०एल० चर्च K. S. S. के बाहर रहेंगे, उन्होंने मुझे साफ शब्दों में कहा कि पादरी साहब गिर्जा घर बन चुकने के बाद हम पूरी मण्डली के साथ आप के रांची पेरिस में मिल जाएंगे बोल कर जवाब दिया और घर तैयार होने के बाद मुझे अपने मण्डली के साथ मिल कर अर्जी किये कि आप हमारे नये गिर्जा घर को संस्कार कर पूरे मण्डली को अपने सेवकाई में मिला लीजिये। मैं उनके अर्जी के अनुसार तारीख २२-१२-७४ को उनके नये गिर्जा घर को संस्कार कर पूरी मण्डली को रांची पेरिस के साथ मिला कर उन के सेवकाई का भार अपने ऊपर लिया और सेवकाई की जा रही है। प्रचारक श्री गब्रीएल लकड़ा ही वहां का प्रचारक मनोनित किये गये हैं पूरी मंडली २० घर की है बपतिस्मा पाये हुओं की संख्या १७० है दृढ़िकृत संख्या ६० हैं। पाठक गणों से मेरी अर्जी है इस मण्डली के लिये ईश्वर से प्रार्थना करें कि यह मण्डली अपने लुथेरान विश्वास में स्थिर रह सकें।

पाद्री प्रेमोदय कुजूर
जी०ई०एल० चर्च, रांची पेरिश

समाचार देश विदेश

अद्दीस अबीबा इथियोपिया—श्री इमानुएल अब्राहाम, जो मेकाने येजु कलीसिया के प्रेसीडेन्ट हैं और हाइलेशेलासी के एक मंत्री भी थे, नजरबन्द किये थे और अब मुक्त कर दिये गये हैं।

फ्रेर्ने सोलटाइर फ्रान्स—अगले वार्ल्ड फेडेरेशन का सम्मेलन १९७७ ई० में

Gossner Mission

टान्जनियां में होने वाला है, अभी ही से कार्य क्रम व विषय की तैयारी आरम्भ हो गयी है।

हेलजोन्की—प्रो॰फे॰ पावो कोर्टेकांगास (४४ वर्षीय), जो अभी एल॰डब्ल्यु॰एफ॰ के एक विभाग में सदस्य हैं कुओपियो डियोकीस फीन्लैंड के विशप बनाये जायेंगे, उनका पदास्थापन १६वीं मार्च से है।

स्टोक्होल्म—पादियों को सभा की ओर से अर्जी है कि वे कल-कारखानों में काम करने के लिये तैयार हो जायं, आनेवाले विशप सभा में इस विषय पर फिर बातचीत होगी।

मियामि-फ्लोरिडा—हाइति के अनेक शरणार्थी अपना निवास स्थान पाये। उनको यू॰एस॰ए॰ में नागरिकता के प्रश्न पर समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

कोपेन्हागेन—यहां डेनमार्क के कैथोलिक पुरोहितों की कमी अनुभव हो रहा है। अनेक पुरोहित सेवा निवृत चाहते हैं और उनके लिये नये पुरोहित खोजना कठिन हो गया है।

जेनेवा—क्यूबा के एंगलिकन मसीही मंडली वहां के लूथरनों की सुधि एवं सहायता के लिये राजी और इच्छुक हैं।

"फैशन और स्टाईल"

Benjamin Topno

यदि फैशन शब्द का विश्लेषण किया जाय तो पता लगता है कि यह एक नवीन एवं उच्च उत्तेजना का प्रतीक है। इसे हम वर्त्तमान की स्वीकृत रीति कह सकते हैं। फैशन की गति ऊपर से नीचे की ओर होती है। यह सामाज के उच्च वर्ग से आरम्भ होकर मध्यमवर्ग; फिर मध्यमवर्ग से निम्न स्तर के लोगों में जाकर इसका अन्त होना देखा जाता है। उसके बाद फिर दूसरा फैशन शुरू हो जाता है और इसकी लहर में हर इन्सान बह जाता तथा अपनी चेतना शक्ति खो देता है। दूसरे जैसे करते हैं, हम भी उनका अनुसरण करते देखे जाते हैं। अगर हम वैसा न करें तो असभ्य, पिछड़े हुए जाति और अप्रगतिशील इन्सानों में हमारी गिनती होती है। इस तरह दूसरों की अनुकूलता और व्यक्तिगत विशेषताओं के कारण दो बिरोधी प्रवृतियों का सम्मेलन ही फैशन का पैराडाक्स है। अपनी शारीरिक, सामाजिक और आर्थिक अयोग्यताओं को छिपाने के लिये भी इन्सान फैशनेबल बनता है। इस तरह वह अपनी दुर्बलता और हीनता को छिपा कर सन्तोष प्राप्त करता है। कुरुप से कुरुप व्यक्ति भी अपने को अच्छे से अच्छे ढंग में पेश करना चाहता है भले ही वह काला-कलूटा और अंधा-लंगड़ा ही क्यों न हो। फिर, अगर कोई रूपवान है तो उसके लिये कुछ कहना ही नहीं। स्त्री हो या पुरुष, युवक हो या युवती दोनों के मस्तिष्क में एक विशेषता यही मिलती है कि एक दूसरे को अपनी ओर आकर्षित करें।

इस तरह "फैशन" के भागदौड़ में स्त्री, पुरुष और युवक युवतियों में एक "होड़" लगी है जिसमें सब भाग लेकर "हार जीत" का बाजी ले रहे हैं। मुझे ऐसे अनेकों बूढ़े और बूढ़ियों को देखने का अवसर मिला है कि वे बुढ़ापे में भी युवक-युवतियों से कम नहीं सजते। अपने बूढ़े पक्के बालों में खिजाब लगाना, काजल और सुरमा लगाना तो आम बात है। दाढ़ी मूँछ और बाल कटिंग तथा आधे गाल तक "कलम" रखना तो मानों शैलुन वालों को घाटा में डालना है। बेचारे शहर के सब शैलुन वाले भी परेशान हैं। इसका मनोवैज्ञानिक आधार एक ही हो सकता है, और वह है "काम वासना" को बढ़ावा देना। यही कारण है कि आज एक से एक नये फैशन को बढ़ौतरी मिल रहा है। किसी भी दफ्तरों

Gossner Mission

और सड़कों में देखेंगे; अनेकों "हिप्पी Hippi" चलते-फिरते हैं।

युवकों को देखिये; चुस्त पैन्ट-पजामा-जो सोलह आने "ड्रेन पाइप" कहा जा सकता है, पहनते हैं। ठीक उसी अनुपात में कम बांह वाला शर्ट, सीने परके बटन अवश्य ही टंके रहते हैं जिनसे इनकी चौड़ी छाती साफ - साफ दीख सकने में समर्थ हो। स्पष्टतया; युवक-युवतियाँ अपने नंगे अंगों द्वारा एक दूसरे के बीच आकर्षण पैदा करना चाहते हैं। मुझे लेख-लिखते अपनी लड़कपन की "करेया-लंगोट" पहनने का याद आता है कि उस वक्त कहीं मेरे साथी-गण अच्छे पोशाक में थे।

युवतियों की ओर नजर डालिये; तंग सलवर, फ्राक और लिबलेश चटकीले रंग की साड़ी और नाम मात्र के दुपट्टे। ये पोशाक इतने तंग सिलाये जाते हैं कि उन्हें उठना - बैठना और चलना-फिरना तक मुश्किल हो जाता है। ब्लाउज तो देखते ही पुरुष अपने दिलों को थाम लेते हैं। उसमें बाहें तो नंगे और पीठ पर फैशनेबुल बटन, फिर लम्बाई का तो कौन कहे? साया में भी पैसा रखने का पाकेट देखकर सेठ-साहुकार भी परेशान हैं। साड़ियों के कोर, कोट और कमीज तथा चेस्टर - ब्रेस्टर के डिजाइन इत्यादि के लिये विज्ञापन दिये जाते हैं। ऐसी व्यवस्था तो व्यापारियों के लिये महत्व की होती है। कपड़े के व्यापारी और दर्जी ही फैशन को जन्म देते हैं।

फिर पोशाकों में भी प्रायः गाढ़े-चटकीले रंगों को ही प्रधानता दी जाती है जो मनोविज्ञान के अनुसार "रंगीन मिजाज Coloured Minded" का द्योतक है। आप किसी के वेशभूषा को देखकर उसके दिमाग, उसके आचरण तथा स्वभाव का अन्दाजा लगा सकते हैं. यूँ, जब तक एक दूसरे के प्रति आकर्षण पैदा नहीं हो जाता तब तक गाढ़े प्रेम की आशा नहीं की जा सकती है। इसी लिये युवक-युवति चटकीले और भड़कीले गाढ़े रंग की पोशाक पर जीवन बिताना चाहते हैं। मसीही लड़कियाँ काफी तादाद में पंजाबी, मद्रासी, बंगाली, मघैईया और मुसलमान आदि गैरमसीही पुरुषों के चक्कर में अपना मसीही जीवन पर कलंक लगाते दीख रही हैं। यह आज के युग का तकाजा है। अन्त में मुझे इतना ही कहना है कि फैशन या साज सृंगार सभी के लिये आवश्यक है किन्तु इस तरह भद्दे और नग्न रूप में प्रदर्शन न हो तो उत्तम है। आशा है कि चन्द ही दिनों के पश्चात् "मानवजाति" अपनी असली रूप (ORIGINAL) में पहुंच कर एक नयी दुनियाँ को आबाद करेंगे जिस तरह नूह के युग में हुई।

नई सभ्यता के नाम पर आज-कल कुछ भी बेजा नहीं माना जाता है। वैसे तो "आदम हवा" ही अपने निर्माता के जन्म-अधिकार के केन्द्र थे जहां मनुष्य का पाप में पड़ने का बयान पाते हैं। अगर मसीही जीवन में जीते हैं तो अवश्य ही इन पद स्थलों को पढ़ कर अपनी-अपनी फैशन-स्टाइल या सृंगार पर गौर करें। "यीशुसहाय"

देखिये :— उत्पति ३:२१, व्यवस्था २२:५, १ पतरस ३:१-४, मत्ती ६:३१-३२, लूका १२:२७-३४ १ तिमोथी २:८-१०।

गोस्नर एवंजेलिकल लूथेरान कलीसिया,

असम अंचल पचहत्तर वर्षीय हीरक जयंती।

स्थान — बैठाभंगा - दिनांक २०-२२ मार्च १९७५

देखो परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच है, प्र० वाक्य २१:३।

परमेश्वर को धन्यवाद, प्रशंसा देने का विषय है कि असम में गोस्नर कलीसिया का कार्यकाल सन् १९७५ में पचहत्तर वर्ष हो जायगा। इस पुण्य अवसर पर सारी गोस्नर कलीसिया के भाई-बहनों, तथा हमारे देश-विदेश के

Gossner Mission

मित्रों के लिये परमेश्वर को धन्यवाद देने तथा उद्धारकर्त्ता जीवते प्रभु यीशु मसीह की महिमा एवं उसकी गवाही देने का महान् अवसर होगा ।असम अंचल ने बैठाभंगा में हीरक जयंती मनाने कानिर्णय किया है । अत: पूरी कलीसिया के भाई-बहनों को जयंती में भाग लेने के लिये निमंत्रण दिया जाता है ।

निवेदक

पाद्री सी० एस० बी० होरो
अध्यक्ष
असम, अंचल तेजपूर

गेरसोन तिड़ू
सेक्रेटरी
जुबिलि रिसेपशन कमिटि, बैठाभंगा

धन्यवाद, आप का ग्राहक चन्दा [३१वीं जनवरी,, ७५ तक] मिला ।

1 Rev. H. Tutti Kuchinda
2 Mr. Mansidh Kandulna Tilaimal
3 ,, Niral Mundu Lomboi
4 ,, Isahak Bading Ghutbahar
5 ,, Bixal Bading, Delhi
6 ,, Philip Barjo Dhurwa
7 ,, Ruben Timung
8 ,, Kushal Aind Sini
9 ,, Arbindh Horo
10 ,, Premoday Toppo
11 ,, Theophil Lakra Jorar
12 ,, Boas Khalkho, Kulamunda
13 Cate. N. Dang, Zorabandh
14 ,, (HM Champi Dhurwa
15 Mr. Anandmasih Lugun, Lachragarh
16 Nk/Sub Mansidh Bhengra
17 Mr. Daud Kandulna, Dugdugia
18 ,, Santosh Barla, Banspani
19 ,, Nehemia Barla, Sukruhutu
20 ,, Dh. D. Topno, Kathartoli
21 ,, Arem Kullu, Sindri
22 Miss Idan Burh, Deubera
23 Rev. C J Tirkey Ranchi
24 ,, Itmon Guria Chaibasa
25 Mr. Abraham Kullu Gilaibahal
26 Shri Asaph Guria Bisrampur Gaon
27 Mr. P. Herenz Dibrugarh
28 ,, A Kandulna Tarajan
29 ,, B. Horo, Chakradharpur
30 ,, Jasman Horo, Kiriburu
31 ,, Philip Kongari, Kalunga
32 ,, Paulus Purti
33 ,, Christ E. Kandulna Sambalpur
34 ,, Johan Kerketta, Raghunathpur
35 Rev. M. P. Ekka Dubashri
36 Mr. Johan Surin Kutnia
37 ,, Jusaph Barla Nimadih
38 Cate S. M. Dungdung Golebahar
39 Rev. Patras Hemrom Mansiri
40 Mr. Stephan Dang Jhirkpani
41 ,, M. Ekka Kondra for 18
42 ,, Johan Kandulna Serampore
43 Cate. K. Jojo Sarhatoli
44 Mr. Michael Bakhla Bisrampur
45 ,, Rejan Horo Kabiradih
46 Shri Immanuel Minz Dibadih
47 Miss Susari Ekka Kulabera
48 ,, Mukta Lugun Ichinda
49 Rev. S. Dungdung Zorabandh
50 Mrs. F. Barla Kumhartoli Ranchi
51 Mr. K. Kongari Rourkela
52 ,, P. Kongari Karremunda
53 Cate. Patras D. Kongari Banko
54 Mr. M. P. Kujur Turidih
55 ,, M. D. Tete Sahpur
56 Juel Dang Sorda
57 Mr. Abraham Soy Kocha
58 Secretary BSI Ranchi
59 Rev. Daniel Lakra Chakradharpur
60 Mr. Junas Tirkey Kabir.

Gossner Mission

Serampore College Theology Department Serampore West Bengal

" SERAMPORE COLLEGE invites Applications from L. Th., B. Th. and Arts/ Science/ Commerce Graduate Students for admission into B.D. Course in 1975. 15th April, 1975 will be the last date for submission of Applications. Forms will be available from Rector's Office (Theology). For all enquiries in this regard, plaese write to the Principal, Serampore College, P.O Serampore, Dist. Hooghly (West-Bengal)."

M. Bage
Offg. Rector,
Theology Department

Seramproe College, Serampore, West Bengal
Department Of Theology
Admission To M.Th Courses.

Applications are invited for admission to Master of Theology (M.Th) Courses beginning on June 28, 1975 in Old Testament; New Testament and Church History. The requirement for admission will be Serampore B.D. (First or Second Class). Application Form and Prospectus are available from the Dean's Office. Application should reach the Dean, Theology Department, Serampore College, P.O. Serampore, Dist. Hooghly (West-Bengal), not later than March 31, 1975.

"मैं वही हूं"

यूहन्ना रचित सुसमाचार पर आधारित,

डी० पी० इफ्राईम 'बेबस'

'भोपाल म० प्र०'

हर प्यार को देखा है,
प्यार के तराजू में,
मगर सब बदल कर,
बन जाते हैं यादगार,
जीवन साथी भी नहीं,
दे सके आज तक साथ,
कोई धोखा देके बैठा है,
कोई बन गया काला लिबास,

मगर एक अंदरूनी,
जो दिखता नही बस,
महसूस होता है दिल में,
जो कहता है आ मेरे पास,
मैं दूंगा तुझे सच्चा प्यार,
कर कबूल अपने गुनाह;
फिर तौबा कर और हो पाक,
बस एक वही है,
जो कहता है "मैं वही हूँ" ॥

Gossner Mission

Statement About Ownership and the Particulars

Form IV

[SEE RULE–8]

1	Place of Publication	—	G. E. L. Church, Ranchi.
2	Period of Publication	—	Monthly
3	Printer's Name	—	Shri Bhusan Khess.
	Nationality	—	I N D I A N
	Address	—	G. E. L. Church Press, Ranchi, Bihar.
4	Publisher's Name	—	Rev. J. Topno.*
	Nationality	—	I N D I A N
	Address	—	G. E. L. Church, Ranchi.
5	Editor's Name	—	Rev. J. Topno.
	Nationality	—	I N D I A N.
	Address	—	G. E. L. Church, Ranchi
6	Name and address of individuals who own the News papers etc.		

I, Rev. C. S. R. Topno, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/- **C. S. R. Topno**

Associate Editor for the Publisher
G. E. L. Church, Gharbandhu

Date Feb. 4, 1975

रजिस्टर्ड नं. आर. एन. सी. ४
वर्ष—६५, राँची, १९७५, संख्या नं.—३

Edited and Published by Rev. J. Topno, Pramukh Adhyaksh, for and on behalf of the G. E. L. Church and printed at G. E. L. Church Press, Main Road Ranchi/Bihar.

*टिप्पणी — १९७४ ई० के फरवरी अंक के सूचनानुसार रेभ० जे० तोपनो प्रमुख न रहने पर घरबन्धु के सम्पादक और प्रकाशक भी न रहे, परन्तु व्यवहारिक कठिनाइयों के कारण अब तक नाम नहीं बदला गया अतः यहाँ फार्म में उन्हीं का नाम है। नाम बदले जाने पर यह फार्म फिर यहाँ प्रकाशित होगा।

Edited and published by Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G.E.L. Church and Printed at G. E. L. Church Press, Main Road, Ranchi / Bihar.

Gossner Mission

धर्मबन्धु

रजिस्टर्ड नं॰ आर॰ एन॰सी.४

वार्षिक मूल्य ५ रु॰

EINGEGANGEN
- 5. MAI 1975
Erledigt .....

वर्ष — ६५ रांची. मार्च १९७५ संख्या नं॰ — ३

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

Editor & Publisher
Pramukh Adhyaksh,

Associate Editor
Rev. C. S. R. Topno

Editorial Committee

Rev. M. Tete
Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय		—	३
उपदेश की तैयारी	रेभ टेटे	—	४
अंतिम निर्णय		—	६
केन्दुघाटी		—	७
खुशी का सुसंदेश		—	८
जीवन का दर्शन		—	९
जन्म पर्व की छुट्टियों के अवसर पर		—	११
कलीसियाई समाचार		—	१३
फैशन और स्टाईल		—	१६
गोस्सनर एवंजेलिकल लूथेरान.....		—	१७
धन्यवाद आप का ग्राहक चन्दा मिला		—	१८
मैं वही हूँ		—	१९
Statement about Ownership...		—	२०

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणतः १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य पांच रूपये हैं।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें।

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये पते पर ही भेजें। एसोसिऐट एडीटर, घरबन्धु; जी० ई० एल० चर्च [कि० एस० एस० ऑफिस], राँची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता० तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इसमें बांयी ओर 1½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेजें

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रख लेनी चाहिये, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगा।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालू की जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १०-ता० के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवतः ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छपे जाते हैं; ग्राहक चन्दा के बाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवत : डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित कुछ लिखा लें।

Gossner Mission

सम्पादकीय

यह माच महीना हमें दो विशेष बातों का स्मरण कराता है :—(१) यीशु मसीह का दुःख और मरण
(२) यीशु मसीह का पुनरुत्थान।

मसीही कलीसिया में ये दोनों बातें बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। क्योंकि इन्हीं में मसीह के जगत में आने का अभिप्राय पूर्ण होता हुआ दिखाई देता है। अगर ये दोनों ही बातें सुसमाचार से अलग कर दी जायें, तो सुसमाचार अपूर्ण ही रह जायगा। अगर ये भी अलग-अलग ली जायं, तो इनका महत्व नहीं रह जायगा। अतः दोनों को एक साथ लेकर इन पर ध्यान देना आवश्यक है।

अपनी सेवकाई के दरमियान यीशु ने स्वयं ही अपने आने का अभिप्राय इस प्रकार बतलाया—"……मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाय, पर इसलिये आया कि आप सेवा टहल करें, और बहुतों को छुड़ौती के लिए अपना प्राण दे" (मार्क १० ४५) उसका यह कथन उसकी पूरी सेवकाई में सच ठहरता है, और उसके दुःख भोग तथा क्रूश मृत्यु में इसकी सत्यता चरम सीमा पर पहुंच जाती है, जब कि वह स्वयं निर्दोष, हां पापरहित होकर भी समस्त मानव जाति के पापों के प्रायश्चित के लिए अपने आप को बलिदान कर देता है।

लेकिन यहां यह भी विशेष ध्यान देने योग्य है, 'कि बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण देने में' यीशु मसीह अपने प्राण को नहीं खो देता है, परन्तु इसके विपरीत, यीशु मसीह के प्राण को वश में रखने के प्रयास में मृत्यु ही अपनी शक्ति खो बैठती है, वही स्वयं यीशु मसीह के वश में हो जाती है। फल यह होता है कि मसीह को पुनः जीवन प्राप्त होता है। वह मृतकों में से जी उठता है। यह तो जगत के लोगों के लिए बहुत ही विचित्र बात है। मसीह का जी उठना ही उसके उद्धारकारी कार्य की छाप है। उसने स्वयं पहले ही कहा था, कि "वह जी उठेगा" मार्क १०:३४, मत्ती २०:१९, लूका १८:३३ आदि। यीशु मसीह का पुनरुत्थान ही समस्त जगत के लोगों को जो उस पर विश्वास करते हैं, अन्तिम और भयानक, शत्रु अर्थात मृत्यु से बचाता है। उस पर विश्वास करने वाले के लिए अब दण्ड की आज्ञा नहीं रही, परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।

पाठकों को पुनरुत्थान पर्व्व आनन्दमय हो।

घरबन्धु, मार्च १९७५

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

मार्टिन टेटे

ओकुली

(मेरी आंखें) लूक ९ : ५१-५६

यीशु के विचार और मनुष्य के विचार में भिन्नता है। मनुष्य की इच्छा और ईश्वर की इच्छा साथ-साथ नहीं चलती है। मनुष्य नाश करने चाहता है और यीशु बचाने चाहता है। वह लोगों को बचाने के लिए यीरुशलीम जाता है। यीरुशलीम में वह बचाने का काम पूरा करता है।

ईश्वरीय अभिप्राय—मानव विचार

क. ईश्वरीय अभिप्राय—

१ मनुष्य को बचाना—जीवन देना।

२ क्रूश उठाने के लिए यीरुशलीम जाना—क्रूश की मृत्यु से मनुष्य के लिए जीवन कमाना।

३ सामरियों का ठुकराना और चेलों के अविश्वास को सहना।

४ मनुष्य के लिए स्वर्ग में जगह तैयार करना। यीशु स्वर्गारोहण के समय स्वर्ग को उठाया गया ताकि अपने लोगों को स्वर्ग की ओर बढ़ावे (५१)।

ख. मानव विचार—

१ क्रोधित हो जाना और विनाश की इच्छा करना (५४)।

२ ठुकरा देना—जातीय भेद ले आना (५३)।

३ अज्ञानता में अन्त—मानव नहीं जानता कि नई बाचा क्षमा देने और सहने के लिये दी गयी है। विनाश की इच्छा तो शैतान की ओर से है।

आप का विचार क्या है? याकूब और यूहन्ना की जगह में होते तो आप क्या करते?

लेतारे

(आनन्द कर) यूहन्ना ६ : ४७-५७

यीशु पाँच हजार लोगों को खिलाता है। इस्राएलियों को जंगल में मन्ना खिलाया था। दोनों वर्णनों का संकेत यीशु की ओर है।

"यीशु जीवन की रोटी है"

क खाने वाला सर्वदा जीवित रहेगा (५०)। इस्राएल मन्ना खा कर मर गये। पांच हजार लोग भी मर गये। परन्तु यीशु जीवन रखता है। यीशु को ग्रहण करने वाला नहीं मरेगा। यीशु स्वर्ग से आया है। यीशु सम्पूर्ण जगत के लिए जीवन की रोटी है।

ख खाने वाला जी उठेगा (५४)। इस वचन से प्रभुभोज की ओर भी संकेत है। रोटी और दाखरस में वह अपने आप को अर्पण करता है। प्रभुभोज खाने वाला जी उठा है। यीशु आप ही पुनरुत्थान और जीवन है। जो उस पर विश्वास करता है वह जीता है। अपने पुनरागमन तक इसी भोजन से बिश्वासियों को जिलाता रहेगा। यीशु आज भी वचन के द्वारा अपने लोगों को आत्मिक भोजन देता है।

युदिका

(न्याय कर) यूहन्ना १३:३१-३५

प्रभु यीशु अपनी महिमा क्रूस की मृत्यु में देखता है। क्रूस की मृत्यु में परमेश्वर का प्रेम प्रगट है। ईश्वर से प्रेम रखने वाले लोगों के बीच प्रेम बास करता है।

"यीशु की महिमा"

क क्रूस की मृत्यु में है। (३१) प्रेम के कारण उसकी मृत्यु क्रूश में हुई यहुदा इस्कारियोती यीशु की मृत्यु का प्रबन्ध करता है।

ख पुनरुत्थान में है (३२) ईश्वर उसको जिला उठावेगा और अपनी दाहिनी ओर बैठावेगा।

ग विश्वासियों के प्रेमी जीवन में है (३५)। विश्वासी प्रेम के द्वारा साक्षी देता है कि वह यीशु का है।

घ नई आज्ञा में है (३४)। मृत्यु में यीशु का प्रेम प्रगट है। इस आज्ञा को हम लैव्यवस्था १९ : १८ में भी पाते हैं। उसकी मृत्यु के स्मरण के

Gossner Mission

निमित्त प्रभुभोज के द्वारा लोग प्रेम में फिर कर दृढ़ाये जाते हैं। प्रेम के द्वारा यीशु की संगति का प्रदर्शन होता है। आपके जीवन को यीशु का प्रेम प्रभावित करे ताकि आप दूसरों से प्रेम कर सकें।

पलमारुम

(खजूर की डाली) योहन १२ : १२-१६

प्रभु यीशु यीरुशलीम में प्रवेश करने के द्वारा यह गवाही देता है कि वह पुराने नियम की प्रतिज्ञा का मसीह है। नबियों ने कहा है कि इसी मसीह के द्वारा परमेश्वर का राज्य स्थापित किया जायगा।

स्वागत का नारा

क होशाना—(अभी हमें बचा) यीशु जगत को बचाने आया। यीरुशलीम को बचाने आया। हमें बचाने आया! हमारी प्रार्थना है कि हमें अभी बचावें।

ख धन्य इस्राएल का राजा—वह इस्राएल का राजा है। इस्राएल की महिमा है। जयवन्त राजा है। खजूर की डाली से स्वागत का अर्थ है कि वह जयवन्त राजा है।

(यशायाह ६ : ७; यिर्मयाह २३ : ५ दानिएल ७ : १४; यूहन्ना १ : ४६; १८ : ३७)।

ग प्रभु के नाम से आता है—यीरुशलीम आता है। राजधानी में आता है। मेरे और आप के जीवन में आता है। ईश्वर की ओर से भेजा गया है। मुझ में और आप के राज्य करने के लिये आ रहा है। लाजर के जीवन में आया। आप के जीवन में भी आवेगा।

प्रतिज्ञा का मसीह और ईश्वर का राज्य आप के जीवन में आ गया है। क्या आप स्वागत के निमित्त तैयार हैं?

भला शुक्रवार

लूक २३:३६-४६

गलगथा पहाड़ का जीवित दृश्य हमारी आँखों के सामने है। तीन क्रूश हैं। तीनो क्रूस में पाप के कारण तीन मनुष्य टांगे गये हैं। तीनों मनुष्य मृत्यु के मुख में हैं। परन्तु एक मरता है और दो स्वर्ग में मुलाकत करते हैं।

तीन क्रूश

क पहला क्रूश में पहला डाकू— अपने पाप के कारण टांगा गया है। पश्चाताप नहीं करता है। त्राण को नहीं देखता है और मृत्यु को प्राप्त करता है। यीशु से अलग हो जाता है। उसने मसीह को ग्रहण नहीं किया परन्तु कुकर्म्मी समझा। पहला क्रूश अपश्चाताप और मृत्यु की ओर संकेत करता है जिससे निन्दा का शब्द निकलता है।

ख दूसरे क्रूश में यीशु है— दुनिया के पाप के कारण टांगा गया है। यीशु का क्रूश जीवन की ओर संकेत करता है। मसीह के क्रूश से शान्ति का शब्द निकलता है। —"आज ही तू मेरे संग स्वर्ग लोक में होगा। अर्थात तू मेरे संग जीयेगा। हे पिता मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ" कार्य पूरा हो गया। मैं तेरे साथ हूं। लोगों ने मुझे पहचाना। त्राण का कार्य सिद्ध हो गया। मसीह का क्रूश प्रमाण करता है कि वह परमेश्वर का पुत्र है। (४६-४७)।

ग तीसरे क्रूश में दूसरा डाकू है— वह अपने पापों का फल भोग रहा है। तीसरा क्रूश पश्चाताप की ओर संकेत करता है। और एक प्रार्थना सुनाई देती है। (४२)।

तीसरा डाकू यीशु के संग हो लिया उसने प्रभु पर विश्वास कर जीवन का भागी हुआ।

गलगथा आप के सामने है आप किस क्रूश की ओर दृष्टि फेरते हैं।

पुनरूत्थान पर्व्व

प्रभु का जी उठना

(लूक २४:१३-३५)

दो भाई मार्ग में हैं। उनके बीच पुनरूत्थान के विषय बात चीत होती है। परन्तु जीवित प्रभु का अनुभव उन्होंने नहीं किया था। क्योंकि वे विश्वास में कमजोर थे। (२१)।

"निश्चय प्रभु जी उठा है"

क धर्मशास्त्र साक्षी है (२५-२८) नबियों ने कहा था कि यीशु उठेगा।

Gossner Mission

ख प्रभु भोज साक्षी है (३०) प्रभु अपने को विशेष रूप से प्रगट करता है। वह रोटी तोड़ कर उन्हें देता है। रोटी तोड़ना फ़सह पर्व्व और प्रभु भोज के अनुष्ठान का स्मरण दिलाता है।

ग भाइयो और वहनों की साक्षी है (२३-२४)।

घ स्वर्ग दूतों की साक्षी है (२३)।

प्रभु सचमुच जी उठा है तुम्हें शान्ति मिले॥

अन्तिम निर्णय

C. R. Horo (Teacher)

परन्तु धन्य वे हैं, जो ईश्वर का वचन सुनते और मानते हैं। लूका ११:२८।

किसी वन के मध्य झोपड़ी में एक बकरी अपने छोटे बच्चों के साथ रहती थी। वह प्रतिदिन बाहर जाने के पहले अपने बच्चों को यह कहकर जाती थी, कि जब तक मैं वापस नहीं आऊँगी, तब तक किसी के कहने से दरवाज़ा मत खोलना। एक दिन बकरी को खाना की खोज में दूर जाना था। वह अपने छोटे बच्चों को यह आज्ञा देकर चली गयी कि मेरे लौटने तक तुम लोग घर में दरवाजा बन्द करके रहना। पास ही झाड़ी में एक भेड़िया बकरी की बातें सुन रहा था। थोड़ी देर में वह झोपड़ी के दरवाजे पर आया और अपना आवाज बदल कर छोटे बच्चों को दरवाज़ा खोलने के लिये कहा। बच्चे सोचने लगे कि अभी तुरन्त ही उनकी मां उनको कह कर गयी है कि दरवाजा मत खोलना; तो यह क्या बात है। उन्होंने दरवाजे के छेद से देखा कि दरवाजे पर एक भेड़िया बैठा हुआ है। मसीही भाईयो एवं बहनों हम समझ सकते हैं कि अपनी माँ की बात (आज्ञा) नहीं मानने से उन बच्चों का क्या हाल होता। भेड़िया उन बच्चों को चीर-फाड़ कर खा जाता। परन्तु आज्ञा पालन करने से वे छोटे-छोटे बच्चे बचाये गए। अब प्रश्न यह है, क्या हम खृस्तान लोग ईश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं? जिसके हम सेवक हैं? जिसकी आराधना हम हर रविवार या सांझ बिहान करते हैं? जिसके विषय हम गवाही देते हैं? जिसका बचन को हम रेडियो, ट्रान्जिस्टर, पत्रिका या अन्य प्रकार से सुनते और प्रचार करते हैं? ईश्वर का बचन लूका ११:२८ में हमें सिखाता है, धन्य वे हैं जो ईश्वर का बचन सुनते और मानते हैं।

ईश्वर आत्मा है, त्रिएक परमेश्वर का बचन (आज्ञा-पालन) ही सच्चा आत्मिक जीवन कहलाता है। ईश्वर की आज्ञा का पालन करने से ही हम बचाये जा सकते हैं। क्योंकि वह आत्मा है, इसलिए शारीरिक होकर हम उसको कभी नहीं जान सकते हैं। परमेश्वर से मिलने के लिए आत्मा के आनुसार चलने (आज्ञा पालन) की आवश्यकता है। परमेश्वर प्रेम है वह अपनी सारी सृष्टि से प्रेम रखता है। वह किसी पापी मनुष्य को न कभी नष्ट किया है, और न करेगा। परन्तु पापी मनुष्य अपनी सीमित बुद्धि और अपनी स्वतन्त्र शक्ति का गलत प्रयोग करके स्वंय ही नष्ट हो जाता है। प्रत्यक्ष कलीसिया के सदस्य जो नियमानुसार गिरजा बिन्ती में शामिल होते हैं। हमें आत्मा के अनुसार चलने का यत्न करना चाहिये। हम सिर्फ ज्योति का प्रचार ही न करें बल्कि ज्योति में चलते हुए ज्योति का प्रचार करें। क्योंकि प्रत्यक्ष कलीसिया में बहुत से लोग उल्लू और चमगीदड़ जैसे हैं। जिन्हें ज्योति से कुछ लाभ नहीं होता है। अतः हम अन्तिम निर्णय पर ध्यान करें। बचन कहता है कि बहुत से लोग पूर्व और पश्चिम से आकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे, परन्तु राज्य के सन्तान बाहर अन्धियारे में डाल दिए जायेंगे वहां रोना और दांतों को पिसना होगा। मत्ती ८:११:१२।

Gossner Mission

केन्दुघाटी

दिनांक ५ जनवरी को हमारे नये धर्मगुरू रेव्ह. एस. तोपनो हाथीओड़ा मंडली में सुसमय पर पहुँचे जहां मण्डली ने "फूलमालाओं" से स्वागत किया। सुसमाचार में से याकूब ४:१६+१७ और मत्ती १६:१–४, पर शिक्षा जनक उपदेश देकर मंडली को सावधान किया। गिरजा के अन्त होते ही हमारे गांव केन्दुघाटी को चल पड़े जहां "सन्डे स्कूल दिवस" मनाने का न्योता था। इस प्रोग्राम में धर्म गुरु और हमारे इलाका मेम्बर श्री जेम्स रुत्ता, अपने गांव "एरगेड़ा युवा संघ" सहित हमारे गांव में पहुंच जाने के कारण खुशियों की लहर कईगुणा बढ़ गई। स्वागत के फाटक पर बच्चों ने "होशाना! होशाना !! होशाना !!! लिख कर यूहन्ना ३:२६-३१ को रंगीन रुप से सजाया था जिससे स्वागत में रौनक बढ़ी। गीत गाते हुए बच्चों ने धर्म गुरु और इलाका मेम्बर सहित "युवा संघ" को बड़ी खुशी भरा दिल से स्वागत किया। इसके बाद हमारे गांव की उपासना स्थान घर के द्वार पर गांव भर के "बूढ़ा-बुढ़ियों" ने धर्म गुरु को "फूल मालाओं सहित" समेटते हुए घर के भीतर ले चले जहां हमारे स्थानीय चेयरमेन साहब रेव्ह. एस. डुंगडुंग ने अपनी पहली बार के आगमन पर प्रभुभोज का प्रोग्राम कुछ साल पहिले रखा था। गिरजा घर खूब खचाखच भरा था। धर्म गुरु ने "धर्म शास्त्र में से हमें" दाऊद और गोलियथ की लड़ाई के बारे जोशीले रुप से उपदेश देकर परमेश्वर पर अटल विश्वास में रहने को स्थिर किया। गिरजा के बाद धर्म गुरु ने, हमारे इलाका मेम्बर के साथ बच्चों को, चाकलेट, गुलाबी रिबन, कंघी वगैरह वितरण कर "हमेशा सन्डे स्कूल आने को कहते चले। शाम को "प्रेम भोज" का प्रबन्ध था जिसमें गांव भर के सब मसीही मिलकर "परमेश्वर की महिमा की।" पाठकों से बिनय है कि हमारे सन्डे स्कूल के बच्चों को अपनी दैनिक प्रार्थना में सामिल करें, ताकि वे भी "मंडली के खूंटे और खंभे बन सकें।"

बी० तोपनो

प्रथम युवा सम्मेलन अंडामन द्वीप समूह में।

अंडामन और निकोवर द्वीप समूह जी० ई० एल० चर्च के प्रेसिडेन्ट पाद्री सबन मार्टिन तोपनो द्वारा दक्षिणी अंडामन के बाराटांग द्वीप समूह में प्रथम युवा सम्मेलन तारीख १२.१.७५ एतवार को आयोजित था। करीब २५० युवाओं ने विभिन्न द्वीप समूह से डोंगी, बोट, शिप तथा पैदल द्वारा आकर भाग लिया। इसके अलावा मारथोमा तथा जेकोबैट मिशन से रेंजर तथा डिपुटी रेंजर भी उपस्थित थे। शानदार कार्यक्रम था। उत्पत्ति ३:९ "तू कहां है" से प्रेसिडेन्ट महोदय ने युवाओं को बुलाहट की आवाज में प्रभावशाली एवं लाभदायक शिक्षा दिया। अंडामन तथा निकोवर जी० ई० एल० चर्च० के जोइन्ट सेक्रेटेरी श्री मार्सल केरकेट्टा ने युवाओं के अधिकार तथा कर्त्तव्य पर प्रभावशाली भाषण दिए। बुजुर्ग पाद्री बाबुलाल तोपनो ने युवाओं को प्रेम, धीरज तथा विश्वास पर शिक्षा दिया भजन होड़ पर ७ टीमों ने भाग लिया। प्रथम द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त टीमों की सराहनीय चर्चा चली। युवा संघ के कार्य कर्त्तागण निम्न-लिखित चुने गए—

प्रेसिडेन्ट—पावल केरकेट्टा
वाइस "—जुलियुस एक्का
सेक्रेटेरी—धर्मदास खलखो
जोइन्ट " —जोलजस एक्का
खजांची—नीमी तोपनो
तथा ७ मेम्बरगण हरएक डेराओं से चुने गए। हमारे

Gossner Mission

प्रेसिडेन्ट पाद्रो सबन मार्टिन तोपनो के अंडामन में आने से सारे द्वीप समूह जी० ई० एल० चर्च० के भाई एवं बहनें जागृत हो रही हैं इसलिए कलीसिया के अधिकारीगण भी हमारे प्रेसिडेन्ट महोदय को सहयोग दें। ताकि अंडामन तरक्की करे।

प्रचारक—निर्बन्ध गुड़िया।

नये बिशप का पदाभिषेक।

तामिल एवंजेलिकल लुथेरान कलीशा के लिए नये विशप the Rt. Rev.Lazarus Easter Raj का पदाभिषेक १४ जनवरी १९७५ को ट्रॉकोवर यीरुशलेम चर्च में बड़े धूमधाम के साथ हुआ। उनकी ओर से गोस्सनर कलीशा को नमस्कार और शुभ कामनाएँ। मुझे गोस्सनर कलीशा की ओर से प्रतिनिधित्व का अवसर प्राप्त था।

पा० मार्टिन जोजो

"खुशी का सुसन्देश"

इलियस केरकेट्टा
जी० ई० एल० मिशन कम्पाऊन्ड, गुमला

मानव जाति को दुनिया में विचरण करना है तो हरदम हँसते एवं गाते ही जीवन की गाड़ी चलाना है, थोड़ा भी दुःख एवं कठिनाईयों का अनुभव नहीं करना ही जीवन का सुसंदेश है। हमें "क्रूश दुःख" का स्मरण आते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। उस दुःख के सामने हमारा दिन प्रति दिन का दुःख एक तिनका ही कहा जा सकता है।

हाँ तो हम हंसने गाने में जीवन यापन तथा बुराई को नहीं पनपनें दें तो दुनिया सचमुच सुन्दर एवं आनन्द की झरोखे बन सकती है। हमें जीवन का अधिक से अधिक आनन्द लेना चाहिए क्योंकि इसकी अवधि बहुत लम्बी नहीं। मानव के रूप में जन्म पाना एक महान् गौरव की बात है, जिसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

ईश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना आनन्दानुभूति के ही क्षण में की होगी। उसने इन्हें आनन्द देनेवाली वस्तुओं से ही भर दी है। आकाश का गहरा सुनील, वितान सितारों की संगीतात्मक एवं सज-धज के साथ गति, अनेक तरह के आकर्षणों से परिपूर्ण पृथ्वी का हरित-वितान सभी-के-सभी सृष्टि रचना के कार्य में ईश्वर के असीम आनन्द के प्रमाण हैं। मानव का कर्त्तव्य है कि वह अपना काम करें बुराई के विरूद्ध संघर्ष करें। विराट भौतिक जगत में प्रसारित आनन्दोपभोग की वस्तुओं का रस लें।

मनुष्य को केवल प्रकृति की मनोहर छवियों का ही आनन्दोपभोग नहीं करना चाहिए वरन् अपने संगी-साथी के साथ भी हँसी-खुशी में समय बिताना है। उसे क्षुद्र स्वार्थों की दलदल से निकालना चाहिए, ईर्ष्या-द्वेष, प्रतिष्पर्द्धा आदि से मुक्त होकर किसी आरामदेह सराय में ठहरे हुए यात्रियों की तरह मिलजुलकर रहना चाहिए। धर्म, जाति, नस्ल, पेशा, सामाजिक स्तर आदि पर आधारित विभिन्न क्षुद्र प्रकोष्टों में अपने को बन्दी बनाकर रहना उचित नहीं। इस दुनियां में जो भी सुखोपभोग उपलब्ध है उनका रस लेकर जीना चाहिए— जिस तरह सराय में ठहरे हुए अतिथि नाचगान में सम्मिलित होकर उसका आनन्द लेते हैं। मनुष्य को मृत्यु-पर्यन्त हंसी-खुशी का आलम बनाये रखना चाहिए।

घरबन्धु, मार्च १९७५

Gossner Mission

कभी भी निराशा या दुःख को काली छाया अपने पास नहीं आने देना चाहिए।

इस सुन्दर सृष्टि में अपने जीवन को तृप्ति और सन्तोष के साथ बिताना, तथा इन सभी सुन्दर उपहारों के लिए ईश्वर के प्रति कृतज्ञ होना— यह मानव मात्र का पवित्र कर्त्तव्य है।

"God's in His heaven
All's right with the World"

इस माने में कहा गया है कि वे जाति, धर्म, राष्ट्र, पेशा तथा सामाजिक स्तर आदि का बिना ख्याल किये हुए सबके साथ भाई - भाई की तरह रहें। इस धरती पर हमारा निवास कुछ ही दिनों का है। जब तक जिन्दा रहें हमें इस आनन्द की मन-स्थिति को कायम रखना है, तथा निराशा या दुःख को पास भी नहीं आने देना है। खास कर मसीही भाई बहनों को ध्यान देना है, और गैरमसीही भाई–बहनों तक इस सुसंदेश को पहुंचाना है, तभी हम मसीही होने का दावा कर सकते हैं।

जीवन का दर्शन

(सलमोन आईन्द)

ईश्वरीय भावनात्मक क्रिया की आवाज अद्भुत रीति से मानव जाति के महान उद्धार के लिए आदि ही से गुंज रही है। इस भूमंडल के प्रत्येक कोने से सभी वर्ग एवं अवस्था के लिए रेडियो और समाचार पत्रों द्वारा प्रसारित किये जाते हैं। वर्त्तमान युग का प्रत्यक्ष चिन्ह, भय धमकियों, दुःखद घटनाओं एवं दुर्नीतियों का आविष्कार न नेवल राजनीतिज्ञों में बल्कि मसीही जीवन क्षेत्र में भी क्रान्तिकारी विचार जिसका लक्ष्य स्पष्ट रीति से धर्म शास्त्र (बैबल) में वर्णित है। मनुष्य द्वारा भयंकर समस्याएं एवं बुराइयाँ होती जा रही हैं। विकास की आशा अरुचिकर पूर्ण होती जा रही है। जिसका प्रतिफल घोर संघर्ष, दरिद्रता, आपसी मतभेद एवं अराजकता है। आदर्श जीवन की अपेक्षा आध्यात्मिक रिक्तता निराशा एवं अनुशासन का अभाव है। पापाचार, लोकाचार, अत्याचार, भ्रष्टाचार और दुष्टाचार के कारण सच्चा "जीवन का दर्शन" दिखाई नहीं देता और न तो अच्छे कार्यों में विश्वास करना पड़ता है। इस कालान्तर में शिक्षा, विज्ञान, औद्योगिक विकास सामाजिक परिवर्त्तन एवं सुविधाएं आवश्यक हैं। किन्तु यह आध्यात्मिक जीवन प्रणाली की संकेताभाव का भी प्रोत्साहन है। स्वर्गीय जीवन का योजना भूत, वर्तमान एवं भविष्य के लिए इस पृथ्वी पर ईश्वर ही के द्वारा स्थापित किया गया है। जिसका प्रकाश एवं मानवीय समस्याओं का समाधान केवल प्रभु यीशु मसीह है। क्योंकि शाश्वत मानव जीवन की सारी बातें उसी के पास हैं (यूहन्ना ६: ६८.)। समाराज्य युगानुयुग उसी के द्वारा और उसी की महिमा के लिए सब कुछ है (रोमियों ११: ३६)। मानव के आचार और व्यवहार द्वारा आनन्द, शान्ति, जीवन एवं राज्याधिकारी मार्ग को संकीर्ण कर दिया जा रहा है। जीवन संचार अथवा भक्ति-भावना की ज्योति विलीन होती जा रही है। प्रभु यीशु मसीह को अपने जीवन का उच्चतम, श्रेष्ठ प्रेरणा एवं महिमोपासना के अपेक्षा निर्गुणोपासना पर अत्यधिक महत्व देते हैं। परन्तु जो अधर्म से सत्य को दबाते हैं उनकी समस्त अशक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से परमेश्वर का कोप प्रगट हो रहा है; कारण यह कि परमेश्वर के विषय में जो कुछ जाना जा सकता है, वह उन पर प्रगट है; स्वयं परमेश्वर ने उन पर प्रगट

Gossner Mission

किया है। उसके अदृश्य गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ्य सृष्टि के आरंभ से ही रचना में स्पष्ट है, अतः उन लोगों के पास कोई उत्तर नहीं है; परमेश्वर को जानते हुए भी उपयुक्त एवं सुगुणोपासना नहीं करते हैं वरन् व्यर्थ कुतर्क में पड़ गए हैं, यहां तक कि उनका विवेकशून्य और मन अंधकारमय हो गया है। वे अपने को बुद्धिमान समझते परन्तु मूर्ख सिद्ध होते हैं। अविनाशी परमेश्वर के वैभव के स्थान पर जो विनाश के पथ पर हैं, उनके निकट क्रूश की कथा मूर्खता है। परन्तु जो मुक्ति के मार्ग पर हैं, उनके लिए परमेश्वर की सामर्थ्य है। पवित्र शास्त्र का लेख भी है "मैं ज्ञानियों का ज्ञान नष्ट कर दूंगा, और चतुर व्यक्तियों का चातुर्य व्यर्थ प्रमाणित करूंगा।" कहां है ज्ञानी ? कहां है शास्त्री ? कहां है इस युग का तार्किक ? क्या परमेश्वर ने नहीं दिखा दिया कि संसार का 'ज्ञान' मूर्खता है ? (१ कुरिंथियों १: १८–२०)। उसके ज्ञान का ऐसा विधान हुआ कि संसार अपने ज्ञान द्वारा. परमेश्वर के ज्ञान और उसके अटल संविधान को पहिचानने में असमर्थ है। इस कारण परमेश्वर ने प्राकृतिक संबंध के स्थान पर अप्राकृतिक संबंध रखकर मन की दुर्वासनानुसार त्याग दिया, जिसके फलस्वरुप आपस में अपने शरीरों को दुर्व्यवहार द्वारा अपवित्र करते हैं। ईस्वरीय सत्य के स्थान पर झूठ को अपनाते, सृष्टि की उपासना और आराधना करते हैं, सृष्टिकर्त्ता की नहीं, जो सर्वदा धन्य है (रोमियों १:१८-२५·)

वर्तमान विभिन्न कलीसिया अथवा मसीह समाज़ में शास्त्रीय दार्शनिक कहलाने के अधिकारी एवं सांसारिक ज्ञानार्जन के लिए भी इच्छुक हैं। परन्तु उनमें प्रेम, दार्शक, प्रवीण, विद्यायक और अन्वेषक होने पर भी उल्लट वासियों के तत्वों का प्राधान्य है। विश्व में सभी को अपने-अपने धर्म संस्था पर नाज है एवं सभी पदासीन के कारण गौरव समझते हैं, क्योंकि मनुष्य को अपने लिए ठीक मार्ग दिखाई पड़ता है, किन्तु अन्त में मृत्यु है (नीति वचन १४:१२; १६:२५)। यदि सब का धर्म ठीक है तो इस जगत में अशान्त, भयाक्रान्त और कुरीतियों के निवारण अपेक्षा क्यों प्रबल है ? समाज सुधार के लिए एक मात्र निष्कर्ष जो विश्वास के सिंहासन पर विराजमान मसीह सिवाए मानव रचित विविध धर्म सिद्धान्त प्रत्येक मानव जाति को प्रतिभूनि लेने अथवा देने वाला क्या इस जगत में ऐसा कोई और है ? मार्ग, जीवन और सच्चाई उपेक्षा करने के कारण जैसा मसीह द्वारा घोषणा किया गया है, आत्मिक पतन सिवाए और क्या कहा जा सकता है ? अन्ध विश्वासियों, मिथ्याचारों, आडम्बरों, समाज के अनर्गल तत्वों एवं आचार नीतियों पर अधिक महत्व है। विश्वास, प्रेम और शान्ति आदान-प्रदान में अवहेलना है।

मनुष्यीय जीवन का लक्ष्य केवल भौतिक सुखों की प्राप्ति ही नहीं है, क्योंकि भौतिक सुख नश्वर, मोहक और मन के भीतर आकर्षक है। भौतिक सभ्यता बहुत ही प्रभाव शाली है। मन की सभ्यता आलस्य-प्रामद और कर्त्तव्य मृतप्राय है। विषय वासना प्रबल होता जा रहा है, जिसके कारण मानव जीवन के हृदय में ब्रह्मीभाव का उदय नहीं है। परमेश्वर को मन्यता नहीं देते, इसीलिए उसने उन्हें नीच बुद्धि के आश्रित छोड़ दिया, जिससे वे अनुचित काम करने लगे। वे प्रत्येक प्रकार के अधर्म, दुष्टभाव, लोभ, द्वेष, ईर्ष्या, हत्या, क्रोध, विरोध, कपट, कुबुद्धि, चुगलखोर, परनिन्दक, धृष्ट, उध्दत, आत्म-प्रशंसक, नए-नए कुकर्मों के आविष्कारक, बुद्धिरहित, विश्वासरहित, स्नेहरहित और दयारहित हैं। वे परमेश्वर का निर्णय जानते हैं कि ऐसे कुकर्म करने वालों का दंड मृत्यु है, फिर भी न केवल स्वयं ऐसे काम करते हैं, वरन् इस प्रकार के कर्म करने वालों के समर्थक भी हैं रोमियों १:२८-३२। अनुग्रह के दिन परमेश्वर की करूणापूर्ण पुकार एवं उसकी इच्छा का अनुभाव उसी की दृष्टि में मानव जीवन के लिए उत्तम, रूचिकर और परिपूर्ण क्या है ? आत्मिक शान्ति और मुक्ति हेतु धर्म ग्रन्थों का अध्ययन करें।

घरबन्धु, मार्च १९७५

Gossner Mission

जन्म पर्व की छुट्टियों के अवसर पर

मैं असम का निवासी हूँ। नाम मेरा श्री नहेम्याह सन्डी गुड़िया है। कॉलेज जीवन की हर छुट्टियों में हमारे साथी घर जाने के लिए आनन्द से उछलते कूदते रहते हैं, क्योंकि अपने परिवार एवं माँ-बाप, भाई-बहनों से मिलने के लिए कौन नहीं चाहता है? पर मैं ने १९७१ से आज तक अपने माँ-बाप और भाई-बहनों की सूरत नहीं देखी है क्योंकि घर बहुत दूर है। कॉलेज जीवन की हर छुट्टियों में मैं प्रचार के कार्यों में बहुमूल्य समय को व्यतीत किया करता हूँ और वह समय मेरे लिए बहुत ही लाभदायक है। परमेश्वर को धन्य हो कि O.M. Team के द्वारा राँची, बिहार, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश आदि स्थानों में मैं ने प्रभु के वचन को गैर मसीहियों के बीच प्रचार किया। अनेक कष्ट होते हुए भी प्रभु में सदा आनन्दित होकर उत्साह, दृढ़ता और आनन्द के साथ प्रचार का कार्य किया। बड़े दुःख की बात तो यह है कि १९७१ से १९७३ तक अपर असम एवं असम क्षेत्र से केवल मैं ही अकेला था पर बड़ी खुशी की बात तो यह है कि १९७४ में नये भाई (असम से) श्री रेईड लकड़ा (राजा बहार) श्री मीका किस्सपोट्टा (मोकरोम) श्री रोवेलसन तिमुँग (मिकिर हिल्स) से अध्ययन के निमित्त आये।

इस बार जन्म पर्व मनाने के लिए प्रथम वर्ष के भाई श्री जीवन मसीह कन्डुलना (लुंगटु) अपने घर लेने को तैयार हो गये। पूरी छुट्टी में हम क्या करें, कैसे दिन बितायें? सब राँची ही में प्रोग्राम बना लिया। पर कारण वश दो भाई हमारे साथ नहीं जा सके अतः पूरी छुट्टी राँची ही में बिताये अब हमारे कॉलेज में Christmas Gathering 19-12-74 को बहुत ही धूम-धाम के साथ हुआ। 21-12-74 को हम दो भाई गोविन्दपुर को चले। वहां हम दोनों ने ट्रेक्ट वितरण बाजार में किया। P. T. S. Govindpur के Headmaster Rev. J. Soy से दरख़ास्त देकर मिकिर भाई Elias Hanse और बहन Elizabeth Timungpi के लिए छुट्टी लेकर हम चारों 22-12:74 को लुंगटु पैदल १० मील चले। लुंगटु में हम Junas Kandulna के घर में पहुंचे उनके पूरे परिवार ने हमें हार्दिक स्वागत किया अतः हम लोगों के प्रति बहुत ही खुश हुए और प्रार्थना किया। खाने पीने के बाद हम सो गये क्योंकि बहुत थक गये थे। फिर उसी रात को ३ बजे उठकर नौ रत्न देखने के लिए नगर को चले गये। कहा जाता है कि यह नगर प्रारंभिक काल में मुण्डाओं का तैयार किया हुआ मंदिर है। पर अब कुछ धसते जा ही रहा है। नगर का संक्षेप वर्णन :—

(क) ७ कोश लम्बाई और चौड़ाई है।

(ख) ५३ बगीचा, ५२ तालाब है।

(ग) नौ रत्न मंदिर सन् १२३ में तैयार किया गया है। कहा जाता है कि यह मंदिर ९ मंजिल था पर अब जमीन के अंदर घुसते जा रहा है। अभी केवल चार मंजिल जमीन के ऊपर है। खण्डरों को देखने से ऐसा लगता है कि उस जमाने के लोग बहुत ही कारीगर थे। क्योंकि पत्थर को काट कर खुटा, फूल आदि तैयार किया गया है। चट्टान के ऊपर में एक मठ है उसको जोगी मठ कहा जाता है। उसमें १०/१२ जन गैर मसीहियों से भेंट हुई। वे तीर धनुप, बर्छा बालूवा आदि लिये हुए थे। उन लोगों को चट्टान ही पर बैठाया और बैबल खोलकर बचन सुनाया, शिक्षा दिया, और अनेक उदाहरण देकर उपदेश दिया। बिशेषकर मत्ती पांच अध्यय पर उपदेश दिया, सुन्दर ढंग से अर्थ भी बताया। सब के सब ने शान्त स्वभाव हो सुना। वे यीशु मसीह का नाम कभी नहीं सुने थे पर सुसमाचार बचन को सुनकर वे बहुत ही खुश हुए अतः हम सभों को धन्यवाद दिये। अंत में

Gossner Mission

हम उस क्षेत्र के लिए, छोटे छोटे बच्चों के लिए, उन लोगों के लिए जो बचन को शान्त से और गैर मसीहियों के लिए प्रर्थना किये और बिदा हो गये। वहां से टंगीनाथ होते हुए एक चट्टान पर चढ़े वहां हम ने मिकिर बहन और भाईयों से सुने गीत के विषय के आधार पर प्रार्थना किया। सब दार्शनिक स्थानों को भाई श्री जीवन मसीह कन्डुलना ने दिखाया सो उस भाई के कष्ट सहन के लिए मैं सदा आभारी हूँ। सारे चीजों को देखकर लुंगटु १२ मील पैदल चले आये। २४ ताः पुण्य रात और बड़े दिन को बड़े धूम धाम के साथ मनाये। लुंगटु मण्डली के सभी सदस्यों को धन्यवाद होवे कि उन्होंने हमें सुसंगति के द्वारा एवं गीत भजन के द्वारा हमारे मनों को उत्साहित किया। 26th Dec. को लुंगटु मण्डली से १० मील पैदल बसिया तक चले और वहां से बस पकड़कर उरमुड़ि चले आये। यहां हम Emmanuel Topno के घर में ठहरे।

27 Dec. को हमने मरचा बाजार में ट्रेक्ट वितरण किया। उसके बाद Cand. Sura Sagen Elias Topno ने हमें रात को मेहमान किया। मरचा का गिरजा घर को भी हमने देखा इसकी स्थापना 29:5-1874 को हुई है। यहां से हम बिरिंता बुरू (पहाड़) देखने गये। पहाड़ के ऊपर अनेक पौराणिक इतिहास को देखकर चकित हुए। कहा जाता है कि वहां राजा का कारेया, करधनी, घोड़ा-लता, शैतिन, ढेकला, तालाब, कुर्सी, मुर्गी, अण्डा है। पर वे अभी सब पत्थर बन गये हैं। ऐसा दार्शनिक स्थान को लोग हमेशा ही देखने जाते रहते हैं। सारी चीजों को देखकर हम सुसमाचार प्रचार के निमित्त उस क्षेत्र के सबसे बड़े बाजार तपकरा गये। प्रचार कार्य के लिए हम ने बिरिंता पहाड़ के जंगल ही में प्रार्थना किया। हम प्रचार के लिए राँची ही से अनेक परचा ले गये और पूरे बाजार में परचा वितरण किये। हम ने सुना कि गोविन्दपुर पेरिस युवा संघ, पंचम वार्षिक सम्मेलन ईच्चाः मण्डली में होगा तब वहां चले गये। युवा संघ की तिथि थी २६ से ३१ दिसम्बर १९७४ और मूल विषय "धर्म जाति गणों को बढाता है।" नीति बचन १४ : ३४)। युवा संघ में हमें हार्दिक स्वागत फूल माला के द्वारा किया गया। हमें गीत गाने, भजन और गैर मसीहियों के बीच गवाही देने के लिए भी मौका मिला। Mr. Rowelson Timung ने असमीया भाषा से अपनी गवाही दी और मैं ने उसको मुण्डारी से उल्था कर पूरे युवा संघ तथा गैर मसीहियों को बहुत सुन्दर ढंग से समझाया। वहां के गैर मसीहियों ने पाद्रीगणों, प्रचारक, और हम चारों वासियों का स्वागत किया। गैर मसीहियों के बीच में बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रचार का कार्य हुआ। युवा संघ के सभापति सचिव और सभी भाई बहनों को धन्यवाद होवे कि वे हमें मेहमान के रूप में ग्रहण कर उसी प्रकार व्यवहार भी किया है अतः हमारे लिए मेस का खर्च भी नहीं देना पड़ा। हम उन लोगों के लिए आभारी हैं जिन्होंने हमें सभी प्रकार की सुविधा दिया। सभा के अंत में ३१ ताः को हम नया साल पर्व मनाने के लिए मरचा को चले।

नया साल पर्व बहुत धूम धाम के साथ मनाये। Rev. Samuel Surin के द्वारा प्रभु भोज बांटा गया, हम भी प्रभुभोज में सामिल होकर ग्रहण किया। वहां से हम गिरजे के बाद पैदल ही चले। रास्ते पर हम दोनों प्रार्थना करते करते करीब ८ बजे उरमुड़ि पहुँचे। रात को Emmanuel Topno के घर में सो गये। बड़े भोर को हम प्रचार के निमित्त चम्पाबहा को चले। रास्ते ही पर हम जंगल में मुंह हाथ धोकर फिर से चले। वहां प्रचार के लिए परचा, बैबल, कर्त्तल लिए। चम्पाबहा में पहुंचकर सभी भाई बहनों को बुलाये और बैबल पढ़कर बचन सुनाये, गीत गाये, बचन का अर्थ बताये, कर्त्तल बजाये, सभों को सरल मुण्डारी भाषा से समझाये, प्रार्थना किये। वहां के गैर मसीही लोगों ने ध्यान से सुना और हमारे प्रति वे सभी भाई एवं बहने खुश

Gossner Mission

हुए। वहां के लोगों की दशा उतनी अच्छी नहीं है। वे टोन्हा भगत भी कहलाते हैं। पूरे गांव के लोगों को हमने सुसमाचार वचन सुनाया अत: कर्त्तल से गीत भजन भी किया। वहुत जोर से प्रचार का कार्य हुआ। ऐसा लगता है कि लोग आकर्षित होकर मसीही धर्म को ग्रहण करेंगे। हम दिन भर पैदल चलते-चलते थक गये। भूख प्यास के मारे रास्ते का कच्चे बेर को तोड़कर हमने खाया वहाँ से लौटकर बिरिंता में १०—१२ वहनों के साथ रात भर गीत सीखे। 3 Jan. को हम Govindpur चले आये। P.T.S. का Headmaster Rev. J. Soy हमें मेहमान किया। उनको और उनके परिवार को धन्यवाद। 4 Jan. को Karra मण्डली चले आये चूंकि Karra के Cand. Susil Kr. Horo ने मुझे गिरजा पारी दिया था। Cand. को और वहां के सभी भाई वहनों को हमारे स्वागत के निमित्त हार्दिक धन्यवाद। गिरजा के तुरन्त वाद हम प्रचार के निमित्त Karra वाजार को चले। वहाँ हम परचा और अनेक पुस्तक और साथ में क्लेण्डर भी लिए। परचा वितरण के द्वारा प्रचार कार्य सफल ही रहा, प्रचार के वाद हम मदूगम् गांव Miss, Munuren Topno, Roselind Topno के घर में मेहमान के रूप में ठहरे अत: उन्होंने हार्दिक स्वागत किया। उन सभों को भी हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

इसी रीति से हम प्रभु यीशु के जन्म पर्व की छुट्टियों पर हमारे वहुमूल्य समय को मिकिर हिल्स के दो भाई एक वहन, और मैं साथ ही में चारों जन आनन्द और दृढ़ता पूर्वक वचन का प्रचार किये, भाई वहनों से सुसंगति किये और हम अनेक रीति रिवाजों तथा अन्य प्रकार के ज्ञान प्राप्त कर खुश हैं। हमारे लिए इस देश की सभी चीजें नयी हैं। जिन वहनों ने मिकिर वहन Miss Elizabeth Timungpi को शिक्षा दिया और सुसंगति किया उन लोगों को मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ क्योंकि वे नये मसीही हैं। उन लोगों की वपतिस्मा की तारीख निम्नलिखित हैं :—

1 Rowelson Timung—17-12-1971
(Theological College, Ranchi)
2 Miss. Elizabeth Timungpi—10-7-1972
(T.T.S. Govindpur)
3 Elias Hanse— 15-2-1974 (Govindpur)

परमेश्वर का धन्यवाद हो कि हम पूरे छुट्टियों के अवसर पर प्रभु के कार्य को करने सके। मैं आशा करता हूँ कि हर छुट्टी में हम प्रभु के कार्य ही में लगे रहें चूंकि हमारा जीवन सेवकाई और प्रचार का जीवन है। आज हमें मसीही या गैर मसीहियों के वीच में जाकर ज्योति चमकाना है, सुशिक्षा देना है अन्धकार में से ज्योति में लोगों को लाना है, सभों के प्राण को वचाना हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है। सो जवान और युवतियों से अर्जी है—"उठ प्रकाशमान हो क्योंकि तेरा प्रकाश आ गया है, और यहोवा का तेज तेरे ऊपर उदय हुआ है।" यशायाह ६० : १।

श्री नहेम्याह सन्डी गुड़िया
गोस्सनर थेओलोजिकल कॉलेज
रांची।

कलीसियाई समाचार

राँची—जनवरी माह में गोस्सनर कलीसिया के लिये अनेक अतिथि जर्मनी देश से आये, डा. और श्रीमती हेस्स, पास्टर श्मेलटर और श्रीमती श्मेलटर पास्टर वरूता और श्रीमती वरूता।

इनके लिये कार्यक्रम विभिन्न दृष्टिकोण से वनाये गये थे। हमारे इन मेहमानों में से सभी भाई गोस्सनर मिशन के कुराटोरियम के सदस्य हैं, डा. हेस्स अपने खर्च से आये उसी प्रकार उनकी धर्म

Gossner Mission

पत्नी जो असम के बैठाभांगा में जन्मी हैं अपनी मातृभूमि ज़न्मभूमि देखने आयीं डा· हेस्स अपनी धर्म पत्नी के साथ दियांकेल, टकरमा, पुरना पानी, आमगांव, राजगांगपुर, चैनपुर, गोविन्दपुर, फूदी, चाइबासा, चक्रधरपुर, खुटीटोली, खुंटी आदि स्थानों को देखने गये। इन्हीं के साथ पाद्री और मिस्सेस श्मेल्टर भी कई स्थानों को देखने गये। पाद्री श्मेल्टर के लिये साथ ही टोकाद, मर्चा, खुटीटोली, बीरमित्रापुर, रौरकेला, आमगांव, देवगढ़, कुचिंडा, सुन्दरगढ़, चैनपुर, लोहरदगा, आदि स्थानों में गये। पाद्री बरूता पहले असम गये थे अतः यहां आने में देरी हुई फिर भी उनके लिये भी काफी लम्बा चौड़ा दौरा कार्यक्रम बनाया गया है, वे हाजारीबाग, पलामु, अम्बिकापुर, राज्गांगपुर, चाईबासा, चक्रधरपुर आदि जगहों में जायेंगे ?

इस बार के मेहमानों के लिए रांची की हमारी विभिन्न संस्थाओं के लिये भी कार्यक्रम बनाया गया है, हरएक संस्था को अवसर व भार दिया गया कि मेहमानों की स्वागत करें और अपना कार्य-क्रम अनुसार बातचीत करें कुछ दिखायें और एक बेले का खाने-पीने और खिलाने-पिलाने का भार भी उठावें।

हमारे मेहमान अपने समय में न आने से कहीं कहीं का कार्यक्रम रद्द करना पड़ा, या रद्दो बदल करना पड़ा जिसके कारण असुविधायें और कठिनाईयां केवल नहीं पर खर्च भी बढ़ गये और अनेकों को निराश भी होना पड़ा।

इनके आने से कलीसियाई अगुओं और अधिकारियों में केवल नहीं पर आमजनता में एक अजीब भावना जाग गयी है। कुछ के विचार में ओटोनोमस कलीसिया के लिये यह एक भार समझा जाता है, कुछ लोग इसको मित्र भाव कहते हैं पर अधिक यही सोचते हैं कि अब तो साहब लोग आ गये हैं अतः अपनी दुखड़ा सुना कर अनेक प्रकार की सहयोग केवल नहीं पर सहायता की भी आशा करते हैं, स्वपालन और स्वशासन को किनारे कर माँ-बेटी के रिस्ते में ही रहना चाहते हैं, अनेक हैं जो बर्लिन से या जर्मनी की कलीसिया या व्यक्ति से सीधे सम्बन्ध रख कर सहायता लेना चाहते हैं। अतः मेहमानों का आना एक भार नहीं पर बहुतों के लिये सहायता क्या आशा के अवसर समझे जाते हैं। आने वाले दिनों में के०एस०एस० को गम्भीरता पूर्वक सोचना है।

सिरामपुर, कलकत्ता—सिरामपुर सिनेट की बैठकी में हमारे थिआलोजिकल कॉलेज के लिये भी विशेष बाते हुई। हमारे प्रिन्सिपल भी गये हुए थे। कॉलेज को रिकोगनिशन मिलने की बात है, अनेक शर्त पूरे हो ही गये, मकान, लाइब्रेरी आदि, सम्भवतः अब पूर्ण स्वीकृति हो जायगी।

पर कलीसिया की ओर से दयनीय दशा है, यहां के सम्बन्ध अनेक फैसलाओं का कार्यान्वयन हुआ ही नहीं। के० एस० एस० ने फैसला किया है (१९६६) कि प्रति दृढ़िकृत पच्चीस पैसा मंडली पैसा लिया जाकर आध्यात्मिक शिक्षा केन्द्र के लिये दिया जाय, पर आज तक कम ही लोगों व अंचलों ने इस प्रकार की आमदनी का केन्द्रीकरण किया, अभी फिर फैसला है कि प्रत्येक पेरिश कम से कम एक सौ रूपैया यहां अगले सेशन के पहले देवें, पर यह कितने पेरिश देंगे यह तो समय ही बतावेगा।

राँची—सिरामपुर की सिनेट-मिटिंग के बाद प्रो० डा० गेन्सीखने रांची अपने मित्रों से मिलने आये। वे पहले गुरूकुल मद्रास में प्रोफेसर थे, अब वे हाइडेल्बेर्ग में हैं; थेओलोजिकल कॉलेज में उनके लिये एक प्रोग्राम बनाया गया था।

इसी बीच पूर्वी जर्मनी से दो पाद्री मेहमान, पाद्री रीखतेर और पाद्री शुल्सगेन भी आ पधारे हैं, ये हमारे यहां १२वीं फरवरी तक रहेंगे; उनके लिये भी एक मिश्रित कर्य क्रम बनाया गया है।

राँची—श्री पौलुस केरकेटा, जो हमारे थिओलोजिकल कॉलेज में पढ़ाते थे, और अब मेरीन

Gossner Mission

डोजल हटिया, रांची में जर्मन भाषा से अनुवाद का काम करते हैं, रांची विश्वविद्यालय से डाक्टर ऑफ फिलासफी की उपाधि पायी है; उनको बधाई देते हुए आशा करते हैं, कि वे भविष्य में कलीसिया और समाज की सेवा में ऐसी उपाधि से उनको विशेष सहायता मिलेगी।

राँची—गिर्जाघर आदि बनाने के लिये पूरी कलीसियाई क्षेत्र में चन्दा मांगने का प्रबन्ध :

अनेक मंडली वा पेरिश केन्द्रों में गिर्जा घर बनाया जा रहा है, स्थानीय भाई-बहन चाहते हैं कि उनके निर्माण के लिये दूसरे स्थानों, अंचलों में भी पैसे जमा किये जांय; कितने तो यों ही आरम्भ करते हैं कुछ हैं अनुमति मांगते हैं, बीते के०एस०एस० की बैठकी में फैसला किया गया कि ऐसी मंडली (या पेरिश या इलाका) अपने अंचल की सिफारिश लेकर प्रमुख अध्यक्ष से अनुमति लेवें। अनुमति मिल जाने पर दूसरे क्षेत्र व अंचल के मंडलियों में चन्दा उठाने के पहले आवश्यक है कि वहां के अधिकारियों से भी अनुमति ले लेवें, तथा उचित कागजात और हिस्साब किताब के साथ ही सब काम करें। अच्छा होगा कि बाद में उस क्षेत्र व अंचल के अधिकारियों को भी खबर दें, कि उन्होंने कितनी रकम पायी।

कलीसियाई समाचार के लिये—उन सभी लोगों से आशा और अर्जी की जाती है जो विभिन्न सभा सम्मेलन, शिक्षा-शिविर आदि में भाग लेते हैं छोटा रिपोर्ट देवें, अनेक हैं जो ऐसी सभा आदि में भाग लेना सिर्फ एक अवसर समझते हैं, पर वे अपनी जवाबदेही इसमें पूरी करें कि वे इसको अन्य माध्यम से घरबन्धु से भी अपनी शिक्षा व अनुभव को दूसरों तक भी पहुँचावें। पाठक भी अपना समाचार छोटे रूप में भेजें।

घघरा—हर्ष को बात जनाई जाती है कि रांची पेरिस के अन्दर बड़ा घघरा २० घर की एक मण्डली है जो पूरे धर्म्म प्रदेश के अधीन था, उस का प्रचारक श्री गब्रीएल लकड़ा हैं उनके ही देख भाल में वहां एक नया गिर्जा बनाया जाकर तैयार है; मैं उनके साथ कई बार मुलाकात कर उनको अर्जी किया कि आप लोग कितने दिन जी०ई०एल० चर्च K. S. S. के बाहर रहेंगे, उन्होंने मुझे साफ शब्दों में कहा कि पादरी साहब गिर्जा घर बन चुकने के बाद हम पूरी मण्डली के साथ आप के रांची पेरिस में मिल जाएंगे बोल कर जवाब दिया और घर तैयार होने के बाद मुझे अपने मण्डली के साथ मिल कर अर्जी किये कि आप हमारे नये गिर्जा घर को संस्कार कर पूरे मण्डली को अपने सेवकाई में मिला लीजिये। मैं उनके अर्जी के अनुसार तारीख २२-१२-७४ को उनके नये गिर्जा घर को संस्कार कर पूरी मण्डली को रांची पेरिस के साथ मिला कर उन के सेवकाई का भार अपने ऊपर लिया और सेवकाई की जा रही है। प्रचारक श्री गब्रीएल लकड़ा ही वहां का प्रचारक मनोनित किये गये हैं पूरी मंडली २० घर की है बपतिस्मा पाये हुओं की संख्या १७० है दृढ़िकृत संख्या ६० हैं। पाठक गणों से मेरी अर्जी है इस मण्डली के लिये ईश्वर से प्रार्थना करें कि यह मण्डली अपने लुथेरान विश्वास में स्थिर रह सकें।

पादरी प्रेमोदय कुजूर
जी०ई०एल० चर्च, रांची पेरिश

समाचार देश विदेश

अदीस अबीबा इथियोपिया—श्री इमानुएल अब्राहाम, जो मेकाने येजु कलीसिया के प्रेसीडेन्ट हैं और हाइलेशेलासी के एक मंत्री भी थे, नजरबन्द किये थे और अब मुक्त कर दिये गये हैं।

फ्रेर्ने सोलटाइर फ्रान्स—अगले वार्ल्ड फेडेरेशन का सम्मेलन १९७७ ई० में

Gossner Mission

टान्जनियां में होने वाला है, अभी ही से कार्य क्रम व विषय की तैयारी आरम्भ हो गयी है

हेलजीन्की—प्रोफे० पावो कोर्टेकांगास (४४ वर्षीय), जो अभी एल०डब्ल्यु०एफ० के एक विभाग में सदस्य हैं कुओपियो डियोकीस फीनलैंड के विशप बनाये जायेंगे, उनका पदास्थापन १६वीं मार्च से है।

स्टोकहोल्म—पादियों को सभा की ओर से अर्जी है कि वे कल-कारखानों में काम करने के लिये तैयार हो जायं, आनेवाले विशप सभा में इस विषय पर फिर बातचीत होगी।

मियामि-फ्लोरिडा—हाइति के अनेक शरणार्थी अपना निवास स्थान पाये। उनको यू०एस०ए० में नागरिकता के प्रश्न पर समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

कोपेन्ह्रागेन—यहां डेनमार्क के कैथोलिक पुरोहितों की कमी अनुभव हो रहा है। अनेक पुरोहित सेवा निवृत चाहते हैं और उनके लिये नये पुरोहित खोजना कठिन हो गया है।

जेनेवा—क्यूबा के एंगलिकन मसीही मंडलो वहां के लूथरनों की सुधि एवं सहायता के लिये राजी और इच्छुक हैं।

"फैशन और स्टाईल"

Benjamin Topno

यदि फैशन शब्द का विश्लेषण किया जाय तो पता लगता है कि यह एक नवीन एवं उच्च उत्तेजना का प्रतीक है। इसे हम वर्त्तमान की स्वीकृत रीति कह सकते हैं। फैशन की गति ऊपर से नीचे की ओर होती है। यह सामाज के उच्च वर्ग से आरम्भ होकर मध्यमवर्ग; फिर मध्यमवर्ग से निम्न स्तर के लोगों में जाकर इसका अन्त होना देखा जाता है। उसके बाद फिर दूसरा फैशन शुरू हो जाता है और इसकी लहर में हर इन्सान बह जाता तथा अपनी चेतना शक्ति खो देता है। दूसरे जैसे करते हैं, हम भी उनका अनुसरण करते देखे जाते हैं। अगर हम वैसा न करें तो असभ्य, पिछड़े हुए जाति और अप्रगतिशील इन्सानों में हमारी गिनती होती है। इस तरह दूसरों की अनुकूलता और व्यक्तिगत विशेषताओं के कारण दो बिरोधी प्रवृतियों का सम्मेलन ही फैशन का पैराडाक्स है। अपनी शारीरिक, सामाजिक और आर्थिक अयोग्यताओं को छिपाने के लिये भी इन्सान फैशनेबल बनता है। इस तरह वह अपनी दुर्बलता और हीनता को छिपा कर सन्तोष प्राप्त करता है। कुरुप से कुरुप व्यक्ति भी अपने को अच्छे से अच्छे ढंग में पेश करना चाहता है भले ही वह काला-कलूटा और अंधा-लंगड़ा ही क्यों न हो। फिर, अगर कोई रूपवान है तो उसके लिये कुछ कहना ही नहीं। स्त्री हो या पुरुष, युवक हो या युवती दोनों के मस्तिष्क में एक विशेषता यही मिलती है कि एक दूसरे को अपनी ओर आकर्षित करें।

इस तरह "फैशन" के भागदौड़ में स्त्री, पुरुष और युवक युवतियों में एक "होड़" लगी है जिसमें सब भाग लेकर "हार जीत" का बाजी ले रहे हैं। मुझे ऐसे अनेकों बूढ़े और बूढ़ियों को देखने का अवसर मिला है कि वे बुढ़ापे में भी युवक-युवतियों से कम नहीं सजते। अपने बूढ़े पक्के बालों में खिजाब लगाना, काजल और सुरमा लगाना तो आम बात है। दाढ़ी मूँछ और बाल कटिंग तथा आधे गाल तक "कलम" रखना तो मानों शैलुन वालों को घाटा में डालना है। बेचारे शहर के सब शैलुन वाले भी परेशान हैं। इसका मनोवैज्ञानिक आधार एक ही हो सकता है, और वह है "काम वासना" को बढ़ावा देना। यही कारण है कि आज एक से एक नये फैशन को बढ़ौतरी मिल रहा है। किसी भी दफ्तरों

Gossner Mission

और सड़कों में देखेंगे; अनेकों "हिप्पी Hippi" चलते-फिरते हैं।

युवकों को देखिये; चुस्त पैन्ट-पजामा-जो सोलह आने "ड्रेन पाइप" कहा जा सकता है, पहनते हैं। ठीक उसी अनुपात में कम बांह वाला शर्ट, सीने परके बटन अवश्य ही टंके रहते हैं जिनसे इनकी चौड़ी छाती साफ - साफ दीख सकने में समर्थ हो। स्पष्टतया; युवक-युवतियाँ अपने नंगे अंगों द्वारा एक दूसरे के बीच आकर्षण पैदा करना चाहते हैं। मुझे लेख-लिखते अपनी लड़कपन की "करेया-लंगोट" पहनने का याद आता है कि उस वक्त कहीं मेरे साथी-गण अच्छे पोशाक में थे।

युवतियों की ओर नजर डालिये; तंग सलवर, फ्राक और लिबलेश चटकीले रंग की साड़ी और नाम मात्र के दुपट्टे। ये पोशाक इतने तंग सिलाये जाते हैं कि उन्हें उठना - बैठना और चलना-फिरना तक मुश्किल हो जाता है। ब्लाउज तो देखते ही पुरुष अपने दिलों को थाम लेते हैं। उसमें बाहें तो नंगे और पीठ पर फैशनेबुल बटन, फिर लम्बाई का तो कौन कहे ? साया में भी पैसा रखने का पाकेट देखकर सेठ-साहुकार भी परेशान हैं। साड़ियों के कोर, कोट और कमीज तथा चेस्टर - ब्रेस्टर के डिजाइन इत्यादि के लिये विज्ञापन दिये जाते हैं। ऐसी व्यवस्था तो व्यापारियों के लिये महत्व की होती है। कपड़े के व्यापारी और दर्जी ही फैशन को जन्म देते हैं।

फिर पोशाकों में भी प्रायः गाढ़े-चटकीले रंगों को ही प्रधानता दी जाती है जो मनोविज्ञान के अनुसार "रंगीन मिजाज Coloured Minded" का द्योतक है। आप किसी के वेशभूषा को देखकर उसके दिमाग, उसके आचरण तथा स्वभाव का अन्दाजा लगा सकते हैं। यूँ, जब तक एक दूसरे के प्रति आकर्षण पैदा नहीं हो जाता तब तक गाढ़े प्रेम की आशा नहीं की जा सकती है। इसी लिये युवक-युवति चटकीले और भड़कीले गाढ़े रंग की पोशाक पर जीवन बिताना चाहते हैं। मसीही लड़कियाँ काफी तादाद में पंजाबी, मद्रासी, बंगाली, मद्धैईया और मुसलमान आदि गैरमसीही पुरुषों के चक्कर में अपना मसीही जीवन पर कलंक लगाते दीख रही हैं। यह आज के युग का तकाजा है। अन्त में मुझे इतना ही कहना है कि फैशन या साज सृंगार सभी के लिये आवश्यक है किन्तु इस तरह भद्दे और नग्न रूप में प्रदर्शन न हो तो उत्तम है। आशा है कि चन्द ही दिनों के पश्चात् "मानवजाति" अपनी असली रूप (ORIGINAL) में पहुंच कर एक नयी दुनियाँ को आबाद करेंगे जिस तरह नूह के युग में हुई।

नई सभ्यता के नाम पर आज-कल कुछ भी बेजा नहीं माना जाता है। वैसे तो "आदम हवा" ही अपने निर्माता के जन्म-अधिकार के केन्द्र थे जहां मनुष्य का पाप में पड़ने का बयान पाते हैं। अगर मसीही जीवन में जीते हैं तो अवश्य ही इन पद स्थलों को पढ़ कर अपनी-अपनी फैशन-स्टाइल या सृंगार पर गौर करें। "यीशुसहाय"

देखिये :— उत्पति ३:२१, व्यवस्था २२:५, १ पतरस ३:१-४, मत्ती ६:३१-३२, लूका १२:२७-३४ १ तिमोथी २:८-१०।

गोस्नर एवंजेलिकल लूथेरान कलीसिया,

असम अंचल पचहत्तर वर्षीय हीरक जयंती।

स्थान — बैठाभंगा - दिनांक २०-२२ मार्च १९७५
देखो परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच है, प्र० वाक्य २१:३।

परमेश्वर को धन्यवाद, प्रशंसा देने का विषय है कि असम में गोस्नर कलीसिया का कार्यकाल सन् १९७५ में पचहत्तर वर्ष हो जायगा। इस पुण्य अवसर पर सारी गोस्नर कलीसिया के भाई-बहनों, तथा हमारे देश-विदेश के

Gossner Mission

मित्रों के लिये परमेश्वर को धन्यवाद देने तथा उद्धारकर्त्ता जीवते प्रभु यीशु मसीह की महिमा एवं उसकी गवाही देने का महान् अवसर होगा ।असम अंचल ने बैठाभंगा में हीरक जयंती मनाने कानिर्णय किया है । अत: पूरी कलीसिया के भाई-बहनों को जयंती में भाग लेने के लिये निमंत्रण दिया जाता है ।

निवेदक

पाद्री सी० एस० बी० होरो
अध्यक्ष
असम, अंचल तेजपूर

गेरसोन तिड़ू
सेक्रेटरी
जुबिलि रिसेपशन कमिटि, बैठाभंगा

धन्यवाद, आप का ग्राहक चन्दा [३१वीं जनवरी,, ७५ तक] मिला ।

1 Rev. H. Tutti Kuchinda
2 Mr. Mansidh Kandulna Tilaimal
3 ,, Niral Mundu Lomboi
4 ,, Isahak Bading Ghutbahar
5 ,, Bixal Bading, Delhi
6 ,, Philip Barjo Dhurwa
7 ,, Ruben Timung
8 ,, Kushal Aind Sini
9 ,, Arbindh Horo
10 ,, Premoday Toppo
11 ,, Theophil Lakra Jorar
12 ,, Boas Khalkho, Kulamunda
13 Cate. N. Dang, Zorabandh
14 ,, (HM Champi Dhurwa
15 Mr. Anandmasih Lugun, Lachragarh
16 Nk/Sub Mansidh Bhengra
17 Mr. Daud Kandulna, Dugdugia
18 ,, Santosh Barla, Banspani
19 ,, Nehemia Barla, Sukruhutu
20 ,, Dh. D. Topno, Kathartoli
21 ,, Arem Kullu, Sindri
22 Miss Idan Burh, Deubera
23 Rev. C J Tirkey Ranchi
24 ,, Itmon Guria Chaibasa
25 Mr. Abraham Kullu Gilaibahal
26 Shri Asaph Guria Bisrampur Gaon
27 Mr. P. Herenz Dibrugarh
28 ,, A Kandulna Tarajan
29 ,, B. Horo, Chakradharpur
30 ,, Jasman Horo, Kiriburu
31 ,, Philip Kongari, Kalunga
32 ,, Paulus Purti
33 ,, Christ E. Kandulna Sambalpur
34 ,, Johan Kerketta, Raghunathpur
35 Rev. M. P. Ekka Dubashri
36 Mr. Johan Surin Kutnia
37 ,, Jusaph Barla Nimadih
38 Cate S. M. Dungdung Golebahar
39 Rev. Patras Hemrom Mansiri
40 Mr. Stephan Dang Jhirkpani
41 ,, M. Ekka Kondra for 18
42 ,, Johan Kandulna Serampore
43 Cate. K. Jojo Sarhatoli
44 Mr. Michael Bakhla Bisrampur
45 ,, Rejan Horo Kabiradih
46 Shri Immanuel Minz Dibadih
47 Miss Susari Ekka Kulabera
48 ,, Mukta Lugun Ichinda
49 Rev. S. Dungdung Zorabandh
50 Mrs. F. Barla Kumhartoli Ranchi
51 Mr. K. Kongari Rourkela
52 ,, P. Kongari Karremunda
53 Cate. Patras D. Kongari Banko
54 Mr. M. P. Kujur Turidih
55 ,, M. D. Tete Sahpur
56 Juel Dang Sorda
57 Mr. Abraham Soy Kocha
58 Secretary BSI Ranchi
59 Rev. Daniel Lakra Chakradharpur
60 Mr. Junas Tirkey Kabir.

Gossner Mission

Serampore College Theology Department Serampore West Bengal

" SERAMPORE COLLEGE invites Applications from L. Th., B. Th. and Arts/ Science/ Commerce Graduate Students for admission into B.D. Course in 1975. 15th April, 1975 will be the last date for submission of Applications. Forms will be available from Rector's Office (Theology). For all enquiries in this regard, plaese write to the Principal, Serampore College, P.O Serampore, Dist. Hooghly (West-Bengal)."

M. Bage
Offg. Rector,
Theology Department

Seramproe College, Serampore, West Bengal
Department Of Theology
Admission To M·Th Courses.

Applications are invited for admission to Master of Theology (M.Th) Courses beginning on June 28, 1975 in Old Testament; New Testament and Church History. The requirement for admission will be Serampore B.D. (First or Second Class). Application Form and Prospectus are available from the Dean's Office. Application should reach the Dean, Theology Department, Serampore College, P.O. Serampore, Dist. Hooghly (West-Bengal), not later than March 31, 1975.

"मैं वही हूं"

यूहन्ना रचित सुसमाचार पर आधारित,
डी० पी० इफ्राईम 'बेबस'
'भोपाल म० प्र०'

हर प्यार को देखा है,
प्यार के तराजू में,
मगर सब बदल कर,
बन जाते हैं यादगार,
जीवन साथी भी नहीं,
दे सके आज तक साथ,
कोई धोखा देके बैठा है,
कोई बन गया काला लिबास,

मगर एक अंदरूनी,
जो दिखता नही बस,
महसूस होता है दिल में,
जो कहता है आ मेरे पास,
मैं दूंगा तुझे सच्चा प्यार,
कर कबूल अपने गुनाह,
फिर तौबा कर और हो पाक,
बस एक वही है,
जो कहता है "मैं वही हूँ" ॥

Gossner Mission

Statement About Ownership and the Particulars

Form IV

[SEE RULE–8]

1	Place of Publication	—	G. E. L. Church, Ranchi.
2	Period of Publication	—	Monthly
3	Printer's Name	—	Shri Bhusan Khess.
	Nationality	—	INDIAN
	Address	—	G. E. L. Church Press, Ranchi, Bihar.
4	Publisher's Name	—	Rev. J. Topno.*
	Nationality	—	INDIAN
	Address	—	G. E. L. Church, Ranchi.
5	Editor's Name	—	Rev. J. Topno.
	Nationality	—	INDIAN.
	Address	—	G. E. L. Church, Ranchi
6	Name and address of individuals who own the News papers etc.		

I, Rev. C. S. R. Topno, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/- **C. S. R. Topno**

Date Feb. 4, 1975

Associate Editor for the Publisher
G. E. L. Church, Gharbandhu

रजिस्टर्ड नं. आर. एन. सी. ४
वर्ष—६५ राँची, १९७५, संख्या नं.—

Edited and Published by Rev. J. Topno, Pramukh Adhyaksh, for and on behalf of the G. E. L. Church and printed at G. E. L. Church Press, Main Road Ranchi/Bihar.

*टिप्पणी — १९७४ ई० के फरवरी अंक के सूचनानुसार रेभ० जे० तोपनो प्रमुख न रहने पर घरबन्धु के सम्पादक और प्रकाशक भी न रहे, परन्तु व्यवहारिक कठिनाइयों के कारण अब तक नाम नहीं बदला गया अतः यहाँ फार्म में उन्हीं का नाम है। नाम बदले जाने पर यह फार्म फिर यहाँ प्रकाशित होगा।

Edited and published by Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G.E.L. Church and Printed at G. E. L. Church Press, Main Road, Ranchi / Bihar.

Gossner Mission

1-20-10

EINGEGANGEN
22. APR. 1975
Erledigt.....

जनबन्धु

रजिस्टर्ड नं० आर० एन०सी०.४

वार्षिक मूल्य ५ रु०

वर्ष — ६४ रांची, नवम्बर १९७४ संख्या नं० — ११

यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ
घटी न होगी। भ० स० २३:१

गोस्सनर चर्च को मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

Editor & Publisher

Pramukh Adhyaksh,

Associate Editor

Rev. C. S. R. Topno

Editorial Committee

Rev. M. Tete
Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय		—	३
उपदेश की तैयारी	रेभ टेटे	—	४
गोस्सनर एवंजेलिकल	नजर में	—	५
मरचा इलाका जुबिली		—	८
कलीसिया समाचार		—	११
मिशन पर्व		—	१२
इंजिल		—	१३
बैबल की तीन झलक		—	१४
धर्मशास्त्र से प्रश्न उत्तर		—	१५
पश्चाताप के आंसू		—	१५
आवश्यक सूचना		—	१७
धन्यवाद आप का ग्राहक चन्दा मिला		—	१६
आजादी के राह पर		—	१६
आप गरीब क्यों हैं ?		—	२०

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणतः १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य पांच रूपये हैं।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये पते पर ही भेजें। एसोसिऐट एडीटर, घरबन्धु; जी० ई० एल० चर्च [के० एस० एस० ऑफिस], राँची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता० तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इसमें बांयी ओर 1½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेजें

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रखनी चाहिये, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगा।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालू की जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १०-ता० के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवतः ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छपे जाते हैं; ग्राहक चन्दा के बाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवत : डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित कुछ लिखा लें।

Gossner Mission

सम्पादकीय

"महत्व"

यह प्रजातंत्र और गणतंत्र का युग है, पर फिर भी तानाशाहो का भी कम बोल बाला नहीं? मसीही विश्वास ने एक एक व्यक्ति के मूल्य को उसके विभिन्न जवाबदेहियों के साथ विशेष महत्व दिया है। पर इस महत्व के कारण व्यक्ति विशेष अपना भाव बढ़ा देता है और दूसरे के महत्व को न केवल इनकार करता है पर विरोध भी करता है, चाहे वह बात या काम या लेख जिस रूप में भी क्यों न हो!

इसी युग में अनेक आन्दोलन, संगठन, एवं संस्था परहित केन्द्रित दृष्टिकोण से संस्थापित है, पर बहुत कम हैं जो दूसरे को उतना महत्व देते हैं जितना अपने को। अधिकांश लोगों की दृष्टि में वही दीखता है जो दूसरा नहीं करता है या भूल करता है, अत. अधिकांश उसी को दर्शाता है कि उसने यह व वह नहीं किया, गलत किया! पर ऐसे ही व्यक्ति को वही काम और वही पद दे दिया जाय वह तो औरों से भी गया गुजरा है! आज हमारे लिये आवश्यक है कि यदि दूसरा नहीं कर सकता है, या गलत करता है, तो मैं अपने ही उस दिये गये स्थान से एक महत्वपूर्ण व्यक्ति होकर क्या कर सकता हूँ, या क्या करूंगा! अत: 'महत्व' को सिद्ध करने के लिये आवश्यक है कि प्रत्येक काम से अपने स्थान, पेशे और जीवन में वह करे जो दूसरों से आशा करता है, जहां जिसको जितनी जवाबदेही दी गयी है, उसको निबाह सकें, वही महत्वपूर्ण है. दूसरे के महत्व का इनकार कर या दूसरे के महत्व को विरोध कर अपना महत्व कैसे बढ़ा सकते हैं! अनेक व्यक्ति अपने कामों में असफल हो जाते हैं, क्योंकि वे अपने महत्व को जो मसीह में दिया गया है समझने नहीं पाते हैं! इसी प्रकार दूसरे की शिकायत कर भी यश नही पा सकते हैं, पर यश इसी में सम्भव है कि अपने दिये गये कर्त्तव्य को निबाहें! जब अपने स्थान में अपने दायरे में अपना छोटा कर्त्तव्य भी निबाह नहीं सकते हैं, तो दूसरों को कर्त्तव्य निबाहने की नेक सलाह देकर क्या यश प्राप्त कर सकते हैं-या अपना महत्व बढ़ा सकते हैं।

मसीह ने अपना कर्त्तव्य पालन कर हमारा महत्व बढ़ा दिया है, अत: हमारे लिये भी यही आवश्यक है कि हम अपना कर्त्तव्य पालन कर औरों का महत्व बढ़ा सकते हैं और मसीह की महिमा कर सकते हैं।

घरबन्धु, नवम्बर १९७४

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

मार्टिन टेटे

त्रिनितातिस के पीछे २१ वां एतवार

रोमी ३ २१-२८

पावल प्रेरित ईश्वर के अनुग्रह को धर्म्मी ठहराव का आधार मानते हैं। धर्म्मी ठहराव के लिये ईश्वर के अनुग्रह की आवश्यकता है और मनुष्य को धर्म्मी ठहराव के लिये विश्वास करना है।

"धर्म्मी ठहराव"

क -हम ईश्वर के अनुग्रह से धर्म्मी ठहराये जाते हैं:- हम जब हृदय और सच्चाई से विश्वास करते हैं तब धर्म्मी ठहराये जाते हैं। (रोमी ५:१; ४:५) हमारा पाप क्षमा किया जाता है और यीशु की धार्म्मिकता हमारी हो जाती है (फिलि० ३ ९) जब हम ख्रिस्त पर विश्वास करते हैं तब ख्रिस्त का दुःख उठाना मानो हमारा दुःख उठाना हो जाता है। अर्थात यीशु पर विश्वास करने के द्वारा हम उसके संग दुःख उठाते हैं। (२ कुरि० ५:२१; रोमी० ८:१) क्योंकि ख्रिस्त हमारा एवजी था। परमेश्वर ख्रिस्त के कारण हम को धर्म्मी ठहराता है।

ख—हम विश्वास द्वारा धार्म्मिकता प्राप्त करते हैं.—अपने परिश्रम से नहीं परन्तु विश्वास से धर्म्मी ठहराये जाते हैं। (२८)

ग—हमारा काम हमको धर्म्मी नहीं ठहरा सकता है (२०) अगर परमेश्वर हमारे कामों पर दृष्टि डाले तो हम दोषी ठहरेंगे। क्योंकि पापी हैं (रोमी ७:१८-२३, गलाती ३:२२) बचने के लिये हमें पूर्ण धार्म्मिकता की आवश्यकता है और पूर्ण धार्म्मिकता केवल ख्रिस्त में है। विश्वास के द्वारा ख्रिस्त की धार्म्मिकता हमारी हो जाती है।

प्रभु यीशु में ईश्वर हमारे लिये सब कुछ कर दिया है। हम यीशु पर विश्वास करें और विश्वास के हाथों से परमेश्वर के दया दान को ग्रहण करें।

त्रिनितातिस के पीछे २२ वां एतवार

फिलि १:३-११

यह धन्यवाद की चिट्ठी है। पावल प्रेरित फिलिप्पी मण्डली के मसीहियों को धन्यवाद देता है। पावल के लिये ईश्वर को धन्यवाद देने का विषय फिलिप्पी मण्डली था।

१ क्या हम पावल के समान दूसरों के लिये धन्यवादी है? मसीही माता, पिता, मसीही मित्रगण, पुरोहितगण, सण्डे स्कूल के शिक्षक इत्यादि हमारे धन्यवाद के विषय हैं। क्या आप ने कभी इनके लिये ईश्वर को धन्यवाद दिया है? उन्हों ने अपनी बत्ती को पैमाने के नीचे नहीं रखा। वे आप के लिये वे ईश्वर की ओर से आशीष हैं। ईश्वर की सबसे बड़ी आशीष तो यीशु है। हमारे लिये वे ईश्वर के बड़े दान हैं। उनके द्वारा यीशु हमारे जीवन में लाया जाता है! क्या आप जब धर्म्म गुरु को स्मरण करते हैं तब ईश्वर को धन्यवाद देते हैं? प्रभु कहता है कि धन्यवाद के बलिदान का चढ़ानेवाला मेरी महिमा करता है। (भजन ५०:२३)

२ क्या दूसरे लोग हमारे लिये ईश्वर को धन्यवाद देते हैं? क्या हम दूसरों के लिये आशीष का कारण हैं? क्या आप के माता पिता ईश्वर को धन्यवाद देते हैं? क्या आप का पुरोहित, आप के शिक्षक, आप के मित्र, आप के बच्चे इत्यादि आप के लिये ईश्वर को धन्यवाद देते हैं? क्या कभी ईश्वर ने आप को किसी के पास भेजा है? क्या आप आवश्यकता के समय किसी की सहायता की है? ईश्वर की दया से प्रत्येक मसीही इस प्रकार का जन हो कि लोग कह सकें—मैं जब जब तुम्हें स्मरण करता हूं तब तब अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं।

त्रिनितातिस के पीछे २३ वां एतवार

फिलि० ३:१७-२१

पावल प्रेरित जैसा उपदेश देता था वैसा ही जीवन व्यतीत करता था। इसलिये वह लोगों से कह सकता था—'मेरी सी चाल चलो" वह नहीं कहता है—"मेरी शिक्षा का पालन करो।" वह इस सम्बन्ध में ३:७-१४ और १ कुरि० ११:१ की बातों को भी स्मरण करने का आदेश देता है।

"मेरी सी चाल चलो"

क—मेरा अनुकरण करो—मैं मसीह का स्थान तो नहीं लेता हूं। आत्मिक अगुवे कलीसिया के लिए दान हैं। वे प्रभु यीशु का स्थान नहीं ले सकते हैं। मैं ख्रिस्त का स्थान नहीं लेता हूं। मेरे विश्वास और जीवन का अनुकरण करो।

घरबन्धु, नवम्बर १९७४

Gossner Mission

ख—ख्रिस्त के क्रूश के शत्रु सदृश्य आचरण मत रखो :—

१ क्योंकि उनका अन्त विनाश है। लोग मसीह को जब छोड़ देते हैं तब उनका विनाश हो जाता है (२ थि० १. ७-९) जौभी कि ईश्वर किसी का विनाश नहीं चाहता है (यहेज १८.२३)

२ उनका ईश्वर पेट है—जिसका नया जन्म नहीं हुआ है वह केवल शारीरिक बातों की चिन्ता में रहता है। परन्तु नया जन्म पाया हुआ जन ईश्वर का मंदिर है। वह यीशु की सेवा के लिये पवित्र किया गया है (१ कुरि० ६:१९+२०; ९:२४-२७)

३ अपनी लज्जा की बातों पर घमण्ड करते हैं—अपनी निर्लज्जता को गौरव की बात मानते हैं। (रोमी ६.१६-१८)

४ पृथ्वी की वस्तुओं पर मन लगाये रहते हैं—वे पैसा, धन, संसार के सुख बिलास में मन लगाते हैं। वे ईश्वर को छोड़ देते हैं (यिर्म० २:१३)

ग—यीशु के आगमन की प्रतीक्षा करो :—

१ क्योंकि हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है। हम यहां यात्री हैं। यीशु हमें स्वर्ग पर उठा लेगा।

२ यीशु हमारी दीनहीन देह को अपनी महिमा का देह बना देगा। हम यीशु के पुनरागमन पर बदल जावेंगे।

पावल के प्रचार में हम यीशु के विषय सुनते हैं और उसके आचरण में यीशु की छाप देखते हैं। अतः हम उसके आचरण का अनुकरण करें।

त्रिनितातिस के पीछे २४ वां एतवार

१ थि० ४:१३-१८

हमारे जीवन में एक प्रश्न बरावर उठता है। मृतकों के विषय में हम बार बार प्रश्न पूछते हैं और शोक भी करते हैं। पावल प्रेरित इस सम्बन्ध में कहते हैं—" यीशु मर गया और जी उठा, जितने लोग यीशु में सो गये हैं वे यीशु के साथ पुरुत्थान के दिन प्रगट होंगे।

"मृतकों की स्थिति"

(क) मसीह में मरने वाले जी उठेंगे (१६) परमेश्वर आप ही उन्हें जिला उठावेगा।

(ख) प्रभु के तुनरागमन पर परमेश्वर आप ही मसीह में सोये हुओं को मसीह के साथ ले आएगा (१४)।

(ग) जीवित लोग बादलों पर उठा लिये जावेंगे (१७) वे प्रभु के संग सदा रहने के लिये उठा लिये जावेंगे।

ख्रिस्त विश्वासियों के लिये यीशु के संग पुनरुत्थान है। हम इन बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करें॥

!!! गोस्सनर एवंजेलिकल लूथेरान कलीसिया एक नजर में !!!

हमारे कलीसिया का नाम गोस्सनर एवंजेलिकल लूथेरान कलीसिया है। एवंजेलिकल का अर्थ ईश्वर के वचन की नेव पर स्थापित की हुई।

हम त्रिएक परमेश्वर पर विश्वास करते हैं। एक ही परमेश्वर है। उसमें तीन व्यक्ति हैं। अर्थात पिता, पुत्र और पवित्रात्मा। पिता सनातन से है और उसने सनातन से पुत्र को अपने स्वभाव से उत्पन्न किया है। पुत्र सनातन से उत्पन्न हुआ है। पवित्रात्मा सनातन से पिता और पुत्र से निकलता है पिता ईश्वर है; पुत्र ईश्वर है; और पवित्र-आत्मा भी ईश्वर है। तीनों ईश्वर हैं। तीनों मिलकर त्रिएक ईश्वर है। तीनों में सम्बंध है। तीनों में १×१×१=१ का सम्बन्ध है। १+१+१=३ का नहीं। व्यवस्था विवरण ६:४ में लिखा हुआ है " हे इस्राएल सुन! यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है।" यीशु ने कहा "मैं और पिता एक है" (यूहन्ना १०:३१); "मैं पिता में और पिता मुझ में है" - (यूहन्ना १४:११)। परमेश्वर ने आप ही यीशु मसीह के बपतिस्मा के समय प्रगट किया कि ईश्वर में तीन व्यक्ति हैं पढ़िये मत्ती ३:१६-१७। फिर यीशु मसीह मत्ती १९-२० में आज्ञा देता है कि "तुम

Gossner Mission

जाके सब देश के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता, पुत्र, और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो।"

इन बातों को समझने के लिए एक उदाहरण लें— समुद्र, पानी का अथाह भण्डार है। सूर्य के ताप से पानी भाप बनकर ऊपर आकाश में उठ जाता है और ठंढक पाकर पानी के बूदों में बदल जाता है और हम पानी के बूदों के उस समूह को बादल कहते हैं। वही बादल बूदों के रूप में पृथ्वी पर बरसने के बाद फिर समुद्र में मिल जाता है। यहाँ हम एक चीज (पानी को भाप के रूप में, बादल के रूप में और समुद्र के रूप में पाते हैं। पर तीनों एक ही वस्तु है। तीन रूप होते हुए भी एक ही चीज है। पर तीनों अलग-अलग रूप में प्रगट होते हैं। इसी तरह परमेश्वर में तीन व्यक्ति हैं। पर तीनों मिलकर एक ही ईश्वर है।

हमने देखा कि पिता-ईश्वर है, पुत्र ईश्वर है और पवित्रात्मा भी ईश्वर है। ईश्वर हमारे बीच में वचन के रूप में है, हम ईश्वर को वचन से अलग नहीं कर सकते हैं। या यों कहें कि वचन ईश्वर है। लिखा हुआ है— "आदि में वचन था, वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।.....वचन देहधारी हुआ" (यूहन्ना १:१-३+१४)।

हमारे एवंजेलिकल कलीसिया का दावा है कि हमारी कलीसिया ईश्वर के वचन की नेव पर स्थापित है। और वचन स्वंय ईश्वर है। चूंकि हम वचन को ईश्वर से अलग नहीं कर सकते हैं। जब पतरस ने यीशु से कहा कि "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है" (मत्ती १६:१७) तब योशु ने पतरस से, पतरस के उत्तर को स्वीकार करते हुए कहा कि "मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है यह बात तुझ पर प्रगट की है" ("कि मैं जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह हूं") और यीशु अपनी ओर इंगित करते हुए कहा कि "मैं इस पत्थर (यीशु मसीह) पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे (मत्ती १६:१८। वह जीवता पत्थर, ठेस और ठोकर लगने की चट्टान स्वंय यीशु मसीह है (यशायाह ८:१४, रोमी ९:३३) वह वचन में है या वचन स्वंय यीशु मसीह है। तो हमारी कलीसिया मसीह रूपी चट्टान की नेव पर स्थापित है। जिस में अधोलोक के फाटक प्रबल न होंगे।

कल्पना करें कि कलीसिया जीवित पत्थरों से बना एक मंदिर है और है भी—(इफिसी २:२२) तो कलीसिया रूपी मंदिर का नेव वचन रूपी चट्टान (अर्थात यीशु मसीह) पर खोदा गया है और उसी नेव पर जीवित पत्थर रूपी यीशु ख्रीस्त कोने के सिरे के पत्थर के रूप में सर्वप्रथम रखा गया है। बाकी उस (मसीह) पर विश्वास करनेवाले विश्वासी मानो जीवित पत्थर हैं और वे विश्वास रूपी गारा से कोने के सिरे के जीवित पत्थर मसीह से जोड़ते गए हैं और इस तरह कलीसिया या परमेश्वर का मंदिर बनी है या बनते जा रही है (१ पतरस २:४-५) इस तरह हमारी कलीसिया ईश्वर के वचन (यीशु मसीह) की नेव पर स्थापित की गई है। जिसमें अधोलोक के फाटक प्रबल न होंगे।

यों हमारी कलीसियाओं के विरूद्ध में अन्य कुछ कलीसियाओं की ओर से कई तरह की निन्दा की बातें कभी-कभी सुनने में आती हैं। लोग कई तरह के आरोप लगाते हैं। पर ये सभी आरोप निराधार मालूम पड़ते हैं जैसे :—

(१) कुछ लोग बालक बपतिस्मा के पक्ष में नहीं हैं। उनका कहना है कि नन्हें बालक-बालिका विश्वास नहीं कर सकते हैं इसलिए इन्हें बपतिस्मा नहीं देना चाहिए क्योंकि लिखा है "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जायगा (मार्क १६:१६)।

पर उपरोक्त दलील का खण्डन इस प्रकार किया जाता है :—

(क) धर्म पुस्तक में कहीं नहीं लिखा हुआ है कि किस उम्र में बपतिस्मा देना चाहिए।

(ख) मत्ती ३:३ के अनुसार बिना बपतिस्मा के कोई स्वर्ग राज्य नहीं देखेगा। यदि कोई बालक बिना बपतिस्मा के मर जाय तो इस वचन के अनुसार वह बालक स्वर्ग का राज्य नहीं पहुंच सकेगा।

Gossner Mission

(ग) यीशु ने मित्रों के विश्वास के कारण अर्धांगी के पापों को क्षमा किया और उसे चंगा किया (मरकुस २:१-८)। यीशु ने सुबेदार के विश्वास के कारण उसके दास को चंगा किया (मत्ती ८:५-१३)। कनानी स्त्री के विश्वास के कारण यीशु ने उसकी पुत्री में से दुष्टात्मा को निकाल दिया (मत्ती १५:२१-२८)। इस तरह हम देखते हैं कि किसी दूसरे के विश्वास से भी किसी को आषीश मिलती है। तो नन्हें बालकों को भी जो विश्वास नहीं कर सकते हैं माता-पिता और धर्म्म माता-पिता के विश्वास से स्वर्गीय आषीश मिलती है इसलिए बालक स्नान बुरा नहीं है।

(२) कुछ लोग पुरोहित के शादी व्याह को अनुचित बताते हैं। उनका कहना है कि पुरोहित को शादी नहीं करना चाहिए।

पर धर्म्म शास्त्र में कहीं नहीं लिखा हुआ है कि पुरोहितों को शादी नहीं करना चाहिए। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को जोड़ा-जोड़ी बनाकर फूलने, फलने और पृथ्वी पर भर जाने की आषीश देकर यह प्रगट कर दिया है कि मनुष्य को शादी करना चाहिए (उत्पति १:२८)। पढ़िये :— (सभोपदेश ४:९, मत्ती १९:४-६, १ कुरिन्थि ७:२-१०)।

(३) कुछ लोग रविवार को नहीं पर शनिवार को विश्रामवार या सब्त मानने पर जोर देते हैं। पर पढ़िये प्रभु का वचन इस विषय पर क्या कहता है—मार्क २:२७-२८, रोमी १४:५-६, कुलुस्सियों २:१६।

(४) कुछ कलीसिया के लोग दूसरी कलीसिया से आये हुए जनों को दोबारा बपतिस्मा देते हैं। जब कोई जन यीशु मसीह के आज्ञानुसार पिता, पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा (स्नान) पाता है तो उसे पवित्रात्मा का दान मिल जाता है। ऐसी स्थिति में जब दोबारा बपतिस्मा दिया जाता है तो प्रथम बपतिस्मा में मिला पवित्रात्मा का तिरस्कार किया जाता है। निन्दा किया जाता है इस तरह पवित्रात्मा का निन्दा करना सबसे बड़ा पाप है जो कभी क्षमा नहीं किया जा सकता है (पढ़िये मत्ती १२:३१-३२)। पर हमारे कलीसिया में ऐसा दोबारा बपतिस्मा नहीं दिया जाता है! यीशु ने कहा···"जो नहा चुका है उसे·····और धोने की (स्नान लेने की) आवश्यकता नहीं" (यूहन्ना १३:१०) अर्थात दोबारा बपतिस्मा का प्रयोजन नहीं है।

(५) कुछ कलोसिया के लोग सूअर, खरहा, शापान आदि जानवर, चील शाही, गरूड़, धनेश, चमगोदड़, बगुला आदि पंक्षियों के खाने से मना करते हैं चूंकि लोग समझते हैं कि इनको खाने से (पुराने नियम के अनुसार) अशुद्ध होते हैं।

पर वचन (यीशु) कहता है— "जो मुँह में जाता है वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता पर जो मुँह से निकलता है वही मनुष्य को अशुद्ध करता है (मत्ती १५:११) फिर पढ़िये १ तीमुथियुस ४:१-५, कुलुस्सियों २:१६-१७)।

(६) कुछ कलीसिया के लोग पुरानी एवं स्वनिर्मित विधियों का अनुशरण करते हैं। मरियम को और संतो को मानते हैं जो वचन के विरूद्ध है। (पढ़िये इफिसी २:१४-१५, कुलुस्सियों २:१४+१६+२०-२२)। पर हमारे कलीसिया में पुराने एवं मनुष्यकृत विधियों का अनुशरण नहीं किया जाता है। प्रभु यीशु खीस्त द्वारा ठहराये (बताये) नियमों को ही माना जाता है (अनुशरण किया जाता है) प्रभुभोज में रोटी दी जाती है और दाखरस पिलाया जाता है जैसा कि प्रभु यीशु खीष्ट ने आज्ञा दी है। चूँकि ऐसा न करना प्रभु यीशु खीष्ट की आज्ञा का उलंघन करना है। ऐसी और भी कई आरोपें हमारे कलीसिया के विरूद्ध दी जाती है पर वे सभी थोथी मालूम पड़ती हैं।

उपरोक्त विश्लेषणों से आप को हमारे गोस्सनर एवंजेलिकल लूथेरान कलीसिया की श्रेष्ठता एवं सत्यता की कुछ झलक अवश्य मिल गई होगी। इसी श्रेष्ठता एवं सत्यता को हमारे पुरखों ने परख लिया था और— संकटकालीन स्थिति में होते हुए भी इस कलीसिया को नहीं छोड़ा। वे इसी कलीसिया में जीने मरने को वचन बद्ध हो गए। और १९१९ ई० के १०वीं जुलाई को वे इस कलीसिया के संचालन का कठिन एवं पूर्ण भार अपने ऊपर उठा लिया। (ओटोनोमी ले लिए)। आज इस कलीसिया को संभालने, चलाने का भार प्रभु ने इस कलीसिया के एक-एक भाई-बहन, बूढ़े-बूढ़ियों एवं बच्चे-बच्चियों को सौंपा है। अतः इस कलीसिया के सफल संचालन, उन्नति आदि के बारे में चिन्ता करना, इस कलीसिया की उन्नति में तन, मन एवं धन लगाना इस कलीसिया के प्रत्येक जन का परम पुनीत कर्तव्य है।

प्रभुदयाल कन्डुलना
मनोहरपुर मण्डली, सिंहभूम।

Gossner Mission

जो० ई० एल० चर्च मरचा इलाका

शत् वर्षीय जुबिली

मरचा दिनांक २९-५-१९७४ ई०

चार सालों से मरचा में शत् वर्षीय जुबिली मनाने की चर्चा हो रही थी। पाद्री जुनुल तोपनो ने सर्व प्रथम मरचा पेरिश स्तर में आकर भाई बहनों को अच्छा सुझाव समझौता दिया। मरचा इलाका ने इस बिषय को पूरी तौर से अपने हाथ में लिया। १९७१ में ही मरचा इलाका में जुबिली कमिटि का निर्माण हुआ। प्रथम बार कमिटि की बैठक में निर्णय लिया गया कि "इलाका जुबिली" मनायी जाए इसी ध्येय से काम शुरु हुआ। कमिटि ने जुबिली की सफलता के निमित कई संकल्पों को पारित किया। उसी संकल्प के-अनुसार मरचा और चुरदाग पेरिशों में काम जारी किया गया।

इलाका सभाओं जुबिली क़मिटि द्वारा निर्णय किया गया कि २९-५-१९७४ को इलाका शत् वर्षीय जुबिली मनायी जाए। निशान रखा कि (१) जुबिली स्मरण पत्थर खड़ा किया जाए, जिसमे पहला मिश्नरी. पहला क्रिस्तान, पहला पाद्री तथा स्थापन की तिथि लिखी जाए। (२) गिरजा घर मरम्मत किया जाए। (३) गिरजा घर का घेरा हो (४) एक वेटिंग रुम बनाया जाए (५) हाते एवं हाई स्कूल घरों का मरम्मत हो। इन्ही निशानों को रख कर १९७१ से जुबिली का कार्य्य कर्म शुरु हुआ। आखिर वह दिन जिसकी वाट हम जोह रहे थे पहुँच ही गया २९ माई १९७४ बुद्धवार को बड़े धूम-धाम के साथ मरचा इलाका शत्वर्षीय जुबिली मनाया गया।

२९ मई १९७४ वुद्धवार पहली बेला ८·३०-९-३० प्रोशेसन सर्व प्रथम इस समय भी अतिथियों का स्वागत हुआ। अतिथियों में आदरनीय पाद्री डा० निर्मल मिंज, पाद्रो डा० एम बागे, पाद्री जुनुल तोपनो, पाद्रो एन भुईयां एवं पाद्री पी० ड़ी० सोरेंग भी पहली बेला के कार्य्य कर्म में उपस्थित रहे। डाईरेक्टर पाद्री पौल सिंह और श्री एन० ई० होरो भी दूसरी बेला के कार्य में भाग लिया। समय की कमी से प्रोशेसन पाद्री के निवास स्थान से हाई-स्कूल तक गया और सभा स्थल में नाचते गान भजन करते लौट आया।

सभापति—कन्डिदात पी० तोपनो

९.३०—९.४५ जुबिली स्मरण पत्थर का उदघाटन मान्यवर पाद्री जे० तोपनो द्वारा हुआ। दुरंग-पुथी ८१ गाया गया, वचन में से यहोशू ४:५-७ पद पढ़ा गया तथा वचन पर सुन्दर उपदेश दिया गया। पाद्री जे० तोपनो ने कहा कि इस्राईली लोग किनान की ओर बढ़े ईश्वर ने साथ रह कर अदभुत रीति से यर्दन नदी पार किया। इसीलिए गिलगाल में उन्होंने ईश्वर की दया को स्मरण के लिये बारह गोट्टी के नाम से पत्थर गाड़ा।

आज मरचा इलाका अपनी सौ वर्षीय जुबिली मना रहा है। इस मरचा इलाका में बोया हुआ बीज का फल दिखाई दे रहा है। हमारे पुरखों ने योशु नाम का प्रचार किया जिसका फल आज हम देख रहे हैं। क्या यह हमारे लिए आनन्द की बात नहीं है? अत: इस स्मरण के लिए ईश्वर सौ वर्षों से हमारे साथ है। उसकी दया हमारे साथ है। अत: हम एक जुबिली पत्थर खड़ा कर रहे हैं। हम सच्चे विश्वास में दृढ़ रहने के लिए ठानें, ताकि अन्य लोग भी ज्योति में आवें और यीशु मसीह को अपना मुक्तिदाता कर के पहिचाने और ग्रहण करें।

आगे हम नये तरीके से काम करें ताकि यह मरचा इलाका और ही फूले-फले। अन्त में उन्होंने त्रिएक परमेश्वर पिता,पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से स्मरण पत्थर का संस्कार किया। दुरंग-पुथी ६४८ गाया गया एवं छोटी प्रार्थना सहित अपना भाषण अन्त किया।

९.४५—१० उपासना श्रीमती ग्लोरिया तोपनो द्वारा हुई सा० वा० ७ एवं दु० पु० ६३५ गाते हुए सिरनी बटोरा

Gossner Mission

गया तथा भ० स० ९६:१-१० पढ़ कर प्रार्थना हुई। तत्पश्चात् जुबिली में उपस्थित सभी अतिथियों को श्री जोन सुलेमान तोपनो द्वारा हार्दिक स्वागत एवं धन्यवाद दिया गया।

१०-७-११-२५ गिरजा आराधना हुई। पाद्री एन० भुईयाँ द्वारा दु० पु० ६५२ को गाते हुए गिरजा आराधना आरम्भ हुआ। डा० एन० मिंज ने इब्रानी १२:१५-२४ पद पर सुन्दर उपदेश दिया। उन्होंने हिन्दी से उपदेश दिया जिसका अनुवाद डा० एम बागे ने मुन्डारी में किया। डाक्टर मिंज ने कहा कि बचन कई विशेष बातें है परन्तु आज मैं इस सौ वर्षीय जुबिली में एक ही विशेष बात को बतलाने चाहता हूं, वह है क्रूश का चिन्ह जिसको इस स्मरण पत्थर पर भी देखते हैं। यह तो प्रभु यीशु के खून का चिन्ह है। यह ऐसा चिन्ह है, जो पापों की क्षमा को दर्शाता है। इसी दया से मरचा इलाका एवं समस्त कलीसिया जीवित है। अत: हम स्मरण करें की हम सिनाई पर्वत के पास नहीं पर सियोन पर्वत के पास पहुँच गये हैं। जहाँ दया की बात हैं, यह स्मरण पत्थर दया का चिन्ह है। हम ईश्वर से प्रार्थना करें कि मरचा इलाका के एक एक भाई ओ बहन को अपनी दया का विश्वास दृढ़ावें और उस विश्वास से मरचा इलाका बढ़ती जावे।

उपदेश के उपरान्त दो क्रिस्तान बच्चों और सात धर्म खोजकों का पवित्र बपतिस्मा पाद्री एन० भुईयाँ और डा० एन मिंज द्वारा हुआ। इसी सिलसिले गिरजा आराधना के बाद १० मिनट का अवकाश दिया गया। तथा प्रभु भोज के लिये घंटी बजी मरचा क्रिस्त गिरजे में पवित्र प्रभु भोज का अनुष्ठान पाद्री एन० भुईयाँ पाद्री डा० एम बागे पाद्री डा० एन मिंज तथा पाद्री जे० तोपनो द्वारा किया गया। पवित्र प्रभु भोज में कुल २२० भाई बहनों ने भाग लिया। इस प्रकार १२-४ को पहलो वेला का कार्य-क्रम समाप्त हुआ।

दुसरी बेला—

सभापति श्री जुसफ कोनगाड़ी सचिव श्री जुएल भुईयाँ। उपासना—पाद्री के० डी० केरकेट्टा द्वारा सा० बा० २६१ को गाकर भ० स० ९५:१-५ पद पढ़ा गया ओ प्रार्थना साथ कार्य क्रम शुरु हुआ पाद्री सा० सुरिन मरचा इलाका चेयरमेन द्वारा सभा में उपस्थित सभी सज्जनों को हार्दिक स्वागत एवं धन्यवाद दिया गया। सभा में लगभाग पांच हजार की जमघट थी।

३-५-६-४५—प्रोग्राम के अनुसार श्री जोन सुलेमान तोपनो, डा०एम बागे, पाद्री जे० तोपनो, पाद्री एन० भुईयाँ, डा० पाद्री एन० मिंज, डा० पाद्री पो० सिंह और श्री एन० ई० होरो सभा के प्रमुख प्रवक्ता थे। सभा में पाद्री पी० डी० सोरेंग भी उपस्थित थे, उनको भी पाठ दिया गया। भाषण के बीच ही एच० एफ० बरुता साहब का जर्मनी से भेजा हुआ शुभ संन्देश जुबिली सचिव श्री जोन सुलेमान तोपनो द्वारा पढ़ के सुनाया गया। शुभ संन्देश २ कोरिन्थ १:१ २० पद पढ़ दिया गया। तथा बचन को पढ़ कर ग्रहण किया गया। इस के प्रति जर्मन के भाई बहनों को धन्यबाद दिया गया। तथा पूरी सभा उठ कर बरुता साहब को यीशु सहाय किया।

प्रवक्ताओं का सुन्दर तथा प्रभावशाली बचन जुबिली के अवसर पर जो दिया संक्षेप से लिख देना ही अच्छा समझता हूँ।

(१) मरचा इलाका का संक्षिप्त इतिहास – श्री जोन सुलेमान तोपनो सचिव जुबिली कमिटि ने इलाका का संक्षिप्त रिपोर्ट बतलाते हुए कहा कि गोसनर साहब के भेजे हुए चार मिश्नरी १८४५ को राँची पहुँचे। उन्होंने घूम घूम कर यीशु मसीह का प्रचार किया। फलत: बहुतों ने यीशु मसीह को ग्रहण किया और बपतिस्मा पा कर क्रिस्तान हुआ। मरचा क्षेत्र में भी यीशु मसीह का सुसमाचार आया, मुण्डा लोग भी सुसमाचार को ग्रहण कर क्रिस्तान हुए। इस इलाके का पहला क्रिस्तान मरचा ग्राम के काना कालेपु पहन है जिसका नाम स्मरण पत्थर पर देखते हैं। इस घराने से आज तक प्रचारक हैं जो ज्वलंतता से सुसमाचार प्रचार का कार्य कर रहे हैं। २९ मई १८७४ को मंडली की स्थापना हुई तथा पाद्रीपन भी उसी समय से चला आ रहा है। इस

Gossner Mission

इलाके की प्रथाम पाद्री आनन्दमसीह तिर्की थे। १८९५ ई० में पाद्री डबल्यु किफिल ने मरचा गिरजा घर की नेव डाली १९०१ ईश्वी के पहली जनवरी को गिरजा घर का संस्कार किया। इसी वर्ष में चुरदाग गिरजा घर बनना शुरु हुआ और १९०७ को गिरजा का संस्कार हुआ।

इस इलाके में दो पेरिश हैं मंड़लियों की संख्या १५ है दो पाद्री ११ प्रचारक तथा एक कंड़िदत के द्वारा इस इलाके को सेवकाई हो रही है। इस इलाके की कुल बपतिस्मा संख्या ७११६ है, इढ़कृत संख्या ३६६७ है और घर परिवार संख्या १३०० है एवं विद्यालयों की संख्या कुल१२ है।

(२) संसार की कठिन अवस्था और हमारा आनन्दः इस विषय पर डा० एम० बागे ने प्रकाश डाला कि कोई-कोई अवसर पुछते हैं कि तुम क्यों क्रिस्तान हुए हो। हम न सोचे की क्रिस्तान होने से संसार के दु:खों से बचेंगे हमारे पुरखों ने जैसा ही बचन प्रचार करना आरम्भ किया उनको दु:ख तकलीफ हुआ। उनका जीवन दु:ख से ही आरम्भ हुआ, इसलिए यह कहना, कि क्रिस्तान जीवन में दु:ख हो दु:ख है जिसके बिरोध में लड़ना है।

फिर भी यह स्मरण पत्थर कहता है कि तुम खुशी मनाओ बहुत खुशी मनाओ ताकि अन्य लोग भी इसमें शामिल हों, जानना चाहिए कि इस आनन्द का मुल प्रभु यीशु ही है। उसने मृत्यु पर जय पाकर हमें आनन्दित किया है। वह कहता है, अपने पापों को मेरे पास लाओ तब तुम्हें आनन्द मिलेगा। प्रभु कहता है संसार में तुम्हें क्लेश होगा पर ढाढ़स बाधो मैं ने संसार को जीत लिया है। इस प्रकार हमारी जीत भविष्य में निश्चय है। (जोहन १६.३३) प्रभु यीशु ऐसा आनन्द हमें सदा देवे।

(३) कलीशिया सेवकाई में हमारा आनन्दः— पाद्री जे० तोपनो ने इस विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कलीशिया तो विश्वासियों का एक झुण्ड है हमारा काम है कि कलीशिया में रह कर सेवकाई का काम करें यीशु मसीह को मुक्तिदाता समझ कर उसकी सेवकाई का काम करें जिसने योशु को पहिचान लिया है। वही सच्चाई से सेवा कर सकता है! इस प्रकार का वचन हमें पहला पतरस के चौथे अध्यय में मिलता है।

(४) कलीशिया और मसीही का सम्बन्धः— पाद्री एन० मुईयां ने प्रकाश देते हुए कहा हम जानते हैं कि जुबिली एक आनन्द का दिन होता है कलीशा क्रिस्तानों की कलीशा है हमारा सम्बन्ध प्रभु के साथ है क्योंकि हम सब के सब बुलाए हुए हैं। कलीशा का सिर प्रभु और हम उसके दुल्हिन हैं। अत: हम प्रभु के साथ अच्छा सम्बन्ध रखें। अच्छा चरवाहा अपने भेड़ों के लिए चिंता करता है अत: हम कलीशा, अंचल, इलाका, पेरिश तथा मंडली से अलग न रहें पर इसमें रह कर सदा प्रभु में बने रहें। प्रभु कहता है जो मेरा बचन सुनता है वह मेरे साथ रहता है परमेश्वर ही इस मरचा इलाका को प्रभु की संगति में सदा बढ़ाते जाए।

(५) गोसनर कलीशा का अन्य कलीशा से सम्बन्ध.—डा० एन० मिंज ने इस विषय पर बहुत सुन्दर ढंग से चार बातों में पेश किया है (A) कलीशिया विश्वासियों का झुण्ड है इसका मतलब, इसका सम्बन्ध दुनिया की सभी कलीशियाओं से है। (B) हिन्दुस्तान में नौ लुथेरान क्लीशिया है। यीशु को प्रगट करने के अनेक रूप हैं। (C) यीशु मसीह के नाम में अनेक सेवा के काम होते हैं। (D) यीशु के नाम जो प्रचार के काम होते हैं उससे भी गोसनर कलीशा का सम्बन्ध अन्य कलीशियाओं से है हम इन चार बातों को मन में ख्याल रखेंगे।

(६) कलीशिया की आर्थिक स्थिति का समाधान :— डा० पौल सिंह ने शुरू में सदरी से एक मसीही डमकच गीत गा कर लोगों को प्रभावित किया तब उन्होंने इस विषय पर उपदेश देते हुए कहा कि परमेश्वर ने 'हमें धन दिया है जिस धन के द्वारा हम ईश्वर की सेवा करें; जैसी हमारी आमदनी है उसी के अनुसार हम धन के द्वारा परमेश्वर की सेवा करें; हम सच्चाई और विश्वास से धन की ईश्वर की सेवकाई में लगावें इस प्रकार से हम कलीशिया की आर्थिक स्थिति का समाधान कर सकते हैं।

(७) मसीही धर्म और समाज सेवा:— श्री एन० ई० होरो साहब ने इस विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा इस धरती पर सब प्रकार के जन्तु हैं पर इन सब में मनुष्य श्रेष्ठ है। ईश्वर ने मनुष्य जाति को प्यार किया

Gossner Mission

और इसलिए अपने स्वरूप में बनाया। इस दुनिया को उसने फिर इतना प्यार किया कि उसने अपने पुत्र को हमारे लिए दिया (योहन ३:१६)

क्रिस्तान धर्म्म तो मानव जाति के बीच ही है इसलिए हम तो समाज के ही काम करते हैं। समाज में टोला, गांव, पंचायत आदि हैं हम मनुष्य जाति एक से एक काम करते हैं। अभी हमने जो नाच गान किया किस लिए? इसलिए कि इसके द्वारा हम ईश्वर की स्तुति करें। समाज में रह कर हम ईश्वर की सेवा करें।

हमारे बीच में पंचायत, ब्लोक आदि है इसका काम भी हमें करना है क्योंकि यह भी ईश्वर की इच्छा है इन सब का काम करते हुए भी ईश्वर की सेवा करना है। ईश्वर कहता है तुम मानव जाति जगत के नमक हो अतः तुम सब मानव जाति को नमकीन बनाओ अर्थात ईश्वर की ओर ले आओ बेइमानी को रोक कर दूसरों को अच्छा नमूना दिखावें, जिसको जिस प्रकार बरदान है उसी प्रकार की सेवकाई करें। मसीही धर्म्म में रह कर यही हमारी समाज सेवा है

(८) कलीशा की आत्मिक और आर्थिक उन्नति:— पाद्री पी० डी० सोरेंग ने जोहन २:३५ वचन से अगुवाई किया। उन्होंने कहा कि जीवन में जीने के लिए हमें रोटी और पानी की बहुत आवश्यकता है। हम बिन्ती करते हैं प्रति दिन की रोटी के लिए, ईश्वर ने हमें ज्ञान, बुद्धि और बल दिया है। इसके द्वारा हम रोटी अर्जन करें हम अनेक प्रकार के खेती करके अन्न उपजाए हम कहीं भी काम करें आलस्य न बनें। सरकार भी अभी हर प्रकार के उपायों को बताती है ठीक रीति से व्यवहार करने से हमारी आर्थिक उन्नति हो सकती है।

प्रभु जीवन की रोटी है उसको हमें दिन प्रति दिन ग्रहण करना है। अन्त तक जो विश्वास योग्य रहेगा वह जीवन की रोटी पायगा। जिसका मन साफ है उसी में पवित्रात्मा रहेगा, इसको हम सदा अपने हृदय में बास करने दें। तब हम परमेश्वर के साथ सनातन लों रहेंगे।

भाषण के मध्य मंडली-मंडला से इच्छुक सज्जनों द्वारा गीत भजन एवं मनोरंजन दिखाया गया इससे भी दर्शकगण प्रभावित हुए तथा सभा अन्त तक स्थिर रही।

घरबन्धु के पाठकों को हमारे जुबिली दिवस का शुभ संदेश पहुचे।

जुसफ कोनगाड़ी
कोषाध्यक्ष
मरचा इलाका।

कलोसियाई-समाचार

रांची : पाद्री डा० योहानेस आल्टहाउजेन गणतंत्र जर्मनी (पूर्वी बर्लिन) से यहां एक सप्ताह की मेहमानी में आये हुए थे, उनके लिये कार्यक्रम इस प्रकार बनाया गया था जिससे उनको गोस्सनर कलीसिया के मसीही जीवन कुछ अनुभव होवे शहरी, देहाती, उद्योगी स्थान की मंडली जीवन से परिचित के लिये कार्यक्रम ने लोहरदगा, कांके, राऊरकेला, राजगांगपुर, खुटीटोली, भेड़ीकुदर, मर्चा एवं रांची के मसीही भाई बहनों एवं अगुओं से मिलाया। बात चीत एवं मिलन-जुलन में उन्होंने मसीही प्रेम का अनुभव किया।

बात चीत का विशेष विषय था : हमारे बीच के सम्बन्ध को कैसे बढ़ा सकते हैं? एक दूसरे की कैसे सहायता कर सकते हैं। आशा है उनकी इस बार की भेंट गोस्सनर कलीसिया के लिये विशेष लाभ की बात होगी। (शसि)।

सेप्तेम्बर माह में दस उत्तीर्ण विद्यार्थियों का मौखिक परीक्षा के बाद उन्हें कन्डीदात घोषित किया गया, ये गोस्सनर कलीसिया के विभिन्न क्षेत्रों में कन्डीदात नियुक्त किये गये हैं।

गोस्सनर कलीसिया युवा विभाग के लिये कन्डीदात अंजोर डुंगडुंग की नियुक्त सेप्तेम्बर माह (१९७४) से हो

Gossner Mission

गयी है। उनका दफ्तर रांची ही में रहेगा, वे पूरी गोस्सनर कलीसिया के युवा विभाग का संगठन करेंगे। आशा की जाती है कि इस नौजवान के आने से युवा वर्ग में हलचल आ जायगी और युवा क्षेत्र में विशेष कार्य होंगे। आज के युग में एक ऐसी युवा पीढ़ी तैयार करनी है जो ऐसे युग में कलीसिया को आवश्यक और उचित सहायता एवं योगदान दे सकें

अत: आप युवा संगठनों से अर्जी है कि इस नये युवा निर्देशक को सहयोग दें और अपने यहां के युवा वर्ग के लिये उससे उचित सहायता भी लेवें।

बिहार सरकार के अध्यादेश के कारण अल्प संख्यकों के द्वारा चलाये जाने वाले विद्यालयों पर एक गहरा धक्का लगा है, वेतनादि में काफी अन्तर आ गया है। हमारी कलीसिया के स्कूलों पर भी इसका प्रभाव है, कितने लोग सोचने लगे हैं, कि क्यों न स्कूलों को सरकार के अधीन कर दें! यहां के विभिन्न कलीसियाओं के अगुओं एवं शिक्षा विभाग के अफसरों ने विशेष कदम उठाया है, और मुख्य मंत्री से प्रतिनिधि हो कर बात चीत किई, एवं अश्वासन मिला कि अल्प संख्यकों द्वारा चलाये जाने वाले स्कूलों के लिये भी आवश्यक एवं उचित सहायता तथा अनुदान आदि दिये जायेंगे। अत: विद्यालयों के प्रधानाध्यापक अध्यापिकाओं तथा प्रबन्धक समिति के अफसरों को चाहिए कि हमारे शिक्षा विभाग के पदाधिकारियों के सम्पर्क में रहें।

आने वाले २२ वीं ओक्टोबर को विद्यालयों के प्रधानाध्यापक-अध्यापिकाओं का सम्मेलन होनेवाला है उसमें भी इन समस्याओं पर विशेष विचार विमर्श होगा। (शसि)।

मिशन पर्व

घरबन्धु के पाठक गण स्मरण करेंगे कि २ री नोवेम्बर गोस्सनर कलीसिया का "स्थापना-दिवस" कहा गया है, इसी दिन को हमारी पंजिका में मिशन पर्व भी माना गया है। यों तो सभी पाद्रियों के पास इस आशय की सूचना एवं अर्जी भेज दी गयी है। परन्तु आप सभों को हम पत्रिका के माध्यम भी स्मरण दिलाया जाता है, कि आप अपने यहाँ भी २ री नोवेम्बर को या स्थानीय सुविधानुसार अन्य दिन भी मिशन पर्व मानें।

आप के लिये परमेश्वर ने विश्वास की स्थापना की और इसी आधार पर अनन्त आशीष की प्रतिज्ञा दी, इसके बदले आप क्या दें? आप के धन्यवाद मात्र! इसका ही एक रूप मिशन पर्व है। इसके द्वारा आपको एक अवसर दिया जाता है कि आप भी विश्वास की स्थापना के कार्य में हाथ बटावें! अनेक परिवार; मंडली या व्यक्ति विशेष इस काम में निजी तरीके से लगे हुए हैं, इस में रोक नहीं है और ऐसों को हतोत्साह करना भी नहीं है, पर मिशन पर्व हमारे सामूहिक कार्य को संकेत करता है। हमारी कलीसिया ने सामूहिक एवं संगठित रूप में मिकिर पहाड़ी, (असम) सिंहभूम के इलाके मिदनीपुर, मयूरभंज बनई-बांमड़ा, उदरपुर, सुरगुजा आदि क्षेत्रों में काम जारी रखा है, जिसमें हमारी कलीसिया अनेक व्यक्ति, परिवार, मंडली आदि ने भी अपने तरीके से सहयोग एवं सहायता दी है, आज भी बहुत सी मंडलियां मिशन पर्व की आमदनी हमारे इस काम के लिये हमारे पास भेज दिया है। पर अनेक मंडलियां हैं, और जवाबदेह व्यक्ति भी जो इस ओर रूचि नहीं रखते हैं या लापरवाही करते हैं; अत: इस माध्यम से आप को आह्वान किया जाता है कि आप भी इस काम के लिये यथाशक्ति योगदान दें और विशेष कर "मिशन पर्व" को सफल बनाने के लिये उपलब्ध साधन और उपाय देने और दिलाने की कोशिश करें।

इस वर्ष इसी महत्व को समझते हुए और अधिक महत्वपूर्ण बनाने के लिये जर्मनी से तीस मेहमान आने वाले हैं जो विशेष कर रांची के मिशन पर्व में भाग लेंगे। तत्पश्चात् वे निकटवर्ती मंडलियों में भी जायेंगे।

— सी. के. पॉल सिंह

घरबन्धु, नवम्बर १९७४

Gossner Mission

मन्जिल

अनिल कुमार मैथ्यूस
गो॰ ध्यो॰ कालेज
रांची

मेरी जिन्दगी एक शीशे के समान है, यदि उसमें जरा सी ठेस लग जाये तो छन्न से टूट जाये यह समय अति दुविधापूर्ण है। जिन्दगी के दोराहे पर खड़ा हुआ हूँ और जीवन की सार्थकता को जानने की कोशिश कर रहा हूँ क्योंकि मेरा आज तक का अनुभव मुझसे कह रहा है कि ये दुनिया फरेबी है, यहां गम के सिवाय कुछ भी नहीं, यार, दोस्त सब झूठे हैं इस दुनिया में कोई भी सच्चा मित्र नहीं, एक भी नहीं, जो है वह सब ढोंग है, फरेब है, छल है और निरा धोखा। आज इन्सान पैसे के बल पर तौला जाता है, इन्सान की कीमत लगाई जाती है, इन्सान का ईमान खरीदा जाता है, वह बिक जाता है, और वह भी बेदाम, सस्ते में। आज इन्सान पैसे को देवता मानकर उसे पूजता है उसके लिए एक त्योहार मनाता है 'लक्ष्मी पूजा' नाम देता है, ऐसे इन्सान कितनें अज्ञान हो सकते हैं। इसके परे मुझे सारा जहांन एक खेल का मैदान नजर आ रहा है और प्रत्येक व्यक्ति एक खिलाड़ी, जो कि स्वयं को जीतने की कोशिश में लगा हुआ है, दूसरे को बढ़ने देना नहीं चाहता। इस प्रकार हुआ कैसे? क्या यह सच नहीं, क्या आपने इसपर गौर किया? यदि एक खिलाड़ी अपने खेल के उद्देश्य को प्राप्त कर ले तो उसे प्रसन्नता होती है परन्तु इस प्रकार का मनुष्य जो सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को हराता है उसे खुशी प्राप्त नहीं हो सकती उसकी जीत वास्तविक जीत नहीं, उसमें कई की आह सुनाई देती है; जिस जीत में आनन्द प्राप्त न हो वह जीत ही किस काम की।

जिन्दगी के दोराहे पर खड़ा हुआ न जानें क्या२ सोच रहा है, यह अचानक मुझे क्या हो गया मुझे जीवन की सार्थकता दिखाई दे रही है जीवन की सार्थकता को जानने में कुछ सफल होता हुआ दिखाई देता है। जीवन संग्राम है और एक बहुमूल्य जिन्दगी भी जो मनुष्य अपनी जिन्दगी से हार मानता है उसके सामने जीवन का महत्व नहीं और वह मौत-मौत चिल्लाने लगता है। जीवन से संग्राम करना ही जिन्दगी है। मुझे एक मन्जिल दिखाई दे रहा है जिसकी आकृति पहिले कुछ धुन्धली थी परन्तु अब धीरे २ एक दम साफ दिखाई दे रही है, मैं उस मन्जिल की ओर बढ़ना चाह रहा हूं उसके लिए राह ढूँढ़ रहा है, कि एक आवाज आ रही है "हे मानव मार्ग नहीं मन्जिल देख" मन्जिल तो स्वायं ही मेरे पास आ रही है, मन्जिल वास्तव में बहुत सुन्दर, स्वच्छ और पाक है, मन्जिल मेरे सामने है मुझे शीघ्र ही उसमें प्रवेश कर जाना चाहिए मैं जाना तो चाहता हूं परन्तु कुछ बन्धन मुझे पीछे की ओर खींच रहे हैं। मुझे उन बन्धनों को तोड़ना होगा तभी मैं उस मन्जिल में प्रवेश कर सकता हूं। इसलिए मैं एक एक करके प्रत्येक बन्धन को तोड़ रहा हूँ मुझे उन्हें तोड़ने के लिए बहुत परिश्रम करना पड़ रहा है और अब मैं सब बन्धनों से मुक्त हो गया और शीघ्र ही मन्जिल में प्रवेश कर गया यहां पर मुझे एक अनन्त सुख का आभास हो रहा है मंजिल बड़ी सुहानी है।

आप भी अपनी मन्जिल तक पहुंचना चाहते हैं? आपकी मन्जिल भी आपके सामनें है, देखिए! आपको स्पष्ट दिखाई देगी, कोशिश कीजिए, आप भी अनन्त सुख और आनन्द पाना चाहते हैं, पर शायद आपके बन्धनों के कारण आप मन्जिल में प्रवेश पाने में असमर्थ हो रहे हैं। घबराइये नहीं, मन्जिल का मालिक ताकतवर है वह आपको मन्जिल में खींच लेगा आप अपना हाथ बढ़ाइये वह आपके सारे बन्धनों को तोड़ देगा। क्या आप अपनी मन्जिल से परिचित हैं? यदि नहीं तो मैं बताता हूं, आप की और मेरी मन्जिल तो एक ही हैं, "प्रभु यीशु मसीह" उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाइये वह आप के सामने अभी भी

Gossner Mission

खड़ा हुआ है। वह आप को बुला रहा है क्योंकि उसने आप के जीवन को अपने बहमूल्य लोहू से खरीद लिया है और वह नहीं चाहता कि आप का जीवन बर्बाद हो जावे और आप अपने जीवन की सार्थकता से अन्जान रह जावें। संसार के सारे बन्धन तोड़कर यीशु के साथ हो लीजिये। उसी में जीवन की सार्थकता अनन्त सुख और महान आनन्द है। शीघ्रता कीजिए, समय बहुमूल्य है, अभी आप को अवसर है यीशु ही आप की मन्जिल है।

बैबल की तीन झलक

१ तीन बातें —
आओ और विचार करो,— यशा: १:१८।
आओ और देखो,— योहन १:४६।
आओ और विश्राम करो— मत्ती ११:२८।

२ तीन चीजें चट्टान से निकली—
चट्टान से पानी— निर्गमन १७:६।
चट्टान से आग — न्याय ६:२१।
चट्टान से मधु— भजन ८१:१६।

३ धर्मशास्त्र के तीन हस्तलेख—
पत्थर पर— निर्गमन ३२:१५-१६।
क्रूश पर— योहन १९:१९-२०।
दीवार पर— दनियेल ५:५।

४ तीन आज्ञाएं—
जाओ— मत्ती २८: १९।
प्रचार करो— मार्क १६:१५।
बाट जोहते रहो,— प्रे. क्रि. १:४।

५ तीन चीजें जिनसे हमें अलग रहना है—
मुक्ति से— १ यो. ५:२१।
संसार से— याकुब १:२७।
विनाश करने वाले मार्ग से, — भजन १७:४।

६ तीन वारी—
अदन वारी— उत्पति २८।
गेतशिमनी वारी— मत्ती २६:३६।
स्वर्ग की वारी— प्रका. २२ अध्याय।

Mr. F. Minz
G. E. L. C. Chalho
24.7.74.

धर्मशास्त्र से प्रश्न उत्तर

१ यहोवा कहां से इस्राएलियों का परमेश्वर हुआ, होशे १२:९
२ यहोवा परमेश्वर को क्या वाणी है। हाग्गै २:६-९
३ परमेश्वर मनुष्य से कितना दूर है। यिर्मयाह २३:२३
४ परमेश्वर कैसा न्याय करेगा। यशा: ११:४-५
५ सभोपदेशक का अन्तिम बात, तथा मनुष्य का कर्त्तव्य क्या है। सभो. १२:१३
६ मनुष्य की आत्मा क्या है। नीति: २०:२७
७ यहोवा ने मूसा से क्या कहा, निर्गम ४:११-१७
८ मनुष्य का आत्मा किसमें है। लैव्य १७:११
९ आज हम क्या जानें व्यवस्था ४:३९
१० यहोवा ने इस्राएलियों को क्या दिया। यहोशू २१:४३-४५
११ किनका नाम लेकर हम चलें। मीका ४:५
१२ यहोवा की उपासना क्यों करें। १ शमूएल १२:२४
१३ इस्राएलियों ने यहोवा से क्या कहा, न्यायियों १०:१५
१४ धार्मिकता और उद्धार के लिये हम करें। रोमी १०:१०
१५ विश्वास क्या है। इब्रानी ११:१
१६ हम क्यों बुलाये गये हैं। १ पितर ३:८-९
१७ स्वर्गीय मुकुट के अधिकारी कौन होंगे, याकूब १:१२
१८ जीभ को क्यों रोकें १ पितर ३:१०
१९ प्रभु कैसे धन्य है। भ. स: ६८:१९-२०
२० किसके बढ़ने से अपराध बढ़ता है। नीति २९:१६
२१ परमेश्वर के सामने अच्छा क्या है। मीका ६:८

P. MINZ
CHALHO

घरबन्धु, नवम्बर १९७४

Gossner Mission

"पश्चाताप के आंसू"

दीपक जैसे घर पर कदम रखा, पिताजी की आवाज ने उसके बढ़ते कदम रोक दिये। वह रुकना चाहता था। वह जानता था, पिताजी वही प्रश्न करेंगे। जिस से वह दूर भागना चाहता था।

बेटा दीपक, तुमने क्या विचार किया, मेरे प्रश्नों का ? दीपक ने छोटा सा उत्तर दिया-कुछ नहीं पिताजी। जानता हूं बेटा, तुम मेरे बातों को यूंही टालना चाह रहे हो, लेकिन तुम्हें ये शादी करनी पड़ेगी।

पिताजी, मैं ये शादी नहीं कर सकता···कभी···नहीं ये तुम क्या कह रहे हो ? तुम्हें रोशनी का हाथ थामना ही होगा। बेटा, तुम शायद नहीं जानते हो कि मैं और तुम्हारी माँ ने रोशनी के पिताजी से ये वादा किया था कि रोशनी को अपने घर की बहू बनायेंगे। बेटा मेरे वादों को मत ठुकराओ। दीपक फिर से सोचो। क्या इसी दिन के लिये मैंने तुम्हें बढ़ाया कि तुम मेरी बातों को ठुकरा दो। दीपक·····

दीपक अपने आप को और अधिक रोक नहीं सका और झट अपने कमरे की ओर चला गया।

रात्रि के तन्हाई में जब दीपक के दिल के जख्म कसकने लगे। दीपक चाहकर भी कुछ सोच नहीं पा रहा था। वह जानता था कि वह शोभा को जिन्दगी भर भूल नहीं पायेगा। लेकिन इधर पिता के वादें भी टल नहीं सकता था। उसे रात भर पिताजी के कहे हुये शब्द दिल दिमाग में गूंजते रहे। वह दोनों के बीच रात भर संघर्ष करता रहा। सारी रात करवटों में गुजर गई। अन्त में उसने यही निर्णय किया, कि पिताजी के वादों को नहीं ठुकरायेगा।

यूं तो दीपक का विवाह रोशनी के साथ हो गया रोशनी बहू बनकर दीपक के घर आई। रोशनी जो सपने सजाकर दीपक के यहाँ आई थी। उसके सपने दीपक के बेरुखी से जा टकराई और उसका दिल कांच के खिलौने की तरह टूटकर बिखर गया। रोशनी उन बिखरे कांच को संजोकर रखना चाह रही थी। एक सप्ताह, दो सप्ताह बीत गये पर दीपक ने रोशनी से एक शब्द नहीं कहा. वह सदा रोशनी से दूर भागता रहा। रोशनी के दिन करार और रातों की नींद छिन गई उसके सपने आंसू में बदल गये।

रात के बारह बजे दीपक घर आया। रोशनी से रहा न गया वह दीपक के करीब गयी। रोशनी को अपने करीब आते देखकर मुड़ गया। दीपक···तुम्हारा यूं मुझ से दूर रहना हमें बर्दास्त नहीं होता, आखिर यही दिन दिखाना था तो तुम मुझ से प्रभु के सामने साक्षी मानकर विवाह ही क्यों किया। बीती···बातों को भूल जाओ दीपक, हम दोनों नई जिन्दगी शुरू···करेंगे, वह रो पड़ी।

रोशनी यहाँ से चली जाओ···चली···जाओ मुझे मेरे हाल पर ही छोड़ दो, मैं अब कोई नई जिन्दगी शुरू नहीं करना चाहता। रोशनी यहां से चली जाओ मैं ने किसी से शादी वादी नहीं किया है।

रोशनी की दर्द भरी आहें रात्रि के अन्धेरे में विलीन हो गई। और दीपक उसी क्षण घर से निकल पड़ा।

दिन; सप्ताह में और सप्ताह महीनों में बदल गये पर दीपक वापस लौटकर नहीं आया।\ बेटे के वियोग और बहू की उदासी ने बूढ़े बाप को अन्तिम मंजिल तक पहुंचा दिया। एक दिन पिताजी ने रोशनी को करीब बुला कर कहा--बहू मैं जाता हूँ तुम आज जिस परिस्थिति से गुजर रही हो, (सच है दु:ख में इन्सान का दिमाग किसी काम का नहीं रहता) तुम उसे वरदान समझ कर ग्रहण करना, सारे दु:ख और मुसीबतें प्रभु अपने भक्तों को उनकी परीक्षा के लिये देता है जो इस परीक्षा में सफल हो जाता है, वो कुन्दन बन जाता है प्रभु सारे दु.ख दूर करेगा, हिम्मत नहीं हारना। प्रभु यीशु को अगुवा मानकर सदा प्रार्थना करना, कभी न कभी दोपक जरूर वापस आयेगा···बहु धीरज···धरे···रहना।

Gossner Mission

और उसका सर एक ओर लुढ़क पड़ा दीपक को घर छोड़े कई साल बीत गये, बेवफाई कर के दीपक गुमराह हो गया, बर्बाद हो गया। दिल की गहराइयों में एक घुटन और चेहरे पर कभी न खत्म होने वाली मायूसी और विरानी व्याप्त हो गई वह अपनी हस्ती भूल बैठा। सलीब से लटकते मसीह को याद भी दिल से निकल गई। बावरों सा वह घूमता रहा। दीपक को पतन के गर्त में जाते देर न लगी, उसने गम को कम करने के लिये शराब का सहारा लिया। दीपक बदल गया, उसकी जिन्दगी बदल गई। वह गुमराह की ओर बढ़ता चला गया।

पिता जो की मृत्यु के बाद रोशनी ने घर छोड़ दिया, बेसहारा हो कर रोशनी भटकती रही। अन्त में उसे एक बूढ़े प्रचारक ने सहारा दिया। रोशनी को एक बाप मिल गया, जिसे वह खोना नहीं चाहती थी। वह सदा प्रभु से दीपक के लिये प्रार्थना करती थी।

इधर दीपक तबाह हो गया। उसके कपड़े फट गये, सिर के बाल बढ़ गये। कई साल तक शेव तक नहीं किया। उसके चेहरे बदल गये। रोग ने उसे कहीं का नहीं रख छोड़ा। भूख और प्यास ने उसे पिताजी और रोशनी की याद पर विवश कर दिया। उसे अपने हाल पर तरस आने लगा, उसके आंखों पर पश्चाताप के आंसू छलक आये ये मैंने क्या किया ?

दीपक रही सही सांसे लेकर घर की ओर चल पड़ा, घर के करीब पहुँचकर देखा घर पर ताला पड़ा था पूछने पर पता चला। कि उसके पिता की मृत्यु के बाद रोशनी बेसहारा होकर घर छोड़कर कहीं चली गई। दीपक रो उठा-मेरे ही कारण पिता जी की मृत्यु हो गई, मैं खुद अपने कर्मो से रोशनी की जिन्दगी छीन ली। रोशनी मुझे कभी माफ नहीं करेगी मैंने प्रभु को साक्षी मानकर साथ देने वादा किया था। मैंने प्रभ के साथ भी विश्वास घात किया है। मैं किसी को मुंह दिखाने योग्य नहीं रहा। वह पागलों सा बड़बड़ाता ही रहा— मैं नीच .....हूँ..... पापी हूँ।

वह बढ़ता जा रहा था। लेकिन कहाँ ? उसे अपने मंजिल का कहीं पता नहीं था। उसके कदम डगमगा रहे थे। जब वह चर्च के पास से गुजर रहा था तो चर्च की ये मधुर गीत उसके कदम रोक दिये।

"आओ, आओ, यीशु पास आओ"

वही बुलाता अभी थके और मंदे यीशु पास···

अचानक दीपक के कदम चर्च की ओर बढ़ चले, लेकिन जैसे ही उसकी नजर अपने कपड़े पर पड़ी उसके कदम पीछे की ओर लौट पड़े। आज मैं इस हाल में प्रभु के पास कैसे जाऊं, उसे अपने पापों का अहसास हुआ वह फूट फूट कर रोने लगा। फिर क्या हुआ उसे कुछ पता नहीं।

जब होश आया तो अपने आप को एक कमरे में पाया और ठीक उसके आंखों के सामने सलीब पर लटके प्रभु यीशु की तस्वीर दिखाई दी जिसके नीचे लिखा था "मनुष्य का पुत्र (यीशु) खोये हुओं को ढूढ़ने और उनका उद्धार करने आया है लूक १९:१०) वह रो पड़ा। प्रभु मुझे क्षमा कर दीजिये, मैं भटक गया था. मुझे अपना बना लीजिये। अचानक कदमों की आहट ने उसका ध्यान भंग कर दिया। देखा, तो एक बूढ़ा उसके करीब आया है। दीपक को होश में आया देखकर बूढ़ा बहुत खुश हुआ। दीपक ने पानी मांगा। बूढ़े ने आवाज लगाई बेटी, जरा पानी लाना।

रोशनी जैसे पानी लेकर वहाँ आई, दीपक चौंक पड़ा। दीपक अपनी रोशनी को पहचान गया पर रोशनी अपने दीपक को करीब पाकर भी पहचान न सकी, दीपक का जी चाह रहा था, अपनी रोशनी से लिपट जाये, माफी मांगे, और बता दे कि रोशनी मैं हूँ तेरा दीपक।

एकाएक उसकी आत्मा कह उठी तुम रोशनी काबिल अब नहीं रहे। ओर इस हाल पर जब तुम खुद ही बेसहारे हो तो किस तरह रोशनी का सहारा बन सकते हो। नहीं·····कभी नहीं प्रगट होने दूंगा।

रोशनी सदा लगन से उसकी सेवा करती थी। दीपक सोचने लगा। मुझे जब रोशनी की जिन्दगी संवारनी थी तब मैंने उसका निर्दोष हृदय तोड़ दिया। वह कई बार चाहा की अपने आप को रोशनी पर प्रगट कर दे। पर कभी नहीं कर सका।

घरबन्धु, नवम्बर १९७४

Gossner Mission

दीपक की तबियत खराब होती चली गई. उसे अहसास हो चुका था कि वह अब कुछ क्षण का मेहमान है दीपक की जिन्दगी की लौ बुझती जा रही थी।

दीपक रोशनी के नाम खत छोड़कर सदा के लिये इस दुनिया से चल बसा।

सुबाह दीपक की लाश और हाथ में खत पड़ा मिला। रोशनी जल्द से खत पढ़ने लगी। लिखा था!

प्रिये रोशनी,

आशेष प्यार

जा रहा हूँ. इस दुनियाँ से बहुत दूर, सोचा था, तुम पर सब कुछ जाहिर कर दूँ। पर मुझे वो साहस नहीं रहा कि कह सकूं, तुम्हें·····बहुत····· दुःख दिया। जिसके कारण मैं सदा पश्चाताप की अग्नि में जलता रहा। तुम जैसी रोशनी को पाकर भी एक दीपक सदा अन्धकार में भटकता रहा।

यदि हो सके तो अपने दीपक को माफ कर देना

बस! ...दीपक...

मिस नितिर तारा तोपनो
न्यू सीता राम डेरा
जमशेदपुर-६

आवश्यक सूचना

गोस्सनर एवंजेलिकल लूथेरान कलीशिया के सभी भाइयों तथा बहनों को अवगत् कराया जाता है कि, जी· ई· एल चर्च प्रेस प्रबन्धक समिति; कुछ प्रशासनिक कठिनाईयों के कारण अनेक कलीशियाई पुस्तकों को छाप कर आप की सेवा में प्रस्तुत नहीं कर पायी। अब इन कठिनाईयों का समाधान हो गया है, और हमें आशा है कि आवश्यक पुस्तकें शीघ्र ही छप कर आप की सेवा के निमित प्रस्तुत किई जाएगी।

मैनेजर जी· ई· एल. चर्च प्रेस के सूचनानुसार, दुरंग पुथी नोवेम्बर तक में छप जाने की बात थी वह अब अक्टूबर सन् १९७४ में ही छप जाएगी।

पंजिका १९७५ — अक्टूबर सन् १९७४ में छप जाएगी।

साक्षीवाणी– दिसम्बर सन् १९७४ में छप जाएगी।

कुड़ुख़ डण्डी– फरवरी सन् १९७५ में छप जाएगी।

भाईयों तथा बहनों एवं पुरोहितों से अर्जी है कि आप अपनी आवश्यक पुस्तकों का नाम देवें, जिससे हम यथाशक्ति उनकी छपाई कर आप की सेवा कर सकें।

आप का विश्वस्त

भूषण खेस्स,

मैनेजर

जी· ई· एल· चर्च प्रेस, राँची।

Gossner Mission

"प्रभु के सिपाही हो तुम"

(Maskalan Barla)
D·U.Mission Boy's Hostel
Hazaribagh

दुःख के तूफ़ानों से होकर गुजरना है
काँटों के सेज पर से चलना है
मुसीबत के उलझनों को सुलझाना है,
प्रभु के सिपाही हो तुम।
उलझ न जाओ कभी तुम॥
नीचा न करो कभी सिर को,
छोटा न करो कभी दिल को,
बाँधे रहो हथियार सदा ईश्वर के,
प्रभु के सिपाही हो तुम।
कमर कस के रहो तुम॥
घड़ी जब पास अवेगी
पृथ्वी जब काँप उठेगी,
संभाल लो तलवार आत्मा की,
प्रभु की सिपाही हो तुम।
घबड़ाओ न कभी तुम॥
लड़ना है तुम को दम भर के,
चूकना नहीं है तुमको आह भर के,
उमड़ पड़ो तुम विश्वास की ढाल लेके,
प्रभु के सिपाही हो तुम।
विचलित न हो कभी तुम॥
लगे रहो विन्ती और प्रार्थना में
धरे रहो साहस की पूँजी हाथ में
लिये चलो आशा की दीप मन में,
प्रभु के सिपाही हो तुम।
हिम्मत न हारो तुम॥
अपना लो तुम क्रूश का अमिट निशान,
होगा हासिल तुम्हें, विजय माला की शान
मिलेगा तुम्हें, स्वर्ग में अनन्त सुख का खान,
प्रभु के सिपाही हो तुम।
चमकता सितारा हो तुम॥

"तुम्हारी राह में"

डी० पी० इफ्राईम (बेवस)

मिशन कम्पाउंड
शाहरपुर,
बैतूल
(म० प्र०)

हर बरस यों ही बीत गये तो,
सपने कल्पना के झोंके,
मन कामना असत्य कोरे पर्चे,
रद्दी का भंडार लिए,
मैं खड़ा रहूंगा जीवन भर
तब मिलन कब होगा?

तुम आओगे, तुम आओगे,
मन की पुकार है,
तुम्हारी राह में खड़ा हूं,
धधकती भावनाओं को समेटे,
कोरे पर्चों को लपटे,
कितने बरस मैं खड़ा रहूं,
मिलन धुन लिए छबि तुम्हारी,
नमी-गर्मी गीलापन,
अब आओ कि तब आओ,
शरीर की पर्तों को,
मन विकलता की छाया में
कालिमा चढ़ा रही है,
तन रास्ते की कड़ी धूप में,
तुम कब आओगे?
बरबस उठती है दृष्टि,
मैं खड़ा रहूंगा जीवन भर,
उस दिशा जहां आगमन की आशा,
तब मिलन कब होगा?

Gossner Mission

धन्यवाद आप का ग्राहक चन्दा [३०वीं सेप्तेम्बर १९७४ तक] मिला।

1. Rev. J. A. Kujur
2. „ D. Hemrom
3. Cat. Nainsukh Kujur
4. Mr. Anandmasih Purti
5. „ Peter Kullu
6. „ C. H. Horo
7. „ P. S. Murmu
8. „ Bimar Dan Khakha
9. „ Christ Halan Barla
10. „ Gossner Kerketta for 11 Members
11. „ P. Minz
12. „ M. D. Bhengra
13. „ M. S. Kandulna
14. Rev. Innocent Aind
15. Mr. N. Kujur
16. Rev. Theodore Dungdung
17. Mr. David Topno
18. „ Premprakash Minz
19. „ Royan Hemrom
20. „ Jaimasih Surin
21. „ M. Indwar
22. „ D. M. Tete
23. „ Nelson Philip Kandulna
24. „ Gerson Tiru
25. „ A. D. Topno
26. Rev. H. M. Bage
27. Mr. P. S. Topno
28. Mr. Alar Kullu
29. Cand Anjor Kullu
30. „ Samuel Mundu

"आजादी के राह पर, बापूजी के कदम"

बी० तोपनो
राऊरकेला

सितम्बर माह समाप्त होते ही हम भारत के एक-एक निवासी बापूजी के जन्म दिवस को हृदय से मनन् करते हुए उसके जीवन दर्शन का मंथन एवं अनुकरण करते हैं; और २ ओक्टोबर को हर साल दुहराते हुए उसके समाधि तक फूलते-माला चढ़ा कर "हमारी आजादी" के बारे सोचते हैं। नदियों और समुद्रों में बाढ़ें आईं और खेतों में हरियाली छाई। सागर तट पर खड़े होते ही विचार आता है "ओह कितना अपार"। "कितना अगाध।" गांधी जी का जीवन सागर भी वैसा ही अपार अगाध है। इधर हिमालय की चोटी पर नजर उठाते ही एक अनुठी ढ़ंग का विचार मन में उत्पन्न होता है। अहा! क्या ही निराला है हमारे "भारत माता" की चौहदी; जो तीनों ओर विशाल "सागर" और हिमालय की ऊँची चोटी से सुरक्षित है। क्या कोई चोटी पर चढ़कर इसको ऊंचाई को दुबारा नाप सकता है? या कोई उन तीनों सागर" के गहराईयों को दुबारा नाप सकता है? आज "बापूजी के जीवन के बारे में वैसा ही भावनायें उठती हैं जिसने हमें" आजादी दिलाई। हमारे पूरखे "दादे" लोग ही उस युग पुरुष का जीवन को देखा, सुना और समझ कर घर-घर चर्खा के औजारों को छोड़ रखा। उसके जीते-जी हम जैसे "नये युवक-युवतियों" (लिटाभाई) को उसके जीवन से परिचय भी नहीं हो पाया। अब कहाँ और कैसे उनके जीवन दर्शन का अनुकरण करें? क्या उस महान् मानव की जीवन ज्योति बुझ गई तो हम उसके बताये हुए सिद्धातों को भुला दिया? उसके साधना मार्ग का हमने त्याग किया। केवल "स्मरक और संस्करण ही रहा। गांधी जी को 'राष्ट्र पिता" मान कर उनके ही भौतिक स्मारक हमने खड़े किये। भारत के ग्राम-ग्राम में बापूजी

Gossner Mission

की मूर्तियाँ; उनके नाम से 'मार्ग-और उद्यान प्रतिष्ठान और आश्रम, घाट मंदिर और स्कूल वगैरह का निर्माण हुआ। भारत की राजधानी में राजघाट पर उनकी समाधि बनायी। राजधानी में पहुंचते ही स्वदेशी हो परदेशी-राष्ट्रपिता की समाधि का दर्शन करने अवश्य जाते हैं और पुष्प चढ़ाकर श्रद्धांजलि अर्पण करते हैं।

क्या कोई है जिसके लिये वह युग पुरुष जीया और मरा ? भारत के मंत्रीगण "बापूंजी के आदेश पर खड़े रहने के लिये कागज के टुकड़ों पर (नोटों) नये शासन का कड़ा कदम रखा। "पैसा तो रन्डी भी कमाता है" इस कहावत के मुताबिक "हमारे गावों में" शराब दुकानें" (परचुनी या भट्ठी) चलती हैं जिसके लिये बापूजी मनाही कर गये हैं। आईये हम सब मिलकर बापूजी के जन्म दिवस पर गांव-गांव की परचुनीया दूकानें बन्द करें और "मसीहो जीवन में रहकर "प्रभु-यीशु मसीह के बताये हुए मार्ग पर जो "विश्व के उद्धारकर्त्ता हैं "अनन्त जीवन" के लिये आत्मिक आजादी के सिपाही बनें। "यूहन्ना १४:६। उनके स्मरण में करोड़ों "गिर्जाघर खड़े हैं।"

जय जवान; जय किसान"

आप गरीब क्यों हैं ?

ले० एम० आर० डुंगडुंग
(नई दिल्ली)

आज हम आर्थिक दुर्दशा के एक ऐसे मोड़ पर पहुँच रहे हैं जिसके बारे में प्रभु यीशु ने एक वसंती शाम को जैतून पर्वत की ढलान पर बैठकर अपने चेलों को बताया था और खास तौर पर उस घोषणा को सुसमाचारक भाई यूहन्ना और मत्ती ने अपनी बाईबिल किताबों में हमारे, आप के लिये, सारे मानव समाज के लिये लिखकर रख दिया है। (प्रा. वाक्य ६:८, मत्ती २४:७) तिमोथी भाई इस युग की सारी मलिनताओं की ओर ही जानकारी देते हैं। (II तिमोथी ३)

यहां मैं आप को कुछ एक स्थानों की झाँकियां दिखाऊँगा, जहां लोग प्रभु को भूलकर भटक गए हैं। एक मुट्ठी चावल या एक टुकड़ा रोटी के लिये लड़ रहे हैं। कपड़े, जमीन और अन्य चीजों के अभाव में दुःखी हैं। जीवन को भार समझ बैठे हैं। यह सब अपनी आंखों से प्रतिदिन देख जानकर अन्दाजा लगाता हूं कि अगर परमेश्वर को पालनहार और तारणहार मानकर सच्चे लगन से कुछ न कुछ करते तो शायद यह हालत नहीं होती। कोई किसी के ऊपर भार बना नहीं रहता। (II थिस्स. ३:८-१०)। और कई कारणों में से मुझे गरीबी के खास कुछ कारण नजर आते हैं। वे हैं —

(१) आलस्य,
(२) उपज व आबादी,
(३) जघन्य पाप,
(४) मुकदमे,
(५) व्यसन और दान।

इस बार प्रथम कारण "आलस्य" की चर्चा करूंगा। बाकी अगले अंक में। दाऊद राजा के सुपुत्र राजा सुलैमान को यहोवा परमेश्वर ने गरीबी के खास कुछ कारण बताया। वे अपनी नीतिवचन में कहते हैं—"जो काम में ढिलाई करता है, वह निर्धन हो जाता है, परन्तु काम काजू लोग अपने हाथों के द्वारा धनी होते हैं।" "जो अपनी भूमि को जोता बोया करता है, उसका तो पेट भरता है, परन्तु जो निकम्मे लोगों की संगति करता है वह कंगालपन से घिरा रहता है।" "छोटी सी नींद, एक और झपकी, थोड़ी देर हाथ पर हाथ रख के और लेटे रहना, तब तेरा कंगालपन डाकू की नाई और तेरी घटी हथियार बन्द के समान आ पड़ेगी।" "जो काम में आलस करता है, वह खोनेवाले का भाई ठहरता है।" "आलसी का प्राण लालसा तो करता है, और उसको कुछ नहीं मिलता, परन्तु काम काजी हृष्ट पुष्ट हो जाते हैं।" "निर्धन के पास माल नहीं रहता, परन्तु जो अपने परिश्रम से बटोरता है उसकी बढ़ती होती है।" "आलसी अपनी लालसा ही में मर जाता है क्योंकि उसके हाथ काम करने से इन्कार करते हैं।" "आलस्य के कारण छत की कड़ियां दब जाती हैं, और हाथों की सुस्ति से घर चूता है। (पढ़िये नीति वचन १०:४; २८:१९; २०:३३-३४; १८:९; १३:४, ११; २१:२५ और सभोपदेशक १०:१८)।

(शेष आगले अंक में)

रजिस्टर्ड नं. आर. एन. सी. ४ वर्ष—९४ राँची नवम्बर १९७४, संख्या नं.—११

Edited and published by Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G.E.L. Church and Printed at G. E. L. Church Press, Main Road, Ranchi / Bihar.

Gossner Mission